मारवाड़ी भजन सागर

(मारवाड़के भगवद्भक्तों की कविताओंका संग्रह)

संकलनकर्त्ता

रघुनाथप्रसाद सिंहानिया

प्रकाशक

राजस्थान रिसर्च सोसाइटी,

कलकत्ता।

प्रथम संस्करण] संवत् १९९० [मूल्य ३)

प्रकाशक
रघुनाथप्रसाद सिंहानिया
संचालक
राजस्थान रिसर्च सोसाइटी,
११ ए, सैयदसाली लेन,
कलकत्ता।

मुद्रक
उमादत्त शर्म्मा
रत्नाकर-प्रेस
११ ए, सैयदसाली लेन,
कलकत्ता।

दो शब्द

साहित्य मानव-जीवनको उच्च शिखर पर पहुंचाता है। साहित्य से ही जातियोंकी श्रेष्ठता मानी जाती है। साहित्य मनुष्यको इस लोकसे लेकर परलोक तक का अनुभव करा देता है। साहित्यने ही आर्य्य-जातिका महत्व संसारको समझाया है। यदि हमारे पूर्वज ऋपि-मुनियों और त्रिकालज्ञ योगियोंने वेद, दर्शन, पुराण और उपनिपदादि शास्त्रोंका निर्माण न किया होता, तो आज संसारकी सभ्य कही जानेवाली जातियाँ कभी भी परतंत्र भारतको श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखतीं। हमारे पूर्वजोंके रचित साहित्यका ही यह प्रभाव था कि देवता भी इस पुण्य-भूमि भारतमें जन्म ग्रहण करनेके लिये लालायित रहा करते थे।

राजस्थानको भी सहित्यने ही इतना ऊँचा उठाया था। वहाँके साहित्यने ही वहाँके जीवनको आदर्श बनाया था। साहित्यने ही वहाँ वीरोंमें वीरताका, सतियोंमें सतीत्वका, क्षत्रियोंमें क्षात्र-धर्मका, वैश्योंमें दानशीलताका तथा प्रजामें कर्त्तव्य-परायणताका मंत्र फूंका था। वहाँके चारणों, भाटों और बारहठोंने देशको कर्त्तव्य-परायण, समृद्धिशाली, स्वतंत्रताका पुजारी बनानेके लिये ही देवी भारतीका आह्वान किया था। यही कारण था कि, वहाँकी स्त्रियाँ भी कहा करती थीं कि,

सकते हैं। पहले कार्य-क्रमसे तो हमें हजारों अप्रकाशित पुस्तकोंका पूरा विवरण मिल जायगा और दूसरे कार्यसे हम उस मौखिक साहित्यकी रक्षा कर सकेंगे, जो कुछ तो नष्ट हो चुका है और जो बचा है उसके अचिर भविष्यमें नष्ट हो जाने की संभावना है।

परन्तु दोनों कार्य ही व्यय-साध्य हैं। यदि कोई अंगरेज इस कामको उठाता तो यह उसके लिये बिलकुल सहज ही होता। उसे केवल मानसिक और शारीरिक परिश्रमके सिवा और किसी बातकी तकलीफ नहीं होती। कोई न कोई सुदृढ़ रिसर्च सोसाइटी उसकी सहायता पर खड़ी हो जाती और सरकार भी उसकी सब प्रकारसे मदद करती। परन्तु यह काम उठाया है मेरे जैसे युवकने—जिसके पास न जर है न सरकार—केवल है तो अपने जातीय-गौरव स्वरूप साहित्यकी रक्षा करने की धुन, अपनी मातृभूमि की प्राचीन गौरव-मय गाथाओंके संग्रह करने की लगन और अपने देश तथा जातिको उच्च शिखर पर चढ़ाने की भावना।

इसके लिये मुझसे तो जो कुछ बन पड़ेगा, मैं करूँगा ही परन्तु यह काम ऐसा है, जो एकके किये नहीं हो सकता। इसके लिये तो आवश्यकता है कि सारा का सारा राजस्थान, मारवाड़ी समाजका बच्चा-बच्चा, इसको अपना काम समझ कर सहायता करे। जब तक ऐसा न होगा तब तक इस महत्कार्यमें सफलता प्राप्त होनी कठिन है।

मारवाड़ी समाज सम्पन्न समाज है और वह सभी लोकसेवा तथा देशके कार्योंमें मुक्त हस्त होकर सहायता करता है। मैं आशा

करता हूं कि अपनी जातिकी संस्कृतिकी रक्षा और राजपूतानाके प्राचीन साहित्यकी कीर्तिको अक्षुण्ण रखनेके लिये, मुझे पूरी सहानुभूति प्राप्त होगी।

इस कार्यके लिये कोई फण्ड या कोष नहीं खोला जा रहा है, न दान मांगनेकी आकांक्षा है। मैं केवल यह चाहता हूं कि इस विषयमें जानकारी रखनेवाले सज्जनोंसे साहित्य सम्बन्धी सामग्री संग्रह करने में सहायता मिले और इस पुस्तकमालामें जो पुस्तकें प्रकाशित हों, उनकी एक-एक प्रति अपने मित्रोंसे खरीदनेकी सिफारिश करें और स्वयं एक-एक प्रति खरीद कर इस कार्यमें मुझे अग्रसर होनेके लिये उत्साहित करें। केवल इतनीसी सहायता प्राप्त होने पर यह रिसर्च और प्रकाशनका कार्य्य जारी रह सकेगा।

विनीत

रघुनाथप्रसाद सिंहानिया

सम्मतियाँ

(१)

आचार्य्य महावीर प्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं—

मारवाड़ी-साहित्यका प्रकाशन
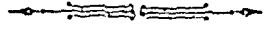
आपका विचार स्तुत्य है। परमात्मा आपके इस सदनुष्ठानको सफल करे।

दौलतपुर   म० प्र० द्विवेदी

रायबरेली

२३-१-३४

(२)

प्रसिद्ध विद्वान् राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं—

आपका काम बहुत ही प्रशंसनीय है।....लिखितके अतिरिक्त मारवाड़ी मौखिक साहित्य पर पूरा ध्यान देना चाहिये, क्योंकि अचिर भविष्यमें उसके नष्ट हो जानेकी संभावना है।

आपका

६-१२-३३   राहुल सांकृत्यायन

मारवाड़ी समाजके नेता

रा० ब० बा० रामदेव चोखानीकी सम्मति

श्रीयुत रघुनाथप्रसादजी सिंहानिया मारवाड़ी समाजके एक ऐसे होनहार सुशिक्षित नवयुवक हैं, जिनके लिये हरएक मारवाड़ीको गर्व होना चाहिये। आप अपने अध्ययनमें व्यस्त रहते हुए भी राजपूतानेके प्राचीन गौरव-मय अप्रकाशित साहित्यकी रक्षाके लिये अन्वेषण, विश्लेषण एवं प्रकाशनका जो कार्य कर रहे हैं, वह सर्वथा अभूतपूर्व एवं प्रशंसनीय है। इसी उद्देश्यको ध्यानमें रखकर आपने 'राजस्थान रिसर्च सोसाइटी' नामकी एक संस्था स्थापित की है और उसकी ओरसे मारवाड़के भगवद्भक्तोंकी कविताओंका संग्रह 'मारवाड़ी भजन सागर' नामसे प्रकाशित किया है। इस संग्रहमें आपने राजस्थानकी विभिन्न भाषाओंका जो विश्लेषण किया है वह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी हुआ है। कवियोंकी जीवनी दे देने से पुस्तककी उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गयी है। आपका यह संग्रह बहुत ही सुन्दर एवं व्यापक हुआ है और अपने इस संग्रह द्वारा राजपूतानेकी मरुभूमिमें आपने जो भक्ति प्रेम-रस मन्दाकिनी बहायी है, उसमें अवगाहन करके राजपूतानेका प्रत्येक निवासी अपने मनः प्राणको पुलकित एवं कृतकृत्य बना सकता है। वर्तमान भौतिक-वादके युगमें इस प्रकारकी पुस्तकोंकी अत्यन्त आवश्यकता है।

आपके इस स्तुत्य उद्योगके प्रति मेरी हार्दिक सहानुभूति है। मुझे आशा है कि राजस्थान निवासी मारवाड़ी भाषा भाषी प्रत्येक सज्जन इस पुस्तकको कमसे कम एक प्रति खरीद कर तथा अन्य प्रकारसे आपकी सहायता करके आपको प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। आपकी 'राजस्थान रिसर्च सोसाइटी' द्वारा राजस्थानके प्राचीन लुप्त साहित्य पर बहुत कुछ प्रकाश पड़नेकी संभावना है। मैं इस कार्यमें आपकी सफलताका अभिलाषी हूं।

रामदेव चोखानी

२४-२-३४

दिये थे। वर्तमान समयमें वह चाहे कितनी ही पतनावस्थाको क्यों न पहुंच चुका हो, पर प्राचीन समयमें तो वह भारतके अतीत गौरवकी स्मृतियोंका भण्डार रहा है। संसारमें सबसे बड़े योद्धा-माने जाने वाले महाराणा प्रतापकी जननी होनेका भी सौभाग्य उसी भूमिको है। भामासाहकी उदारता, पद्मिनीका जौहर, गोरा बादलका आत्मबलिदान और कितने ही वीरों तथा वीरांगनाओंकी गौरव-गाथायें आज भारतीय मात्रके हृदय-पटल पर स्वर्णाक्षरोंमें अंकित हैं। इतना ही नहीं, आज इस गिरे हुए जमानेमें भी, जिनके हृदयमें वीरताके प्रति श्रद्धा है—जो दृढ़ संकल्पकी स्थिरताके प्रति प्रेम कर सकते हैं—जिनको जिन्दादिलीसे भरे हुए जीवनके प्रति जरा भी रुचि है, उनके लिये वह राजपूताना आज भी तीर्थ-स्थान है। सारा संसार उसकी वीरताका गुण-गान कर रहा है। संसारके स्वतन्त्र देशोंके विद्वान् उस वीर-भूमिका यश वर्णन करनेमें अपना सौभाग्य समझते हैं। जेम्स टाडने लिखा है:—

"राजस्थानमें कोई छोटा सा राज्य भी ऐसा नहीं है, जिसमें थर्मापोली जैसी रण-भूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहां लियोनिडास जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो।" उन यूरोपीय विद्वानोंने श्रद्धा और प्रेमसे राजस्थानके इस छोरसे लेकर उस छोर तक घूम-घूम कर उसकी पवित्र धूलको अपने मस्तकों पर चढ़ाया है। जब उस पुण्य-भूमि पर विदेशियोंको इतना घमण्ड है तो भारतीयोंके हृदयमें तो उसके प्रति अगाध भक्तिका होना स्वाभाविक ही है।

राजस्थानके त्यागवीरोंने "जीवन और मृत्यु" के सवालको हल कर लिया था। वे जीना और मरना दोनों सीख गये थे। उनके लिये यह वायें हाथका खेल था। यही कारण था कि मुसलमानोंके दुर्धर्ष धक्केको भी राजस्थान सह गया। आज मुगलों और पठानों के वंशज, इस संसारमें यदि कहीं पर होंगे भी तो अपनी जिन्दगी की घटतीके दिन किसी तरह पूरा कर रहे होंगे पर महाराणा प्रताप की सन्तानें आज भी अपने उसी सिंहासन पर विराजमान हैं। संसारके इतिहासमें मेवाड़के राजवंशसे अधिक पुराना राजवंश खोजने पर भी शायद ही मिले। महाराणा प्रतापकी उदारता पर मुग्ध होकर नवाव खानखानाने जो कुछ कहा था वह अक्षरशः सत्य निकला कि—

ध्रम रहसी रहसी धरा, खिस जासी खुरसाण।
अमर विसम्भर ऊपरे, निहचै रहसी राण॥

जिस राजस्थानमें वीरता, निर्भीकता और सत्यताकी पताका सैकड़ों वर्षों तक आकाशमें फहराती रही है, उसके इतिहासमें साहित्योन्नतिका पृष्ठ भी कोरा नहीं, वरन् सुवर्णाक्षरोंमें लिखा जाने योग्य है। जिस देशका इतिहास इतना उज्ज्वल और भारतीय मात्र के गौरव कर सकने लायक गाथाओंसे भरा हो, वहाँ साहित्य पनपा ही नहीं,—यह असम्भव है। परन्तु दुःख तो इस बातका है कि राजस्थानियोंने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया, यदि वे इस ओर जरा ध्यान देते तो देखते कि वे अपने चमकते हुए रत्नोंको चाहे जहां रखकर विद्वानोंमें चकाचौंध उत्पन्न कर सकते हैं।

"राजस्थानी भाषा"—यह नाम आधुनिक है। भाषा तत्व-विद्वोंने अपनी सुविधाके लिये यह नाम रख लिया है। इसमें राजपूतानेमें बोली जाने वाली तमाम भाषायें शामिल हैं। इसके दूसरे नाम मारवाड़ी, डिंगल और राजपूतानी हैं। 'डिंगल' यह नाम राजस्थानी और ब्रज भाषामें अन्तर बतानेके लिये रखा गया है। डिंगलका प्रसिद्ध उदाहरण महाकवि चन्द्का "पृथ्वीराज रासो" है। आधुनिक समयमें भी बूंदीके चारण मिसर सूर्य्यमलने भी "वंश भास्कर" नामक एक महाकाव्य इसी भाषामें लिखा है।

प्राचीन आर्योंकी भाषा वैदिक संस्कृत थी। उससे धीरे-धीरे संस्कृत निकली। संसार परिवर्तनशील है। उसी तरह भाषा भी अपना रूप चिरस्थायी नहीं रख सकती। उसे भी अपना रूप समय-समय पर बदलना ही पड़ता है। फलस्वरूप संस्कृतसे बिगड़ कर प्राकृत और प्राकृतसे अपभ्रंशोंका जन्म हुआ। अपभ्रंशोंमें भी नागर और आवन्ती नामके अपभ्रंशोंने साहित्यकी ओर कदम बढ़ाया। इन्हीं अपभ्रंशोंसे, सबसे पहले राजस्थानीका विकास हुआ।

इसका जन्म विक्रमकी दसवीं सदीके आस-पास हुआ। उस समय भारतके आकाशमें नाना प्रकार की उथल-पुथल मची हुई थी। राजपूताना भी जाग्रत था। बड़े-बड़े साम्राज्यों का निर्माण और विध्वंस हो रहा था। उसी समय साहित्यमें भी वीर-रसका श्रोत उमड़ पड़ा। राजस्थानीमें भी चारणों, भाटों और बारहठोंने खूब काव्य लिखे। इस प्रकार जन्मके कुछ दिनों बाद ही यह साहित्यक भाषा बन गई।

भाषा विज्ञानके अनुसार राजस्थानी संस्कृतसे उत्पन्न आर्य भाषाओंकी श्रेणीमें आती है। राजस्थानी पश्चिमी हिन्दीका सबसे बड़ा विभाग है। इसके बोलनेवालोंकी तादादके आंकड़े सन् १९३१ की मर्दुमशुमारीके अनुसार नीचे दिये जाते हैं:—

राजपूताना	९, ९२३, ९५०
अजमेर और मेरवाड़ा	४२७, ७११
मध्यभारत एजेन्सी	२, २३०, ८९५
पञ्जाब	६१३, ०००
कुल जोड़—	१३, १९५, ५५६

राजस्थानीका विकास काल तीन भागोंमें बाँटा जा सकता है:—

(१) प्राचीन राजस्थानी–विक्रमीय १६ वीं सदी तक

(२) माध्यमिक राजस्थानी–विक्रमीय १९ वीं सदी तक

(३) आधुनिक राजस्थानी–विक्रमीय १९ वीं सदीसे अब तक

राजपूतोंके उत्थानके साथ-साथ इसका विकास हुआ। चारणों भाटों, बारहठोंने इसकी खूब उन्नति की। माध्यमिक कालमें बोल-चालकी राजस्थानीने भी काफी उन्नति की। इस समयमें बहुतसे गद्य-पद्यात्मक ग्रन्थ लिखे गये।

राजस्थानी भाषाकी ५ मुख्य शाखायें हैं:—

(१) **मारवाड़ी**—राजस्थानीकी यह सबसे बड़ी शाखा है। सारे पश्चिमोत्तर, दक्षिण तथा मध्य राजस्थानमें यह बोली जाती है। इसकी १८ उपशाखायें हैं जो सब साहित्य-सम्पन्न हैं। नीचे उनके

नाम और सन् १९३१ की मर्दुमशुमारीके अनुसार उनके बोलनेवालों की तादादके आँकड़े दिये जाते हैं:—

भाषा	तादाद
खास-मारवाड़ी (Standard-Marwari)	२, ५७३, ४३८
ढूंढाड़ी	१९७, २७७
गोरावाटी	७, ९०१
मेवाड़ी	१, ४६९, ४७७
मेरवाड़ी	१०, ०४६
सरवारी	१९, १५४
खैरारी	९०, ०८८
गोड़वारी	१७, ४४१
सिरोही	८, ७१९
देवरावाटी	९०८
मारवाड़ी-गुजराती	२०, ५५०
थली	५६,१९२
मारवाड़ी–सिन्धी	४७,७८६
धाटकी	१२१,४१५
बीकानेरी	८१,४९३
शेखावाटी	७०१,७१४
वागड़ी	१९३,९६२
अजमेरी	२५६
मेरवाड़ा	४

कुल जोड़—५,६१७,८२१

(२) जयपुरी—यह जयपुर, लावा, किशनगढ़, तथा झालावाड़ और टोंकके कुछ हिस्सोंमें बोली जाती है। इसमें भी अच्छा साहित्य वर्तमान है। इतना ही नहीं, वर्तमान राजस्थानीका गद्य-साहित्य तो सर्वथा इसीमें है। इसकी उपशाखायें नौ हैं। नीचे उनके नाम और सन् १९३१ की मरदुमशुमारीके अनुसार बोलनेवालोंकी तादाद दी जाती है:—

भाषा	तादाद
जयपुरी	१,०२१,७९४
तोरावाटी	२६४,०२५
कठैरा	४३,६४३
चौरासी	३४
नागरछाल	५१,६३३
राजवाटी	८०,७७१
किशनगढ़ी	६३,६१४
अजमेटी	८,३९३
हाड़ोती	६२३,०११
सिपरी	७३७
	कुल जोड़—२,१५७,६५५

(३) मेवाती—यह अलवर, भरतपुरके पश्चिमोत्तर प्रदेशमें और पञ्जावके दक्षिण पूर्वमें गुड़गांव और हिसार आदि जिलोंमें वोली जाती है। इसमें साहित्य नहीं सा है। इसकी भी कई उप-

गोरावाटी (अजमेर)

इसके उदाहरणमें डा० ग्रियर्सनने एक गीत उद्धृत किया है यद्यपि उसका भाव उतना अच्छा नहीं है परन्तु वह इस भाषाका एक नमूना है। अतः भाषाके नमूनेके तौर पर उसकी कुछ पंक्तियाँ नीचे दी जाती हैं-

अमलाँ में आछा लागो म्हारा राज। पीवो नी दारूड़ी ॥
सुरज थानैं पूजस्याँ जी, भर मोत्याँको थाल।
घड़ेक मोड़ा उगजोजी, पियाजी म्हारे पास ॥
पीवो नी दारूड़ी ॥
अमलाँ में आछा लागो म्हारा राज। पीवो नी दारूड़ी ॥
जा ये दासी बागमें ओर सुण राजन री बात।
कदेक महल पधारसी तो मतवालो धणराज ॥
पीवो नी दारूड़ी ॥
अमलाँ में आछा लागो म्हारा राज। पीवो नी दारूड़ी ॥
थारी ओलूं म्हे करां, म्हारी करे न कोय।
थारी ओलूं म्हे करां, करता करे जो होय ॥
पीवो नी दारूड़ी ॥
अमलाँ में आछा लागो म्हारा राज। पीवो नी दारूड़ी ॥

मेवाड़ी (उदयपुर)

कुणी मनखके दोय बेटा हा। वाँ-माँ-हूं ल्होड़क्यो आपका बापने कह्यो हे बाप पूंजी माँ हूं जो म्हारी पाँती होवै म्हने द्यो।

द वाँ वाँ ने आपकी पूँजी वाँट दीदी। थोड़ा दन नहीं हुआ हा ल्होड़क्यो बेटो सगलो धन भेलो कर हर परदेश परो गयो अर उठै ऊचापण माँ दन गमावताँ हुआँ आपको सगलो धन उडाय दीदो। तद ऊँ सगलो धन उड़ा चुक्यो तद वीं देस माँ भारी काल पड़्यो। हर ऊ टोटायलो हो गयो। हर ऊ जाय नै बा देसका रहवावालाँ माँ हूं एक कै नखैं रहवा लाग्यो। वाँ वाँने आपका खेत माँ सूर चरावाने मेल्यो। हर ऊ वाँ छूंतरा हूं ज्याँनै सूर खावा हा आपको पेट भरवो चाहो हो। हर वाने कोई भी काँई नहीं दे तो हो। जद वाँ ने चेत हुयो हर वीं कह्यो कै म्हारा वाप कै कतरा ही दानक्याँ ने खावा हूं वदती रोटी मिलै है हर हूं भखाँ मरूँ। हूं उठ कर म्हारा वाप नखैं जाऊँलो हर वाने कहूंलो कै हे वाप वैकुण्ठ हूं, उलटो हर आपके देखताँ पाप कीदो है। हूं फेरूँ आपको बेटो कुहावा जोगो नहीं हूं। म्हने आपका दानक्याँ[१] माँ हूं एक के सरीखो कर द्यो।

मेवाड़ी (अजमेर)

रस्यो राणे राव हिंदुपत रस्यो राणे-राव।
म्हारै वस्यो हिवड़ा माँय, विलालो[२] रस्यो राणे राव॥
जोख[३] करै जगमंद्र[४] पधारै, नोख[५] विराजै नाव।
सोलाँ उमरावाँ साथ हिन्दुपत, रस्यो राणे राव॥
म्हारै वस्यो हिवड़ा माँय, विलालो रस्यो राणे राव॥

१—नौकर २—अधिक। ३—इच्छा। ४—जगमन्दर महल। ५—कुंवा।

निछरावल प्रथीनाथ री, क्रोड़ मोहर कुरबान ।
आया रा कहूँ ओळावडा, पल-पल वारूँ प्राण ॥
बिलालो रस्यो रागे राव, हिंदुपत रस्यो रागे राव ।
म्हारे वस्यो हिवड़ा माँय, बिलालो रस्यो रागे राव ॥

सिरोही

एक सन्दणपूर नाँम सेर नुं । वणमें एक धनवालो हाउकार तो । वणे री वु हाई ती । वण वुने होनार केवा लागो के थे दुरमोती पेरिआँ नीं जको दुरमोती मँगवाने परे । होनार तो अनमें केने परो गो । जरि पसे हाउकार गरे आयो । जरि हाउकार रे वुग कीऊँके मने दुरमोतो पेगवो । जरि वणे हाउकारे कीऊँ के मूं परदेशमें लेवा जाऊँ हूं ने लावेने पेरावूं । तरि वो हाउकार अनरूँ केने देसावर गो । जाताँ जाताँ अलगो दरिआ कनारे गो । जायने वणे दरिआ ऊपर तीन धरणाँ कीदाँ । तरि वणने सोइणु (सुपना) आयुंके अठे दुरमोती नीं हे । जरि वो उठेने वीर वुओने पालो आवतो तो । जनरे मारगमें एक महादेव रूँ देरूँ (मन्दिर) देखिउँ । जरि वो हाउकार वण देरा में जायने वैठो । जतरामें महादेवजी रे पूजारी एक वाँमण आयो ने वणे वाँमणे पूसियुं के थूं कुण हे । जरि वो केवा लागो के मूं हाउकार हूं तरि वण वाँमणे कीयुं के थूं क्यूं आयो जरि वो हाउकार वोलिओ के दुरमोती लेवा हारू आयो हूं । तरि वाँमणे कीऊँके थूं महादेवजी उपर धरणुं दे । जको थने महादेवजी दुरमोती देई । जरि वणे हाउकारे महादेवजी उपर धरणाँ दीदाँ । तरि महादेवजी

---

१ —उत्सव ।

रातरा वाँमण रे सोइणे जायने कीऊँ के ए वाँमण थूं अण अँदारा बेरा में उतरेने दुरमोती लावेने अणने दे। जरिं वो वाँमण अँदारा बेरामें उतरेंने दुरमोती लावेने हाउकारने दीदाँ। जरिं वो हाउकार दुरमोती लेने गरे आवताँ तकाँ मारगमें एक ठग मिलिओ। जरिं हाउकारे ठगने देखीने मनमें विचारियुं के मोती ठग अराँ लेई। जरिं हाउकारे पोतारी हातल फाडेने दुरमोती पराँ गालिआँ। पसे वो हाउकार ठगारे गरे गो। जरिं वाटी-वीजी खायने रात रा हूतो। जतरे ठगरी वेटी आई। जरिं हाउकारे पूसियुंके थूं कुण है। जरिं वा ठगरी बेटी केवा लागी के मुं थने ठगवा आई हूं। जरिं हाउकारे कीऊँ के भलाँई ठग। पण मारुँ एक वेण हाम्बल। जरिं कीऊँ के का के है। जरिं वणे कीऊँ के थूं पाप करे जणमें पापरा भागीदार गर राँ कोई वेहे के नीं। जरिं वा नीसे आवेने गरवालाँने पूसियु के मूं पाप करूँ जणमें थे पापरा भागीदार हो के नीं। तरिं गरवालाँ बोलियाँ के मैं थारा पापरा भागीदार नीं हाँ। जरिं वा ठगरी बेटी पासी हाउकार पागती जायने वोली के हे हाउकार मूं थने ठगुं नीं। ने थूं मने थारे साते लेने जा। तरिं हाउकारने ठगरी वेटी बेई जणाँ रातरा ऊँटे माते वे ने हाउकार रे गरे गिआँ ने वे जो दुरमोती लाआँ थाँ जको हाउकार री वुने पेराविआँ ने पसे मजा करवा लागाँ।

मारवाड़ी (सैथकी बोली) (सिरोही)

एक राजा उजेणी नगरी रो धणी थो। वो राजा रातरा वजारमें गीओने वदाएत आवती थी। वणने राजाए पुचीयु के थू कुण है। अवणारे कीयु के मु वदायत हु (बे-माता) एक भराँमण रे आँट

लखवारे वास्ते जाऊ-चु। राजाए पुचीउ के सु आँट लखिओ। ते वदाएत कीयु के जेवा आँट, लखीस तेवा वलनाँ के ही जाउ। वदाएताए वो आँट लखिओ के ए भराँमण रे नवमें मेहीने एक दीकरो आवे। दीकरो जनमतो शाँयारे तो वाप मर जाए। वो दीकरो परणवा रे वास्ते जाए तो चवरीआँमें वाग मारे। एवु केहीने वदाएत राजा पागती थी गरे गई।

पचे राजाए भराँमणोने धरम-वेन कीधी। पचे दीकरो जनमताँ दीकरा रो वाप परो मुओ ने दीकरो मोटो हुओ। जरे राजाए दीकरा रे शगाई कीधी। ने जाँनरी त्यारी कीधोने परणवा शारु वुआ। पसे दीकरा रे शावरे जाएने नहीं मारवा रो पको वन्दोवस्त कर दीकराने सवरीआँमें वीआडीओने परणावीने सवरीआँ थी उतरीने वींद वींदणीने एक डोलारी कोठीमें गालीने वन्द करीआँ के वाग दीकरा ने न मारे। पसे जाँन रवाँनी हुई। तरे दीकराने वोहु केवा लागी के आँपाँ वेईआँ ने डोलारी कोठीमें काग वास्ते गालीआँ। दीकरे कीयु के एवो वदाएताए रो आँट लखीओके मने सवरीआँ में वाग मारवारो लखीओ। जण थी मे राजाने धरम भाई कीदो। जरे राजाए आँपाँने डोलारी कोठीमें गालिआँ। जरे दीकरी ए किउ के वाग केवो वे हे। तरे वणे दीकरे डोलारी कोठीमें वेटाँतकाँ वागरो चेरो काडीओ। जरे उगे चेरारो वाग वणेने दीकराने परो मारीओ। पसे जरे आवी ने राजाए डोलारी कोठी उगाडी तो भराँमण रे दीकराने मुओ देखीओ ने वाग वारे निकलीओ। तरे राजाए मनेमें जाणियुके वदाएत ए आँट लखिआ वे हे सो खरा हे।

थली (जैसलमेर)

आई आई ढोला वणजारे री पोठ।
तमाकू लायो रे माँजा गाढ़ा मारु सोरठी॥
रे म्हाँरा राज॥

आण उतारी वडले रे हेठ।
वडलो छायो रे माँजा गाढ़ा मारु जाझे मोतिये।
रे म्हाँरा राज॥

लेशे लेशे सिरदाराँ रो साथ।
कायेक लेशे गाढ़े मारु रा वामण वाणिया॥
रे म्हाँरा राज॥

कहे रे वाणीड़ा तमाकू रो मोल।
कयेरे पारे माँजा गाढ़ा मारु तमाकू चोखी॥
रे म्हाँरा राज॥

रुपये री दीनी अध टाँक रे।
म्होर री दीनी म्हाँरी साची सुन्दर पा-भरी॥
रे म्हाँरा राज॥

सोने रूपेरा चेलड़या घड़ाय।
रूपेरी डाँडी रे गाढ़ा मारु भली तोले॥
रे म्हाँरा राज॥

रातडलीरे भँवर गई अधरात।
मोडा क्याँ पधारिया रे माँजा गाढ़ा मारू भँवरजी॥
रे म्हाँरा राज॥

गया ता गया ता गोरा दे साँईणाँ रे साथ रे ।
हुको हजारी छाकियो माँजी साची सुन्दर छाकियो ॥
रे म्हाँरा राज ॥

हुक्के री आवे भुंडी वास उपराँटा पाढो रे ॥
हुको थाँरो तालरिये पटकाय चिलम पटकावाँ रावले चोवटे ॥
रे म्हाँरा राज ॥

आवेरे आवे गोरा दे थाँ ई पर रीस ।
परणीजे ले आवाँ पुगल गढ़ री पदमणी ॥
रे म्हाँरा राज ॥

परणो भँवर पाँच पचीस ।
में भाभे नीरे बेटी लाडकी रे माँजा गाढ़ा मारू ॥
रे म्हाँरा राज ॥

आगे रे आगे घोड़ाँरी घमसाँण ।
भाँसिया रे रथ माँजी सोकड़ बेरण रो बाजणो ॥
रे म्हाँरा राज ॥

झालाँ झालाँ घुड़ले री लगाम ।
कड़ियाँ रो झालाँ रे गाढ़ा मारू रो कटारो ॥
रे म्हाँरा राज ॥

आँगणिये रे मुंगड़ला रलकाय ।
पितलक भागेरे माँजी सोकड़ बेरण सावकी ॥
रे म्हाँरा राज ॥

आँगणिये घरट रोपाय रे ।

काँने न सुणाँ माँजी सोकड़ नाँ बोलती ॥

रे म्हाँरा राज ॥

आडी आडी भींतड़ली चुणाय रे ।

अँखिये न देखाँ माँजी सोकड़ली नाँ मालती ॥

रे म्हाँरा राज ॥

हाँथड़ लेरे रमाया वासंग नाग ।

विच्छू री खाधी माँजी गाढ़ा मारू हँतो नहीं डराँ ॥

रे म्हाँरा राज ॥

जाजमड़ी रे थाँई री ढलाय ।

वेलीड़ा तड़ावाँ रे गाढ़े मारूरा साँईणा ॥

रे म्हाँरा राज ॥

लाँगाँ डोडाँरी धैयड़ली रे दुखाय ।

हाथाँ सूं चाडाँ रे भँवरजी रा चिलमिया ॥

रे म्हाँरा राज ॥

सोने रूपे रो हुकैयो कराय ।

मोतीड़े जड़ावाँ रे गाढ़ा मारु री चिलमड़ी ॥

रे म्हाँरा राज ॥

शेखावाटी (जयपुर)

एक तो चिड़ी ही ओर एक कागलो हो । दोन्यूं धरम भाई हा । चिड़ीने तो लाद्यो मोती ओर कागलैनै पाई लाल । कागलै कही कै देखाँ चिड़ी तेरो मोती । मोती लेर नीमड़ी पर जा बैठ्यो । चिड़ी कही कै नीमड़ी नीमड़ी काग उड़ा दे । मैं क्यूं उड़ाऊं भाई, मेरो के

लियो । जणाँ खाती कने गई के खाती खाती तूं नोमड़ी काट । के
मैं क्यूं काटूं भाई, मेरो के लियो । जणां पछे राजा कने गई, के
राजा राजा तूं खाती डंड । मैं क्यूं डंडूं भाई, मेरो के लियो । जणाँ
पछे राणियाँ कने गई के राणियो राणियो, थे राजा सूं रूसो । म्हे
क्यूं रूसाँ भाई, म्हारो के लियो । जणाँ पछे चूसाँ कने गई के चूसो
चूसो, थे राणीयाँ का कपड़ा काटो । म्हे क्यूं काटाँ भाई, म्हारो के
लियो । जणाँ पछे बिल्ली कने गई, के बिल्ली बिल्ली, थे चूसा मारो ।
म्हे क्यूं माराँ भाई, म्हारो के लियो । जणाँ पछे कुत्ते कने गई, के
कुत्तो कुत्तो, थे बिल्ली मारो । कुत्ता बोल्या भाई म्हे क्यूं माराँ, म्हारो
के लियो । जणाँ पछे डाँगाँ कने गई के डाँग डाँग थे कुत्ता मारो ।
म्हे क्यूं माराँ भाई, म्हारो के लियो । जणाँ पछे बास्ते कने गई के
बास्ते बास्ते, थे डाँग बालो । म्हे क्यूं बालाँ भाई, म्हारो के लियो ।
जणाँ पछे जोड़े कने गई के जोड़ा जोड़ा तूं बास्ते भुजाव । मैं क्यूं
भुजाऊँ भाई, मेरो के लियो । जणाँ पछे हात्याँ कने गई के हाती
हाती थे जोड़ो सोसो । म्हे क्यूं सोसाँ भाई, म्हारो के लियो । जणाँ
पछे कीड़ियाँ कने गई के कीड़ियो कीड़ियो थे हाथीकी सूंड़में बड़ो ।
म्हे क्यूं बड़ाँ भाई, म्हारो के लियो । थे हाती की सूंड़ में ने बड़ोगी
तो मैं थाँने मारस्यूं ।

जणाँ कीड़ी बोली म्हाँने क्यूं मारे भाई, म्हे हातीको सूंड़में
बड़स्याँ । जणाँ पछे हाती बोल्यो, भाई मेरी सूंड़में क्यूं बड़ो । मैं
जोड़ो सोसस्यूं । जोड़े कही भाई मने क्यूं सोसो, मैं बास्ते भुजास्यूं
बास्ते कही मने क्यूं भुजावो भाई, मैं डाँग बालस्यूं । डाँग कही

म्हाँनै क्यूं वालो भाई, म्हे कुत्ता मारस्याँ। कुत्ता कही म्हाँनै क्यूं मारो भाई, म्हे बिल्ली मारस्याँ। बिलीयाँ कही म्हाँनै क्यूं मारो भाई, म्हे चूसा मारस्याँ। चूसा कही म्हाँनै क्यूं मारो भाई, म्हे राणियाँ का कपड़ा काटस्याँ। राणियाँ कही म्हारा कपड़ा क्यूं काटो भाई, म्हे राजासूं रूसस्याँ। राजा कही मेरे सूं क्यूं रूसो भाई, मैं खाती डंडस्यूं। खाती बोल्यो मने क्यूं डंडो भाई, मैं नीमड़ी काट गेरस्यूं। नीमड़ी कही मने क्यूं काटो भाई, मैं काग उड़ास्यूं। काग कही मने क्यूं उड़ावो भाई, मैं चीड़ीको मोती देस्यूं।

बागड़ी (बीकानेर)

एक राजा थो। बीं एक साहुकार कने दस पाँच क्रोड़ रुपैयो देखियो और सुण्यो। बीं राजा गे मनमें असीक आई क ईंरा रुपैया खोसणा चाहीजे। असी तजवीज सूं लेणा चाहीजे कि ईं हूं बुरो बी मालूम न देवे। बीं राजा बीं साहूकारने बुलायो। बुला अर साहुकारने असी फरमाई कि चार चीज म्हे नूं पैदा करदे। एक तो घटे ही घटे। एक वधे ही वधे। एक घटे न बधे। एक घटे और बधे। साहुकार इकरार कर्यो कि छे महीनेमें चाराँ चीज हाजिर करशूं। बींसूं राजा इकरारनामो लिखवा लीयो कि छे महीनेमें हाजिर न करूं तो मेरे घर माँही जो धन है सो राजा रो होयो। इकरार लिख साहुकार घरमें गयो। घराँ जा गुमाश्ताँ-नै कानी-कानी कागज लिख साहुकार दिया कि किह्याँ भाउ मिलें ऐ चाराँ चीज खरीद कर भेज देओ। गुमाश्ताँ-नै बुतेरी ढूंढ करी लाधी नहीं। गुमाश्ताँ उलटो जवाव सेठ नै लिख दियो कि इठे किह्याँ भाउ ए चीजाँ लाधी

नहीं और न कोई इठे इन्हाँ चीजाँ-नूं जानें है। साहुकार-नें बड़ो भारी फिकर होयो अब काँई जावतो करीजे। धन तो राजा ले-लेशी। भँडो ढालो होशी।

तो साहुकारगी लुगाई बोली था-नूं काँई असो फिकर है सेठ जी सो म्हाँ-ने तो बताओ। सेठ कहण लाग्यो। लुगाई-गे किश्याँ बताऊँ। लुगाई हठ पकड़-लीयो। हूं तो पूछाँ ही रहशूं। सेठ-जी हार कर बतावण लाग्यो। चार चीज बादशाह माँगी है। सो गुमाश्ताँ कने लिखा था। सो गुमाश्ताँ जवाब दे भेज्यो है। चाराँ चीज न थ्याँगा तो माल धन सब राजा ले-लेशी। साहुकारणी बोली कि आँ चीजाँ खातर राज काँई म्हारो धन ले-लेशी। ए चाराँ चीजाँ म्हे म्हारे बाप कने ल्याई थी। म्हारा बुगचा-में बाँधोड़ी पड़ी है। राज माँगशी दे देशाँ। साहुकार असी कही म्हाँ-ने आँख्याँ दिखाओ। साहुकारणी असी कही कि जाओ थे राज में अरजी कर देओ कि आप म्हारा सूं काँई चीजाँ माँगी। असी असी चीज तो लुगायाँ-रे कने लाध-जावें।

राजा आप रे मनमें असी विचारी कि थे तो सोच समझ बात कही थी। पण असी चीज लुगायाँ कने लाध जावें तो लुगाई बुलाओ। राजा साहुकार गी लुगाई नें हरकारो बुलावण भेज्यो। साहुकारणी कह्यो कि राजाजी आप-री कोई मुतवर बाँदी भेज देवे तो हूं बाँदी-नूं दे-देशूं। बाँदी रानी-ने दे-देशी। रानी राजा नै दे देशी। राजा न मानी। ई ढाले चार वेर हरकारो गयो अर चार हेलाँ आयो। पछे साहुकार-बच्ची आई। हात में एक थाल ल्याई। एक

दूध-गो कटोरो थाल-माँही राख्यो आर एक दाना चना-गो एक दाना मोठ-गो एक दूब घास-गी। एक एक दाना अहल-काराँ गे आगे और घास-गी अहल-काराँ-गे आगे। दूध गो वाटको राजाजीगे आगे धर दीयो। राजा असो फरमाई कि साहुकार बच्ची तूं म्हारो धरम गी पुत्री है। बोह चीज पछे देओ। येह काँई कियो येह बता म्हाँ नै। वाँ कह्यो अन्नदाता पहलाँ आप री चीज ले लेओ। पछे बताऊँगी। आप पूछो थो कि एक घटे ही घटे, वोह तो उमर है। और आप कह्यो वधे ही वधे, सो वोह तृष्णा है। वधी ही चली जाए। और एक घटे न वधे, सो कर्म गी रेखा है। और घटे और वधे सो वोह सृष्टि है। राजा पूछी येय तैं काँई करयो। बोली आप री कचहरी मैं वैठ्यो कोई गधो है कोई घोड़ो है कोई डाँगर है कि कोई ओ न कह्यो कि क्रोड़पती-गे घर-सूं बीरबानी कचहरो में किह्याँ आ सके। और आप बच्चो हो सो दूध पीओ। दूसराँ मालिक हो। हूं आप नें कह नहीं सकती, म्हारे पीहर-गे राजवाड़में पधारो तो आप नै बी डाँगर बतावे।

तोरावाटी (जयपुर)

फूलजी माटी छो सिंदी को राजा। सो सिंदीका राज मैं मेड़ता का पिंडताँ मे वाँदियो। जद सात बरस ताँणी मे कोन्यै वरस्यो जको देश हुतल फुतल व्है गयो। काल पड़ गयो। जद कैवाला कही अस थाँ-कै तो सिंदीका राज मैं मेड़ताका पिंडताँ मे वाँदियो अस। हिरणाँ की डार छै जीं मैं किसतूरयो हिरण छै। वीं कै सींगड़ी कै मे वाँदियो। जको वीं हिरण नै मारो जद थारा राज मैं मे वरसै।

सो राजा हल्लासूँ घोड़ो लेर हिरणाँ की गेल दिया छै। सो घोड़ा थाकता गया। जे घोड़ा रैता-गया अर हिरण वी रैता-गया। सो ओर तो रै-गया अर वो किसतूरयो हिरण अर राजा कोई सैंकड़ी कोस चल्या गया। सो हिरण थाकर ऊबो रै-गयो। जणाँ राजा हिरण-नै मार गेरयो। सो सात वरस को आसूदो छो सो मूसलधार मे आर पड़यो। सो राजा मे-को मारयो घोड़ा-का हाँना-कै चिप गयो। थाक्योड़ो तो छो-ई राजा। सो राजा नै सूरत नई अर घोड़ा नै सूरत। जो कोई उजाड़ वगान कै माँई एक हीर-की ढाँणी छी। सो मिनखाँ-की वोली सुणर घोड़ो वीं हीरकी ढाँणी कनै आर खड़ो रह्यो अर हींस्यो। जणाँ हीर कही रै घोड़ो सो काँई हींस्यो वाराँ नै देखाँ। कँवाड़ खोलर देखो। सो दो चार जणाँ आर देखै तो घोड़ा का हाँना कै एक मानवी चिप रह्यो छै। सो वीं नै उतार माँई नै लै गया। घोड़ा नै घास दाणू दे दीयो। वीं नै सुवाण दियो। रूई मैं डपटर सुवाण दियो। सो आदेक रातको वीं कै निवाँच वापरयो। सो वीं खावा नै माँग्यो। सो जाट की वेटी आप की मा कनै सूं दूद ल्यार पायो अर पार सुवाण दियो। फेर सुंवार हुवोर वो उठयो-ई। जणाँ तम्मा हम्मा सवी पूछ्यो। तू कुण छै। खटे को छै। खटे आयो छै। जणाँ वीं खयो सिदी को तो मैं राजा हूं। फूलजी भाटी मेरो नाँव छ।

कठैरा (जयपुर)

एज वाँण्यूं छो। रातकी भगत दोन्यूं लोग लुगाई घर मैं सूता छा। आदी रात गियाँ एक चोर आर घर मैं वड़ गयो। ऊँ भगत

मैं वाँण्याँ नै नींद सूं चेत हो गयो। वाँण्याँ नै चोरको ठीक पड़ ग्यो। जद वाँण्यूं आपकी लुगाई नै जगाई। जद लुगाई-नै कई आज सेठाँ-के दसावराँ सूं चीठ्याँ लागी छे। सो राई भोत मैंगी होली। तड़कै रिप्याँ वरावर वकै-ली। राईका पाताँ नै नींकाँ जाबता सूं मेल दे। जद लुगाई कई राईका पाता बारली तवारीका खूंणाँ मैं पड़या छे। तड़कै-ईं नींकाँ मेल देस्यूं। चोर आ वात सुणर मन मैं वचारी राई पाताँ मैं सूं वाँदर ले चालो। ओर चीज सूं काँईं काम छै। जद वो चोर राईका पाताँ की पोट वाँदर ले गियो। वाँण्यूं देखी ओर माल सूं वच्यो। राई ले-ग्यो। माल-सूं पंड छूट्यो। जद दन ऊग्याँ-ईं वो चोर राईकी झोली भरर वेचवा नै बजार मैं ल्यायो वो वजारका पीसा की ढाई सेरका भाव सूं माँगी। जद चोर मन मैं समझी वाँण्यूं चलाकी करर आपका घर को धन बचा लियो। पण वीं वाँण्याँ कै तो फेर वी चालर चोरी करणी। माँनूं वीस दन वीच मैं देर फेरूँ वीं ई वाँण्याँके चोरी करवा चल्यो गियो। रातकी भगत फेर वाँण्यूं जाग्यो। चोर वाँण्याँ को धन माल सारो एक गाँठड़ी मैं वाँदर हाँ नें कर लियो। जद बाँण्यूं देखी अक हेलो करस्यूं तो न जाणाँ चोर मनै मार नाखसो, अर हेलो नै करयो तो धन ले जासी। जद वाँण्यूं आप-की लुगाई नै जगाई। चोर एक वखारी पर जार चड़ग्यो। बखारी मैं जा वैठ्यो। जद वाँण्यूं दीवो जोयो अर लुगाई नें कई मैं तो गंगाजी जास्यूं। एक छोटी सी गाँठ मैं कपड़ा लत्ता वाँदर त्यार हुयो। जद लुगाई बोली ओ भगत गंगा जी जावा को काँईं। दन्नूग्याँईं चल्या जाज्यो। ऐ समाँचार चोर

बैठ्यो बैठ्यो सुणै । जद वा लुगाई आपके हारके वारे अर आड़ोसी-पाड़ोस्याँ नै जगाया । म्हारो घरको धणी गंगाजी जाय छै वार ईं भगत सो थे चालर समझाओ के दन्नूरयाँईं चल्यो जाजे । जद दस वीस आदमी वाँण्याँ का घर में भेला हो ग्या अर सारा जणाँ वीं वाँण्याँ नैं समझायो वार तो रात छै, दन्नूरयाँईं थारी खुसी छै तो चल्यो जाजे । जद वो वाँण्यूं कई थे जाणूं मैं तो थाँ को कियो मान जास्यूं । पण ओ चोर गाँठ वाँद्याँ बैठ्यो, म्हारा सगला घर की ओ कियाँ रैलो । असी चालाकी वाँण्यूं कर र चोर नै पकड़ा दियो ।

किशनगढ़ी (अजमेर)

एक राजाकी बेटी में भूत आता-छो । ओर एक आदमी रोज खातो छो । राजा वारी वाँध दी छी । वारी सूं लोग जाता छा । एक दिन एक खुमारका बेटाकी वारी छी । अर ऊँ का घर में ऊँ दिन एक पावणो आयो । अ सारा रोवा लाग्या । जद ओ पूछी थे क्यूं रोवो छो । खुमारी बोली मारै एक ही बेटो छै । ओर ईं राजाकी बाई मैं भूत आवै छै । सो रोजीना एक आदमी खावै छै । सो आज मारा बेटाकी वारी छे । सो ओ ऊठै जासी । जद ओ खई तूं रोवे मत, थारा बेटाकी बदली हूं जाऊँ लो । रात होताँ ईं वो गयो । ओर आग पर एक दवाई रखता ईं भूत भागो । तड़कै ई जद भंगण भुआरवा नै गई तो बाई नै चोखी तरह सूं देखी । भंगण जार राजा नै खई । राजा हरकारो भेज खुमार नै पकड़ा बुलायो । राजा खई रात नै थारा बेटाकी वारी छी । सो काँईं करो । खुमार खई

माराज मारै एक पावणो आयो छै। जीण नै खनायो छो। राजा उग नै बुलायो और सारी हगीगत पूछी। ओर वाई ऊँ नै परणा दी और आधो राज दे दियो।

हाड़ोती (कोटा)

एक शहरमें दुरबल बरामण छो। वो रोजीना कण भिग-श्या कर कै आपको उदर पूरण करे छो। एक गाँवमें जावे तो भी तीन सेर बेकरड़ी आवे। दो गाँव जावे जब भी वो ही आवे। और ऊँ बरामण के एक लड़की कुंवारी छी। जब बरामणकी अस्त्रीने कही के म्हाराज आपणो भाग तो ई मुजब छै और ई कन्याका पीला हात काँई सूं कराँगा। जब बरामण बोल्यो अब मूं काँई करूँ। एक गाँव जाऊँ तो भी तीन सेर बेकरडी मिले और दो गाँव जाऊँ तो भी वो ही मिले। म्हारा सारा की काँई बात छै। बरामण की अस्त्री बोली म्हाराज थाँ सूं काँई भी उदम न होवे। और उपाइ करणो चाहिये। म्हनत करो जब सब कुछ हो। रगर म्हनत कुछ नहीं हो। भोत झगड़ो मचो। भौत दंगो कर्‍यो। जब बरामण के ताँई गुस्सो आयो। बरामण घर सूं नीकल कर परदेसमें चाल्यो। बीस कोस पर जार बचारीके कठी चालाँ। पाछे गेला गें बरड आई। वाहाँ एक सुन्दर बगीची ओर बावरी देखी। वाहाँ एक जोगीराज तपस्या कर रिया छा अर वाने समाद चड़ा रखी छी। बरामणने बचारी कै अब कठी चालाँ। अब तो संत जन मिल गिया। याँ की सेवा कराँगा। भगवान खाबाई भी देगो। जब या बचारी बरामण असतान बुहार कर सादूकी सेवामें बेट गियो। जब सेवा करतां भोत रोज हो

गिया तब सादूजी की पलक उगड़ी । जब बरामण सूं कही के बरामण तू माँग । म्हाँ की सेवा करता तेंई घणा दन हो गिया । जब बरामण ने कही म्हाराज काँई माँगू । म्हारे एक कुंवारी लड़की छे अठारा वीस बरस की जीं का पीला हात नहीं हुआ । सो म्हारी घरहालीके ओर म्हारे लड़ाई हो गई । जब म्हूं चल्यो आयो । कूंकी म्हारे पास काँई भी सरतन ने छो । जब संतजन ने फरमाई के ये चुंथी कागद की तू ले जा ओर शहरमें जार वेच दीजे । जाद्दा लोभ तो करजे मती । अर कन्याका पीला हात हो जावे उतना सा रुप्या ले काडजे । अर ऊँ चुंथीमें या वात लिखी छी के—

होत की वेण कु होत को भाई ।
पीर वेटी नार पराई ॥
जागे सो नर जीवे ।
सोवे सो नर मरे ॥
गम राखे सो आनंद करे ॥

जब यो चुंथी लेर बरामण शहरमें गियो । एक साहुकारका लड़का सूं जार कही के ये चुंथी आप ले खाड़ो ओर मेंई दो सो रुप्या दे खाड़ो । सो साहुकारका कुवरने ऊँ चुंथी में सीख को वाताँ मंडी देखर दो सो रुप्या तुरत दे खाड़्या । ओर चुंथी ले खाड़ी । ओर बरामण रुप्या लेर कन्या को व्याव वाँ रुप्या से कर दीनो ।

सोंढवारी (झालावाड़)

कंकड माथे पीपली रे वीरा, जणी पर चढ़ जोऊँ थारी वाट ॥
माँडी जायो चूनर लावीयो, माभी को भनवर गणे-मेलजे रे वीरा ॥

पंचोंमें राखो वाई री होव, माँडी जायो चूनर लावीयो ॥
लावो तो हगरा हारु लावजे रे वीरा, नहीं तर रीजे थारे देस ॥
माँडी जावीयो चूनर लावीयो, मेलूं तो ढल भराई वीरा ॥
ओढूं तो हीरा झर पड़े, माँडी जावीयो चूनर लावीयो ॥
नापूं तो हाथ पचास, तोलूं तो तोला तीह। माँडीजायो चूनर लावीयो॥

राजस्थानका साहित्य

साहित्य मनुष्यत्वकी कसौटी है। जिस जाति और देशका साहित्य जितना ही उच्च कोटिका होगा वह जाति और देश उतनी ही उच्च होगी। साहित्यका प्रभाव भूमंडलके इतिहासमें अद्वितीय है। साहित्यने कितनी ही महाजातियोंका निर्माण और विध्वंस किया है।

राजपूतानाको केवल यही गौरव नहीं प्राप्त है कि उसने अपनी कोखसे असंख्य वीरों तथा वीरांगनाओंको जन्म देकर भारतके इतिहासको समुज्ज्वल किया है, किन्तु उसमें हिन्दी साहित्यके प्राचीनतम कवियोंका आविर्भाव हुआ था। जोधपुरके सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ मुंशी देवीप्रसादजीने अपने एक लेखमें लिखा है—

"बहुतसे हिन्दी ग्रन्थ भाटोंके बनाए-विजयपाल रासा, हमीर रासा, बगड़ावत रासा आदि हैं, जिनमें थोड़े तो प्रसिद्ध हैं और बहुत अप्रसिद्ध हैं। जो प्रसिद्ध हैं, उनमें भी छपे बहुत थोड़े हैं। जो नहीं छपे हैं वे जगह-जगह बिखरे पड़े हैं, बहुत नष्ट भी हो गये हैं और बाकी हो रहे हैं। कोई उनका बचाने वाला नहीं।

"चारणोंने भी हिन्दीमें बहुत ग्रन्थ बनाए हैं, पर उनकी दशा भी भाटोंके ग्रन्थोंसे अच्छी नहीं है। इनमें वीररसके ग्रन्थ अधिक और शृङ्गार रसके कम हैं। वीररसका सम्बन्ध प्रायः इतिहाससे होता है। इसलिये इन ग्रन्थोंमें और चारणोंकी अन्य गीत-कविताओंमें इतिहासकी सामग्री बहुत ज्यादा है। यदि ये संग्रह किये जाँय तो भारतके इतिहासकी अन्धेरी कोठरीमें कुछ उजाला हो जाय।"

राजस्थानका अबसे १०० वर्ष पूर्व तकका साहित्य महाजातियोंके सजने योग्य साहित्य है। अबसे १०० वर्ष पूर्व तक मारवाड़ इस पुण्यभूमि भारतवर्षकी सशक्त भुजाके समान था। वह मर्दोंका देश था। वहाँ मर्द पैदा होते थे। वहाँके क्षत्रियोंके दरबारोंमें बारहठोंका सिंहनाद होता रहता था। राजस्थानके वीर उसीकी डोरी पर आगे बढ़ कर हाथ मारते थे, मरते थे और अपने आगे आनेवाली सन्तानके लिये एक सच्चा आदर्श छोड़ जाते थे।

राजस्थानी भाषाका साहित्य बहुत पुराना और विस्तृत है। जब भारतकी अन्य भाषायें गर्भमें ही थीं, राजस्थानीमें एक उत्कृष्ट साहित्यका निर्माण हो चुका था। केवल वीर-काव्य ही नहीं, छोटे-छोटे गीत भी वर्तमान थे। ये गीत बड़े ही लोकप्रिय होते हैं और जनताके हृदयोंको आकर्षित करनेकी शक्ति रखते हैं। "के गीतड़ा के भींतड़ा" यह कहावत राजस्थानके उज्ज्वल रत्नोंकी प्रकाशिका है।

राजस्थानकी कविता हमेशा जन-जन के मुंह पर रहती थी। पद्य साहित्य ही नहीं, गद्य साहित्य भी राजस्थानीमें शुरूसे ही लिखा जाता रहा है। माध्यमिक कालमें तो गद्यने बड़ी भारी उन्नति की थी।

यहाँ तक कि हिन्दीके प्राचीनतम गद्यके उदाहरण राजस्थानीके ही हैं। प्रत्येक राज्य अपनी-अपनी ख्यातें लिखवाया करता था। ये ख्यातें गद्यमें हुआ करती थीं। 'मूता नैणसी'की लिखी हुई राजस्थानी की एक प्रसिद्ध ख्यात है। राजस्थानीकी ये ख्यातें मध्यकालीन भारतके इतिहासके लिखनेमें अपूर्व सहायता दे सकती हैं। इसके अलावा राजस्थानीका कथा-साहित्य भी बहुत अधिक है। हजारों कहानियोंकी पुस्तकें राजस्थानीमें पाई जाँयगी। ये कहानियाँ किसी तरह भी 'बृहत्कथा संग्रह' की कहानियोंसे कम रोचक न होंगी। भाषाओंके उदाहरण देते समय हमने उनमें कुछ कहानियोंके ही नमूने दिये हैं। पाठक उनको पढ़ कर इस विषय पर स्वयं विचार कर सकते हैं। परन्तु इस साहित्यकी भी वही दशा है जो चारणों और बारहठोंके काव्योंकी है।

राजस्थानीका एक महाकाव्य महाकवि चंदका 'पृथ्वीराज रासो' है। यह हिन्दी साहित्यमें भी अपना शानी नहीं रखता। महाराज पृथ्वीराजने 'वेलि क्रिसन रुकमणीरी' नामक एक महाकाव्य लिखा है। ऐसे भक्तिपूर्ण काव्य भी बहुत कम देखने को मिलते हैं। कुछ वर्षों पूर्व बूंदीके चारण मिसर सूर्यमलने 'वंश भास्कर' नामक एक महाकाव्य लिखा है। बोल-चालकी राजस्थानीमें भी हजारोंकी तादादमें समय-समय पर गीत बने और कितने ही नष्ट भी हो गये। परन्तु, यदि आज भी उनका संग्रह किया जाय तो कई मोटी-मोटी जिल्दें भर जाँय।

राजस्थानीका सन्त-साहित्य भी कम नहीं है। मीराबाई,

दादूदयाल, चन्द्रसखी, वनानाथ, अमृतनाथ, सुन्दरदास, दरिया साहेब, चरणदास आदि अनेकों संत कवियोंने राजस्थानीमें कविता की है। आज उनकी कविताओंका घर-घर में प्रचार है। इन सबमें मारवाड़की प्रसिद्ध कवयित्री मीराबाईका नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके पदोंका एक बहुत बड़ा संग्रह हमारे इस ग्रन्थमें आ गया है। चन्द्रसखी और बख्तावर नामके दो बड़े ही भावुक कवि इस जमाने में हुए हैं। बख्तावरके बारेमें जब हमने पता लगाया तो कई व्यक्तियोंसे यही मालूम हुआ कि ये अलवरके महाराज थे। हमने इसी आधार पर इनको 'महाराजा बख्तावरसिंह' लिखा है। परन्तु निश्चित रूपसे कुछ भी नहीं मालूम हो सका। चन्द्रसखीने तो शिशु जीवनको चित्रित करनेमें ही कलम तोड़ दी है।

इस समयके दो और काव्योंका वर्णन करना भी आवश्यक है। पहला तो पद्मदास नामके एक माहेश्वरी वैश्य कविने लिखा है। उसका नाम 'रुक्मिणी मंगल' है। इसमें रुक्मिणी-हरणका विस्तृत वर्णन बड़ी ही सुललित भाषामें किया गया है। साधारण जन-समाज में आज भी इसका बहुत प्रचार है। मारवाड़ियोंके घरोंमें यह 'ब्यावलो' इसी नामसे प्रचरित हो रहा है। इसने लोगोंके हृदयमें स्थान पा रखा है। इसके गाने वाले इसीके जरिये सैंकड़ों रुपया पैदा करते हैं।

दूसरा महाकाव्य एक अज्ञात व्यक्तिका बनाया हुआ है। कई कहते हैं कि एक लकड़हारेने इसे बनाया है। इसका नाम 'नरसी जीरो माहेरो' है। 'रुक्मिणी मंगल' की भाँति इसका भी घर-घर

प्रचार है। कहते हैं कि मीराबाईने भी इस नामका एक ग्रंथ लिखा था।

इसी जमानेमें नीतिके वीसियों कवि किसनिया, छोटिया, केलिया, ईलिया, राजिया, भैरिया, फूसिया, बाघजी, वींझरा, दादुवा, जेठुआ, दानिया, नागजी, फारवस, नाथिया, नोपला, सगतिया, मोतिया, सोरठिया आदि हुए। इनकी कविता भी जन-जनके कण्ठों में विराजमान है। हिन्दीमें नीतिकार वहुत थोड़े हैं। परन्तु राज-स्थानमें तो घर-घर इन वीसों कवियोंकी कविताओंका प्रचार है।

अब हम आधुनिक राजस्थानीकी ओर झुकते हैं। यद्यपि राज-स्थानीका वर्तमान साहित्य वड़ी ही हीनावस्थामें है, परन्तु तो भी कई उत्कृष्ट लेखक, कवि, नाटककार इस जमानेमें भी हुए। प्रेमसुख भोजक, वजीरा तेली, नानिया राणा, इन तीनों कवियोंने अपनी अपनी लेखनीसे वड़े ही रसीले और वेजोड़ ख्याल राजस्थानी भाषामें लिखे। इनके जोड़के रसपूर्ण काव्य हिन्दीमें भी बहुत कम देखनेको मिलते हैं। इस समयके सबसे वड़े लेखक शिवचन्द्रजी भरतिया हुए। आपने राजस्थानीमें नाटकोंका सूत्रपात्र किया और आधुनिक भावोंको साहित्यमें भरनेका खूब प्रयत्न किया।

अब हम यहाँ राजस्थानमें प्रचलित कुछ दोहे, सोरठे और गीत देते हैं। जिनसे पाठकोंको राजस्थानके साहित्यका महत्व और भी विशेष रूपसे मालूम होगा और वे समझेंगे कि राजस्थानका साहित्य राजस्थानियोंके लिये तो गर्व की वस्तु है ही, परन्तु सारा भारत भी उसके लिये गर्व कर सकता है :—

एक चारण कविने कहा है—

कीधा कर करतार, किरमर कारण करमसी ।
सह देख संसार, चमर हुलावस मुचवी ॥

मारवाड़के राठौड़ राव चन्द्रसेन बड़े मानी राजा थे। जोधपुर छूट जाने पर भी ये अपने जीवन भर अकबरसे लड़ते रहे। परन्तु इनके पोते राव कर्मसेन जहाँगीरके अधीन हो गये थे। बादशाहने इनको अपने पास रख लिया था। एक दिन बादशाह हाथी पर सवार हुए तो उनको चँवर लेकर पीछे बैठनेके लिये कहा। कर्मसेन इस तरह बैठने पर राजी हो गये। परन्तु, यह बात एक चारणके हृदयमें खटकी। उसे अपना जातीय कर्त्तव्य स्मरण हो आया तब उसने उपरोक्त दोहा पढ़ा—

"हे कर्मसेन, परमात्माने तो हाथ तलवार चलानेके लिये ही दिये हैं। तू कैसे चँवर हिलायगा। यही तो सारा जगत् देख रहा है, जो मैं कहता हूं।"

इस सोरठेका सुनना था कि कर्मसेनके शरीरमें बीजली दौड़ गई, वे हाथीसे कूद पड़े और तलवार लेकर घोड़े पर सवार हो गये। तब समझदार बादशाहने भी कहा कि, कर्मसेन मुझे भी तुमसे तलवारका ही काम लेना है। यह मेरी गलती थी जो, तुम्हें चँवर दुलाने के लिये बैठाया।

इस विषयका एक दोहा और भी है—

कम्मा उग्रसेन रो, तो जननी बलिहार।
चमर न झले साहरा, तू झले तलवार ॥

कहते हैं कि यह दोहा कर्मसेन की माने कहकर भेजा था।

तीखा भालां तोल, वैर सचो जो वाल जो।
मिसलाँ माँडे मोल, मूलारो करजो मती॥

'तीक्ष्ण भाले तोलकर, सराहने योग्य वैर लेना। मिसलें लिख लिख कर मूलजी का मोल मत करना। अर्थात् रुधिर के वदले द्रव्य मत ले लेना।' इस पर भी एक कथा है-

मूलजी नाम का एक जोधा राठौड़ था। वह मेड़किया का रहने वाला था। वह वीकानेर के वीदा राठौड़ों के हाथसे मारा गया। इसपर जोधा और वीदा राठौड़ों में दुश्मनी हो गई। वात यहाँ तक वढ़ी, कि, वे दोनों कई वर्षों तक आपसमें लड़ते रहे। उनकी खून खरावी और लूटमारसे प्रजा की भी हानि होती थी। अंतमें जोधपुर और वीकानेर दोनों रजवाड़ों ने एक पंचायत वुलाई दोनों ओर के व्यक्ति एकत्र हुए। मिसलें पढ़ी जाने लगी और संधि कर लेने पर विचार होने लगा। यह देखकर एक चारण ने उपरोक्त सोरठा पढ़ा। इसके सुननेके साथही मूलजी के निरपराध मारे जाने की वात याद करके जोधा राठौड़ोंके प्रतिनिधि तलवार पर हाथ रख कर उठ खड़े हुए और वहाँसे चले आए। पंचायत अधूरी ही रह गई। खैरियत यही थी कि वीदावतोंको जोश नहीं आया, नहीं तो, आपसमें कट मरने की तैयारी इसी एक सोरठेसे हो चुकी थी।

सोढ़े ऊमर कोटरो, यौं बाही अब यट्ट।
जाने वेहू भाइए, आथ करी वे वट्ट॥

'ऊमर कोटाके सोढ़ाने ऐसी तलवार चलाई कि जिससे शत्रुके दो टुकड़े ऐसे बराबर-बराबर के हो गये कि मानो दो भाइयों ने पैतृक धनको बाँटा हो।' इस दोहेके सम्बन्ध की एक कथा है—

एक क्षत्रिय बालकको काशीके एक पंडित ब्रजभाषाकी कवितायें पढ़ाया करते थे। एक दिन वे पढ़ा रहे थे—

मृगनयनीके नयन तैं, मयन अयन मन होत।

उस बालक की मा बैठी हुई यह सुन रही थी। यह दोहा उसको इतना बुरा लगा कि किसी बाँदीके द्वारा न कहलाकर वह स्वयं ही परदेमें से बोल उठी-पंडितजी, मेरे बेटेको यह क्या पढ़ाते हो? जो मैं कहूं वैसे दोहे पढ़ाओ और उनका अर्थ समझाओ। यह कह कर उसने उपरोक्त दोहा पढ़ा। पंडितजी बहुत झिझके।

महाराणा प्रतापकी मृत्यु पर एक कविने लिखा है—

अस लेगो अण दाग, पाघ लेगो अण दागी।
गैरा आडा गवड़ाय, जिको वहतो धुर वामी॥
नवरोजे नह गयो, न गो आतसाँ नवल्ली।
न गो झरोखाँ हठे, दुनियाण जेठ दहल्ली॥
गहलोत-राण जीती गयो, दसण मूंद रसना डसी।
नीसास मूंक भरिया नयन, तो मृत शाह प्रतापसी॥

"हे गहलोत राणा! न तो तेरा घोड़ा ही दागा गया और न तेरी पगड़ी ही झुकी, तैंने बाएँ कन्धेसे राज्यके धुरे को वहन किया। न तू नौरोजमें गया, न हरममें, न झरोखोंके नीचे। तेरा सिक्का दुनियामें बैठ गया, तू विजयी हुआ। तभी तो तेरी मृत्युका संवाद

पाकर बादशाहने आँसू बहाए, दाँतोंसे जीभ काटी और सिसकारी भरी।"

उदयपुरके एक महाराणाको वहाँ के एक चारणने नीचे लिखी चेतावनी देकर सावधान किया था। वह कविता मेवाड़में बहुत प्रसिद्ध है। उसके कुछ पद्योंका नमूना नीचे दिया जाता है।

सौराष्ट्री दोहा (सिंधु राग)

पग-पग भम्याँ पहाड़, धरा छाड़ राख्यो धरम।
(इँशूं) महाराणार मेवाड़, हिरदै बसिया हिन्दरै ॥१॥
घण घलिया घमशाण, राण सदा रहिया निडर।
(अब) पेखन्ताँ फुरमाण, हलचल किम फतमल ! हुवै ॥२॥
गिरद गजाँ घमशाण, नहचै धरमाई नहीं।
(ऊ) मावै किम महाराण, गज दो शैरा गिरदमें ॥३॥
ओराँ ने आशाण, हाकाँ हरबल हालणो।
किम हालै कुल राण, (जिण) हरबल शाहाँ हक्किया ॥४॥
नरियन्द शह नजराण, झुक करशी-शरशी जिकाँ।
(पण) पशरेलो किम पाण, पाण छताँ थारो फता ॥५॥
शिर झुकिया शहंशाह, शिंहाशण जिण शाँम्हनैं।
(अब) रलणौ पङ्गत-राह, फाव किम तोनें फता ! ६ ॥
शकल चढ़ावै शीश, दान-धरम जिणरो दियो।
शो खिताब बखशीश, लेवण किम ललचावसी ॥ ७ ॥
देखेला हिन्दवाण, निज शूरज दिश नेहशूं।
पण तारा परमाण, निरख निशाशा न्हाँकशी ॥ ८ ॥

देखे अञ्जश दीह, मुलकेलो मन ही मनाँ ।
दम्भीगढ़ दिल्लीह, शीश नमन्ताँ शीशवद ! ६ ॥
अन्त वेर आखीह, पातल जे वाताँ पहल ।
(वे) राणा शह राखीह, जिणरी शाखी शिर जटा ॥१०॥
कठिण जमानो कोल, वाँधे नर हीमत विना ।
(यो) वीराँ हन्दो वोल, पातल शाँगे पेखियो ॥११॥
अब लग शाराँ आश, राण रीत कुल राखशी ।
रहो रहाय सुख-राश, एक लिङ्ग प्रभु आपरे ॥१२॥

कोई योद्धा लड़ाईमें घायल होकर घर पर आया है। घरमें चारण उसकी वीरताका वर्णन कर रहा है। यह देखकर उस वीरकी स्त्री कहती है :—

तन तलवाराँ तिलछियो, तिल तिल ऊपर सीव ।
आला घावाँ ऊठसी, छिन एक ठहर नकीव ॥

'हे चारण ! मेरे पतिका शरीर तलवारके वारोंसे टुकड़े टुकड़े हो गया है, वह एक एक तिलकी दूरी पर सिला हुआ है। तेरी जोश-मयी कविता सुनकर वह गीले घावों ही से उठ खड़ा होगा। अतः तू जरा ठहर जा।'

धर धरती पग पागड़े, अरियाँ तणों गरड्ड ।
हजू न छोड़े साहवा, मूछाँ तणों मरड्ड ॥

'युद्धमें लड़ते-लड़ते धड़ पृथ्वी पर आ गया। पैर रिकावमें है दुश्मनोंने चारों तरफ से घेर रखा है। फिर भी मेरे मालिक मूछोंका मरोड़ना नहीं छोड़ते।'

मिले सिंह वन माँह, किण मिरगा मृगपति कियो।
जोरावर अति जाह, रहै उरध गति राजिया॥

'राजिया कहता है—वनमें किसने सिंहको मृगपति बनाया है? बलवान् पुरुषोंकी स्वभावतः ही ऊर्ध्व गति होती है।'

वरसाँ वीस पचीसमें, जाग सकै तो जाग।
जोवन दूध उफाँण ज्यूं, जासि ठिकाने लाग॥

'वीस पचीस वरसमें तुझे जागना हो तो जाग। नहीं तो, यह यौवन दूधके उफानकी तरह ठिकाने लग जायगा।'

आवे वस्तु अनेक, हद नाणो गाढ़े हुवे।
अकल न आवै एक, क्रोड़ रुपीये किसनिया॥

'किसनिया कहता है—अनेक वस्तुयें आ सकती हैं, धन भी बहुत आ सकता है। पर करोड़ों रुपये खर्च करने पर भी अकल नहीं आ सकती।'

सम्पति में संसार, हर कोई हेतू हुवे।
विपति पड़्यां री वार, नैन न जोवै नाथिया॥

'नाथिया कहता है—सम्पतिमें तो सभी हितैषी बनते हैं, पर विपत्ति पड़ने पर कोई आँख उठा कर भी नहीं देखता।'

सुक पिक लगै सुवाद, भल थोड़ो ही भाखणो।
वृथा करें बकवाद, भेक लवे ज्यूं भैरिया॥

'भैरिया कहता है—थोड़ा बोलने पर भी तोता और मैनाकी वाणी सुहावनी मालूम पड़ती है। पर मेढक व्यर्थ ही बकवाद करता है।'

सपना सो संसार, जाणे पण भूले जुगत ।
आणे गरव अपार, छिन भर में नर छोटिया ॥

'छोटिया कहता है–यह संसार स्वप्नवत् है, यह जानते हुए भी संसार भूल जाता है और क्षणभर में अपने हृदय में असीम घमंड पैदा कर लेता है ।'

चकवा, सारस वाण, नारि नेह तीनू निरख ।
जीणो मुसकल जाण, जोड़ी बिछुड़्याँ जेठवा ॥

'जेठवा कहता है–चकवा, सारस और स्त्री के प्रेमका यह स्वभाव होता है कि जोड़ी बिछुड़ने पर इनका जीना कठिन हो जाता है ।'

खड्ग धार पर काह, चाले तो चलवो सहल ।
मुसकल जगरे माँह, नेह निभाणो नागजी ॥

'नागजी कहते हैं--तलवार की धार पर चलना सहज है । पर संसार में प्रेम निवाहना कठिन है ।'

तुलै न परवत तोल, मोल नहीं मूरख तणों ।
वड़े मिनखरा बोल, नग नग भारी नोपला ॥

'नोपला कहता है—मूर्खकी बात चाहे पर्वतसे भी भारी हो, पर उसका कुछ मूल्य नहीं । पर सज्जनोंकी वाणी नग बराबर भी हो, तो वह भारी है ।'

ऊँचो घणों अवास, अलगे सूं दीसे अजब ।
घरनी विन घरवास फीको लागे फूसिया ॥

'फूसिया कहता है—घर कितना ही ऊँचा हो और दूरसे सुन्दर दिखाई पड़ता हो । पर स्त्रीके विना घरका बसना फीका लगता है ।'

अब गीतोंके नमूने लीजिये—

महाराणा प्रतापके विषयमें किसी चारणने यह गीत बनाया है—

आलापै राग गारडू अकबर, दै पैंतीस असट कुल दाव।
राण सेस वसुधा कथ राषण, राग न पांतरियो अहराव ॥१॥
मिणधर छत्रधर अवर गेल मन, ताइधर रजधर सींधतण।
पूंगी दल पतसाह पेरतां, फेरै कमल न सहँसफण ॥२॥
गढ़ गढ़ राफ राफ मेटे गह, रेण षत्री ध्रम लाज अरेस।
पंडर वेस नाद अण पीणग, सेस न आयो पतो नरेस ॥३॥
आया अन भूपत आवाहण, भुजँगे भजँग तजे वल भंग।
रहियो राण षत्री ध्रम राखण, सोत उरंग कलोधर संग ॥४॥

'अकबर रूपी काल बेलियेने क्षत्रियोंके पैंतीस वंशों रूपी आठ कुलोंके सर्पों पर दाव दे दिया, परन्तु पृथ्वी पर कथा रखनेके लिये सर्पराज रूपी महाराणा प्रतापसिंह अकबरके गानेसे अपने कुलको नहीं भूला ॥ १ ॥

'मणियोंके धारण करने वाले अन्य सर्पों रूपी राजाओंके मन डुल गये परन्तु शत्रुओंको धारण करनेवाले वीर और रजोगुणको धारण करनेवाले शेषनाग रूपी महाराणा प्रतापने बादशाहकी सेना रूपी पूंगीकी प्रेरणासे मस्तक नहीं हिलाया ॥ २ ॥

'अन्य गढ़ों गढ़ोंमें मुसलमानी धर्मके विरोधियोंका घमंड मेट दिया, परन्तु क्षत्रिय-धर्मकी लज्जामें निष्कलंक श्वेत वेश वाला और पूंगीके नादको नहीं पीनेवाला शेषनाग रूपी महाराणा प्रताप नहीं आया ॥ ३ ॥

'बुलाने से सब राजारूपी सर्प बल हीन होकर आ गये, क्षात्र-धर्मका रक्षक शेषनाग रूपी महाराणा प्रताप नहीं आया ॥ ४ ॥'

डींगलके सर्वश्रेष्ठ कवि महाराजा पृथ्वीराजजी के एक गीतका भी रसास्वादन कीजिये :—

नर तेथ निमाणा निलजी नारी, अकबर गाहक वट अवट ।
चोहटै तिण जायर चीतोड़ो, वेचै किम रजपूत वट ॥ १ ॥
रोजायतां तणैं नवरोजैं, जेथ मुसाणा जणो जण ।
हींदू नाथ दिलीचे हाटे, पतो न परचै पत्रीपणा ॥ २ ॥
परपँच लाज दीठ नह व्यापण, पोटो लाभ अलाभ परो ।
रज वेचवाँ न आवै राणो, हाटे मीर हमी हरो ॥ ३ ॥
पेपे आपतणा पुरसोतम, रह अणियाल तणैं वल राण ।
पत्र वेचिया अनेक पत्रियाँ, पत्रवट थिर राखी पूमाण ॥ ४ ॥
जासी हाट वात रहसी जग, अकबर ठग जासी एकार ।
रह रापियो पत्री ध्रम राणै, सारा ले वरतो संसार ॥ ५ ॥

"जहाँ पर मानहीन पुरुष और लज्जाहीन स्त्रियाँ हैं और अकबर जैसा ग्राहक है, उस चौपड़के बाजारमें जाकर चित्तोड़का स्वामी रजपूतीका हिस्सा कैसे विक्रय करेगा ॥१॥

'मुसलमानोंके नवरोजेकी जगह प्रत्येक व्यक्ति लुट गया परन्तु हिन्दुओंका पति प्रतापसिंह उस दिल्लीके बाजारमें अपने क्षत्रिय पनको क्यों खरचैं ॥२॥

'वंश लज्जासे भरी दृष्टि पर अन्यका प्रपञ्च नहीं व्यापता है इसीसे पराधीनताके सुखके लाभको बुरा और अलाभको अच्छा

समझ कर बादशाही दुकान पर रज बेचनेके लिये हम्मीरका पोता राणा प्रतापसिंह कदापि नहीं आता ॥३॥

'अपने पुरुषाओंका उत्तम कर्त्तव्य देखते हुए महाराणाने भालेके वलसे क्षत्रिय धर्मको अचल रक्खा और अन्य क्षत्रियोंने अपने क्षत्रियत्वको विक्रय कर डाला ॥४॥

'ठग रूपी अकवर भी एक दिन इस संसारसे कूंच कर जावेगा और यह हाट भी उठ जावेगी परन्तु संसारमें यह वात अमर रह जावेगी कि क्षत्रियोंके धर्ममें रहकर उस धर्मको केवल राणा प्रताप-सिंहने ही रक्खा। अव पृथ्वीभरमें सवको उचित है कि उस क्षत्रियत्वको अपने वरतावमें ले ॥५॥"

कविवर आढा दुरसाजीका वनाया एक गीत और सुनिये—

आयाँ दल सवल सामहो आवै, रंगिये खग खत्रवाट रतो।
ओ नरनाह नमो नह आवै, पत साहण दरगाह पतो ॥ १ ॥
दाटक अनड दण्ड नह दीधो, दोयण घड सिर दाव दियो।
मेल न कियो जाय बिच महलाँ, कैल पुरै खग मेल कियो ॥२॥
कलमां वाँग न सुणिये काना, सुणिये वेद पुराण सुभै।
अहडो सूर मसीत न अरचै, अरचै देवल गाय उभै ॥ ३ ॥
असपत इन्द्र अवनि आह्वडियाँ, धारा झडियाँ सहै धका।
धण पडियाँ साँकडियाँ घडियाँ, ना धीहडियाँ पढी नका ॥४॥
आखी अणी रहै ऊदावत, साखी आलम कलम सुणो।
राणै अकवर वार राखियो, पातल हिन्दू धरम पणो ॥ ५ ॥

'क्षात्र-धर्म-परायण महाराणा प्रताप वादशाह की चतुरङ्गिणी सेनाके आने पर ही शत्रुओंके शोणितसे रंगे हुए खड्गको धारण करके उन्हींके सम्मुख जाता है। परन्तु अपने अभिमानको छोड़, शिर झुका कर वादशाहके दर्वारमें नहीं जाता ॥१॥

'वैरियोंको रोकनेके लिये विजयशाली अनड (अनम्र) वीरने कभी नजराना नहीं दिया किन्तु शत्रुओंकी सेनाके सिरों पर धावा ही दिया। केलपुरा राणा महलोंमें जाकर वादशाहसे नहीं मिला प्रत्युत खड्गोंसे ही मेल किया ॥२॥

'ऐसा धीर और वीर महाराणा अपने कानों यवनोंका वाँग मारना नहीं सुनता किन्तु परम पावन वेद और पुराणोंके उपदेश ही श्रवण करता है ॥३॥

'इन्द्ररूपी वादशाह जव-जव कोप करके आडम्बर सहित घटाएँ वांध कर आक्रमण करता है तव-तव धारा रूपी खड्ग धाराओं की झाड़ीमें धक्का सहता है। अनेक वार घणी साँकड़ी घड़ी पड़ने पर अर्थात् घोर विपत्ति उपस्थित होने पर भी उसको सह लिया, पर अपनी मर्यादा नहीं छोड़ी। उस वीर महाराणाकी वंशज पुत्रियोंने दिल्ली जाकर नका नहीं पढ़ी ॥४॥

'ऊदावत महाराणा प्रताप हमेशा ही अग्रगण्य रहा। सारा संसार और विशेप कर यवन भी इस वातके साक्षी हैं कि अकवरके विकट समयमें भी महाराणा प्रतापसिंहने हिन्दुओंके धर्मको यथावत् पालन किया ॥५॥'

ऐसे-ऐसे अगणित गीत राजस्थानमें प्रचलित हैं।

अब दूसरे प्रकारके गीतोंका नमूना लीजिये जो मारवाड़ी समाज की स्त्रियाँ बराबर किसी न किसी बहाने गाती रहती हैं—

मधुवन रो ए आँबो मोरियो, ओ तो पसरयो ए सारी मारवाड़ ।
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥१॥

वहू रिमझिम महलाँसे ऊतरी, बहू कर सोळा सिणगार ।
सासूजी पूछया ए वहू थारे गेणो ए म्हाँने पैरि दिखाव ॥
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥२॥

सासू गहणा नै के पूछो, गहणो म्हारो सो परिवार ।
म्हारा सुसराजी गढ़ रा राजवी, सासूजी म्हारी रतन भण्डार ॥
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥३॥

म्हारा जेठजी वाजूबन्द बाँकड़ा, जिठाणी म्हारी बाजूबन्दकी लूँब ।
म्हारो देवर चुड़लो दाँतको, द्योराणी म्हारी चुड़लाँ री टीप ॥
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥४॥

म्हारो कँवरजी घर रो चांदणो, कुल वहू ए दिवलेकी जोत ।
म्हारी धीयज हाथ री मूंदड़ी, जँवाई म्हारे चमेल्याँरो फूल ॥
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥५॥

म्हारी नणद कसूंमल काँचली, नणदोई म्हारो गजमोत्याँरो हार ।
म्हारो सायव सिरको सेवरो, सायबाणी म्हें तो सेजाँरा सिणगार ॥
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥६॥

म्हें तो वार्याजी वहूजी थारे बोलनै, लडायो म्हारो सो परिवार ।
म्हें तो वार्याजी सासूजी थारी कूखनै, थे तो जाया अर्जुन भीम ॥
सहेल्याँ ए आँबो मौरियो ॥७॥

म्हे तो वार्याजी बाईजी थारी गोद नै थे खिलाया लिछमण राम।
सहेल्याँ ए आँबो मोरियो ॥८॥

'मधुवनमें आम बौरा है। यह तो सारे मारवाड़में फैल गया है। हे सहेलियो! आममें बौर आया है ॥१॥

'बहू सोलह शृङ्गार करके रिम-झिम करती हुई महलसे उतरी। सासने पूछा—हे बहू! तुम्हारे गहने पहन कर मुझे दिखावो ॥२॥

'बहूने कहा—हे सासूजी! मेरे गहनोंकी बात क्या पूछती हो? मेरा गहना तो सारा परिवार है। मेरे ससुरजी घरके राजा हैं और सासूजी रत्नोंकी भण्डार ॥३॥

'मेरे जेठजी बाजूबन्द हैं और जेठानीजी बाजूबन्दकी लूँम। मेरा देवर मेरी हाथी दाँतकी चूड़ी है और देवरानी उसकी टीप ॥४॥

'मेरा पुत्र घरका उजियाला है और पुत्र-वधू दियेकी जोत। मेरी कन्या हाथकी अंगूठी है और मेरा जँवाई चमेलीका फूल है ॥५॥

'मेरी ननद कसुम्मी चोली है और ननदोई गजमुक्ताओंका हार। मेरे पति सिरके सेहरा हैं और मैं उनकी सेजका शृङ्गार हूं ॥६॥

'इस पर सासने कहा—बहू! मैं तुम्हारे बोल पर निछावर हूं। तूने मेरे सारे परिवारको लडाया है अर्थात् प्यार किया है। बहूने उत्तर दिया सासूजी! मैं तो तुम्हारी कोख पर निछावर हूं। तुमने तो अर्जुन और भीम जैसे पुत्र पैदा किये हैं ॥७॥

'और हे ननद! मैं तुम्हारी गोद पर निछावर हूं। तुमने राम और लक्ष्मण ऐसे भाइयोंको गोदमें खिलाया है।"

अहा! कैसा सुन्दर भाव है।

ऊपर जो उदाहरण दिये गये हैं वे खिचड़ीके केवल एक चावलके बराबर हैं। ऐसे-ऐसे हजारों गीत और दोहे राजस्थानके गाँव-गाँवमें खोजने पर मिलेंगे।

मारवाड़ी–भजन–सागर

'मारवाड़ी–भजन-सागर'का प्रकाशन इस दिशामें हमारा प्रथम प्रयास है। इसमें राजस्थानके प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध कवियोंकी कविताओंका संकलन किया गया है। विज्ञ पाठकोंको जहाँ बहुत ऊँचे दर्जे की कविताओंका संकलन मिलेगा, वहाँ साधारण भजनोंका समावेश भी मिलेगा, परन्तु हम जिस महद् उद्देश्यको लेकर इस ओर अग्रसर हुए हैं, उसको लक्ष्यमें रख कर उन अप्रसिद्ध कवियोंको कीर्तिकी अवहेलना नहीं कर सके, जिनकी कविताओंमें काव्यके गुण तो नहीं है, किन्तु उनके कवित्वहीन भजन आज भी मारवाड़ी–स्त्री-पुरुषों के कण्ठों पर विराजमान हैं। इसीलिये इस पुस्तक का नाम 'भजन-सागर' रखा गया है। समुद्रमें रत्न और हीरोंके सिवा कोकले और पत्थर भी होते हैं, लेकिन उनकी भी उपयोगिता है।

इस पुस्तकमें राजपूतानाके कवियोंकी भक्तिपूर्ण कविताओंको ही स्थान दिया गया है। राजपूतानाके चमत्कारी कवियोंका साहित्यिक गद्य-पद्यमय चमत्कार, दूसरी पुस्तकोंके लिये सुरक्षित है। आशा है मारवाड़ी समाजमें गन्दे गीतों और सीठनोंके स्थानमें इन भगवद्-भजनोंका ही प्रचार होगा। हमने राजपूतानाके प्रायः अनेक कवियोंकी कविताओंका पाठकोंको रसास्वादन करानेकी चेष्टा की है। हमारी भूल और भ्रमसे यदि किसी नामी कविकी कविता छूट

गई हो, तो विद्वज्जनोंसे हम अपने स्वल्प ज्ञानके लिये क्षमा मांगते हैं।

जिन लेखकोंकी पुस्तकों, अन्वेषकोंके ग्रन्थों, रिपोर्टोंसे इसके संकलनमें सहायता ली गई है तथा जिन चारणों, भाटों और पुण्य-मयी वृद्धा माताओंसे सुनकर इसमें अनेक भजनोंका संकलन किया गया है, उनके प्रति यह अकिञ्चन संकलनकर्त्ता हार्दिक श्रद्धा प्रकट करता है। कई अन्तरङ्ग मित्रों और गुरुजनोंसे परामर्श और उत्साह मिला है, उनका भी संकलनकर्त्ता कृतज्ञ है। बाबू श्री भगवतीप्रसादजी दारूकाने इसके आरम्भिक संकलनमें सहायता दी है, इन पंक्तियों का लेखक उनका भी अनुगृहीत है।

कलकत्तेके मारवाड़ी समाजके विद्वान्, प्रसिद्ध नेता राय बहादुर बाबू रामदेवजी चोखानीके प्रति भी यह संकलनकर्त्ता अपनी आन्तरिक श्रद्धा प्रकट करता है, जिन्होंने इस दिशामें अग्रसर होकर काम करनेका उत्साह प्रदान किया है।

कवियोंकी जीवनी

अग्रदास

ये भक्तवर नाभादासजीके गुरु और तुलसीदासजीके सम सामयिक थे। ये रामके उपासक थे। ये आमेर या जयपुर राज्यान्तर्गत 'गलता'' नामक स्थानके रहनेवाले थे और संवत् १६३२ के लगभग वर्तमान थे। इनकी वनाई हुई चार पुस्तकोंका पता है। उनके नाम ये हैं :—

(१) हितोपदेश उपखाणा वावनी (२) राम ध्यान मंजरी
(३) ध्यान मंजरी (४) कुण्डलिया

अमृतनाथ

आपका जन्म पिलाणीमें सं० १६०६ चैत्र शुक्ला १ को चेतनराम जाटके घर हुआ। वाल्यावस्थासे ही आप विरक्त थे। माता पिताके लाख कहने पर भी आपने अपना विवाह नहीं किया। संवत् १६४५ में आपकी माताका देहान्त हो गया। तबसे आपकी विरक्ति और भी वढ़ गई और आप तीर्थाटनके लिये निकल पड़े। घूमते हुए आप रीणी (वीकानेर) पहुंचे और नाथ संप्रदायके गुरु चम्पानाथ जी महाराजके शिष्य हो गये। उस समय आपकी आयु लगभग ३६ वर्ष की थी। इसके वाद फिर भ्रमणार्थ चल पड़े। अन्तमें संवत् १६६६ में आप निश्चिन्त रूपसे फतहपुर (सीकर) में बस गये। वहाँ

कई धनी मानियोंने आपके रहनेके लिये एक आश्रम वनवा दिया। आपकी योग सिद्धिके वारेमें कितनी ही वातें प्रचलित हैं। आपका देहावसान संवत् १९७३ में आश्विन पूर्णिमा, वुधवार के दिन हो गया। इसकी सूचना आपने अपनी शिष्यमंडलीको पहले ही दे दी थी। आपका समाधि मंदिर अभी तक फतहपुरमें वर्तमान है।

ऊमरदानजी चारण

आप जोधपुर के निवासी थे। आपकी सारी कविता शुद्ध डिंगल भाषामें है। आप आर्य्य-समाजके भी समर्थक थे। आपके मरनेपर आपकी कविताओंका संग्रह दो भागोंमें "ऊमर काव्य" के नामसे आर्य-समाज जोधपुरने प्रकाशित किया है। आप संवत् १९५० के लगभग वर्तमान थे।

एक सीकर निवासी

आपके नाम और जातिका पता नहीं लगा। आपकी एक कविता कलकत्तेके पुराने अखवार "वैश्योपकारक" में छपी थी उसीसे लेकर दी गई है। आपके विषयमें और किसी वातका पता नहीं।

अम्बिकादत्त व्यास

आपका जन्म संवत् १९१५ चैत्र शुक्ला ८ को जयपुरमें हुआ। आपके पिताका नाम पण्डित दुर्गादत्तजी था, जो दत्त कविके नामसे प्रसिद्ध हैं। आप दस वर्षकी उम्रमें ही कविता करने लगे थे। आप की कविताको सुनकर लोग आश्चर्य किया करते थे। जिस समय आपकी उम्र १२ वर्ष की थी तभी एक तैलंग वृद्ध अष्टावधान काशीमें

आये और भारतेन्दु हरिश्चन्द्रके यहाँ अपना कौशल दिखलाया। भारतेन्दुजी ने पण्डितोंकी ओर देख कर कहा कि इस समय कोई काशीवासी भी कोई चमत्कार इनको दिखलाते तो काशीका नाम रह जाता। यह सुनकर आपके पिताने आपको आगे कर दिया और आपने अपना कौशल दिखलाया। इस पर बाबू हरिश्चन्द्रजी ने आपको "काशी-कविता-वर्द्धिनी-सभा" से सुकवि पद दिलाया।

आप सनातन धर्मके बड़े भारी प्रचारक थे। पोरबन्दरके गोस्वामी वल्लभ कुलावतंस श्री जीवनलाल जी महाराजके साथ आप कलकत्ते आये थे। उस समय आपने विभिन्न विषयों पर २८ वक्तृताएँ दी थीं। कई सभाओंमें बंगदेशीय पण्डितोंसे तो गहन शास्त्रार्थ तक किया।

आपने काशीसे वैष्णव पत्रिका नामक एक मासिक पत्र भी निकाला था। आप २४ मिनटमें १०० श्लोक बना लेते थे। यह देख कर काशीकी ब्रह्मामृत-वर्षिणी-सभाने सं० १९३८ के माघ मासमें आप 'घटिका शतक' पद सहित एक चांदीका पदक दिया। इसी तरह आपको "भारत रत्न" तथा 'विहार भूषण' आदि कई उपाधियाँ विभिन्न सभा सोसाइटियोंसे मिली।

विहारमें जो सबसे बड़ा काम व्यास जी ने किया, वह 'संस्कृत-संजीवनी-समाज' का स्थापित करना है। इस समाजके द्वारा विहार की अनिश्चित शिक्षा प्रणालीका ऐसा सुधार हुआ कि जिससे अब सैंकड़ों छात्र प्रति वर्ष संस्कृत शिक्षा पाकर उपाधि प्राप्त करते हैं। व्यासजी अनेक गुणोंके लिये प्रख्यात थे, राजा महाराजाओंसे

सम्मानित किये जाते थे। संस्कृतके सिवा बंगला, गुजराती, अंग्रेजी और मराठी आदि भाषायें भी जानते थे, किन्तु इतने पर भी धनाभावसे दुखी रहते थे।

आपने सं० १९५७ (१९ नवम्बर सन् १९००) में काशीमें अपना शरीर त्याग किया।

व्यासजीने छोटी बड़ी सब मिलाकर कुल ७८ पुस्तकें लिखी हैं। उनमेंसे कुछ प्रकाशित, कुछ अप्रकाशित और कुछ अधूरी हैं। यहाँ उनके नाम दिये जाते हैं।

प्रस्तार दीपक, गणेश शतक, शिव विवाह, सांख्य सागर सुधा, पातंजल प्रतिबिम्ब कुण्डली दर्पण, सामवत नाटक, इतिहास संक्षेप, रेखागणित श्लोकबद्ध, ललिता नाटिका, रत्नपुराण, आनन्दमंजरी, चिकित्सा-चमत्कार, अबोध निवारण, गुप्ता शुद्धि प्रदर्शन, ताश कौतुक पचीसी, समस्यापूर्ति सर्वस्व, रसीली कजरी, द्रव्य स्तोत्र, चतुरंग चातुरी, गो संकट नाटक, महा ताश कौतुक पचासा, तर्क संग्रह भाषा टीका, सांख्य तरंगिणी, क्षेत्र कौशल, पण्डित प्रपंच, आश्चर्य वृतान्त, छन्दः प्रबन्ध, रेखागणित भाषा, धर्म्म की धूम, दयानन्द मत मूलोच्छेद दुःख द्रुम कुठार, पावस पचासा, कलियुग आँधी, दोषग्राही ओ गुण-ग्राही, उपदेश लता, सुकवि सतसई, मानस प्रशंसा, आर्य्यभाषासूत्र-धार, भाषा भाष्य, पुष्प वर्षा, भारत सौभाग्य, बिहारी बिहार, रत्नाष्टक, मनकी उमंग, कथा कुसुम, पुष्पोपहार, मूर्ति पूजा, संस्कृताभ्यास पुस्तक, कथा कुसुम कलिका, प्राकृत प्रवेशिका, संस्कृतसंजीवन, प्राकृत गूढ़ शब्द कोश, अनुष्टुब लक्षणोद्धार, शिवराज विजय, बाल व्याकरण,

हो हो होरी, झूलन झमक, स्वर्ग सभा, विभक्ति विभाग, पढ़े पढ़े पत्थर, सहस्र नाम रामायण, गद्यं-काव्य-मीमांसा, मरहट्टा नाटक, साहित्य नवनीत, वर्ण व्यवस्था, विहारी चरित, आश्रम धर्म निरूपण, अवतार कारिका, अवतार मीमांसा, बिहारी व्याख्याकार चरितावली, पश्चिम यात्रा, स्वामि चरित, शीघ्र लेख प्रणाली, गद्य-काव्य-मीमांसा (भाषा), घनश्याम विनोद, रांची यात्रा, निज वृत्तान्त

कान्हरदास

ये महात्मा संवत् १८६० के लगभग वर्तमान थे। ये जसरापुरके रहने वाले थे। इनकी वचन सिद्धिके सम्बन्धमें कई बातें प्रचलित हैं। आपने "साठी" नामसे एक सौ वर्षकी भविष्य वाणी लिखी है। वह आपके शिष्योंके पास अभी तक है। उसकी बहुत सी बातें सत्य निकलती हैं। इसके सिवा आपने फुटकर पदोंकी ही रचना की है। आपका स्थान जसरापुरमें अभी तक वर्तमान है, जहां आपके चरण चिन्होंकी पूजा होती है।

केशरीसिंह बारहठ

आप जोधपुरके बारहठ हैं। आपकी कविताओंमें देश प्रेम कूट कूट कर भरा है। अभी आपकी उम्र करीब ७०।७५ वर्ष की है। आपकी कविता हमें "राजस्थान गश्ती पुस्तकालय" ब्यावरके हरिभाई किंकरकी कृपासे प्राप्त हुई है। इसके लिये हम उनके अनुगृहीत हैं।

गजानन्द जालान

आप रतनगढ़के अग्रवाल वैश्य हैं। आप बड़े ही उत्साही व्यक्ति हैं। आपने हमारे काममें बराबर सहायता पहुंचाई है। हम को आपसे आगे भी सहायता मिलनेकी आशा है।

गिरिराज कुंवरि

महारानी गिरिराज कुंवरिजी भरतपुरकी राजमाता थी। आप का जन्म सं० १६२० के लगभग और देहान्त सं० १६८० में हुआ। आपको समाज और राजनीतिके सिवा साहित्यसे भी काफी प्रेम था। भरतपुर राज्यमें आपने हिन्दीका अच्छा प्रचार किया तथा आयुर्वेद शिक्षाको भी प्रोत्साहित किया। स्त्री शिक्षाकी आप बहुत हिमायत करती थीं। श्रीमतीजीने संवत् १६६१ में 'श्री ब्रजराज विलास' नामक एक कविता ग्रन्थ लिखा। विवाह आदि अवसरों पर जो निर्लज्जतापूर्ण गालियां गाई जाती हैं, उनके स्थानमें सुन्दर शिक्षा पूर्ण गीत गाये जाना आप अच्छा समझती थीं। "श्री ब्रजराज विलास" में ऐसे ही गीत हैं। इतना ही नहीं, आप विद्या प्रचारके साथ-साथ स्त्रियोंमें गृहशिक्षाके प्रचारकी भी आवश्यकता समझती थीं। इसीलिये आपने "पाक-प्रकाश" नामक पुस्तक भी लिखी थी, जो छप चुकी है। आपकी कविता अच्छी है, विचार परिमार्जित और सुन्दर हैं।

गोविन्ददास मालपाणी

सेठ गोविन्ददासजी का जन्म संवत् १६५३ में विजया दशमीको हुआ। आप जबलपुरके सुप्रसिद्ध दीवान बहादुर सेठ जीवनदासजी

के पुत्र और राजा सेठ गोकुलदासजी के पौत्र हैं। आप जातिके माहेश्वरी वैश्य हैं।

पाँच वर्षकी अवस्थामें आपका शिक्षारम्भ हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। आपने अंग्रेजीके साथ साथ संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती आदि भाषायें भी घर ही पर सीखीं।

राजा गोकुलदासजी आपको बहुत प्यार करते थे। आपका कुटुम्ब वल्लभ सम्प्रदायका अनुयायी है। ग्यारह वर्षकी अवस्थासे ही आपको हिन्दी पढ़नेका शोक हुआ। पहले चन्द्रकान्ता आदि उपन्यासोंके पढ़नेसे उसी प्रकारकी पुस्तकें लिखनेकी भी इच्छा हुई। इस पर आपने १२ से १५ वर्षकी अवस्थामें ही चम्पावती, कृष्णलता और सोमलता नामक तीन उपन्यास लिखे। सोमलताके तीन भाग प्रकाशित हुए। १६ वर्षकी अवस्थामें आपने शेक्सपियरके रोमियो जुलियट, पेरेक्लिस, प्रिंस ऑफ टायर और विण्टर्स टेलके आधार पर सुरेन्द्र सुन्दरी, कृष्ण कामिनी, होनहार और व्यर्थ-सन्देह नामक उपन्यास लिख डाले। इसके पश्चात् आपने "बाणासुर पराभव" नामक एक महाकाव्य लिखा। इसके सिवा विश्वप्रेम नामक मौलिक नाटक और तीर्थयात्रा नामक यात्रा सम्बन्धी दो ग्रन्थ और भी लिखे। आपकी हिन्दी हितैषिताके परिणाम स्वरूप जनताने आपको तृतीय-मध्य-प्रान्तीय-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका सभापति चुना।

असहयोग आन्दोलनसे आपका राजनीतिक जीवन आरम्भ होता है। कलकत्तेकी स्पेशल कांग्रेसके बाद आपने आनरेरी

मजिस्ट्रेटीको लात मार दी। मध्य प्रान्तीय कौंसिलमें आप सर्व-सम्मतिसे जा रहे थे, उसे भी त्याग दिया। स्वराज्य फण्डमें आपने दस हजारका दान दिया। 'यंग इण्डिया' में महात्मा गान्धीने भी आपके कार्यों की प्रशंसा की थी। आपका जातीय जीवन भी बहुत ही श्लाघनीय है।

अभी कुछ दिन पहले आप जेलसे छूट कर आये थे। आपके पिताजीने आपको या तो राष्ट्रीय आन्दोलनसे हट जाने या घरसे बंटवारा करनेके लिये कहा। परन्तु, आपने एक आदर्श पुत्रकी भांति अपने पितासे बंटवारा करनेसे इनकार कर दिया। यह आप ही जैसे त्यागवीरोंका काम है।

घाटमदास मीना

घाटमदासजी जातिके मीणे खोड़ी गांव जयपुरके निवासी थे। राजपूतानामें चोरोंकी एक खास जाति ही होती है, उसे मीना कहते हैं। घाटमदास जी अपनी जाति प्रथानुसार चोरी और बटमारी ही किया करते थे। आपने एक भक्तकी संगतसे चोरी करना छोड़ साधुओंकी तथा भगवान्‌की सेवा करना शुरू किया था। आपके बनाये पद बहुत थोड़े हैं। जो कुछ हैं भी, वे बिखरे हुए हैं। आप के विषयमें भी कई किम्वदंतियां प्रचलित हैं। आपकी कविता साधारणतः अच्छी है।

चरणदास

महात्मा चरणदासजीका जन्म राजपूतानाके मेवात देशके डेहरा नामी गांवके एक प्रसिद्ध ढूसर कुलमें हुआ था। आपने भादो

सुदी ३ मंगलवार सं० १७६० में जन्म लिया और संवत् १८३६ में दिल्लीमें शरीर त्याग किया, जहां आपका स्थान अब तक बना हुआ है।

आपके पिताका नाम मुरलीधर और माताका कुंजो था। जब आप सात ही वर्षके थे तभी आपके पिता घर बार त्याग कर जंगल-वासी हो गये थे। आपको भी यह महात्मापन पैतृक सम्पत्तिकी तरह मिला। कहा जाता है कि १६ वर्षकी अवस्थामें ही आपको जंगलमें शुकदेव मुनिसे साक्षात्कार हुआ था, तभीसे आप भी उसी रंगमें रंग कर साधु हो गये।

आपके निकटवर्ती शिष्य ५२ थे, जिनकी बावन गद्दियां आज भी अलग-अलग वर्त्तमान हैं। आपकी योग सिद्धिके सम्बन्धमें भी कई बातें प्रसिद्ध हैं।

चाचा हित वृन्दावन दास

आप पुष्कर क्षेत्रके रहने वाले गौड़ ब्राह्मण थे और संवत् १७६५ में उत्पन्न हुए थे। आपके विषयमें पंडित रामचन्द्र जी शुक्लने अपने हिन्दी साहित्यके इतिहासमें लिखा है कि—"ये राधा-वल्लभीय गोस्वामी हितरूप जीके शिष्य थे। तत्कालीन गोसांई जी के पिताके गुरु भ्राता होनेके कारण गोसांईजीकी देखादेखी सब लोग इन्हें "चाचाजी" कहने लगे। ये महाराजा नगरीदासजीके भाई बहादुरसिंहजीके आश्रयमें रहते थे, पर जब राजकुलमें विग्रह उत्पन्न हुआ, तब कृष्णगढ़ छोड़ कर ये वृन्दावन चले आये और अन्त समय तक वहीं रहे। संवत् १८०० से लेकर १८४४ तकको

इनकी रचनाओंका पता लगता है।" सूरदासजीकी भांति आपके भी एक लाख पद और छन्द बनानेकी बात प्रसिद्ध है। आपके करीब २०००० पद्य तो मिले हैं। आपके ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुए। राग-रत्नाकरमें आपके कुछ पद संगृहीत मिलते हैं। छत्रपुरके राज-पुस्तकालयमें आपकी बहुत सी रचनाएं सुरक्षित हैं।

चन्द्रसखी

इनके विषय में अधिक कुछ भी नहीं मालम हो सका। "मिश्रबंधु विनोद" के तीसरे भाग में मिश्रबन्धुओंने इनके विषय में जो कुछ लिखा है वह नीचे दिया जाता है—

(१९२३) चंद्रसखी–ग्रंथ-स्फुट पद कविता काल १९०० के पूर्व जयपुरवासी

जाडेचीजी श्री प्रताप बाला

आपका जन्म जामनगरमें आश्विन वदी १२ बुधवार सं० १८९१ को झाली रानी सोनीबा से हुआ। आपके पिता का नाम जाम श्री रिड़मलजी था। आपका विवाह जोधपुर के महाराजा तख्तसिंहजी के साथ वैसाख सुदी ११ संवत् १९०८ को हुआ। आपके विवाह में जामसाहब का इतना रुपया खर्च हुआ था कि देखने वाले अब तक भी कहते हैं कि जामनगर से जोधपुर तक चांदी की नदी वह गई थी।

पौष सुदी १२ संवत् १९१० को आपके इकलौते कुंवर महाराजा बहादुरसिंहजीका जन्म हुआ। संवत् १९२५ के अकाल में आपका नाम अधिक विख्यात हुआ। माघ सुदी १५ संवत् १९२९ को महा-

राजा तख्तसिंह चल बसे। उस समय बहादुरसिंहजी ही आपके जीवनाधार थे। परन्तु अभाग्यवश अधिक मद्य पान करने के कारण सं० १६३६ में पौष सुदी ६ को वे भी काल कवलित हुए। तब आपने उनके बालक पुत्र महाराजा जीवनसिंह को पाला पोसा परन्तु वे भी कार्तिक सुदी ६ संवत् १६५८ तक चल बसे। उधर आपके भाई बीभाजी वैसाख सुदी ४ संवत् १६५१ को धाम प्राप्त हो चुके थे। इस तरह आपको विपत्ति पर विपत्ति सहनी पड़ी। इसके बाद आपने अपना समस्त जीवन धर्म तथा ईश्वर भजन करने में ही विताया। आप के बनाये कई देव मंदिर जोधपुर में है। आपकी कविताओं का संग्रह "प्रताप कुंवर पद रत्नावली" के नाम से प्रकाशित हुआ है। आपका कविता काल संवत् १६४० के लगभग माना जाता है।

झावरमल शर्मा

आप जसरापुर (खेतड़ी) के रहने वाले हैं। हिन्दी के अच्छे लेखक हैं। आपने कलकत्ता समाचार, हिन्दू संसार, भारत आदि कई पत्रों का संपादन किया है। सीकर का तथा खेतड़ी का विस्तृत इतिहास भी लिखा है। इस समय आप शेखावाटी के इतिहास की सामग्री संग्रह कर रहे हैं। आपकी उम्र इस समय करीब चालीस वर्ष की है।

तुलछराय

इनके विषय में जोधपुर के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मुंशी देवीप्रसाद जी ने जो कुछ लिखा है सो नीचे दिया जाता है—

" ये जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी की परदायत रानी थी। तीजा भटियानी जी की सेवा में रहा करती थी और उनके सत्संग से ये भी राम और कृष्ण भक्ति भावके भजन तथा पद बनाया करती थीं।"

दरिया साहब

आपने जोधपुर के जैतारन गाँव में भादो बदी अष्टमी संवत् १७३३ के दिन एक मुसलमान कुलमें जन्म लिया और अगहन सुदी पूनो संवत् १८१५ के लगभग परलोक सिधारे। दरिया साहब के माँ बाप धुनिया जाति के थे। सात ही वर्ष की उम्रमें आपके माता पिता स्वर्ग सिधारे जिससे आप रैन गाँव में अपने नाना के घर जाकर रहे। आपके नाना का नाम कमीच था।

कहते हैं कि उस समय के महाराजा बख्तसिंहजी को एक असाध्य रोग लग गया था। उसका इलाज कराते कराते वे थक गये। अंतमें रैन जाकर दरिया साहब के आश्रम में उपस्थित हुए। इस पर दरिया साहब ने अपने शिष्य सुखरामदासजी के द्वारा उनको उपदेश दिया और राजा रोग मुक्त हो गये। सुखरामदासजी जाति के सिकलीगर लोहार थे जिनका स्थान रैनमें अब तक मौजूद है। जोधपुर में दरियो साहब के मतके हजारों आदमी है। इसी नाम के एक दूसरे महात्मा बिहार में भी हो गये हैं।

दादू दयाल

दादू दयाल का जन्म वि० सं० १६०१ को फाल्गुन सुदी अष्टमी बृहस्पतिवार के दिन अहमदाबाद में हुआ। आप धुनिया जाति के

रत्न थे। आपके पहिले २६ बरसों का हाल नहीं मिलता। पर संवत् १६३० में आप सांभर आये और वहां अनुमान ६ बरस रहे। फिर आमेर गये और वहां चौदह वर्ष के लगभग रहे। संवत् १६५० से १६५६ तक आपने राजपूताने के कई स्थानों का भ्रमण किया और फिर सं० १६५६ में नरानामें जो जयपुरसे २० कोसपर है, आकर ठहर गये। वहां से ५ कोस की दूरी पर भराने (Baherana) की पहाड़ी है, यहां भी आप कुछ समय तक ठहरे और वहीं १६६० के जेठ बदी अष्टमी शनिवार के दिन आपने चोला छोड़ा।

दादू पंथी सम्प्रदायके ५२ प्रसिद्ध अखाड़े हैं और हरेक का महंत अलग है। ये अखाड़े विशेषकर जयपुर, अलवर, जोधपुर बीकानेर और मेवाड़ आदि राज्यों में हैं। सब महन्तों के मुखिया नराना में रहते हैं। यद्यपि दादूदयाल जन्म से गुजराती थे, परन्तु उनका सारा जीवन राजपूताने में ही बीता और उनका मत राजपूताने में ही फैला। उनका समस्त कार्य राजपूताने में ही हुआ। इतना ही नहीं, आज तक भी नराना ही दादू पंथियों का मुख्य पूजा स्थान है। नराना ही दादूपंथियों का तीर्थ है।

धा भाई गोविन्ददास गूजर

आप गूजर जातिके थे। जयपुरमें रहा करते थे। आपकी कविता व्रज भाषामें है। कविता प्रौढ़ है। आप संवत् १६२५ के लगभग वर्त्तमान थे। आपका राजघरानेसे भी बहुत सम्बन्ध था। आपने "गूजर-गीत-मंगल" आदि कई ग्रन्थ बनाये हैं।

धौंकलराम खाती

आपने खाती जातिमें जन्म धारण किया था। आप खेड़ाके रहने वाले थे। आपकी कविता राग रागनियोंके भेदके अनुसार ठीक करके लिखी गई है। आपने अनेक पुस्तकें रची हैं, जिनमेंसे अधिकांश हिसारमें मिलती हैं। उनमेंसे कुछ ये हैं—प्रह्लाद कथा, दुर्गाजीकी स्तुति, पार्वतीका मंगल, सावित्री सत्यवान, नरसीका भात, डिंग पुराण आदि।

नरसी मेहता

आपका जन्म संवत् १४७१ में जूनागढ़के गरीब परन्तु प्रतिष्ठित कुलमें हुआ था। आपके पिताका नाम कृष्ण दामोदर और पितामह का नाम विष्णुदास था। आप नागर ब्राह्मण थे। आप गुजरातके आदि कवि माने जाते हैं। बालकपनसे ही आप घरसे उदासीनसे ही रहते थे। सदासे साधुओंके संग रहा करते थे। अन्तमें बड़े होने पर आपकी उदासीन प्रकृति और भी आगे बढ़ गई और आप घरसे नाता तोड़ कर साधु हो गये। आपने गुजरातीके अलावा मारवाड़ी भाषामें भी कुछ पद बनाये हैं। आपने अपनी भक्तिके कारण राज-पूतानेमें भी काफी नाम कमाया था। आपके माहेराका वर्णन प्रसिद्ध भक्तिरसामृत प्रवाहित करनेवाली कवयित्री मीराबाईने भी "नरसी जीका माहेरा" लिख कर किया है। भगवान् कृष्ण आपके लिये प्रत्यक्ष हो चुके थे। आपकी मृत्यु संवत् १५३७ में हुई। आपके भक्तोंने आपकी मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा जूनागढ़में कर रखी है। आपके विषयमें पी० एस० कवरजी और पुतलीबाई डी० एच० वाडियाने

इण्डियन एण्टीक्वेरीमें (Indian Antiquary 1895 Vol. 24 P. 78.) अच्छा प्रकाश डाला है।

नानूलाल राणा

ये शेखावाटीके सुप्रसिद्ध ग्राम चिड़ावाके रहनेवाले थे। जातिके मुसलमान थे। जातिके मुसलमान होने पर भी ये हिन्दुओंकी बातें अधिक मानते थे। बहुत अच्छे कवि थे। इनके बनाये हुए सामाजिक, ऐतिहासिक तथा धार्मिक २५।३० के करीब 'ख्याल' हैं। वे सब मारवाड़ी भाषामें लिखे गये हैं। इनका जन्म संवत् १९१५ के आस पास और मृत्यु करीब २० वर्ष हुए, हुई है। आपकी कविता बहुत सरस है।

नानिया राणाकी कवितायें इतनी सरस और उनके ख्याल इतने रस पूर्ण हैं कि उसने मारवाड़ियोंके घरोंमें तो बहुत ज्यादा स्थान पा ही रखा है, परन्तु वे अन्य लोगोंमेंसे भी एक आध मर्मज्ञको आकर्षित करते रहते हैं। जैसा कि पं० रामनरेशजी त्रिपाठीने एक जगह लिखा है कि "नानिया राणाके ख्यालोंके जोड़के रसपूर्ण काव्य हिन्दीमें कौनसे हैं?"

पद्मदास

ये माहेश्वरी वैश्य थे। ये सलेमाबाद जिला अजमेरके रहनेवाले थे। यह बात नीचेके दोहेसे प्रगट हो जाती है जो रुक्मिणी-मंगलके अन्तमें दिया गया है:—

जिला शुभ अजमेर है, ग्राम सलेमाबाद।
जन्मभूमि जाकी लसे, चहुंदिशि सदा आबाद॥

आपका ग्रंथ रुक्मिणी मंगल है। इसने 'व्यावलो' इस नामसे मारवाड़ियोंके घरोंमें स्थान पा रखा है।

प्रताप कुँवरि

ये गाँव जाखण परगने जोधपुरके भाटी ठाकुर गोयन्ददासजी की पुत्री और जोधपुरके महाराजा मानसिंहकी रानी थीं। इनका विवाह संवत् १८८६ में आषाढ़ सुदी ६ को हुआ। इनके कोई सन्तान नहीं थी। किसी दूसरी रानीसे भी कोई कुंवर महाराजाके अन्त समय तक नहीं था। अतः सं० १६०० में महाराजके परलोकवासी होने पर अहमदनगरसे महाराजा श्री तख्तसिंहजी आकर राज-सिंहासन पर बैठे। महाराजा तख्तसिंहजी का व्यवहार इनके साथ सगी मा सा रहा। जिससे इनके मनमें जो कुछ शोक और सन्ताप था वह ऐसे आज्ञाकारी पुत्रको पाकर शांत हो गया। इतना ही नहीं महाराज साहवने अपने चौथे कुंवर प्रतापसिंहके जन्मते ही सं० १६०२ में इनकी गोद दे दिया था। इन्होंने भी उसको पुत्रवत् पाला पोसा और वड़े होनेपर अपने भाई लक्ष्मणसिंहकी दो वाइयोंसे उनका विवाह करा दिया।

प्रताप कुंवरिजीको राज्यसे कई अच्छी उपजके गाँव मिले थे। उनकी आमदनीसे ये अपना भी काम चलाती और धर्म पुण्य भी वहुत करती थीं। ये खुले हाथों चारणों और ब्राह्मणोंको दान दिया करती थीं। इनकी उदारताकी प्रशंसामें वहुतसे दोहे और कवित्त हैं, उनमेंसे एक यह है—

कुंजर दे उस कारणे, लाखां लाख पसाव।
महारानी नृप मानरी, देरावरि दरियाव॥

संवत् १६२६ में महाजा तख्तसिंहजीके मर जाने पर इन्हें वहुत दुख हुआ। उसीके वाद ये बीमार रहने लगीं और ७० वर्षकी अवस्थामें माघ वदी १२ सं०१६४३ के दिन २ घड़ी तड़के रहते आपने प्राण विसर्जन किया।

प्रतापकुंवरिजी भाषाके लिखने पढ़नेमें सदासे ही निपुण थी। और उसके वाद पति तथा भाईके मरने पर भगवत् भजनमें मन लगाया और कई ग्रन्थ वनाये। उनका एक वड़ा संग्रह ईडरकी महारानी रत्नकुंवरिजीने छपवाया है। इस संग्रहमें इतने ग्रन्थ हैं:—

(१) ज्ञान सागर (२) ज्ञान प्रकाश (३) प्रताप पचीसी (४) प्रेमसागर (५) रामचन्द्र-नाम-महिमा (६) राम-गुण-सागर (७) रघुवर-स्नेह-लीला (८) राम-प्रेम-सुखसागर (६) राम-सुजस-पचीसी (१०) पत्रिका सं० १६२३ चैत्र वदी ११ की (११) रघुनाथजीके कवित्त (१२) भजन पद हरिजस (१३) प्रताप विनय (१४) श्रीरामचन्द्र विनय (१५) हरिजस गायन।

वालमुकुन्द गुप्त (दीघलिया)

वावू वालमुकुन्द गुप्त हरियाना प्रान्तके रोहतक ज़िलेके गुरियानी ग्रामके निवासी थे। वहीं इनका जन्म कार्तिक शुक्ला ४ सम्वत् १६२२ को हुआ था। ये अग्रवाल वैश्य थे। इनके पूर्वज दीघल स्थानसे आकर गुरियानीमें वसे थे, इससे ये दीघलिया कहलाते थे। इनका वंश "नागे पोते" के नामसे भी प्रसिद्ध है।

गुप्त जी पहले सन् १८८७ में मिर्जापुर जिलेके चुनारसे प्रकाशित होने वाले उर्दू पत्र "अखवारे चुनार" के सम्पादक हुए। सन् १८८८-८९ में चुनारसे लाहौर गये और वहांके अखवार "कोहेनूर" के सम्पादक हो गये। मेरठमें श्री पं० दीनदयाल जी शर्मा तथा और कई महाशयोंके साथ इन्होंने हिन्दी सीखनेकी प्रतिज्ञा की और उसको जन्म भर निवाहा।

सम्वत् १९४६ (सन् १८८९) में कालाकांकरके दैनिक हिन्दी पत्र 'हिन्दोस्थान" से इनका सम्बन्ध हुआ। कुछ दिनों तक उसके सहकारी सम्पादक रह कर ये उससे पृथक् हो गये। फिर पांच वर्षों तक 'हिन्दी बंगवासी" के सहकारी सम्पादक रहे। वहां भी इन्होंने अपनी योग्यताका पूर्ण परिचय दिया। सन् १८९८ (सं० १९५५) में भारतमित्रका संपादन भार इन्होंने लिया और अन्त तक वहीं डटे रहे।

"भारतमित्र" में आकर ही गुप्तजी प्रगट हुए। इन्होंने भारतमित्र की वहुत कुछ उन्नति की। गुप्तजी का स्वभाव वड़ा सरल था। ये आडम्बरों को पसंद नहीं करते थे। सत्य से इनको वहुत प्रेम था। सनातन धर्म के पक्के अनुयायी थे। प्राचीन रीति रिवाजों को वहुत प्रसंद करते थे। जो अपनी प्रतिष्ठा वढ़ानेके लिये प्राचीन कवि और पंडितोंके दोष निकालते थे उनसे गुप्तजी वहुत कुढ़ते थे। जिसके पीछे गुप्तजी पड़ते उसकी धज्जियाँ उड़ा डालते थे। इनकी समालोचनासे लोग वहुत डरते थे। हिंदी भाषामें इनकी वड़ी धाक थी। पर लोक वास से कुछ दिन पहले ही गुप्तजी एक असाध्य रोग से पीड़ित

हुए। जब कलकत्ते में अच्छे नहीं हुए, तब दिल्ली चले गये। वहीं संवत् १९६४ की भादो सुदी ११ को गुप्तजी का स्वर्गवास हो गया। इनकी लिखी तथा अनुवादित पुस्तकें कई हैं। जैसेः-(१)मडेल भगिनी (२) हरिदास (३) रत्नावली नटिका (४) शिव शम्भु के चिट्ठे (५) स्फुट कविता (६) खिलौना (७) खेल तमाशा (८) सर्पाघात चिकित्सा आदि।

बाघेली बिष्णुप्रसाद कुंवरि

ये रीवां के महाराजा रघुराजसिंहजी की पुत्री और जोधपुर के महाराजा श्रीजसवंतसिंहजी के छोटे भाई महाराज श्रीकिशोरसिंहजी की रानी थी। आपका जन्म सं० १९०३ में और बिवाह संवत् १९२१ में हुआ। ये बड़ी भगवद् भक्त थीं। श्रीकृष्ण को दीनानाथ कहकर रामानुज संप्रदायकी रीतिसे पूजती थी। इतना ही नहीं, अपने हस्ताक्षर तक भी दीनानाथ के नाम से करती थीं। सं० १९५५ में इनके पति का अकस्मात् देहान्त हो गया, तब से दिन रात कृष्ण प्रेममें रत रहने लगीं। इन्होंने दो ग्रथ बनाये हैं—(१) अवध विलास (२) कृष्ण विलास। तीसरा ग्रन्थ भी इनका मिला है उसका नाम है "राधा रास विलास"। कविता इनकी वहुत रसीली और भक्ति के रंगमें सराबोर है। कानपुर के "रसिक मित्र" में इनकी कवितायें प्रायः छपा करती थीं।

बाघेली रणछोड़ कुंवरि

रीवां के महाराजा श्री विश्वनाथसिंहजी के भाई बलभद्रसिंहजी की बेटी और जोधपुर के महाराजा श्री तख्तसिंहजी की रानी थीं।

इनका जन्म सं० १६४६ में हुआ था और विवाह सं० १६६१ में वलभद्र सिंहजी के मरे पीछे इनके चचेरे भाई रघुराजसिंहजी ने किया। ये कृष्ण की भक्त थीं और कृष्ण प्रेम में छककर कवितायें किया करती थीं। इनकी कविता भक्तिपूर्ण और सरस है।

वालचन्द्र शास्त्री

सं० १६२८ माघ सुदी १० रविवार को सिस्यु राणोली में गौड़ ब्राह्मण कुल में आप का जन्म हुआ। आप संस्कृत के वड़े भारी विद्वान हैं। ब्रह्मण सभा के समय आपका सम्मान राव राजा कल्याणसिंह जी सीकर नरेशने २००) और एक साल देकर किया। करवीर मठ के शंकराचार्यजी ने संस्कृत वक्तृता से प्रसन्न होकर आपको "विद्या वाचस्पति" की पदवी दी। आप वर्धामें भी प्रसिद्ध देशभक्त सेठ जमना लालजी वजाज के पास ३ वर्ष तक रहे और वहाँ वेदान्त का प्रचार करते रहे। आपकी प्रकाशित और अप्रकाशित पुस्तकें ये हैं।

ललित रामचन्द्र काव्य, सिद्धान्त कौमुदीकी पंचसंधि टीका, अथर्व वेद भाष्य, महिम्न स्तोत्र की टीका, गंगा लहरी वेदान्त परक, माधव निदान की टीका, शाङ्गधरकी टीका, भांग निषेध, लक्ष्मी सूक्त भाष्यम्, अलंकार तत्वम्, द्रौपदी परित्राणम्, श्येन कपोतीयम्, निरुक्त नाम वर्णनम्, प्रेम पद्यावली, अनुभूत योग रत्न माला, श्रीधरोक्ति विवेचना, भगवत् पद रचना।

आप सनातन धर्मके वड़े भक्त हैं। आप के १ पुत्र और ४ पौत्र हैं।

बीरां

इनके सम्बन्धमें मुंशी देवीप्रसादजीने "महिला-मृदु-वाणी" में जो कुछ लिखा है सो नीचे दिया जाता है।

"बीरां नामकी कोई स्त्री हुई है, जिसके बनाये पद जोधपुरके पुस्तकालयके एक संग्रह ग्रंथमें जोधपुरके महाराज तख्तसिंहजीके पदोंके साथ लिखे हैं। बीरांका उक्त महाराजासे सम्बन्ध रहा होगा। यह बिना निश्चय किये हुए कुछ नहीं कह सकते। उसके पद भी महाराज के पदोंके समान कृष्ण भक्तिसे परिपूर्ण हैं।"

बीरदास

आप मेवाड़के रहनेवाले हैं। आपकी कविता बहुत ओजपूर्ण होती हैं। वहांके आप एक अच्छे कार्य्यकर्ता हैं। आपकी कविता भी हमें "हरिभाईजी किंकर" की कृपासे ही प्राप्त हुई है।

भगवतीप्रसाद दारूका

आपने संवत् १९४१ में जसरापुरके प्रसिद्ध दारूका वंशमें जन्म धारण किया है। आपमें सार्वजनिक सेवा करनेकी बड़ी लगन है। सनातनधर्मके संबंधमें आपने काफी काम किया है। आप मारवाड़ी भाषाके अच्छे लेखक हैं। आपकी बनाई हुई पुस्तकें ये हैं:—

बाल विवाह नाटक, बृद्ध विवाह नाटक, कलकतिया बाबू नाटक, ढलती-फिरती छाया नाटक, सीठणा सुधार नाटक, जसुरापुरका इतिहास, एक मारवाड़ी की घटना, एक मारवाड़ी की बात, मारवाड़ी रहस्य।

महाराणा सज्जनसिंह

आप बागोरके महाराज शक्तसिंहजीके बेटे थे। आपका जन्म संवत् १६१६ में हुआ था। महाराणा शंभुसिंहजी के निस्संतान मरने पर सं० १६३१ में गद्दी पर विराजमान हुए। आप बड़े साहसी पराक्रमी और ज्ञानी थे। एकलिंगजी का इष्ट था, रोज उनका पूजन करके भोजन करते थे। संवत् १६४१ में आप उदयपुर में स्वर्गवासी हुए। महाराणा सज्जनसिंहजीने साहित्यमें अच्छा अभ्यास कर लिया था। वे कविता भी बनाते थे और अर्थ भी अच्छा करते थे। महाराणा की बनाई कविता में से कितनी ठुमरी सोरठा, दोहा आदि एकत्रकर बीझोल्या के राव कृष्णसिंहजी ने "रसिक विनोद" के नाम से छपवाये हैं।

महाराजा प्रतापसिंह (ब्रजनिधि)

आप जयपुरके महाराज थे। आपका जन्म पौष बदी २ सं० १८२१ में हुआ। महाराजा पृथ्वीसिंहजीके मरने पर वैशाख बदी ३ सं० १८३५ में आप गद्दी पर बैठे। आपने भाषा भर्तृहरिशतक, नेह संग्राम और इश्क लता, अमृतसागर आदि कई ग्रन्थ बनाये हैं। आप कवितामें अपना उपनाम "ब्रजनिधि" रखा करते थे। आपका नियम था कि नित्य एक नया पद बना कर दर्शनके समय ब्रजनिधि जीको अर्पण किया करते थे। महाराजके पद बहुत रसीले होते थे। आपका स्वर्गवास सावन सुदी २ सं० १८६० को हुआ।

महाराजा प्रतापसिंह

आप भी जयपुरके ही महाराज थे। आप महाराजा माधवसिंहजी के बाद गद्दी पर बैठे। आपने सोरठ रागमें अच्छे अच्छे पद बनाये हैं। आपकी कविता भी सुललित होती थी।

महाराजा गजसिंह

आप बीकानेरके महाराजा थे। आपका जन्म सं० १७७६ में हुआ और महाराजा जोरावरसिंहजीके बाद सं० १८०२ में राजगद्दी पर बैठे। परम वैष्णव थे। भजन खूब बनाया करते थे और कविता भी करते थे। आपकी कविताका एक गुटका बीकानेरके पुस्तकालयमें है। आपका स्वर्गवास सं० १८४४ में हुआ।

महाराजा रूपसिंह

आप कृष्णगढ़ नरेश थे। आपका जन्म वैशाख सुदी ११ सं० १६८५ में हुआ और आप महाराजा हरिसिंहजीके बाद ज्येष्ठ सुदी ५ सं० १७०० में राजगद्दी पर बैठे। आप बड़े वीर थे। १७१४ में शाहजहांके बेटोंमें राज्यके वास्ते लड़ाई छिड़ी। ज्येष्ठ सुदी ६ सं० १७१५ को दारा और औरंगजेबसे बड़ी लड़ाई ठनी। महाराजा दारा शिकोहकी तरफ थे। औरंगजेबकी फौजको काटते काटते आप उसकी सवारीके हाथी तक जा पहुंचे और वहां पैदल होकर हौदेकी रस्सियां तलवारसे काटने लगे। यह देखकर बहुतसे आदमी आप पर टूट पड़े। आप उनसे लड़कर टुकड़े टुकड़े हो गये। इतिहासमें ऐसी वीरताकी नजीरें बहुत कम मिलती हैं। इसकी तारीफ मुसल-

मानोंने भी अपने इतिहासोंमें लिखी है। "सैरुल मुताखिरीन" में आपकी वहुत प्रशंसा की गई है। वात ठीक ही है। कहा है कि "रज्जव साचे सूरको वैरी करे वखान।"

इतना ही नहीं, आप अच्छे कवि थे और आपको गान विद्याका अच्छा ज्ञान था।

महाराजा मानसिंह

आप भी कृष्णगढ़ नरेश ही थे। आपका जन्म भादो सुदी ३ सं० १७१२ को हुआ और आषाढ़ वदी १० सं० १७१५ को महाराज रूपसिंहजीके मरने के वाद गद्दी पर वैठे और कार्तिक वदी १० सं० १७६३ को स्वर्गवास हो गया। आपने वहुतसे पद वनाये हैं। भाषा आपकी वहुत सुन्दर है।

महाराजा कल्याणसिंह

आप भी कृष्णगढ़ नरेश थे। आपका जन्म कार्तिक सुदी १२ सं० १८५१ को हुआ और फाल्गुन सुदी ३ सं० १८५४ को गद्दीपर वैठे। आप अधिक दिल्लीमें रहा करते थे। वड़े कवि और पंडित थे। आपका स्वर्गवास ज्येष्ठ सुदी १० सं० १८६५ को हुआ।

महाराजा वख्तावरसिंह

आप अलवर नरेश थे। आपने मारवाड़ी भाषामें वहुत अच्छे पद वनाये हैं। आपकी कविताओंका संग्रह छपा हुआ नहीं मिलता। केवल विखरे हुए पद इधर उधर मिलते हैं।

राजा अजीतसिंह बहादुर

आपका जन्म अलसीसरमें संवत् १९१८ आश्विन शुक्ला १३ ता० १६ अक्टूबर सन् १८६१ ई० को हुआ। आपके पिताका नाम ठा० छत्तूसिंहजी था। राजा फतहसिंहजी बहादुरके दत्तक पुत्र रूपसे पौष कृष्णा ८ सम्वत् १९२७ को आप खेतड़ीको गद्दी पर बैठे।

फाल्गुन शुक्ला ८ सम्वत् १९३२ को आउवा (मारवाड़) के ठाकुर देवीसिंहजी चांपावतकी पुत्रीके साथ आपका विवाह हुआ। सम्वत् १९३७ में पूर्ण शासनाधिकार आपको मिल गया। उस समय खेतड़ी राज्य प्रायः ११ लाख रुपयोंके कर्जके बोझसे दबा हुआ था। आपने ऐसा सुप्रबन्ध किया कि ६ वर्षके अन्दर उसको व्याज सहित चुका दिया। आप पर महाराजा रामसिंहजी (जयपुर) की बड़ी कृपा थी। आप बड़े अच्छे शासक थे। प्रजाकी प्रार्थना सुनने के लिये सदा तैयार रहते थे। आप प्रजाकी हित रक्षाके लिये बराबर चेष्टा करते थे।

सन् १८९७ ई० में आप विलायत गये। लौटते समय आप इटली, बेलजियम, श्याम और जर्मनीके नरेशोंसे मिल कर मित्रता स्थापन कर आये थे। भारतमें लौटने पर बम्बईमें आपका महादेव गोविन्द रानाडेको अध्यक्षतामें अभिनन्दन किया गया। स्वामी विवेकानन्द आपकी सहायतासे ही अमेरिका गये थे। आप संगीत और कविताके अनुरागी होनेके साथ स्वयं भी संगीतज्ञ और सुकवि थे।

सन् १९०० ई० में स्वास्थ्य सम्पादनके लिये आप काश्मीर गये और लौटते समय आगरेमें ठहर गये थे। वहाँ ता० १८ जनवरी सन् १९०१ को सैर करते हुए सिकन्दरे पहुंचे और फाटकके पास साइकल छोड़ कर दृश्य देखनेके लिये मीनार पर चढ़ गये। उसी मीनार परसे गिर जानेके कारण आपकी मृत्यु हुई।

महाराजा सावंतसिंह (नागरीदास)

"नागरीदास" नामसे चार पाँच कवियोंके होनेकी वात कई लेखकोंने लिखी है परन्तु पं० मोहनलाल विष्णुलाल पांडयाने एशियाटिकसोसाइटी वंगालके भाग ६६ सन् १८९७ में "The antiquity of the Poet Nagaridass" नामक लेखमें सप्रमाण यह सिद्ध कर दिया है कि चार पाँच नागरीदास नहीं हुए। नागरीदास एक ही हुए और वे महाराजा सावन्तसिंह कृष्णगढ़ नरेश ही थे।

आप महाराजा राजसिंहके तीसरे पुत्र थे। आपका राजकीय नाम "सावन्तसिंह" था। आपका जन्म पौष वदी १२ सं० १७५६ वि० में हुआ था। वैशाख सुदी ५ सं० १८०५ में राजगद्दी पर वैठे और आश्विन सुदी १० वि० सं० १८१४ में अपने पुत्रको राजगद्दी पर वैठाकर वृन्दावन चले गये और वहाँ भादो सुदी ३ सं० १८२१ में मर गये। पांडयाजी लिखते हैं कि ये तारीखें कृष्णगढ़ राज्य से जानी गई हैं।

आप वड़े ही प्रतापी और वलशाली थे। आपके वलके सम्वन्ध में कई वातें प्रचलित हैं। यह कहा जाता है कि महाराजा राजसिंह जीने अपने जीते जी ही आपको राज्य दे दिया था। उनके

जीते जी महाराजा सावन्तसिंहजीने राज काज भी अच्छी तरह संभाला ।

१८०४ वि० सं० में जब कि आप दिल्ली दरबारमें थे, महाराजा राजसिंहका अचानक स्वर्गवास हो गया । इस पर बादशाह अहमद-शाहने आपको कृष्णगढ़का नरेश घोषित कर दिया। आप राजसी ठाट बाटसे राजधानी की ओर चले। परन्तु वहां पहुंचनेके साथ सुना कि छोटे भाई बहादुरसिंहने राज्य ले लिया। इस पर आपने बादशाहसे सहायता ली परन्तु सफलता न मिली। बहादुरसिंहजीकी तरफ़ जोधपुर वाले थे—इस पर आपने मरहठोंसे सहायता लेनेका बिचार किया और दक्षिण चले गये। वहाँसे आपने अपने पुत्र सरदारसिंह को मरहठोंकी सेनाके साथ कृष्णगढ़ भेजा। इस पर बहादुरसिंहजीने आधा आधा राज्य बाँट दिया। यह सुनकर सावन्तसिंहजी कृष्णगढ़ लौटे और अपने पुत्रको राजगद्दी पर बैठा कर बृन्दावन लौट गये।

जब भक्ति करते २ आपको ज्ञानकी प्राप्ति हुई तब आपने अपने भाईको लिखा कि—

यह संसार झूठका भारा, सिरसे तैं उतराया ।
बादरियेने नागरिये को भक्ति तख्त बैठाया ॥

आपका कविता काल १७८० से लेकर १८१६ तक माना जाता है। कवितामें आप अपना नाम नागरीदास, नागरी, नागर और नागरिया रखते थे। आपकी उपपत्नी बनी ठनीजी भी रसिक बिहारीकी छाप देकर पद बनाया करती थी। आपके लिखे छोटे बड़े सब मिलाकर ७५ ग्रन्थ हैं जिनमें अन्तिम दो नहीं मिलते। उनके नाम ये हैं—

(१) मनोरथ मंजरी (आश्विन वदी १४ मंगल सं० १७८०)
(२) रसिक रत्नावली (भादो सुदी १ मंगल सं० १७८२)
(३) विहार चन्द्रिका (सावन सं० १७८८)
(४) निकुंज विलास (सं० १७९४)
(५) कलि-वैराग्य-वल्लरी (सावन सं० १७९५)
(६) भक्तिसार (सावन वदी २ गुरुवार सं० १७९९)
(७) पारायण-विधि-प्रकाश (सावन सं० १७९९)
(८) ब्रजसार (पौष सुदी ९ रविवार सं० १७९९)
(९) गोपी-प्रेम-प्रकाश (जेठ सुदी वि० १८००)
(१०) ब्रज-वैकुंठ-तुला (माघ सुदी ५ वि० १८०१)
(११) भक्ति मग दीपिका (क्वांर कृष्णा ३ गुरु० १८०२)
(१२) फाग विहार (मधु कृष्ण पक्ष सं० १८०८)
(१३) जुगल भक्ति विनोद (माघ सं० १८०८)
(१४) वन विनोद (मधु कृष्ण सं० १८०९)
(१५) बाल विनोद (आश्विन शु० ६ मंगल सं० १८०९)
(१६) तीर्थानन्द (माघ सं० १८१०)
(१७) सुजनानन्द (वि० सं० १८१०)
(१८) वन-जन-प्रशंस (माघ सं० १८१९)
(१९) सिंगार सार व ब्रजलीला-पद-प्रसङ्ग
(२०) पद-प्रसङ्ग-माला (२१) भोर लीला
(२२) प्रात-रस-मंजरी (२३) भोजनानन्दाष्टक
(२४) जुगल-रस-मंजरी (२५) फूल विलास

(७०) फाग खेलन समेतानुक्रम कवित्त

(७१) चूतक दोहा (७२) उत्सव माला

(७३) पद मुक्तावली (७४) वैन विलास

(७५) गुप्त-रस-प्रकाश

माधवप्रसाद मिश्र

भिवानीके समीपवर्ती गांव कूंगडमें वि० सं० १६२८ के भाद्र शुक्ला त्रयोदशीको पं० माधवप्रसादजी मिश्रने जन्म ग्रहण किया था। मिश्रजीके पितामह और पिता, पं० जयरामदासजी एवं पं० रामजी दासजी संस्कृतके विख्यात पण्डित थे। आपकी शिक्षा दीक्षा घर पर ही आरम्भ हुई। आप उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती और गुरुमुखी आदि कई भाषायें जानते थे। कलकत्तेका "श्रीविशुद्धानन्द-सरस्वती-विद्यालय" मिश्रजीके अथक परिश्रमका ही फल है।

आपने "सुदर्शन" तथा "वैश्योपकारक" दो मासिक पत्र भी निकाले थे। इसके अलावा कई पुस्तकें भी लिखी थी जैसे—विशुद्ध चरितावली, आख्यायिका सप्तक, भारतीय-दर्शन-शास्त्र आदि। सं० १६६४ के चैत्र मासकी चतुर्थीको केवल ३५ वर्षकी उम्रमें मिश्रजीने अपनी इह लीला संवरण की।

आपकी प्रतिभा चारों तरफ विकसित थी। संस्कृतके धुरन्धर पंडित थे। दर्शन शास्त्रोंके अद्भुत ज्ञाता थे। बोलनेकी शक्ति भी आपमें कूटकूट कर भरी गई थी। कट्टर सनातन धर्मावलम्बी होते हुए भी राष्ट्रवादी थे। आपकी मृत्यु अल्पायुमें ही हो गई। यदि कुछ दिन और जीते तो और भी चमत्कार जनताको देखनेके लिये मिलता।

मीराबाई

मीराबाई मेड़तिया राठौड़ रतनसिंहजी की बेटी, राव दूदाजीकी पोती और जोधपुरके बसानेवाले राव जोधाजीकी परपोती थी। इनका जन्म गांव चौकड़ीमें हुआ था जो, इनके पिताकी जागीरमें था। कोई कोई इनके जन्मस्थानका नाम "कुड़की" भी बतलाते हैं। मुंशी देवीप्रसादजीने भी मीरा बाईके जीवन चरित्रमें "कुड़की" और महिला-मृदु-वाणीमें "चोकड़ी" को इनका जन्मस्थान माना है। इनका विवाह सं० १५७३ में राणा सांगाजीके बड़े बेटे भोजराजजी से हुआ। परन्तु विवाह होनेके दस वर्ष पश्चात् ये विधवा हो गई।

इनका बचपनसे ही गिरिधर लालजी से प्रेम था। ये अपने पिता के यहां भी उसीकी मूर्ति की पूजा किया करती और उन्हें अपना आराध्य देव मानती थी। विधवा होने पर इन्होंने अपना जीवन उसीकी भक्तिमें रंग दिया। इनके देवर रतनसिंह, विक्रमाजीत और उदयसिंह तीनों एकके पीछे एक इनके सामने ही अपने पिताकी गद्दी पर बैठे। इनमें से रतनसिंह और विक्रमाजीत इनकी ड्योढ़ीपर साधुओंकी भीड़का जमा रहना देख कर चिढ़ा करते थे और इस बातको रोकते थे परन्तु भक्तिके आवेशमें ये किसी का कहना नहीं सुनती थी। तब राणा विक्रमाजीतने अपने दीवानकी सलाहसे चरणामृतके बहाने इनके पास विष भेजा और ये पी गई परंतु इन पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। उसके बाद ये तीर्थयात्राके लिये चित्तौड़से चली आई और बहुत दिनों तक मेड़तेमें रहकर मथुरा बृन्दावन चली गई। वहां से द्वारिका पहुंची और वहीं संवत् १६०३

में इनका देहान्त हो गया, जिसके बावत भक्त लोग कहते हैं कि ये श्री रणछोड़जीमें लय हो गयी। जिस समय द्वारिकामें दर्शण करने पधारी तब "हरि करो जनकी भीर" यही पद गाया। (भजन नं० ६४) मरनेके समय कहा जाता है कि भजन नं० ३३४ वाला पद गाया।

कहा जाता है कि मीराबाईका तुलसीदासजीके साथ भी पत्र-व्यवहार था। इसके प्रमाणमें नीचे लिखा पत्र व्यवहार पेश भी किया जाता है परन्तु समय पर विचार करनेसे यह ठीक नहीं मालम पड़ता। वह पत्र व्यवहार यह है :—

मीरा बाईका पत्र

स्वस्ति श्री तुलसी सुख निधान, दुख हरण गुंसाई।
बारहिं बार प्रणाम करूं, अब हरो सोक समुदाई॥
घरके स्वज़न हमारे जेते, सबन उपाधि बढ़ाई।
साधु संग अरु भजन करत, मोहिं देत कलेस महाई॥
बालपने ते मीरा कीन्ही, गिरिधरलाल मिताई।
सो तो अब छूटत नहिं क्यों हूं लगी लगन बरियाई॥
मेरे मात पिताके सम हौ, हरि भक्तन सुखदाई।
हमको कहा उचित करबो है, सो लिखियो समुझाई॥

गोस्वामीजीका उत्तर

जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि वैरी सम, यद्यपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्ध, भरत महतारी।

बलि गुरु, तज्यो कंत ब्रज बनितन, भे सब मंगलकारी ॥
नातो नेह रामसों मनियत, सुहृत सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आंख जो फूटे, बहुतक कहों कहाँ लौं ॥
तुलसी सो सब भाँति परम हित, पूज्य प्रानते प्यारो ।
जासों होय सनेह रामपद, याहि मतो हमारो ॥

मीराबाईकी भक्ति अगाध थी। इसके विषयमें भक्तमालमें प्रसिद्ध भक्त नाभाजीने यह छप्पय लिखा है—

सदृश गोपि को प्रेम प्रगट कलियुगहिं दिखायो ।
निर अंकुश अति निडर रसिक यश रसना गायो ॥
दुष्टनि दोष विचार मृत्यु को उद्यम कीयो ।
बार न बांको भयो गरल अमृत ज्यों पीयो ॥
भक्ति निशान बजाय कै, काहू तैं नाहि न लजी ।
लोक लाज कुल शृङ्खला, तजि मीरा गिरिधर भजी ॥

मीराजी ने तीन ग्रंथ भक्ति मार्ग के बनाए। जिनमें से मुन्शी देवीप्रसाद जी लिखते हैं कि 'नरसीजी का मायरा' हमारे भी देखने में आया है। उसके आदि में यह ठुमरी जंगला राग की है।

राग जंगला ठुमरी

गणपति कृपा करो गुणसागर, जनको जस शुभ गाय सुनाऊँ ॥
पच्छिम दिसा प्रसिद्ध धाम सुख श्री रणछोड़ निवासी ।
नरसी को माहेरो मंगल गावे मीरां दासी ॥१॥
क्षत्री बंस जनम मम जानो, नगर मेड़ते वासी ।
नरसी को जस बरन सुणाऊँ, नाना बिधि इतिहासी ॥२॥

सखा आपने संग जु लीने, हर मंदिर पै आए।
भक्ति कथा आरंभी सुन्दर, हरिगुण सीस नवाए ॥ ३ ॥
को मंडल को देस वखानूं, संतनके जस वारी।
को नरसीसो भयो कोन विध, कहो महिराज कुंवारी ॥ ४ ॥
ह्वै प्रसन्न मीरां तव भाख्यो, सुन सखि मिथुला नामा।
नरसीकी विध गाय सुनाऊँ, सारे सव ही कामा ॥ ५ ॥

मध्यका एक पद्य

(राग जैजैवंती)

सोवत ही पलकामें मैं तो, पल लागी पलमें पिउ आए ॥ टेक ॥
मैं जु उठी प्रभु आदर दैनकूं, जाग परी पिव ढूंढे न पाए ॥ १ ॥
और सखी पिव सोय गमाए, मैं जु सखी पिव जागि गमाए ॥२॥
आजकी वात कहा कहुँ सजनी, सुपनामें हरि लेत वुलाए ॥३॥
वस्त एक जव प्रेमकी पकरी, आज भए सखि मनके भाए ॥ ४॥

अन्तिम पद

यो माहरो सुनै रु गुनिहै, वाजे अधिक वजाय।
मीरां कहै सत्य करि मानो, भक्ति मुक्ति फल पाय ॥

वाकी ग्रन्थोंके नाम (१) गीत गोविन्दकी टीका और (२) राग गोविन्द हैं।

रसिक विहारी (वनी ठनी)

रसिक विहारीजी महाराजा नागरीदासजीकी की दासी थीं। इनका असली नाम "वनीठनीजी" था। इनको महाराजने पासवान की पदवी दी थी। ये हमेशा महाराजकी सेवा में रहा करती थीं।

बुरो, बुरो, मैं मोत बुरो हूं, आखिर टाबर थारो।
बुरो कुहाकर मैं रहजास्यूं, नांव बिगड़सी थारो ॥ नाथ० ॥३॥
थारो हूं थारो ही बाजूं रहस्यूं थारो, थारो !! ।
आंगलियां नुंह परे न होवै, या तो आप विचारो ॥ नाथ० ॥४॥
मेरी वात जाय तो जाओ, सोच नहीं कछु म्हारो।
मेरे वड़ो सोच यो लाग्यो, बिरद लाजसी थारो ॥ नाथ० ॥५॥
जचे जिसतरां करो नाथ अब, मारो चाहे तारो।
जांघ उघाड़याँ लाज मरोगा, ऊँडी बात बिचारो ॥ नाथ० ॥६॥

६०—भजन

राग-मालकोश ताल-तीनताल।

तूं भाइ म्हारो रे म्हारो ॥ टेक ॥ *

तूं म्हारो तेरो सब म्हारो जग सारो ही म्हारो ॥ तूं० ॥ १ ॥
मनमें सदा दूसरो समझे ऊपरसे कह थारो।
म्हारो होता-साँता भी सो रहे म्हारैसें न्यारो ॥ तूं० ॥ २ ॥
एक वार जो कपट छोड़ कर कहै "नाथमें थारो"।
सो म्हारा सारा पुत्रांमें अधिक लाड़लो म्हारो ॥ तूं० ॥ ३ ॥
सदा-पातकी सदा—कुकर्मी विषयांमें मतवारो।
"मैं थारो" यूँ साचे मनसें कहतां ही हो म्हारो ॥ तूं० ॥ ४ ॥
झटपट पुण्यवान सो होवे पापांसें छुटकारो।
म्हारो म्हारी गोद बिराजै कदे न म्हांसे न्यारो ॥ तूं० ॥ ५ ॥
तन मन बाणीसें जो म्हारो सो निश्चय ही म्हारो।
कदे न लाज्यो कदे न लाजै नांव बिडद यश म्हारो ॥ तूं० ॥ ६ ॥

* उपरोक्त पदका उत्तर

६१—भजन

राग-पहाड़ी ताल-केरवा ।

अब कित जाऊंजी, हार कर शरणे थांरे आयो ॥ टेक ॥

जब तक धनकी धूम रही घर भायां सेती छायो ।
साला साढू भोत नीसर्‌या, नेड़ोइ साख बतायो ॥ अब० ॥ १ ॥

अणगिणतीका बण्या भायला, प्रेम घणो दरशायो ।
एक एकसें बढ़ कर बोल्यो, एकहि जीव बतायो ॥ अब० ॥ २ ॥

सभा समाज पञ्च पंचायत, ऊंचो भोत बठायो ।
वाह वाहकी धूम मचाई, बुद्धिमान बतलायो ॥ अब० ॥ ३ ॥

घरका सभी, साख सबहीसें, सबहीके मन भायो ।
बातां सेती सभी पसीने, ऊपर खून बुहायो ॥ अब० ॥ ४ ॥

लक्ष्मी माता करी कृपा जद, चंचल रूप दिखायो ।
माया लई समेट भरमको, पड़दो दूर हटायो ॥ अब० ॥ ५ ॥

मात पिताने खारो लाग्यो, भायां मान घटायो ।
साला साढू सभी बीछड़्या, कोइ नहिं नेड़ो आयो ॥ अब० ॥ ६ ॥

"एक जीवका" भोत भायला, एक न आड़ो आयो ।
उल्टी हँसी उडाई जगमें, बेवकूफ बतालायो ॥ अब० ॥ ७ ॥

टूट्यो प्रेम छुट्यो संग सबसे, सब कोई छिटकायो ।
नाक चढाकर मुंहसे बोल्या, सब जग भयो परायो ॥ अब० ॥ ८ ॥

सुखको रूप समझ कर जगने, भोत दिना भरमायो ।
खुल गइ पोल रूप सगलांको, असली चौड़े आयो ॥ अब० ॥ ९॥

मिटी भरमना सारी थारे, चरणां चित्त लगायो ।
नाथ ! अनाथ पतित पापीने, तुरत सनाथ बणायो ॥ अब०॥१०॥

६२—भजन

राग-भीमपलासी ताल-तीनताल ।

नाथ मने अबकी बार बचाओ ॥ टेक ॥
फंस्यो आय मैं भँवर जाल, निकलणकी वाट बताओ ।
रस्तो भूल्यो मिल्यो अंधेरो, मारग आप दिखाओ ॥ नाथ० ॥ १ ॥
दुखियाने उद्धार करणको, थारे बड़ो उछावो ।
मेरे जिसो दुखी कुण जगमें, प्रभुजी आप बताओ ॥ नाथ० ॥ २ ॥
भोत कष्ट मैं भुगत्या स्वामी, अब तो रांत कटाओ ।
धीरज गयो धरम भी छूट्यो, आफत आप मिटाओ ॥ नाथ० ॥ ३ ॥
आरत भोत होय रह्यो प्रभुजी, अब मत बार लगाओ ।
करो माफ तकसीर दासकी, शरण मने बकसाओ ॥ नाथ० ॥ ४ ॥

६३—भजन

राग-जोशी ताल-दीपचन्दी ।

नाथ थारे शरणै आयोजी ॥ टेक ॥
जचे जिसतरां खेल खिलावो, थे मन चायोजी ॥ टेक ॥
बोझो सभी ऊतर्‌यो मनको, दुख बिनसायोजी ।
चिन्ता मिटी बडे चरणांको, स्हारो पायोजी ॥ नाथ० ॥ १ ॥
सोच फिकर अब सारो थारै, ऊपर आयोजी ॥
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो, अन्तर हरखायोजी ॥ नाथ० ॥ २ ॥

जस अपजस सब थारो में तो, दास कुहायोजी ॥
मन-भँवरो थारे चरण-कमलमें जा लिपटायोजी ॥ नाथ० ॥३॥

अज्ञात

६४—महिमा

हरि तुम हरो जनकी भीर ॥टेक॥
द्रोपदीकी लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर ॥
भक्त-कारण रूप नरहरि, धरयो आप शरीर ॥१॥
हरिनकश्यप मारि लीन्हो, कियो बाहर नीर ।
दासि मीरा लाल गिरधर, दुख जहाँ तहँ पीर ॥२॥

६५—नाम

मेरो मन रामहि राम रटै रे ॥टेक॥
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ।
जनम जनमके खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे ॥१॥
कनक-कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे ।
मीरा कहै प्रभु हरि अविनाशी, तन मन ताहि पटै रे ॥२॥

६६—नाम

राम नाम मेरे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय ॥टेक॥
मैं मँद-भागण करम अभागण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ॥१॥
विरह पिंजरकी वाड़ सखी री, उठकरजी हुलसाऊँ ए माय ।
मनकूं मार सजूं सतगुरुसूं, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ॥२॥

डंको नाम सुरतकी डोरी, कड़ियाँ प्रेम चढ़ाऊँ ए माय।
प्रेमको ढोल वण्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय ॥३॥
तन करूँ ताल मन करूँ ढफली, सोती सूरति जगाऊँ ए माय।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तो प्रीतम-पद पाऊँ ए माय ॥४॥
मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोविन्दका गाऊँ ए माय।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, रज चरणनकी पाऊँ ए माय ॥५॥

६७—राग असावरी

बसो मेरे नैननमें नन्दलाल ॥टेक॥
मोहिनी मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल।
अधर-सुधा रस मुरली राजत, उर वैजन्ती-माल ॥१॥
छुद्रघण्टिका कटि-तट शोभित, नूपुर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई, भक्त-बछल गोपाल ॥२॥

६८—लीला

होरी खेलत है गिरिधारी ॥टेक॥
मुरली चंग वजत डफ न्यारो, सँग जुवती ब्रज नारी ॥१॥
चन्दन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी।
भरि-भरि मूठ गुलाल लाल चहुं, देत सबन पै डारी ॥२॥
छैल छबीले नवल कान्ह संग, स्यामा प्राण-पियारी।
गावत चारु धमार राग तहँ, दै दै कल करतारी ॥३॥
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ़्यो रस ब्रज भारी।
मीरा प्रभु गिरिधर मिले, मनमोहन लाल बिहारी ॥४॥

६९—गुरु-महिमा

मोही लागी लगन गुरु-चरननकी ॥टेक॥
चरन बिना कछुवै नहिं भावै, जग-माया सब सपननकी ॥१॥
भव-सागर सब सूखि गयौ है, फिकर नहीं मोहि तरननकी।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, आस वही गुरु-सरननकी ॥२॥

७०—राग बागश्री

भज ले रे मन गोपाल गुना ॥ टेक ॥
अधम तरे अधिकार भजन सूं, जोइ आये हरि सरना।
अविश्वास तो साखि बताऊं, अजामील गणिका सदना ॥ १ ॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना।
जाको रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिरो एक छिना ॥ २ ॥
बालापन सब खेल गंवायो, तरुण भयो जब रूप घना।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना ॥ ३ ॥
गज अरु गीधहु तरे भजन सूं, कोउ तरयो नहिं भजन बिना।
धनाभगत पीपामुनि सिवरी, मीरा की हूं करो गणना ॥ ४ ॥

७१—सिखावन

मन रे परसि हरि के चरण ॥ टेक ॥
सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण।
जिन चरण प्रह्लाद परसे, इन्द्र पदवी-धरण ॥ १ ॥
जिन चरण ध्रुव अटल कीन्हें, राखि अपनी शरण।
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेट्यो, नख सिखा सिरी धरण ॥ २ ॥

जिन चरण प्रभु परसि लीनो, तरी गोतम घरण।
जिन चरण काली नाग नाथ्यो, गोप-लीला-करण ॥ ३ ॥
जिन चरण गोवर्द्धन धार्यो, गर्व मघवा हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥ ४ ॥

७२—सिखावन

राम नाम रस पीजै, मनुआं राम नाम रस पीजै ।।टेक।।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुनि लीजै ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोहकूं, बहा चित्तसे दीजै।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, ताहिके रंगमें भीजै ॥ २ ॥

७३—राग असावरी

भज मन चरनकमल अविनासी ।।टेक।।
जेताई दीसे धरनि गगन बिच, तेताई सब उठि जासी।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ।।१।।
इस देहीका गरब न करना, माटीमें मिल जासी।
यो संसार चहरकी बाजी, सांझ पड्यां उठ जासी ।।२।।
कहा भयो है भगवां पहर्‌यां, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलट जनम फिर आसी ।।३।।
अरज करूं अबला कर जोरे, श्याम तुम्हारी दासी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, काटो यमकी फांसी ।।४।।

७४—चेतावनी

नहिं ऐसो जनम वारम्वार ॥टेक॥
क्या जानूं कछु पुन्य प्रगटे, मानुषां अवतार ॥१॥
बढ़त पल पल घटत छिन छिन, चलत न लागे वार।
विरछके ज्यों पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार ॥२॥
भवसागर अति जोर कहिये, विषम ओखी धार।
सुरतका नर वांध बेड़ा, वेग उतरो पार ॥३॥
साधु सन्ता ते महन्ता, चलत कहत पुकार।
दासि मीरा लाल गिरधर, जीवणा दिन चार ॥४॥

७५—दीनता

तुम सुनो दयाल म्हांरी अरजी ॥टेक॥
भौसागरमें वही जात हूं, काढ़ो तो थांरी मरजी।
जो संसार सगो नहिं कोई, सांचा सगा रघुवरजी ॥१॥
मात पिता और कुटुम्ब कवीलो, सव मतलवके गरजी।
मीराकी प्रभु अरजी सुन लो, चरण लगावो थांरी मरजी ॥२॥

७६—दीनता

अव मैं शरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान ॥टेक॥
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान।
जल डूवत गजराज उवारे, गणिका चढ़ी विमान ॥१॥
और अधम तारे वहुतेरे, भाखत सन्त सुजान।
कुब्जा नीच भीलनी तारी, जानै सकल जहान ॥२॥

कहँ लग कहूं गिनत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान।
मीरा कहै मैं शरण थांरी, सुनिये दोनों कान ॥३॥

७७—राग भैरवी

छोड़ मत जाज्यो जी महाराज ॥टेक॥

मैं अवला बल नांय गुसाईं, तुम्हीं मेरे सिरताज।
मैं गुणहीन गुण नांय गुसाईं, तुम समरथ महाराज ॥१॥
थांरी होयके किणरे जाऊं, तुम्हीं हिवड़ारो साज।
मीराके प्रभु और न कोई, राखो इबके लाज ॥२॥

७८—भजन

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभुजी अरज करूं छूं ॥टेक॥

या भवमें मैं बहु दुख पायो, ऐसा सोग निवार।
अष्ट करमकी तलब लगी है, दूर करो दुख पार ॥१॥
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी धार।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, आवागमन निवार ॥२॥

७९—भजन

थे तो पलक उघाड़ो दीना नाथ, मैं हाजिर नाजिर कदकी खड़ी ॥टेक॥

साजनियाँ दुशमन होय बैठ्या, सबने लगूं कड़ी।
तुम बिन साजन कोई नहिं है, डिगी नाव मेरी समँद अड़ी ॥ १ ॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निदरा, सूखूं खड़ी खड़ी।
बान विरहका लाग्या हियेमें, भूलूं न एक घड़ी ॥ २ ॥
पत्थरकी तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरामें कहिये, सौ पर एक धड़ी ॥ ३ ॥

८०—राग भैरवी

मीराको प्रभु साची दासी बनाओ ।
झूठे धन्धोंसे मेरा फन्दा छुड़ाओ ॥ १ ॥
लूटे ही लेत विवेकका डेरा ।
बुधि वल यद्यपि करूँ बहुतेरा ॥ २ ॥
हाय ! हाय ! नहिं कछु वश मेरा ।
मरत हूं विवश प्रभु धाओ सवेरा ॥ ३ ॥
धर्म-उपदेश नितप्रति सुनती हूं ।
मन कुचालसे भी डरती हूं ॥ ४ ॥
सदा साधु सेवा करती हूं ।
सुमिरण ध्यानमें चित धरती हूं ॥ ५ ॥
भक्ति मारग दासीको दिखलाओ ।
मीराको प्रभु साची दासी बनाओ ॥ ६ ॥

८१—भजन

सुण लीजो विनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ १ ॥
तुम तो पतित अनेक उधारे, भवसागरसे तारे ॥ २ ॥
मैं सबका तो नाम न जानूं, कोई कोई नाम उचारे ॥ ३ ॥
अवरीष सुदामा नामा, तुम पहुंचाये निज धामा ॥ ४ ॥
ध्रुव जो पाँच वर्षके बालक, तुम दरश दिये घनश्यामा ॥ ५ ॥
धना भक्तका खेत जमाया, कबिराका बैल चराया ॥ ६ ॥
शबरीका जूठा फल खाया, तुम काज किये मनभाया ॥ ७ ॥

सदना औ सेना नाई, को तुम कीन्हा अपनाई ॥ ८ ॥
करमाकी खिचड़ी खाई, तुम गणिका पार लगाई ॥ ९ ॥
मीरा प्रभु तुमरे रंग राती, या जानत सब दुनियाई ॥ १० ॥

८२—प्रार्थना

प्यारे दरसन दीज्यो आय, तुम विन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
जल विन कमल चन्द विन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी ।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, बिरह कलेजो खाय ॥ १ ॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैना, मुखसूं कथत न आवै बैना ।
कहा कहूं कछु कहत न आवै, मिलकर तपत बुझाय ॥ २ ॥
क्यूं तरसावो अन्तरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी ।
मीरा दासी जनम जनमकी, पड़ी तुम्हारे पाय ॥ ३ ॥

८३—राग काफी

अव तो निभायाँ सरेगी, वाँह गहेकी लाज ॥ टेक ॥
समरथ सरन तुम्हारी सइयाँ, सरब सुधारण काज ।
भवसागर संसार अपरबल, जामें तुम हो जहाज ॥ १ ॥
निरधारां आधार जगत गुरु, तुम विन होय अकाज ॥ २ ॥
जुग जुग भीर हरी भक्तनकी, दीनी मोक्ष समाज ॥ ३ ॥
मीरा सरण गही चरणनकी, लाज रखो महाराज ॥ ४ ॥

८४—राग वागेश्री

साजन घर आवो मीठा बोला ॥ टेक ॥
कबकी खड़ी मैं पन्थ निहारूं, थाँरी, आयाँ होसी भला ॥ १ ॥
आओ निशङ्क शङ्क मत मानो, आयां ही सुक्ख रहेला ॥ २ ॥

तन मन वार करूं न्योछावर, दीज्यो श्याम मो हेला ॥ ३ ॥
आतुर बहुत विलम्ब मत कीज्यो; आयाँ ही रंग रहेला ॥ ४ ॥
तेरे कारन सब रंग त्यागा, काजल तिलक तमोला ॥ ५ ॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, कर धर रही कपोला ॥ ६ ॥
मीरा दासी जनम जनमकी, दिलकी घूंडी खोला ॥ ७ ॥

८५—राग असावरी

रमैया मैं तो थारे रंग राती ॥ टेक ॥
औरोंके पिया परदेश बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती ।
मेरा पिया मेरे हृदय बसत है, रोल करूँ दिन राती ॥१॥
चूवा चोला पहिर सखीरी, में झुरमट रमवा जाती ।
झुरमटमें मोहिं मोहन मिलिया, घाल मिली गलबाँथी ॥२॥
और सखी मद पी पी माती, में विन पीयाँ ही माती ।
प्रेम-भठीको में मद पीयो, छकी फिरूं दिन राती ॥३॥
सुरत निरतको दिवलो जोयो, मनसा पूरन बाती ।
अगम घाणिको तेल सिंचायो, वाल रही दिन राती ॥४॥
जाऊँनी पीहरिये जाऊँनीं सासरिये, हरिसूं सैन लगाती ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरि-चरणां चित लाती ॥५॥

८६—भजन

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हारो काँई करलेसी,
म्हे तो गुण गोविंदका गास्याँ हो माई ॥ टेक ॥
राणा जी रूठ्यो तो वाँरो देश रखासी,
हरिजी रूठ्याँ किठे जास्याँ हो माई ॥ १ ॥

लोक लाजकी तो काण न मानाँ,

निरभै निसाण घुरास्यां हो माई ॥ २ ॥

राम-नामकी झ्याझ चलास्यां,

भवसागर तिरजास्यां हो माई ॥ ३ ॥

मीरा शरण साँवले गिरधरकी,

चरण-कमल लपटास्याँ हो माई ॥ ४ ॥

८७—राग भैरवी

आली ! साँवरेकी दृष्टि मानो, प्रेमकी कटारी है ॥ टेक ॥

लागत वेहाल भई, तनकी सुध बुद्ध गई।

तन मन सव व्यापो प्रेम, मानो मतवारी है ॥ १ ॥

सखियां मिलि दोइ चारी, वावरी-सी भई न्यारी।

हौं तो वाको नीके जानौं, कुञ्जको विहारी है ॥ २ ॥

चन्दको चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै।

जल विना मीन जैसे, तैसे प्रीत प्यारीं है ॥ ३ ॥

विनती करौं हे श्याम, लागूं मैं तुम्हारे पाँव।

मीरा प्रभु ऐसी जानो, दासी तुम्हारी है ॥ ४ ॥

८८—राग आसावरी

मीरा मगन भई हरिके गुण गाय ॥ टेक ॥

सांप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दिया जाय।

न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ॥ १ ॥

जहरका प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।

न्हाय धोय जब पीवन लागी, हो गई अमर अँचाय ॥ २ ॥

सूली सेज राणाने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय।
साँझ भई मीरा सोवन लागी, मानों फूल बिछाय ॥ ३ ॥
मीराके प्रभु सदा सहाई, राखे विघ्न हटाय।
भजन भावमें मस्त डोलती, गिरिधरपै बलि जाय ॥ ४ ॥

८९—राग माड

माई म्हें गोविन्द लीनो मोल ॥ टेक ॥
कोई कहै सस्तो कोई कहै महँगो, लीनो तराजू तोल ॥ १ ॥
कोई कहै घरमें, कोई कहै वनमें राधाके संग किलोल ॥ २ ॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेमके मोल ॥ ३ ॥

९०—राग सारंग

पायो जी म्हे तो राम रतन धन पायो ॥ टेक ॥
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो ॥१॥
जनम जनमकी पूंजी पाई, जगमें सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवै, दिन दिन वढ़त सवायो ॥ २ ॥
सतकी नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जश गायो ॥ ३ ॥

९१—भजन

अब तौ हरी नाम लौ लागी ॥ टेक ॥
सब जगको यह माखन-चोरा, नाम धरयो वैरागी ॥ १ ॥
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कहं छोड़ी सब गोपी।
मूंड़ मुंड़ाइ डोरि कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ॥ २ ॥

मात जसोमति माखन कारन, बाँधै जाके पाँव ।
श्याम किशोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नांव ॥ ३ ॥
पीताम्बरको भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौर कृष्णकी दासी मीरा, रसना कृष्ण बसै ॥ ४ ॥

९२—भजन

तेरा कोई नहिं रोकनहार, मगन होय मीरा चली ॥ टेक ॥
लाज सरम कुलकी मरजादा, सिरसे दूर करी ।
मान अपमान दोऊं धर पटके, निकसी हूं ज्ञान गली ॥१॥
ऊंची अटरिया, लाल किंवड़िया, निरगुण-सेज बिछी ।
पचरंगी झालर शुभ सोहै, फूलन फूल कली ॥२॥
बाजूबन्द कडूला सोहै, सेंदुर मांग भरी ।
सुमिरन थाल हाथमें लीन्हों, शोभा अधिक भली ॥३॥
सेज सुखमणा मीरा सोवै, शुभ है आज घरी ।
तुम जावो राणा घर अपणे, मेरी तेरी नाहिं सरी ॥४॥

९३—भजन

नैना लोभी, रे, बहुरि सके नहिं आय ॥ टेक ॥
रोम-रोम नखसिख सब निरखत, ललकि रहे ललचाय ॥१॥
मैं ठाड़ी गृह आपने री, मोहन निकसे आय ।
बदन चन्द परकासत, हेली, मन्द-मन्द मुसुकाय ॥२॥
लोक कुटुम्बी बरजि बरजहीं, बतियाँ कहत बनाय ।
चंचल निपट अटक नहिं मानत, पर हथ गये बिकाय ॥३॥

भली कहो कोइ बुरी कहो मैं, सब लई शीस चढ़ाय ।
मीरा प्रभु गिरिधरन लाल बिनु, पल भरि रह्यो न जाय ॥

९४—भजन

ऐसे पियै जान न दीजै, हो ॥ टेक ॥
चलो, री सखी ! मिलि राखिए, नैननि रस पीजै, हो ।
श्याम सलोनो सांवरो, मुख देखत जीजै, हो ॥
जोइ जोइ भेपसों हरि मिलैं, सोइ सोइ कीजै, हो ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, बड़ भागन रीजै हो ॥

९५—भजन

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी ॥ टेक ॥
तोहि देखे विन कल न परत है, तलफि तलफि जिय जासी ॥१॥
तेरे खातिर जोगिन हूंगी, करवत लूंगी काशी ॥२॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, चरण कंवलकी दासी ॥३॥

९६—भजन

बरजी मैं काहुकी नाहिं रहूं ॥ टेक ॥
सुनोरी सखी, तुमसों या मनकी, सांची बात कहूं ॥१॥
साधु संगति कर हरि-सुख लेऊं, जगतें हौं दूरि रहूं ।
तन धन मेरो सबही जावो, भल मेरो शीस लहूं ॥२॥
मन मम लाग्यौ सुमरन सेती, सबको मैं बोल सहूं ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, सतगुरु-शरण गहूं ॥३॥

———

९७—भजन

तू नागर नन्द-कुमार, तोसों लाग्यौ नेहरा ॥ टेक ॥
मुरली तेरी मन हरयौ, बिसरयौ गृह-ब्यौहार ॥ तू नागर०॥१॥
जबतें श्रवननि धुनि परी, गृह अंगना न सुहाइ ।
पारधि ज्यों चूकै नहीं, मृगी बेधि दइ आइ ॥ तू नागर० ॥२॥
पानी पीर न जानई ज्यों, मीन तलफि मरि जाइ।
रसिक मधुपके मरमको नहिं,समुझत कमल सुभाइ॥ तू नागर०॥३॥
दीपकको जो दया नहीं, उड़ि-उड़ि मरत पतंग ।
मीरा प्रभु गिरिधर मिले, जैसे पानी मिलि गयौ रंग ॥तू नागर०॥४॥

९८—भजन

मैं गिरिधरके घर जाऊं ।
गिरिधर म्हारो सांचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊं ॥ टेक॥
रैन पड़ै तब ही उठि जाऊं, भोर भये उठि आऊं ।
रैन-दिना वांके संग खेलूं, ज्यों त्यों ताहि रिझाऊं ॥ १ ॥
जो पहिरावै सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊं ।
मेरी उनकी प्रीति पुरानी, उन बिन पल न रहाऊं ॥ २ ॥
जहं बैठावे, तितही बैठूं, बैंचै तो बिक जाऊं ।
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, बार-बार बलि जाऊं ॥ ३ ॥

९९—भजन

श्रीगिरिधर आगे नाचूंगी ॥टेक॥
नाचि-नाचि पिय रसिक रिझाऊं, प्रेमी जनको जाचूंगी ।
प्रेम-प्रीतिके बांधि घूंघरू, सुरतकी कछनी काछूंगी ॥१॥

लोक-लाज कुलकी मरजादा, यामें एक न राखूंगी ।
पियाके पलंगा जा पोढूंगी, मीरा हरि-रंग राचूंगी ॥२॥

१००—भजन

सूरत दीनानाथसे लगी, तूँ तो समझ सुहागण सुरता नार ॥टेक॥
लगनी लहँगो पहर सुहागण, बीती जाय बहार ।
धन जोवन है पावणा री, मिलै न दूजी बार ॥ १ ॥
राम नामको चुड़लो पहिरो, प्रेमको सुरमो सार ।
नकवेसर हरि नामकी री, उतर चलोनी परलो पार ॥२॥
ऐसे वरको क्या वरूँ, जो जन्मे और मर जाय ।
वर वरिये एक सांवरो री, मेरो चुड़लो अमर हो जाय ॥३॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री, हरि ठग ले गयो मोय ।
लख चौरासी मोरचा री, छिनमें गेर्याछै विगोय ॥४॥
सुरत चली जहां मैं चली र, कृष्ण—नाम झनकार ॥
अविनाशी की पोल पर जी, मीराँ करै छै पुकार ॥ ५ ॥

१०१—भजन

राणाजी म्हांरी प्रीति पुरवली मैं कांई करूं ॥टेक॥
राम नाम बिन नहीं आवड़े, हिवड़ो झोला खाय ।
भोजनिया नहिं भावै म्हांने, नींदड़ली नहिं आय ॥१॥
विषको प्यालो भेजियो जी, जाओ मीरा पास ।
कर चरणामृत पी गई, म्हांरे गोविन्द रे विश्वास ॥२॥

विषको प्यालो पी गई जी, भजन करै राठौर।
थारी मारी ना मरूं, म्हारो राखणवालो और ॥३॥
छापा तिलक लगाइया जी, मनमें निश्चै धार।
रामजी काज संवारिया जी, म्हांने भावैं गरदन मार ॥४॥
पेट्यां बासक भेजियो जी, यो छै मोतीड़ांरो हार।
नाग गलेमें पहिरियो, म्हांरे महलां भयो उजियार ॥५॥
राठौड़ांरी धीयड़ी जी, सीसोद्यांके साथ।
ले जाती बैकुण्ठको, म्हांरी नेक न मानी बात ॥६॥
मीरा दासी श्यामकी जी, श्याम गरीब निवाज।
जन मीराकी राखज्यो कोई, बांह गहेको लाज ॥७॥

१०२—बिरह

हे री मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दरद न जाने कोय ॥टेक॥
सूली ऊपर सेज हमारी, सोणो किस विध होय।
गगन-मंडल पर सेज पियाकी, किस विध मिलणो होय ॥१॥
घायलकी गति घायल जानै, जो कोई घायल होय।
जौहरकी गति जौहरि जानै, दूजा न जाने कोय ॥२॥
दरदकी मारी बन बन डोलूं, वैद मिल्यो नहिं कोय।
मीराकी प्रभु पीर मिटै जद बैद सांवलियो होय ॥३॥

१०३—राग सारंग

म्हारी सुध ज्यूं जानो ज्यूं लीजोजी ॥टेक॥
पल पल भीतर पंथ निहारूं, दर्शन म्हांने दीजोजी ॥१॥
मैं तो हूं बहु औगुणहारी, औगण चित मत दीजोजी ॥२॥

मैं तो दासी थांरे चरणकमलकी, मिल बिछुरन मत कीजोजी ॥
मींरां तो सतगुरुजी शरणे, हरि चरणां चित दीजोजी ॥४॥

१०४—राग वागेश्री

घड़ी एक नहिं आवड़ै, तुम दरशण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राणजी, कैसूं जीवण होय ॥ टेक ॥
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोय।
घायल सी घूमत फिरूँ रे, मेरा दरद न जाने कोय ॥१॥
दिवस तो खाय गमाइया रे, रैण गमाई सोय।
प्राण गमाया झूरताँ रे, नैण गमाया रोय ॥२॥
जो मैं ऐसा जाणती रे, प्रीत किये दुख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोय ॥३॥
पंथ निहारूं डगर वुहारूँ, ऊभी मारग जोय।
मीराके प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ॥४॥

१०५—राग बिलावल

हरि बिनु क्यों जीऊँ री माय ॥ टेक ॥
हरि कारन बौरी भई, जस काठहि घुन खाय ॥ १ ॥
औषध मूल न संचरै, मोहिं लागो बोराय।
कमठ दादुर बसत जल मंह, जलहिं ते उपजाय ॥ २ ॥
हरी ढूंढन गई बन बन, कहुं मुरली धुन पाय।
मीराके प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ॥ ३ ॥

१०६—भजन

सखी मेरी नींद नसानी हो ॥ टेक ॥
पियाके पन्थ निहारते, सब रैन बिहानी हो ॥ १ ॥
सखियन मिलकर सीख दई, मन एक न मानी हो ।
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो ॥ २ ॥
अंग छीन व्याकुल भई, मुख पिय पिय बानी हो ।
अन्तर वेदन बिरहकी कोई, पीर न जानी हो ॥ ३ ॥
ज्यों चातक घनकूं रटे, मछली जिमि पानी हो ।
मीरा व्याकुल बिरहिणी, सुध बुध बिसरानी हो ॥ ४ ॥

१०७—राग असावरी

दरस बिन दूखन लागे नैन ॥ टेक ।
जबसे तुम बिछुरे प्रभुजी, कबहुं न पायो चैन ॥ १ ॥
शब्द सुनत मेरी छतियाँ कम्पै, मीठे लागे बैन ।
एक-टकटकी, पंथ निहारूँ, भई छमासी रैन ॥ २ ॥
बिरह बिथा कासूं कहूं सजनी, बहगई करवत नैन ।
मीराके प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख दैन ॥ ३ ॥

१०८—राग बिलावल

माई म्हाँरी हरि न बूझी बात ॥ टेक ॥
पिंडमेंसे प्राण पापी, निकसत क्यूं नहिं जात ॥ १ ॥
रैन अन्धेरी बिरह घेरी, तारा गिणत निसि जात ।
ले कटारी कण्ठ चीरूँ, करूँगी अपघात ॥ २ ॥

पट न खोल्या मुखाँ न बोल्या, साँझ लग परभात ।
अबोलनामें अवधि बीती, काहेकी कुसलात ॥ ३ ॥
सुपनमें हरि दरस दीन्हों, मैं न जाण्यो हरि जात ।
नैन म्हाँरा उघड़ आया, रही मन पछतात ॥ ४ ॥
आवन आवन होय रह्यो रे, नहिं आवनकी बात ।
मीरा व्याकुल विरहनी रे, बाल ज्यूं बिललात ॥ ५ ॥

१०९—राग काफी

घर आँगन न सुहावे, पिया बिन मोहि न भावे ॥ टेक ॥
दीपक जोय कहा करूँ सजनी ! हरि परदेश रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूं लागे, सिसक जिय जावे ॥
नयन निद्रा नहिं आवे ॥ १ ॥
कबकी ठाड़ी मैं मग जोऊँ, निस दिन बिरह सतावे ।
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे ॥
हरी कब दरस दिखावे ॥ २ ॥
ऐसो है कोइ परम सनेही, तुरत संदेशो लावे ।
वा विरियाँ कब होसी मुझको, हरि हँस कण्ठ लगावे ॥
मीरा मिलि होरी गावे ॥ ३ ॥

११०—भजन

पिया, तैं कहाँ गयौ नेहरा लगाय ॥ टेक ॥
छाँड़ि गयौ अब कहाँ विसासी, प्रेमकी बाती बराय ॥१॥
विरह-समुद्रमें छाँड़ि गयो, पिव, नेहकी नाव चलाय ॥२॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, तुम बिनु रह्यो न जाय ॥३॥

१११—भजन

बंसीवारा आजो म्हारे देस, थारी साँवरी सुरत व्हालो वेष ॥टेक॥
आऊँ-आऊँ कर गया साँवरा, कर गया कौल अनेक।
गिनते-गिनते घिस गईम्हारी, आंगलिया री रेख ॥ १ ॥
मैं वैरागिणि आदिकी जी, थाँरे म्हारे कदको सन्देस।
विन पाणी विन सावुन साँवरा, होय गई धोय सपेद ॥ २ ॥
जोगिण होय जङ्गल सब हेरूँ, तेरा नाम न पाया भेस।
तेरी सुरतके कारणे, म्हें धर लिया भगवां भेस ॥ ३ ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, घूंघरवाला केस।
मीराके प्रभु गिरिधर मिलियां, दूनों बढ़ो सनेस ॥ ४ ॥

११२—भजन

गली तो चारों वन्द हुई, मैं कैसे मिलूं हरिसे जाय ॥
ऊँची नीची राह रपटीली, पाँव नहीं ठहराय।
सोच-सोच पग धरूं जतनसे, बार-बार डिग जाय ॥ १ ॥
ऊँचा नीचा महल पियाका, म्हांस्यूं चल्या न जाय।
पिया दूर पंथ म्हाँरो झीणो, सुरत झुकोला खाय ॥ २ ॥
कोस-कोसपर पहरा वैठ्या, पैंड पैंड बटमार।
हे विधना कैसी रच दीन्ही; दूर बसायो म्हारो गाम ॥ ३ ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, सत गुरु दई बताय।
जुगन-जुगनसे बिछुड़ी मीरा, घरमें लीन्हीं आय ॥ ४ ॥

११३—भजन

नातो नामको जी म्हाँस्यूँ, तनक न तोड्यो जाय ॥टेक॥
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे, लोग कहे पिंड रोग।
छाने लांघण मैं किया रे, राम मिलनके जोग ॥ १ ॥
वावल वैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हारी बाँह।
मूरख वैद मरम नहिं जाणै, कसक कलेजे माँह ॥ २ ॥
जाओ वैद घर आपणे रे, म्हारो नाम न लेय।
मैं तो दाझी विरहकी रे, काहेकूं औषध देय ॥ ३ ॥
मांस गल गल छीजियो रे, करक रह्या गल आय।
आँगलियाँरी मूंदड़ी म्हारे, आवण लागी बाँह ॥ ४ ॥
रह रह पापी पपीहरा रे, पिवको नाम न लेय।
जे कोई विरहण साम्हले तो, पिव कारण जिव देय ॥ ५ ॥
छिन मन्दिर छिन आंगणे रे, छिन छिन ठाड़ी होय।
घायल-सी झूमूं खड़ी म्हारी, व्यथा न बुझै कोय ॥ ६ ॥
काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे, कौआ तूं ले जाय।
ज्याँ देशाँ म्हारो हरि वसे रे, वाँ देखत तूं खाय ॥ ७ ॥
म्हारे नातो रामको रे, और न नातो कोय।
मीरा व्याकुल विरहणी रे, हरि दर्शन दीज्यो मोय ॥ ८ ॥

११४—राग भैरवी

आली री मेरे नैनन बान पड़ी ॥ टेक ॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १ ॥
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी ॥ २ ॥

कैसे प्रान पिया विन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ॥ ३ ॥
मीरा गिरधर हाथ विकानी, लोग कहै विगड़ी ॥ ४ ॥

११५—राग भैरवी

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ॥ टेक ॥
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई ॥ १ ॥
छोड़ दई कुलकी कान, का करिहैं कोई ।
संतन ढिग वैठि वैठि, लोक-लाज खोई ॥ २ ॥
चुनरीके किये टूक, ओढ़ लीन्हि लोई ।
मोती मूंगे उतार, वन माला पोई ॥३ ॥
अँसुवन जल सींच सींच, प्रेम वेलि वोई ।
अव तो वेल फैल गई, होनी हो सो होई ॥४॥
दूधकी मथनियाँ वड़े प्रेमसे विलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो, छाछ पिये कोई ॥ ५ ॥
आई मैं भगति काज, जगत देख मोही ।
दासि मीरा गिरधर प्रभु, तारो अव मोही ॥६॥

११६—राग आसावरी

लाला मैं वैरागण हूंगी ॥ टेक ॥
जिन भेषाँ म्हारो साहिव रीझे, सोई भेष धरूँगी ॥ १ ॥
शील सन्तोष धरूं घट भीतर, समता पकड़ रहूंगी ॥ २ ॥
जाको नाम निरंजन कहिये, ताको ध्यान धरूँगी ॥ ३ ॥

गुरूके ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पैरूँगी।
प्रेम-प्रीतसू हरि गुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी ॥ ३ ॥
या तनकी मैं करूँ कीगँरी, रसना नाम कहूँगी।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, साधाँ संग रहूँगी ॥ ४ ॥

११७—राग भैरवी

श्याम म्हाँने चाकर राखोजी, गिरधारीलाल चाकर राखोजी ॥
चाकर रहसूँ, बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिनमें, गोविन्दका गुण गासूँ ॥ १ ॥
चाकरी में दरशन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव भगति जागिरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ॥ २ ॥
मोर-मुकुट पीताम्बर सोहै, गल वैजन्ती माला।
वृन्दावनमें धेनु चरावै, मोहन मुरलीवाला ॥ ३ ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ बिच बिच राखूं बारी।
साँवरियाके दरशन पाऊँ, पहिर कुसूँमल सारी ॥ ४ ॥
जोगी आया जोग करनकूँ, तप करने सन्यासी।
हरी भजनको साधू आये वृन्दावनके बासी ॥५॥
मीराके प्रभु गहिर गंभीरा, हृदै रहोजी धीरा।
आधी रात प्रभु दरशन दीज्यो, प्रेम नदीके तीरा ॥ ६ ॥

११८—भजन

जोगी मत जा मत जा पाँव परूँ मैं तेरी ॥टेक॥
प्रेम-भक्तिको पेंड़ो हि न्यारो, हमकूँ गैल बता जा ॥ १ ॥

अगर चन्दनकी चिता रचाऊँ, अपने हाथ जला जा ॥२॥
जल वल भई भस्मकी ढेरी अपने अंग लगा जा ॥३॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ॥४॥

११९—भजन

जावा दे, री जावा दे, जोगी किसका मीत ॥टेक॥
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ॥ १ ॥
बोलत वचन मधुर अति प्यारे, जोरत नाहीं प्रीत ॥ २ ॥
हूं जाणूं य पार निभैगी, छोड़ चला अधवीच ॥ ३ ॥
मीराके प्रभु गिरिधर नागर, प्रेम-पियासा मीत ॥ ४ ॥

१२०—भजन

जोगिया तू कब रे, मिलैगो आई ॥टेक॥
तेरे कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई ॥१॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, तुम बिन कछु न सुहाई ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, मिलिकैं तपति बुझाई ॥२॥

१२१—भजन

न भावै थारो देसड़लो जी, रूड़ो रूड़ो ॥टेक॥
हरिकी भगति करै नहिं कोई, लोग बसें सब कूड़ो ॥१॥
पाटी मांग उतारि धरूंगी, ना पहिरूं कर चूड़ो ।
मीरा हठीली कह संतनसों, पायौ छै आनंद पूरो ॥२॥

१२२—राग काफी

नंदनन्दन बिलमाई, बदराने घेरी माई ॥टेक॥
इत घन गरजे, उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ।

उमड़ घुमड़ चहुं दिशिसे आया, पवन चले पुरवाई ॥१॥
दादुर मोर पपीहा वोले, कोयल शब्द सुनाई।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल चित लाई ॥२॥

१२३—भजन

इण सरवरियाँ री पाल मीराँवाई साँपड़े ॥ टेक ॥
साँपड़ किया असनान सूरज सामी जप करे।
होय विरंगी नार, डगराँ विच क्यूं खड़ी ॥१॥
काँई थारो पीहर दूर वराँ सासू लड़ी।
चल्यो जारे असल गुंवार तनै मेरी के पड़ी ॥२॥
गुरु म्हारा दीनदयाल हीराँरा पारखी।
दियो म्हाने ज्ञान वताय, संगत कर साधरी ॥३॥
खोई कुलकी लाज मुकुन्द थाँरे कारणे।
वेगही लीज्यो सम्हाल, मीरा पड़ी वारणे ॥४॥

१२४—राग काफी

फागुनके दिन चार, होलीके खेल मना रे॥ टेक ॥
विन करताल पखावज वाजै, अनहदकी झनकार।
विन सुर राग छतीसों गावे, रोम रोम रणकार ॥१॥
शील सन्तोषकी केशर घोली, प्रेम-प्रीति पिचकार।
उड़त गुलाल लाल भये वादल, वरसत रंग अपार ॥२॥
घटके सव पट खोल दिये हैं, लोक लाज सव डार।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल वलिहार ॥३॥

१२५—राग सारंग

चलो अगमके देश काल देखत डरे।
वहाँ मेरा प्रेमका हौज, हंस केली करे ॥१॥
ओढ़न लज्जा चीर, धीरजको घाँघरो।
छिमता काँकण हाथ सुमतको मूंदरो ॥२॥
पूँची है विश्वास चूड़ो चित ऊजलो।
दिल दुलड़ी दरियाव साँचको दोवड़ो ॥३॥
दाँताँ अमृत मेख दयाको बोलणो।
उबटन गुरुको-ज्ञान ध्यानको धोवणो ॥४॥
कान अखोटा ज्ञान जुगतको झूंठणो।
वेसर हरिको नाम काजल है धरमको ॥५॥
जौहर शील सन्तोष निरतको घूंघरो।
बिंदली गज मणि-हार तिलक हरि-प्रेमको ॥६॥
सज सोला सिणगार पहिर लीनी राखड़ी।
साँवरिये सूँ प्रीति, औराँसे आखड़ी ॥७॥
पतिवरताकी सेज प्रभूजी पधारिया।
गावे मीराबाई दासी कर राखिया ॥८॥

मीराबाई

१२६—भक्त प्रहलादको बारामासियो

श्री नरहरि महाराज भक्तकी सहाय करी छिनमें ॥टेक॥
जेठ मास चटसाल पढ़नेकी कीनी है त्यारी।
संग सखा प्रहलाद पधारे बात लगी प्यारी ॥

गुरुजी संथा समझावे। सांडामर्ककी बात कँवर-
के दाय नहीं आवे ॥ गुरुजी दुख पावे मनमें ॥ श्रीनर०॥१॥
साढ़ मास सांडामर्क राजा ने जा कह्यो।
म्हारो वचन एक नहिं माने यो रस ओर भयो ॥
नग्रका बालक समझावे। निज कुलकी मर्याद छोड़-
गुण गोविन्दका गावे ॥ कहूं सो झूठ नहीं इसमें॥ श्रीनर०॥२॥
श्रावण मास शांत चित राजा, पूछे कुसलाता।
कहो पुत्र क्या क्या पढ़े हो, हमसे कहो वाता ॥
पितासे अरजी कर लीनी। एक कृष्णको ध्यान हमारे-
साँची कह दीनी ॥ सुनत ही वाण लग्यो तनमें ॥ श्रीनर०॥३॥
भादू मास असुर हिरणाकुश, सुतको समझावे।
राम कृष्णकी छाड़ जवानी, मोकूं नहिं भावे ॥
दैत्य सब कुलके हैं म्हारे। इन्द्रासन ल्यूं खोस राम-
बिन क्या अटकी थारे ॥ विष्णु तो भीड़ी है मनमें ॥श्री०॥४॥
लागत मास आस्योज, कँवर कर जोरे अरज करे।
जब लग घटमें प्राण, राम हिरदासे नाहिं टरे ॥
करो कोई लाख जतन मारी। वासुदेव भगवान भजन-
में सूरत लगी म्हारी ॥ कृपणको मन है ज्यूं धनमें ॥श्री०॥५॥
कातिक कोप कियो हिरणाकुश दैत्यने हुकुम कियो।
जोजन सात शिखर पर चढ़कर, सुतको डार दियो ॥
विष्णुजी अब साय कीजे। भक्त प्रहलाद कष्टमें-
आगे होय लीजे ॥ वसुधा उमंग चढ़ी घनमें ॥ श्रीनर०॥६॥

मंगसिर मास कँवरने साँपांसे डसवावे ।
ईश्वर है भक्तांको सीरी, पलमें आय बचावे ॥
प्रहलादने जीतो देख मन्त्रीसे सैन करे ।
यो तो वैरी वण्यो हमारो, कुण प्रकार मरे ॥
त्रास भोत भारी मनमें ॥ श्रीनर० ॥७॥

पोष मासमें पिता पुत्रने वैरी जाण लियो ।
अज्ञा दई जल्लादने शूली पर टांग दियो ॥
धरणी पर गूंज पड़ी भारी । तज सिंधु मर्याद शेष-
की कमर कसी न्यारी ॥ भगवान ध्यान धरै मनमें ॥श्री०॥८॥

माघ मासमें हिरणाकुशके सोच पड़्यो यो भारी ।
दानव कुल पर सङ्कट आयो, कैसे हो निसतारी ॥
माईसे होलका वतलावे । मेरे पा शीतल चीर-
तूं क्यों घबरावे ॥ दुष्टके खूब जची मनमें ॥ श्रीनर० ॥९॥

फागणमास कँवरने लेकर होलका त्यार भई ।
वैठ चिताके माँय. अगन धधकाय दई ॥
भुवाकी होगी राख, भक्त रामने रटतो पायो ।
वो परमेश्वर सदा सहायक, प्यादोहि दोड़ बचायो ॥
विमान झुक रह्यो गगनमें ॥ श्रीनर० ॥१०॥

चैत मास हिरणाकुश बूझे, कठे सहायक तेरो ।
काढ़ खड्ग सिर दूर करूं, अब दाव लग्यो मेरो ॥
दशूं दिशामें, तोमें, मोमें, खड्ग खंभमें व्यापे ।
लख चौरासी चार कूंटमें सूझत है आपे ॥

महिमा गाई वेदनमें ॥ श्रीनर०॥११॥
वैशाख मास खड्ग खम्भा पर दे मारे।
खंभ फाड़ हिरणाकुश मारयो, नरहरि रूप धारे॥
धर जंघन पर हाथ दुष्टने नखनसे फाड़यो।
जै भई शुक्ल चौदसने भक्तको कष्ट निवार्यो॥
पुष्प सुर बरसत हैं घनमें ॥ श्रीनर० ॥१२॥
अज्ञात

१२७—ध्रुवजीको बारामासियो

कुंवरने माता समझावे, जैसी करनी करे पुरबला पुण्य किया पावे॥टेक॥
चैत मास चित चाव कुंवरके, खेलणकूं रमण गयो।
राज सभा रणवास देख कर, मनमें हरष भयो॥
पिता तब गोदीमें लीनो। उठ्यो दरद सुरती राणीके—
बाहर कर दीनो॥ वचन तब अवठा सुणवावे॥ जैसी० ॥१॥
लागत मास वैशाख, रोवतो ध्रुव माता पा आयो।
गोदी लियो उठाय, पुत्रने हिरदय लिपटायो॥
कहोके कुण कही तोकूं। जी की कूढ़ाऊं खाल लाल—
सांची कहदे मोकूं॥ रोवत ध्रुवने वचन नहिं आवे॥ जैसी० ॥२॥
जेठ मास, अहंकार क्रोधसे पूछत है बातां।
साँची कहो पिता कुण मेरो, अरज करूं माता॥
पिता जब गोदीमें बठायो। उठ्यो दरद सुरतीराणी—
के बाहर कढ़वायो॥ दुख हिरदयमें नहिं मावे॥ जैसी० ॥३॥

साढ़ सुनीती कहे पुत्रसे, सुनरे ध्रुव लाला।
ना कोई पिता, नहीं कोई बन्धु, झूठा मोह जाला ॥
रामको नाम नहीं लीनो। साध गऊकी दया न राखी—
धरम नहीं कीनो॥ दुःख हरि ऐसे भुगतावे॥ जैसी० ॥४॥
सावण सुरत धरी ध्रुव बनकी, दरवानी आये।
ध्रुव वन जाय दुहागणवालो, ऐसे बचन सुणाये॥
दोउं कर जोड़्याँ गुदरावां। हुकम करो म्हाराज आज—
हम माग बेगा जावां॥ आप बिन पाछो नहीं आवे॥ जैसी० ॥५॥
भादू भाव विचार कर, राजा उठ ध्याये।
दोउ भुजा पकड़ लई करसे, ध्रुवने बतलाये॥
पुत्र एक सुनो वचन मेरो। हमकूं छोड़ बनां मत—
जावो सभी राज तेरो॥ राव यूं मुखसे फरमावे॥ जैसी० ॥६॥
लागत मास आस्योज, सुरत गिरिधारीसे लागी।
इब तक राव पांव नहीं दीयो, इब देत है राजगादी॥
रामजी है भगतां नेड़ो। सियाराम रघुनाथ धणी—
मेरो तुम ही पर बेड़ो॥ बैठ कर बनमें भजन करे।
ब्रह्माजीको पुत्र विचरतो, नारदमुनी फिरे॥
देख कर ध्रुवने बतलावे॥ जैसी० ॥७॥
लागत मास कातिकमें ध्रुवने, नारद वचन कह्यो।
यो वन सघन, भोत दुःख ब्यापै, कुण तने छोड़ गयो॥
कुण तूं है किसको जायो। भूल पड़ी राहमें लड़को बनमें—
चल आयो॥ चाल ध्रुव पाछो ले जाऊं।

राजारानी करे टहल, तने, राजगद्दी द्याऊं ॥
सिंह तेरो भक्षण कर जावे ॥ जैसी० ॥८॥
मंगसिर मास भोत कही नारद, ध्रुव एक नहीं माने ।
सामर्थवान नारद मुनी, वातां सव जीवकी जाणे ॥
आसन ध्रुवके पास किया । ब्रह्मा इन्द्र शेप पा नाहीं—
ऐसा मंत्र दिया ॥ ज्ञान दे ऐसी वात कही ।
हम विचरां ध्रुव सावधान, तेरे मतके मांय रही ॥
कही सो सव ही वात करी । प्रेम-समाधि लाय—
भगतने, ऊंची सूरत धरी ॥ जव इन्द्रासन थर्रावे ॥ जैसी० ॥६॥
लागत म्हीनो पोप इन्द्र परियांने वुलवाई ।
वालक वनमें करे तपस्या डरपावो जाई ॥
इन्द्रकी परी उतर ध्याई । मनमें करयो विचार अप्सरा-
एक वणी माई ॥ धरण पर पड़ी किलक मारै ।
माया मोह जञ्जाल, पुत्र मेरे हुयो नहीं सारै ॥
देख तेरी माता दुखी घणी । ध्रुवके निश्चो श्याम—
रटे नित सीताराम धणी ॥ जतन कर पाछी उठ जावे ॥ जैसी०॥१०॥
माघ मास सत देख कुंवरको ठाकुर मिलण चले ।
धार चतुरभुज रूप ध्रुवसे तुरत हि जाय मिले ॥
मांग ध्रुव "वरं ब्रूही" । कछु न चहिये नाथ आपकी—
भक्ति द्यो मोही ॥ स्वर्गको राज करो भाई ।
मस्तक मेल्यो हाथ कृपा तव कीनी रघुराई ॥
सवसे ऊंचो वैठावे ॥ जैसी०॥११॥

फागण फौज भई गवन जब ध्रुव पर चंवर ढुरे ।
तुगी रंग और ढोल बांकिया, नोबत भेर घुरे ॥
खबर पड़ी उत्तान राजाने, खोले भंडारोंका ताला ।
गढ़ इनाम पेटिया राजा, दीन्या सूंड्याला ॥
सुनती सुरती दोउ खड़ी । करे अस्तुति कर जोड़—
भगत डंडोत प्रणाम करी ॥ बधाई सब जाचक पावे ॥ जैसी०॥१२॥
छप्पन शाल पुरुषोत्तम म्हीनो, ध्रुवजी सिखर रहे ।
शहर फतेपुर गोड़ बिरामण, गुलो नाम कहे ॥
मास जिन तेरा बगाया । कृपा करी महावीर हरीका—
गुणावाद गाया ॥ भजनसे मुक्ती हो जावे ॥ जैसी०॥१३॥

पं० गुलराज हरितवाल

१२८—मीरांबाईको बारामासियो

म्हाने सुरत दिखावो, बेगा थे आवो, कृष्ण मुरारजी ॥ टेक ॥
प्रथम महोनो चैत शारदा, गणपत देव मनाऊं ।
बारामास बगाय बुद्धिसे, तब बृजराज लड़ाऊं ॥
कृपा करो थे मात शारदा, मन इच्छा फल पाऊं ।
मारवाड़ गढ़ मेड़तो, कमधज कुल राठोड़ ।
जनमी मीरां भक्त कृष्णकी, व्याही गढ़ चित्तोड़ ॥
श्याम म्हारी सुध ले जावो ॥ म्हाने० ॥१॥
लगत मास वैशाख सांवरा, भक्ती करूं तिहारी ।
मैं दासी थारी जनम जनमकी, थे म्हारा सिरजनहारी ।
गोतम नार भीलणी गणका, त्यारी अधम उधारी ।

हे वृजवासी सांवरा, अरज करूं कर जोड़।
उग्रसेन सुत मारण तारण भक्त वछल सिरमौड़॥
मेड़तणी महिमा गावो ॥ म्हाने० ॥२॥

जेठ मास सुध लगन तात मेरी, करी व्याहकी त्यारी।
गढ़ चित्तौड़ राव सिसोद्यो, भूप शिरोमणि भारी॥
जोसी दियो खिनाय तात, मेरे, रच्यो व्याह वलकारी।
सेस मेवाड़ो गढ़पती, राणो सुघड़ सुजान।
रच्यो सुयंवर तात वात मेरी, सुनो कृष्ण दे कान॥
मीरां कहे फंद छुड़ावो ॥ म्हाने० ॥३॥

लगत मास अषाढ़ राव म्हांसूं, करै लोभकी वात।
सीसोद्यो भूल्यो, फिरै सज्यो, मैं थाने समजूं भ्रात॥
मैं न्यारी संसारसे थे, मो पर रखियो ख्यांत।
काम क्रोध मद लोभको, समद गयो भरपूर।
मैं न्यारी संसार कामसे, समझो आप हिजूर॥
हो नहीं रसको दावो ॥ म्हाने० ॥४॥

सावण सगुन मनाय कृष्णका, मीरां मन्दर जावे।
प्रेम भक्ति सूं नाच कूद कर, गुण गिरिधरका गावे॥
खबर भई रणवासमें, मेड़तणी लोग हंसावे।
वात सुणी सिसोदिया, कोप कियो भरपूर।
कुटिल नार पाने पड़ी, याने मारो तुरत जरूर॥
जाय कर खड्ग दिखावो ॥ म्हाने० ॥५॥

भादू मास राव सीसोद्यो, मनमें कपट ऊपायो।

भरकर प्यालो जहरको, उण मन्दरमें धरवायो ॥
कपट माल कर ब्यालकी, उंने खूंटी पर लटकायो ।
चरणामृत मीरां लियो, ईम्रत कियो मुरार ।
जां पर कृपा होय कृष्णकी, कुण छे मारणहार ॥
भक्तको विड़द वधावो ॥ म्हाने० ॥६॥
लागत मास आस्योज रावके, रीस भई अति भारी ।
जहर ब्यालसे बच गई बैरण, या छै जादूगारी ॥
राव कहे सुणज्यो मेड़तणी, राखो लाज हमारी ।
सुण मेड़तणी सुन्दरी, राणो करे बयान ।
लाज तुम्हारे हाथ हमारी, सुणो अरज दे कान ॥
बचन सुण ओड़ निभावो ॥ म्हाने० ॥७॥
कातिक मास सास मीरांको, अपने पास वुलावे ।
सब कामण रणवासकी, मीरांने वे समझावे ॥
बड़ां घरांकी नार बहू तूं, मतना लोग हंसावे ।
हे रंग भीनो गोरड़ी, कह्यो हमारो मान ।
रैन राव सेवा करो, दिवस भजो भगवान ॥
जगतमें जस फैलावो ॥ म्हाने० ॥८॥
अगहन मास सास नणदल सूं, मीरां करै बयान ।
म्हारो पति भगवान, सास मैं करूं, रात दिन ध्यान ॥
भक्त उवारण असुर संघारण, वो बृजवासी कान ।
सुरपत सुत नाती जठर, रक्षा करण कृपाल ।
सांतनु सुत नाती रिपु यो, पतनी प्रतिज्ञा पाल ॥
इसाने थे बी ध्यावो ॥ म्हाने० ॥९॥

पोष मास मोय आस सांवरा, अब तो हियो उम्यावे ।
कड़वा बोले वचन राव म्हारे, झूठो कलंक चढ़ावे ॥
कोप्यो राणो कुलछणो मने, कुलदूसणी बतावे ।
सुरपत सुत पतनी सखा, जलधि सुतापति नाथ ।
रुद्र वेद सर अर्धकर, शीश हतन निज हाथ ॥
मेवाड़ै त्रास दिखावो ॥ म्हाने०॥१०॥
लग्यो महीनो माघ सांवरा, अर्ज सुणो अविनाशी ।
चुटकी ताल बजाय नाच रही, निरत करत नित दासी ॥
राणो ध्यायो खड्ग लेय कर, अब थाने कूण बचासी ।
मारण लाग्यो रावजो, कर सूंती तलवार ।
सो मीरां भगवत ग्ची, यो इचरज भयो अपार ॥
मीरां इव सुर्ग सिधावो ॥ म्हाने०॥११॥
फागण मास आस मीरांकी, भगवत आज पुराई ।
नन्दराम ब्राह्मणका, लड़का, बारामास कथ गाई ॥
सारां सिरै नग्र कर डावण, निपजै साल सवाई ।
स्वर्ग पुरी थो सासरो, यहां थी आधूं चार ।
सीसोद्यो समझ्यो नहीं तो, थाने ले उतरतो पार ॥
मीरांका इव गुणगावो ॥ म्हाने०॥१२॥

१२९—हरिश्चन्द्रको बारामासियो

रीतकी सहाय करी भारी, सूरजवंशमें हुयो हरिश्चद, राजा ओतारी ॥
चैत कहूं हरिचन्दकी, शोभा सुणियोरे भाई ।
सतको शील धरमको दाता, परजा को सांई ॥

धरम कन्याका व्याह करै। ऐसो राजा होयो न होसी—
जिसमें बिखो पड़ै ॥ बिधाता उनकी गत न्यारी ॥ सूरज० ॥ १ ॥
लगत मास वैशाख मुनो विश्वामित्र आये।
मनमें कपट बिचार, रूप वरहाको बण आये॥
बागमें धूमस मचवाई। माली जाय द्वार राजाके—
ऐसी दरसाई ॥ बराह एक सुबरणको भारी ॥ सूरज० ॥ २ ॥
जेठ मास असवारी कर, चढ़ राजा आप गयो।
जब सूर खोलियो छोड़, गरीब ब्राह्मणको रूप भयो॥
रावने आशिर्वाद दियो। कन्या एक कुंवारी मेरे—
ऐसो बचन कह्यो ॥ मुनी कहो घरकी गत सारी ॥ सूरज० ॥ ३ ॥
आषाढ़ मास राजा कहै, मुखसैं मांग विप्र लीजै।
जो मांगे इणस्यांत दिलाऊं, ढील मती कीजै॥
विप्र कहे बचन देवो मोकूं। यही तो वाचा मान—
बिरामण नटूं नहीं तोकूं ॥ भार सुवरणका साठधारी ॥ सूरज० ॥४॥
श्रावण मास कहै राजा, एक अरजी गुदराऊं।
तिरिया जात बुधकी ओछी, मेरी राणी पा जाऊं॥
इतनी कह महलांमें आया। हाथ जोड़ अरदास करी—
प्रीतमने बतलाया ॥ बचन सुण तारादे नारी ॥ सूरज० ॥ ५ ॥
भादू भाव जाण ब्राह्मण एक, ऊभ्यो दरवाजे।
साठ भार सुवरणका मांगे, राणी नट्यां धरम लाजे॥
पति एक सुणो बचन मेरा। बिप्र दिलावो दान राव—
धन पुत्र बेच तेरा ॥ राव मन ल्यायो हुसियारी ॥ सूरज० ॥ ६ ॥

लगत मास आस्योज वेच सब सुवरण किया भेला ।
दोय भारमें राणी पुत्रने, विप्र घरां मेला ॥
आप घर नीचके जाय रह्यो । साठ भार सुवरण कर—
भेलो ब्राह्मण विदा कियो ॥ राव रहे मरघट रखवारी ॥ सूरज० ॥७॥
कातिक मास राव हरिचन्द, सूरंने नीर प्यावे ।
ऊँ ही घाट तारादे राणी, जल भरणे आवे ॥
राव राणीने वतलाई । हमसूं उठे न भार नार एक—
गागर ऊंचवाई ॥ पती मो में छाया पड़े थारी ॥ सूरज० ॥ ८ ॥
मंगसिरमें धर रूप नागको विश्वामित्र लड़यो ।
हे परमेश्वर गती तुम्हारी, कैसो विखो पड्यो ॥
पुत्रकी लेकर लाश गई । हमकूं डाण चुकाय—
अस्तरी हरिचन्द वात कही ॥ नहीं यो पाछो ले जारी ॥ सूरज०॥९॥
पोप मास राणी कहे, मोपै कछु नहीं राजा ।
चूंप काढ़ दांतोंकी दीनी, सारो तुम काजा ॥
मुनी राजाने सुणवाई । डाकण एक नग्र तेरमें—
जवरी भोत आई ॥ हरिचन्द मारो तुम स्यारी ॥ सूरज० ॥ १० ॥
माघ मास ले खड्ग, हरिचन्द मारणकूं धाये ।
काढ़ खड्ग राणी पर ओभयो, परमेश्वर आये ॥
आय कर पकड़े दोउं हाथा । मांग मांग हरिचन्द—
तुमी पर टूठे रघुनाथा ॥ पलकमें भुजा चार धारी ॥ सूरज० ॥११॥
फागणमें हरिचन्द भक्तकूं, विमाना चलि आये ।
मेरो स्याम चले तो चालूं, नहिं मुझकूं के चाये ॥

नीच कहे मैं तो नहिं जाऊं । सब काशी चाले विना—
वहां पर बैठ्योके खाऊं ॥ भगतने सब नगरी तारी ॥ सूरज० ॥१२॥
गुलो ब्राह्मण कहे भक्तकूं, जो कोई नर गावे ।
सुणो विप्र केदार जूण चौरासी नहिं आवे ॥
भगतकी या बारामासी । स्योनारायण कहे ध्यान धर—
जै कोई नर गासी ॥ रखो भगवतकी इकतारी ॥ सूरज० ॥१३॥

पं० गुलराज हरितवाल

१३०—भजन

सांवरियो कामण गारो ये, नन्दजीको राजदुलारो ॥ टेक ॥
समुदर सिंधु हाथसे मथकर, रतन काढ़ जल कर दियो खारो ।
भस्मासुरको भस्म करके, शिवशंकरको वंद संवारो ॥
वीस भुजा दशशीश काटकर, रावण मार विभीषण तार्‍यो ।
एक कामण कुनणपुर कीन्या, जरासिंधु शिशुपाल संहारयो ॥सांवरियो०
युद्ध कियो पाताल लोकमें, नाथ्यो वासक कारो ।
कंश केशि चाणूर पछाड़े, नख ऊपर गोवर्धन धारो ॥
बृजभूमिकी दीनी फेरी, लियो इन्द्रको छीन पुजारो ।
एक कामण मथुरामें कीन्या; कंस मार हरि वंश उधारो ॥सांवरियो०॥
साग बिदुर घर लूखो खायो; दुर्योधनको गर्व निवारयो ।
सेन भगतका सांसा मेट्या; नाई बणकर कारज सारयो ॥
कञ्चन महल सुदामाका कर दिया; अटल कर दियो ध्रुवजी तारो ।
एक कामण काशीमें कीन्हा; बालद लाद हरि बण्यो बिणजारो ॥सां०॥

वंशीकी टेर सुणावे प्यारो, कर कामण मोह्यो जुग सारो।
सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, चार युग अवतार तिहारो॥
नाथ जलंधर गुरु गोरखा, वर पायो गोविन्दो प्यारो।
मोती जन पर किरपा कीज्यो, नांव वतायो हरि आप हजारो॥सां०॥

१३१—सत्यनारायणजीको वारामासियो

श्रीसत्यनारायण, आयो शरणागत, स्वामी आपको॥टेक॥
चैत मास काशीको वासी, सतानन्द द्विज जान।
गृहस्थ कुटुम्बी भिक्षा कारण, चल्यो सुमर भगवान॥
सत्यदेवकी कृपा भई जद, मिले राहमें आन।
ब्राह्मणको प्रभु रूप धर, दरशन दीना आय।
सत्यदेवको व्रत करो, तेरो सब संकट मिट आय॥
प्रभुजी यूं वचन सुणायो॥आयो०॥१॥
सत्यदेव वैशाख मासमें, भये प्रसन्न अति भारी।
रूप चतुरभुज श्याम वरण, तन पीतांवर छिव धारी॥
व्रत करो पूजन श्रवणन कर, दुरमति मिटै तिहारी।
सतानन्द कूं यूं कहे, हरि पूँचे निज धाम।
सतानन तव व्रत कियो, पूरण होय गये काम॥
द्रव्य धन धान्य वधायो॥ आयो० ॥२॥
जेठ काठ वेचनवालेका, कहूं सुगम इतिहास।
काशीपुरीमें चल्यो वेचन, जलकी लग रही प्यास॥
तृषावन्त आश्रम पर आयो, जहाँ द्विज विष्णुदास।

सत्यदेवको व्रत कियो, तहाँ पूजन कथा उचार ।
नीर पियो कठिहार, पूछ्यो महातम तेहि वार ॥
व्रत फल ताहि बतायो ॥ आयो० ॥३॥

साढ़ केदारमणीनगरी को, चन्द्रचूड़ है राव ।
करता व्रत नेम सुभक्ती, बड़ो हरिको भाव ॥
कुटम्ब सहित गंगा तट पूजन, कर हिरदै अति चाव ।
रतनपुरीको वणिक पुत्र, आयो घाटक तीर ।
उतर नाव राजासुं आय कर, पूछी सब तदबीर ॥
नेम कर घरकूं ध्यायो ॥ आयो० ॥४॥

श्रावण साधु वैश्य नारी बा लीलावती ग्रह पाई ।
चन्द्रचूड़कूं मिल्या प्रभु सोई, व्रतकी कथा सुनाई ॥
आपां दोनूं करा व्रत ये, ऐसी अक्कल उपाई ।
गर्भवती तव तै रही, कन्या प्रगटी भोर ।
कलावती धर नांव बैठ गये, सब पण्डित चहुं ओर ॥
दक्षिणा दे सिर नायो ॥ आयो० ॥५॥

भादू कंचनपुरको बासी, शंखपती धनवान ।
कलावतीको व्याह सेठ, कर दीन्यो कन्यादान ॥
कीन्यो नहिं व्रत चित धरके, भूल गयो ओसान ।
सुतापतिको संगले, वैश्य चले परदेश ।
नदी नर्मदा निकट शहरमें, किया विहार विशेष ॥
वहाँ धन अति कमायो ॥ आयो० ॥६॥

कुंवार मासमें चन्द्रचूड़के पड्या नग्रमें चोर।
लेकर माल भाज गया तस्कर, भयो सहरमें सोर॥
चन्द्रचूड़ कह क्रोध होय, मन्त्री सूं वचन कठोर।
चोरन कूं अव सोध कर, पकड़ द्रव्य लो खोस।
चले दूत अज्ञा ले नृपकी, करके मनमें रोस॥
क्षोभ ताके तन छायो॥ आयो० ॥७॥

कातिक वणिक ससुर जामातुर, मत्ता देशका कीन्या।
विसरे सत्यनारायणजी कूं, महामंद मति हीना॥
दूतां आनि पकड़ वाण्यां कूं, सर्वस द्रव्य हर लीना।
महीपाल पा लाड्या, नहिं लगाई देर।
हाथ हथकड़ी वेड़ी जकड़, दियो कैदमें गेर॥
भोत सो माल चुरायो॥ आयो० ॥८॥

मंगसिर महीपाल कूं सुपनो दीन्यो सिरीनिवास।
सुन्दर श्रेष्ठ मुखारविन्द मानो कोटियक भानु प्रकाश॥
ये तो वैश्य, चोर नहीं, इनकी तनकी मेटो त्रास।
ऐसे कहकर अंतरिक्ष, हो गये दीन दयाल।
उठ राजा वनियाकी वेड़ी काटी प्रातःकाल॥
निहाल कर मान वधायो॥ आयो० ॥९॥

पोप महीने धन माणिक दे, विदा किया महाराज।
ससुर जँवाई चल्या देस कूं, धनकी भरी जहाज॥
संतरूप होय सत्यनारायण, आप गरीव निवाज।
तेरी नोकामें कहा, सत्य वतादे मोय।

डरयो बणिक कहे लता पत्र है, कहां बताऊँ तोहि ॥
देव कही पत्र हो ज्यावो ॥ आयो० ॥१०॥
माघ महीने लतापत्र हुए, वाणियो करे बिलाप।
धीरज देय कहे जामातुर, लग्यो देवको श्राप॥
करुणा करी बिनती प्रभुकी, वेग पधारो आप।
वैसोकी वसी करी, देखत साहूकार।
खुशी होय ले चले नावकूं, उतरे उरलै पार॥
पता घरकूं पूँचायो ॥ आयो० ॥११॥
लीलावती ओर कलावती, व्रत कियो, महीने फाग।
पतिको आगम सुण्यो, चली, प्रसाद देवको त्याग॥
सत्यनारायण क्रोध हुयो, तब डूबी नाव अथाग।
उलटी फिर भोजन करो, भयो शब्द अकाश।
पाछी आय पूजन कर भोजन, आई पतिके पास॥
मेह नैना जल छायो ॥ आयो० ॥१२॥
द्रव्य वस्त्र भूषण सज, पती संग कलावती ग्रह आवे।
सत्यदेवकी कथा कह रहा, संगनी राम चिड़ावे॥
जमुना दत्त पर कृपा करी, प्रभु प्रेम प्रीतिसे गावे।
लक्ष्मीदत्त कमलापती, घट घटमें रहे पूर।
गंगाराम सुन रामचरण मेरा, मालक खड़्या हजूर॥
हो गयो मनको चायो ॥ आयो० ॥१३॥

संगनीराम चिड़ावेवाला

१३२—भजन

नाथ ! थारै शरण पड़ी दासी ।
मोय भवसागरसे त्यार काट द्यो जन्म मरण फांसी ।।टेक।।
नाथ ! मैं भोत कष्ट पाई ।
भटक भटक चौरासी योनी मिनख देह पाई ।।
मिटाद्यो दुःखांकी राशी ।। मोय० ।।१।।
नाथ ! मैं पाप भोत कीना ।
संसारिक विषयांकी आशा दुःख भोत दीना ।।
कामना है सत्यानाशी ।। मोय० ।।२।।
नाथ ! मैं भक्ति नहीं कीनी ।
झूठा भोगांकी तृष्णामें, उमर खो दीनी ।।
दुःख मेरा मेटो अविनाशी ।। मोय० ।।३।।
नाथ ! अब सब आशा टूटी ।
थारै श्रीचरणांकी भक्ति एक है संजीवन बूटी ।।
म्हूं नित दर्शनकी प्यासी ।। मोय० ।।४।।

१३३—भजन

छाड़ कपट जंजाल बताऊं तने तिरणे की ततवीर ।। टेक ।।
कोड़ी कोड़ी भरया खजाना मस्तीमें होय रह्या दिवाना ।
क्या ल्याया तूं क्या ले ज्यायगा, क्या दुनियामें सीर ।। छाड़०।।१।।
लख चौरासी भरम गुमाई, वड़े भाग मिनखां देह पाई ।
रंग महल जब छाड़ चलेगा, मरघट जाय शरीर ।।छाड़०।।२।।

राम नाम तूं भज ले ठाला, कोई नहीं छुटानेवाला।
यमका दूत फिर जायगा बारके, कौन वंधावे धीर ॥छाड़०॥३॥
हरि की भक्ति कर बन्दा, छूट ज्यायगा ज़मका फंदा।
राम नाँव के प्रतापसे, तिर गई गिनका पढ़ावत कीर ॥छाड़०॥४॥
श्याम सदा हरका गुण गावै, नारायणसे नेह लगावे।
काम क्रोध मद लोभ छोड़ कर, बैठ्यो भज रघुवीर ॥छाड़०॥५॥॥

१३४—भजन

म्हाने लागे कृष्ण पियारो हो, नंदजी को राजदुलारो ॥ टेक ॥
ग्वाल बाल सब साथ लिया है, कांधे कामलो कालो।
कदम की छैयाँ वैन वजावे, धेनु चरावन हारो ॥ म्हाने०॥१॥
द्रुपद सुताको चीर बढ़ायो, गजको जाय उत्रारो।
डूबत बृजकी रक्षा कीनी, नख पर गिरिवर धारो ॥ म्हाने०॥२
जल विच नाग नाथ कर आये, मथुरा जाय कंसको मार्‍यो।
उग्रसेनको राज दियो हैं, राजा मोरधज तार्‍यो ॥ म्हाने० ॥ ३ ॥
अजामिल सो पापी त्यारो, जिन तेरो नाम उचार्‍यो।
भक्त प्रहलाद उबार असुर को, नखसे उदर बिडार्‍यो ॥म्हाने०॥४॥
जहाँ जहाँ भीड़ पड़ी भक्तनमें, वहाँ वहाँ कारज सार्‍यो।
श्याम कहै प्रभु महर करोजी, मैं हूं दास तिहारो ॥ म्हाने० ॥५॥

घनश्याम दास नवलगढ़िया

१३५—भजन

तिरणकूं जगसें काशी रे, ऐसो दीन दयाल दया कर पार लंघासी रे
विषय भोगमें रहसी जद तूं. गोता खासी रे।

चोखी करणी कऱ्यां जगत, तने मलो वतासी रे ॥तिर० ॥१॥
भाई वन्धु कुटम कवीलो, यहां रह ज्यासी रे।
जो परमारथ करसी सो, तेरे सागे जासी रे ॥तिरण०॥२॥
ओला छाना पाप कमाया, चोड़े आसी रे।
अव भी चेत, सुरज्ञान भजेसे, सव धुप ज्यासी रे॥तिरण०॥३॥
धर्मराय घर जुड़ी कचेड़ी, वहां ले ज्यासी रे।
झूठ कपट तूं करया जिसीका फल भुगतासी रे ॥तिरण०॥४॥
चोतरफी पड़े मार जद ऊवो अरड़ासी रे।
सोच समझ कर देखो मूरख, कूण छुटासी रे ॥तिरण०॥५॥
कहता चुन्नीलाल भजन विन मुक्ति न पासी रे।
वेड़ा करदे पार, ऐसा है अविनाशी रे ॥तिरण०॥६॥

१३६—भजन

क्यूं करता है अभिमान, गरव कर हारया सव भाई ॥टेक॥
गर्व करया सो सव ही हारया, रत्नागर खारा कर डाला।
हिरणाकुशको मार दिया, प्रहलाद भक्तके ताईं ॥क्यूं०॥१॥
लंका जा रावणने माऱ्या, शिशपालै कूं पकड़ पछाड़या।
खप गये लाखुं असुर, मारे वो जरासंध राई ॥क्यूं०॥२॥
केश पकड़ मारे हैं कंसा, निकल गया है उसका हंसा।
पड़ी धरण पर लोथ, फेर वा काम नहीं आई ॥क्यूं०॥३॥
गरव करया राजा दुरजोधन, भटकत फिरा पांडु सव वन वन।
अन्तसमें फिर दशा विगड़ गई, खोदी जिन खाई ॥क्यूं०॥४॥

गरब झूठ कूं छोड़ो मूरख, भोग्या चाहे जो तूं अब सुख ।
चुन्नीलाल कहे भजन करणसे, पार उतर जाई ॥क्यूं०॥५॥

चुन्नीलाल चौधुरी

१३७—भजन

प्रभुकी कैसी मायारे, देखो निगे लगाय इसीका पार न पायारे ॥टेक॥
बिन खम्भ दीवाल बिना, आकाश ठहराया रे ।
निस दिन फिरता चांद, सूरज तारा चिमकायारे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
देहमें बीज रचाया, बीजसे देह रचाया रे ।
कहांसे आया, कहां जावेगा, पार न पाया रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
क्या कड़कै क्या चिमकै, बिजली बादल छाया रे ।
रतनागर सागर बहे बेग, कहीं अन्त न आया रे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
जीव जन्तु पशु पक्षी सब, जगत रचाया रे ।
हवा धूप अग्नि जल, सारा अन्न बनाया रे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
पान पुष्प फल किस्म किस्मका, गाछ लगाया रे ।
श्याम कहे सुमरण करले, सुख पावेगी काया रे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

१३८—राग कालंगड़ा

बन्दा बैठ्या भजो हरि नामको ॥टेक॥
राम बराबर दूजा न कोई, पापी अधम उधारको ॥१॥
सुनकर त्रास आये रघुनन्दन, ग्राह छोड़यो गजराजको ।
उदर बिदार हिरणाकुश मारे, त्यारो भक्त प्रहलादको ॥२॥
मात पिताकी बंद छुटाई, मार्‍यो कंस अभिमानको ।
श्याम कहे आसा रघुबरकी, छाड़ कपट जंजालको ॥३॥

१३९—राग कालंगड़ा

सोपे कृपा करो अव कान्हा ॥टेक॥

वहुत दिनोंसे करूं वीणती, अर्ज सुणो भगवाना।
द्रोपद सुताको चीर वधायो, खैंचत पार न पाना ॥१॥
सेन भगतके कारज सारे, नाईका भेस वनाना।
उदर विदार हिरणाकुश मारे, भगत प्रहलाद वचाना ॥२॥
भिलनीके वेर सुदामाके तंदुल, रुच रुच भोग लगाना।
सुन कर टेर पैदल उठ ध्याये, गजको जाय छुटाना ॥३॥
ऐसा है प्रभु दीन दयाल, गावत वेद पुराना।
श्याम कहे निज दास जानके, मोहन रूप दिखाना ॥४॥

१४०—भजन

मतना हो अभिमानी रे,
चेतो कर सुर ज्ञानी या थोड़ी जिंदगानी रे ॥ टेक ॥

गर्भवासमें भजन करणकी, मनमें ठानी रे।
वाहर आय पड्यो धरणी पै, भयो अज्ञानी रे ॥१॥
वालपणो हंस खेल कूद गयो, आई जवानी रे।
मात पिताको हुकम लोप, करी मनकी जानी रे ॥२॥
माया पूंजी भेली कर कर, भयो गुमानी रे।
धर्म पुण्य ना कियो जगतमें, नाहिं निसानी रे ॥३॥
विरध भयो कफ वायुने घेर्यो, वोल न वानी रे।
यूं ही उमर खो दई, पासी नरक निसानी रे ॥४॥

व्रत तीर्थ ना कियो, पियो ना गंगा पानी रे।
हाथ जोड़ घनश्याम कहै सुन राम कहानी रे ॥५॥

१४१—भजन

भजन बिन जी दुःख पासी रे,
भजले श्रीगोपाल बेड़ा पार लंघासी रे ॥टेक॥
माया पूंजी भेली करी सब, यहां रह ज्यासी रे।
मात पिता और भाई बन्धु, साथ न जासी रे ॥१॥
दुःख सङ्कट भोग कर आयो, लख चौरासी रे।
अब तो भजले राम नाम, आगे सुख पासी रे ॥२॥
जैसा देसी अन्नदान, सो ही मिल ज्यासी रे।
च्यारों धाम तीर्थ कन्यां कंचन हो जासी रे ॥३॥
गो ब्राह्मणने दुःख देणेसे, के फल पासी रे।
मार पड़ै मुगदर की जद, तेरो जिव घबरासी रे ॥४॥
पर निन्दा जारी करनेसे, यम धमकासी रे।
शालमलीके गाछके, ऊँधो लटकासी रे ॥५॥
करके संडासी गरम गरम, तेरी जीभ कढ़ासी रे।
पड़सी नरक कुण्डमें, तने कीड़ा खासी रे ॥६॥
धर्म पुण्य कर लेसो सो, तेरे आडो आसी रे।
श्याम कहै भजन कर वंदा, ऐंस उड़ासी रे ॥७॥

१४२—भजन

इब तो राधे कृष्णा बोल, गर्भवासमें भजन करणका,
कर कर आयो कोल ॥टेक॥

काम क्रोध मद माया लोभ है, यह झूठा रमझोल।
जै चाहै तूं राम मिलणको, दिलकी घुण्डी खोल ॥१॥
दे रिस्वत यहां जो कुछ करले, वहां न चाले पोल।
पाप पुण्य काँटे पर धरके, पूरा करसी तोल ॥२॥
गुम होकर क्यूं बैठ्या मूरख, है क्या हिरदै होल।
कहै घनश्याम भजन कर बन्दा, राम नाम अनमोल ॥३॥

१४३—राग पहाड़ी

कान्हे संग ना खेलं होरी, मोरी लाज शरम सब तोरी ॥ टेक ॥
मैं जल जमुना भरण जात ही, रस्तेमें गगरी फोरी ॥ १ ॥
छीन झपट कर दधि मेरो खायो, नाहक बैंया मरोरी।
गोरस बेचन जात वृन्दावन, मटकी छीन लई मोरी ॥ २ ॥
लाख कही मोर एक न मानी, हमसे करत नित जोरी।
श्याम कहै रट राधेकृष्णकुं, बात मान या मोरी ॥३॥

१४४—राग पहाड़ी

बंशीवारा साँवरिया आज्या रे ॥ टेक ॥
बिन देखे नहिं चैन पड़त है, चांदसा मुखड़ा दिखाज्या रे।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, मुरलीकी टेर सुणाज्या रे ॥ १ ॥
दधि माखन घरमें बहु मेरे, दिल चाहे सोई खाज्या रे।
श्याम कहै प्रभु तुमारे मिलणकूं, पल-पलमें दिल चाह्या रे ॥२॥

———

१४५—राग पहाड़ी ।

कान्हेने मारी पिचकारी, मेरी चोली भीज गई सारी ॥टेक॥
मैं जल जमुना भरण जात ही, ओढ़ कसूमल सारी ।
कर पकर मेरो पूंचो झटक्यो, तोड़्यो हार हजारी ॥ १ ॥
चोवा चन्दन रंग बणायो, डोली भर कर मारी ।
लाख कही मेरी एक न मानी, बिणती कर कर हारी ॥ २ ॥
जमुनाके नीरां तीरां धेनु चरावै, कांधे कमलिया कारी ।
श्याम कहे प्रभु तुमारे मिलणकूं, चरण कमल बलिहारी ॥ ३ ॥

१४६—रेखता

रटणे सूं बिश्वनाथ कूं कैलाश पात है ।
ऐसा है दीनदयाल बेड़ा पार लंघात है ॥ टेक ॥
मस्तकमें सोहे चन्द्रमा. जटामें गंग है ।
चढ़णेको वृषराज, मात गिरिजा संग हैं ॥ १ ॥
गलेमें रूण्डमाल, पहरयां नीलकण्ठ है ।
ओढ़नेको मृगछाल. सिंगीनाद बजन्त है ॥ २ ॥
पीते धतूरा भंग कूं, त्रिनेत्र लाल है ।
खाते हलाहल जहर कूं, भस्मी रमात है ॥ ३ ॥
सर्पों का भूषण अंग पै, शोभायमान है ।
त्रिशूल लियां हाथमें, डमरू वजात है ॥ ४ ॥
काशीमें विश्वनाथ की, मूरती विशाल है ।
श्याम कहे सुमिरण करयां, कैलाश पात है ॥ ५ ॥

१४७—लावणी हनुमानजीकी

अब तुम दया करो हणुमानजी बलवीर कहानेवाले ॥टेक॥
तन पर तेल सिन्दूर चढ़ाये, कसकर लाल लंगोट लगाये।
हाथोंमें गदा उठायेजी, लंका पर चढ़नेवाले ॥ १ ॥
विराट् रूप तब धारे, रस्तेमें राक्षस मारे।
चरणोंसे पर्वत त्यारेजी, लंकामें पहुंचनेवाले ॥ २ ॥
नगरी देखी च्यारुं कानी, दर पै पाई राम निसानी।
बन विप्र रूपकी ठानीजी, सब भेद पूछनेवाले ॥ ३ ॥
विभीषण भेद बताया सीताका पता लगाया।
चरणोंमें शीश निवायाजी, सीताका मन हरसानेवाले ॥ ४ ॥
तुम हुकुम मातका पाया, जा कन्दमूल फल खाया।
सब गाछ उपाड़ बगायाजी, लंकाको जलानेवाले ॥ ५ ॥
जब हुकम प्रभूका पाया; तूं सरजीवण ल्याया।
लिछमणका प्राण बचायाजी; अहिरावण मारणवाले ॥ ६ ॥
गढ़ लंका जीत घर आया; धन अञ्जनिने सुत जाया।
घनश्याम सदा जस गायाजी; सुर काज बनानेवाले ॥ ७ ॥

१४८—भजन

दुनियामें देखो, ना कोई, किसीका सहाई ॥ टेक ॥
कौन किसीका बेटा बेटी, कौन किसीका भाई।
कौन किसीका ताऊ चाचा, कौन किसीकी माई ॥ १ ॥
कूण किसीकी बहण भाणजी, किसको कूण जंवाई।
कूण किसीका सासू सुसरा, किसकी कूण लुगाई ॥ २ ॥

कूण किसीका घोड़ा गाड़ी, किसका ज्याझ हवाई।
कुण किसीका महल म्हालिया, किसकी बणी कुमाई ॥ ३ ॥
धन धाम सब यहां रह ज्यासी, संग ना चाले राई।
श्याम कहे श्रीराम रटे बिनु, और कछू ना उपाई ॥ ४ ॥

१४९—भजन

मनुवाँ रटले रे, तूं भजले सीताराम ॥टेक॥
बड़े भागसे मिनखां देह मिली, तूं रटले हरिको नाम।
कुटम कबीलो रे रह ज्यासी, काम ना आवे धन धाम ॥१॥
तेरी मेरी रे छाड़दे तूं, भजले राधेश्याम।
करणा जो कुछ है सो करले, यहां दो दिनका बिश्राम ॥२॥
मन ही मनमें रटतो रह, तेरी कोड़ी लगे ना छिदाम।
घनश्याम कहे रट राम, हंस उड़ ज्यासी, तूं भजले आठों याम ॥३॥

१५०—लावणी

पवनसुत म्हे शरणे थारी, लाज थे राखोगा म्हारी ॥टेक॥
समुद्र सो योजन कूद्या। संदेशो ले लंका सूध्या ॥
मातसे अर्ज करी ज्यादा। आज्ञा लेई देख भूख बाधा ॥
हुकुम दियो माता जानकी, कर्यो बागको नाश।
पान पुष्प सब भक्षण करके, दियो नगरको त्रास ॥
बागको नाश कियो भारी ॥ पवन० ॥१॥
सिया द्यो मेरा पिया रावण। लङ्का पर चढ़ आया बावन।
घेर लई पुरी लंक ढावन। चर्ण छुवो रघुवर पद पावन ॥

हाथ जोड़ विणती करूं, सुणज्यो चित लगाय ।
सियाजीने लेकर मिल्यो रामसुं, जद होसी उपाय ॥
वात थे सुणो पिया म्हारी ॥ पवन० ॥२॥

दिवानी कचुयन हारूंगा । उसीके दल कूं मारूंगा ॥
पकड़ सागरमें डारूंगा । धराको भार उतारूंगा ॥
राम लखन लड़ने सके, क्या उनकी औखात ।
रक्षा मेरी करै शिव शंकर, झूठी बोलै वात ॥
वन्दरकी जात भक्ष म्हारी ॥ पवन०॥३॥

गर्ज कर मेघनाथ आया । रणमें शक्ती वाण वाया ॥
पड़ गई लिछमणकी काया । मुखसे राम नाम गाया ॥
गिरिवर छिनमें ल्या धरयो, हनुमान जती वलवान ।
ले सरजीवण दी लिछमणकूं, खड़े हुए सुर ग्यान ॥
दुंदुभी वाज रही भारी ॥ पवन०॥४॥

लङ्कपति मनमें गरवायो । हृदयमें हर्ष नहिं मायो ॥
युद्ध कर परम धाम ध्यायो । विभीषण राज काज पायो ॥
हाथ जोड़ घनश्याम कहै, घर आये रघुनाथ ।
मात कौशल्या करत आरतो, च्यारूं भाई साथ ॥
मंगल सब गाय रही नारी ॥ पवन०॥५॥

घनश्याम दास नवलगढ़िया

१५१—लावणी

श्री कपि पवन कुमार राम दरवार दूत आज्ञाकारी ।
सालासरमें प्रगट भये, भक्त जनोंके हितकारी ॥टेक॥

सालासर शुभ ग्राम धाम, जहां मन्दिरकी शोभा साजै ।
अद्भुत मूरत देख छबि, दुःख संकट सबही भाजै ॥
चोतरफा आबाद इमारत, सघन जै कुंज दरखत गाजै ।
ग्रीष्म रितू की घाम आराम, हवा ठंडी वाजै ॥
सुन्दर सभा मन्दिर अनोखा, संगमरमर से जड़ा ।
अंगन अजब क्यारी, बनाके एकसम चोसर घड़ा ॥
दो रकम फरसोंका जिसमें, काम है ऐसा कड़ा ।
कारीगरी सब हद्द गलीचा, कुदरती मानो पड़ा ॥
हरदम भीड़ छोड़ नहिं पावै, आवै दूरके नर नारी ॥ श्रीकपि०॥१॥
फरकत ध्वजा भवनके ऊपर, कनक कलश निश दिन झलकै ।
नौवत बाजै गरज सुन मोर शोर, चहुंदिशि किलकै ॥
भक्त खड़्या जयकार उचारै, प्रेम मगन मन खिल खिलकै ।
आय सुहागन कामिनी, मंगल गावे हिलमिलकै ॥
श्यामके शिर पर हजारों छत्र चांदीके चढ़ा ।
कञ्चन कलित मणि रचित मानो सूर वादलसे कढ़ा ॥
शीशा सुनेरी बेल सज्जित, स्वच्छ भींतनमें मढ़ा ।
करके पठन जहां कामना हित, वालमीकि पण्डित पढ़ा ॥
करे आरती सिरे पुजारी, कर कपूर चोमुख धारी ॥श्रीकपि०॥२॥
साँचे मनसे करे ध्यावना, सो अपनी मनसा पावे ।
रखै बोलना मिलै फल, वो चल कर जातरी आवे ॥
कोई कूं सुपनेमें कहता, कोई कूं फल दरसावे ।
अन्न धन नारी मिले सुत विद्या जो मनमें चावे ॥

चूरमा मोहन मिठाई नारियल गुंजा रहै ।
पुनम शनिश्चर भीड़ अति विन पार मंगलवार है ।।
अवकाश ना पावै पुजारी, भेंटकी भरमार है ।
एक चूकै तो उसी दम, और पूजा त्यार है ।।
रूपा कञ्चन छत्र चढ़ावै, रोक रुपयो दे झारो ।। श्रीकपि० ।।३।।
लेकर नाल झालके सम्मुख, जो नारी श्रीफल बांधै ।
होय धारणा पुत्रकी मनमें फर्क नहीं माने ।।
निश्चो राख्यां कोढ़ मिट जावे, छोटी वात कहा जाने ।
वालजतीके वड़ा क्या सौपलमें सागर फाने ।।
अष्टसिद्धि नवनिधि पावे, जो रटत हनुमानको ।
भूत प्रेत पिशाच भागे सुन इसीके ध्यानको ।।
पीड़ा मिटै संकट कटे, जो हो अचानक प्राणको ।
तिहुं लोक कांपै धाकसे, नासे अरी अभिमानको ।।
मोहनदास भये गुण ज्ञानी, सत्य धारणा जिन धारी ।। श्रीकपि० ।।४।।
ठंडा नीर कूपका पाचक, पीनेमें लागै खारा ।
मिष्ट नीरके भरे है कुण्ड भोत अमृत धारा ।।
विप्र वालमीकि कथा सुनावै, जातरी वोले जयकारा ।
खड़े पुजारी द्वार पै, करैं चँवरका फटकारा ।।
आरतीकी वहार देखे, चित्त निर्मल होत है ।
रैनदिन मन्दिरके अन्दर, दीपककी रहे जोत है ।।
वर्तनोंकी कमी नाहीं, सभी रकमके भोत है ।
मुक्ती इमारत उतरने कूं, मुसाफिर सुख सोत है ।।

शिवदत्त विप्र रतनगढ़ वाला मूरत ऊपर बलिहारी ॥श्रीकपि०॥५॥

शिवदत्त शर्मा

१५२—भजन

यह चला जात संसारा, एक दिन तुझे भी जाना होगा ॥ टेक ॥
मायामें हो रहा अन्धा । दूजा लगा तिरियाका फन्दा ॥
जिन्दगीका फल कर रहा गंदा । फेर तूं कब समझायगा ॥
क्यूं फिरता मारा मारा ॥ यह०॥१॥
क्यूं फिरता तूं भटक्या भटक्या । सिर धरता क्यूं पापका मटका ॥
रखा नहिं मालिकका खटका । आगे जा पिसतायगा ॥
लेखा ले न्यारा न्यारा ॥ यह०॥२॥
ताऊ चाचा बाप और भाई, घरकी तिरिया पुत्र और माई ॥
कोई ना होगा तेरा सहाई, सब यहां ही रह जायगा ॥
झूठा है जगत पसारा ॥ यह०॥३॥
क्या लाया तूं क्या लेज्यागा, कोई ना करेगा तेरा सागा ।
हाथ पसारे सीधा जागा, करथा जिसा फल पायगा ॥
वहां चलै न किसका सारा ॥ यह०॥४॥
शिव शंकर तूं रटले प्यारा, जो कुछ बने सो कर उपकारा ।
दुख संकट कट ज्या तेरा सारा, फिर बैठ्या ऐंश उड़ायगा ॥
मत बोल किसीसे खारा ॥ यह०॥५॥
विश्वनाथका ध्यान लगाया, मन इच्छा फल वो नर पाया ॥
चुन्नीलाल यह कह सुणाया, सीधा मारग जायगा ॥
वैकुण्ठका खुला दुवारा ॥ यह०॥६॥

१५३—भजन

मूरख भज ले श्री भगवानकूं, जो सुख चाहता है जीका ॥ टेक ॥
भजन करणका अब ही मोका, फिर रह ज्यासी मन में धोखा ।
तिरणेकूं यह रची है नौका, बैठ उतर जा पारमें ॥
क्यूं करता काम दोजखका ॥ मूरख०॥१॥
झूठ कपट सब छोड़ो प्यारा, भज रघुनन्दन बारम्बारा ।
झठा हैं यह सब संसारा, समझाऊं बारम्बार मैं ॥
ना करना बुरा किसीका ॥ मूरख०॥२॥
भोर उठ गंगाजी न्हाना, विश्वनाथका दर्शन पाना ।
गीता सुनो बैठ कर काना, क्या धरा है इस संसारमें ॥
दो दिनमें पड़ज्या फीका ॥ मूरख०॥३॥
सुनरे भाई सोहनलाल, कहता चौधरी चुन्नीलाल ।
एक दिन खायगा सबकूं काल, क्यूं पड़ता है तूं गारमें ॥
सब छोड़ो झंझट जीवका ॥ मूरख०॥४॥

१५४—भजन

कैसे उतरोगे पारा, तूं लग रह्या ऐंस आराममें ॥ टेक ॥
दिन भर फिरयो भटकतो घर घर, सांझ पड़ी आयो अपने घर ।
रात समय सेजांमें पग धर, आनन्दमें लिपटायगा ॥
क्यूं भूल्या मालिकने प्यारा ॥ कैसे० ॥१॥
सारी रैन नारी लिपटायो, भोर भई जद उठ कर आयो ।
चिलम भर हुक्को सिलगायो, पान सुपारी खायगा ॥

बजगई है दिनकी बारा ॥ कैसे०॥२॥

साबुन लगा मल-मल कर न्हायो, बाल-बाल फिर अँतर लगायो।
झट देनी नौकर बुलवायो, धोतीमें चीन लगायगा ॥
कर जूता साफ हमारा ॥ कैसे०॥३॥

ले छातो इब चल्यो अभिमानी, मोटर ऊबी घरके स्यामी।
सागे लिया यार सहलानी, हवाखानेकूं जायगा ॥
सुख सेती होय गुजारा ॥ कैसे०॥४॥

आजकालका ढंग है ऐसा, जिसके होवे पासमें पैसा।
भला बुरा कहो चाहे कैसा, कुकर्मके मारग जायगा ॥
ना दिलमें किया बिचारा ॥ कैसे०॥५॥

जब फिर जायगा आकर काल, पड़ा रहे तेरा सब माल।
कहता चौधरी चुन्नीलाल, बिना दिये क्या खायगा ॥
यह है दो दिनका संसारा ॥ कैसे० ॥६॥

चुन्नीलाल चौधुरी

१५५—राग कल्याण

मोपै अब कृपा कीज्यो नन्दके कुमार ॥ टेक ॥
द्रुपद सुताको चीर वढ़ायो जानत है संसार।
जल डूबत गजराज बचायो नख पर गिरिवर धार ॥ मोपै० ॥१॥
अजामलीसे पापी त्यारे, सुन कर नाम पुकार।
दैत्यनको सब मार हटाये, भूमिका उतारण भार ॥ मोपै० ॥२॥
घट घटकी प्रभु तुम ही जानो, जगके रचनेहार।
श्याम कहे मोय दरश देवो, प्रभु मतना लगावो अति बार॥मोपै०।३।

१५६—राग भोपाली

हो मन नारायण रट रे ॥ टेक ॥
ऐसी वातसे मत डरपै मन, राम राम रट रे ॥ हो० ॥१॥
मात पिता और गुरुकी सेवा, यही तीन्यांकी कर रे।
चोरी बुराई पर घर निन्दा, यहीं से जा हट रे ॥ हो० ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ ठगोंसे, यहींसे तूं बच रे।
श्याम कहे आशा रघुवरकी, वैञ्यो ऐंश तूं कर रे ॥ हो० ॥३॥

१५७—भजन

आय पहुंचे श्रीभगवान भगतकी टेर सुणी ॥ टेक ॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, गजकूं लियो सताय।
छाड़ गरुड़ पैदल उठ ध्याये, गजकूं दियो छुड़ाय ॥ आय० ॥१॥
द्रुपद सुता में भीड़ पड़ी जब सुमरयो वारम्बार।
खैंचत चीर पार नहिं पायो, गयो दुशासन हार ॥ आय० ॥२॥
नरसी गया भात भरनेकूं, मृदंग ताल बजाय।
भात भाऱ्यो सांवल सा जाकर, सबके मन हरखाय ॥ आय० ॥३॥
खंभ फाड़ हिरणाकुश माऱ्यो, भक्त प्रहलाद बचाय।
श्याम कहे निज दास जानके चरणां लेवो लगाय ॥ आय० ॥४॥

१५८—भजन

कट जाय जमकी त्रास हरी रटणेसे।
भज राम राम भज राम राम तन मनसे ॥ टेक ॥
गर्भके अंदर फिर क्यूं जा फँसता है।
भज राम राम भज राम यही रस्ता है ॥ कट० ॥१॥

स्थिर नहिं रहे घनश्याम, कुटम परिवारा ।
भज राम राम भज राम यही है प्यारा सारा ॥ कट० ॥२॥
भजन विन पार न उतरे नैया ।
भज राम राम भज राम यही खिवैया ॥ कट० ॥३॥
क्यों निस्फल खोता स्वांस दुनिमें आके ॥
भज राम राम भज राम सुमरणी लाके ॥ कट० ॥४॥
तूं करले चारों काम मोक्ष चाता है ।
भज राम राम भज राम वेद गाता है ॥ कट० ॥४॥
घनश्याम कहे रट राम देख अन्दरमें ।
भज राम राम भज राम बैठ मन्दरमें ॥ कट० ॥६॥

१८९—भजन

क्यों वृथा सांस खोता है, भजले श्री भगवानको ॥टेक॥
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, बात करे तूं लांबी चोड़ी ।
साथ न चाले दमड़ी कोड़ी दिया लिया संग जायसी ॥
क्यों वृथा वोझ ढोता है ॥ क्यों० ॥१॥
मात पिता सब कूं है प्यारा, दुःखमें किसीका है नहीं सारा ।
काम सन्यां जब हो गया न्यारा, पास कोई नहिं आयसी ॥
फिर अन्तसमें रोता है । क्यों० ॥२॥
बालापन खेलनमें खोया, जोबनमें तिरियाने मोया ।
बुढ़ापै खाट बिछाकर सोया, नाना रोग लगायके ॥
मारगमें शूल वोता है ॥ क्यों० ॥३॥

राम नाम मुखसे नहिं लेता, करसे दान कबू नहिं देता।
चलना है तूं करले चेता, भजले श्रीगोपालको ॥
क्यों गफलतमें सोता है। क्यों० ॥४॥

कहे घनश्याम भजन कर बन्दा, मत होवे मायामें अन्धा।
कटे तेरे सब कालका फंदा, भजले हरिके नामको ॥
सब वो ही पाप धोता है ॥ क्यों० ॥५॥

१६०—भजन परवा

स्वांसाका नांय ठिकाना, घड़ी पल छिनमें जायसी ॥टेक॥
देह छोड़ स्वासा जब जावे, पिलंग छोड़ नीचे ले जावे।
वांसा मांहि बांध सुवावैं, मरघट पर ले जायसी ॥
लकड़ीमें देह जलाना ॥ घड़ी०॥१॥

राम नाम मुखसे नहिं लीन्हो, पीसो नहीं गाँठसे दीन्हों।
वर्त तीर्थ कदे नहिं कीन्हों, क्या सागे ले जायसी ॥
कुकर्मका भऱ्या खजाना ॥ घड़ी०॥२॥

कर्म किया सोही फल पावे, और कछू तेरे संग न जावे।
धन परिवार काम नहिं आवे, बुरी भली संग जायसी ॥
झूठा है नेह लगाना ॥ घड़ी० ॥३॥

पाप पुण्य वहां सब खोलेगा, न्याव छाण कांटे तोलेगा।
धर्मराज जद सच बोलेगा, रती रती भुगतायसी ॥
ना रिसवतका है खाना ॥ घड़ी० ॥४॥

काम क्रोध मद मोह छोड़कर, राम भजन कर पाँव मोड़कर ।
कहे घनश्याम हाथ जोड़कर, वोही पार उतारसी ॥
. ऐसा है कृपा निधाना ॥ घड़ी० ॥५॥

१६१—राग असावरी

रे मनवा क्यूं फिरै भरमायो, तूंने हरिको यश नहिं गायो ॥टेक॥
लख चौरासी फिरतां फिरतां, मिनख जूणमें आयो ।
यह संसार स्वप्नकी माया, जगमें क्यूं लिपटायो ॥ रे मन० ॥१॥
नव दस मास गरभके अन्दर, ऊंधै शिर लटकायो ।
बाहर आय पड़्यो धरणी पै, रुदन बहुत मचायो ॥ रे मन० ॥२॥
विषय भोग माया बश होकर, बैठ्यो खाट पर खायो ।
मनकी तृष्णा मिटी नहीं तेरे बुढ़ापो आय सतायो ॥ रे मन० ॥३॥
तेरी मेरी करतां निशि दिन, जनम जनम भटकायो ।
जब तेरो काल निकट आवेगो, कोई नहीं है सहायो ॥ रे मन० ॥४॥
सुमरण करले नाम प्रभूका, जो मांगे मन चायो ।
कहै घनश्याम भजन कर बन्दा, जै चाहे सुख पायो ॥ रे मन० ॥५॥

१६२—राग भैरवी

जागिये अंजनि कुमार पवनके दुलारे ॥ टेक ॥
खेल कूद नाचके मुख भानु डारे,
हाहाकार मच गयो देवता पुकारे ॥ १ ॥
हाथमें गदा लिये समुद्र लांघ मारे,
राक्षसको मार दियो गिरिवरको तारे ॥ २ ॥

मात सीता पास जाय मुद्रिका डारे,

कंद मूल खाय लीन्हों, बागको बिगारे ॥ ३ ॥

विराट रूप धारके पतालमें सिधारे,

चण्डीको मार राम लिछमण उबारे ॥ ४ ॥

अहिरावण मार काम रामके सँवारे,

श्याम कहे बेर-बेर दरशद्यो तुम्हारे ॥ ५ ॥

१६३—राग भैरूं

हरे राम हरे राम हरे राम भज रे ।

काम क्रोध माया लोभ मोह जाल तज रे ॥ टेक ॥

चोरी बुराई जगत निन्दा यहि जा हट रे

राम भज राम भज पाप जाय कट रे ॥ हरे०॥१॥

वृथा फिरै देश देश दिन जाय बीत रे,

श्रीगोपाल नंदलाल कृष्ण गाय नित रे ॥ हरे० ॥२॥

वैतरणी तूं तर्यो चाहे गऊ दान कर रे,

राधेश्याम रटो राम योही काम कर रे ।।हरे० ।३।।

प्रभुके चरणोंकी रज नित शीश धर रे,

श्याम कहै रटो राम हृदय ध्यान धर रे ।।हरे०४।।

१६४—भजन

चलणो है तूं चेतो करले, नहीं बैठ्यो पछतासी ।

बिना राम रघुनाथ भजन बिन, कोइयन आड़ो आसी ॥ टेक ॥

बिना नींव एक बंगला देख्या, बिन कुंवा बिन पानी ।

ले दीपक बंगलेमें मेल्या, बोले अमृत बाणी ॥ १ ॥

चलता फिरता निस दिन बहता, ज्यूं पानीका बंबा।
जान बूझ कर पड़ै नरकमें, यही बड़ा अचंभा ॥ २ ॥
बंगले अंदर बारा फंदर, बहतर पेंच खिंचाया।
दश बारी सब न्यारी न्यारी कभी निकस कर जाया ॥ ३ ॥
जगमें आगा जगमें जागा, इसका नहीं ठिकाणा।
तन धन, धाम कुटुम जग सारा, यह सब होय बिगाना ॥ ४ ॥
करणा है सो जो कुछ कर ले, दिनां चारका मेला।
कहै घनश्याम भजन करने सूं, सीधा पाता गैला ॥ ५ ॥

१६५—भजन

बैठ्यो भजले राम नाम तने बोही पार लंघासी रे ॥ टेक ॥
कोड़ी-कोड़ी माया जोड़ी, यहां सभी रह ज्यासी रे।
मात पिता और भाई बन्धु, संग कोई नहिं जासी रे ॥१॥
सुख संपतका सब कोई सीरी, दुःखमें पास न आसी रे।
दिया लिया तेरे संग चलेगा और कछू नहिं जासी रे ॥२॥
किलाबन्दी महल चिणाया, यह नहीं आड़ा आसी रे।
रंग महल जब छाड़ चलेगा, मरघट पर ले ज्यासी रे ॥३॥
सुक्रत काम कदे नहीं कीन्हों, करी जगतकी हाँसी रे।
यमका दूत पकड़ ले जायगा, घाल गलेमें फांसी रे ॥४॥
रोगी भोगी राजा जोगी, यहाँ थिर नहीं रह ज्यासी रे।
चलणा है तूं चेतो करले, नहीं तो गोता खासी रे ॥५॥
जब लग तेल दिवेमें बाती, जगमग जोत जगासी रे।
जल गया तेल पड़ी रही बाती, बाहर काढ़ बगासी रे ॥६॥

क्या ल्याया तूं क्या ले ज्यासी, क्या तेरे आड़ो आसी रे।
कर्म किया सो जीव तैंने, जैसा तूं फल पासी रे ॥७॥
च्यारों धाम तीरथ करणे सैं, भव सागर तिर जासी रे।
कहे घनश्याम भजन कर वन्दा, वैठ्यो ऐंश उड़ासी रे ॥८॥

१६६—राग कालंगड़ा

हरिको भजन नहिं कियो रे, ना प्रेम पियालो पियो रे ॥ टेक ॥
लख चौरासी भटकत भटकत, मिनख शरीर भयो रे।
नव-दश मास गरभमें रहकर, झूठो ही कष्ट दियो रे ॥१॥
वालपणो हंस खेल गँमायो, माता लाड़ कियो रे।
भरी जवानी तिरिया प्यारी, विपय भोगमें रह्यो रे ॥२॥
विरध भयो कफ वायुने घेरयो, वर्त तीर्थ ना कियो रे।
कहे घनश्याम तिरे नर वोही, राम नाम जिन लियो रे ॥३॥

१६७—ठुमरी राग सारंग

शिव पिवत भंग, वहती जटामें गंग, भूपण सर्पोंका अंग,
विश्वनाथ संग, गौरी अर्धंग, सिंघीनाद वजावै ॥टेक॥
मूर्ती विशाल, तीन नेत्र लाल, गले रुण्ड माल,
सोहे चन्द्रभाल, ओढ़े मृगछाल, अंग भस्म लगावे ॥१॥
चढ़े वाहन वैल, विराजे गिरिजा गैल, नहीं आवत हैल,
नित करत शैल, करै भगत टहल, नित डमरू वजावे ॥२॥
लिये त्रिशूल धार, देखो शिवकी वहार, श्याम कहे पुकार,
रटो वार वार, वेड़ा होय पार, नित दर्शन पावै ॥३॥

१६८—ठुमरी राग सारंग

गिरजाके लाल, लोचन बिशाल, गल फूलन माल,
सोहे तिलक भाल चलें घूमत चाल, शिवके मन भावे ॥टेक॥
सोहे कानोंमें किरण, बर्छी हाथ धरण, लेता जाय शरण,
दुःख पाप हरण, शुभ काज करण, नित देव मनावे ॥१॥
शिव सुत महेश, सोहे लाल वेश, रटो श्री गणेश,
सब मिटै क्लेश, चढ़ै काम पेश, दुनिया जस गावे ॥२॥
ऋद्धि सिद्धि नार, डोले चँवर बार, चूहे वाहन सवार,
श्याम कहे पुकार, रटो प्रथम बार, सब विघ्न मिटावे ॥३॥

१६९—ठुमरी राग सारंग

अंजनी कुमार, करके विचार, गये उदधिके पार,
राक्षस मार, लंका सिधार, बलवीर कुहायो ॥टेक॥
गये सीताके पास, देखी भोत उदास, मेटी मनकी त्रास,
किये बाग नास, दियो नगर चास, सीता मन हरखायो ॥१॥
ल्याये सरजीवण सार, देई गलेमें डार, लिछमण उबार,
रूप विराट धार, अहिरावण मार, प्रभु मन हरखायो ॥२॥
अंजनी कुमार, श्याम कहे पुकार, रटो बार बार,
जग नाम सार पूरै कृपा अपार, सबके मन भायो ॥३॥

१७०—राग गोरी

हर हर राधेश्याम सीताराम रट रे ॥ टेक ॥
दशरथके घर राम कुहाये, कान्हा नंदके घर रे।
इनके संग लिछमण ओर सीता, बलदाऊ राधे संग रे ॥ १ ॥

धनुष वाण नित हाथ विराजे, वंशो सोहत कर रे।
इनके गल मोतियनकी माला, वनमाला उन गल रे॥ हर० ॥२॥
इन सागरमें शिला तिराई, उन उठाये गिरिवर रे।
लंका जाय रावण कूं मारे, मथुरा बीच मारे कंस रे॥ हर० ॥३॥
इनके चँवर छत्र सिर सोहत, उनके मोर मुकुट रे।
श्याम कहे याँको सुमरण करले, वैठ्यो ऐंस नित कर रे॥हर० ॥४॥

१७१—गजल

लगाले ध्यान ईश्वरमें, उमर निष्फल क्यों खोता है॥ टेक॥
गरभमें कोल कर आया, मुखसे राम नहीं गाया।
फिरै दुनियामें भरमाया, क्यों विषका वीज वोता है॥ लगाले०॥१॥
चोरासी भोगकर आया, मिली उत्तम मिनख काया।
हरीका जस नहीं गाया, सदा गफलतमें सोता है॥ लगाले०॥२॥
भजन कर वैठके वन्दा कटै तेरे कालका फन्दा।
मायामें हो रहा अंधा, वृथा क्यों वोझ ढोता है॥ लगाले०॥३॥
वालापन खेल कर खोया, जोवन विषय भोगमें धोया।
वुढ़ापे खाट पर सोया, वीज तृष्णाका वोता है॥ लगाले०॥४॥
कुटम परिवार सुत दारा, मायाने जाल विसतारा।
वह्या सव जात संसारा, संग कोई न होता है॥ लगाले०॥५॥
श्याम कहे राम रट प्यारा, भजनका वांध ले भारा।
जगत उसने रच्या सारा, वो सव पाप धोता है॥ लगाले०॥६॥

१७२—गजल

चले जात है संसारा, नौका लगा किनारा।
भज राम नाम प्यारा, किसीका चले न सारा॥ टेक॥
धन धाम पुत्र नारी, मद लोभ मोह यारी।
तुझको लगे हैं प्यारी, सब झूठका दीदारा॥ चले०॥१॥
निशि दिन दुनियांमें भटका, सिर पापका है मटका।
मालिक का है न खटका, नहीं हो सका उपकारा॥ चले०॥२॥
क्यूं हो रहा दिबाना, तुझको है दूर जाना।
कर पासमें समाना, बजै कालका नगारा॥ चले०॥३॥
प्रभुकी ऐसी माया उसने जगत रचाया।
घनश्याम यह सुनाया, दिलमें करो बिचारा॥ चले०॥४॥

१७३—होरी काफी

सखि मेरे मुखपर मारी साँवरेने, भर पिचकारी॥टेक॥
मैं जल जमुना भरण जात ही, शिर पर लीन्ही झारी।
ले जल पाछी आवन लागी, आय मिल्यो बनवारी॥
हाथमें लियां पिचकारी॥ सखि०॥१॥
दे झटको मेरी झारी छीनी, सगली चुनरिया फारी।
केशर चोवा रंग बणायो, करसे भर पिचकारी॥
ताक सीने पर मारी॥ सखि०॥२॥
ले गुलाल कर डारन लागे, भूल गई सुध सारी।
सासूकी जाई, ननद कहत है, हटजा कान्ह मुरारी॥
नाय तोय देऊंगी गारी॥ सखि०॥३॥

ऊंच नीचकी काण न मानी, सब ही एक कर डारी ।
जाय कहूंगी नन्दरायने, याही बात विचारी ॥
भयो तूं निपट अनारी ॥ सखि० ॥४॥
चेत भयो ननदी से पूछै कहां गये कृष्ण बतारी ।
कहत सखि ननदी मोय ले चल, जहां गये कृष्ण मुरारी ॥
विरह व्याकुल कर डारी ॥ सखि० ॥५॥
ननद भोजाई ढूंढन लागी, मिल गये कृष्ण मुरारी ।
श्याम कहे आनन्द भयो मनमें, चरण कमल बलिहारी ॥
लागे मोय सूरत प्यारी ॥ सखि० ॥६॥
घनश्यामदास नवलगढ़िया

१७४—लावणी रुक्मणीकी

जादुपति हो नाथ ये मेरी अरज सुण लीजिए ।
पत्री हमारी बाँच कर ये बात हिरदै दीजिए ॥
विपता पड़ी है आय मुझ पर सहाय मेरी कीजिए ।
खाता होवो तो आय पाणी कुनणपुरमें पीजिए ॥
मैं अरज करूं महाराज नाथ सुण लीज्यो ।
इब बेगा आकर दरश श्याम मोय दीज्यो ॥
महाराज चरणकी चेरी हूं थारी ।
मेरी विपत हरो महाराज, अरज मैं करती दुखयारी ॥टेक॥
मैं कुन्नणपुरमें भींव सुता कहलाऊं ।
इब पड़ी मुसीबत तुमसे अरज लगाऊं ॥
महाराज लिखूं मैं सच्चा सच्चा हाल ।

मोय लीज्यो चेरी जाण आपकी, करज्यो आ प्रतिपाल ॥
पिता मेरेने कही नारद मुनीने आय कर ।
रुकमणको बर कृष्ण है वै कह गया समझाय कर ॥
गजकी ज्यूं, करुणा सुण आवो थे पगां प्यादा धायकर ।
दिल मेरो फंस गयो तुमसे बचन पिताको मान कर ॥
पिता कहे बर कृष्ण तुम्हारो । नेम बरत सब उनकाई धारो ॥
तबसे लियो मैं शरणो थारो । लेऊं नाँव मैं साँझ सँवारो ॥
आ पड़यो मेरे पर जाल विपतको भारी ।
गेरयो है निज मेरे भ्रात और महतारी ॥
महाराज करी या आफत भारी ॥ मेरी ० ॥ १ ॥
माता और भ्राता रल कर कुवद कुमाई ।
अकरयो पितासे त्रिण करी मनकी चाई ॥
महाराज करी है बड़ी इचरजकी बात ।
पाती भेज शिशपाल बुलायो आयो साज वरात ॥
बण बींद आयकर घेरयो नग्र है म्हारो ।
रुकमण लेज्यायाँ बिड़द लाजसी थारो ॥
महाराज लरज कर अरज गुजारूं जी ।
मेरी सुणे आप बिन कूण खड़ी जंगलमें पुकारूंजी ॥
अरजी सुण कुगनाथ तुम बिन सहाय करे प्रभु आय कर ।
अरजी पै मरजी करो, स्वामी लिखूं, मैं दुख पाय कर ॥
गजने क्या भेजी पत्रिका, ग्राहसे छुटायो जाय कर ।
वैसे ही आवो नाथ थे, पाती मेरी उर ल्याय कर ॥

वाँच पत्रिका प्रभु थे आवो। दुखियाको कछु धीर बंधावो ॥
शत्रुने थे मार हटावो। नेम व्रत पूरा करवावो ॥
मैं जनक सुता थी जद वी नाथ थे आया।
थे आपे आया नहीं पत्री देय बुलाया ॥
महाराज गरज वैसी ही जाणो म्हारी ॥ मेरी०॥ २ ॥
फेर पिता आपने, देसूंटो दीन्यो हो।
माता कैकई वरदान मांग लीन्यो हो ॥
महाराज रह्या था वनके बीचमें जाय।
कुटिया बांध वठाई थी अब कैसे गया भुलाय ॥
फेर रावणने वी आय मुझे हर लीनो।
उस दिन वी मेरी सहाय आय कर कीनी ॥
महाराज बड़ो वो रावण बली जवान ॥
राई घटे न तिल बधे, प्रभु वो दिन लीज्यो जाण ॥
जाण लीजो नाथ तुम वैसे ही आवो दौड़ कर।
मान लीज्यो नाथ विणती मैं करूं कर जोड़ कर ॥
नई आवो तो मरूंगी पत्थरसे सिर फोड़ कर।
अपघात कर कर मैं मरूंगी, नाड़ करसे तोड़ कर ॥
नहिं आया सिर फोड़ मरूंगी। चिता जो चिनके माँय जरूंगी ॥
लाख वात मैं नाँय टरूंगी। लाज शरम कछु नाँय करूंगी ॥
थे आयां विन म्हाराज, प्राण ना राखूं।
थे झूठी वात ली जाण, सांच मैं भाखूं ॥
महाराज लिखी पत्री मैं सारी ॥मेरी०॥३॥

मैं लाख बार या लिखूं नाथ थे आज्यो।
गोप्यांके सङ्ग थे मतना बिलम्ब लगाज्यो॥
महाराज काज मेरो कर जाज्यो।
मैं तड़पूं हूं दिन रैन, आय मोय दरश दिखाज्यो॥
मैं धरूं किस विध धीर देख भय आवे।
शिशपालो यो मोय जमसे बुरो लखावे॥
महाराज जली हिरदे में जाऊं।
दिल उमगे छाती फटे सेरां नीर बहाऊं॥
नीर बरसे नैनमें, धारा बहे है अङ्ग में।
ना पाप प्रभु इब मैं करयो, के भंग पड़यो सतसंगमें॥
के बचन कर मैं पलट दीन्यो, के छोड़ दीन्यो रंगमें।
कुण पापसे शिशपाल आयो, क्यूं पड़यो दुःख अरधंगमें॥
करम लिखेको प्रभु संकट टालो। पुरब जनम की प्रीत पालो॥
गुरुसे ही ज्ञान गुरु रखवालो। भूल चूक अब गुरु निकालो॥
अब भूल निकालो बक्सीराम गुरु मेरी।
मेरो तिमिर अंधेरो हरो करो नहीं देरी॥
महाराज बाल करी नई चाल जारी॥मेरी०॥४॥

१७५—लावणी

दीनानाथ दयाल साँवरा, अरज सुणो नन्दका लाला।
दीनदयाला करण सुख, जगतपती, पालनवाला॥टेक॥
उग्रसेनकी बन्द छुटाई, सहाय करी तुम पलमें आय।
मारी पूतना, कंस पछाड़यो, नाग नाथ ल्यायो गेंद छुटाय॥

इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर, उनको दियो तुम गर्व गिराय।
म्हारी वरियां आयो नहीं, मने गयो क्यूं प्रभु भुलाय॥
प्रहलाद भक्तकी सहाय करी तूं, पिता दियो परवतसे गिराय।
खड्ग काढ़ मारण लाग्यो जद, नरसिंह रूप धर लियो बचाय॥
झां झां भीड़ पड़ी भगतनमें वहां ही करी तुम प्रतिपाला॥१॥
मोय निज चरणांकी चेरी जाण, दरसण द्यो प्रभु वेगा आय।
विपत सिंधुमें डूब रही हूं, भवसागरसे देवो छुटाय॥
यो शिशपाल घेरली मने, अगल वगल द्यो फौज फिराय।
पकड़ ले ज्यासी तेरे विन कूण करे इब मेरी सहाय॥
लाजै विड़द तुमारो स्वामी, रुकमण रहो तेरो ध्यान लगाय।
तुम नहीं आयां मरूंगी पलमें, गिरूंगी महलसे जाय॥
तुम आयां विन प्राण न राखूं, जलूं कलेजे की ठा ज्वाला॥२॥
करुणा करूं धरूं इब धोखा, कूण सुणे तुझ विन मेरी।
अब जल्दी आओ जाण कर मोय निज चरणांकी चेरी॥
थोड़ीमें ही जाण घणेरी मत करियो प्रभु अब देरी।
मैं दासी तेरी, दुष्टने विपत सिन्धु नैया घेरी॥
मंझधारा बिच झोला खावे न्याव मेरी अब आखेरी।
मत कर देरी धरूं मैं ध्यान शरण अब हूं तेरी॥
मैं के चोरी करी हरीकी क्यूं मुझमें सङ्कट डाला॥३॥
विप्र पठायो पूठो न आयो, लिखकर भेजी थी पाती।
तुम आयां विन मरूं मैं अन्न पाणी भी नहीं खाती॥
रो रो मरूं करूं के इब मैं भर भर आवत है छाती।

और न सूझे मने एक नाव तेरो हरी हरी गाती ॥
होय महर गुरुवांकी जिसकूं चौदह विद्या सब आती ।
ज्ञान दियो गुरु बक्सीराम, जद बाल कहे सब मन भाती ॥
बालमुकुन्द छन्द कथ गावे, खुल्या भरमका सब ताला ॥४॥

१७६—कजरी

साँवरा भोत घणी तरसाई, आवो दरश दिखावोना ॥टेक॥
देखत देखत नैन थक्या मेरा, इब तरसावो ना ।
बिलखत बिलखत कण्ठ दुखे हैं, आ धीर बंधावो ना ॥ साँवरा०॥१॥
डर डर कर मेरो फटे है कलेजो तूं नजरहि आवो ना ।
जनम जनमको साथी है, अब ओड़ निभावो ना ॥ साँवरा० ॥२॥

१७७—ठुमरी

कृष्ण करुणा सुन मिलियो आन, मैं धरूं तुमारो ध्यान ॥टेक॥
मात भ्रात दुशमन भये दोऊ, दुष्ट बठायो लान ॥ कृष्ण० ॥१॥
विप्र पठायो पुठो न आयो, मैं हो रही हैरान ।
करुणा सुन करुणानिधि आवो, अरज हमारी मान ॥ कृष्ण० ॥२॥
दीनदयाल ख्याल कर मनमें, दुःख पावत है प्राण ।
गुण दीन्यो गुरु बक्सीरामजी, बाल ख्याल कहे छान ॥३॥

बलदेवप्रसाद शर्मा

१७८—राग–सारंग ताल–तीनताल

(तर्ज-सुवटा जंगलको वासी)

ऊधो मधुपुरका वासी ।
म्हारो बिछड़्यो श्याम मिलाय, बिरहकी काट कठिन फांसी ॥१॥
श्याम बिना चैन नहिं आवे ।
म्हारो जबसे बिछड़्यो श्याम, हीवड़ो उजल्यो हो आवे ॥२॥
छाय रही व्याकुलता भारी ।
म्हारे श्याम बिरहमें आज, नैनसे रह्यो नीर जारी ॥३॥
श्याम बिना बृज सूनो लागे ।
सूनो कुंज तीर यमुनाको, सब सूनो लागे ॥४॥
माधोवन श्याम बिना सूनो ।
म्हारे एक एक पल, युग सम बीते, बिरह बढ़े दूनो ॥५॥
ऊधो अब अरज सुणो म्हारी ।
थारो गुण नहिं भूलां कदे, मिला म्हारो मोहन बनवारी ॥६॥

१७९—भजन

राग–श्रीराग बिलंबित ताल–तीनताल

बिनती सुण म्हारी, सुमरो सुखकारी, हरिके नामने ॥टेक॥
भटकत फिरयो योनि चौरासी लाख महा दुखदाई ।
बिन कारण कर दया नाथ फिर मिनख देह बकसाई ॥
गर्भ माँय माताके आकर पाया दुःख अनेक ।
अर्जी करी प्रभुसे बाहर काढ़ो राखो टेक ॥ बिनती० ॥१॥

करी प्रतिज्ञा गर्भ माँय मैं सुमरण करस्यूं थारो।
नहीं लगाऊं मन विषयांमें प्रभुजी मने उबारो॥
जन्म लेय जग मांय चित्तने विषयां माँय लगायो।
जन्म-मरण दुख हरण रामको पावन नाम भुलायो॥ बिनती० ॥२॥
खो दइ उमर वृथा भोगोंके सुख सुपनेके मांई।
सुख ना मिल्यो बढ़यो दुख दिन दिन रह्यो शोक मन छाई॥
मृगतृष्णाकी धरतीमें जो समझै भ्रमसे पाणी।
उसकी प्यास नहीं मिटणेकी निश्चै लीज्यो जाणी॥ बिनती० ॥३॥
यूं इन संसारिक भोगोंमें नहीं कदे सुख पायो।
दुःख रूप सुख देवै किस बिध मूरख मन भरमायो॥
कर बिचार मन हटा बिषयसे प्रभु चरणांमें लाओ।
करो कामना त्याग हरीको नाम प्रेमसे गावो॥ बिनती० ॥४॥
सुख दुखमें सन्तोष करो थे सगली इच्छा छोड़ो।
'मैं' और 'मेरो' त्याग हरीके रूप माँय चित जोड़ो॥
मिलै शान्ति दुख कदे न व्यापे आवे आनन्द भारी।
प्रेम मगन होय नाम हरीको जपो सदा सुखकारी॥ बिनती० ॥५॥

अज्ञात

१८०—हनुमानजीकी बाराखड़ी

कक्का करुणा मैं करूं, सुणियो पवन कुमार।
कर जोड़यां बिनती करूं, भरियो थे भण्डार॥१॥
खख्खा खुशी इब होयकर, द्यो बुद्धी वरदान।
जप पूजा जाणूं नहीं, मैं हूं अति अज्ञान॥२॥

गग्गा गाऊँ प्रेमसे, थे छो गुणकी खान।
कृपा घणेरी राखकर, लक्ष्मी द्यो मम आन ॥३॥
घघ्घा घणीमें के पड़्यो, थोड़ीमें है सार।
सेवक थारो जाण कर, कर द्यो वेड़ा पार ॥४॥
चच्चा चतुर थे अति घणा, खूब सँवारो काज।
संकट मेटण दुःख हरण, कठे गया थे आज ॥५॥
छछ्छा छिव कैसी वणी, मूरत वड़ी विशाल।
दरशणसे सुख ऊपजे, करदे पलमें निहाल ॥६॥
जज्जा जसरापुर आयके, भले विराजे नाथ।
सांझ सुवह दरशण करे, हो गये सभी सनाथ ॥७॥
झझ्झा झट थे लायके, दी वूंटी पिलवाय।
लक्ष्मण उठ वैठे भये, जै जै रहे मनाय ॥८॥
टट्टा टावर जाण कर, दरशण द्यो महावीर।
जिससे सुख अति ऊपजे, उरमें वंधज्या धीर ॥९॥
ठठ्ठा ठोक ताल ले मुद्रिका, पहुंचे लंका माँय।
सीताने सुखिया करी, वैसे ही होउ सहाय ॥१०॥
डड्डा डोलत ढूंढिया कठे न पाये आप।
थे छो दीनानाथ प्रभु, मेटो सव संताप ॥११॥
ढड्ढा ढोल अति वज रहे, गुणिजन गावे तान।
थाने पूजैं चावसे, करैं घणेरो मान ॥१२॥
तत्ता त्यारण आप हो, महावली रणधीर।
दुख भंजन संकट हरण, मेटो सवकी पीर ॥१३॥

थथ्था थोड़ी सी वीनती, करूं हाथ मैं जोड़।
अंजनि सुत महाबीर थे, कूण करै थारी होड़ ॥१४॥
दद्दा दास थे जाण कर, सदा करो सहाय।
नाम लियां हनुमन्तको, क्रोड़ बिघन टल जाय ॥१५॥
धध्धा धरती के तले, पहुंच पाताल के मांय।
अहिरावणने मार कर, ल्याये प्रभुहिं लिवाय ॥ १६ ॥
नन्ना नेम जाणूं नहीं, लग रही भाजूं भाज।
मम आशा पूरी करो, सुणियो गरीब निवाज ॥ १७ ॥
पप्पा पौषकी पूर्णिमा, मेला हो हरसाल।
आवें जातरी दूरसे, देखत हों खुशिहाल ॥ १८ ॥
फफ्फा फूले न मांवही, नर नारी सब लोग।
करे चूरमो प्रेमसे, अरु लगावहिं भोग ॥ १९ ॥
बब्बा बहुत मैं क्या कहूं, आप हो सरके ताज।
अन्न धन लक्ष्मी द्यो घणी, अड़्यां संवारो काज ॥ २० ॥
भभ्भा भगवती जोड़ कर, प्रणवे वारम्वार।
दया दृष्टि थे राखियो, निरधारां आधार ॥ २१ ॥
मम्मा मेला मांयने, गावें नर अरु नार।
सुन्दर गीत सुहावणा, होय घणेरी वहार ॥ २२ ॥
यय्या यार सब आंवही, सजा आपणो साज।
मेला अरु दरशण करें, एक पन्थ दो काज ॥ २३ ॥
रर्रा रामका भक्त थे, मैं थारो हूं दास।
अपणो सेवक जाण कर, पूरो मेरी आस ॥ २४ ॥

लङ्का लपेट रूई लई, फेर लगायो तेल।
लगी आग जब कूदगो, खूब दिखायो खेल ॥ २५ ॥
वञ्चा वहां सब जल गये, बच्यो विभीषण धाम।
कियो विध्वन्स पल मांयने, लङ्का जैसो ग्राम ॥ २६ ॥
सस्सा सुरसा राक्षसी, मुंह फैलायो आय।
सूक्ष्म रूप हो घुस गये, फिर निकले छिन मांय ॥ २७ ॥
हहहा हाथ जोड़यां कहे, सारो प्रभुके काज।
जय निश्चै सब होयगी, बल देख्यो मैं आज ॥ २८ ॥
बाराखड़ी या प्रेमसे, गावे चित्त लगाय।
अञ्जनि सुतकी म्हेरसे, सुख सम्पत्ति मिल जाय ॥ २९ ॥
सम्वत् गुनीससो नवे, कार्त्तिक शुक्ला आन।
गुरुवारकी पूर्णिमा रचना रची सुजान ॥ ३० ॥

भगवतीप्रसाद दारूका।

१८१—राग कल्याण

करत सुर वंदन सब कर जोरे ॥ टेक ॥
शशधर धरन तात दुख भंजन गंजन विघ्न बहोरे ॥ १ ॥
करिवर वदन रदन इक साजै मुकुट शीश पर तोरे ॥ २ ॥
भाल तिलक सिंदुर विराजै गल गजमुक्ता डोरे ॥ ३ ॥
सुवरन रचित खचित मणि कुण्डल विधु सुखमा यह चोरे ॥ ४ ॥
अरुन वसन तन अधिक लालिमा परशु कमल कर गोरे ॥ ५ ॥
शिवदत्त शरण चरण युगलन की खलगन नासहु मोरे ॥ ६ ॥

१८२—लावणी

सिद्धि सदन गजवदन विघ्नकुल कदन कपिल मंगल अवतार।
सकल अमंगल हरन करन सुख चरण पूजते बारम्बार ॥टेक॥
जो प्रभु तेरा प्रथम नाम ले सरत काम सबही ततकाल।
कबियन को आधार छंद कविताको विधाता दे शुभ चाल ॥
तेरी महिमा रटै आदि ब्रह्मा च्यारूं मुख वेद विशाल।
शिवशंकर मुख पांच शेष नित सहस बदन गावे असराल ॥
नारद शारद पार न पावै अन्त न आवे बरस हजार।
सकल अमंगल हरन करन सुख चरण पूजते बारम्बार ॥१॥
तेरे नामकी महिमा मोटी इन्द्रादिक सब गाते हैं।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध सुमंगल कृपा भयेसे पाते हैं ॥
दुख दारद सब विघ्न नाम लिये नासमान हो ज्याते हैं।
सकल सुरासुर इसी वास्ते पहले शीश नमाते हैं ॥
तेरी पूजा प्रथम करे से ऋद्धि सिद्धि भर दे भण्डार।
सकल अमंगल हरन करन सुख चरण पूजते बारम्बार ॥२॥
पाद्य अर्घ्य जलपान स्नान पञ्चामृत बसन बिराजै लाल।
केशर कुंकुम मृग मद चरचित अंग तिलक सिन्दुर सुभाल ॥
सुभग लाल यज्ञोपवीत गल और रक्त पुष्पनकी माल।
धूप दीप नैवेद्य पान फल श्रीफल मेवा अतर गुलाल ॥
रूप्य दक्षिणा और आरती करते बिधि षोड़श उपचार।
सकल अमंगल हरन करन सुख चरण पूजते बारम्बार ॥३॥

नामकी नाव चढ़ा गौरी सुत करो हमारा वेड़ा पार।
दग्ध वरण गण दुष्ट भ्रष्ट पद दुपितार्थको करो सुधार ॥
छन्द नायका अलङ्कार रस तुम जानो मोये नहीं विचार।
वालक वुद्धि चपल चतुराई सीखी कवून गुरुके द्वार ॥
कहैं विप्र शिवदत्त वरन देवो मूढ़ मति कूं सोच विचार।
सकल अमंगल हरन करन सुख चरण पूजते वारम्वार ॥४॥

१८३—राग वरुवा

तोरे चरणकी लेवुं वलैया तिमिर अज्ञान हरहु मोरी मैया ॥टेक॥
शीश मुकुट मकराकृत कुण्डल तिलक भाल मृगमदको लगैया ॥ १ ॥
गल वैजन्ती माल विराजे कर कंगन हीरनके जड़ैया ॥ २ ॥
मुख मयंक शोभा किमि वरणूं नयन देख मृग फिरत लजैया ॥ ३ ॥
अति सुन्दर सुक चंचु नासिका दसन दमक विजुरी चमकैया ॥ ४ ॥
लटकत लटी कपोलन ऊपर जरद चीर शिर कोर जरैया ॥ ५ ॥
युग करताल खंजरी वीणा रणत मधुर मञ्जीर सुहैया ॥ ६ ॥
गज मुक्तामणि जटित कंचुकी उन्नत अति उरोज छवि छैया ॥ ७ ॥
सु नवनीत सम उदर सुशोभित कटि अति छीन मेखला धरैया ॥ ८॥
लाख रंग रञ्जित पद नूपुर चढ़ि मराल आकाश रमैया ॥ ९ ॥
कोकिल कण्ठ नाद पंचम के शिवदत्त कवि वलिहारी जैया ॥१०॥

१८४—लावणी

सुर नर नाग सिद्ध सनकादिक ईन्द्रादिक पावें नहिं पार।
तेरो महिमा मात शारदा गावें वेद सकल संसार ॥टेक॥

जिसपर तेरी कृपा हो गई सो नर पण्डित कहलाया।
अति प्रवीण मुझ कूं यकीन जिन गुण नवीन तेरा गाया॥
कालीदास था महामूर्ख ना पढ़्या अङ्क फूट्या आया।
जिस पर तेरी महर भई जब पूछा मतलब बतलाया॥
दे पूरण वरदान किया सनमान मात तैं बात बिचार।
तेरी महिमा मात शारदा गावें बेद सकल संसार॥ १॥
मूरख नर पै महर भये से पलमें होय पूरण ज्ञानी।
करी समस्या सबकी पूरण कालिदास पण्डित मानी॥
जिसकी काव्य कला कौशलसे खुशी भये राजा रानी।
धाराधीश भोज उसके बिन बात किसी की ना मानी॥
समय गई वह बात अमर भई आज वही धारा निरधार।
तेरी महिमा मात शारदा गावें बेद सकल संसार॥ २॥
सतस्वरूप तेरा अनूप कर भोज भूपने दिखलाया।
पण्डित पूजे सात सै दे दे दान मान जगमें पाया॥
रह्यो ना धारा बीच मूर्ख नर प्रचार तेरा अति छाया।
इसी सबबसे इतिहास चलता जिसकी अमर काया॥
जब लग सुजस रहै दुनियांमें कहा जाता वो नर अवतार।
तेरी महिमा मात शारदा गावें वेद सकल संसार॥ ३॥
कबि कोबिद तेरी महिमा कथ जीवन सकल विताते हैं।
मैं नहीं जानूं अन्तकाल मुक्ति पाते क न पाते हैं॥
जैसा तेरा दिव्य रूप वैसा जरूर हो ज्याते हैं।
इसका सक वो रूप दिलाते जो हरदम वे गाते हैं॥

अन्तकालकी याददास्तसे शिवदत्त बन्ध मोक्ष नर नार।
तेरी महिमा मात शारदा गावें वेद सकल संसार ॥ ४ ॥

१८५—राग देश

प्रभु तुम दीननके रखवार, कहै सब दीनबन्धु संसार ॥टेक॥
बालक ध्रुव निज पिता गोद गयो माई दियो उतार।
वनमें जाय तपस्या कीनी तुष्ट भये करतार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
मञ्जारी सुत बचे देख प्रहलाद रख्यो प्रणधार।
तात उपाय मारणकी सोची आप कियो उद्धार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
गज अरु ग्राह लड़े जल भीतर गज गयो आखिर हार।
नारायण मुख नाम उचारयो आय कियो निस्तार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
भारतमें टीटोडी ब्याई जब उन करी पुकार।
गजघण्टा ता उपर डारी सहज भयो उपकार ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
विप्र सुदामा जन्म दरिद्री गयो आपके द्वार।
मूठी तीन निरे तन्दुल खा दारिद दियो विदार ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥
द्रोपद सती नग्न जब कीनी भरी सभा मँझार।
करी पुकार भाजि तुम आये भयो चीरको पहार ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥
गीध अधम सो पाई तात गति गाई वेद मँझार।
आप त्रिलोकीनाथ जलाके मुक्त कियो संसार ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥
नरसी घर माहेरो ल्याये बण कर साहूकार।
शिवदत्त लाज रखै मोकै पर भक्तन को आधार ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥

१८६—भजन

मिजाजी क्यों इतना गरवावे ।
लख चौरासी भोग एक बर मानुष तन पावे ॥टेक॥
झूठ माठ फूला क्या तेरे सार इसी तनमें ।
बिना पुन्य संग चले न कुछ भी सीर न इस धनमें ॥
फेर तूं आगे पिस्तासी ।
इसी जन्मका संचै होतो फिर आगे पासी ॥
शास्त्र में यूं गाथा गावे ॥ लख० ॥ १ ॥
बिना पुन्य जग बीच ही बिरथा मानुष तन तेरो ।
धर्म कर्म साध्यो न वन्यो तूं नारीको चेरो ॥
बता के तो में अधिकाई ।
भूख प्यास सुख दुख निद्राकी सबमें समताई ॥
ज्ञान भये उत्तम कहलावे ॥ लख० ॥ २ ॥
नर तन खर तन अजगर तन भी फेर फेर ल्यासी ।
शूकर कूकर स्याल जूंणमैं मांस मैल पासी ॥
गैलका कर्त्तव्य भुगतावे ।
बुरी बासना भये जूंण जिया बुरा भोग पावे ॥
समझ तोये राम नहीं भावे ॥ लख० ॥ ३ ॥
जे इस तन सैं घृणा भई तो ममता कूं त्यागो ।
कर्म बासना छोड़ ध्यान निज स्वरूप में लागो ॥
ज्ञान गुरु दे रस्तै घालै ।
मिलै न वासो ग्राम मूर्ख मन जे उजड़ चाले ॥

सूत सायर नर सुलझावे ।। लख० ।।४।।
घर तेरे में मालिक बैठ्यो तू फिर फिर धायो ।
भाग्यो भोत बीत गई उमर कहीं नहीं पायो ।
देख कैसी मूरखताई ।
बाहर ढूंढ्यो घर नहीं खोज्यो मेरु ढक्यो गई ।।
मिले सतगुरु तोय बतलावे ।। लख० ।।५।।
इस तनमें क्या सार आखिरी माटी की माटी ।
तेरा मेरा झूठ समझ या भरमतणी टाटी ।।
करो नेकी जगमें आकी ।
बदी करे जमद्वार खबर ले हो आयो डाकी ।।
नहीं धन जन कोई संग जावे ।। लख० ।।६।।
काया माया सुत अरु जाया मकान ना तेरा ।
जीवे जो लग खूब कमालो कर मेरा मेरा ।।
हुवेगी बंद फेर बोली ।
पोली खोल निकस ज्यावे मालिक जब फूंके होली ।।
घड़ी दो नाती किलसावे ।। लख० ।।७।।
मिले पून में पून नही कोई मरे बाद संगी ।।
प्यारा मित्र दोय घर नहावे ज्यूं भौंटे भंगी ।।
फेर नहिं आत कभी सपना ।
सांच कहै दुनियांमें धरमके सिवाय कूण अपना ।।
विप्र शिवदत्त यूं फरमावे ।। लख० ।।८।।

१८७—भजन

बुरी रे राम या बासना बुरी रे कृष्ण या बासना ॥ टेक ॥
ऊँच नीच तनु याहि दिखावे देहीसे निकसे जो स्वासना ॥बुरी०॥१॥
राव रंकके बनी एकसी चाये न हो कोड़ी पास ना ॥ बुरी० ॥२॥
या घटसे हो दूर फेर तो कोई किसीको भी दास ना ॥ बुरी० ॥३॥
लाख क्रोड़ भये हर्ष बढ़ेगो नष्ट भये होस हवास ना ॥ बुरी० ॥४॥
भूखहि भूख सतावे निसिदिन जिन का न होय अनप्रास ना ॥५॥
साधु हो आडम्बर रखते कितेक तन कूं दे त्रास ना ॥ बुरी० ॥६॥
ज्ञानी भरत भया मृग सावक जिसके जगी याही बासना बुरी०॥७॥
इसका भय शिवदत्त उनकूं भी जिनकूं यातनकी भी आयासना ॥८॥

१८८—लावणी

श्री गङ्गाजी प्रगट होयके त्रिभुवनका उद्धार किया।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष चारूंका खूब प्रचार किया ॥टेक॥
श्रौत स्मार्त अरु शैव भागवत सबही इसमें नहाते हैं।
जलकी उपमा सुकृत जनोंके मनसे साफ लगाते हैं ॥
काम क्रोध मद मोह लोभ गङ्गाके पास न आते हैं।
जो नित नहाते पापी जन छुटकारा पापसे पाते हैं ॥
कफका नासक कहे इसीसे अन्त कालमें पाते हैं।
यमके दूत पूत जलसे तन भीगां देख भग जाते हैं ॥
कायिक वाचिक और मानसिक तीनों धर्म बनाते हैं।
कायिक करै भला ओरूं का हाथ पैर तन ताते हैं ॥

वाचिक वचन से कहे अच्छी पाठ जब मुखसे करै ।
मानसिक अच्छी विचारे शुद्धता मन में भरे ॥
कायिक यही स्वेच्छा सु सेवक फीस विन खिदमत करै ।
लेके विगाना बोझ मेलोंमें जो निज कंधे धरे ॥
बड़े बड़े दातार धर्म हित लाखूं द्रव्य उपहार दिया ॥१॥
विना अर्थ नहिं अर्थ सिद्ध हो ज्युं राजा वलि दानी से ।
सोही अर्थ गङ्गाजी देती गौरमिंटकूं पानी से ॥
नहर चलाके करी कमाई जलकी आवादानी से ।
ठौर ठौर कल और कारखाना चलते आसानी से ॥
क्रोडूं का रूजगार चला दिया भरते पेट किसानी से ।
राजा प्रजा दोनों धन पाते ज्यों हीरेकी खानी से ॥
विना परिश्रम जलसे पैदा करते वुद्धिमानी से ।
गेहूं चना ईख सरसुं पैदा करते महारानी से ॥
वांस कुल तखते वहाके दूरसे ल्याते हला ।
पाटसे पत्थर निकाले हो गरीवोंका भला ॥
पेट भरते गुजर करते कई जन खोदै नला ।
करत सड़क पर दो वख्त छिड़काव जल कलसे चला ॥
जब जब पड़ा अकाल नहरका काम चलाय गरीव जिया ॥२॥
जे जन मांगे मनोकामना सो गङ्गा पूरी करती ।
निर्धन कूं धन पुत्र वांझ कूं कुष्टी कूं कञ्चन करती ॥
मूर्ख विप्र विद्या परिपूरण राजपूत कूं धन धरती ।
वैश्य पदारथ माया विलसे होत खजाना सव भरती ॥

शूद्र सदा अन धन और धीणा रहे अटल आपद टरती ।
जो मांगे सो गङ्गा देवे मनोकामना सब सरती ॥
मुवा कूं गति देत भगवती अन्तकाल तन उधरती ।
पापी प्राण तजे गंगा पर पार सकल उसका हरती ॥
जो नर नहावे प्रेमसे गंगा पे जा हरिद्वारजी ।
उसकूं मिले धर्मार्थ काम सु मोक्ष आगे त्यारजी ॥
चारूं पदारथ गंगा देवे फैर क्या दरकारजी ।
गंगा जगत जननी हमारा करै बेड़ा पारजी ॥
योगी जन नित्त ध्यान धरा जिन मोह मायाने पार किया ॥३॥
मोक्ष चीज दुर्लभ दुनियांमें मिले न कष्ट उठानेसे ।
सोही मोक्ष मिलती गंगामें तनको भस्म बहानेसे ॥
एक समय मुनि कपिल देव शिर झूठ कलङ्क लगानेसे ।
भस्म भये नृप सगर पुत्र सब नाहक विप्र सताणे से ॥
उनकी खबर सगर सुन पाई दुखित भयो सुत जाणे से ।
बंश उजागर भयो भगीरथ जब माता समझाणे से ॥
गयो बिप्र पै उपाय पूछी हरै गंगके आनेसे ।
यहि मतलब था भागीरथ कूं भगीरथीके ल्याणे से ॥
कीनी तपस्या बिष्णुकी जब गंग दी बरदान में ।
गंगा कही यह बेग मेरे सलिल का असमान में ॥
धरनी कहो कैसे सहेगी बेगके घमसान में ।
धरती वहा पाताल जा रहूं फेर मुसकिल आन में ॥
सुनत बचन भागीरथ कलप्यो फिर शिवसे वरदान लिया ॥४॥

अति अभिमान देख गंगाको जटा बीच शिव डटा लई ।
पता न लागा भागीरथ कूं जब फिर धुनी जमा लई ॥
बहुत वर्ष लग करी तपस्या जब शिव शंकर हरप दई ।
जटा नीचोड़ ठोड़ उस कीनी प्रगट गंगा जब खुशी भई ॥
शिव कैलास और हेमाचल गंगोत्तरी आ फेर नई ।
हरिद्वार में त्यार सगर सुत फिर माता पाताल गई ॥
रुका न वेग फेर कोइसे सरिता पतिकी सरण लई ।
भयो नाम जग अमर भगीरथ अपने कुल कूं मुक्त दई ॥
राजा सगरके बालकोंने सात खड्डा जो खन्या ।
जलसे भये पूरन उनूंका नाम सागर यूं बन्या ॥
मुनी श्राप दीना भस्म कीना सो भये सब अन जन्या ।
उनकी गति गंगा करी सब पाप सृष्टीका हन्या ॥
कहे शिवदत्त मात गंगाका मैं भी सरना आन लिया ॥५॥

१८९—रागनी देश

लखत घट घटकी वो अन्तर जामी कहै सब जग त्रिभुवनको स्वामी ॥टेक॥
कोई कहै सिय हरी दसानन खेचरी महा कामी ।
मृग मारीच ठग्यो रघुबरने थी भावी आगामी ॥ लखत० ॥१॥
वोही राम रावण मृग मारन थो भावीको जामी ।
चीरकी वेर खबर कुण दीनी साँची कहो हरामी ॥ लखत० ॥२॥
कोई कहै पितु मरण खबर दई भरत भरै कुण हामी ।
अजामीलके मरनेकी बर खबर मिली कैसे लामी ॥ लखत० ॥३॥

पिता मरण घर लौट न आयो देख लोक वदनामी।
गजकी वेर गरुड़ तजि आयो हवा वेग पद गामो ॥ लखत० ॥४॥
सबके मनकी लखै अलख वो ना हिन्दू इसलामी।
गोपनीय संग भक्ति प्रिय डोल्यो ना कोई उसमें खामी ॥लखत० ॥५॥
खल दल दलन नाथ मरियादा पुरुषोत्तम अभिरामी।
लीला मानुष ख्याल दिखायो शिवदत्त कहैं नमामी ॥ लखत० ॥६॥

१९०—लावणी

लख चौरासी स्वांग आपकूं भर भर सवही दिखलाये।
रीझेपै देवो मोक्ष नहीं तो मत भर यूं कहना चाये ॥ टेक ॥
नौ महिना लग करी सजावट जव यह स्वांग तयार भया।
आगे आप मिले नहिं मालिक फिरते फिरते हार गया ॥
पाया नां तकलीफ सिवा कछु किया सभी वेकार गया।
मेरे मनकी उम्मेद मिट गई जो दिल बीच विचार गया ॥
अब तो नाथ वहुत दिन होगये मुझे फिराना ना चाये ॥ रीझे०॥१॥
सूम और दातार जनूं में प्रथम नटै सोइ सूम भला।
वह दातारी कौन कामकी देत न याचिक आत चला ॥
अव तो नाथ भेंट भई सुनिये नाम पुकारत दुखे गला।
विन सरकार मरे दरबारमें आरजु मेरि सुने न वला ॥
आप धनो मौजुद भिखारी देख हिराना ना चाये ॥ रीझे०॥२॥
जर जेवर हीरे पन्नुं की जरा न मुझकूं गरज रही।
असली चीज अगर गज मुक्ती हो तो देवो दान वही ॥
मेरी प्यारी प्रान सेबारी दीजिये साम्रथ मानो कही।

आप गरीब निवाज कहावत मैं अब नाथ गरीबी गही ।
दीजिये दान आस है मोटी मुझे विराना ना चाये ॥ रीझे०॥३॥
माफ करो तकसीर अगर कभी खोटे वचन सुनाये हैं ।
मांड़ भिखारी दातारोंकूं योंही कहते आये हैं ॥
माता पिता हुजूर आपके हम कपूत सुत जाये हैं ।
नहीं दोष पाप गिने जिन टट्टी मूत उठाये हैं ॥
मांगे सो मोहताज भीख शिवदत्त कूं मिल जाना चाये ॥ रीझे०॥४॥

१९१—लावणी गंगाजीकी

कहो सगर सुत कैसे तरते बिना गंगके आने से ।
यही मतलब था भागीरथको भगीरथी कूं लाने से ॥ टेक ॥
विप्र शापसे दग्ध भये की बिना गंग गति होय नहीं ।
हो तो गुनी बतावो लिखा हो धर्म शास्त्रके बीच कहीं ॥
इसी बात कूं सोच और आगे अति घोर कलिके महीं ।
होनहार पापी जन सृष्टी दीख पड़ेगी जहीं तहीं ॥
उनका ही निस्तार करै उद्धार धारके आनेसे ॥ यही० ॥१॥
गौ हत्या बालककी हत्या द्विज हत्या करने वारे ।
देव द्रव्य द्विज द्रव्य भाण बेटा का धन हरने वारे ॥
पर धन पर नारी पर जमियन पर नियत धरने वारे ।
बेटी सुत नारीको बेच कर अपना पेट भरने वारे ॥
ऐसे ऐसे अनेक पापी तर ज्यावेंगे न्हाने से ॥ यही० ॥२॥
भगीरथीके पुन्य तीर पै मरैं सो तरैं न धरैं जनम ।
ऐसा तीरथ-और दूसरा परम पवित्र न इसके सम ॥

सुन महातम गंगाके जलका आप करै अचरज मन यम ।
दूर देशका मरा पातकी गंग पड़े फिर कैसा अधम ॥
उसको भी बैकुण्ठ त्यार है हड्डी लाय बहाने से ॥३॥
मरा एक बन बीच पारधी उसका तन खा गये जो स्यार ।
बाकी एक हड्डी कौवा ले आ बैठा वहां पंख पसार ॥
धोके गंग नीरसे खाते भई कण्ठसे हड्डी पार ।
मर गया कौवा तर गये दोनों गये मुक्तिके वल्य पधार ॥
फिर गंगा न्हाये अचरज त्री कोटि कुल तर जाने से ॥ यही०॥४॥
गंगाजीने अधम पातकी अरबों खरबों तारे हैं ।
नारद शारद शेष महेश गणेश गिनत सब हारे हैं ॥
जेते कन धरनीके अरु जेते नभ अन्दर तारे हैं ।
उनसे भी कछु अधिक अधम तारे यूं शास्त्र उचारे हैं ॥
कलाहीन हो जांगे तीर्थ कइ कलिकालके आनेसे ॥ ५ ॥
बिन करनी बिन दान पुन्यके अरु बिन कष्ट उठाये से ।
कहीं न मुक्ति होत वही एक गंगाजीके नहाये से ॥
क्या हिन्दू क्या मुसलमान तरते हैं गोता खाये से ।
भेद भाव नहीं ये करती का गंगा गंगा गाये से ॥
अन्तकाल हो जात अमर तन गंगाजलके पाने से ॥ यही०॥६॥
धन वो बेटा मात पिताके हरिद्वार अस्थी घालै ।
पैंड पैंड हो अश्वमेध फल घर से जब रस्ते चालै ॥
जब कण्ठों से निकाल रस्सी गंगामें उनको डाले ।
मात पिता ऋण मुक्त होय निज पुत्र पणा सच्चा पाले ॥

पुत्र कहावे मात पिताको हरिद्वार ले जाने से ॥ यही० ॥७॥
कठिन तपस्या कर कितने युग ब्रह्मलोकसे नृप आनी ॥
निज कुल मुक्ति जगत परमारथ सोच समझ मनमें ज्ञानी ॥
किया भला सबका थिर कीरत नहीं किसी सेती छानी ।
त्रिभुवन बीच सदाके वास्ते अमर नाम किया महारानी ॥
शिवदत्त कहे हरिजन राजी दुनियांके सुख पाने से ॥ यही०॥८॥

१९२—लावणी रामचन्द्रकी

दीनदयाल कृपाल असुर कुल साल भक्त अपनो इब जान ।
सीतापति रघुवीर पतित पावन पुकार सुनियो दे ध्यान ॥ टेक ॥
लेकर जन्म भूप दशरथ घर बड़े-बड़े पापी तारे ।
सृष्टिको दुख दूर करन अवतार चार सारे धारे ॥
राम लखन लघु भरत शत्रुघन तीन मातके हो प्यारे ।
बाल ख्याल कर बड़े भये जब ऋपियनके कारज सारे ॥
असुर मार कर यज्ञ सपूरन मुनि कौसिक संग कियो पयान ॥ १ ॥
गौतम नारि चरण रज तारी यही आपको पहलो काम ।
जनक भूपको प्रण पूरो कर चारों भ्रात व्याहे उस थाम ॥
लेकर नारि चले निज पुरको अति उमङ्ग से सीताराम ।
परशुराम आ करी गरज शिव धनुप हत्यो उसका क्या भाम ॥
जिस दिन कला खैंच मुनिवरकी अवध पुरी आयो निजधाम ॥२॥
जब नृप दशरथ मती विचारी राम बड़े सुतको युवराज ।
आन कैकई कही दोय वर आज हमारे दो महाराज ॥

राज भरतको मिले बरस चौदह बन राम रहै शिरताज।
सुनत बचन बेहोश भये नृप ज्यों शिर बज्र पड़्यो कर गाज॥
बहुत बहुत कैकई सुनी पण रही आखिरी एक जवान॥ ३॥
राम लखन सीता संगले तज राज कियो बन वीच गमन।
सब पुरवासी लोग अवधके भये राम बिन ब्याकुल मन॥
नैना नीर मन अति अधीर हो लियो न मुखमें उस दिन अन॥
फक्त कैकई सिवा लगी सब ही को पुरी जैसा हो बन।
सुत वियोग अति बिकट ब्यथा व्याकुल नृप त्याग चले निज प्रान॥४॥
पिता बचन प्रण पाल चाल बन चित्रकूटमें कियो मुकाम।
लगी भरतने खबर सबर तज आय अवध पूछा कहां राम॥
हो प्रसन्न कैकई यों कही पुत्र राज भोगो धन धाम।
पिता गये परलोक राम लक्ष्मण सीता बन गये तमाम॥
सुन कर बात मात अपनीसे पड़ा भरत मुरछागत आन॥ ५॥
चेत भयो चिन्ता कर चित मुनी बशिष्ठको बुलवाया।
सब नगरी सङ्ग लेय भ्रातसे बन माहिं मिलणा चाया॥
भरद्वाजसे पता पूछ सब चित्रकूट आश्रम आया।
सुनत तात परलोक बास भइ त्रास राम मुख मुरझाया॥
भरत कही तुम चलो पुरी महाराज राम लागे समझान॥ ६॥
पिता बचन प्रण पाल चाल हम वरस पन्द्रहवें आते हैं।
तब लग राज करो तुम जाके हम तुमको फरमाते हैं॥
कर प्रणाम निज मात चरण तीनोंसे आशिष पाते हैं।
कही जोर कर मुनि वशिष्ठ हम दूजी ठौर सिधाते हैं॥

कर सवही को विदा राम अव गये दण्डकारण्य महान ॥ ७ ॥
कर विराधने मुक्ति मुनी शरभंग दरश कर भक्त भया ।
मुनि अगस्त्यका शिष्य सुतिक्ष्ण परम धामको चला गया ॥
जव रघुवर से मुनि अगस्त्य कही विप्रन ऊपर करो दया ।
दण्डक वनमें दुष्ट निशाचर मुनी हजारों खाय गया ॥
करुणा सुन प्रभु करी प्रतिज्ञा सव दुष्टनका हरूं जो प्रान ॥८॥
पञ्चवटीमें जाय असुर खरदूपण त्रीशिराको मारा ।
वैर सुवाहुको लेन मारीच, दुष्ट दो वार हारा ॥
चौदह सहस असुर सुर पुर गये सुरपनखा मुख विस्तारा ।
नाक कान लिये काट राम जव रावण से मोसा मारा ॥
उसको जीत सकै नहिं कोइ वो मारेगा सवकी जान ॥ ९ ॥
रावण संग मारीच गयो सुवरण मृग वन दण्डक वनमें ।
भावी वस सीता यों वोली नाथ इसे मारो छनमें ॥
राम लखण जव गये गैलसे रावण छल कीनो मनमें ।
उण मारयो मारीच आज मैं सीताको फासूं फनमें ॥
सीता लै लंकापति उठि गयो राम देख भये वहुत हैरान ॥१०॥
इधर उधर कर खोज भाल जव पास जटायुके आया ।
पता दिया सीताका और अपने वेहालका दुख गाया ॥
हो अधीर रघुवीर जटायु तना हाल सुन घवराया ।
कही हाय अरे दैव अजव कैसी अगाध तेरी माया ॥
जो मेरा अवलम्व जटायु सो भी कालने किया चलान ॥ ११ ॥
दुःखकी सीमा रही ना उस दिन मित्र जान मुक्ति दीना ।

फिर कबंधकूं मार रामजी स्वर्गबास उसका कीना ॥
सरभा से सतसंग कियो जब जूठा बैर हितसे लीना ।
दे मुक्ति बरदान आन सुग्रीव पास जेवर चीना ॥
बाली मार मित्रता कीनी लंकपुरी भेज्यो हनुमान ॥ १२ ॥
ले संदेश पवनसुत आयो लंकामें सीता पाई ।
पदम अठारह संग सेन ले चढ़े आप श्रीरघुराई ॥
नौ लख पूत सवा लाख नाती रावण की होनी आयी ।
सब को स्वर्ग पठाय आय अवधेश राजगद्दी पाई ॥
फिर सीता वनबास भयो अरु अश्वमेध कीना दे दान ॥ १३ ॥
दे लवकुशको राज गये प्रभु परम धाम ले सब पुर साथ ।
जिन उनसे राखी शत्रुताई उनको भी तारे रघुनाथ ॥
जो नर भजे तजे माया मद मन से नमन कियो जिन माथ ।
से नर पार उतर गये आखिर उनकी चाली जगमें गाथ ॥
जिनका था बिश्वास राम पर उनका करता नाम बखान ॥ १४ ॥
नामदेव के छान छबाई कबीर कै बालद ल्यायो ।
सैन हेत नाई बन वैठ्यौ करमाको खीचड़ खायो ॥
मीरां प्याला विष का पी गई धने तनु जा हल बायो ।
गणिका सजन सरीसा पापी तारत देर नहीं ल्यायो ॥
नरसीको माहेरो भर दियो भक्तन को राख्यो नित मान ॥ १५ ॥
जो तुम हो प्रभु अधम उधारन अधम जान मुझको तारो ।
दीनदयाल नाम विश्वम्भर फिर निरदयता क्यों धारो ॥
मैं हूं पतित पतितपावन तुम करो भक्तको निस्तारो ।

आप विना कबहूं न जीवको कोटि जन्म हो छुटकारो ॥
शिवदत्त शरण लाज प्रभु रखिये निराधार अपनो कर जान ॥१६॥

१९३—राग कालिंगड़ा

रघुनाथ भरोसो थारो प्रभु इब तो दया विचारो ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद मोह लोभ ने मेरो कर लियो लारो ।
तृष्णा बढ़े चढ़े ज्यों ऊमर इनसे करो छुटकारो ॥ रघु० ॥१॥
आप सुवारथ कुटम कबीलो गरज भये से प्यारो ।
विपतामें वतला कर देखो लगे जहरसे खारो ॥ रघु० ॥२॥
मात तात सुत धन का गरजी निशिदिन गाहत गारो ।
जब लग जीव पीव कहे नारी आखिर करत उवारो ॥ रघु० ॥३॥
नारीने कह कपटकी चौसर जन्म हार दियो सारो ।
खारा बोल कहै कद मरसी सिरकै लगे अङ्गारो ॥ रघु० ॥४॥
यो संसार असार लखै कोइ विरलो हरिजन प्यारो ।
सुख मान्यो सो दुख ने सरज्यो अन्तकालको चारो ॥ रघु० ॥५॥
जिस तन पर इतना गरवावो सो तन होसी छारो ।
जीव विना लख घर का कहसी जल्दी जारो जारो ॥ रघु० ॥६॥
तेल फुलेल रमायो तनमें अरु अन्तरको झारो ।
अन्त निकम्मू सब कछु होसी प्रभू से दे रह्यो टारो ॥ रघु० ॥७॥
दया धरम परमारथको मैं कुलमें भयो कुठारो ।
पैसा लगे प्राण से वल्लभ चाहे जहां पर डारो ॥ रघु० ॥८॥
जोवन चल्यो वुढ़ापो आयो नस्यो पापको ढारो ।
ज्यों ज्यों मौत सांकड़ी आवे त्यो त्यों फिरे उण्यारो ॥ रघु० ॥९॥

दृष्टि मन्द भई कम सूझे चन्द न दीखे तारो।
खाले खोले पैर टिके जब नाम ऊचारूं थारो ॥रघु०॥१०॥
मैं हिरण्यकशिपु भयो दूजो चाहे हृदय बिदारो।
मो सम पापी और न दीखे कैसे काम सुधारो ॥रघु०॥११॥
नर तन धार बह्यो दिन रजनी ज्युं अरहटको नारो।
अब मन दुखी बिवस भयो प्रभुजी ज्यों मूषक पोपा रो ॥रघु०॥१२॥
सपथ काढ़ कहूं बेग पिण्डके खत खोटा सब फारो।
सरणागत की सरम आपने हे प्रभु मोय उबारो ॥रघु०॥१३॥
अबतो नाथ चल्यो नहिं जावे शीश पापको भारो।
पहिली नाम लियो नहिं सुखमें खोदियो सकल जमारो ॥ रघु०॥१४॥
अन्त कालके आपही संगी लागत नाम पियारो।
जब मैं नाम धर्म को लेऊं सुत कह बायु सरारो ॥ रघु० ॥१५॥
परबस पुन्य तनी या हालत कब छूटैगो लारो।
मेरा ही पाप मोय दिन घाले हे प्रभु कष्ट निवारो ॥ रघु० ॥१६॥
हाथ पांव जर जर तनु धूजै चले न मनको सारो।
जिनसे बात कहूं घर सीखकी बोही बोले खारो ॥ रघु० ॥ १७॥
चक्षु श्रवण नासिका जिह्वा त्वचा कियो निपटारो।
अपनो अपनो धर्म छोड़ दियो जब के चाले सारो ॥ रघु० ॥१८॥
दीन मलीन अवस्था तनकी परबस होय कूं न्यारो।
कोइ न सुने आप बिन प्रभुजी को दुख मेटन हारो ॥ रघु० ॥१९॥
के तन थो अरु के तन हो गयो आगयो आयु किनारो।
शिवदत्त कहे कष्ट क्या वाकी अब तो नाथ निहारो ॥ रघु० ॥२०॥

१९४—लावणी रंगत खड़ी

तेरा नाम लेलिया एक वेर फिर वो प्राणी अधम कहा।
हे करतार तार दिये लाखों अवतो वाकी मैंहिं रहा ॥टेक॥
जाति पांति को भेद न तेरे तूं तो भक्ति चाहता है।
खोटा खरा रुपैया पैसा ज्यों जल बीच समाता है॥
तेरा नाम चाहे जो लेवे वो प्राणी तर जाता है।
जन्म मरण लख चौरासीसे छूट मोक्ष पद पाता है॥
याहीसे जग बीच नाम प्रभु दीनदयाल सभीने कहा ॥१॥
अगर कहो तो नाम गिनाऊं लेकिन उनका पार नहीं।
गणिका दुष्ट पूतना अहिल्या जैसोंका भी विचार नहीं॥
अजामील नृग व्याध सरीखे नर कोई बेकार नहीं।
एक पलकमें मुक्ति दी तेरे घरमें कछु वार नहीं॥
आगे तो दरबार बीच ना ऊँच नीच का विचार रहा ॥२॥
ऊँच नीचको विचार हो तो जूठा वेर क्यों खाते।
राव रङ्क को भेद लखे क्या विप्र सुदामा धन पाते॥
वैरी मित्र एक जाने विन चेदीपति क्या तर जाते।
भक्ति बड़ी न होती तो क्यों नरसी से रखते खाते॥
भेद भाव ना एक रती जव भृगुजी तना प्रहार सहा ॥३॥
कन्नको अरज गरज मुक्तिकी कर रह्यो सांवल थारी में।
नो अक्षर क्यों नहिं निकालो मत आ अव संसारी में॥
हो गया केस सफेद रही ना उम्मेद दुनियांदारी में।

नाव पुरानी पार लँघाओ फंसी भंवर जल भारी में ॥
शिवदत्त कहै बीच सागरके बेड़ा ईश्वर जात बहा ॥४॥

१९५—राग देश

प्रभो तोरि बिश्व बिदित दातारी ॥टेक॥
सब जग कहे आपके रूठे मिले न जिनस उधारी ।
आपकी महर भये सब करते राव रङ्क लाचारी ॥ प्रभो० ॥१॥
तुम दातार देत सम दृष्टि राजा सेठ भिखारी ।
नहिं दुभांति आपके मनमें जानत दुनियां सारी ॥ प्रभो० ॥२॥
फेर दुभांति कहांसे सीखे राजा सेठ अनारी ।
नाक कान मुख जीभ नैन दिये सबको तुम इकसारी ॥प्रभो०॥३॥
तुम तो सब को देते सब कुछ भाग्यकी मैं मान्यारी ।
जैसी अपनी करै कमाई सो आगीने त्यारी ॥ प्रभो० ॥४॥
सुख दुख धन जन सब कर्मोंके उनही की बलिहारी ।
देखो फेर आप मरदोंकी बुद्धिकी होशियारी ॥ प्रभो० ॥५॥
पत्र पुष्प फल तोय भक्तिसे जो नर देत सवांरी ।
इतने ही में है प्रसन्नता सो भी कोन बिचारी ॥ प्रभो० ॥६॥
जो तुम भूलो इनकी नाईं फिर क्या दशा हमारी ।
हाथ पांव मुख नाक न देते कैसी होती ख्वारी ॥ प्रभो० ॥७॥
क्या सुन्दर तन रचा आपने दयासिन्धु नर नारी ।
वाहे आमनीम भये शिवदत्त निर्दय जब संसारी ॥ प्रभो० ॥८॥

१९६—राग कालिंगड़ा

मत बांध मनोरथ मनका ना तनिक भरोसा तनका ॥टेक॥
अपने घरमें हुक्कुम चलावे मालिक तूं सब धनका।
एक रोज घर बाहर करसी वासी वनसी वनका ॥ मत बांध० ॥१॥
मात तात सुत नारी कबीलो सबही कपटी मनका।
अन्त किसीका नाता नाहिं कोई न संगी तनका ॥ मत बांध०॥२॥
करना है सो यहां पर करले जीना है दो दिनका।
आसी काल पकड़ लेजायगा गला घोट दुश्मनका ॥ मत बांध० ॥३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी सौंच भार लाखनका।
शिवदत्त कहै रहै धरनी पर संग पुन्य पापनका ॥ मत बांध० ॥४॥

१९७—राग आसावरी

विधाता तैंने क्या लिख मारा ॥टेक॥
जा सुत राम कामको कर्ता जीवन प्राण हमारा।
राज तिलककी त्यारी हो रही सो वनोवास सिधारा ॥ विधाता० ॥१॥
क्या मैं किसीको कष्ट दिया था क्या कोई दीन संहारा।
पूर्व जन्म या इसही जन्ममें किसीका हृदय विदारा ॥ विधाता० ॥२॥
हाय भूलसे एक समय अनजान पाप कर डारा।
वाही फल जल हेतु श्रवणका प्राण हरण हतियारा ॥ विधाता० ॥३॥
पुत्र वियोग कियो परमेश्वर जो था मेरा प्यारा।
शिवदत्त जिनके चोट लगे प्रभु सोही सहनेहारा ॥ विधाता० ॥४॥

———

१९८—राग भैरवी

नहीं कोई पुत्र बराबर चीज ॥ टेक ॥
पुत्र रत्न सब रत्न शिरोमणि जो निज असली बीज ।
लाख भूल सुतकी सुन माता रहैं स्नेहमें रीज ॥ नहीं कोई०॥१॥
बालक पुत्र पिता को पीटे कभी न आवे खीज ।
शिरकी पगड़ी परै बगावै पिता रहे मोह भीज ॥ नहीं कोई०॥२॥
पुत्र एक नरकोंसे तारे सब कुल यदि ना बीज ।
बिना पुत्र घर कौन कामको राज पाट धन धीज ॥ नहीं कोई०॥३॥
पुत्र पिता माताके पेटकी अग्नि रूप तन छीज ।
आज वही शिवदत्त राम बिन दशरथ नृप रहा सीज ॥नहीं कोई०॥४॥

१९९—राग सोहनी

क्यों रूसे साम्रथ सरजन हार, और भावैं रूसो सब संसार ॥टेक॥
उनके कोपे धरणीधरके शेष सहै नहिं भार ।
पिता पुत्रसे मुख नहीं बोले पतिको तज दे नार ॥ क्यों रूसे०॥१॥
शूरवीरका जोर न चाले दे जवाब हथियार ।
कायर संग जंग कर हारे जब कोपे करतार ॥ क्यों रूसे० ॥२॥
शब्द वेधिकी चोट लगे नारी तो जावे बार ।
बालक करे डरै नहिं निर्भय बनमें सिंह शिकार ॥ क्यों रूसे०॥३॥
पुरषारथ कर रीता रहता उलट चले व्यापार ।
जब दिन पलटे बुद्धिमानको कहते मूढ़ गँवार ॥ क्यों रूसे०॥४॥
एक दिन वो था राम जन्म लियो घर घर मंगलचार ।
आज अयोध्या फीकी लागे जीवन भयो असार ॥ क्यों रूसे०॥५॥

हाय हत्यारी नार केकई सो सो तुझे धिक्कार।
ले वरदान खिनायो वनको मेरो प्राण अधार॥ क्यों रूसे०॥६॥
आज मुझे कोई आन वधाई देवे नर या नार।
वनसे लौट आत हैं रघुवर दशरथ राजकुमार॥ क्यों रूसे०॥७॥
उसको अन धन वसन लुटाऊँ राजी करूँ अपार।
शिवदत्त कहै लङ्कापति मारण कारण यह अवतार॥ क्यों रूसे०॥८॥

२००—राग आसावरी

चेत नर अवसर वीत्यो जाय॥ टेक॥
काल्ह करे सो आजहि करले मत ना देर लगाय।
तीन वात रावणकी रह गई अन्त गयो पछिताय॥ चेत० ॥१॥
हिरण्याक्ष रावण क्या छोटे उनसे भी महाकाय।
मधुकैटभसे काल गाल में योद्धा गये समाय॥ चेत० ॥२॥
यो संसार ओसको मोती धूप लगे कुमिलाय।
जिन धरनी पर जन्म लियो है गयो काल सब खाय॥ चेत०॥३॥
मात तात सुत नारी कवीलो सब ही रोटी खाय।
दोय दिनाका राह पाहुना जासी प्रेम दिखाय॥ चेत० ॥४॥
वालापण हँस खेल गमायो माता करी सहाय।
जवान प्रेम नारी सङ्ग राच्यो गयो बुढ़ापो आय॥ चेत० ॥५॥
फूल्यो फूल वाग मन भायो भ्रमर वास लिपटाय।
लागी धूप भ्रमर उड़ चाल्यो कली गई कुमलाय॥ चेत० ॥६॥
आयी वरषा नदियां जोरै महल दिये सब ढाय।
सायर सोच करै क्या घरका दूजा लिया बनाय॥ चेत० ॥७॥

चढ़ चोवारे देखन लागी लगी नगरमें लाय ।
तेरा घर क्या बाकी रहसी मनमें रही सिहाय ॥ चेत० ॥८॥
दुनियां दोजख नर सौदागर उतरयो आन सराय ।
मीची आंख सुन्या कछु गाना दूजांतो बैहाय ॥ चेत० ॥९॥
जे नर चाहे भला जीवका नारायणने गाया ।
आवागमन मिटावे वोही कहता शिवदत्तराय ॥ चेत० ॥१०॥

२०१—राग जंगलो

तिरियासे बचके रहो नाथ या विष की बेल बनाई है ॥ टेक ॥
इस रावण बली खपायो, बन बन श्रीराम फिरायो ।
बालीका प्राण गमाय और शिशुपालकी सेन हराई है ॥१॥
इस ही ने कौरव मारा, इसहीसे राक्षस हारा ।
अमृत प्या दीन्यो देवनको वण रूप मोहनी आई है ॥२॥
नारदके दाग लगायो, शंकरने बहुत भगायो ।
ब्रह्मा की महिमा सुनी गुनी पुत्रीने खुद ब्याई है ॥३॥
सबका तप तिरिया छीना, अपने बसमें कर लीना ।
शिवदत्त विप्र कहे कुवा नरक का सांप्रत मित्र लुगाई है ॥४॥

२०२— राग पहाड़

मायामें लिपटायो क्यूं रे शिर पै काल ॥ टेक ॥
पाव पलक का नहीं भरोसा काल शीस पै छायो ।
सब दुनियांको चरै सामलो अबही समझोरे बन्दा होइ आयो ॥१॥
एक पग मेल दूसरो ठावै सोही रहै उठायो ।
टेक न सकै न धरनी ऊपर फेर क्यों परबन्ध उमर भरको लगायो ॥२॥

जनम्यो जाको मरनो पड़सी काल सकलको खायो ।
समझदार भी सोचे नाहीं जन्म धार करे अपनो परायो ॥३॥
क्या ले जासी सङ्ग बांधके के जायो जब ल्यायो ।
शिवदत्त कहै भरम धन संच्यो धर्मना;कियो सो प्रानी फेर पछितायो ॥४॥

२०३—राग कालिंगड़ा

अवतो मन धार सवूरीरे, शिर लिये काल तेरे छुरी है ॥ टेक ॥
राज करन्ता राजा उठ गये पहरा देत हजूरी ।
भला बुरा सब एक पंथ गये चली नहीं मगरूरी है ॥ अब तो० ॥१॥
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी उमर करदई पूरी ।
तीरथ व्रत परमारथकी तने वात लगी नित बुरी है । अब तो० ॥२॥
दया धर्मको नाम न लेवे सत संगत से दूरी ।
काम क्रोध मद मोह लोभ वस बुरी वासना फूरी है ॥ अब तो० ॥३॥
जीवै जो लग जगका नाता फिर काया वेसूरी ।
शिवदत्त कहे काल है शिरपर मरे मिलेगी धूरी है ॥ अब तो० ॥४॥

२०४—भजन

क्यों नहीं करते मन सन्तोष न माया सङ्गमें जानेकी ॥ टेक ॥
माया बहुत बहुत दिन घाले, ना कायाके सागे चाले ।
जीता भरम जालमें डाले, जाति मांझ निकाले सबसे ।
सांप्रत लेउ प्राणकी ॥१॥
इस मायाकी गति है तीन, या नहिं है किसके आधीन
सायर मनमें रखो यकीन, जो नर खावे पुन्य लगावे—
सुकृत शोभा दानकी ॥२॥

जो नर माया से गरवावे ना वो करसे खरचे खावे।
आखिर मरण समय पिस्तावे, फिर वो सर्प योनि खुद पावे।
महि पै आनकी ॥३॥
लोभी करै नहीं सन्तोष, जोड़े पेट आपको मोस।
दुनियां करती लूटा खोस, जद कद कंठ रोस ले जावे।
झोंकी पूरी ज्यान की ॥४॥
इस मायाने सबको मारा, राजा महाराजा पच हारा।
लड़ लड़ घर तबाह कर डारा, ख्यारे बड़ा बड़ा योग्यांने।
मूरती है अपमानकी ॥५॥
जो नर दान भोग नहीं करता राजा चोर अग्नि ले मरता।
फिर वो बैठा धोखा धरता, सांची शिवदत्त बिप्र उचारत—
शिक्षा देवे ज्ञान की ॥६॥

२०५—लावणी रंगत खड़ी

कायाका ना जीव संगाती जोव की सङ्गी ना काया।
मेरा मेरा करै जीवका क्या मेरा किसकी काया ॥ टेक ॥
यो संसार कर्म पथ चाले राह बटोही ज्यों सागे।
प्याऊ पै जल पीनेको फिर कितेक नर मिलगे आगे ॥
पीके पानी श्वांस लेय अपने अपने रस्ते लागे।
इनको भूल समझते घरका जब अज्ञान ममता जागे ॥
मात तात सुत भाई बन्धु जो अपना होतो क्यों त्यागे।
कहो आपकी चीज दीवाना कौन हाथ सेती दागे ॥
जाते सो अपने से मिलते मित्र बन्धु गल से लागे।

जीव किसीसे कहै न जाता चुपा चुपी छलसे भागे ।
फिर काया की हालत देखो रह जावे मूंडा बाया ॥ मेरा०॥१॥
जीव तुमारा है ही नहीं फिर क्या कायासे प्यार करा ।
हाड़ चाम टट्टी पिशाव कफ इस कायाके बीच भरा ॥
नौ द्वारोंका मकान जिसमें नोऊं तरफ कछु नहिं धरा ।
नाकमें बलगम कानमें कीटी आंखमें गीड़के होत गरा ॥
वदन सातवां कफका झरना अधो द्वार ना शुद्ध जरा ।
नौवां है पेशाव पम्प जो नर नारीका स्नेह खरा ॥
कहो इसीमें सार कहां अब जीव मरा यक देह मरा ।
ऐसा गंदा चारा जिसको काल विचारा चरा तो चरा ॥
झूठा नाम कालका लेते काल तुमारा क्या खाया ॥ मेरा० ॥२॥
चला जाय जब जीव देह से फिर कहते अब श्वास नहीं ।
जब लग पड़ा रहै घरमें तब लौं कोई लेवे ग्रास नहीं ॥
जबसे देखे श्वासा कमती तबही कहते आस नहीं ।
श्वास गये पीछे उसको फिर छूना चाहते दास नहीं ॥
जिन जिनका हो प्रेम प्यार वह भी फिर जाते पास नहीं ।
रोरोके कहते हे परमेश्वर तेरा विश्वास नहीं ॥
हाथों हाथ साथ मिलके सब जला देत फिर लाश कहीं ।
अपने कर से जला कहैं अब स्वप्नमें आभास नहीं ॥
तन धारी सब जीव जिनूंके काल शीश रहता छाया ॥मेरा०॥३॥
कर्मोंके अनुकूल जीव फिर फिर संसारीमें आवे ।
कर्मोंके अनुकूल विधाता गर्भवास दुख भुगतावे ॥

कर्मोंके अनुकूल मात सुत तात भ्रात नारी पावे ।
कर्मोंके धन जन सुख सम्पत दुख दालद लिखवा ल्यावे ॥
बिना कर्म कुछ काम न चाले कर्म लिखा बिलसे खावे ।
जिनका कर्म धर्म ईश्वर पर क्यों जगमें आवे जावे ॥
कर्म करो ईश्वरके अर्पण मरणा जीणा छुट जावे ।
मिटे बासना मोक्ष पदारथ फेर त्रास ना दिखलावे ॥
मिले शुद्ध चेतन ज्योतीमें जीव रहै ना फिर काया ॥ मेरा०॥४॥
अमर नाम अरु मोक्ष चहो तो राम राम का जाप करो ।
राम राम श्रीराम राम कहो अगर भूलसे पाप करो ॥
ध्रुव ज्यों माया ममता तजके राम राम का ध्यान करो ।
पांच वर्षका ध्रुव बनमें जा नारद से ले मंत्र खरो ॥
लगा समाधी साधी तपस्या नारायण कही वरम्वरो ।
खोल नयन मुश्किल से बोला नाथ मुक्ति सामिप्य करो ॥
काल जाल शिर पग बालक जा अब यह संसार तरो ।
रहो सदा वैकुण्ठ द्वार राम रूप आनन्द भरो ॥
सदा सुखी उसहीको कहते जीती जिन काया माया ॥मेरा०॥५
शुद्ध सनातन ब्रह्म अनादि अजर अमर प्रभु अबिनाशी ।
नित्यानन्द अज्ञेय रूप चेतन अखंड घट घट वासी ॥
सच्चिद् पूर्ण प्रकाश अटल निर्गुण तमो धराशी नासी ।
सकल सृष्टि संहरता करता त्रिभुवन धरता भिक्षासी ॥
निर्विकार ऊँकार धेय सता स्वरूप माया नासी ।
नेति नेति जाको श्रुति गावे पार न पावे कैलाशी ॥

अहं ब्रह्मा शिव रूप भयो ध्रुव जिसको काल कहा खासी ।
कहै विप्र शिवदत्त टले चौरासी जो जीते माया ॥ मेरा० ॥६॥

२०६—राग देश

प्रभु कछु न्याय नहीं घर तोरे ॥ टेक ॥
कलियुगमें कपटी भये राजा क्या काले क्या गोरे ।
विना घूंस नहीं करत सुनाई मुदई फिरते दोरे ॥ प्रभु० ॥१॥
भाई वन्धु सकल धन लोभी स्नेह दिखावत कोरे ।
विप्त पड़े जाके वतलावो तव वोलैंगे दोरे ॥ प्रभु० ॥२॥
कवियनको कङ्गाल वनाये फिर जीवन दिन थोरे ।
फिर उनके ग्राहक सब मर गये रहे सो मूरख कोरे ॥प्रभु० ॥३॥
सती नार सुख स्वप्न न देखे वेश्या द्रव्य वटोरे ।
नर उदारको किये दरिद्री धनके पात्र ठगोरे ॥ प्रभु० ॥४॥
वनी वनीके सव ही सङ्गी विगरी के नर थोरे ।
जो विगरीमें आ वतलावे आंख मींचके सो रे ॥ प्रभु० ॥५॥
आयो फर्क वुद्धि सवकी में क्या वुड्ढे क्या छोरे ।
दियो जवाव इन्द्र नहिं वर्षे धरा धान को चोरे ॥ प्रभु० ॥ ६॥
राजा प्रजा करत वेइमानी भये एक ही जोरे ।
अवतो नाथ महाकलि आयो क्यों नहीं टेर सुनो रे ॥ प्रभु० ॥७॥
सांचौ नाथ सरम नहिं आवे क्या कानोंसे वहरे ।
न्याय कहां शिवदत्त पिता तज पुत्र जात यम धोरे ॥ प्रभु० ॥८॥

२०७—राग देश

प्रभु तोय कैसी छलकी बान, हो छल चोरीके विद्वान ॥टेक॥
छल कर वामन रूप धारके वलिसे मांग्यो दान।
तीन पैंडको कौल कियो जिन नापे धरा असमान ॥प्रभु०॥१
बिष लगाय मारणको आई तुमको बालक जान।
आप छली छल चल्यो न वांको खोये पूतना प्रान ॥प्रभु०॥२
सुर्पणखा व्याहनकी भूखी आडी फिर गई आन।
लोभ दिखा छल बलसे काटे उसके नाक अरु कान ॥प्रभु०॥३
बका अघाको योंही मारे जो आये थे खान।
गोपीयन संग रासलीलाकी वंशीमें कर गान ॥प्रभु०॥४
चोर चोर प्रभु माखन खायो गायो बेद पुरान।
चोरे चीर तीर यमुनाके फेर सुनाई तान ॥प्रभु०॥५
छलकर रूप मोहनी धारयो असुर भये अज्ञान।
मदिरा प्याय खुशी कर दीने सुरकुल अमृत पान ॥प्रभु०॥६
छलकर मारयो जरासिन्धको बन भिक्षुक विद्वान।
दोनों अंग चीर दंतुवनके सैन दई सुरज्ञान ॥प्रभु०॥७
जो शिशुपाल चाल कर आयो कुण्डिनपुरमें व्यान।
शिवदत्त कहै दशा क्या कीनी जानत सकल जहान ॥प्रभु०॥८

२०८—भजन

तेरे निशदिन लागी लाम क्या घर संग जासी ॥ टेक ॥
घर ही घर सूझे नर मूरख निशदिन आठों याम ॥क्या घर०॥१॥
तीरथ ब्रत जप तप नहीं जाने भागणहीसे काम ॥क्या घर०॥२॥

दान पुन्यकी सार न सोचे नाहक छाने चाम ॥क्या घर०॥३॥
दया धर्म हरदम मति छोड़ो गावो सीताराम ॥क्या घर०॥४॥
काम क्रोध मद मोह तजो मन पावोगे आराम ॥क्या घर०॥५॥
एक दिन काल आन पकड़ेगो छुट जायेगो धन धाम ॥क्या घर०॥६॥
वार वार मानुष तन नाहीं ले जिया हरिको नाम ॥क्या घर०॥७॥
शिवदत्त कहै परमारथ करिये झूठा कोट कमाम ॥क्या घर०॥८॥

२०९—राग सारंग

ऊधो प्यारे पुत्र वही जो जाया ॥ टेक ॥
हम जान्यो यह कृष्ण हमारो नाहक मोह वढ़ाया।
कोकिल सुत कागाने पाल्यो सो अपने घर ध्याया ॥ऊधो०॥१॥
जिन जाम्यो तिनके घर जासी हमतो दूध पिलाया।
घर घर का नित रोज उरहना ऊठ संवारी आया ॥ऊधो०॥२॥
वृज गौहर सूनो कर चाल्यो देख नयन भर आया।
कोन सुने को न्याय करेगा नाथ तिहारी माया ॥ऊधो०॥३॥
फाटे आज कपटके कागज अन्तर ज्ञान समाया।
क्या निहाल शिवदत्त करेंगे पूत पराया जाया ॥ऊधो०॥४॥

२१०—राग जंगलो

मन मूरख माया वस मत हो यासे जन्म मरण संसार ॥टेक॥
जब गर्भवास में आयो, हरि सेती नेह लगायो।
कहि वाहर जाके भजन करूंगो सो भूल्यो क्यों वात विचार ॥१॥
माया वस मेरो मेरो, यहां वता कौन है तेरो।
जंगल कर देसी डेरो एक दिन तेरो है सो आसी लार ॥२॥

इस काम क्रोध को त्यागो, मद मोह लोभ तज भागो।
तृष्णा है वैरन बुरी बासना मिटै न छूटे कार विहार ॥३॥
जब करम बासना छूटे, संशय मिटे ग्रन्थी टूटे।
तबही संयोग वियोग मिटे यूं कहता शिवदत्त विप्र विचार ॥४॥

२११—लावणी राग जंगलो

करन बसत अंग सिंगार जानकी अंबा पूजन चाली ॥टेक॥
शिर सोहत जरकस चीर कोर मोतियनकी चोसर जाली।
नग जटित चन्द्रिका बोर मोरमिंडी की छवी निराली ॥
मुक्ताफल वेंदी मांग सजी कानोंमें कुण्डल वाली।
मृगमदको तिलक ललाट लटक रही लटी नाग सम काली॥
नाक नकवेसर सुन्दर सोहे, मुख देख चंद्र बिलखोहे।
सूरज भयो अस्त समस्त काम दे रह्यो ब्रह्मने गाली ॥१॥
दृग देख फिरे मृग बिपिन भटकते खञ्जन डाली डाली।
मछली जल डूबी कीर भीर भये सुन्दर नासा साली ॥
केशर कपोल कर लेप गुलावी ढक्यो रंग कछु लाली।
नारंगी लज्जित भई नर्म अति थी अभिमता खाली ॥
धनु भंग सुन्यो जब कानुं, मन वस्यो हंश कुल भानु।
बिरहागनि तप्त शरीर राम सुवरन मनु सिया कुठाली ॥२॥
भौंहन कमान सम सान चढ़ि मुख निरखत चकित मराली।
भ्रम भयो कमल दल जल डूबे निज उपमा हो गई काली ॥
कवियनकी कविता थकित काम जननी प्रत्यक्ष दिवाली।
समता को करत सुनै न वैन सुन कोकिल भ्रमरी काली ॥

कण्ठनकी क्या गोलाई, लज्जित भयो शंख जुलाई।
अब सुनो जग दे कान व्यान जिमि घरी विधाता ठाली ॥३॥
गल नवसर हार अमूल्य रत्न हीरनके सोभा साली।
मणि माणक पन्ना जड़े गलसरी तखती घुंघरूवाली ॥
भुज कंगन टड्डा बंध छंद पहुंची कर मेंदी लाली।
अंगुलिनमें छल्ला जूट छाप अरु चोली अंग गुलाली ॥
कटि केहरी देख लजावे, लहंगा मन भोत लुभावे।
सवही तनु गोर सुडोल कनक पुतली जिमि सांचे ढाली ॥४॥
नीलमको अधिक जड़ाव तागड़ी मोतियन सरी मिसाली।
द्दावन पै बूंटा बेल लगी रसना लड़ लुंबी ताली ॥
पग नूपुर कड़ियां ताँती पैंजनी बिछिया पहने चाली।
गजराज घूम गति देख सोच निज मस्तक मट्टी डाली ॥
संग जारही सत्तर सहेली इकसे इक रूप नवेली।
कंचनको लेकर थाल वाल सामग्री सकल जुटाली ॥ ५॥
केशर कपूर कदली अंगूर मेवेकी भर लई डाली।
चन्दन पूंगीफल पान पुष्प माला ले हाजिर माली ॥
रोली शुभ अक्षत धूप दीप नैवेद्य मिठाई घाली।
श्रीफल जल वस्त्र लवंग इलायची अतर गुलाल सजाली ॥
कछु द्रव्य दक्षिणा न्यारी, गावत मिल मंगल सारी।
चढ़ चली पालकी वीच विप्र शिवदत्त वीर रखवाली ॥६॥

२१२—राग देश

मन अब तो तूं सुमति धार, तेरे तिल भर नहीं विचार ॥टेक॥
लेन देन काया संग नाहीं सोची कर निरधार।
तेरे बस हो बन्धन भोगूं सो यह संगति सार ॥१॥
बहु दिन भये पाछिली ले लै अब तो जन्म सुधार।
काया कूर अमर नहीं मूरख क्या काया से प्यार ॥२॥
इधर उधर भाजत धन खोजत क्या धनकी दरकार।
बिन भक्षद दिन भर युंहीं डोलत क्या धन जासी लार ॥३॥
आंख दई हरि दरशन करले हो तनुको निस्तार।
दिन भर बृथा फाड़तो डोलै पर नारयांकी लार ॥४॥
कान दिया हरि गुण सुन प्यारे निश्चलताई धार।
तूं भागे मायाके खोजां कैसे जासी पार ॥५॥
जीभ दई नारायण गाले मिले पदारथ चार।
दिन उगेसे बृथा बकै ज्यों पागल झखै असार ॥६॥
हाथ दिया हरि पूजा करले दीननको उपकार।
पग परमेश्वर तीरथके हित फिर मन खुसी तिहार ॥७॥
तेरी सीमा कहीं न देखी याते मन लाचार।
बड़े बड़े ज्ञानी भटकतु है होत जन्म भर ख्वार ॥८॥
जे तूं बसमें आवे मेरे तेरी करूं शिकार।
बार बार तेरी खातिर मैं मरमत हूं संसार ॥९॥
नदिया गहरी नाव पुरानी हवा जोर संचार।
कर्णधार प्रतिकूल हमारे कैसे उतरूं पार ॥१०॥

मैं मालिक तू नौकर अन्धा पायो खिदमदगार।
ना जानूं कही चढ़ा गिरासी काम क्रोध के पहार ॥११॥
ना मैं गाय भैंस नरनारी चींटी गज अवतार।
जब अज्ञान मिटे शिवदत्तजु मैं खुदही सरकार ॥१२॥

२१३—राग जंगलो

बिन काम क्रोध मद मोह लोभके तजे भला क्या होना ॥ टेक ॥
जब जागत काम हराम अङ्ग में जप तप धर्म डबोना।
सब किये काम बेकाम करे यो काम दुष्ट बस को ना ॥
शिव की डिग गई समाधी, उन मेटी इसकी व्याधि।
दुनियां ने करै खुवार फक्त छाया तनु शेष रहोना ॥ बिन० ॥१॥
यह क्रोध रूप चण्डाल रहे सब सरे काज कूं खोना।
भीतरमें जब लग क्रोध जगे तो अन्धे आगे रोना ॥
यह क्रोध काम से खोटा, काया में बड़ा मोटा।
जब लग नहिं त्यागे क्रोध बनै मट्टी जो असली सोना ॥ बिन० ॥२॥
मद में नहीं सूझै भली बुरी सब काम करे अनहोना।
ज्यों विना पथ्य सब नष्ट दवाई गुन अवगुन क्या जोना ॥
यह मद सब ही का दादा, दे धर्म बीच कई बाधा।
कर देत कलंकी जगत बीच कोई मद सम और भयोना ॥ बिन०॥३॥
जब लग ना मिटता मोह उपाधी रहै जीव बरज्योना।
कब तो मन चाहे राय साब कबु के० सी० आई० होना ॥
जब मोह सकल मिट जावे, पाछी उपाधि लोटावे।
जमियन आकाश समान फर्क मोह होना और न होना ॥बिन०॥४॥

इस लोभ विगाड्यो काम राम इस लोभको अन्त कियोना।
जिन त्याग दियो मन लोभ आँखसे ऐसो नर देख्यो ना ॥
यह लोभ पाप कर डारै, माता ने बेटा मारै।
शिवदत्त कहै जिन लोभ कियो तो किसको बुरो भयो ना ॥ विन०॥५॥

२१४—भजन

दुनियां से देखो दो दिनका यह नाता ॥ टेक ॥
कौन किसी का मात तात है कौन किसीका भ्राता।
कर्म प्रवाह मिले सब आके मेरा मेरा गाता ॥ दुनियां०॥१॥
ज्यों ज्यों करज गैलका चूके अपने रस्ते जाता।
बेटा ने धन करै बहुत सो काल अचानक आता ॥ दुनियां०॥२॥
ममता मिटे न पैसो खरचे भर कर पेट न खाता।
काम क्रोध मद मोह लोभ बस नाहक जन्म गमाता ॥ दुनियां०॥३॥
बुरा भला सागै ले मूरख धन को छोड़ सिधाता।
शिवदत्त कहै आगे पासी चित्रगुप्त पै खाता ॥ दुनियां० ॥४॥

२१५—राग देश

करो काहे नारी से मन प्यार ॥ टेक ॥
नारी नरक रूप सांप्रत है जरा न इसमें सार।
माया मृग मारीच बन्यो ज्यों धोखा देन तैयार ॥ १ ॥
नारी रूप नेह की वेड़ी जकड़्यो सब संसार।
सौ मन तौख जञ्जीर गले बिच नारी को परिवार ॥ २ ॥
नारी प्रेम मोह की मदिरा रची एक करतार।
विरला वचे राम के पूरा नारद सनतकुमार ॥ ३ ॥

नारी नागिन डस्यो जगत सब याको जहर अपार ।
हरिजन दवा देत करमांसे लागे बेड़ा पार ॥ ४ ॥
जो विष पान सींक भर कीना तो दीना विष मार ।
बेर बेर विष खाते जावे सो नहीं होत सुधार ॥ ५ ॥
कनक कामिनी के रंग राचे से डूबे मंझधार ।
भोगी से ही फिरे भटकता अन भोगी से त्यार ॥ ६ ॥
ज्यों मधु लोभी फंसे कमल में भोगी भ्रमर लुभार ।
कोमल कमल तोर नहीं निकसे विकसे प्रात मंझार ॥ ७ ॥
होनहार गज काल रूप चर करत कमल संहार ।
नारी कमल भ्रमर नर मोंदू करत शिवदत्त विचार ॥ ८ ॥

२१६—भजन

तारो तारो जी रघुराई अब तो बेर हमारी आई ॥ टेक ॥
ध्रुव त्यारयो प्रहलाद जू तारयो तारयो हरिचन्द राई ।
अजामील सो पापी तारयो सायुज मुक्ति पाई ॥ तारो०॥१॥
रांका तारे वांका तारे तारे नीच कसाई ।
सुवा पढ़ावत गनिका तारी तारी मीरां बाई ॥तारो० ॥२॥
नामा और सुदामा तारे गजकी विपत छुड़ाई ।
सबरी करमा प्रेम न हेली गिणी नहीं सखराई ॥ तारो० ॥३॥
बली विभीषण बिरद जानके इनसे प्रीत निवाही ।
गौतम नारि सिला थी वांको पतिके लोक पठाई ॥तारो०॥४॥
धनू कबीर मोरध्वज तारे शिवि गीध खगराई ।
ग्वाल बाल गोपी जन सबहीं निज सलोकता पाई ॥ तारो० ॥५॥

सबजी साग बिदुर घर खाये सैन भक्त घर नाई ।
लेय रछानी करी हजामत टुक भर सरम न आई ॥ तारो०॥६॥
सुनी टेर पांचाल सुता की साढ़ी अनन्त वधाई ।
नरसी तण्यों नेह प्रभु पाल्यो भात भरयो ज्यों भाई ॥ तारो० ॥७॥
बड़े बड़े कारज तुम कीने कहां लग करूं वड़ाई ।
शिवदत्त शरण, लाज तुमहीं को मो नहीं आत सचाई ॥ तारो०॥८॥

२१७—राग खमावच

सकल दिन होत न एक समान ॥टेक॥
वालक थो जब खेलो खायो नारी बस भयो ज्वान ।
तृष्णा बढ़ी घटी तन शक्ति अबही कह भगवान ॥ सकल० ॥१॥
गर्भवासमें कोल किया था भूल गयो यहां आन ।
फिर जवाब क्या आगे देगा कर विचार अज्ञान ॥ सकल०॥२॥
काम क्रोध मद मोह लोभ तज परमारथ ने जान ।
छिन छिन भारी होत जात है अबलग तो आसान ॥ सकल०॥३॥
धन जन त्रियाजु धरा धाम सङ्ग चलै न राजा रान ।
फिर शिवदत्त यह बुरी कमाई कर मनमें हरषान ॥ सकल० ॥४॥

२१८—राग कालिंगड़ा

देखो एक दिन ऐसा आयेगा ॥टेक॥
मात तात सुत कुटुम्ब कबीलो तन छुयेसे नहायगा ।
जिनके नाम ने मरया फिरत है वै सब देख घिनायगा ॥ देखो० ॥१॥
धन दौलत धरणी पर रहेगा बुरा भला संग जायेगा ।
जिस तन पर इतना गरबावे सो भी अगन जरायगा ॥ देखो० ॥२॥

मूठी बांध जगतमें आयो खोलके अन्त सिधायगा।
करी कमाई लोग खाई आखिर यों पिसनायगा ॥ देखो० ॥३॥
काम क्रोध मद मोह लोभ तज भवसागर तर जायगा।
शिवदत्त सरण लीजिये प्रभु की वोही प्रीत निवाहेगा ॥ देखो० ॥४॥

२१९—राग खमावच

अवनी पर कई परिवरतन हो गये ॥ टेक ॥
वड़े वड़े भूप अपर वलि दानव लड़त लड़त रण सो गये।
मेरी मेरी कर कर उठ गये प्राण आपके खो गये ॥१॥
या नहिं चली किसीके संगमें जग नाटक ज्यूं जो गये।
विन भक्ति शिवदत्त वह मूरख अपना नाम डवो गये ॥२॥

२२०—राग वरवो

आज इन्द्र वृजकों जल वोरे, हे यदुवीर सरण हम तोरे ॥टेक॥
श्याम घटा हम देखी अटा चढ़, चमकत विजुरी दिशा चहुं ओरे॥१॥
वाजत पौन झुके धुर वागन, गाजत मेघ महा घनघोरे ॥२॥
घट सम छांट चलत सर नावत, शब्द सुनत जिया डरत न कोरे॥३॥
सुरपति कोप कियो व्रज ऊपर, प्रलय समान चढ्यो अति जोरे ॥४॥
निज अपमान मान गिरवर को, जान शक्र मन रोप भरयोरे ॥५॥
प्राणको दान करो शिवदत्त कूं, आज वचे कोई रामके डोरे ॥६॥

२२१—राग खमावच

भजहु मन राधेश्याम मुरार ॥टेक॥
जिनको नाम लियो गजनायक पलमें कियो उधार ॥१॥
जाको नाम द्रौपदी लीन्यो कीनो चीर अपार ॥२॥

भीसम हेतु सपथ तज लीनो भारतमें हथियार ॥३॥
शिवदत्त कहै आज मेरी बेर कहाँ पर करी अँवार ॥४॥

२२२—राग देश

परम हेतु हरि बिन कौन हमारे, वह निज भक्तन को प्यारे ॥टेक॥
सतयुग में प्रहलाद काज तनु अद्भुत नरहरि धारे।
याद करत खंबेमें प्रगटे प्रवल शत्रु संहारे ॥१॥
त्रेतामें द्विज अजामील नित वस्यो कञ्चनी द्वारे।
अन्त समय सुत नाम रटे ते खलके किये निस्तारे ॥२॥
द्वापरमें द्रौपदीके कुरु खल तनके बसन उतारे।
सुनत पुकार नार आरतकी कर दिये बसन अपारे ॥३॥
कलिमें आप भक्त नरसी के लेकर भात सिधारे।
शिवदत्त कहै नाथ मेरी बेर मत दड खैंचे जारे ॥४॥

२२३—राग देश

चपल मन भरमत रह दिन रैन, यो समुझाये समझैन ॥टेक॥
लाखों मुनि ज्ञानी पचहारे समुझ लगी न कठैन।
चाहै लाख वार समझाल्यो इसके सीख अडैन ॥ चपल० ॥१॥
पर नारी धन छिद्र देखने निस दिन ताके नैन।
पाप बनावन तुरन्त त्यार हो कमर बांध देवे सैन ॥ चपल० ॥२॥
माया रच ठग खाल जगतने वहुत भिड़ावे कैन।
झूठ वात खोटी सलाह में तुरन्त वांध देवे लैन ॥ चपल० ॥३॥
जे याकूं समुझावन लागे जब हो वैठे फैन।
पल में फिर वैसोको वैसो पलमें निरमल ऐन ॥ चपल० ॥४॥

राम नाम लेते शिर दुखे भाखे झूठा वैन ।
जल तरंग जिमि रहै अथिर हो खोदत है खल खैन ॥ चपल० ॥५॥
शिवदत्त कहे करूं क्या तव में विन अंकुशको गैन ।
अजामील गणिका की जगां मोय भरती कर लेन ॥ चपल० ॥६॥

२२४—भजन

सूती सूती निरिफकरी सारी रैन अवही तूं सुरता जाग तो सरी ॥टेक॥
पांच चोर चोरीको आया वरमें सांझ परी ।
सीलकी गांठ चोर ले भाग्यो तुझको न झ्यांस परी ॥ अव हीं० ॥१॥
एक चोर तेरे चढ्यो अटारी भलपन गांठ हरी ।
दूजे चोर आंखमें अञ्जन घालके निरन्धकरी ॥ अव हीं० ॥२॥
तीजै चोर पीला ममताकी बूंटी बुद्धि चरी ।
चौथे चोर आ मान प्रतिष्टा गँठरी वाँध धरी ॥ अव हीं० ॥३॥
सील को चोर कहै चारोंसे सुनियो वात खरी ।
मेरी चीज अमोलक कीमत जानत नर जोहरी ॥ अव हीं० ॥४॥
पहलो कहै भलाई ली सो लोक प्रलोक तरी ।
किसकी चीज अमोलक प्यारे सांच पै न क्रोध भरी ॥ अव हीं०॥५॥
दूजा वोलै अन्धा डोले निशदिन साठ घरी ।
मेरी जड़ी पड़ी आंखोंमें फिरतो ना खुले सुसरी ॥ अव हीं० ॥६॥
तीजो कहै विसर ज्यावे सूरत ज्यों मूरत मन्त्री ।
सुध बुध भूल धूलमें लोटे दुखमें कह हाय मरी ॥ अव हीं० ॥७॥
चोथो वोलै मान प्रतिष्ठा खो दइ सोहि मरी ।
कह शिवदत्त खोज चोरांने मारै क्यों नाहीं अरी ॥ अव हीं० ॥८॥

२२५—प्रभाती

मुसाफिर जल्दी हो असवार ॥टेक॥
तेरी टिकट कौन दरजे की सो तुम देख विचार।
फस्ट सेकेण्ड इन्टरमिडियट अरु थर्डक्लास है चार ॥ मुसाफिर०॥१॥
दोय बार घण्टी हो चुकी गार्ड करै जु पुकार।
झण्डी हरी दिखाई गाड़ी जानेको तैयार ॥ मुसाफिर० ॥२॥
संग आये सो पीछे लौटे घरके नातेदार।
देखी प्रीति रीति दुनियांकी घरमें झूरे नार ॥ मुसाफिर० ॥३॥
नेकी वदी रही धरती पर अरु धनका भण्डार।
करका दिया लिया संग जासी पाप पुन्यका भार ॥ मुसाफिर० ॥४॥
जो तूं खूनी धर्मराजको पड़सी मुगदर मार।
जो पूछे सो सांची कहनी भरे आम दरबार॥ मुसाफिर० ॥५॥
काम क्रोध मद मोह न जीता रीता रहा गँवार।
लोभ करचो अरु पाप कमायो अब क्यों चढ़े वुखार॥ मुसाफिर० ॥६॥
भुंडा भोग भुक्तना पड़सी यमराजाके द्वार।
लगी खबर सब चित्रगुप्तने आगे भुगते तार ॥ मुसाफिर० ॥७॥
पल पलका लेखा ले प्यारे खाता खते तैयार।
कह शिवदत्त चूकसी मांगत वहां न मिले उधार ॥ मुसाफिर० ॥८॥

२२६—प्रभाती

पपीहा झूठ वचन नहीं सार ॥ टेक ॥
मेरे तो पिव बिदेश गये हैं तूं क्यों करै पुकार।
कण्ठ में छेद झूठके बोले दण्ड दियो करतार ॥पपीहा०॥१॥

कौरव झूठ कपट कर जीते जिनको वंश निहार ।
एक वेर पांडव नृप वोले जाके गले तुषार ॥पपीहा०॥२॥
यदु बालक ले गये हास्य कर दुर्वासा ढिग नार ।
वोलै झूठ फेर फल पायो वची न यदुकुल छार ॥पपीहा०॥३॥
झूठ कपटसे वाली मारा किषकिन्धा मझार ।
ना कवु राम स्वप्न सुख भोग्यो वैर लियो शर मार ॥पपीहा०॥४॥
रावण भयो कपट सन्यासी त्रिभुवन जीतन हार ।
सीता हरी कपट फल पायो रह्यो न रोवन हार ॥पपीहा०॥५॥
झूठ वुरी कोई मत वोलो ना इससे भलिहार ।
गई जवान मोल ना तनका कवि शिवदत्त विचार ॥पपीहा०॥६॥

२२७—राग कल्याण

दुनियां में क्या कर चाला ॥ टेक ॥
दीन दुःखीकी सुनी न अरजी फक्त पेट निज पाला ।
दाना एक द्वार आयेने कवूं न करसे घाला ॥दुनियां०॥१॥
तेरी मेरी करी घनेरी दिन भर चुगली चाला ।
धर्मकी वात सुहाई नाहीं आड़े मनका ताला ॥दुनियां०॥२॥
कूर कपट कर पीसा जोड़ें झूठी फेरी माला ।
करनीका फल देखे प्यासो यम तोय जहर पीयाला॥दुनियां०॥३॥
लेकर चीज दई नहीं पाछी मुख भर दैसी वाला ।
कह शिवदत्त चेपसी खम्भा यमके दूत कराला ॥दुनियां०॥४॥

२२८—राग देश

किसीकी भावी टरै न टारी ॥ टेक ॥
मंगलमूर्ति अमंगल हर्ता जगमा रचने हारी।
पिता कालको काल फेर क्यों गणपति शीश कटारी ॥किसी०॥१॥
जो त्रिभुवनको कर्ता धर्ता जीत सक्यो न सुरारी।
अन्त हारकर बामन होके बन गये कपट भिखारी ॥किसी०॥२॥
जो हरि शङ्कर परम मित्र हैं क्यों भोगे लाचारी।
धन बिहीन सुत फिरे कंवारो मिली न उनको नारी ॥किसी०॥३॥
राज तिलक बनबास भयो जो लीला उल्टी सारी।
पिता मरण सिया हरण राम दुख शिवदत्त कौन विचारी ॥किसी॥४॥

२२९—लावणी रामचन्द्रकी

सीख सतगुरु पाइ हो योगी धुनी अखण्ड लगाई ॥ टेक ॥
ममता मुर्गी तृष्णा तित्तर पालै क्रोध कसाई।
मोह बटेर वासना बकरी घर पड़ोसमें ब्याई ॥सीष०॥१॥
कौवा काम कुटिल मद हस्ती लोभ लुहार घड़ाई।
निस दिन भंग भजनमें गेरे सत गुरु जुगत बताई ॥सीप०॥२॥
सतकी सेल सुमतकी बरछी ज्ञान कमान चढ़ाई।
काग बटेर मुरगली तित्तर बकरी मार भगाई ॥सीप०॥३॥
गज लुहार उठ चले चेतकर रह गयो खेत कसाई।
दिन सुलटो सबही घर बैठै राम भली विधि लाई ॥सीप०॥४॥
ज्ञानको दीपक ध्यान की बतियां, प्रेमको घिरत लगाई।
अटल ज्योति धुनी लगी सुरत अब आसन अधर जमाई ॥सीप०॥५॥

जगमग ज्योति शिखर धुर मन्दिर अनहद बाज सुनाई ।
अजपा जाप आरती उतरे अगम निगम जो गाई ॥सीप०॥६॥
सुरत सुहागिन बोले नाहीं जागे नहीं जगाई ।
अब तो उठ त्रिवेणी नहाकर वरको करो विदाई ॥सीप०॥७॥
इडा पिंगला और सुखुमणा उलट वही गम खाई ।
कह शिवदत्त दिगम्बर अब तो धूनी भसम रमाई ॥सीप०॥८॥

२३०—रागनी देश

प्रभु तुम निरधारां आधार ॥ टेक ॥
सतयुगमें हरिणाकुश भ्राता सुत मारण भयो त्यार ।
भक्त जान प्रभु ताहि बचायो धर नरसिंह अवतार ॥प्रभु०॥१॥
त्रेता बीच नीच दशकन्धर रावण असुर असार ।
भ्रात विभीषण जाहि सतायो राम कियो संहार ॥प्रभु०॥२॥
द्वापरमें द्रोपद की लज्जा हरण दुशासन त्यार ।
जाती देख लाज तुम राखी कर दियो चीर अपार ॥प्रभु०॥३॥
कलयुगमें नरसो हित आये बनकर साहूकार ।
भक्तवछल प्रभु भरयो माहिरो सांवल नग्र अञ्जार ॥प्रभु०॥४॥
मेरी बेर देर भई एती जिसको कहा विचार ।
शिवदत्त सरण चरण कमलनकी चाहै मार चाहै त्यार ॥प्रभु०॥५॥

२३१—भजन

ऐसा विरला हरिजन प्यारा, करै पर उपकारा ॥ टेक ॥
पर उपकार समझ मोरध्वज सुत शिर धर दिया आरा ।
तन दीनो शिवि भूप बाजनै परमारथ लख प्यारा ॥ करै० ॥१॥

तन मन दो प्रहलाद भक्त दिये अमर सुजस विस्तारा।
लगी लोय नारायण सेती ध्रुवकी कथा अपारा॥ करै० ॥२॥
तन मन धन तीनूं वलि दीना जद वामन तनु धारा।
जाय पताल वास कियो जिनके नारायण आधारा॥ करै० ॥३॥
नौ सौ नदी नव्रासी नाला अड़सठ तीरथ सारा।
च्यारूं धाम पुरस कर मूरख होत नहीं निस्तारा॥ करै० ॥४॥
सुने सांख्य उपनिषद गीता और पुराण अठारा।
मन मैला सो कबुयन तिरसी मिटे न यमका द्वारा॥ करै० ॥५॥
सतसंगत विन भरमत मूरख सकल शास्त्र है मारा।
कह शिवदत्त रहै नित रीता ज्यों माली का बारा॥ करै० ॥६॥

२३२—राग खमावच

करो मन ऐसो सुकृत काम, यामें कौड़ी खरच न दाम॥ टेक॥
अपनी जीभ आप ही को मुख अपने ही बस काम।
फिरत घिरत सोवत जागत नित लेत रहो हरि नाम॥करो०॥१॥
अपना नयन दृष्टि दई ईश्वर चाहे लाख हो लाम।
पल भर लागत नाथ छबि निरखे तनिक मिले विश्राम॥करो०॥२॥
अपना श्रवण आप साम्रथ हो चरण दिये तोय राम।
हरिजन हरिकीर्तन हरि चरचा करत तहां पग थाम॥करो०॥३॥
बार बार मानुष तन नाहिं मत खो समय निकाम।
शिवदत्त कहै हंस तूं जायगो रह जायंगे धन धाम॥करो०॥४॥

२३३—राग आसावरी

अमोलक हीरा जन्म गमाया, ना हरिसे नेह लगाया ॥ टेक ॥
बालपनो हंस खेल गमायो जोवन तिय मन भाया ।
आत बुढ़ापो जात आयु चलि ज्यों तरुवर की छाया ॥अमो०॥१॥
दिन दिन तृष्णा बढ़े घणेरी जिमि उफान पय आया ।
जासी जीव रहे ना अम्मर तन धारीकी काया ॥अमो०॥२॥
देखा गैल देख रह्यो अबही यही पुराणमें गाया ।
काल कवल सबको करता है पुरत गैलका खाया ॥अमो०॥३॥
करना है सो अबहि करो फिर कल पर रखो न दाया ।
कह शिवदत्त दो डर हा सन्मुख हो रही आया आया ॥अमो०॥४॥

२३४—राग आसावरी

सरस अति राम रसायन नीकी ॥ टेक
या सम ओर रसायन नाहीं सबही लागत फीकी ।
जाते शिला तरो शत योजन बनी पाज उदधी की ॥सरस०॥१॥
राम रकार मकार वरण दो सुधा रूप रस पीकी ।
गौतम नारि सिधारी मोक्ष पाजो अपराधो पति की ॥सरस०॥२॥
जिन जिन गाया तज मोह माया ममता त्याग दुनीकी ।
आवागमन मिट्या फिर उनका मोक्ष हो गई जीको ॥सरस०॥३॥
जे भवसागर तिरना चाहे रटना करो उसी की ।
कहे शिवदत्त दयानिधि तूठे गरज रखो न किसीको ॥सरस०॥४॥

२३५—प्रभाती

प्रभु सुमरणकी बेरा, सुन जिया मेरा ॥ टेक ॥
चुग चुग कंकरी महल बनाया जिया कहै घर मेरा ।
ना घर मेरा ना घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा ॥सुन०॥१॥
जल गया तेल चस रही बत्तियां दीपक भया अंधेरा ।
तेल बिना यह खेल बने ना झूठा तेरा मेरा ॥सुन०॥२॥
पांच पचीस इकठ्ठा होके करते मेरा मेरा ।
अन्त आपका कोइ न दीखे जंगल होसी डेरा ॥सुन०॥३॥
तिरिया बैठ तीन दिन झूरे फिर घर करे भलेरा ।
लख चौरासी फिरै भटकता ज्यूं कुत्ता टुकटेरा ॥सुन०॥४॥
यो संसार मोहको सागर सत गुरु हंदा बेरा ।
भूल भूलैया भँवर पार हो आवागमन न मेरा ॥सुन०॥५॥
जिन खोज्या तिन अलबत पाया जागृत ज्ञान उजेरा ।
सोया सोही खोया शिवदत्त दिल अपना नहीं हेरा ॥सुन०॥६॥

२३६—भजन

मिजाजी कैसे मायाके मिजाज भरयो ॥ टेक ॥
या माया तेरे संग न जावे जिस पर फिरत मरयो ।
कनक कामिनी देख लुभावे झूठो मोह करयो ॥मिजाजी०॥१॥
लख चौरासीसे उबरयो चाहे तो देखत कहा खरयो ।
जो तोसै बन सकै सोही कर ओसर जात टरयो ॥मिजाजी०॥२॥
मन कै पाज नहीं मन चंचल मन बस सोही तरयो ।
लाख क्रोड़ पर भरै न ममता आखिर रहत धन्यो ॥मिजाजी०॥३॥

कनक कामिनी काया माया वस भव कूप पर्‌यो ।
शिवदत्त सब जग देखत देखत जात है काल चर्‌यो ॥मिजाजी०॥४॥

२३७—राग असावरी

करत काहे मूरख मेरो मेरो, यहां कोई नहीं संगी तेरो ॥ टेक ॥
मात तात सुत नारी कुटुम्बको वन्यो मोह वस चेरो ।
जीवे जब लग मेरो मेरो अन्त न आसी नेरो ॥ करत० ॥१॥
इस नगरीके दस दरवाजा पांच चोरको घेरो ।
कइ वनजारा लूट गये दिनमें ना कोइ न्याय नमेरो ॥ करत०॥२॥
जाग मुसाफिर कैसे सोता चोकस रखो डेरो ॥
पांचू चोर दगो दे लूटे गफलत देख अन्धेरो । करत०॥३॥
काया कोट बना माटीका भीतर मोत अन्धेरो ।
यो संसार ठगोंकी नगरी शिवदत्त कोई न तेरो ॥ करत० ॥४॥

२३८—राग विहाग

पल पल अवसर बीत्यो जात, नाहक समय अमूल्य गमात ॥ टेक ॥
यो संसार मोहकी धारा कर्म प्रवाह वहात ।
लख चोरासी लहर चढ़ी जिन उन बीच गोता खात ॥ पल० ॥१॥
सतकी नाव धर्मका वेड़ा डांडा सतगुरु हाथ ।
काम क्रोध मद मोह भँवर से निस दिन रहत वचात ॥ पल०॥२॥
मात तात सुन नारी कवीलो महा मगर को घात ।
अपनी तरफ फांस रहै मगमें तृष्णा तन्तु थिकात ॥ पल० ॥३॥

२३९—कजली

प्रभु मन करो पवित्र हमारा उतरैं भवसागरके पार ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद मोह न ब्यापै सत्य सुशील विचार।
मिलके रहैं देशके भ्राता हो जातीय अनन्त पियार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
निज नारीको बर्ज सकल भारत भरकी यह नार।
देखैं इन नैनूं से दृष्टि माता सुता भैन जिमि डार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
औरुं को धनवान देख हो मनमें हर्ष अपार।
हमरे देशके दीन अनाथ देख मन रहो दया संचार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
तृष्णा झूठ कपट आलस को हे प्रभु दूर विडार।
देवो विद्या धन संतोष वीरता उद्यम वर्ण सुधार ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥
दया धर्म सत्य सील बढ़ावो प्रेम भक्ति परिचार।
हो सब भारतकी महिलागण उत्तम शिक्षामें इक सार ॥ प्रभु० ॥५॥
फिर हम पूर्ण मनोरथ होवैं इसमें फर्क न सार।
जबही मन शुद्धिसे बेड़ा शिवदत्त पार होय संसार ॥ प्रभु० ॥६॥

२४०—राग देश

करो मन हरि चरणोंमें प्रीत ॥ टेक ॥
बालापन हँस खेल गमायो गई जवानी बीत।
आयो बुढ़ापो मौत शीश पर फिर क्यों सोत नचीत ॥करो०॥१
कल्ह करै सो आजही करले क्या तनुकी परतीत।
कब लग मूढ़ मनोरथ बांधे आयुष होत व्यतीत ॥ करो० ॥२॥
राम नामकी ढाल बनाले दया धर्मको मीत।
काल जालका क्या डर तोकूं होसी सत्यकी जीत ॥ करो०॥३॥

हरिको भजे सो हरिका प्यारा, क्या दुश्मन क्या मीत ।
हिरण्याक्ष रावण भी तर गये उनकी याही रीत ॥ करो० ॥ ४ ॥
समुझ भूल चाहेजु अग्नि पर राखो पैर नचीत ।
शिवदत्त सबका दुःख करेगा कर कर देख खचीत ॥ करो०॥५॥

२४१—गीतिका

भज श्यामसुन्दर मदन मोहन राधिका गोविन्द को ॥ टेक॥
जाके भजे ध्रुवजी तरे संसार माया फंद को ।
जाको भजे गोपी तरी भूली सकल दुख द्वन्द को ॥ भज० ॥१॥
जाको भजे गनिका तरी पायो परम आनन्दको ।
जाको भज्यो सुत रुप कश्यप पागये जदुनन्दको ॥ भज० ॥२॥
जाको भजे गजराज दुखमें अमित सुखमय चन्दको ।
पाई परम गति जो न मिलती देव अरु मुनी वृन्दको । भज०॥३॥
जाको भजे मीरां तरी गिरधरण वाल मुकुन्दको ।
कर जोर कवि शिवदत्त रट श्रीकृष्ण आनन्द कंदको ॥ भज०॥४॥

शिवदत्तराय खण्डेलवाल

२४२—लावणी

अहो दाता या के कीनी मैं कहूं बिलखायके ।
जोर ना कछु ओर मेरो रही अब पिसतायके ॥
पारधीने पाप रचके जाल डारयो लायके ।
सिंहनीकूं ल्याय फँसाई सहाय कर प्रभु आयके ॥
ऊकी सिंहनी फाल, डार दियो जाल, पारधी हतियारे ।

कुण सुणै स्वाल, भई बेहवाल, गोपाल बिना कुण दुख टारे ॥ टेक ॥
उपाघात कमजात दुष्ट जन ऐसा मता उपाया है।
किया कपट शैतान दुष्ट शकुनीने काम कमाया है॥
मिलकर सब चण्डाल जाल चोसरका ल्याय बिछाया है।
पांच सिंह अरु एक सिंहनी जिनकूं पकड़ फंसाया है॥
जीत लिया धर्मराज कपट रच किया आज मन चाया है।
भूल गया ओसान सिंह या देख कपटकी माया है॥
फिर सिंहनीने हेर डारयो जेर मानी हारता।
करत है कुकर्म पापी धर्म नांय विचारता॥
भूपपनकी रीत तज अनरीत हिरदै धारता।
बोलके कटु बैन नाहक दुष्ट मोय ललकारता॥
ललकारै दुष्ट कसाई। यो भरी सभाके बीच करै अन्याई॥
आज दुर्योधन लेत बुराई। इब करो म्हारी सहाय आय यदुराई॥
सतमत छाड़ लेत पत भूपत, इसी कुमत हिरदै धारै॥ कुण० ॥१॥
नैन हीन सुन रह्यो बैन चुप भयो मती बिसराई है।
शकुनी कर्ण खुशी हो बैठे जिन या मती उपाई है॥
दुर्योधन दुःशासन पापी इनके हद सुखदाई है।
द्रोण धारके मौन बैठ रहे धर्म बात नहिं पाई है॥
भीषम पिता महाराज आज भूमिमें सुरत लगाई है।
विदुर बड़े गुणवान ज्ञान ना चल्यो जिनोंको राई है॥
सारी सभा मुख मूंद बैठी सब बड़े रणधीर हो।
ज्यूं चितैरा भींत ऊपर खींचदी तसवीर हो॥

ध्यावती गुण गावती झट आयके हर पीर हो।
आज ये पापिष्ट मेरो दुष्ट तारै चीर हो॥
ये चीर उतारै आज धीर ना धरत। वेपीर सभाके वीच उघारी करता॥
ये अपजससै ना डरता। नहिं मिटै त्रास अव पास नहीं दुःखहरता॥
होय रही लाचार अहो करतार कहा लिखदी म्हारे॥ कुग० ॥२॥
भीसम द्रोण हो गये नाके जवाव दे बैठ्या नटके।
अब सहायक ना कोय जोय दुख अवलाको प्रगटो झटके॥
दूर नहीं है कृष्णचन्द्र सब कहै बीच रहैं घट घटके।
कुंज विहारी गिरधारी कूं मैं हारी हूं रट रटके॥
धर्मपुत्र बंध गयो धर्ममें वात घणी दिलमें खटके।
भीमसेन कर क्रोध गदाने ठाय ठाय भूमी पटके॥
पटकी गदाने भीम भूमी क्रोध हिरदै धारजी।
अभिमान कर वलवान अर्जुन वाण दीना डारजी॥
नकुलका ना जोर चलता हो रह्या लाचार जी।
सहदेव मोकूं देख अपना तज दिया हथियारजी॥
हथिहार डार पिसतावै। नाचलै जोर मेरी ओर देख सकुचावै॥
दुष्ट दुर्योधन जंघ दिखावै। पटरानी वन यूंकहै नहीं शरमावै॥
रटूं आपका नाम वाम मैं श्याम काम क्यूं ना सारे॥ कुग० ॥३॥
ओ गिरधारी पीर हमारी तो विन कुण पिछाणेगो।
आज तलक मोय कोइयन जानी इब सारौ जग जाणेगो॥
रह्यो गाज यो आज, लाज खोसी यो दया न आनेगो!
नहीं पीठ पर कोय तोय विन ढीठ ढीठपन ठानेगो॥

बोलत है बज बज हरगिज यो समझायो ना मानेगो।
दैत्य भेष पापी नरेश मोये केश पकड़ कर तानेगो॥
तान सीना मानसी इब क्या करूं जलता हिया।
और ना कोई मेरा शरण प्रभु तेरा लिया॥
सब गुरु होय दयाल मेट दो जाल बाल शरणे थारै॥ कुण० ॥४॥

२४३—राग बिहाग

आज दुःशासन चीर उतारै, यो दुष्ट दया नहिं धारै॥ टेक॥
यो दुःशासन दुष्ट अधर्मी, मो अनाथ कूं ख्यारै।
बोल रह्यो कटु बैन चैन ना बचन अगन तन जारै॥ १॥
दुख दीन्यो करतार मेरे कूं कर्म लेख अनुसारै।
कर ल्यो जतन करोड़ मोड़ मुख करम लिखा कुण टारै॥२॥
मैं पड़देकी रहनेवाली दासी दास हमारै।
कहा काम मेरो राजसभामें दिन किसके नहीं सहारै॥ ३॥
आज सभाके बीच धर्म बानी ना कोय उचारै।
बोल रह्यो एक बिकर्ण साँची दुर्योधन हटकारै॥ ४॥
भीसम द्रोण जबाब दे बैठ्या, कछुयन बात विचारै।
कहै बाल करूं याद कृष्ण फिर वोही विघ्न निवारै॥५॥

२४४—लावणी

अब मुरारी भक्त हितकारी प्रभु तुम आवना।
आइये महराज ना तोहि चाहिये छिटकावना॥
ओसर बन्यो है आज ऐसो बिलंब नेक न ल्यावना।
ओसरके चूकै ना मिलै मोसर हो फिर पिसतावना॥

इब रही टेर इस बेर नाथ तुम आवो।
मोय दुष्ट घेर लई नेक देर मत ल्यावो ॥
महाराज अर्ज सुण वेग सिधारो जी।
मेरो जियो घरना धीर लियो मैं सरणो थारोजी ॥ टेक ॥
गजराज भक्तके काज देरना कीनी,
महाराज अवाज सुन तुरत सिधायेजी।
चढ़ खगराज काज गजके थे छिनमें आये जी ॥
ना सक्या पूंचने गरुणतणी असवारो,
महाराज गरुड़ मगमें छिटकायेजी।
दौड़ पियादा भाज भक्त गजराज बंचाये जी॥
सहाय कीनी जाय गजकी सर्व विप्ता हर लई।
ग्राह मार उवार गज कूं मुक्ति पदवी तुम दई ॥
लाज तजके भाज प्यादे विप्त हद तुमने सही।
संसारमें करतार तुमरी कीरति श्रुति गा रही ॥
गावत तव जस वेद पुराना। भक्तन हितकारी भगवाना ॥
भक्त काज ना विलंब लगाना। गजकी ज्यूं प्रभु वेगा आना ॥
एक अजामील पापीने नाम चितारया।
जब सहाय करण कूं तुमरा दूत पधारया ॥
वाने एक नामकी खातिर आप उवारया ॥
महाराज फेर तुम क्यों न पधारोजी ॥ मेरो जियो० ॥ १ ॥
इब सत्युग की मैं कहूं आप सुण लोज्यो,
महाराज असुर एक हिरणाकुश जाये।

जीत न किसके हाथ नाथपा ऐसा बर पाये ॥
बर पाह घमंड कर द्विज भक्तन दुख दीना,
महाराज असुर मन ऐसा गरबाये ।
उसके घर प्रह्लाद भक्त अवतार धार आये ॥
प्रहलाद जाय कुम्हार घर मंजारी सुत देख्या जिया ।
बच्चा कूं जीता निरख प्रण सच्चा उन मनमें किया ॥
वो पण छुटाने कूं असुर प्रहलाद कूं अति दुख दिया ।
सहाय करने भक्त की तुम जन्म पत्थर से लिया ॥
खम्भ चीर प्रभु आप पधारा । तुरत रूप नरहरि तनु धारा ॥
हिरणाकुश नख उदर विडारा । पलमें भक्त प्रहलाद उबारा ॥
मोये हिरणाकुश ज्यूं दुष्ट दुशासन घेरी ।
प्रहलाद भक्त ज्यूं बेर वेर मैं टेरी ॥
उण काज आप म्हाराज करीना देरी ।
अब सोय रहे कहां नाथ आज वेर मेरी ॥
महाराज जरा तो पलक उघारो जी ॥ मेरो जियो० ॥२॥
द्वापर युग धर अवतार कृष्ण रहे बृजमें,
महाराज मिटाई सुरपतिकी पूजा ।
गिरि गोवर्धन इष्टदेव जिन पुजा दिया दूजा ॥
सुन वात इन्द्र उणस्यांत क्रोध कियो भारी,
महाराज गर्व में कछु नहिं सूझा ।
बृज मण्डल पैमाल करण सुरपाल वहुत झूझा ॥
कोप हो सुरराज कीनी गाज जल वहु डारकै ।

बचाना हो वेग वृज कही कृष्ण कृष्ण पुकारके ॥
दीन वृजकी अरज सुण नख पर गिरि लियो धारके।
जानके अवतार इन्दर शरण आयो हारके ॥
गयो इन्दर करके लाचारी। मैं वृज ज्यूं हो दीन पुकारी ॥
शरण शरण तव शरण मुरारी। करो सहाय हरो विघ्न हमारी ॥
इब लाज आपके हाथ नाथ कद आसी।
फिर जै आसी तो नग्न देख पिसतासी ॥
मैं बहुत भई लाचार प्रगट वृजवासी।
मैं जन्म जन्म की नाथ आपकी दासी ॥
महाराज आनके विप्त निवारो जी ॥ मेरो जियो०॥३॥
इब पड़ी सिंधु में नाव नाथ मेरी अटकी,
महाराज आन कद पार लंघावेगा।
नहीं आया तो नाथ हाथ मलके पिस्तावेगा ॥
मेरा तो इसमें कछु नहीं घटता है,
महाराज तुंही तो लोग हंसावेगा।
जगत बिच फिर भक्त कीरति कैसे गावेगा ॥
रुकमणीके भवनमें चौसर रची महमन्त।
दीन द्रौपदीकी सुनी करुणा तबी भगवन्त ॥
डार पासा आप झट मुख सैं कही अनन्त।
रुकमणी पूछन लगी तब भेद थे क्या कन्थ ॥
अनन्त नाम प्रभु वेग उचारा। तुरत अनन्त वस्तर कर डारा ॥
खैंचत दुष्ट दुःशासन हारा। काम श्याम द्रौपदीका सारा ॥

अब सरा मनोरथ काज भया चित्त चाया ।
करतार महर कर पलमें चीर बधाया ॥
करो कृपा गुरु महाराज शरण थारी आया ।
सब कवियन कूं शिर नाय बाल कथ गाया ॥
महाराज भूल अरु चूक सुधारो जी ॥ मेरो जियो० ॥४॥

२४५—रागनी परज

धन धन कमलापति राख्यो सत आके द्रौपदी नारको ॥ टेक ॥
राख्यो सत द्रौपदीको आके धन हो कुंज विहारी ।
दुष्ट सिंधु सैं जहाज लाजकी डूबत आज उबारी ॥
अब मोये निश्चै भई आप हो भक्तनके हितकारी ।
भक्तनके हित कारणे, सहाय करी बलवीर ॥
दस सहस्र गज बल घट्यो, घट्यो न दस गज चीर ॥
दुष्ट रह गयो पिस्ताके ॥ राख्यो० ॥ १ ॥
पाप बधै परताप कलूके चढ़ै धरा पर भार ॥
विप्र रूप हो धर्म गऊ बन पृथ्वी भरै पुकार ॥
सुनके अरज धर्म पृथ्वीकी धारत हरि अवतार ॥
द्विज भक्तनके कारणे, प्रगटे दीन दयाल ।
जो कोई होय धर्म खंडनकूं, आप हतो तत्काल ॥
भक्त रहै हरिगुण गाके ॥ राख्यो० ॥ २ ॥
सतयुगमें हिरणाकुश अरु हिरणाक्ष भया बलवन्त ।
ले पृथ्वी पाताल गया हरिणाक्ष जबी तुरन्त ॥
वराह रूप अवतार धार हत डार्यो तुरत भगवन्त ।

हिरणाकुश सुत कूं कही, तजो नाम गोपाल ।
खंभ चीर प्रह्लाद भक्तकी करी आन प्रतिपाल ॥
असुर कूं मार हटाके ॥ राख्यो० ॥ ३ ॥

कुम्भकरण रावण त्रेतामें बली भया दो बंका ।
यम कुबेर सुरपाल कालवी मान्या जिनका शंका ॥
सब पृथ्वीकूं जीत, लंक बिच, कीन्यो राज निशंका ।
द्विज भक्तनकूं दुख दिया, हरी सिया शैतान ।
भक्त हेत रण खेत कन्यो तुम भक्त बचाया आन ॥
असुर दोऊँ तुरत खपाके ॥ राख्यो० ॥ ४ ॥

एक समै पक्षिनके पापी घेरो दियो लगाय ।
नीचे खड़े पारधी ऊपर बाज झिलोरा खाय ॥
देख काल दोउ तरफ हरीने याद किया चित लाय ।
नाग रूप हो दुष्टके, लड़े पाँवके आय ।
छुट्यो बाण जा लग्यो बाजके पड़्यो धरण अकुलाय ॥
उड़े पंछी हरखाके ॥ राख्यो० ॥ ५ ॥

श्रीकृष्ण आनन्द कंदने कर दीना चित्त चाया ।
पाय राज हरखाय आज म्हें इन्द्रप्रस्थकूं धाया ॥
पांचूं नाथ साथ मोये लेके धाम विदुरके आया ।
धाम विदुरके मानसे रह्या रातकी रात ।
देख स्नेह विदुर को म्हारे हरख न हिये समात ॥
कहत गुण रसना थाके ॥ राख्यो० ॥ ६ ॥

सुन शायरी खेल समापती करूं अरज इक मेरी ।

भूल चूक हो माफ शरण मैं गुणी जनोंकी हेरी ॥
गिरा गणेश विष्णु शिव हनुमत करियो कृपा घणेरी ।
कृपा करो मनस्या भरो बुद्धि करो विशाल ।
रामानुजगढ़ नगर निवासी गावे कथ द्विज बाल ॥
गुरुकूं शीश निवाके ॥ राख्यो० ॥ ७ ॥

बालूराम शर्मा

२४६—राग चलत बरवा

शिव सुत रिधि सिधि बुधि निधि दानी ॥ टेक ॥
लाडू तैं गणपति विजया तैं हर तपतैं विधि ज्ञानी ॥ १ ॥
कन्दमूल तैं रघुबर राजी कृष्ण पिये दधि छानी ॥ २ ॥
गोबिन्ददासहिं देहि गजानन रामभक्ति सिधि खानी॥ ३ ॥

२४७—राग प्रभाती

जय श्रीमन्नारायण स्वामी सब उर अन्तरयामी ॥ टेक ॥
आदि रूप बाराह मनाऊँ पुनि सनकादि अकामी ।
यज्ञरूप जय नरनारायण कर्दम सुवन प्रणामी ॥ १ ॥
दत्त दिगम्बर रिषभदेव जय ध्रुव वरद ध्रुव विश्रामी ।
पृथु हयग्रीव कूर्मवपु सुन्दर नौमि मीन जलगामी ॥ २ ॥
नरहरि वामन हरि मराल तनु मन्वन्तर गुणग्रामी ।
धन्वन्तरी अखिल रोगारी परशुराम संग्रामी ॥ ३ ॥
वेद व्यास श्रीरामचन्द्रजू दलन दनुज खल कामी ।
कृष्णचन्द्र जय बौद्ध कलक्की गोविन्ददास नमामी ॥ ४ ॥

२४८—राग प्रभाती

जय जय जय गंगा म्हारानी, पर वैकुण्ठ निशानी ॥ टेक ॥
हरिपद पद्म परम पावन तजि पशुपति जटन्ह समानी ।
भये प्रसन्न मन मनसिज रिपु अति अभिमत फलप्रद जानी ॥१॥
शेष सुरेश गणेश धनेश्वर अवर जलेश्वर मानी ।
महिमा वेद पुराण मुनीशनि श्रीमुख राम बखानी ॥२॥
सगर दिलीप भगीरथ नृपकी तव हित आयु बितानी ।
ता तोरे पयकों तजि पामर पीवहिं कूप कूपानी ॥३॥
दरश परश मज्जन किय पाना करत मनोमल हानी ।
गोविन्ददास लही न सुगति केहि सेवत मा तोहि प्रानी ॥४॥

२४९—भजन

गंगा तुम नैं अधिक प्रीति करि कौन सनेही ने सुख पायौ ॥ टेक ॥
नृप शान्तनु प्रिय राखि प्राणसम, ताकौं तूं अधबिच छिटकायौ ।
रोड़ रोड़ तनु क्षीण भयौ है, लखि प्रभाव पाछै पछितायौ ॥१॥
करि बहु यतन कमण्डलु राखी ता ब्रह्माकौं तुम बौरायो ।
तेहि परिहरि हर जटा समाई, जटा शंकरी नाम धरायौ ॥२॥
शिर सिंहासन पर धरि पूजी ताके घर तुम बैल बंधायौ ।
एक बड़ी तुम दीन्ह बड़ाई देवनमें महादेव कहायौ ॥३॥
अब तुम जान कहहु निज धामहिं तजि मोकौं बिनु पार लगायौ ।
संग लिये बिनु जान न दौंगो गोविन्ददास शरण तव आयौ ॥४॥

२५०—राग प्रभाती

जय यमुने यदुवर पटरानी ॥ टेक ॥

तरणि सुता भवसागर तरणी, पाप ताप हरणी सुखखानी ॥१॥

चहुं युग तीन काल येकै रस, बहति रहति नित पावन पानी ॥२॥

विनु तव कृपा कृपा नहिं करहीं, कीरति कुमरि श्याम सुखदानी ॥३॥

पुरवहु आस दास गोविन्दकी, मिलहिं बेग सारंग धनुपानी ॥४॥

२५१—राग कालंगड़ा

सरयू तट बिहरत रामललौ ॥ टेक ॥

विप्र चरण लक्ष्मीकी रेखा लसत ललित उरमें कठलौ।

संग भरत रिपुदमन लख सखि चहुं कुमरनिकौ जोट भलौ ॥१॥

नखशिख लौं नीके छवि निरखन तनक छिनक इन निकट चलौ।

जाइ समीप देख प्रभु शोभा मग्न भई लहि नयन फलौ ॥२॥

यदपि सजनि चहुं बन्धु मनोहर पै भरताग्रज रूप डलौ।

जाके यह प्राणन सम आली, सो मानुष मानस हंसलौ ॥३॥

सुनहु बहिन जाहि न यह भावत, सो नर नर नहिं है बुगलौ।

रूपशील शोभा रघुवरके शारद कोटि कलपशत लौं ॥४॥

कहि न सकत शत शेष कहै किमि गोविन्ददास महा पगलौ ॥५॥

२५२—भजन

दशरथ नन्दन जनकलली कर होन लगीं शुभ भांवरियाँ ॥ टेक ॥

चतुरानन श्रुति मन्त्र उचारत मंगल गावत भामिनियाँ।

नगर व्योम जय जय धुनि बोलत सुरमुनि ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ ॥१॥

दुलह निकट दुलहिनि शोभित जनु श्याम घटा ढिग दामिनियाँ ।
ब्रह्मानन्द मगन सब भूले सुधि नहिं वासर यामिनियाँ ॥२॥
दुन्दुभि बजत सुमन सुर वर्षत, निरतति तिय गजगामिनियाँ ।
गोविन्ददास ब्रह्म-अरुमाया राम स्वामि सिय स्वामिनियाँ ॥३॥

२५३—राग कालंगड़ा

सखि पदहीन सियावर लूलो ॥ टेक ॥
दुइ पद शिव फणि लै उर गोये, नखमणिगण लखि भूलो ॥ १ ॥
उन्हीं पदपद्मन्हिके दल पाँवरि पाइ भरत अलि फूलो ॥ २ ॥
समुझि गुल्फ ब्रह्माण्ड खंभ गहि कपि दिग्गज अनुकूलो ॥ ३ ॥
तेहि प्रभु सुरद्रुम कहँ तूं चाहत गोविंददास समूलो ॥ ४॥

२५४—राग सारंग

हद लाये राम दुलहिनि सीता ॥टेक॥
अवधपुरीवासिनि सब अबला जुरि आईं गावत गीता ॥१॥
सजि सजि मंगल मूल आरतो करहिं प्रेमसंयुत प्रीता ॥२॥
निरखि निरखि बिधु वदन मनोहर,पावहिं फल मनके चीता ॥३॥
गोविन्ददास राम वैदेही ज्ञान गिरा मन गोतीता ॥४॥

२५५—राग कालगड़ा

श्रीरघुराज नमामि नमामी ॥टेक॥
सारंगपानी जन सुखदानी विधि हर अन्तरयामी ॥१॥
वासुदेव अनिरुद्ध महीधर श्री प्रद्युम्न अकामी ॥२॥
राम लखण सिय भरत शत्रुहन व्है प्रगटे तुम स्वामी ॥३॥
गोविन्ददास वसो उर पङ्कज कंजनाभ खगगामी ॥४॥

२५६—राग देश

तुअ हठ तजि कैकई बाम, राम घर राखोरी ॥टेक॥
भक्ति वेलि बहुविधि प्रतिपाली । सुकृत सलिल सींची मनमाली ॥
प्रीति सुमनके माँहि प्रेमफल लाग्यो री ॥ तुअ० ॥१॥
करत करत परिश्रम नाना विधि । बहु दिन बीते कछु न लही सिधि ॥
आजु दैव आधीन सोइ फल पाक्योरी ॥ तुअ० ॥२॥
आजु तोरि मति कस भई विकल । तजि अमृत चह पियन हलाहल ॥
चन्द्रमुखी कहि मान ताहि तुम चाखोरी ॥ तुअ० ॥३॥
जो चाहत जिवतो जग मोहों । तो सुनि सत्य कहौं प्रिय तोहीं ॥
राम जाहिं वनवास फेरि जनि भाखोरी ॥ तुअ० ॥४॥
गोविन्ददास कहैं नृप दशरथ । गज गामिनी करहु जनि अनरथ ॥
रघुबर सुरतरुमूल भरत तेहि शाखोरी ॥ तुअ० ॥५॥

२५७—भजन

जय रघुवर कर शर धनु धरणा ॥टेक॥
नील नलिनि सुन्दर वपु वरणा ।
खल दल निज भुजबल बस करणा ॥ जय० ॥१॥
कलि मल हरण कमल दल चरणा ।
सुर मुनि हित वन बनहिं विचरणा ॥ जय० ॥२॥
करि करि करुणा अधम उधरणा ।
वेद पुराणनि अस यश वरणा ॥ जय० ॥३॥

दीनदयालु सुनहु सियरमणा ।
हौं आयउं प्रभु रावरि शरणा ॥ जय० ॥४॥
गोविन्ददास शरण दुख हरणा ।
तारण तरण सकल सुख करणा ॥ जय०॥५॥

२५८—भजन

लौं मैं सप्त चरण वलिहार ॥टेक॥
उभय चलत मेदनि मण्डल तल पञ्च अधर तेहि वार ॥१॥
रितु भुज गुण शिर सुरसेनप पण्मुख हग सठि नख विस्तार ॥२॥
जनु व्है सचल जात श्यामारुण घन धरि कनक पहार ॥३॥
गोविन्ददास येक वाहन इकपूंछ युगल असवार ॥४॥

२५९—भजन

नहिं कोउ दीनदयाल राम सम नहिं कोउ दीनदयाल ॥टेक॥
वेदाधम जे कोल किराता, पापी कठिन कुचाल ।
तिनहुं मिले उपमा धौं कैसी, कहँ वक कहँ सुमराल ॥१॥
सुरपति सुत वनि काग जयंत सिय पद डसि जिमि व्याल ।
भग्यो लग्यौ शर पीछे प्रभु कर जनु सपक्ष फणि काल ॥२॥
शिव ब्रह्मा निज पितहु न राख्यो, तव भा निपट विहाल ।
गये शरण मारयो नहिं ताहि, शरणागत प्रतिपाल ॥३॥
शबरी गिद्ध भुशुंडि विभीषण और निकर कपि भाल ।
गोविन्द दास आपु सम कीये ऐसे राम कृपाल ॥४॥

———

२६०—भजन

भट बलवान बड़े हनुमान ॥टेक॥
जन्मत ही कछु फलके भोले धाइ गह्यौ उदयाचल भान ॥१॥
शतयोजन जलनिधि विस्तारा, तेहि लांघत गोपद सम जान ॥२॥
लङ्कहिं जाए सिया सुधि लायो, रघुवर कीन्ह विपुल सम्मान ॥३॥
गोविन्ददास जोरि कर जाचत देहि राम पदरति वरदान ॥४॥

२६१—भजन

भजले मन राम छाड़ माया ॥टेक॥
इहिं तनु कहँ क्षणभंगु समझ शठ, ज्यों जल रहित जलद छाया ॥१॥
कालकि खाय खाल खलके कौं खलके में पाया रघुराया ॥२॥
पद पङ्कज गुरुके सेये विन दरशन राम कवन पाया ॥३॥
गोविन्द दास गुरहिं सब खावत गुरु पद पद्म रज न खाया ॥४॥

२६२—राग धनाश्री

यह तो मन हौ माया फांसि फंस्यौ ॥टेक॥
जग बन मन अज सुवन चरणगौ नाहरि नारि ग्रस्यो ॥१॥
अथिर स्वर्गसुख हित बहु श्रम करि जा पुनि धरणि खस्यौ ॥२॥
राम बिमुख बहु देवन्ह सेवत लखि जमराज हंस्यौ ॥३॥
तजि सब आस आस हरिपदकी सो वैकुण्ठ वस्यौ ॥४॥
जेहि सुमिरत शठ संत सभा विच गोविन्ददास लस्यौ ॥५॥

२६३—राग विहाग

भजु मन रामचन्द्र पदकंज ॥टेक॥
उनहिं पद्म पद बीच विरचि लै, मम मन मधुकर कंज ॥१॥

डसन काल शशि निशि मायातैं, निर्भय निशिदिन गुञ्ज ॥२॥
रस सुगन्ध शोभा सुन्दरता, विलसि परम सुख पुञ्ज ॥३॥
गोविन्ददास राशि रेशम तजि क्यों कूटत शठ मुञ्ज ॥४॥

२६४—भजन

राम सत चित आनन्द स्वरूप ॥टेक॥
सत कहि सत्य चित्त कहि चैतनि आनन्द सुख सु अनूप ॥१॥
अगम अगोचर मन बुद्धि पर सोइ कोशलपुर भूप ॥२॥
जे जन प्रभुको ध्यान धरत हैं, ते न परहिं भवकूप ॥३॥
जन गोविन्द तेहि चरण कमल बिच बसु मन मोर मधूप ॥४॥

२६५—भजन

प्रीति करो रसना रघुवर सूं । टेक ॥
प्रीति किये अंत न पछितैहौं बचि जैहो जिय यम कि करसूं ॥१॥
का सोवहु निर्भय शिर ऊपर कठिन काल आयो कल परसूं ॥२॥
परिहरि पुर परिवारहिं प्रभुपर स्वप्न समझि नेह न करु घरसूं ॥३॥
जो इन्ह भांति रह्यो कोउ चाहत तो रहु त्यागि राग अति डरसूं ॥४॥
नतु बसु चित्रकूट जन गोविंद मिल्यो चहै जो सारंगधरसूं ॥५॥

२६६—भजन

हरिकी वेद बात निति जानों ॥ टोक ॥
नाम स्वरूप धाम लीला यह नित्य दिव्य पहिचानौं ॥१॥
चित्रकूट मिथिलापुर कोशल यह सब धाम वखानौं ॥२॥
रूप श्यामलीला रामायण नाम राम अनुमानौं ॥३॥
या विधि जो जानत जन गोविंद तेहिं न मोह नियरानौं ॥४॥

२६७—राग विहाग

सखि रघुनन्द नन्दन दोउ चोर ॥ टेक ॥
उन्ह अपनी ईश्वरता चुराई, इन्ह दधि पय निश भोर ॥ १ ॥
उन्ह तारे खग मृग इन्ह राख्यो कालयमन रिपु कोर ॥ २॥
दोष न कछु उन्ह कपि संगति करि इन्ह चारे बन ढोर ॥३॥
कहि नहिं जात जाति गूजर पहँ महिमा मृदुल कठोर ॥४॥

२६८—भजन

दरशण दीजोजी जानकि नाथ ॥टेक॥
भव अर्णवमें डूवि चल्यो हौं प्रभु पकरो तुम हाथ ॥१॥
सुकृति सखा सब पार उतरिगे रहेउ न कोऊ साथ ॥२॥
माया बीचि नीच झकझोरत, विपति अथाह कुपाथ ॥३॥
केवटिया बहु सुर स्वारथ रत भारोहि मारत वांथ ॥४॥
स्वामि दासि वश पाप किये बहु नहिं गाये गुण गाथ ॥५॥
अब तो अम्बुज नाभांवुज पद जन गोविन्दको माथ ॥६॥

२६९—भजन

रघुवर रावरो हूं दास ॥ टेक ॥
छोट तै भौ मोट प्रभुके खाइ जूंठन ग्रास ।
अजहुं निशिदिन द्वार परियो करत तोहरिहि आस ॥ १ ॥
खानजाद गुलाम घरको अति सनातन खास ।
जाउं अव हौं कहाँ ठौर न मोहिं अवनि आकाश ॥ २ ॥

मुहिं लगी आवागवन रूपी अवल भूख पियास।
तव भक्ति अमृत विनु मिटै नहिं होत नित उपवास ॥ ३ ॥
दीनजनकी वीनती साकेतपुर परकाश।
गोविन्ददासहिं दीजिये निज चरण अम्बुज वास ॥ ४ ॥

२७०—राग कालंगड़ा

वरदानि वड़ो रघुनन्दो ॥ टेक ॥
शिवहिं ध्यान विज्ञान भुशुंडहिं पदसेवा हनुमन्दो ॥ १ ॥
पितुहिं प्रेम वैराग्य भरतकौं, ससुरहिं ब्रह्मानन्दो ॥ २ ॥
वेद विमुख द्विज काल यवन जड़ काटि दियो यमफंदो ॥३॥
ता प्रभु सुरतरु कहँ अव याचत भक्ति रङ्क गोविन्दो ॥ ४ ॥

२७१—भजन

तुम्ह जगदीश लखो नहिं कोई ॥ टेक ॥
नहिं कर नहिं पद श्रवण नासिका विना नयन जग जोई।
रूप रेख विनु अगम अगोचर निराकार निर्मोई ॥ १ ॥
कोउ कह श्याम कोउ कह सुन्दर कोउ कह अहि तत्व सोई।
कोउ कह नारायण कमलापति शंख गदाधर वोई ॥ २ ॥
नन्द नन्दन प्रभु सव जग गावे कोउ कह ग्वाल कन्हाई।
कोउ कह केशव केशि कंस हति करज धर्यो गिरि राई ॥ ३ ॥
राम लखण दशरथके ढोटा कोउ कह सिय वन खोई।
गोविन्ददास अलख भगवाना नाम जपे लख होई ॥ ४ ॥

२७२—निर्गुण पद

सुनी हम अनहदकी झुनकार, बजत जहाँ बाजन विविधप्रकार ॥ टेक॥
इन्द्र झरीसी लगी रहत निति निशि वासर इक सार।
बिनु बादर बिनु भूमि पैरे बरसत अमृतधार ॥ १ ॥
नैननितै नवलाख कोश कानन तैं कोश हजार।
अंध बधिर जो होय जन्मको सो नर पावै पार ॥ २ ॥
काया कोशलपुरी सुहावनि सरयू बंकी नार।
उर्ध महलमें देव विराजे, दशरथ राजकुमार ॥ ३ ॥
प्राण घोष घंटा सोइ झालरि अलख बजावन हार।
बिन कर पद शिर कौ जु पुजारी गूजर जाति गँवार ॥ ४ ॥

२७३—भजन

मम बिरि तोहि कालन्दि, कह हुवा ॥ टेक ॥
यमुना नाम कहावनो छाड़हु जो न उड़ै यमगणकी धुंवा ॥ १ ॥
खाये जात पाप प्राणनके पल पल पुइ पुइ पूरी पूवा ॥ २ ॥
तव पय पी प्यासहिं परिपोषण परिहरि पुर पुनि पानी कुवा ॥ ३ ॥
आयहुं मजि भानुज भ्राता भय गोविन्ददास स्वामिकी भुवा ॥ ४ ॥

२७४—भजन

भ्रम तजि भरत भ्रात भज लेवो ॥ टेक ॥
यमुना कूल कलेवरको नतु करिहैं काल कलेवो ॥ १ ॥
दगादार दुनियाँ देवनिके द्वारनिको रज देवो ॥ २ ॥
वेश्या रह गई बांझ सुनी हम बहु पतिको करि सेवो ॥ ३ ॥

सर्वेश्वर समरथ स्वामीसों छिन छिन होत विछेवो ॥ ४ ॥
जनगोविन्द भवसरि उतरन पुनि मिलिहिं न नरतनु खेवो ॥ ५ ॥

२७८—भजन

एक न तन्दुल गीहुं चनो जौ ॥ टेक ॥
रामहिं पूजनि हारनिकों तजि पूजन रामहिं पूजों ॥ १ ॥
अपस्वारथिनि सेति स्वारथ चह तेहि समको शठ दूजों ॥ २ ॥
सुर कठोर खरवूज उष्ण हरि मृदु शीतल तरवूजो ॥ ३ ॥
गोविन्ददास पाट रेशम सम होइ कि कांस रु मूंजो ॥ ४ ॥

धाभाई गोविन्ददास गूजर

२७९—प्रभुजीकी लीला

प्रभुजीकी लीला को लग वरणूं,मेरी वुध कछु नाहिं ।
तीन लोक त्रिभुवनके ठाकुर व्यापै घट घट मांहि ॥
किसी ने पार न पायाजी, रूप अनेक दिखायाजी ॥ १ ॥
गऊ रूप धर चली पृथ्वी, पहुंची ब्रह्मा पास ।
मो पर भार वध्यो अतिभारी, सुण कर भये उदास ॥
शङ्कर पास वठावोजी, जीवका कष्ट मिटावोजी ॥ २ ॥
शंकर ब्रह्मा करी जात्रा हरिसे करी पुकार ।
निराकार निरगुण म्हारा प्रभुजी संकट मेटणहार ॥
ऐसो नाम तुम्हारोजी, पृथ्वीको भार उतारोजी ॥ ३ ॥
जोग मायाने आज्ञा दीनी, तूं तो नंद घर जाय ।
म्हे तो जन्मां वासुदेवके, करां विरजकी स्हाय ॥
पापी मार विडारांजी, पृथ्वीको भार उतारांजी ॥ ४ ॥

उग्रसेनजी व्याव रचायो, सुत अपनो समझाय।
दान मान और दई हेवता, वासुदेवके हाथ ॥
आछा दान दिया है जी, पाछा सुफल किया है जी ॥ ५ ॥
कंसो वहन पुंचावण चाल्यो, बाणी भई अकाश।
ईका सुत तो तने मारे, करे अपणो परकाश ॥
मनमें निश्चय जाणोजी, अवरथा एक न मानोजी ॥ ६ ॥
इतणी सुन कंसो झुझलायो, खड्ग लियो निकाल।
जद वसुदेवजी यूं उठ बोल्या, मत कर पापी पाप ॥
इसका फल ले लीजोजी, जीवण मत ना दीजोजी ॥ ७ ॥
या सोच समझकर कंसेने, पण्डित लिये बुलाय।
झूठ कहोगा बुरा लगोगा, हमरो काल बताय ॥
हमरो काल बतावो जी, कहतां मत पिस्तावोजी ॥ ८ ॥
पण्डित कहन लगे भई कंसा, आठ भाणजा होय।
पिछलो वालक वो वलवन्तो, वो मारेगो तोय ॥
मनमें निश्चय जाणोजी, अवरथा एक न मानोजी ॥ ९ ॥
इतनेमें नारद मुनि आये, सुण कंसा मेरी बात।
आठोंमेंसे एक न राखो, आठों कर द्यो घात ॥
आठूं वैरी थारा जी, गिणती मांहि बिचाराजी ॥१०॥
नारद मुनीको कह्यो मान कर, बालक मार्‌या सात।
पिछलो वालक प्राण घातमें, कदेन आवे हाथ ॥
दिन दिन सूकन लाग्योजी, वस्त्र त्यागन लाग्योजी ॥११॥
कंसरायने बहन वहनोई, कैद किया तत्काल।

दरवाजा सब मूंद दिया है, फेर दई हड़ताल ॥
ताली आप मंगाई जी, चौकी वार बैठाई जी ॥१२॥
भक्त एक मथुराके वासी, वासुदेवके काज।
भर्‌यो भादुवो रैन अंधेरी, प्रगटे जादूराय ॥
चतुर्भुज रूप दिखायोजी, पिताने सुख दिखलायो जी ॥१३॥
देवकी कहन लगी पतिने, सुनो पती मेरी बात।
यो बालक गोकुलको वासी, वेगा द्यो पूंचाय ॥
बड़ियन वार लगावोजी, जसोदा पास पूंचावोजी ॥१४॥
मंदिरसे वसुदेवजी निकले, ताला खुल गया सात।
पहरवान सब सो गया, प्रभु निकले आधी रात ॥
जमना जाय जगाई जी, कँवर खारीके मांही जी ॥१५॥
जमना माता चली यात्रा, चरण छुवनके काज।
वसुदेवजी सिरसे ऊँचा राख लिया पृथ्वी राज ॥
बेहद गाजन लाग्याजी, उलटा भागण लाग्याजी ॥१६॥
कालिंदीसे करुणा करके, कहन लगे वसुदेव।
हमतो आये शरण तुमारी, पूरण करदो सेव ॥
प्रभुजी का चरण पखालोजी, जमना नीर घटाल्योजी ॥१७॥
जमुना चरण लाग रही है, मारग दियो बताय।
यो मारग तो भूलो मतना सीधो गोकुल जाय ॥
धन धन भाग हमाराजी, प्रगटा पुत्र तुम्हाराजी ॥१८॥
मथुरासे चल गोकुल आये, गये जसोदा पास।
मात जसोदा अति सुख माने, मनमें करे मिलाप ॥

कन्या तुम ले जावोजी, देवकीके पास बठावोजी ॥१९॥
कन्या ले बसुदेवजी आये, ताला ढक गया सात ।
ज्यों ज्यों शब्द सुण्यो वालकको जागे चौकीदार ॥
नगरमें खवर हुई है जी. घर घर फिकर हुई है जी ॥२०॥
खबरवानां खबर पहुंचाई, कंसेके दरबार ।
ज्यों ज्यों शब्द सुणे वालकको, जल्दी गेरो वार ॥
घड़ियन देर लगावोजी, जमुना बीच बुहावोजी ॥२१॥
महानीच लेनेको आये, बालक हमने दो ।
बसुदेवजी कन्या दिखाई, करता करै सो होय ॥
नहीं किसीका सहारा जी, झूठा वेद तुमाराजी ॥२२॥
इतनी सुण कंसो झुन्झलायो, पण्डित लिया वुलाय ।
एक एकने चुग चुग मारूं, ल्यावो तीर कवाण ॥
इनको कैद करावो जी, सबका कुटम्ब खपावोजी ॥२३॥
पण्डित कहन लगे भई कंसा, वेद न झूठो होय ।
के कोई थामें चूक पड़ी है, दगो दियो है कोय ॥
थामें चूक पड़ी है जी, झूठी साख भरी है जी ॥२४॥
इतनी जाण कंसो झुन्झलायो, धोबट लई उठाय ।
पकड़ टांग शिला पर मारी, आपे गई आकाश ॥
बिजली होकर कड़की जी, पिछोकड़ बोली लड़की जी ॥२५॥
मेरे मारेसे क्या हो पापी, तूं वचनेको नाहिं ।
तेरो वैरी प्रगट होयो, पूंच्यो गोकुल माहिं ॥
यशोदा गोद खिलावे जी, पलने मांहिं झुलावे जी ॥२६॥

इतनी सुण कंसो झुन्झलायो, गयो कचेड़ी माँय ।
जो कोई मारे इस वालक कूं देई द्रव्य अथाय ॥
सगलो अन्न धन देयूं जी, बरावर मालक करयूं जी ॥२७॥
मारण कारण चली पूतना, अँचलाँ जहर लगाय ।
खैंची सूतना मारी पूतना, दीनी स्वर्ग पठाय ॥
इनका वंधन कटावो जी, अपनी ओर वनावो जी ॥२८॥
तिरणावत वालकने लेकर, चढ़ गयो गगन अकाश ।
वज्र देह वनाई मेरे प्रभुजी, खींच लियो उर सांस ॥
पीछा छोड़ो म्हाराजी, कंसा वैरी थारा जी ॥२९॥
जितणा दैत्य हरण कूं आये, सब हर डारे मार ।
इतणा से तो काजन सरियो, कंसो खाई पछार ॥
काल जंजाल अब आयो जी, जद अलबत घवरायो जी ॥३०॥
हरिने पगां चालणो सिखावे, मात यशोदा आप ।
धन धन भाग वसे घर मेरो, कट गा सारा पाप ॥
धन धन भाग हमारा जी, प्रगट्या पुत्र पियारा जी ॥३१॥
माटी खात मात मुख निरखे, मुखमें अंगुली डार ।
तीन लोक मुंह माँय दिखाये, नैना रही निहार ॥
पाछे रोल मचाई जी, यशोदा वेग सुलाई जी ॥३२॥
मात यशोदा दही विलोवे, मटकी लई गोपाल ।
माखन कारण माय रूसाई, जा वांधे नन्दलाल ॥
दोनों वृक्ष उपाड़्या जी, अर्जुन युमला तारया जी ॥३३॥
संग लिये लड़कन कूं डोले, लाला घर घर वार ।

माखन खाय मटकियां फोड़े, उलटी मांडे रार ॥
ऊखल चढ़कर लेवे जी, सब लड़कन कूं देवे जी ॥३४॥
बच्छा चरावण चले साँवरा, ग्वाल बाल लिया साथ ॥
ब्रह्माजी ने सब हर लीन्या, मींजत रह गया हाथ ॥
इतना ही और बणाया जी, आप आपके घर पूंचाया जी ॥३५॥
गऊ चरावण चले साँवरा, संग सोवे दोउ वीर ।
वैन बजावत चले कृष्णजी, आये कालिंदीके तीर ॥
धोवी धोवन लग्याजी, मोहनसे डर कर भाग्याजी ॥३६॥
गींडी ख्याल मचायो साँवरो, फेंकी जमुना बीच ।
पाछी ल्यावण कूद्यो जलमें, नाग लिया सब जीत ॥
फण फिण निरत कर्यो है जी, साँवलो रूप धर्यो है जी ॥३७॥
दधको दान मांगे साँवरो, मारग रोके जाय ।
दान बिना तो जाण न देवे, केशो कृष्ण मुरार ॥
अनोखो रसियो डोले जी, झटदे घूंघट खोले जी ॥३८॥
बरसाणेने छळग गये, श्री नन्दलाल भगवान ।
वंशी बजाय हर बश कर लीनो, मारे लोचन बाण ॥
प्रभुजीकी हुई सगाई जी, नन्द घर वँटी बधाई जी ॥३९॥
इन्द्र पूजा आप लई प्रभु, भेंट दई सब कोय ।
इन्द्र मेह बरसावण लाग्या, दियो गरब सब खोय ॥
नख पर गिरवर धार्‌यो जी, राख लियो वृज सारो जी ॥४०॥
ग्वाल बाल सब मिल कर आये, हरकी करै पुकार ।
बरज यशोदा सुत अपने कूं, पड़ा हमारी लार ॥

इसको सिखावन दीजैजी, अनीति रोक जस लीजैजी ॥४१॥
कंस कपट जाल रच, भेज दिया अकरूर।
नन्दमहर थाने कंस बुलावे, वेगा चलो हजूर ॥
यज्ञकी हुई तयारी जी, नूती नगरी सारी जी ॥४२॥
नन्दमहर तो चले कंसपा, मिलकर सैं सुजान।
साथ लिया ग्वाल वाल, हलधर मोहन कान ॥
रथने तेज चलावोजी, मथुरा वेग पूंचावो जी ॥४३॥
मोर मुकुट पीताम्वर सोहे, गल वैजन्ती माल।
कानां कुण्डल रतन जड़ाऊ, तिलक कर्यो है भाल ॥
कंसे ने वोल पठाया जी, सब रल मिल कर आया जी ॥४४॥
गोकुलसे हरि मथुरा आये, राहमें कियो विचार।
जो कोई मिले इस मार्गमें, कपड़ा ल्यो उतार ॥
कंसे से मतना डरियो जी, शङ्को चित्त ना करियो जी ॥४५॥
पहली तो वै धोवण लूटी, कपड़ा लिया छिनाय।
कंसकी पोशाक लेली, खोटा वचन सुणाय ॥
धोवी जाय पुकारया जी, कपड़ा लिया तुम्हारा जी ॥४६॥
चन्दन लेकर चली कूवड़ी, कंसेके दरवार।
लात मार चन्दन ले लीनो, कूवदई निकार ॥
चन्दन आप लगायो जी, सब लड़कन लिपटायो जी ॥४७॥
पोलीवान मोहनसे लिपटे, हलधर डारे मार।
पकड़ नाड़ जमीं पर पटके, खूब मचाई रार ॥
पोली आप लई है जी, चौकी उठाय दई है जी ॥४८॥

मगना हाथी मार लिया प्रभु, गजका दन्त उखार।
पीलवान पलकोंमें मारे, छीन लिये हथियार ॥
छप्पर फूंक दिया है जी, दाना भाग गया है जी ॥४६॥
इतना रोल सुना जद कंसे, बारथां दई मुंदाय।
शूरवीर सब मिलकर आये, ऊँचा दिया बठाय ॥
इब डर लागे भारी जी, जीवके मचगी ध्यारी जी ॥५०॥
केश पकड़ कंस पछाड़यो, छुरियनकी तरबीण।
भाटां से सिर दे दे मार्‍यो, करणी अपनी चीन ॥
जैसी करणी करिये जी, तैसी मस्तक धरिये जी ॥५१॥
भोत क्रोध किया प्रभुने, कंसे मारी किलकार।
छ भाई मेरा पैली मार्‍या, वै लावो तत्काल ॥
वै मेरा जल्दी लावो जी, नहीं तो जमके जावो जी ॥५२॥
हाथ जोड़ सब देवता ठाढ़े, चरण नवावे शीश।
क्षमा करो प्रभु जाणे दीजे, जल्दी गेरो घींस ॥
जय जय कार मनाया जी, फुलड़ाँ मेह बरसाया जी ॥५३॥
मात देवकी कण्ठ लगावे, पिता रहे दुलराय।
हाथ जोड़ चरणां में पड़िया, ऐसा कृष्ण मुरार ॥
दासनदास तुमाराजी, हें प्रभु, प्राण अधारा जी ॥५४॥
उग्रसेनने राज दियो है, नानो अपणो जाण।
भोत प्रेमसे मिल्या प्रभुजी, परगट करी पिछाण ॥
राजासे अरज कराई जी, जाणेकी ठहराई जी ॥५५॥
पुरी द्वारिका जाय बसाई, कञ्चन महल वणाय।

विष्णुलोकके साँवरा, प्रभु कैसे दरशण पाय ॥
प्रभुजीकी लीला गावो जी, वणांने खूब रिझावो जी ॥५६॥

अज्ञात

२७७—धमाल

रघुनन्दनकी छवि लागे प्यारी ॥ टेक ॥
अवधपुरी सुखधाम कहावे, प्रगट भये जहां औतारी ॥ १ ॥
नृप दशरथके पुत्र कुहाया, कौशल्या महतारी ।
यज्ञ हेत मुनि संग सिधारे, कीनी मखकी रखवारी ॥ २ ॥
निसचर कुलकी कतल कराई, नार तारका संहारी ।
शिला रूप अहिल्या देखत, पूछत मुनिसे विथा सारी ॥ ३ ॥
पदरज डार तुरत निसतारी, भगतनके प्रभु भै हारी ।
संग मुनीवरके गये जनकपुर, पूछत जनक छत्तरधारी ॥ ४ ॥
राम लिछमण दसरथके नन्दन, देख खुशी भये नर नारी ।
पुष्प लेन श्रीराम पधारे, जनक भूपकी फुलवारी ॥ ५ ॥
संग सखिनके फुलवा चुनत, जनक भूपकी सुकुमारी ।
जब सिया देख्यो रूप रामको, तुरन्त नजर नीची डारी ॥ ६ ॥
मन ही मन कहे जनक नन्दनी, यो वर दीज्यो त्रिपुरारी ।
बद्रीलाल कहे सीतावरकी, चरण कँवल बलिहारी ॥ ७ ॥

२७८—धमाल

मत अधरम कर पिसतावेगो ॥ टेक ॥
तज दी नीती अब करत अनीती, नीति रख्यां सुख पावेगो ।
देख सभामें मोये अन्ध लजेगो, भीसम द्रोण लजावेगो ॥१॥

बिदुर भगतकी कान घटेगी, जेठ करण सकुचावेगो ।
पांडव सुत निर्बल नहीं होगया, उन हाथां लाज गुमावेगो ॥२॥
भरीरे सभामें भींव पछाड़े, अर्जुन धनुष उठावेगो ।
तिरिया सतायां पातक भारी, फल अधरमको पावेगो ॥३॥

२७९—धमाल

पल्लो छोड़ दे दुसासन मेरी साड़ीको ॥ टेक ॥
भरी सभामें ना कोई बोलत, भै मानत मतिहारीको ।
भीसम द्रोण करण चुप साधी, अंश निकस गयो नाड़ीको ॥१॥
सभा सभी चितराम लिखीसी, भै मानत अत्याचारीको ।
धर्म तात अर्जुन चुप साधी, बल घट्यो भींव बलकारीको ॥२॥
तुम बिन ना कोई हितू सांवरा, सत रखो द्रोपद दुलारीको ।
बद्रीलाल द्यो दरस आन, हरि ध्यान धर्यो बनवारीको ॥३॥

बद्रीलाल मौलेसरिया

२८०—भजन

कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ॥ टेक ॥
आसण मांड़ अडिग होय बैठा, याही भजनकी रीत ॥१॥
मैं तो जाणूं जोगी संग चलेगा, छाड़ गयो अध बीच ॥२॥
आत न दीसे, जात न दीसे, जोगी किसका मीत ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर चरणन आवे चीत ॥४॥

२८१—भजन

म्हारो जन्म मरणको साथी, थांने नहिं विसरूं दिन राती ॥ टेक ॥
तुम देख्यां विन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पन्थ निहारूं, रोय रोय अँखियां राती ॥ १॥
यो संसार सकल जग झूंठो, झूंठा कुल रा नाती ।
दोउ कर जोड़याँ अरज करत हूं, सुण लीज्यो मेरी वाती ॥२॥
यो मन मेरो बड़ो हरामी ज्यूं मदमातो हाथी ।
सत्गुरु हाथ धरयो सिर ऊपर, आँकुश दे समझाती ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, हरि चरणां चित्त राती ।
पल पल तेरा रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाती ॥४॥

२८२—भजन

अब मीरां मान लीज्यो म्हारी, हांजी थाने सखियां बरजे सारी ॥टेक
राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी ।
कुंवर पाटवी सो भी बरजै ओर सहेल्यां सारी ॥ १ ॥
शीश फूल सिर ऊपर सोवे, बिंदली शोभा भारी ।
गले गुंजारी करमें कङ्कण, नेवर पहिरे भारी ॥ २ ॥
साधनके ढिग बैठ बैठके, लाज गमाई सारी ।
नित प्रति उठि नीच घर जावो, कुलकूं लगावो गारी ॥ ३॥
बड़ां घरांकी बहू कुहावो, नाचो दे दे तारी ।
वर पायो हिन्दुवाणी सूरज, इव दिलमें कहा धारी ॥ ४ ॥
तार्यो पीहर सासरो तार्यो, माय मोसाली तारी ।
मीरांने सतगुरुजी मिलिया, चरण कमल बलिहारी ॥ ५ ॥

२८३—भजन

मेरो मन हरिसूं जोग्यो, हरिसूं जोर सकलसूं तोग्यो ॥ टेक ॥
मेरी प्रीत निरन्तर हरिसूं ज्यूं खेलत बाजीगर गोग्यो ।
जब मैं चली साधके दरशण, तब राणो मारणकूं दोग्यो ॥१॥
जहर देनेकी घात विचारो, निरमल जलमें ले विष घोग्यो ।
जब चरणोदक सुण्यो सरवण रामभरोसे मुखमें ढोग्यो ॥२॥
नाचन लागी तब घूंघट कैसो, लोक लाज तिणका ज्यूं तोग्यो ।
नेकी बदी हूं सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुश दे मोग्यो ॥३॥
प्रगट निसान बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोग्यो ।
मीरां सबल धणीके शरणे, कहा, भयो भूपति मुख मोग्यो ॥४॥

२८४—भजन

तूं मत बरजे माइड़ी, साधाँ दरशण जाती ।
राम नाम हिरदे बसै, माहिले मन माती ॥ टेक ॥
माइ कहे सुण धीहड़ी, कहे गुण फूली ।
लोग सोवै सुख नींदड़ी, थूं क्यूं रैणज भूली ॥ १ ॥
गैली दुनियां बावली, जाकूं राम न भावे ।
ज्यां रे हिरदे हरि बसे, त्या कूं नींद न आवे ॥ २ ॥
चौबाग्यांकी बावड़ी, ज्याकूं नीरन पीजे ।
हरि नाले अमृत झरे, ज्यांकी आस करीजे ॥ ३ ॥
रूप सुरङ्गा रामजी, मुख निरखत जीजे ।
मीरां व्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजे ॥ ४ ॥

२८५—भजन

राणाजी थे क्यांने राखो मोसूं वेर ॥ टेक ॥
राणाजी म्हाने ऐसा लगत है ज्यूं विरछनमें कैर ॥ १ ॥
मारू धर मेवाड़ मेड़तो, त्याग दियो थारो शहर ॥ २ ॥
थारे रूस्यां राणा कुछ नहिं बिगड़े, अब हरि कीन्हीं म्हेर ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, हठकर पीगइ जहर ॥ ४ ॥

२८६—भजन

राणाजी म्हाने या बदनामी लगे मीठी ॥ टेक ॥
कोई निंदो कोई विंदो, मैं चलूंगी चाल अपूठी ॥ १ ॥
सांकड़ी गलीमें सतगुरु मिलिया, क्यूं कर फिरूं अपूठी ॥२॥
सतगुरुजीसूं बातज करताँ, दुरजन लोगाँने दीठी ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, दुरजन जलो जा अंगीठी ॥४॥

२८७—भजन

रामकी दिवानी मेरो दरद न जाने कोई ॥ टेक ॥
घायलकी गति घायल जाने, जो कोई घायल होई ।
शेष नाग पै सेज पियाकी, किस विध मिलना होई ॥ १ ॥
दरदकी मारी बन बन डोलूं, वैद मिला नहिं कोई ।
मीरांकी पीर प्रभु तभी मिटेगी, वैद साँवलियो होई ॥ २ ॥

२८८—भजन

जगमें जीवणा थोड़ा, राम कुण कहे रे जंजार ॥ टेक ॥
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार ॥ १ ॥

कइ रे खाइयो कइ रे खरचियो, कइरे कियो उपकार ॥ २ ॥
दिया लिया तेरे सङ्ग चलेगा, और नहीं तेरी लार ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, भज उतरो भवपार ॥ ४ ॥

२८९—भजन

मैं आपने सैयाँ संग साँची ।
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट ह्वै नाची ॥ १ ॥
दिवस भूख न चैन कबहुं, नींद निशि नासी ।
वेध वारको पार ह्वैगो, ज्ञात गुह गाँसी ॥ २ ॥
कुल कुटुम्ब सब आनि बैठे जैसे मधुमासी ।
दासि मीरां लाल गिरिधर, मिटी जग हांसी ॥ ३ ॥

२९०—भजन

यहि विधि भक्ति कैसे होय ।
मनकी मैल हियेसे न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ॥ १ ॥
काम कूकर लोभ डोरी, बांधि मोहिं चण्डाल ।
क्रोध कसाई रहत घटमें, कैसे मिले गोपाल ॥ २ ॥
बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत ।
दीन हीन ह्वै क्षुधा रतसे, राम नाम न लेत ॥ ३ ॥
आपहि आप पुजाय केरे, फूले अंग न समात ।
अभिमान टीला किये बहु, कहु जल कहां ठहरात ॥ ४ ॥
जो तेरे अन्तरकी जाणे, तासों कपट न बनै ।
हिरदे हरिको नाम न आवे, मुख तैं मणिया गनै ॥ ५ ॥
हरि हितूसे हेत कर, संसार आशा त्याग ।
दासि मीरां लाल गिरिधर, सहज कर वैराग ॥ ६ ॥

२९१—भजन

कुण वांचै पाती विन प्रभु, कुण वांचै पाती ॥ टेक ॥
कागद ले ऊधोजी आये, कहां रहे साथी ।
आवत जावत पाँव घिसारे, अँखियाँ भईं राती ॥ १ ॥
कागद ले राधा वाँचण वैठी, भर आई छाती ।
नैन नीरजमें अम्बु वहे रे, गंगा वहि जाती ॥ २ ॥
पाना ज्यूं पीली पड़ीरे, अन्न नहीं खाती ।
हरि विन जीवड़ो यूं जलैरे, ज्यूं दीपक संग वाती ॥ ३ ॥
साँचा कुछ चकोर चन्दा, झोलै वहि जाती ।
वृजनारीकी विणतीरे, राम मिले मिल जाती ॥ ४ ॥
मने भरोसो रामकोरे, डूवत तार्यौ हाथी ।
दासि मीरां लाल गिरिधर, सांकड़ारो साथी ॥ ५ ॥

२९२—भजन

बड़े घर ताली लागी रे, म्हारा मनरी उंणारथ भागी रे ॥ टेक ॥
छीलरिये म्हारो चित्त नहीं रे, डावरिये कुण जाव ।
गंगा जमुना सूं काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूं दरियाव ॥१॥
हाल्यां मोल्यां सूं काम नहीं रे, सीख नहीं सरदार ।
कामदारांसूं काम नहीं रे, मैं तो ज्वाव करूं दरवार ॥२॥
काचा कथीरसूं काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपासूं काम नहीं रे, म्हारे हीरां रो व्योपार ॥३॥
भाग हमारो जागियोरे, भयो समन्दसूं सीर ।
अमृत प्याला छाड़िके, कुण पीवे कड़वो नीर ॥४॥

पापी कूं प्रभु परचो दीन्यो, दियो रे खजानो पूर।
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, धणी मिल्या छै हजूर ॥५॥

२९३—भजन

यो तो रंग धत्तां लाग्यो ए माय ॥ ठेक ॥
पिया पियाला अमर रसना, चढ़ गई घूम घुमाय।
यो तो अमल म्हारो कबहुं न उतरै, कोटि करो न उपाय ॥१॥
साँप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार।
हंस हंस मीरां कण्ठ लगायो, यो तो म्हारो नौसर हार ॥२॥
बिषको प्यालो राणाजी मेल्यो, द्यो मेड़तणीने प्याय।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविन्दरा गाय ॥३॥
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सुहाय।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, काचो रङ्ग उड़ जाय ॥४॥

२९४—भजन

जोगियारी प्रीतड़ी है, दुखड़ारी मूल ॥टेक॥
हिलमिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ॥१॥
तोड़त देर करत नहिं सजनी, जैसे चपेलीके फूल ॥२॥
मीरांके प्रभु तुम्हरे दरश विन, लगे हिवड़ेमें शूल ॥३॥

२९५— भजन

देखो सैंया हरि मन काठ कियो ॥टेक॥
आवन कहि गयो अजहुं न आयो, करि करि वचन गयो ॥१॥
खान पान सुध बुध सब बिसरी, कैसे करि मैं जयो ॥२॥

वचन तुम्हारे तुमहीं विसारे, मन मेरो हर लियो ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, तुम विन फटत हियो ॥४॥

२९६—भजन

जाओ हरि निरमोहीडारे, जाणी थारी प्रीत ॥ टेक ॥
लगन लगी जब और प्रीत छी, अब कुछ अँवला रीत ॥ १ ॥
अमृत पाय विषै क्यूं दीजे, कूण गाँवकी रीत ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, आप गरजके मीत ॥ ३ ॥

२९७—भजन

वारी वारी हो राम हूं वारी, तुम आज्यो गली हमारी ॥ टेक ॥
तुम देख्यां विन कल न पड़त है, जोऊं वाट तुमारी ॥ १ ॥
कुण सखी सूं तुम रंग राते, हमसूं अधिक पियारी ॥ २ ॥
किरपा कर मोहिं दरशण दीज्यो, सब तकसीर विसारी ॥३॥
तुम शरणागत परम दयाला, भव जल तार मुरारी ॥ ४ ॥
मीरां दासी तुव चरणनकी, वार वार वलिहारी ॥ ५ ॥

२९८—भजन

मैं विरहण वैठी जागूं, जगत सब सोवेरी आली ॥ टेक ॥
विरहिन वैठी रंग महलमें, मोतियनकी लड़ पोवे ।
इक विरहिन हम ऐसी देखी, अंसुवन माला पोवे ॥ १ ॥
तारा गिण गिण रैन विहानी, सुखकी घड़ी कब आवे ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, मिलके विछुड़ न जावे ॥ २ ॥

———

२९९—भजन

मेरो मन लाग्यो हरिजी सूं, अब न रहूंगी अटकी ॥ टेक ॥
गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्ही ज्ञानकी गुटकी ।
चोट लगी निज नाम हरीकी, म्हारे हिवड़े खटकी ॥ १ ॥
माणक मोती परत न पहिरूं, मैं कबकी नटकी ।
गहणो तो म्हारे माला दोवड़ी, और चन्दनकी कुटकी ॥२॥
राज कुलकी लाज गमाई, सांधाके संग मैं भटकी ।
नित उठ हरिजी के मन्दिर जास्यूं, नांचूं दे दे चुटकी ॥३॥
भाग खुल्यो म्हारो साध संगत मूं, साँवरियाकी बटकी ।
जेठ बहूकी काण न मानूं, घूंघट पड़ गई पटकी ॥४॥
परम गुरांके शरणमें रहस्यां, परणाम कराँ लुटकी ।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, जन्म मरण सूं छुटकी ॥५॥

३००—भजन

राम मिलण रो घणो उमावो, नित उठ जोऊँ बाटड़ियां ॥टेक॥
दरसण बिन मोहिं पल न सुहावे, कलन पड़त है आँखड़ियां ॥१॥
तड़फ तड़फ के बहु दिन बीते, पड़ी बिरहकी फांसड़ियाँ ।
इब तो बेग दया कर साहिब, मैं हूं तेरी दासड़ियाँ ॥२॥
नैण दुखी दरसणको तरसे, नाभि न वैठे सांसड़ियाँ ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखे पासड़ियाँ ॥३॥
लगी लगन छूटण की नाहीं, इब क्यूं कीजे आंटड़ियाँ ।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, पूरो मनकी आसड़ियाँ ॥४॥

३०१—भजन

माई म्हे तो लियो रमैयो मोल ॥टेक॥
कोई कहे छानी, कोई कहे चोरी, लियो है बजंतां ढोल ॥१॥
कोई कहे कारो, कोई कहे गोरो, लियो है म्हे आँखी खोल ॥२॥
कोई कहे हलको, कोई कहे भारी, लियो है तराजू तोल ॥३॥
तनका गहणा मैं सब कुछ दीन्या, दियो है बाजूबन्द खोल ॥४॥
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, पुरब जनमका है कोल ॥५॥

३०२—भजन

म्हारे घर आज्यो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग खारा ॥टेक॥
तन मन धन सब भेंट करूं, और भजन करूं मैं थारा।
तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूं जी औगण हारा ॥१॥
मैं निगुणी गुण एको नाहिं, तुझमें जी गुण सारा।
मीरां कहै प्रभु कबहिं मिलोगे, बिन दरसण दुखियारा ॥२॥

३०३—भजन

होता जाज्यो राज म्हारे महलां होता जाज्यो राज ॥टेक॥
मैं ओगुणी मेरा साहब सुगणा, सन्त संवारैं काज ॥१॥
मीरां के प्रभु मन्दिर पधारो, करके केसरिया साज ॥२॥

३०४—भजन

इब नहिं मानूं राणा थारी, मैं बर पायो गिरधारी ॥टेक॥
मणि कपूरकी एक गति है, कोऊ कहो हजारी।
कंकर कंचन एक गति है, गुंज मिरच इक सारी ॥१॥

अनड़ धणीको शरणो लीनो, हाथ सुमरणी धारी।
जोवा लियो अब क्या दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥२॥
साधू संगतमें दिल राजी, भई कुटुम्ब सूं न्यारी।
क्रोड़ बार समझावो मोकूं, चालूंगी बुद्धि हमारी ॥३॥
रतन जड़ित की टोपी सिर पै, हार कण्ठको भारी।
चरण घूंघरू घमस पड़त है, म्हे करां स्याम सूं यारी ॥४॥
लाज शरम सबही मैं डारी, यो तन चरण अधारी।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, झक मारो संसारी ॥५॥

३०८—भजन

म्हारे शिर पर सालिग्राम, राणा जी म्हारो कांई करसी ॥टेक॥
मीरा सूं राणाने कही रे, सुण मीरां मेरी वात।
साधाकी संगत छाड़ दे रे, सखियां सब सकुचात ॥१॥
मीरांने सुण यों कही रे, सुण राणाजी वात।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियां क्यूं घबरात ॥२॥
जहरका प्याला भेजियारे, दीजो मीरां हाथ।
अमृत करके पी गई रे, भली करे दीनानाथ ॥३॥
मीरां प्याला पीलिया रे, बोली दोऊं करजोर।
तैं तो मारण की करी रे, मेरो राखणवालो ओर ॥४॥
आधे जोहड़ कीच है रे, आधे जोहड़ हौज।
आधे मीरां एकली रे, आधे राणा की फौज ॥५॥
काम क्रोधको डाल के रे, शील लिये हथियार।
जीती मीरां एकली रे, हारी राणाकी धार ॥६॥

काचगिरीका चौतरां रे, बैठे साध पचास।
जिनमें मीरां ऐसी दमके, लाख तारांमें परकास ॥७॥
टांडा जब वे लादिया रे, बेगी दीन्हा ज्ञाण।
कुलकी तारण अस्तरी रे, चली है पुष्कर न्हाण ॥ ८॥

३०६—भजन

होली पिया बिन लागै खारी, सुणो री सखी मेरी प्यारी ॥टेक॥
सूनो गाँव देश सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहण पिवबिन डोले, तज दइ पिव पियारी ॥
भई हूं या दुखकारी ॥ होली० ॥१॥
देश विदेश संदेश न पहुंचे, होय अन्देशो भारी।
गिणतां गिणतां घिसगी रेखा, आंगलियाँकी सारी ॥
अजहुं नाहिं आये मुरारी ॥ होली० ॥२॥
बाजत झांझ मृदङ्ग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आये बसन्त कंत घर नाहिं, तनमें जर भया भारी ॥
स्याम मन कहा विचारी ॥ होली० ॥३॥
अब तो मेहर करो प्रभु मुझ पर, चित्त दे सुणो हमारी।
मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की क्वांरी ॥
लगी दरशण की तारी ॥ होली० ॥४॥

३०७—भजन

सुनी मैं हरि आवनकी आवाज ॥टेक॥
महल चढ़ि चढ़ि जोऊं मोरी सजनी, कब आवे म्हाराज ॥१॥
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल मधुरे साज ॥२॥

उमग्यो इन्द्र चहुं दिशि बरसे, दामिनि छोड़ी लाज ॥३॥
धरती रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र मिलणके काज ॥४॥
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, बेग मिलो महाराज ॥५॥

३०८—भजन

अच्छे मीठे चाख चाख, बोर लाई भीलणी ॥टेक॥
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचालणी ॥१॥
जूठे फल खाये राम, प्रेमकी प्रतीत जाण।
ऊंच नीच जाने नहीं, रसकी रसीलणी ॥२॥
ऐसीं कहा वेद पढ़ी, छिनमें बिमाण चढ़ी।
हरि जी सूं बांध्यो हेत, वैकुण्ठमें झूलणी ॥३॥
ऐसी प्रीत करे सोई, दास मीरां तरै जोइ।
पतित पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ॥४॥

३०९—भजन

स्याम मो सूं ऐंडो डोले हो ॥टेक॥
औरन सूं खेले धमार, म्हासूं मुखहुं न बोले हो ॥१॥
म्हारी गलियां ना फिरै, वांके आँगण डोले हो ॥२॥
म्हारी आंगली ना छुवै, वांकी बहियाँ मरोरे हो ॥३॥
म्हारो अँचरो ना छुवै, वांको घूंघट खोले हो ॥४॥
मीरां के प्रभु साँवरो रंग रसिया डोले हो ॥५॥

३१०—ठुमरी

माई मैं तो गोविन्द सों अटकी ॥टेक॥
चकित भये हैं दृग दोउ मेरे लखि शोभा नटकी ॥१॥
शोभा अङ्ग अङ्ग प्रति भूषण वनमाला तटकी ।
मोर मुकुट कटि किंकिनि राजै द्युति दामिनि पटकी ॥२॥
रमित भई हौं साँवरेके संग लोग कहैं भटकी ।
छुटी लाज कुलकानि लोग डर रह्यो न घर हटकी ॥३॥
मीरां प्रभुके संग फिरेगी, कुञ्ज कुञ्ज लटकी ।
बिना गोपाल लाल बिन सजनी, को जानै घटकी ॥४॥

३११—भजन

मिनखां जन्म पदारथ पायो, ऐसी बहुर न आती ॥टेक॥
इबके मोसर ज्ञान विचारो, राम नाम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया सूझ पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ॥१॥
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती ।
मगन भया मेरा मन सुखमें, गोविन्दका गुण गाती ॥२॥
साहब पाया आदि अनादि, नातर भवमें जाती ।
मीरां कहे इक आस आपकी, औरां सूं सकुचाती ॥३॥

३१२—भजन

नींदड़ली नहिं आवै सारी रात, किस विधां होय परभात ॥टेक॥
चमक उठी सपने सुध भूली, चन्द्रकला न सोहात ॥१॥
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कबरे मिले दीनानाथ ॥२॥
भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हारी बात ॥३॥

मीरां कहै वीती सोइ जानै, मरण जीवण उन हाथ ॥४॥

३१३—भजन

ज़ोगियाने कहियो रे आदेश ॥टेक॥
आऊंगी मैं नाहिं रहूं रे, कर जटा धारी भेस ॥१॥
चीरको फाड़ूं कंथा पहिरूं, लेऊंगी उपदेस।
गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उंगलियोंकी रेख ॥२॥
मुद्रा माला भेष लूं रे, खप्पर लेऊं हाथ।
जोगिन होय जग ढूंढ़सूं रे, रावलियाके साथ ॥३॥
प्राण हमारा वहाँ वसत है, यहाँ तो खाली खोड़।
मात पिता परिवार सूं रे, रही तिनका तोड़ ॥४॥
पाँच पचीसों बस किये, मेरा पल्ला न पकड़ै कोय।
मीरां व्याकुल विरहिणी, कोइ आन मिलावै मोय ॥ ५ ॥

३१४—भजन

मेरे परम सनेही रामकी, नित ओलूंड़ी आवे ॥ टेक ॥
राम हमारे हमहैं रामके, हरि विन कुछ न सुहावे ॥ १ ॥
आवण कह गये अजहुं न आये, जिवड़ो अति अकुलावे ॥२॥
तुम दरशणकी आश रमैया, निशिदिन चितवत जावे ॥३॥
चरण कँवलकी लगन लगी अति, विन दरशण दुख पावे ॥४॥
मीरां कूं प्रभु दरशण दीन्हा, आनन्द वरण्यो न जावे ॥५॥

३१५—भजन

मैं तो म्हारा रमैया ने, देखवो करूं री ॥ टेक ॥
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूंरी ॥ १ ॥

जहाँ जहां पांव धरूं धरणी पर, तहां तहां निरत करूंरी ॥ २॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चरणां लिपट परूंरी ॥ ३ ॥

३१६—भजन

जोगियारी सुरत मनमें वसी ॥ टेक ॥
नित प्रति ध्यान धरत हूं दिलमें, निसदिन होत खुशी ॥ १ ॥
कहा करूं कित जाउँ मोरी सजनी, मानो सरप डसी ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली वसी ॥ ३ ॥

३१७—भजन

पतियाँ मैं कैसे लिखूं, लिखिही न जाई ॥ टेक ॥
कलम धरत मेरे कर कँपत, हिरदो रहो धर्राई ॥ १ ॥
वात कहूं मोहि वात न आवे, नैण रहे झर्राई ॥ २ ॥
किस विधि चरण कमल मैं गहि हौं, सवहि अंग थर्राई ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, सवही दुख विसराई ॥ ४ ॥

३१८—भजन

मिलता जाज्यो हो गुर ज्ञानी, थारी सूरत देखि लुभानी ॥ टेक ॥
मेरो नाम वूझि तुम लीज्यो, मैं हूं विरह दिवानी ॥ १ ॥
रात दिवस कल नाहिं परत हैं, जैसे मीन विन पानी ॥ २ ॥
दरश विना मोहिं कछु न सुहावै, तलफ तलफ मर जानी ॥ ३ ॥
मीरां तो चरणनकी चेरी, सुण लीजे सुखदानी ॥ ४ ॥

३१९—भजन

मेरे प्रीतम प्यारे रामने, लिख भेजूं री पाती ॥ टेक ॥
श्याम सन्देशो कबहुं न दीन्हों, जान वूझ गुझ वातीं ॥ १ ॥

ऊँची चढ़ चढ़ पन्थ निहारूं, रोय रोय अँखियाँ राती ॥ २ ॥
तुम देख्याँ बिन कल न परत हैं, हियो फटत मोरी छाती ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु कब रे मिलोगे, पूर्व जनमके साथी ॥ ४ ॥

३२०—भजन

गोविन्द कबहुं मिले पिया मेरा ॥ टेक ॥
चरण कमलको हँस करि देखों, राखौ नैनन नेरा ॥ १ ॥
निरखण को मोहिं चाव घणेरो, कब देखौं मुख तेरा ॥ २ ॥
व्याकुल प्राण धरत नहिं धीरज, मिल तूं मीत सवेरा ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, ताप तपन बहुतेरा ॥ ४ ॥

३२१—भजन

राणाजी हूं अब न रहूंगी तोरी हटकी ॥ टेक ॥
साधसंग मोहि प्यारा लागै, लाज गई घूंघट की ॥ १ ॥
पीहर मेड़ता छोड़ा अपना, सुरत निरत दोउ चटकी ।
सतगुरु मुकर दिखाया घरका, नाचूंगी दे दे चुटकी ॥ २ ॥
हार सिंगार सभी ल्यो अपना चूड़ी करकी पटकी ।
मेरा सुहाग अब मोकूं दरसा, और न जाने घटकी ॥ ३ ॥
महल किला राणा मोहिं न चाये, सारी रेशम पटकी ।
हुई दिवानी मीरां डोलै, केश लटा सब छिटकी ॥ ४ ॥

३२२—भजन

चलां वांही देश प्रीतम पावाँ, चलां वांही देश ॥ टेक ॥
कहो तो कुसुम्बी सारी रंगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस ॥ १ ॥

कहो तो मोतियन मांग भरावाँ, कहो छिटकावां केश ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, सुणियो विरद्के नरेश ॥ ३ ॥

३२३—भजन

म्हारे नैणा आगे रहोजो जी, श्याम गोविन्द ॥ टेक ॥
दास कवीर घर वालद लाया, नामदेवका छान छवंद ॥ १ ॥
दास धनाको खेत निपजायो, गजकी टेर सुनन्द ॥ २ ॥
भीलणीका वेर सुदामाका तण्डुल, मर मुठड़ी वुकन्द ॥ ३ ॥
करमा वाईको खींच अरोग्यो, होइ परसण पावन्द ॥ ४ ॥
सहस गोप विच श्याम विराजे, ज्यों तारा विच चन्द ॥ ५ ॥
सव संतोंका काज सुधारा, मीरां सूं दूर रहन्द ॥ ६ ॥

३२४—भजन

म्हारे गुरु गोविन्द री आण, गोरल ना पूजां ॥ टेक ॥
औरज पूजै गोरज्याजी, थे क्यूं पूजो न गोर ।
मन वांछत फल पावस्योजी, थे क्यूं पूजो ओर ॥ १ ॥
नहिं म्हे पूजां गोरज्याजी, नहिं पूजां अनदेव ।
परम सनेही गोविन्दो, थे कांई जाणो म्हारो भेव ॥ २ ॥
वाल सनेही गोविन्दो, साध सन्तांको काम ।
थे वेटी राठोड़की, थाने राज दियो भगवान ॥ ३ ॥
राज करे वांने करणे दीज्यो, मैं भगतां री दास ।
सेवा साधू जननकी, म्हारे राम मिलणकी आस ॥ ४ ॥
लाजै पीहर सासरो, माइतणो मोसाल ।
सवही लाजै मेड़तियाजी थासूं वुरा कहे संसार ॥ ५ ॥

चोरी करां न मारगी, नहिं मैं करूं अकाज।
पुन्नके मारग चालतां, झख मारो संसार॥ ६॥
नहिं मैं पीहर सासरे, नहिं पियाजी री साथ।
मीरांने गोबिन्द मिल्याजी, गुरु मिलिया रैदास॥ ७॥

३२५—भजन

भाभी मीरां कुलने लगाई गाल,
ईडरगढ़का आया ओलमा।
बाई ऊदां थारे म्हारे नातो नाहिं,
बासो बस्याँका आया जी ओलमा॥ १॥
भाभी मीरां साधांका संग निवार,
सारो शहर थारी निन्दा करै।
बाई ऊदां करे तो पड़्या झख मारो,
मन लाग्यो रमता रामसूं॥ २॥
भाभी मीरां पहरोनो मोत्यांको हार,
गहणो पहर्यो रतन जड़ावको।
बाई ऊदां छोड़्यो मैं मोत्यांको हार,
गहणो तो पहर्यो शील सन्तोपको॥ ३॥
भाभी मीरां औराँके आवेजी आछी रूढ़ी जान,
थारे आवे छे हरिजन पावणा।
बाई ऊदां चढ़ चौबारां झांक,
साधांको मण्डल लागे सुहावणो॥ ४॥

भाभी मीरां लाजे लाजे गढ़ चीतौड़,
राणोजी लाजै गढ़ रा राजवी ।
बाई ऊदां ताण्यो ताण्यो चीतोड़,
राणाजी ताण्या गढ़का राजवी ॥ ५ ॥
भाभी मीरां लाजे लाजे थारा मायड़ बाप,
पीहर लाजे जी थारो मेड़तो ।
बाई ऊदां ताण्या म्हे तो मायड़ बाप,
पीहर ताण्योजी मेड़तो ॥ ६ ॥
भाभी मीरां राणाजी कियो छै थाँ पर कोप,
रतन कचोले विष घोलियो ।
बाई ऊदां घोल्यो तो घोलण द्यो,
कर चिरणामृत वोही म्हे पीवस्यां ॥ ७ ॥
भाभी मीरां देखतड़ाँ ही मर जाय,
यो विष कहिये बासक नागको ।
बाई ऊदां नहीं म्हारे माय न बाप,
अमर डाली धरती झेलिया ॥ ८ ॥
भाभी मीरां राणाजी ऊभा छे थारे द्वार,
पोथी मांगे छे थारा ज्ञानकी ।
बाई ऊदां पोथी म्हारी खांडाकी धार,
ज्ञान निभावन राणो है नहीं ॥ ९ ॥
भाभी मीरां राणाजी रो वचन न लोप,
उन रूठ्यां भीड़ी कोउ नहीं ।

बाई ऊदाँ रमापति आवे म्हारे भीड़,
अरज करूं छूं तासूं वीनती ॥ १० ॥

३२६—भजन

थाने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानो वात हमारी ॥ टेक ॥
राणो रोस कियो थाँ ऊपर, साधोंमें मत जारी।
कुलके दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रही भारी ॥१॥
साधां रे संग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी।
बड़ां वरां थे जनम लियो छै, नाचो दे दे तारी ॥२॥
वर पायो हिंदुवाणे सूरज, थे कांई मन धारी।
मीराँ गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ॥३॥

३२७—भजन

*मीराँ बात नहीं जग छानी, ऊदांबाई समझो सुघर सयानी ॥टेक॥
साधू मात पिता कुल मेरे, सज्जन सनेही ज्ञानी।
सन्तचरणकी सरण रैण दिन, सत्य कहत हूं वानी ॥१॥
राणाने समझावो जावो, मैं तो वात न मानी।
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, संताँ हाथ विकानी ॥२॥

३२८—भजन

भाभी बोलो बचन बिचारी ॥ टेक ॥
साधोंकी संगत दुख भारी, मानो बात हमारी।
छापा तिलक गल हार उतारो, पहिरो हार हजारी ॥ १ ॥

---

* ३२६ नं० भजनका उत्तर

रतन जड़ित पहिरो आभूपण, भोगो भोग अपारी ॥
मीरांजी थे चलो महलमें, थाने सोगन म्हारी ॥ २ ॥
भाव भगत भूपण सजे, शील सन्तोप सिणगार ।
ओढ़ी चूनर प्रेमकी, गिरधरजी भरतार ॥ ३ ॥
ऊदां बाई मन समझ, जावो अपणे धाम ।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम ॥ ४ ॥

३२९—भजन

रमैया बिन नींद न आवे ।
नींद न आवे विरह सतावे, प्रेमकी आंच ढुलावे ॥ टेक ॥
बिन पिया जोत मन्दिर अंधियारो, दीपक दाय न आवे ।
पिया बिना मेरी सेज अलूणी, जागत रैण बिहावे ॥
पिया कबरे घर आवे ॥रमैया०॥१॥
दादुर मोर पपिहरा बोलै, कोयल शब्द सुणावे ।
घुमंड घटा ऊलर होय आई, दामिन दमक डरावे ॥
नैन झर लावे ॥ रमैया० ॥२॥
कहा करूं कित जाऊं मोरी सजनी, वेदन कूण बुतावे ।
विरह नागने मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावे ॥
जड़ी घस लावे ॥ रमैया० ॥३॥
को है सखा सहेली सजनी, पिया कूं आन मिलावे ।
मीरांके प्रभु कबरे मिलोगे, मन मोहन मोहिं भावे ॥
कबै हंसकर बतलावे ॥ रमैया० ॥४॥

३३०—भजन

किण संग खेलूं होली, पिया तज गये हैं अकेली ॥ टेक ॥
माणिक मोती सब हम छोड़े, गलमें पहनी सेली ।
भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गैली ॥
मुझे दूरी क्यूं म्हेली ॥ किण० ॥१॥
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हमसे करी क्यूं पहेली ।
बहु दिन बीते अजहुं नहिं आये, लग रही तालावेली ॥
किण विलमाये हेली ॥ किण० ॥२॥
श्याम बिना जिवड़ो मुरझावे, जैसे जल विन वेली ।
मीरां कूं प्रभु दरशण दीज्यो, जनम जनमकी चेली ॥
दरसन विन खड़ी दुहेली ॥किण०॥३॥

३३१—भजन

बादल देख झरी हो, श्याम मैं, बादल देख झरी ॥ टेक ॥
काली पीली घटा उमंगी, वरस्यो एक घरी ॥ १ ॥
जित जाऊं तित पानिहि पानी, हुई सब भोम हरी ॥ २ ॥
जाका पिव परदेस बसत है, भीजै वार खरी ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, कोज्यो प्रीत खरी ॥ ४ ॥

३३२—भजन

भीजे म्हारो दावण चीर, सावणियो लूम रह्योर ॥ टेक ॥
आप तो जाय विदेसां छाये, जिवड़ो धरत न धीर ॥१॥
लिख लिख पतियां सन्देशो भेजूं, कब घर आवै म्हारो पीव ॥२॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, दरशण द्योनी बलवीर ॥३॥

३३३—भजन

छांडो लंगर मोरी बहियां गहो ना ॥ टेक ॥
मैं तो नार पराये घरको, मेरे भरोसे गुपाल रहोना ॥१॥
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मेरे प्राण हरोना ॥२॥
बृन्दावनकी कुंज गलीमें, रीत छोड़ अनरीत करोना ॥३॥
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल चित टारे टरोना ॥४॥

३३४—भजन

साजन सुध ज्यूं जाने त्यूं लीजे हो ॥ टेक ॥
तुम बिन मेरे और न कोई, कृपा रावरी कीजे हो ॥ १ ॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, यूं तन पल पल छीजे हो ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, मिल बिछुरन नहिं कीजे हो ॥ ३ ॥

३३५—भजन

तुम जीमो गिरिधर लाल जी ॥ टेक ॥
मीरां दासी अरज करे छे, सुनिये परम दयालजी ॥ १ ॥
छप्पन भोग छतीसों विञ्जन, पावो जन प्रतिपालजी ॥ २ ॥
राज भोग आरोगो गिरिधर, सनमुख राखो थालजी ॥ ३ ॥
मीरां दासी चरण उपासी, कीजे वेग निहालजी ॥ ४ ॥

३३६—भजन

राणाजी थारो देसड़लो रंग रूड़ो ॥ टेक ॥
थारे मुलकमें भक्ति नहीं छै, लोग वसें सब कूड़ो ॥ १ ॥
पाट पटम्बर सबही मैं त्यागा, सिर बांधली जूड़ो ॥ २ ॥

माणिक मोती सबही मैं त्यागा, तज दियो करको चूड़ो ॥३॥
मेवा मिसरी मैं सबही त्यागा, त्यागो छे सक्कर बूरो ॥४॥
तनकी मैं आस कबहुं नहिं कीनी, ज्यूं रण मांही सूरो ॥५॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, वर पायो मैं पूरो ॥६॥

३३७—भजन

पिया तेरे नाम लुभाणी हो ॥ टेक ॥
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसे पाहण पाणी हो ॥१॥
सुकिरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी हो।
गणिका कीर पढ़ावताँ, बैकुण्ठ बसाणी हो ॥२॥
अरध नाम कुंजर लियो, वांकी अवध घटानी हो।
गरुड़ छांड़ि हरि धाइया, पशु जूण मिटाणी हो ॥३॥
अजामीलसे ऊधरे, जम त्रास नसानी हो।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ॥४॥
नाम महातम गुरु दियो, परतीत पिछाणी हो।
मीरां दासी रावली अपणी कर जाणी हो ॥५॥

३३८—भजन

मेरे तो एक राम नाम दूसरो न कोई।
दूसरो न कोई साधो, सकल लोक जोई ॥ टेक ॥
भाई छोड़या बंधु छोड़या, छोड़या सगा सोई।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥१॥
भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई।
प्रेम नीर सींच सींच विष वेल धोई ॥२॥

दधि मथ घृत काढ़ लियो, डार दई छोई।
राणो विषको प्यालो भेज्यो, पीय मगन होई ॥३॥
अब तो बात फैल पड़ी, जाणे सब कोई।
मीरां राम लगण लगी, होणी होय सो होई ॥४॥

३३९—भजन

मेरे मन रामनामा बसी ॥ टेक ॥
तेरे कारण श्याम सुन्दर, सकल लोगाँ हंसी ॥१॥
कोई कहे भई बौरी, कोई कहे कुल नसी।
कोई कहे मीरां दीप आगरी, नाम पियासूं रसी ॥२॥
खांड़ धार भक्तीकी न्यारी, काटि है जम फंसी।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, शब्द सरोवर धंसी ॥३॥

३४०—भजन

गोविंद सूं प्रीत करत, तबहिं क्यूं न हटकी।
इब तो बात फैल परी, जैसे बीज बटकी ॥टेक॥
बीच को विचार नाहिं, छांय परी तटकी।
अब चूको तो ठौर नाहिं, जैसे कला नटकी ॥१॥
जलकी घुरी गांठ परी, रसना गुण रटकी।
इब तो छुड़ाय हारी, बहुत बार झटकी ॥२॥
घर घर में घोलमठोल, बानी घट घटकी।
सबहीं कर शीश धारि, लोक लाज पटकी ॥३॥
मदकी हस्ती समान, फिरत प्रेम लटकी।
दासि मीरां भक्ति बूंद हिरदय बीच गटकी ॥४॥

३४१—भजन

अरज करेछे मीरां राकड़ी, ऊभी ऊभी अरज करेछे ॥टेक॥
मणिधर स्वामी म्हारे मंदिर पधारो, सेवा करूं दिन रातड़ी ॥१॥
फुलना रे तोड़ा, फुलना रे गजरा, फुलना रे हार फुल पाँखड़ी ॥२॥
फुलना रे गादी फुलना रे तकिया, फुलना रे माथ री पछेड़ी ॥३॥
पय पकवान मिठाई मेवा, सेवैयां ने सुन्दर दहीँड़ी ॥४॥
लवंग सुपारी एलची तज, वाला काथा चुनारी पान बीड़ी ॥५॥
सेज बिछाऊं ने पासा मंगाऊं, रमवा आवो तो जाय रातड़ी ॥६॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, (वाला) तमने जोतां ठरे आँखड़ी ॥७॥

३४२—भजन

राणाजी मैं सांवरे रंगराची ॥टेक॥
साज सिंगार बांध पग घूंघरू, लोक लाज तज नाची ॥१॥
गई कुमति लइ साधकी संगत, भगत रूप भई साँची ॥२॥
गाय गाय हरिके गुण निशिदिन, काल ब्याल सों बाची ॥३॥
उस बिन सब जग खारौ लागत, और बात सब काची ॥४॥
मीराँ श्री गिरिधरणलालसों भगति रसीली जाची ॥५॥

३४३—भजन

हेली म्हांसूं हरि बिन रह्यौ न जाय ॥टेक॥
सास लड़े मेरी नणद खिजावे, राणो रह्यो रिसाय ॥१॥
पहरो भी राख्यो चौकी बठाई, तालो दियो जड़ाय ॥२॥
पूर्व जन्मकी प्रीत पुराणी, सो क्यूं छोड़ी जाय ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, और न आवे म्हारी दाय ॥४॥

२४४—भजन

माई म्हाने सुपने में, परण गया जगदीश।
सोतीको सुपनो आवियाजी, सुपनो विश्वावीस ॥टेक॥
गैली दीखे मीरां बावली, सुपनो आल जंजाल।
माई म्हाने सुपनेमें, परण गया गोपाल ॥१॥
अंग अंग हल्दी मैं करी जी, सुधे भीज्यां गात।
माई म्हाने सुपनेमें, परण गया दीनानाथ ॥२॥
छप्पन क्रोड़ जहां जान पधारे, दुल्हो श्री भगवान।
सुपने में तोरण बांधियो जी, सुपने में आई जान ॥३॥
मीरां ने गिरिधर मिल्या जी, पूर्व जनमके भाग।
सुपने में म्हाने परण गया जी, हो गयो अचल सुहाग ॥४॥

२४५—भजन

रे साँवलिया म्हारे आज रंगीली गणगोर छेजी ॥ टेक ॥
काली पीली बादली, बिजली चिमके, मेघ घटा घणघोर छेजी ॥१॥
दादुर मोर पपीहो बोले, कोयल कर रही शोर छेजी ॥२॥
आप रंगीला सेज रंगीली, रंगीलो सारो साथ छेजी ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चरणाँमें म्हारो जोर छेजी ॥४॥

२४६—भजन

सखीरी लाज बैरण भई ॥ टेक ॥
श्रीलाल गोपालके संग काहे नाहीं गई ॥ १॥
कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई ॥ २ ॥

रथ चढ़ाय गोपाल लैगो हाथ मींजत रही ॥ ३ ॥
कठिन छाती श्याम बिछुरत, बिरहतें तन तई ॥ ४ ॥
दासि मीरां लाल गिरिधर बिखर क्यों ना गई ॥ ५ ॥

३४७—भजन

सखीरी मैं तो गिरधरके रंग राती ॥ टेक ॥
पचरंग मेरा चोला रंगादे, मैं झुरमुट खेलण जाती ।
झुरमुटमें मेरो साईं मिलेगो, खोल अडम्बर गाती ॥ १ ॥
चन्दा जायगा, सुरज जायगा, जायगा धरण अकासी ।
पवन पाणि दोनों ही जाँयगे, अटल रहे अविनाशी ॥ २ ॥
सुरत निरतका दिवला संजोले, मनसाकी कर वाती ।
प्रेम हटीका तेल बना ले, जगा करे जिन राती ॥ ३ ॥
जिनके पिय परदेश बसत हैं, लिखि लिखि भेजें पाती ।
मेरे पिय मो मांहि बसत हैं, कहूं न आती जाती ॥ ४ ॥
पीहर बसूं न बसूं सास घर, सतगुरु शब्द संगाती ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां हरि रंग राती ॥ ५ ॥

३४८—भजन

तुम्हरे कारण सब सुख छोड्या, अब मोहिं क्यूं तरसावो ॥टेक॥
बिरह बिथा लागी उर अन्दर, सो तुम आय बुझावो ॥१॥
इब छोड्यां नहिं बनै प्रभूजी, हंसकर तुरत बुलावो ॥२॥
मीराँ दासी जनम जनमकी, अंग सूं अंग लगावो ॥३॥

———

३४९—भजन

प्रेमनी[1] प्रेमनी प्रेमनी रे, मन लागी कटारी प्रेमनी रे ॥ टेक ॥
जल जमुना माँ भरवा गया ताँ, हती गागर माथे हेमनीरे[2] ॥१॥
काँचे ते ताँतने हरिजी ये बांधी, जेम खेंचे तेमनीरे[3] ॥२॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, सांवली सुरत शुभ एमनी[4] ॥३॥

३५०—भजन

मीराँ मन मानी सुरत सैल असमानी ॥ टेक ॥
जब जब सुरत लगे वा घरकी, पल पल नैनन पानी ॥१॥
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी ॥२॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवे, भावे अन्न न पानी ॥३॥
ऐसी पीर विरह तन भीतर, जागत रैण विहानी ॥४॥
ऐसो वैद मिले कोई भेदी, देश विदेश पिछानी ॥५॥
तासों पीर कहूं तन केरी, फिर नाहिं भरमों खानी ॥६॥
खोजत फिरौं भेद वा घरको, कोई न करत बखानी ॥७॥
रैदास संत मिले मोहिं सत्गुरु, दीन्हा सुरत सहदानी ॥८॥
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ॥९॥
मीराँ खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ॥१०॥

---

(१) की (२) मैं सोनेका घड़ा सिर पर धर कर जल भरने जमुना को गई थी। (३) हरिने कच्चे धागे अर्थात् प्रेमकी रस्सीसे मुझे बाँध लिया और जहाँ चाहे खींचे लिये जाते हैं। (४) ऐसी।

३५१—भजन

श्यामको संदेशो आयो पतियाँ लिखाय माय ॥टेक॥
पतियां अनूप छाई, छतियां लीनी लगाय।
अञ्चलकी ओट दे दे, ऊधो पै लई वँचाय ॥१॥
बालकी जटा बनाऊँ, अंग तो भभूत लाऊँ।
फाड़ूं चीर पहरूं कंथा, जोगण बण जाऊं माय ॥२॥
इन्द्रके नगारे बाजे, बादलकी फौज छाई।
तोपखाना पेसखाना, उतरा है बागां आय ॥३॥
गोकुल उजाड़ दीन्यो, मथुरा लई बसाय।
कुबजासूं बांध्यो हेत, मीरां है गाई सुनाय ॥४॥

३५२—भजन

कोई कछु कहे मन लागा ॥ टेक ॥
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूं सोनेमें सुहागा ॥ १ ॥
जनम जनमको सोयो मनुवो, सतगुरु शब्द सुण जागा ॥ २ ॥
मात पिता सुत कुटम कबीला, टूट गया ज्यूं तागा ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, भाग हमारा जागा ॥ ४ ॥

३५३—भजन

नैनन बनज बसाऊँरी, जो मैं साहब पाऊँ ॥ टेक ॥
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाऊं ॥ १ ॥
त्रिकुटी महलमें बना है झरोखा, वहाँसे झांकी लगाऊँ ॥ २ ॥
सुन्न महलमें सुरत जमाऊँ, सुखकी सेज बिछाऊँ ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, बार बार बलिजाऊँ ॥ ४ ॥

३५४—भजन

तुम आज्योजी रामा, आवत आमाँ श्यामा ॥ टेक ॥
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरैं मनोरथ कामा ॥ १ ॥
तुम विच हम विच अँतर नाहीं, जैसे सूरज घामा ॥ २ ॥
मीरांके मन और न माने, चाहे सुन्दर श्यामा ॥ ३ ॥

३५५—भजन

रावरो विड़द मोहिं रूढ़ो लागे, पीड़ित पराये प्राण ॥ टेक ॥
सगो सनेही मेरो और न कोई, वैरी सकल जहान ॥ १ ॥
ग्राह गह्यो गजराज उबार्यो, वूड़ न दियो छै जान ॥ २ ॥
मीरां दासी अरज करत है, नहिं जी सहारो आन ॥ ३ ॥

३५६—भजन

इक अरज सुणो पिय मोरी, मैं किण संग खेलूं होरी ॥ टेक ॥
तुम तो जाय विदेसाँ छाये, हमसे रहे चित चोरी।
तन आभूपण छोड़े सब ही, तज दिये पाट पटोरी ॥
मिलणकी लग रही डोरी ॥ इक० ॥१॥
आप मिल्यां विन कल न पड़त है, त्यागे तिलक तमोली।
मीरांके प्रभु मिलज्यौ माधो, सुणज्यो अरजी मोरी ॥
राम विन विरहण दोरी ॥ इक० ॥२॥

३५७—भजन

रंग भरी रंग भरी रंगसूं भरीरी, होली आई प्यारी रंगसूं भरीरी ॥टेक
उड़त गुलाल लाल भये वादल, पिचकारिनकी लगो झरीरी ॥ १ ॥

चोवा चन्दन और अरगजा, केसर गागर भरी धरीरी ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चेरी होय पांयनमें परी री ॥ ३ ॥

३५८—भजन

सावण दे रह्यो जोरा, घर आवोजी श्याम मोरा ॥ टेक ॥
उमड़ घुमड़ चहुं दिशिसे आया, गरजत है घनघोरा ॥ १ ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही शोरा ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, जो वारूं सोई थोरा ॥ ३ ॥

३५९—भजन

बरसे बदरिया सावणकी, सावणकी मनभावनकी ॥ टेक ॥
सावणमें उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुणी हरि आवणकी ॥ १ ॥
उमड़ घुमड़ चहुं दिशिसे आयो, दामिन दमके झर लावगकी ॥ २ ॥
नन्हीं नन्हीं बूंदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावनकी ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, आनन्द मंगल गावनकी ॥ ४ ॥

३६०—भजन

मेहा बरसबो करे रे, आज तो रमैयो मेरे घरे रे ॥ टेक ॥
नान्ही नान्ही बूंद मेघ घन बरसे, सूखे सरवर भरे रे ॥ १ ॥
बहुत दिनां पै प्रीतम पायो, बिछुड़नको मोहिं डर रे ॥ २ ॥
मीरां कहे अति नेह जुड़ायो, मैं लियो पुरवलो वर रे ॥ ३ ॥

३६१—भजन

रे पपीहा प्यारे कबको वैर चितारो ॥ टेक ॥
मैं सूती छी अपने भवनमें, पिय पिय करत पुकारो ॥ १ ॥

दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़े करवत सारो ॥ २ ॥
उठि बैठो वृच्छकी डाली, बोल बोल कंठ सारो ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, हरि चरणां चित धारो ॥ ४ ॥

३६२—भजन

आये आये जी म्हाराज आये ॥ टेक ॥
तज वैकुण्ठ तज्यो गरुड़ासन, पवन वेग उठ ध्याये ॥ १ ॥
जब हीं दृष्टि परे नंदनन्दन, प्रेम भक्ति रस प्याये ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल चित्त लाये ॥ ३ ॥

३६३—भजन

कमलदल लोचना तैंने कैसे नाथ्यो भुजङ्ग ॥ टेक ॥
पैसि पताल कालि नाग नाथ्यो, फण फण निर्त करन्त ॥ १ ॥
कूद पर्यो न डर्यो जल मांही, और काहू नहिं सङ्क ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, श्रीवृन्दावन चन्द ॥ ३ ॥

३६४—भजन

इब नाहिं विसरूं, म्हारे हिरदे लिख्यो हरिनाम ।
म्हारे सतगुरु दियो बताय, इब नाहिं विसरूं रे ॥ टेक ॥
मीरां बैठी महलमें रे, ऊठत बैठत राम ।
सेवा करस्यां साधकी, म्हारे और न दूजो काम ॥ १ ॥
राणोजी बतलाइया, कइ देणो जवाब ।
पण लाग्यो हरि नामसूं, म्हारे दिन दिन दूनो लाभ ॥२॥
सींप भर्यो पानी पीवे रे, टांक भर्यो अन्न खाय ।
बतलायां बोली नहीं रे, राणोजी गया रिसाय ॥ ३ ॥

विष रा प्याला राणोजी भेज्या, दीज्यो मेड़तणीके हाथ।
कर चरणामृत पी गई, म्हारे सवल धणीको साथ ॥ ४ ॥
विषको प्यालो पी गई, भजन करे उस ठौर।
थारी मारी ना मरूं, म्हारो राखणवालो और ॥ ५ ॥
राणाजी मोपर कोप्यो रे, मारूं एक न सेल।
माऱ्यां पिराछत लागसी, म्हाने दीज्यो पीहर मेल ॥ ६ ॥
राणो मोपर कोप्यो रे, रती न राख्यो मोद।
ले जाती वैकुण्ठमें यो तो समझ्यो नहीं सिसोद ॥ ७ ॥
छापा तिलक वणाइया, तजिया सव सिणगार।
मैं तो शरणे रामके, भल निन्दो संसार ॥ ८ ॥
माला म्हारे देवड़ी, सील वरत सिणगार।
इवके किरपा कीजियो, हूं तो फिर बांधूं तलवार ॥ ९ ॥
रथां वैल जुतायके, ऊँटां कसियो भार।
कैसे तोडूं रामसूं, म्हारो भो भोरो भरतार ॥ १० ॥
राणो सांड्यो मोकल्यो, जाज्यो एके दौड़।
कुलकी तारण अस्तरी, या तो मुरड़ चली राठोड़ ॥११॥
सांडो पाछो फेऱ्यो रे, परत न देस्यां पांव।
कर सूरा पण नीसरी, म्हारे कुण राणे कुण राव ॥१२॥
संसारी निन्दा करे रे दुखियो सव परिवार।
कुल सारो ही लाजसी, मीरां थे जो भयाजी ख्वार ॥१३॥
राती माती प्रेमकी, विष भगतको मोड़।
राम अमल माती रहे, धन मीरां राठोड़ ॥१४॥

३६५—भजन

आज म्हारे साधू जननो संग रे, राणा म्हारा भाग भला ॥ टेक ॥
साधू जननो संग जो करिये, चढ़े ते चोगुणो रंग रे ॥ १ ॥
साकट जननो संग न करिये, पड़े भजनमें भंग रे ॥ २ ॥
अड़सठ तीरथ सन्तोंने चरणे, कोटि काशीने सोय गंग रे ॥३॥
निन्दा करेसे नरक कुण्ड मां जास्यो, थासे आंधला अपंग रे ॥४॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, सन्तो नीरज म्हारे अंग रे ॥५॥

३६६—भजन

लेतां लेतां राम नामके, लोकड़ियां तो लाज मरे छे ॥ टेक ॥
हरि मन्दिर जातां पावलियां, दूखे, फिरि आवे सारे गांव रे ॥ १ ॥
झगड़ो थाय त्यां दौड़ीने जाय रे, मुकीने घर ना काम रे ॥ २ ॥
भांड गवैया गणिका नृत्य करतां, वेसी रहे चारों जाम रे ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल चित हाम रे ॥ ४ ॥

३६७—भजन

आवत मोरी गलियनमें गिरिधारी, मैं तो छुप गई लाजकी मारी ॥टेक॥
कुसूमल पाग केसरिया जामो, ऊपर फूल हजारी।
मुकुट ऊपर छत्र विराजे, कुण्डलकी छिब न्यारी ॥ १ ॥
केसरी चीर दरियाईको लेंगो, ऊपर अंगिया भारी।
आवत देखे कृष्ण मुरारी, छुप गई राधा प्यारी ॥ २ ॥
मोर मुकुट मनोहर सोहे, नथनीकी छिब न्यारी।
गल मोतिनकी माल विराजे, चरण कमल बलिहारी ॥ ३ ॥

ऊभी राधा अरज करत है, सुणज्यो किसन मुरारी।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल पर वारी ॥ ४ ॥

३६८—भजन

राणाजी म्हे तो गोविन्दका गुण गास्याँ ॥ टेक ॥
चरणामृतका नेम हमारे, नित उठ दरशण जास्यां ॥ १ ॥
हरि मन्दिरमें निरत करस्यां, घूंघरियां घमकास्याँ ॥ २ ॥
राम नामको झ्याझ चलास्याँ, भवसागर तिरज्यास्याँ ॥३॥
यह संसार वाड़का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ ॥ ४ ॥
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, निरख परख गुण गास्याँ ॥ ५ ॥

३६९—भजन

राणाजी तैं जहर दियो मैं जाणी ॥ टेक ॥
जैसे कञ्चन दहत अगिनमें, निकसत वारा वाणी ॥ १ ॥
लोक लाज कुल काण जगतकी, दइ बहाय जस पाणी ॥ २ ॥
अपने घरका परदा करले, मैं अबला बौराणी ॥ ३ ॥
तरकस तीर लग्यो मेरे हिय रे, गरक गयो सनकाणी ॥ ४ ॥
सब सन्तन पर तन मन वारौं, चरण कमल लपटाणी ॥ ५ ॥
मीरांको प्रभु राख लई है, दासी अपणी जाणी ॥ ६ ॥

३७०—भजन

सीसोद्या राणो, प्यालो म्हाने क्यूं रे पठायो ॥ टेक ॥
भली बुरी तो मैं नहिं कीन्हीं, राणो क्यूं है रिसायो।
थाने म्हाने देह दिवी है, ज्यांरो हरिगुण गायो ॥ १ ॥

कनक कटोरे ले विप घोल्यो, दयाराम पंडो ल्यायो ।
अठी उठी तो मैं देख्यो, कर चरणामृत प्यायो ॥ २ ॥
आज कालकी मैं नहिं राणा, जद यो ब्रह्मण्ड छायो ।
मेढ़तियाँ घर जन्म लियो है, मीराँ नाम कहायो ॥ ३ ॥
प्रह्लादकी प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड़ वेगो आयो ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, जनको बिड़द वढ़ायो ॥ ४ ॥

३७१—भजन

वैदको सारो नहीं रे माई, वैदको नहिं सारो ॥ टेक ॥
कहत ललिता वैद बुलाऊँ, आवै नन्दको प्यारो ।
वो आयां दुख नाहिं रहेगो, मोहिं पतियारो ॥ १ ॥
वैद्य आयकर हाथ जो पकड़्यो, रोग है भारो ।
परम पुरुषकी लहर व्यापी, डस गयो कारो ॥ २ ॥
मोर चन्दो हाथ ले, हरि देत है डारो ।
दासि मीराँ लाल गिरिधर; विप कियो न्यारो ॥ ३ ॥

३७२—भजन

जबसे मोहिं नन्दनन्दन दृष्टि पड़्यो माई ।
तबसे परलोक लोक कछू ना सुहाई ॥ १ ॥
मोरनकी चन्द्रकला शीश मुकुट सोहै ।
केशरको तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥ २ ॥
कुण्डलकी अलक झलक कपोलन पर छाई ।
मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ३ ॥

कुटिल भृकुटि तिलक भाल चितवनमें लैना।
खञ्जन अरु मधुप मीन भूले मृगछौना ॥ ४ ॥
सुन्दर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा।
नटवर प्रभु भेष धरे, रूप अति विसेषा ॥ ५ ॥
अधर विम्ब अरुण नैन मधुर मन्द हाँसी।
दसन दमक दाड़िम दुति चमके चपलासी ॥ ६ ॥
छुद्र घण्ट किंकिनी अनूप धुनि सुहाई।
गिरिधर अंग अंग मीराँ बलि जाई ॥ ७ ॥

३७३—भजन

पिया म्हारे नैणा आगे रहज्यो ॥टेक॥
नैणा आगे रहज्यो, म्हाने भूल मत जाज्यो ॥१॥
भवसागरमें बही जात हूं, बेग म्हारी सुध लीज्यो ॥२॥
राणाजी भेज्या बिषका प्याला, सो अमृत कर दीज्यो ॥३॥
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, मिल बिछुड़न मत कीज्यो ॥४॥

३७४—भजन

स्वामी सब संसारके हो, साँचे श्री भगवान ॥टेक॥
स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती वीच समान।
सब में महिमा तेरी देखी, कुदरतके कुरवान ॥१॥
सुदामाके दारिद खोये, बालेकी पहिचान।
दो मुट्ठी तंडुलकी चावी, दीन्यो द्रव्य महान ॥२॥
भारतमें अर्जुनके आगे, आप भये रथवान।
उनने अपने कुलको देखा, छुट गये तीर कमान ॥३॥

ना कोइ मारे ना कोइ मरता, तेरा यह अज्ञान ।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यह गीताको ज्ञान ॥४॥
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बन्दी अपनी जान ।
मीरां गिरिधर शरणां तिहारी, लगै चरणमें ध्यान ॥५॥

३७५—भजन

पिया मोहिं आरत तेरी हो ॥टेक॥
आरत तेरे नामकी, मोहिं सांझ सबेरी हो ॥१॥
या तनको दिवला करूं, मनसा की बाती हो ।
तेल जलाऊं प्रेमको, बालूं दिन राती हो ॥२॥
पटियाँ पाड़ूँ गुरुज्ञान की, बुधि मांग सवारूं हो ।
पिया तेरे कारणे, धन जोवन वारूं हो ॥३॥
सेजड़िया बहु रंगिया, चंगा फूल बिछाया हो ।
रैण गई तारा गिणत, प्रभु अजहुं न आया हो ॥४॥
आया सावण भादुवा, वर्षा ऋतु छाई हो ।
श्याम पधारथा सेजमें; सूती सैन जगाई हो ॥५॥
तुम हो पूरे साइयाँ, पूरा सुख दीजे हो ।
मीरां व्याकुल विरहिणी, अपणी कर लीजे हो ॥६॥

३७६—भजन

मीरां लाग्यो रंग हरी, और न सब रंग अटक परी ॥टेक॥
चूड़ो म्हारे तिलक अरु माला, सील बरत सिंगारो ।
और सिंगार म्हारे दाय न आवे, यो गुरुज्ञान हमारो ॥१॥

कोई निन्दो कोइ बिन्दो म्हें तो, गुण गोविन्दका गास्यां ।
जिन मारग म्हारा साध पधारे, उण मारग म्हे जास्यां ॥२॥
चोरी न करस्यां, जिव न सतास्यां, काँई करसी म्हारो कोय ।
गजसे उतरके खर नहिं चढ़स्यां, ये तो बात न होय ॥३॥
सती न होस्यां गिरधर गास्यां, म्हारो मन मोह्यो घणनामी ।
जेठ बहूको नातो न राणाजी, हूं सेवक थे स्वामी ॥४॥
गिरिधर कंथ गिरधर धनि म्हारे, मात पिता वोइ भाई ।
थे थारे म्हे म्हारे राणाजी, यूं कहे मीरांबाई ॥५॥

३७७—भजन

राम तने[1] रंग राची, राणा मैं तो साँवलिया रंग राची ॥टेक॥
ताल पखावज मिरदंग बाजा, साधों आगे नाची ॥१॥
कोई कहे मीरां भई बावरी, कोई कहे मदमाती ॥२॥
विषका प्याला राणा भर भेज्या, अमृत कर आरोगी ॥३॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, जनम जनमकी दासी ॥४॥

३७८—भजन

मुझ अबलाने[2] मोटी नीरांत[3] थई[4] सामलो[5] घरेनु म्हारे साँचु[6] रे ॥टेक॥
वाली घड़ाऊँ बीठलबर[7] केरी, हार हरि नो म्हारे हिये रे ।
चीन माल चतुरभुज चुड़लो, सिद्ध सोनी घरे जइये रे ॥१॥

---

(१) के (२) को (३) भरोसा (४) है (५) साँवलिया (६) आया (७) कृष्ण ।

झांझरिया जगजीवन केरा, किसन गला री कंठी रे।
बिछुवा घुंघरा राम नरायण, अनवट अन्तर जामी रे ॥२॥
पेटी घड़ाऊं पुरुषोत्तम केरी, टीकम नामनूं[1] तालो रे।
कुञ्जी कराऊं करुणानन्द केरी, ते मां गेणा नूं मारूं रे ॥३॥
सासर वासो सजी ने बैठी, अब नथी काँचू[2] रे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हरि नु चरणे जांचू रे ॥४॥

३७९—भजन

गिरधर दुनिया दे छै बोल ॥टेक॥
गिरिधर मेरा मैं गिरिधरकी, कहो तो बजाऊं ढोल ॥१॥
आप तो जाय द्वारिका छाये, हमकूं लिखिया जोग ॥२॥
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, पिछले जनमका कौल ॥३॥

३८०—भजन

सुण लीजे विनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥टेक॥
तुम तो पतित अनेक उधारे, भवसागरसे तारे।
मैं सबका तो नाम न जानूं, कोई कोई भक्त बखाने ॥१॥
अम्बरीख सुदामा नामा, प्रभु पहुंचाये निज धामा।
ध्रुव जो पाँच बरसको बालक, दरस दियो घनश्यामा ॥ २ ॥
धना भक्तका खेत जमाया, कबिरा बैल चराया।
सेवरीके जूठे फल खाये, काज किया मनभाया ॥३ ॥
सदना औ सैना नाईको, तुम लीन्हा अपनाई।

---

(१) को (२) चोली।

कर्माकी खिचड़ी तुम खाई, गणिका पार लगाई ॥ ४ ॥
मीरां प्रभु तुमरे रंग राती, जानत सब दुनियाई ॥ ५ ॥

३८१—भजन

कभी म्हारी गली आवरे, जियाकी तपत बुझावरे।
म्हारे मोहना प्यारे ॥ टेक ॥
तेरे सांवले बदन पर, कई कोटि काम वारे।
तेरी खूबीके दरश पै, नैन तरसते म्हारे ॥ १ ॥
घायल फिरूं तड़फती, पीड़ जाने नहिं कोई।
जिस लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ॥ २ ॥
जैसे जलके सोखे, मीन क्या जिवें विचारे।
कृपा कीजै दरश दीजे, मीरां नन्दके दुलारे ॥ ३ ॥

३८२—भजन

करम गत टारे नाहिं टरे ॥टेक॥
सतबादी हरिचन्दसे राजा, नीच घर नीर भरे ॥
पाँच पाँडु अरु कुन्ती द्रोपदी हाड़ हिमालय जरे ॥१॥
जज्ञ किया बलि लेण इन्द्रासन सो पाताल धरे।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, विषसे अमृत करे ॥२॥

३८३—राग आसा मांड-तीन ताल

जूनो थयुं[1] रे देवल जूनो थयुं,
मारो हंसलो नानो ने देवल जूनो थयुं ॥टेक॥

---

(१) हो गया

आ रे काया रे हंसा, डोलवाने लागी रे,
पड़ी गया दांत मांयली रेखुं तो रयुं[1] ॥१॥
तारे ने मारे हंसा, प्रीत्युं बंधाणी रे,
उड़ी गयो हंस पांजरे[2] पड़ी रे रह्यु ॥२॥
बाई मीरां कहे छे प्रभु, गिरिधरना गुन,
प्रेम नो प्यालो तमने[3] पाऊं ने पीऊं ॥३॥

३८४—राग कालिंगड़ा-दीपचन्दी

नहिं रे विसारूं हरि, अन्तरमांथी[4] नहिं रे ॥टेक॥
जल जमुना नां पाणी रे जातां, शिर पर मटकी धरी ॥१॥
आवतां ने जातां मारग वच्चे, अमुलख[5] वस्तु जड़ी ॥२॥
आवतां ने जातां वृन्दारे वनमां, चरण तमारे पड़ी ॥३॥
पीला पीताम्बर जरकशी जामा, केसर आड़ करी ॥४॥
मोर मुकुट काने रे कुंडल, मुख पर मोरली धरी ॥५॥
बाई मीरां कहे प्रभु गिरिधरना गुण विठ्ठलवर ने वरी ॥६॥

३८५—राग झिंजोटी-तीन ताल

बोल मां बोल मां[6] बोल मां रे,
राधाकृष्ण विना बीजुं[7] बोल मां ॥टेक॥
साकर[8] शेलडीनो स्वाद तजीने,
कड़वो लींबडो[9] घोल मां रे ॥१॥

---

(१) रहा (२) पींजर (३) तुमको (४) हृदयमेंसे (५) अमूल्य (६) मत (७) दूसरा (८) शक्कर (९) नींबू।

चांदा सूरजनु तेज तजी ने,

आंगिया संगा थे प्रीत जोड़ मां रे ॥२॥

हीरा माणेक झवेर[1] तजी ने,

कथीर संगाते मणि तोल मां रे ॥३॥

मीरां कहे प्रभु गिरिधर नागर,

शरीर आप्युं सम तोल मां रे ॥४॥

३८६—राग काफी–द्रुत दीपचन्दी

मुखडानी माया लागीरे, मोहन प्यारा ॥ टेक ॥

मुखडुं में जोयुं तारु, सर्व जग थयुं खारुं ।

सब मारुं रह्युं न्यारुं रे ॥ १ ॥

संसारीडुं सुख एवुं, झांझ वाना नीर जेवुं ।

तेने तुच्छ करी फरीएरे ॥ २ ॥

मीरां बाई बलिहारी, आशा मने एक तारी ।

हवे हुं तो बड़ भागी रे ॥ ३ ॥

३८७—भजन

यदुवर लागत है मोहिं प्यारो ॥ टेक ॥

मथुरामें हरि जन्म लियो है, गोकुलमें पग धारो ।

जन्मत ही पुतना गति दीनी अधम उधारन हारो ॥ १ ॥

यमुनाके तीरे धेनु चरावे, ओढ़े कामलो कारो ।

सुन्दर वदन कमल दल लोचन पीताम्बर पटवारो ॥ २ ॥

---

(१) जवाहरात ।

मोर मुकट मकराकृत कुण्डल करमें मुरली धारो।
शंख चक्र गदा पद्म विराजै संतनको रखवारो ॥ ३ ॥
जल डूबन ब्रज राखि लियो है कर पर गिरिवर धारो।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर जीवन प्राण हमारो ॥ ४ ॥

३८८—भजन

कैसे आवों हो लाल तेरी ब्रज नगरी गोकुल नगरी ॥ टेक ॥
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहै यमुना गहरी।
पाँव धरयां मेरी पायल भीजे, कूदि परों बहि जाउं सगरी ॥१॥
मैं दधि बेचन जात वृन्दावन मारगमें मोहन झगरी।
बरज यशोदा अपने लालको छीन लई मेरी नथली ॥ २ ॥
रहु रहु ग्वालिनि झूठ न बोलो, कान अकेलो तुम सगरी।
मेरो कन्हैयो पाँच बरसको, तुम ग्वालिन अलमस्त भई ॥ ३ ॥
जाय पुकारों कंस रजासे, न्याय नहीं गोकुल नगरी।
वृन्दावनकी कुंज गलिनमें, बांह पकर राधे झगरी ॥ ४ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर साधु संग करि हम सुधरी ॥ ५ ॥

३८९—भजन

पिय इतनी विनती सुण मोरी, कोइ कहियोरे जाय ॥ टेक ॥
औरन सूं रस बतियां करत हो, हमसे रहे चित्त चोरी।
तुम बिन मेरे ओर न कोई, मैं शरणागत तोरी ॥ १ ॥
आवण कह गये अजहुं न आये, दिवस रहे अब थोरी।
मीरां कहै प्रभु कबरे मिलोगे, अरज करूं कर जोरी ॥ २ ॥

३९०—भजन

भई हौं बावरी सुनके बाँसुरी ॥ टेक ॥

श्रवण सुनत मोरी सुध बुध बिसरी, लगी रहत तामें मनकीगाँसुरी॥१॥

नेम धरम कोन कीनी मुरलिया कौन तिहारे पासुरी।

मीरांके प्रभु वश कर लीने सप्त सुरन ताननिकी फांसुरी ॥ २ ॥

३९१—भजन

कछु लेना न देना मगन रहना ॥ टेक ॥

नांय किसीकी कानां सुनाणी, नांय किसीकूं अपनी कहना ॥१॥

गहरी गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटियेसूं मिलता रहना ॥२॥

मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, सांवराके चरणांमें चित्त देना ॥३॥

३९२—भजन

बता दे सखि साँवरियाको डेरो किती दूर ॥ टेक ॥

इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच वहे यमुना पूर ॥ १ ॥

मथुराजीकी मस्त गुवालिन, मुखपर वरसे नूर ॥ २ ॥

मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, सांवरे से मिलना जरूर ॥ ३ ॥

३९३—भजन

वेग पधारो सांवरा कठिन बनी है, आप विना म्हारो कुण धनी है ॥टेक॥

दुखिया कूं देख देर मत कीजो, देरकी विरियां और घनी है ॥१॥

दिन नहीं चैन रैन नहिं निद्रा, दुशमनके हिये हरस घनी है।

गहरी गहरी नदिया नाव पुरानी, पार करो घनश्याम धनी है ॥२॥

जमड़ांकी फौजां प्रभु आन पड़ी है, वेग हटावो मोटा आप धनी है।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल बिच आन खड़ी है ॥३॥

३९४—भजन

रामा कहियेरे गोविन्द कहियेरे ॥ टेक ॥
कंकर हीरा एक सारसा हीरा किसकूं कहिये रे।
हीरा पणतो जद ही जाणूं, महंगा मोल विकइये रे ॥ १ ॥
कोयल कागा एक सरीसा, कोयल किसको कहिये रे।
कोयलपणतो जब ही जाणूं, मीठा वचन सुणइये रे ॥ २ ॥
हंसा बुगला एक सरीखा, हंसा किसकूं कहिये रे।
हंसा पण तो जद ही जाणूं, चुग चुग मोती खइये रे ॥ ३ ॥
जगत भगतके आवरे है, भगत किसकूं कहिये रे।
भगत पणो तो जब ही जाणूं बोल सभीका सहिये रे ॥ ४ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर हरि चरण चित दइये रे।
द्वारकाके ठाकुरके सरणमें जाकर रहिये रे ॥ ५ ॥

३९५—भजन

जावो कठेरे, रामा रवो अठे, सांवलिया ॥ टेक ॥
नित कांई जावो नित कांई आवो, नितका जायाँ से मान घटे ॥१॥
गोकुल वसवो फीकोई लागे मथुरामें कांई लाडू वँटे ॥ २ ॥
गोकुलमें कांई धेनु चरावो मथुरामें कांई गज लटे ॥ ३ ॥
राधाई रुकमण और सतभामा कुब्जा कांई थारे संग पटे ॥ ४ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर तुम सुमरां सूं संकट कटे ॥ ५ ॥

३९६—भजन

कोई कहियोरे मोहन आवणकी, आवणकी मन भावनकी ॥ टेक ॥
आप न आवे सांवरो पतिया न भेजे, वाण पड़ी ललचावनकी ॥ १ ॥
यह दोय नैन कयो नहीं माने, नदियां बहे जैसे सावन की ॥ २ ॥
क्या करूं कित जाऊं री सजनी, पांख नहीं उड़जावन की ॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चेरी भई तेरे पाँवन की ॥ ४ ॥

३९७—प्रभाती

जागो मोहन प्यारे ललना, जागो वंसीवारे ॥ टेक ॥
रजनी बीती भोर भई है, घर घर खुले किंवारे ।
गोपी दधि मथन करियत है, कंगनके झिनकारे ॥ १ ॥
उठो लालजी भोर भयो है, सुरनर ठाड़े द्वारे ।
ग्वाल वाल सब करत कोलाहल, जय जय शब्द उचारे ॥ २ ॥
माखन रोटी हाथमें लिन्हीं, गउअनके रखवारे ।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, शरण आये कूं त्यारे ॥ ३ ॥
मीरां बाई

३९८—भजन

कैसे जल लाऊं मैं पनघट जाऊं ॥ टेक ॥
होरी खेलत नन्द लाड़िलो क्योंकर निवहन पाऊं ॥ १ ॥
वे तो निलज फाग मदमाते हौं कुल-वधू कहाऊँ ॥ २ ॥
जो छुवें अंचल 'रसिक विहारी' धरती फार समाऊँ ॥ ३ ॥

——

३९९—भजन

कुंज पधारो रंग-भरी रैन ॥ टेक ॥
रँग भरी दुलहिन रँग भरे पीया श्याम सुन्दर सुख दैन ॥ १ ॥
रँग भरी सेज रची जहाँ सुन्दर रँग-भर्‍यो उलहत मैन ॥ २ ॥
'रसिक विहारी' प्यारी मिलि दोउ करौ रंग सुख चैन ॥ ३ ॥

४००— भजन

आज वरसाने मंगल गाई ॥ टेक ॥
कुंवर ललीको जनम भयो है घर घर वजत वधाई ॥ १ ॥
मोतिन चौक पुरावो गावो देहु असीस सुहाई ॥ २ ॥
'रसिक विहारी' की यह जीवनि प्रगट भई सुखदाई ॥ ३ ॥

४०१—भजन

आज वधावो वृषभानके धाम ॥ टेक ॥
मंगल कलश लिए आवत हैं गावत व्रजकी वाम ॥ १ ॥
कीरति कैं कीरति प्रगटी है रूप धरें अभिराम ॥ २ ॥
'रसिक विहारी' की यह जोरी हौंनी राधा नाम ॥ ३ ॥

४०२—भजन

धीरे झूलोरी राधा प्यारी जी ॥ टेक ॥
नवल रंगीली सबै झूलावत गावत सखियाँ सारी जी ॥ १ ॥
फरहरात अँचल चल चंचल लाज न जात संभारीजी ॥ २ ॥
कुञ्जन ओर दुरे लखि देखत प्रीतम 'रसिक विहारी' जी ॥ ३ ॥

४०३—भजन

ये बाँसुरियावारे ऐसो जिन बतराय रे ॥ टेक ॥
यों न बोलिए ! अरे घर बसे लाजनि दव गई हायरे ॥ १ ॥
हौं धाई या गैलहिं सोंरे, नैन चल्यो धौं जाय रे ॥ २ ॥
'रसिक बिहारी' नाँव पाय कै क्यों इतनो इतराय रे ॥ ३ ॥

४०४—भजन

भीजै म्हारी चूनरी हो नन्दलाल ॥ टेक ॥
डारहु केसर-पिचकारी जनि हा ! हा ! मदन गुपाल ॥ १ ॥
भीज बसन उघरो सो अंग अंग बड़ो निलज यह ख्याल ॥२॥
'रसिक बिहारी' छैल निडर थे पालेको जञ्जाल ॥ ३ ॥

४०५—भजन

बाजैं आज नन्द-भवन बधाइयाँ ॥ टेक ॥
गह गह आंगन भवन भयो है गोपी सव मिलि आइयाँ ॥ १ ॥
महरिन गावहिं कै भयो सुत है फूली अँगन माइयाँ ॥ २ ॥
'रसिक बिहारी' प्राणनाथ लखि देत असीस सुहाइयाँ ॥ ३ ॥

४०६—भजन

होरी होरी कहि बोलै सव ब्रजकी नारि ॥ टेक ॥
नन्द गांव-बरसानो हिलि मिलि गावत इत उत रस की गारि ॥ १ ॥
उड़त गुलाल अरुण भयो अम्बर चलत रंग पिचकारि कि धारि ॥२॥
'रसिक बिहारी' भानु दुलारी नायक संग खैलें खेलवारि ॥ ३ ॥

४०७—भजन

रतनारी हो थारी आंखड़ियां ॥ टेक ॥
प्रेम छकी रस-वस अलसाणी जाणि कमलकी पांखड़ियां ॥ १ ॥
सुन्दर रूप लुभाई गति मति हो गई ज्यूं मधु माखड़ियां ॥ २ ॥
रसिकविहारी' वारी प्यारी कौन वसी निसि कांखड़ियां ॥ ३ ॥

४०८—भजन

मैं अपना मन-भावन लीनौं, इन लोगनको कहा न कीनौं ॥ टेक ॥
मन दै मोल लयो री सजनी, रत्न अमोलक नन्द दुलारे।
नवल लाल रंग भीनो ॥ १ ॥
कहा गयो सब कोइ मुख मोरे, मैं पायो पीव प्रवीनौं।
'रसिक विहारी' प्यारो प्रीतम, सिर विधना लिख दीनौं ॥ २ ॥
बनीठनी जी उपनाम रसिकविहारी

४०९—भजन

होरिया रंग खेलन आओ ॥ टेक ॥
इला पिंगला सुखमणि नारी ता संग खेल खिलाओ।
सुरत पिचकारी चलाओ ॥ १ ॥
काचो रंग जगतको छांड़ौ सांचो रंग लगाओ।
वाहर भूल कवौं मत जाओ काया-नगर वसाओ ॥
तवै निरभै पद पाओ ॥ २ ॥
पांचौ उलट धरे घर भीतर अनहद नाद वजाओ।
सव वकवाद दूर तज दीजै ज्ञान-गीत नित गाओ ॥

तीनों ताप तीन गुण त्यागो, संसा शोक नशाओ।
कहै प्रताप कुंवरि हित चित्तसों फेर जनम नहिं पाओ ॥
जोतमें जोत मिलाओ ॥ ४ ॥

४१०—भजन

होरी खेलणकी रितु भारी ॥ टेक ॥
नर तन पाय भजन करि हरिको, है औसर दिन चारी।
अरे अब चेतु अनारी ॥ १ ॥
ज्ञान गुलाल अबीर प्रेम करि, प्रीत तणी पिचकारी।
सास उसास राम रंग भरि भरि सुरति सरीसी नारी ॥
खेल इन संग रचारी ॥ २ ॥
सुलटो खेल सकल जग खेलै उलटो खेल खेलारी।
सतगुरु सीख धारु सिर ऊपर, सतसंगति चलि जारी ॥
भरम सब दूरि गँवारी ॥ ३ ॥
ध्रुव प्रह्लाद बिभीखन खेले मीरां करमा नारी।
कहै प्रतापकुंवरि इमि खेले सो नहिं आवै हारी ॥
सीख सुनि लेहु हमारी ॥ ४ ॥

४११—भजन

अवधपुर घुमड़ि घटा रही छाय ॥ टेक ॥
चलत सुमन्द पवन पुरवाई नभ घनघोर मचाय ॥ १ ॥
दादुर मोर पपीहा बोलत दामिनि दमकि डुराय।
भूमि निकुञ्ज सघन तरुवरमें लता रही लिपटाय ॥ २ ॥

सरजू उमगत लेत हिलोरैं निरखत सिय रघुराय ।
कहत प्रतापकुंवरि हरि ऊपर वार वार वलि जाय ॥ ३ ॥

प्रतापकुँवरि

४१२—भजन

त्राहि त्राहि वृषभानु-नन्दिनी तोकों मेरी लाज ।
मन मलाहके परी भरोसे बूड़त जन्म जहाज ॥ १ ॥
उदधि अथाह थाह नहिं पइयत प्रवल पवनकी सोप ।
काम, क्रोध, मद, लोभ भयानक लहरनको अति कोप ॥२॥
ग्रसन पसारि रहे सुख तामहिं कोटि ग्राहसे जेते ।
बीच धार तहँ नाव पुरानी तामहिं धोखे केते ॥ ३ ॥
जो लगि सुभ मग करै पार यहि सो केवट मति नीच ।
वही वात अति ही बौरानो चहत डुबोवन बीच ॥ ४ ॥
याको कछु उपचार न लागत हिय हीनत है मेरो ।
सुन्दरकुंवरि बांह गहि स्वामिनि एक भरोसो तेरो ॥ ५ ॥

४१३—भजन

तजौ चोरीकी घात अयान की ॥ टेक ॥
नन्दरायके लला लड़ौ है सुन लो वात सयान की ॥ १ ॥
कीरति पठई दुलहा देखन तिय आई बरसान की ।
सुन्दरकुंवरि सुलच्छन गुणनिध ब्याहोगे वृषभानकी ॥२॥
आई है तो जाय कहेगी वात रावरी वान की ।
सास कहेगी चोर कुंवरको जैहै वह प्रिय प्रानकी ॥ ३ ॥

इक तो कारो चोर भयो फिर दुइया छाप लजानकी ।
सुनि हंसिहैं चन्दानिनि दुलही जिहँ उपमा न समानकी ॥४॥

४१४—भजन

मेरी प्राण-सजीवन राधा ॥ टेक ॥
कब तो बदन सुधाधर दरसै यों अंखियन हरै बाधा ॥ १ ॥
ठमकि ठमकि लरिकौहीं चालत आवत सामुहे मेरे ।
रसके वचन पियूष पोषके कर गहि बैठहु मेरे ॥ २ ॥
रहसि रंगकी भरी उमंगिनि ले चल संग लगाय ।
निभृत नवल निकुंज बिनोदन विलसत सुख दरसाय ॥ ३ ॥
रङ्गमहल संकेत सुगल कै टहलिन करतु सहेली ।
आज्ञा लहौं रहौं तहँ तट पर बोलत प्रेम-पहेली ॥ ४ ॥
मन-मंजरी जु कीन्हों किंकरि अपनावहु किन वेग ।
सुन्दरकुंवरि स्वामिनी राधा हियकी हरौ उदेग ॥ ५ ॥

सुन्दरकुंवरि

४१५—भजन

लगन म्हारी लागी चतुरभुज राम ॥ टेक ॥
श्याम सनेही जीवन येही औरन सों का काम ।
नैन निहारूं पल न बिसारूं सुमिरूं निसि-दिन श्याम ॥ १ ॥
हरि सुमिरण ते सब दुख जाये मन पाये विसराम ।
तन मन धन न्योछावर कीजै कहत दुलारी जाम ॥ २ ॥

———

४१६—भजन

भजु मन नन्द नन्दन गिरिधारी !! टेक ॥
सुखसागर करुणाको आगर भक्त-वछल बनवारी।
मीरां, करमा, कुबरी, सबरी, तारी गौतम नारी ॥ १ ॥
वेद पुराणनमें जस गायो, ध्याये होवत प्यारी।
जाम सुताको श्याम चतुरभुज लेगा खबर हमारी ॥ २ ॥

४१७—भजन

प्रीतम हमारो प्यारो श्याम गिरिधारी है ॥ टेक ॥
मोहन अनाथ नाथ, संतनके डोलें साथ,
वेद गुण गावे गाथ, गोकुल विहारी है।
कमल विशाल नैन, निपट रसीले वैन,
दीननको सुख-देन, चारभुजा धारी है ॥ १ ॥
केशव कृपानिधान, वाही सो हमारो ध्यान,
तन मन वारूं प्रान, जीवन मुरारी है।
सुमिरूं मैं साँझ भोर, वार वार हाथ जोर,
कहत प्रतापकोंर, जामकी दुलारी है ॥ २ ॥

४१८—भजन

प्रीतम प्यारो चतुरभुज वारोरी ॥ टेक ॥
हिय तें होत न न्यारो मेरे जीवन नन्द दुलारोरी ॥ १ ॥
जाम सुताको है सुखकारो, साँचो श्याम हमारो री ॥२॥

४१९—भजन

वारी थारा मुखड़ारी श्याम सुजान ॥ टेक ॥
मन्द मंद मुख हास बिराजै, कोटिन काम लजान ।
अनियारो अंखिया रस भीनी बांकी भौंह कमान ॥ १ ॥
दाड़िम दसन अधर अरुनारे, बचन सुधा सुख खान ।
जाम सुता प्रभुसों कर जोरे हो मम जीवन प्रान ॥ २ ॥

४२०—भजन

दरस मोहिं देहु चतुरभुज श्याम ॥ टेक ॥
करि किरपा करुनानिधि मोरे सफल करौ सब काम ॥ १ ॥
पाव पलक बिसरूं नहिं तुमको याद करूं नित भाम ॥ २ ॥
जाम सुताकी याही वीनती आनि करौ उर धाम ॥ ३ ॥

४२१—भजन

चतुरभुज झूलत श्याम हिंडोरे ॥ टेक ॥
कञ्चन खम्भ लगे मणि-मानिक रेशमकी रंग डोरें ॥ १ ॥
उमड़ि घुमड़ि घन बरसत चहुं दिसि नदियां लेत हिलोरें ।
हरि हरि भूमि-लता लिपटाई बोलत कोकिल मोरैं ॥ २ ॥
बाजत बीन पखावज वंशी गान होत चहुं ओरैं ।
जामसुता छवि निरख अनोखी वारूं काम किरोरैं ॥ ३ ॥

४२२—भजन

सखिरी चतुर श्याम सुन्दरसों, मोरी लगन लगीरी ॥ टेक ॥
लाख कहो अब एक न मानूं, उनके प्रीति पगीरी ॥ १ ॥

जा दिन दरस भयो ता दिन तें, दुविधा दूर भगीरी ॥ २ ॥
जामसुता कहे उर विच उनकी, भगती आन जगीरी ॥ ३ ॥

४२३—भजन

मो मन परी है यह बान ॥ टेक ॥
चतुरभुजके चरण परिहरि ना चहूं कछु आन ॥ १ ॥
कमल नैन विशाल सुन्दर मन्द मुख मुसुकान।
सुभग मुकुट सुहावनो शिर लसे कुंडल कान ॥ २ ॥
प्रगट भाल विशाल राजत, भौंह मनहुं कमान।
अंग अंग अनंगकी छवि, पीत पट फहरान ॥ ३ ॥
कृष्ण रूप अनूपको मैं, धरूं निसि दिन ध्यान।
जामसुता परतापके भुज चार जीवन प्रान ॥ ४ ॥

जाड़ेचीजी श्री प्रतापवाला

४२४—भजन

निरमोही कैसो जिय तरसावै ॥ टेक ॥
पहले झलक दिखाय हमैंकूं अब क्यों वेग न आवै ॥ १ ॥
कब सों तलफत मैं री सजनी वांको दरद न आवे ॥२॥
विष्णुकुंवरि दिलमें आकर के ऐसी पीर मिटावै ॥३॥

४२५—भजन

रूप परस्पर दोऊ लुभाने ॥ टेक ॥
नैन बैन सब मोहिं रहे हैं सब हैं हाथ विकाने।
अधिक पिया प्यारीके छवि पर करत न कछु अनुमाने ॥ १ ॥

प्रिया हुलस प्रीतम-अंग लागे बहुत उचक ललचाने।
विष्णुकुंवरि सखियाँ सब बोलीं मन मेरो उमगाने ॥ २ ॥

४२६—भजन

जमुना तट रंगकी कीच वही ॥ टेक ॥
प्यारेजी के प्रेम लुभानी आनंद रंग सुरंग चही ॥ १ ॥
फूलन हार गुथे सब सजनी युगल मदन-आनंद लही ॥ २ ॥
तन मन सुन्दरि भरमति विह्वल विष्णुकुंवरि है लेत सही ॥३॥

४२७—भजन

बृन्दावन-पावस छायो ॥ टेक ॥
चहुं दिसि कारे अम्बर छाये नील मणी प्रिय मुख छायो ॥ १ ॥
कोयल कूक सुमन कोमलके कालिन्दी कल कूल सुहायो ॥ २ ॥
विष्णुकुंवरि जग श्याम रंग छयो श्यामहिं सिन्धु समायो ॥३॥

४२८—भजन

बाजैरी बँसुरिया मन-भावनकी ॥ टेक ॥
तुम हो रसिक रसीली वंशी अति सुन्दर या मनकी।
या मुखसे वांको रस पोवे, अंग अंग सुखमा तनकी ॥ १ ॥
या मुखकी मैं दासि चरण रज दोउ सुख उपजावनकी।
सोभा निरखन सखी सबै मिलि विष्णुकुंवरि सुख पावनकी ॥ २ ॥

४२९—भजन

अब ही आये श्याम रे ॥ टेक ॥
मोह मन सब वाय प्यारी हो गई विन काम रे।
वोल वंशी हरत मन है वार वार सुदाम रे ॥ १ ॥

बैठ अधरा पै गर्वीली लसत अनुपम बाम रे।
श्यामके मुख सुभग शोभित विष्णुतन है छाम रे ॥ २ ॥

४३०—भजन

अबै मत जाओ प्राण पियारे ॥ टेक ॥
तुम्हें देख मन भयो उमंगमें मेरो चित्त चुरायो रे ॥ १ ॥
कहा कहूं या छवि बलिहारी नैननमें ठहरायो रे ॥ २ ॥
विष्णुकुंवरि पकड़ि चरणनको बरबस हृदय लगायो रे ॥ ३ ॥

४३१—भजन

नैन कूं प्यारे करि राख्यो श्याम ॥ टेक ॥
प्यारीके वारने जाऊँ मैं नैनसों मेरो काम।
ब्रजसुन्दरी कही मेरी मानो प्राण ते प्यारी बाम ॥ १ ॥
छैलकी प्यारी सुनो राधेरानी तुम्हें देख नहिं काम।
विष्णुकुंवरि रीझी पिय बोली छोड़ नैन कूं नाम ॥ २ ॥

४३२—भजन

श्यामसों होरी खेलण आई ॥ टेक ॥
रंग गुलालकी झोरि लिये सब नवला सज-सज आई।
बांके नैन चपल चल रीझै प्रियतम पै टकटकी लगाई ॥ १ ॥
होड़ा-होड़ी देखा-देखी होरीकी रंग छाई।
उतै सखन संग आय विराजे सुन्दर त्रिभुवन राई ॥ २ ॥
इतै सखिन संग होरी खेलन राधेजू चलि आई।
वारम्बार अबीर उड़ावै डार कृष्ण-अंग धाई ॥ ३ ॥

दाऊजी पिचकारि चलावैं सुन्दरि मारि हटाई।
मधुर-मधुर मुसुकात जाय पकड़े हलधरको भाई ॥ ४ ॥
राधेजूके नवल बदनसे साड़ी देय हटाई।
निरखि अनूपम होरी खेलन सबही हंसे ठठाई ॥ ५ ॥
विष्णुकुंवरि सखियां सब छोड़ी हलधर भे सुखदाई ॥ ६ ॥

४३३—भजन

क्यों बृथा दोष पियको लगावत ॥ टेक ॥
तो हित चन्द्रमुखी चातक बन दरसन कूं चित चाहत ॥ १ ॥
हैं वहु नारि रसीली ब्रजमें वा तो तुम कोइ चाहत।
तो हित बृन्दवन राधे सब सखियन रास दिखावत ॥ २ ॥
तेरो रूप हियेमें धारत नित निरखत सुख पावत।
विष्णुकुंवरि तव राधे चरणन हाथ जोड़ सिर नावत ॥ ३ ॥

बाघेली विष्णुप्रसाद कुँवरि

४३४—भजन

सियावर तेरी सूरत पै हूं वारी रे ॥ टेक ॥
सीस-मुकुटकी लटक मनोहर मंजु लगत है प्यारी रे ॥ १ ॥
वा छबि निरखनको मो नैना जोवत बाट तिहारी रे ॥ २ ॥
रतनकुंवरि कहे मो ढिग आके झलक दिखा धनुधारी रे ॥ ३ ॥

४३५—भजन

मेरो मन मोह्यो रंगीले राम ॥ टेक ॥
उनकी छवि निरखत ही मेरो बिसर गयो सब काम ॥ १ ॥

आठों पहर हृदय विच मेरे आन कियो निज धाम ॥ २ ॥
रतनकुंवरि कहै वाके पल पल ध्यान धरूं नित साम ॥ ३ ॥

४३६—भजन

रघुवर म्हारा रे म्हाँकूं दरस दिखाजा रे ॥ टेक ॥
तो देखनकी चाह घनी है टुक इक झलक दिखाजा रे ॥ १ ॥
लाग रही तेरी केते दिनकी मीठी वैन सुनाजा रे ॥ २ ॥
रतनकुंवरि तोसों यह विनती एक वेर ढिग आजारे ॥ ३ ॥

४३७—भजन

रघुवर प्यारो रे, दशरथ राजदुलारो रे ॥टेक॥
सीस मुकुट पर छत्र विराजत कानन कुण्डल वारो रे ॥१॥
वाँकी अदा दिखाय रसीली मोह लियो मन म्हारो रे ॥२॥
रतनकुंवरि कहै राम रंगीलो रूप गुनन आगारो रे ॥३॥

४३८—भजन

थारी छूंजी म्हारा प्यारा राम, कीजो म्हांसू दिलड़ारी वात ।
मिल विछुड़ण नहिं कीजै साँवरा, राखोजी चरणा रे साथ ॥
ध्यान धरूं हिरदय विच तुमरो, याद करूं दिन रात ।
रतनकुंवरि पर महर करो अब, निज कर पकरो हाथ ॥

रत्नकुंवरि बाई

४३९—ठुमरी, राग भैरवी

शंकर छवि छाय रही मनमें ॥टेक॥
भूखन व्याल खाल गज अंबर भसम लगी तनमें ।
माल कपाल भाल चख सोहत तड़िता ज्यों घनमें ॥१॥

उमा संग अरधंग गंग जुत भूतनके गनमें।
सब व्यापक अव्यापक शोभित ज्यों पंकज वनमें ॥२॥
कण्ठ नील अरु सील अमङ्गल दै मङ्गल छनमें।
जग विस्तार पार संहारत शिशु ज्यों खेलनमें ॥३॥
काल व्याल कीलत अघहारी नेत्र निमीलनमें।
सज्जन रान भिन्न भासत ज्यों उदधि तरङ्गनमें ॥४॥

महाराणा सज्जनसिंह

४४०—भजन

अजब फन्द आन पड़्यो गल मांही ॥टेक॥
ऐरी सखी मैं कहा कहूं तोसे हित चित कृष्ण जहांही ॥१॥
घर नहिं भावत कछू न सुहावत चौंक उठूं भहराहीं ॥२॥
चातक प्राण छुटत नहिं तनते व्रजनिधि घन बरसाई ॥३॥

४४१—भजन

निगोड़े नैना हो, पड़ी बुरी छै आ वान ॥टेक॥
जा लिपटे कपटी मोहनसे नेक न मानी आन ॥१॥
लाज सौ तरां सूं लीनी छे म्हांकी, तोड़ी छे कुलकान ॥२॥
व्रजनिधिजी थे रसिक स्नेही, अब कांई हुआ छो अजान ॥३॥

महाराजा प्रतापसिंह

४४२—भजन

भौंह बांकी हो राधेवर की ॥टेक॥
रास समै कर नीकी बिराजत मुरली अधर अधर की।
राधा राई सब बन आई और आई है घर घर की ॥१॥

सुनत तान मुनिजन अकुलाये उछलि मीन सरवर की।
राजा कहै भव पीड़ मिटत है छवि निरखत गिरधर की ॥२॥

४४३—भजन

भूल मत जाजे रे म्हाने राखन हार कन्हैयो छे ॥टेक॥
इन वाड़ीको फल फूलन से, नित हरी रखो महकाये रे ॥१॥
इन वाड़ी को कृपा दृष्टि कर नेह मेह सींचाये रे ॥२॥
इस भौसागर से तिरवो चाहे तारण गज अरु ग्राहे रे ॥३॥

महाराजा गजसिंह

४४४—वधाई

आनन्द वधाई माई नन्दजू के द्वार ॥टेक॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र धुन कीनी तिन लीनो अवतार ॥१॥
जनमत ही घर घर प्रति लक्ष्मी बांधत वंदनवार ॥२॥
भूप कल्याण कृष्ण जन्महिं पैं तन मन कीनो वार ॥३॥

महाराजा कल्याण सिंह

४४५—भजन

प्रभुजी इहाँ रहै कछु नाईं ॥टेक॥ *
करिये गवन भवन दिशि अपने, सुनिये अरज गुसांई ॥१॥
देखी वलख वरफ हू देखी, अधम असुर अवलोके।
मध्य प्रदेश वेशहू मध्यम, इहाँ कहाँ लै रोके ? ॥२॥

---

* यह पद महाराजा रूपसिंह ने जब कि वे वलखकी लड़ाईमें थे तब वहाँकी तकलीफोंसे तंग आकर गाया था।

भगतवछल करुणामय सुखनिधि, कृपा करो गिरधारी।
रूपसिंह प्रभु बिरद लजत है, ब्रज लै बसौ बिहारी ॥३॥

महाराजा रूपसिंह

४४६—राग काफी

हांजी थारी लीला लखियन जात ॥ टेक ॥
कवी धूप दिखावै, कवी हवा चलावै, कवी मेह बरसावे,
कवी पुष्प खिलावै, कवी पलमें मौम गिरात ॥१॥
कवी कष्ट दिखावै, कवी सुख भुगतावै, अति द्रव्य दिलवावै,
अरु शाल उढ़ावै, कवी फाटीसी गुदड़िया ढकै गात ॥२॥
कवी भूप बनावै, गज पीठ चढ़ावै, कवी पैदल चलावै,
कवी बिछौना न पावै, कवी सेज बिछावै, चंदमुखी संग वात ॥३॥
हरिजन कष्ट उठावै, पापी मौज उड़ावै, निज भगतांने तावै,
फेर कुन्दण बणावै, बैकुण्ठ पठावै, ज्यापै कृपादृष्टि हो जात ॥४॥
ब्रह्म महेश थकावै, शेष पारहू न पावै "चन्द्र" चरणों शीश नवावै
हरिको सूक्ष्म गुण गावै, मेरे कृष्ण तात और मात ॥५॥

४४७—भजन

हिंडोलन झूलैं बृज गोपाल ॥टेक॥
इधर घटा गोपियनकी आई, उतसैं कृष्ण संग ग्वाल।
कदम डार हिंडो रेशम, झूलैं बृज प्रतिपाल ॥१॥
गावत कजली सावण गोपिका, नाचैं दे दे ताल।
कवी हिंडै चढ़ बैठें गोपिका, कवी चढ़ैं नन्दलाल ॥२॥

एक हींडो दो दो मिल झूलैं, एक मरद एक वाल ।
कोई ओढ़यां लाल चून्दरी, कोई ओढ़े साल ॥३॥
जमुना तीर मोहन वृज वनिता, खेल रहैं अति ख्याल ।
"चन्द्र" पुजारी शरणैं थारै करो श्याम प्रतिपाल ॥४॥

४४८---राग भोपाली

प्रथम गुरु गणपती शारदा, याद किया शुभके करता ॥टेक॥
शुभ गुण देवै गौरी नन्दन, बुद्धि दे शारद माता ।
ज्ञान भानु गुरु उर विच प्रगटे, आलस द्वन्द तिमिर हरता ॥१॥
गुरु कृपासे गोविन्द मिलज्या, पत्थरसे पारस वणता ।
भवसागरकी नौका गुरु है, विन गुरु ज्ञान नहीं तिरता ॥२॥
ज्ञान सूं ध्यान, ध्यान सूं गोविन्द, गोविन्द सुख संपत्ति करता ।
येही गुरु गोविन्द वताये, शरण लियाँ कारज सरता ॥३॥
कारज सारे सत्गुरु गोविन्द, दृढ़ रख मन तूं क्यों डरता ।
रामचन्द्रको वड़ा भरोसा, चरण कमल नित चित धरता ॥४॥

४४९—कजली

तेरा कहा विगड़ जाय वन्दा राम गुण गाय ।।टेक॥
आल जंजाल फंसे क्यूं मनवां,
प्रभु के चरणाँमें चित लाय ॥१॥
धन नहिं लागै जोर पड़त नहीं,
जरा जरा जीभ हलायां क्यूं ना जाय ॥२॥
जीभ हलाय ध्रव धू लाई,
मुकत पदवी को पूंचे जाय ॥३॥

जै नारायण "श्री कृष्ण" भज,

"पुरुषोत्तम" तुम ध्यान लगाय ॥४॥

चन्द्र कहै यह ध्यान लगायाँ,

बनत बनत पल में बन जाय ॥५॥

४५०—राग सोरठ

अहो मेरे साँचे श्याम बिहारी, को जानै गती तिहारी ॥टेक॥
गति मति थारी कोई नहिं जानै, जगतपती गिरधारी ।
छिनमें छार उड़ाय साँवरा, पलमें खिलाय गुलक्यारी ॥१॥
मोरे देख सत्त अब राख पत्तकूं क्या सूं करत अंवारी ।
कलजुग तूं ही सत्त राखै, और कहाँ सतधारी ॥२॥
मोरो सत्त राख्यो इब गऊ गरीबको, बरस्यो इम्रत बारी ।
आस्योज मास साल बहतर की करुणा सुनी बनवारी ॥३॥
करुणा निधान दयाके सागर, दीनदयाल मुरारी ।
चन्द्र कहे साँचे मोरे स्वामी, तोरे चरण कमल बलिहारी ॥४॥

४५१—राग ठुमरी सारंग

अहो श्याम मुरारी, यही अरजी हमारी, सुन सुन जी विहारी,

गिरिवर गिरधारी, दीनदयाल भक्त हितकारी ॥टेक॥

अहो थारे देखत श्याम, कीचक हराम, समझ ना त्याम,

पान ख्यारे यो काम, क्या बने राम इब भीर बनी भारी ॥१॥

हरि कहे भीम पा जावो, मत ना घबड़ावो, सोऊं कीचक मेख्यावो,

परगट हो ज्यावो, ऐसा काम बनावो, यूं कही बनवारी ॥२॥

सती कहे बात, मेरे मारी लात, करो कीचक घात,
सोवै जात पाँत सुण बलकारी, बण्यो अवलासी नारी ॥३॥
बोही भवन बतायो, जहाँ कीचक पठायो, वहाँ ही भीम चल आयो,
कीचक हरखायो, दुष्ट मारके दबाई नहीं, लखी संसारी ॥४॥
भीम बलकूं बढ़ायो सौ के साथमें जलायो, हरि कष्ट मिटायो,
चहुं दिश जस छायो, घनश्याम गुण गायो, कहे चन्द्र पुजारी ॥५॥

४५२—दादरा

प्रभु तिहारी दयालुता तुम्हें याद है कि न है,
वेदहु में भेद पाय व्यास ने सुनाया है ॥टेक॥
सतजुगमें प्रह्लाद को तुमने निभाया है।
मंझारी की दया धारके, सुत आन बचाया है ॥१॥
त्रेतामें शवरीका जूठा बेर खाया है।
दयालु हो जटायु पै वैकुण्ठ पठाया है॥२॥
द्वापर में द्रौपदी ने तुमको पुकारा है।
आतम विहारी प्रगट के अदव उधारा है ॥३॥
दीन सुदामा जानके दारिद्र टारा है।
गजकाज धारी दयालुता पलमें उवारा है ॥४॥
कलयुग में तुम दयाल हो कई भगत तारया है।
"चन्द्र" पुजारी दीन के शरणां तिहारा है ॥५॥

४५३—रागनी भैरवी खेमटा

भूल्या मन मान ले मेरी कही रे ॥ टेक ॥
रामनाम संचित तूं कर ले, कर कछु दान सही रे ॥ १ ॥
मात पिता सुत बंधु दारा, ये कोई तेरा नहीं रे ॥ २ ॥
कोल किया तूं सुकरथ करना इव सीख्यो बात नई रे ॥ ३ ॥
चन्द्र कहै पुरुषोत्तम भजले श्रीपति नाम सही रे ॥ ४ ॥

४५४—रागनी कान्हरा

एरे मन राम, राम भज राम भज राम ॥ टेक ॥
राम नामने पत्थर त्यारे, मनुष्य देह क्या तिरणा भारे ।
चेते क्यूं ना मन्न गुंवारे, भज स्वांस स्वांसमें राम ॥ १ ॥
ये है स्वांस गिण्योडा प्यारे, बृथा स्वांस तूं मती बिगारे ।
मुखसे क्यूं ना राम उचारे, कौड़ी लगे ना छिदाम ॥ २ ॥
राम नाम निज हृदय अधारे, जिनके आगे काम सुधारे ।
वेद शास्त्र जिनके अधारे, तिनके प्रभु हैं रखवारे ॥ ३ ॥
चन्द्र कहै तेरे अखत्यारे, ध्यान है आठूं याम ॥ ४ ॥

४५५—चौबोला

लम्बोदर तो बीनऊं, कर मेरी प्रतिपाल ।
विद्या वर मोहिं दीजिये, तुम हो दीनदयाल ॥ १ ॥
तुम हो दीनदयाल दयाकर, मैं हूं शरण तिहारी ।
देहु ज्ञान गौरीके नन्दन, रिद्ध सिद्धके अधिकारी ॥ २ ॥
देवो ज्ञान थारो धरूं ध्यान, थे छो पर उपकारी ।
ऐसो दियो बरदान, हमारी सहाय रहे त्रिपुरारी ॥ ३ ॥

रंगत जोगिया

दास समझ माई आपको जी दियो विद्या वरदान ।
पढ़्यो न पिंगल छन्द रचूं मैया हूं लड़का अज्ञान ॥
ए जी ए अज्ञान माई हूं लड़का अज्ञान ।
ज्ञान तो बतावो ये कृपाकर ईश्वरी, मेरी,
माई भूल्यां ने राह दे बताय ॥ ४ ॥

राग देश

एरी एरी मैया ध्याऊं मैं शारदा रानी ॥ टेक ॥
वेद बखानी सब जग जानी, साँची आद भवानी ॥ ५ ॥
ध्याऊं मैं साँची ब्रह्माणी, जी दध अक्षर कूं टाल,
ईश्वरी दीज्यो मोय बुद्धवानी ॥६॥
गोरधन उस्ताद रहो तुम सहाय मेरी प्रतपाला ।
चन्द्र पुजारी कहै बनाय, जसरापुर रहनेवाला ॥ ७ ॥
कहै यो चंद्रपुजारी, सहाय मेरी है गिरधारी, ध्याऊं मैं गोकुलवाला ।
गोपीनाथ का इष्ट हमारे, सहाय रहे नन्दलाला ॥ ८ ॥
पं० रामचन्द्र पुजारी

४५६—गंगाजीकी महिमा

गंगे ! तेरी शरण मैं आयो ॥ टेक ॥
तूं है पतित-पावनी जगमें, तारणि वेद बतायो ।
लाखों पापी पार कऱ्या तूं, तिरलोकी जस छायो ॥ १ ॥

"भागीरथी" कुहाई जब तूं, भूप भगीरथ ल्यायो ।
निसरी जब जह्नु कि जाँघसूं, "जाह्नवि" नाम धरायो ॥२॥
साठ हजार सगर-सुत तार्‌या, तेरो पार न पायो ।
एक गादड़ो डूब मर्‌यो हो, सो सुरलोक सिधायो ॥ ३ ॥
मिनख जीव तो क्यूं न तिरैगो, जो काशी जा न्हायो ।
मर्‌याहुयाँ की बी गत करती, जो नर अस्थि बहायो ॥ ४ ॥
जमकी त्रास बिनास करै तूं, जो तेरो जस गायो ।
पाप-पहाड़ दूर कर दीन्या दर्शन जो कर आयो ॥ ५ ॥
अति कल्याण करै तूं उणको, जो जल तेरो प्यायो ।
जो मँझधार जाय न्हावै सो, विष्णु–समान कहायो ॥ ६ ॥
जमना गोदावरी सुरसती, तरवीणी गिण आयो ।
सब नदियांसूं बड़ी एक ही, तन्नैं ही बतलायो ॥ ७ ॥
जो तन्नैं छोटी समजै है, यही सबूत बतायो ।
'गंगाजलमें पड़ै न कीड़ा', मूरखने समझायो ॥ ८ ॥
आवटतां जलमें कीटाणु, जो नहिं प्राण गमायो ।
तेरा जलमें पड़ताँई झट, सो सुरलोक सिधायो ॥ ९ ॥
ऐसी तेरी जलकी महिमा, आयुरवेद बतायो ।
पान कर्‌यो जो नित तेरो जल, रोगहिं मार भगायो ॥१०॥
पहल्याँ बरणन करो महातम, फिर न्हावाने जायो ।
ऐसो सदुपदेश तेरो यो, 'रामायणी' सुणायो ॥११॥
गंगा जमनाको प्रसङ्ग जब, शाह अकब्बर ल्यायो ।
तबी बीरबल 'जल जमनाको, अमृत गंग' बतायो ॥१२॥

नाम विष्णु-नख-निर्गत होकर, "विष्णु-पदी" कहलायो ।
सुरसरि मन्दाकिनी तबीसूं, देवन नाम कढ़ायो ॥१३॥
भर्‍यो कमण्डल ब्रह्मा तबई, देवहिं पान करायो ।
शिवजी जटा माँय धारण कर, पृथिवी पैं ले आयो ॥१४॥
"जटाशङ्करी" कर प्रसिद्ध जग, तेरो नाम धरायो ।
यथा बुद्धि गुणगान जरासो, दास 'सुधाकर' गायो ॥१५॥

४८७—भजन

मनवाँ अन्त समैं पिसतासी ॥ टेक ॥
बालपणो हँस हँस कर खोयो, जोबनमें सुख चासी ।
मात पिता सुत बाँधव नारी, मतलब गरजी पासी ॥ १ ॥
बिन मतलब बैरी सम जाणैं, तो बी तज्या न जासी ।
रामनाम इब बी नहिं जपतो, बूढ़ो हो मर ज्यासी ॥ २ ॥
दुर्योधन बलि आदि नृपति सम, रीतां हाथां जासी ।
ईं जिन्दगानीमें जो करसी, सो तेरे आड़ो आसी ॥ ३ ॥
ठाली जिन्दगी खो पिसतासी, मनकी मन रह ज्यासी ।
कहै "सुधाकर" चेत नहीं तो, माटीमें मिल जासी ॥ ४ ॥

४८८—चेतावनी

अरे थे चेत करो अभिमानी ॥ टेक ॥
लख चौरासीमें थे सोया, अब तो जागो प्रानी ।
जै थे इब ना चेत करोगा, तो यूंईं जिन्दगानी ॥ १ ॥
काम क्रोध मद मोह लोभ अरु, मत्सर छै सैलानी ।
ये सब मिल नित चोरी करता, जागो क्यूं न गुमानी ॥ २ ॥

ये सब चोर बड़ा मदमाता, इणकी बात न छानी।
जो नर इण चोराँने जीतै, दिग्बिजयी सो ज्ञानी ॥ ३ ॥
पाँच ज्ञान अर पाँच कर्म ये, दश इन्द्री मस्तानी।
इणको खसम ठगोरो 'मन' है, सो अति ही बलवानी ॥ ४ ॥
छह ठग दश ठगणी इणको पति, है सिरदार अयानी।
करै एकमत हो ये सतरा, दिन दोफाराँ हानी ॥ ५ ॥
इणकी लूटमारने देख्याँ, चेत करैं नहिं प्रानी।
"काया-नगर" ने लूट लेंय जब, तब देखौं इण कानी ॥ ६ ॥
लुटता जावो सदा इणासूं, हो नहिं तो बी ग्लानी।
ऐसा थे कायर क्यूं बणता, ये हैं मौत निशानी ॥ ७ ॥
इण चोराँसूं रहो चेत कर, यो खोलो घर जानी।
जै थे इणने नहिं काढ़ोगा, ये प्या दींगा पानी ॥ ८ ॥
रामनामका खुफिया सेती, इणनैं जीतो प्रानी।
इणनें पकड़नकी या रीती, बिप्र "सुधाकर" ठानी ॥ ९ ॥

४५९—भजन

(जीजाकी रंगतपर)

प्यारा लागोजी, राघोजी म्हाने प्यारा लागोजी।
ओजी भव-सागर खेवणहार, राघोजी म्हाने प्यारा लागोजी ॥टेक॥
पार लंघाद्योजी, राघोजी म्हाने पार लंघाद्यो जी।
ओजी म्हारी नाव पड़ी मँझधार, राघोजी म्हाने पार लंघाद्योजी ॥१॥
थे छो दीनदयालोजी, राघोजी थे छो दीनदयालोजी।
ओजी प्रभु गावै बेद पुकार, राघोजी थे छो दीनदयालोजी ॥२॥

मैं तो दास तिहारोजी, राघोजी मैं तो दास तिहारोजी।
ओजी थारा चरणाँकी बलिहार, राघोजी मैं तो दास तिहारोजी ॥३॥
व्रत, नेम घणेरोजी, राघोजी व्रत, नेम घणेरोजी।
ओजी मैं तो कुछ नहीं जाणूं सार, राघोजी व्रत नेम घणेरोजी ॥४॥
गणका, गज, गिद्धोजी, राघोजी गणका, गज, गिद्धोजी।
ओजी थे तो उणका तारणहार, राघोजी गणका, गज, गिद्धोजी ॥५॥
थारो ख्याल अनोखोजी, राघोजी थारो ख्याल अनोखोजी।
ओजी ऐसो ख्याल रच्यो संसार, राघोजी थारो ख्याल अनोखोजी ॥६॥
धन, धान्य सँवारोजी, राघोजी धन, धान्य सँवारोजी।
ओजी याई अर्ज करूँ करतार, राघोजी धन, धान्य सँवारोजी ॥७॥
मैं तो भक्तिको भूखोजी, राघोजी मैं तो भक्तिको भूखोजी।
ओजी थे तो भक्ती देवणहार, राघोजी मैं तो भक्तिको भूखोजी ॥८॥
म्हाने दर्शण देवोजी, राघोजी म्हाने दर्शण देवोजी।
ओजी थारो शरणो लियो छै अपार, राघोजी म्हाने दर्शण देवोजी ॥९॥
सुधाकर थारोजी, राघोजी सुधाकर थारोजी।
ओजी म्हारी नैया लगाद्यौ पार, राघोजी "सुधाकर" थारोजी ॥१०॥

४६०—भजन

(गीताँकी ढालपर)

बिनऊँ रघुनाथा, शारंग शर हाथा; कृपा वारिधी।
अति दीनदयाला, सेवक प्रतिपाला; मनीसा निधी ॥ १ ॥
भुवि भार उतारी, दैवत उपकारी, ऋषि रंजना।
तिय गौतम तारी, कौशिक दुखहारी; धनु भंजना ॥ २ ॥

बनवास सिधारी, पालक प्रण भारी; 'मुनी-मण्डिता' ।
खरदूषण हन्ता, रक्षक सुर सन्ता; 'भृगा-खण्डिता' ॥ ३ ॥
खगराज उधारी, भीलणि शुचिकारी; गलीलायका ।
हनुमान सुभेटी, दारुण दुख मेटी; कपी नायका ॥ ४ ॥
कपि बालि संहारी, सागर-पुलकारी; शिव स्थापिया ।
उदधि पत्थर तारी, सेवक दुखटारी; प्रभो व्यापिया ॥ ५ ॥
भव-सागर तारो, डूबत जन थारो; रघुनायका ।
त्रय ताप निवारो, सेवक दुख टारो; प्रभो लायका ॥ ६ ॥
दशशीश बिनाशी, कुम्भकरण नाशी; खरारी प्रभो ।
मकरन्द सुबर्षे, देवन अति हर्षे, मुरारी विभो ॥ ७ ॥
षट् शत्रु विलासी, सेवक उर बासी; महा दुर्जयी ।
हिय माँय पधारो, शत्रुन हत डारो; 'जलेशा-शयी' ॥ ८ ॥
चढ़ि पुष्पक जाना, कौशलपुर आना; 'प्रजा-रंजना' ।
मुनिबृन्द विनोदी; सेवक सुरमोदी; 'अघी-गंजना' ॥ ९ ॥
न सुधाकर धर्मी, ना भगत सुकर्मी; कपिसा कृती ।
प्रभु दर्शण चावै, याई मन भावै; करुणा व्रती ॥१०॥

सुधाकर त्रिवेदी

४६१—रुक्मिणीको बारामासियो

गोबरधन धारी राखो परतिज्ञा दासी आपकी ॥टेक॥
लग्यो महीनो चैत्र चावसे गौरी नन्द मनाऊं ।
दुर्गामाई करो सहाई हित चित सेती ध्याऊं ॥

दीज्यो बुद्धि वरदान आन मोये, तुमसे अरज लगाऊं ।
विद्रभदेश सुहावणो, भीषम घर अवतार ।
पाँच पुत्र प्रगट्या राजा के, छट्ठी राजकुंवार ॥
लक्ष्मी रूप पधारी ॥ गोवरधन० ॥१॥
मास वैशाख द्वार पर म्हारे नारदमुनी पधार्‍या ।
आदर भाव कियो वहुतेरो दे आसन वैठार्‍या ॥
चरण धोय चर्णामृत लीन्यो तव रिषि वचन उचारा ।
रुकमनिको वर साँवरो, जदुपति दीनदयाल ।
दुष्ट संहारण भक्त उवारण, करुणासिंधु गोपाल ॥
रची जिन सृष्टी सारी ॥ गोवरधन० ॥२॥
ज्येष्ठ मास वंधू रुकमैयो मातासे वतलायो ।
कागद लिखके दियो भाट ने चंदेरी पहुंचायो ॥
पत्री वाँच चढ्यो शिशपालो कुन्दनपुरमें आयो ।
संग राजा निन्नानवैं, शोभा अनंत अपार ।
देखी जान गोरवै आई, हरख्यो रुकम कुंवार ॥
जान भली भाँति उतारी ॥ गोवरधन० ॥३॥
साढ़ मास माता मेरे कूं अपने पास बुलाई ।
सज वरात शिशपालो आयो, निरखो रुकमणि वाई ॥
जरासिंधसे काका जिनके दंताधरसे भाई ।
चवदा भवन के वीचमें, ऐसो राजा नांय ।
काल्यो वाल्यो गऊ चरावै, डोलै वनके माँय ॥
उसीमें के गण भारी ॥ गोवरधन० ॥४॥

सावण सोच करै भीसम जी इब प्रभुजी कब आवे ।
आड़ी भौम द्वारका कुण म्हारो संदेशो पहुंचावे ॥
डाहल पूंच गयो कुन्दणापुर यह कोई जाय सुनावे ।
बिड़द उधारण आप हो, कीजै बेग सहाय ।
जो शिशुपाल रुकमणी परणे, मरूं कटारी खाय ॥
यही निश्चय मनमें धारी ॥ गोवरधन० ॥५॥
भादू भगवत बेग पधारो, इब मत देर लगावो ।
सेना ले आयो अभिमानी, तिसको गरब मिटावो ॥
रामरूप होय पैली परणी, इब क्यूं लोग हंसावो ।
पुरी अयोध्या जनमिया, दशरथ घर अवतार ।
तोड़्यो धनुष किया दो टुकड़ा, इब क्यूं दई बिसार ॥
कहो क्या चूक हमारी ॥ गोवरधन० ॥६॥
आश्विन अर्ज करूं कर जोड़्यां, लग रही चिंता भारी ।
सरवर न्हातां कौल किया था, क्यूं भूल्या गिरधारी ॥
डूबती ने बाहर काढ़ी, इब किण दोष बिसारी ॥
डाहल दीखै कालसो, जमसी लगै बरात ।
मेरी टेर सुणी नहीं काना, कूण रीतकी बात ॥
बिनती कर कर हारी ॥ गोवरधन० ॥७॥
कार्तिक मास चाय भगवंतकी, जोसी पास बुलायो ।
हाथ जोड़ परिकरमा दीनी आसन दे बैठायो ॥
पतिया लिख दीनी कर सेती बहुत भाँत समुझायो ॥
तुम द्विज जावो द्वारका, श्रीकृष्णके पास ।

हमरी मात भ्रातके आगे, मतना दीज्यो झांस ॥
आश है वड़ी तिहारी ॥ गोवरधन० ॥८॥

अगहन मास चल्यो जोशी जी पुरी द्वारिका ध्यायो ।
पत्री जाय कृष्ण कूं दीनी, सारो पतो वतायो ॥
विद्रभ देश कुन्दनपुर नगरी, रुकमणि मोय खिनायो ॥
ब्राह्मण बांचै पत्रिका. सुनियो जादूराय ।
और वात हरगिज नहीं जानूं, संशय मेटो आय ॥
करो वेगा असवारी ॥ गोवरधन० ॥६॥

पौष मास मेरे पिता पास आ जोशी वैन सुनाया ।
पाँचू पाँडू अरु बलभद्र श्रीकृष्ण चढ़ आया ॥
सुण सुण वात नाथकी हमरे हो रह्या हरख सवाया ॥
जाऊं अम्बा पूजिवा, भर मोतियनको थाल ।
नारदजी मोये वचन दिया था, मिलसी नन्दको लाल ॥
करी चलवाकी त्यारी ॥ गोवरधन० ॥१०॥

माघ मास दुर्गा वर दीन्यो, मिल गये कृष्ण मुरारी ।
करके कोप लड़न कूं आयो, रावण को औतारी ॥
सनमुख आय मिले हलधरजी, जुद्ध भयो अति भारी ।
राजा सारा खप गया, हस्तिनको नहिं पार ।
चन्देरी को राजा भाग्यो, जरासिंध है लार ॥
खपा दई सेना सारी ॥ गोवरधन० ॥११॥

फागण चाव राव भीषमके, सुवरण खम्भ रुपाया ।
ब्रह्मादिक नारदमुनि आये मोतियन चोक पुराया ॥

भली भाँति दीनी मिजमानी यादू बिदा कराया।
परण पधारे चावसे, रुकमणि अरु घनश्याम।
जो जन गावैं बारामासो, पूरण हो सब काम॥
कहै रूलीराम पुजारी॥ गोवरधन०॥१२॥
रूलीराम पुजारी

४६२—निर्गुण बारामासियो

राम भजन हरिके गुण गावो, फेर मोसर नहिं पावोगे॥टेक॥
चैत मास चितवन करि देखो, ज्यूं ही आया त्यूं ही जावोगे।
धन यौवन तन ओसको मोती, धूप पड़्यां कुम्हलावोगे॥१॥
वैशाख बदन विषियनमें प्यारे, हीरा जनम गमावोगे।
यो हीरा गम जाय तो, फिर पीछे पछतावोगे॥२॥
जेठ जनम ममता नर तजके, तृष्णा तपत बुझावोगे।
गर्भवास मुड़ कर नहिं आवो, हरिहर के गुण गावोगे॥
संग छोड़ निष्काम भजन में, मनकूं जो समझावोगे।
लालगिरी सत्गुरुके शरणे आवागमन मिटावोगे॥३॥
ब्रह्मज्ञान खेती कर सन्तो! अटल जोत मिल जावोगे॥टेक॥
सतसंग साढ़ मास जद लाग्यो, हल जोतन कूं जावोगे।
करम कलङ्क झाड़ सब काटो, सतकी वाड़ बनावोगे॥
बुद्धि अचल सो खेत तुमारो, निर्गुण बीज वावोगे।
मन चित्त बैल जोड़ हल धीरज सूरत रास छिटकावोगे॥४॥
सावण श्याम वेद धुनि लागी, सार वचन धर लावोगे।

भगती अचल सो चमक दावनी, प्रेम घटा झड़ लावोगे ॥
निन्दक कर्म निनाणो खेती, भरम भूंट कटावोगे।
पांच पशू तेरो खेत उजाड़े, उनकूं ले धमकावोगे ॥५॥
भादू मास भरपूर खेतमें, तप्त मसी सुलगावोगे।
कर्म बाँध कीजै रखवाली, संशय शोक मिटावोगे ॥
कर विवेक गोफिया सन्तों गोला तान चलावोगे।
कुवुध कमेड़ो चाय चिड़कली कुकर्म काग उड़ावोगे ॥६॥
आस्योज आस विषयनकी त्यागो, झट पट खेत कुमावोगे।
संत सुमरण करो लावणी संका दूर भगावोगे ॥
सांसा सुमरण कर नर गाढ़ा, भाग त्याग बरसावोगे।
पाँच तत्व गुण तीज तूं तड़ा, दूर जाय झड़कावोगे ॥७॥
कार्त्तिक काढ़ रास निरगुणकी, घर अपने लावोगे।
लालगिरि सत्गुरु के शरणे, बैठ जुगे जुग खावोगे ॥८॥
संशय शोक मिटा संतनके, जिन सोऽहं ध्यान लगाया है ॥टेक॥
मंगसिर मोद भयो सुख भारी, दुःखका मूल उठाया है।
निरगुण रूप निरन्तर ज्योती, अविनाशी पद पाया है ॥६॥
पौप मास पुरुषोत्तम ज्योती, उसमें जाय समाया है।
समता रूप शरद जद व्यापी, रज तम कूं ले खाया है ॥१०॥
माघ मास मोसम अति नीकी, निर्गुण न्हान सजाया है।
कर्म जाल पाप सब धोया, सुख सागरमें न्हाया है ॥११॥
फागण में फुरणा नहिं कोई, होरी रंग रचाया है।
ज्ञान गुलाल सुरत पिचकारी, सत मंजल चढ़ आया है ॥१२॥

द्वादश मास होया इब पूरा, निगम सार कथ गाया है।
सत्गुरु शरण स्वामि लालगिरि या पद विरला पाया है ॥१३॥

सावित्री देवी झूंझनूवाला

४६३—ठुमरी

जावो जावो जी मोहन हट जावो ॥
जोरा जोरी जुल्म करो मत हमसे जरा दहसत खावो ॥ १ ॥
जान गई मैं जुलुम तुमारा, नाहक जुलुम जनावो।
जग जानत मानत ना बरज्यो माखन मती खिंडावो ॥ २ ॥
जङ्गल जानि जोर कर पकड़ी जाय करूंगी दावो।
इयाझ लाजकी हाथ तिहारे, कह बक्स यह पार लगावो ॥३॥

४६४—ठुमरी भैरवी

मेरो मन मोहन बस कीन्यो ॥ टेक ॥
आठूं याम नाम गिरधरको, यो प्रण कर लीन्यो ॥ १ ॥
मोकूं तज भजने लगे कूबरी, चेरी चित्त दीन्यो ॥ २ ॥
बकस कहत दरशण द्यो हितसे, रूप तेरो चीन्यो ॥ ३ ॥

४६५—राग बरवा

निगे कर निरखो नी नन्दलाल ॥ टेक ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, गल मोतियनकी माल ॥१॥
भौंह कमान चक्षु चित्त मोहत, घूंघरवाले वाल ॥२॥
पीतांबर पट वंशी वजावत, मधुर मधुर दे ताल ॥३॥
सोहनी सूरत मोहनी मूरत, वकस देख कर ख्याल ॥४॥

४६६—ठुमरी कल्याण

करुणानिधि करुणा सुन कान, भई सांझ धरत हूं तुमरो ध्यान ॥
करुणा सुन प्रह्लाद उबार्यो, परम भगत पण पूर्यो आन ॥ १ ॥
करुणा सुन गजको दुख मेट्यो, मार्यो सुदरशण चक्र तान ॥२॥
करुणा सुनी द्रोपदकी पलमें चीर बढ़यो हरि राखो मान ॥३॥
करुणा कान ध्यान धर सुणज्यो, बकस कहत मोहि भक्त जान ॥४॥

४६७—ठुमरी जंगलकी

अवध पति सुत यह राजकँवार ॥ टेक ॥
जनक नन्दिनी निरेंसे निहारत मस्त भई सब नार ॥ १ ॥
साँवरि सूरत मोहनी मूरत, धनुप बाण कर धार ॥ २ ॥
पीताँवर आभूषण अंग पर लघु भ्रात है लार ॥ ३ ॥
जनक सुता लायक यही वर, लियो जनक कठिन प्रण धार ॥४॥
बक्स कहे करुणा करे कामिनी, यही हो धनुप उठावन हार ॥५॥

४६८—ठुमरी जंगलकी

मेरे मन बस रहे नंद किशोर ॥ टेक ॥
आठूं याम नाम गिरधरको, नहिं सूझत कछु और ॥ १ ॥
तन से मनसे उचरत हरि हरि, सांझ मध्य और भोर ॥२॥
भटक भटक सब ही जग भटक्यो, तुम बिन कहीं न ठोर ॥३॥
मैं भूखी दरशणकी मोहन, बकस कहे कर जोर ॥४॥

४६९—भजन

मन जपले कृष्ण मुरारी, बनवारी, गिरधारी हैं गोकुलके रखवारी ॥टेक॥
आठों याम नाम गिरिधरको रटले सांझ सँवारी ॥ १ ॥

पति सराप से होइ पखान, नारि अहिल्या तारी ॥ २ ॥
ईन्दर कोप कियो ब्रज ऊपर नख पै गिरिवर धारी ॥ ३ ॥
बक्स बिचार त्यार इब हम कूं आयो शरण तुमारी ॥ ४ ॥

४७०—ठुमरी जंगलकी

कृष्ण कर जादू किधर गयो ॥ टेक ॥
बंशि बजाई सुध बिसराई, गावत तान रह्यो ॥ १ ॥
धाम ग्राम सब बाट ढूंढ्यो, कहीं ना पतो मिल्यो ॥ २ ॥
बक्स बिना दरशण गिरिधरके, दुख ना जात सह्यो ॥ ३॥

बक्सीराम शर्म्मा

४७१—भजन

पाणी भरवाद्यो ओ नन्दजीका लाल पाणी भरवाद्यो ॥ टेक ॥
मैं जब जमुना भरबा कारण आई ओ घरसे चाल ।
नींबका रास्ता रोक कर बैठे या कांई थारो चाल ॥ १ ॥
गगरी मेरी फूट जायगी कंकरी मत बावे ओ लाल ।
संगकी सहेली क्या तो कहेगी, ननदल देगी गाल ॥ २ ॥
नाथूराम श्यामके शरणे, करद्यो बेड़ा पार ॥ ३ ॥

४७२—भजन

दरशण करवादे करवादे मेरा भरतार ॥ टेक ॥
और सखी सब गई कुञ्जनमें, मेरे क्यों जुड़ा किवार ।
लंपट उनको मतना जानिये, है निष्कलङ्क अवतार ॥ १ ॥

सांवरियो मेरो परम सनेही, है पुरबलो प्यार।
नाथूराम श्यामके शरणे हर भज उतरो पार॥ २॥

नाथूराम

४७३—भजन

कद फेरेगो माला रे नर कद फेरेगो माला।
थारा गया कूच कर काला रे नर क्यूं फेरती माला॥ टेक॥
ठग संसार कही नहीं माने, विपत पड़यां देय टाला।
जिनकूं कह तूं हवेली मेरी, तांकै लगा दिया ताला॥ १॥
वृद्ध भयो जद लकड़ी पकड़ी, धूजण लाग्या डाला।
सुत दारा तेरो कह्यो न माने, त्यों त्यों उठै झाला॥ २॥
नैन थक्या मग सूझे नाहीं, दिया कुटुम्ब सब टाला।
इनकी खटोली बाहर गेरो, सभी गिन्हादी साला॥ ३॥
सेवगराम कहे राम भजन कर, पकड़ भजनकी डाला।
पीछे प्रीती क्या तूं करसी, आसी मुगदर वाला॥ ४॥

सेवगराम

४७४—लावणी

श्रीरामचन्द्र रघुनाथ राम भक्तोंके दुख हरनवाले॥ टेक॥
कौशल्य नन्दन रघुनन्दन, जग बंधन काटन वाले।
दयासिंधु भगवान ईश्वरी, लीला दिखलाने वाले॥
दैत्य विनाशक खलजन त्राशक भक्त उबारक धनवाले॥ श्री०॥१॥
जबर ताड़का मृग मरीच बहु, असुरोंको मारनवाले।
रावण कुम्भकर्ण खरदूषण, इन्द्रजीत जीतनवाले॥

अवध विहारी दुष्ट संहारी, लङ्काको दाहनवाले ॥ श्री० ॥ २ ॥
प्रजा मन रंजन दुःख विभञ्जन आरतकी सुननेवाले ।
भक्त हितैषी पापी-द्वेषी, बालीको वधनेवाले ॥
दशरथनन्दन शान्ति निकेतन, सबके हो पालनवाले ॥ श्री० ॥ ३ ॥
मर्यादोंका पालन करके, जगको सिखानेवाले ।
धर्म सनातनकी रक्षा कर, भूभार उतारनवाले ॥
नीति धर्मकी रक्षा करके, जगको सिखानेवाले ॥ श्री० ॥ ४ ॥
जगन्नाथ शरणागत रक्षक, अजर, अमर दशरथवाले ।
अविनाशी साकेत निवासी, गुणराशी ससरथवाले ॥
दीनदयाल कृपाल विभो, करमें धनुधारणवाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥
सीतापति कौशलपति नृपति, विपति विदारनवाले ।
मात पिताकी आज्ञा पाली, वल्कलको पहिरनवाले ॥
बारह वर्ष वनमें विचरणकर, देव कष्ट मोचनवाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥
शिला-सेतु रचकर समुद्रका, गर्व खर्व करनेवाले ।
लोभ-मोह-मायाके फन्दे, काट मोक्ष देनेवाले ॥
त्रिलोकि नाथ घनश्याम राम, अहिल्याको तारनवाले ॥ श्री० ॥ ७ ॥
अखिल निरंजन भवदुःख भंजन, भक्ति नाव खेनेवाले ।
महेन्द्र सुरेन्द्र रणेन्द्र दयालु, नर अवतार लेनेवाले ॥
भरत शत्रुहन लक्ष्मण भ्राता, अघ त्राशा मेटनवाले ॥ श्री० ॥ ८ ॥
श्रीराम राम श्रीराम, राम भवफांशा छेदनवाले ।
नाम-पियूष पिला भक्तोंको, सेवामें राखनवाले ॥
"हरमुख" के घरमें बसते हैं, घट घटमें विचरनवाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥

४७७—क़व्वाली

रामका ध्यान नित धरना, सुनो यह वेद कहते हैं।
विरंची इन्द्र सुरगण भी, सदा ही ध्यान धरते हैं॥ टेक॥
जपो उस हीके नामोंको, न छोड़ो रामको पल भर।
ध्रुव प्रह्लाद शिवजी भी नियमसे राम भजते हैं॥ १॥
धन्य है जीवना उनका, सदा जो राम रटते हैं।
भक्ति ओ प्रीतिसे हरदम, हृदयमें राम रखते हैं॥ २॥
इसीसे होयगा सब सुख, सदा समझो इसे शुभकर।
न चूको महाशय! मोका, राम ही सार जपते हैं॥ ३॥
मनुष्य अवतार धारण कर, उतारा भार पृथ्वीका।
उसीका नाम रट "हरसुख" जिसे रघुनाथ कहते हैं॥ ४॥

४७८—रेखता

सुनिये, विनय यही है, नित राम नाम लीजे।
ममता विसारे वन्धु, सब पाप राशि छीजे॥ १॥
संसार स्वप्न माया, सब झूठ ही है नाता।
भाई न बाप माता, कोई न साथ जाता॥ २॥
मित्रअरु पौत्र दारा, सब स्वारथ ही का नाता।
है भुक्ति मुक्ति दाता, "श्रीराम" को बताता॥ ३॥
है राम नाम सच्चा, जीवन सुफल बनाता।
सुख संपदा बढ़ाता, राम नाम गाता॥ ४॥
इतिहास वेदमें भी ईश्वर कथन किया है।
"हरसुख" जपो हरीको, अवतार नर लिया है॥ ५॥

४७७—भजन

हे दयालु रामचन्द्र, अवधके निवासी ।
मेटो सकल दुःख क्लेश, घट घटके वासी ॥ टेक ॥
रोग शोक लोभ मोह, नाश हो भव फांसी ।
विद्या ज्ञान मान दे, हरो सब कुहांसी ॥ १ ॥
इच्छित वर मोक्ष देय, भक्त मन विकासी ।
अघ समूहको भस्म कर, हरो सब उदासी ॥ २ ॥
सीतापति रामचन्द्र, रघुपति अविनाशी ।
"हरमुख" भक्ति दीपके, आप हैं प्रकाशी ॥ ३ ॥

४७८—कव्वाली

हंस हंस झूलते घनश्याम, संगमें सीता अवहारी ।
युगल छवि सोहती अनुपम, गोर अरु श्याम बलिहारी ॥ टेक ॥
सुरख जामा गले कण्ठी, रतन हीरा जड़े कंकन ।
अधर लाली मुकुट कुण्डल, हाथमें फूल गुलजारी ॥ १ ॥
कान्ति मुख चन्द्रकी देखे, सूर्यका भान होता है ।
कमल नेत्रोंमें मन मोह, रूपकी झांकी है न्यारी ॥ २ ॥
सिया संसारकी माता, न शोभा मातकी वरणूं ।
धरूं मैं ध्यान सीताका, जगतमें जो है हितकारी ॥ ३ ॥
हिंडोला पुष्पका सुन्दर, नरम रेशमकी रस्सी है ।
युगल छवि लूटते आनन्द, अवधके धन्य नर नारी ॥ ४ ॥
युगल-जोड़ीको स्मरण कर, "हरमुख" कहता कर जोड़ी ।
लगाओ प्रेमकी डोरी, विपत्ती दूर हो सारी ॥ ५ ॥

४७९—कव्वाली

दीनानाथ दुख हरता, कहे जनता उचारी है।
हरो सब दुख दरिद्रोंका, यही विनती हमारी है ॥ टेक ॥
मिले भर पेट भोजन भी, न देवे कष्ट महामारी।
सुबुद्धि दीजिये घनश्याम, करें भक्ति तुम्हारी है ॥ १ ॥
देश और जातिको उन्नत, करें हम शीघ्र वर यह दो।
परस्पर प्रीति वर्द्धित हो, मिटे जो वैर जारी है ॥ २ ॥
करें उपकार सब ही का, फैलावें देशमें शिक्षा।
मिटावें वे कुरस्में सब, होती जिनसे ख्वारी है ॥ ३ ॥
पाप व्यभिचार मिट जावें, हो मातृवत् भावकी वृद्धि।
राममें प्रीति कर लीनी, यही 'हरमुख' विचारी है ॥ ४ ॥

हरमुखराय छावछरिया

४८०—भजन

तिरगा तो वोही जाके हिरदयमें हर हो ॥ टेक ॥
शंखके बजाये नर कुण कुण तिरगया ओ।
तिरे क्यूंनी खर ज्यांके शंख कीसी सुर ओ ॥ १ ॥
जटाके बढ़ाये नर कुण कुण तिर गया हो।
तिरे क्यूं नी मोर जांके लामी लामी पर हो ॥ २ ॥
जलके नहाये से नर कुण कुण तिर गया हो।
तिरे क्यूंनी माछ ज्यांका जल मांही घर हो ॥ ३ ॥
मूंडके मुंडाये नर कुण कुण तिर गया हो।
तिरे क्यूंनी भेड़ ज्यांका, रुण्ड मुण्ड शिर हो ॥ ४ ॥

कपड़ा रंगे से नर कुण कुण तिरगया हो।
तिरे क्यूंनी छींपा ज्यांका रंग मांही कर हो ॥ ५ ॥
कंठीके बांधेसे नर कुण कुण तिरगया हो।
तिरे क्यूंनी बैल ज्यांका, जोत मांही गल हो ॥ ६ ॥ (अज्ञात)

४८१—ईश्वर बन्दना

(पारवा)

जिण रची सकल संसार है, उण ईश्वरका गुण गावां ॥ टेक ॥
जय ईश्वर नारायण स्वामी, घट घटका थे अन्तर्यामी।
म्हे थारा हां प्रभु अनुगामी, फंसी नाव मंझधार है ॥ १ ॥
श्याम बरण पीताम्बर धारी, शंख चक्रकी शोभा न्यारी।
कुण्डल क्रीट मुकट छवि भारी, भक्त हेत अवतार है ॥ २ ॥
कष्ट निवारो हे प्रभु म्हारे, म्हे सब हाँ शरणागत थारे।
जैसे गीध अजामिल तारे, सुमिरत वेड़ा पार है ॥ ३ ॥
भक्तांका आधार आप है, जनम जनमका हरै पाप है।
सदा भगवती करत जाप है, यह जीवणका सार है ॥ ४ ॥

भगवतीप्रसाद दारूका

४८२—भजन

बिगड़ी कौन सुधारे नाथ बिन, बिगड़ी कौन सुधारे ॥ टेक ॥
बणी बणीका सब कोई सीरी, बिगड़ीका कोई नाहीं रे।
भरी सभामें लज्जा राखे दीनानाथ गुंसाई रे ॥ १ ॥
एक समै रावणकी सुधरी, सुवरण लंका पाई रे।
देखत देखत उसकी बिगड़ी, दुशमन हो गया भाई रे ॥ २ ॥

एक समै गोपिनकी सुधरी, ज्यां विच कँवर कन्हाई रे ।
देखत देखत उनकी विगड़ी, छाड़ चले जदुराई रे ॥ ३ ॥
एक समै हरिश्चन्द्रकी सुधरी, सुवरण छत्र फिराया रे ।
देखत देखत उनकी विगड़ी, नीच घर नीर भराया रे ॥ ४ ॥
नेम धर्मकी जहाज बनाई, समुद्र बीच तिराई रे ।
धर्मी धर्मी पार उतर गये, पापी नाव डुबाई रे ॥ ५ ॥
कड़ी वेलकी कड़ी तुमड़िया, सब तीरथ फिर आई रे ।
घाट घाटको जल भर लाई, तो भी गई न कड़वाई रे ॥ ६ ॥
विगरी सुधरी दोनूं ही भैणां, परापरी सुहाई रे ।
नाथ जलन्धर गुरू हमारा, राजा मान जस गाई रे ॥ ७ ॥

राजा मानसिंह

४८३—भजन

वंसी वज रही तनक तनक में; नथ मेरी टूट गई झगरे में ॥टेक॥
मैं दधि वेचन जात वृन्दावन, रोक लई डगरे में ।
दधि मेरो खाय मटुकिया फोरी, अरी वाके खपरा परे नरे में ॥१॥
ढुलरी तोर चून्दरी झटकी, अरी वाने डारी बाँह गरे में ।
अब ब्रजपति हँसि बात बनावै, डारत नोन जरे में ॥२॥

४८४—भजन

दरशनकी लगी आस अब मैं कहाँ जाऊँ ॥टेक॥
महल तिवारे मोय न चहिये, टूटी झुपरिया वास ।
शाल-दुशाल मोय न चहिये, कारी कमरिया कास ॥१॥

कुटुम-कवीले मोय न चहिये, श्यामसुन्दर संग रास।
कृष्णचन्द्र अवसे मोय मिलिहैं, ये मन में है भास ॥२॥

४८५—भजन

अद्भुत रचाय दियो खेल, देखो अलबेलीकी वतियाँ ॥टेक॥
कहुं जल कहुं थल गिरी कहूं कहूं वृक्ष कहुं वेल ॥१॥
कहुं नाश दिखराय परत है कहूं रार कहुं मेल।
सबके भीतर सबके वाहर सव मैं करत कुलेल ॥२॥
सब के घटमें आप विराजौ ज्यों तिल भीतर तेल।
श्री ब्रजराज तुही अलबेला सब में रेलापेल ॥३॥

४८६—भजन

हो प्यारी लागे श्यामसुन्दरिया ॥टेक॥
कर नवनीत नैन कजरारे, डंगरिन सोहै मुंदरिया ॥१॥
दो दो दशन अधर अरुणारे, वोलत वैन तुतरिया।
सोहै अङ्ग चन्दनी कुरता, शिर पर केश विखरिया ॥२॥
गोल कपोल डिठौना माथे, भाल तिलक मन-हरिया।
घुटुअन चलत नवल तन मण्डित, मुखमें मेलै डंगरिया ॥३॥
यह छवि देख मगन महतारी, लग नहिं जात नजरिया।
भूख लगी जव ठिनकन लागे, गहि मैयाकी चुंदरिया ॥४॥
जाका भेद वेद नहिं पावत, वाको खिलावै गुजरिया।
धन यशुमति धनि धनि ब्रजनायक, धनि धनि गोप नगरिया ॥५॥

४८७—भजन

जहां न आदर भाव न पइये, मनुआ वा घर कवहुं न जइये ॥टेक॥
टुकड़ा भलो मान को सूखो, उलटो खीर न खइये ।
मुखड़ा आगे आदर करते, पीछे खाक उड़इये ॥१॥
मुंह देखे पर मीठे बोलैं, पीछे ऐब लगइये ।
अपने मतलब हित दरसावैं, काम परे इतरइये ॥२॥
ऐसे मित्र कबहुं नहिं कीजै, जासों जी पछतइये ।
गिरिराऊ धारन हैं स्वामी, जगमें मोहिं बचइये ॥३॥

४८८—भजन

मो सम कौन अधम जग भाई ॥टेक॥
सगरी उमर विषयनमें खोई, हरिकी सुधि बिसराई ।
मन भायो सोई तो कीनो, जगमें भई हंसाई ॥१॥
कुलकी कान वेद मर्य्यादा, यह सब धोय बहाई ।
सब ही जानू सब मुख भाखूं, चलती नांव चलाई ॥२॥
जिनके संग ते करै विसासी, साँप होय डस जाई ।
सबकी बैठ के करूं निन्दरा, अपनी लेत छिपाई ॥३॥
काम-क्रोध मद लोम मोह के, घेरे हुए सिपाई ।
इनते मोहिं छुड़ाओ स्वामी, 'गिरिराज' है शरणाई ॥४॥

४८९—भजन

कछु दीखत नहिं महाराज, अंधेरी तिहारो महलन में ॥टेक॥
ऐ जी ऊँचो महल सुहावनो, जाकी शोभा कही न जाय ।

तूने इन महलनमें बैठ कै, सब बुध दी विसराय ॥१॥
ऐ जी नौ दरवाजे महलके, और दशमी खिड़की वंद।
ऐजी घोर अंधेरो ह्वै रह्यो, औ अस्त भये रवि चन्द ॥२॥
ढूंढ़त डोलै महल में रे, कहूं न पायो पार।
सतगुरु ने तारी दई रे, खुल गये कपट-किंवार ॥३॥
कोटि भानु परकाश है रे, जगमग जगमग होत।
बाहर भीतर एकसीरे, कृष्ण नामकी ज्योत ॥४॥

४९०—भजन

मन मिले की प्रीत महाराजा ॥टेक॥
यदुकुल के महाराज कहावत, करते नित अनीत महाराजा ॥१॥
कुवजा नारि कंसकी चेरी, वातें करो परतीत महाराजा।
सोला सहस गोपिका त्यागीं, छोड़ दई कुल रीत महाराजा ॥२॥
हमने हूं हरि अब पहिचाने, हमहूं रहैंगी सभीत महाराजा।
लङ्कापति भगिनी मद-विह्वल, आई मिलन विनीत महाराजा ॥३॥
कर अपमान कुरूपा कीनी, ज्यों खेती कूं शीत महाराजा।
कपटी कुटिल चतुर ब्रजनायक, तुमहूं उनके मीत महाराजा ॥४॥

गिरिराज कुंवरि

४९१—तीर्थ-यात्रा

चालो रे साधो रामनाथको जइये।
दर्शण द्यो रामनाथ स्वामी, फेर जनम न पइये ॥१॥
चालो रे सन्तो रणछोड़ टीकम जइये।
दर्शण द्यो रणछोड़ टीकम, फेर जन्म न पइये ॥२॥

चालो रे सन्तो बद्रीनाथ कूं जइये ।
दर्शण द्यो बद्रीनाथ स्वामी फेर जन्म न पइये ॥३॥
चालो रे सन्तो जगन्नाथ कूं जइये ।
दर्शण द्यो जगन्नाथ स्वामी, फेर जन्म नहीं पइये ॥४॥
कौन दिशा रणछोड़ टीकम, कौन दिशा रामनाथ है ।
कौन दिशा बद्रीनाथ स्वामी, कौन दिशा जगन्नाथ है ॥५॥
दक्षिण दिशा रामनाथ स्वामी, उत्तर दिशा बद्रीनाथ है ।
पश्चिम दिशा रणछोड़ टीकम, पूर्व दिशा जगन्नाथ है ॥६॥
कांई करण रामनाथ स्वामी, कांई करण बद्रीनाथ है ।
कांई करण रणछोड़ टीकम, कांई करण जगन्नाथ है ॥७॥
ध्यान करण रामनाथ स्वामी, तप करण बद्रीनाथ है ।
राज करण रणछोड़ टीकम, भोग करण जगन्नाथ है ॥८॥
कांई चढ़ै रामनाथ स्वामी, कांई चढ़ै बद्रीनाथ है ।
कांई चढ़ै रणछोड़ टीकम, कांई चढ़े जगन्नाथ है ॥९॥
जल चढ़ै रामनाथ स्वामी, दाल चढ़ै बद्रीनाथ है ।
पेड़ा चढ़ै रणछोड़ टीकम, भात चढ़े जगन्नाथ है ॥१०॥
चार धामकी पाँच आरती, जो नित उठ गात है ।
जज्ञ तप होम पूजा, आप ही आप समात है ॥११॥

४९२—भजन

घरसे तो चरणां चित्त धरियो, मनां बन्धायो धीर ।
दोय पग उत्तराखण्ड धरिया, निर्मल भयो शरीर ॥

म्हारा स्वामी जी ओ दोरा तो दरशण वद्रीनाथरा ।।टेक ।।
तले वहे श्री गंगामाई, लहर मोरवा बोले रे ।
जगां जगां साधू जन वैठ्या धूनी तापे रे ।।
कठिन मारग यो जोगीरा नाथ रो ।।१।।
हरिद्वार में हरकी पेड़ी गहरी गंगा गाजे ।
सवा लाख पर्वतके ऊपर म्हारो वद्रीनाथ विराजे ।।२।।
अव छींके चढ़णा पार उतरणा, पंछी बोले राम राम ।
ऋषीकेश का दरशण करल्यो, सफल भया च्यारूं धाम ।। ३ ।।
अव चित्त भंग पहाड़ उतरिया, उतरया मोहन घाटी ।
लिछमण झोले पार उतरयां, कट जावे करमांरी टाटी ।। ४ ।।
अव तुंगनाथ की लम्बी चढ़ाई, वारह मील मुकाम ।
आटो सीधो लेल्यो साधो, रस्तेमें नहिं विश्राम ।। ५ ।।
तीन वार वद्रीजी जावे, फेर जन्म नहिं पावे ।
भूमि तो है वड़ी निरमल, नारद वैन वजावे ।।६।।

४९३—भजन

सुणज्यो वलभदरके वीर, उतारै दुष्ट सभामें चीर ।।टेक।।
केश पकड़ खैंच रह्यो पापी, मैं अवला दिलगीर ।
भरी सभामें लज्जा जात है, सूख्यो जाय शरीर ।।१।।
पाँचूं पती नैणसे देखे, सहाय करो वलवीर ।
आप विना कुण संकट मेटे, कुण मिटावे पीर ।।२।।
आवो आप देर मत लावो, मोपै पड़ी अति भीर ।
करुणा करूं वेग थे आवो, आय वंधावो धीर ।।३।।

दुःशासन यो मान घटावे, दुर्योधन रणधीर।
आय सभा में लज्जा राखी, अन्त न पायो चीर ॥४॥

४९४—लावणी

जद हुवा न्हाण का वक्त, पार्वती गर्म नीर करवायाजी।
धन्यो अंग पर हाथ, मैलका पुतला एक वनाया जी ॥
तव आप लगी न्हावणने पुतर दरवाजे वैठाया जी।
जव हुआ सांझका वखत, सदाशिव वनखण्ड से आयाजी ॥ १ ॥
तूं मांय मत जायरे जोगी, माताका हुकम सुणाया जी।
सुण लड़केका वचन रोस, शिवके मस्तकमें आया जी ॥
काढ़ खड्ग तिरसूल शीश, शिवलोक पहुंचाया जी।
दरवाजे कूं खोल सदाशिव, पारवती पा आया जी ॥ २ ॥
कहे पारवती सुणो सदाशिव, भीतर थे जद आया जी।
दरवाजे पर पुत्तर वैठ्यो, थे, ऊँसे के वतलाया जी ॥
म्हाने आवतां रोक्यो उण जद, म्हे ऊँने मार गिराया जी।
पारवती कहे पुत्र आपणो, सुण हाथ मल पिछताया जी ॥ ३ ॥
उसी समय उलटे सदाशिव, वनखंडको ध्याया जी।
आगे ने मिल गयो गज हस्ती, शीश तार कर लाया जी ॥
धर दियो धड़ पर शीश पुतर जद हँस वतलाया जी।
चढ़ै तेल सिन्दूर देवता, जै जै कार मनाया जी ॥ ४ ॥

४९५—भजन

भजता क्यूंनारे हर नाम, तेरी कोड़ी लगे ना छिदाम ॥ टेक ॥
दाँत दिया है मुखड़ेकी शोभा, जीभ दई रट राम ॥ १ ॥

नैण दिया है दरशण करबा, कान दिया सुण ज्ञान ॥ २ ॥
पाँव दिया है तीरथ करबा, हाथ दिया कर दान ॥ ३ ॥
शरीर दियो उपकार करणने, हरि चरणां में ध्यान ॥ ४ ॥

४९६—भजन

करले मांयला मालकजीने याद, जिणने थारी देह रची है ॥ टेक ॥
पाणी और पवन री पैदास, माँयने अन्नकी जोत धरी है ।
नख चख दियोरे बणाय मुखड़ो, मांई जीभ धरी है ॥ १ ॥
हो गयो मांयला जोध जवान, शिरपर खांगी पाग धरी है ।
कलयुग या है काँटा केरी बाड़, जिणांसे धुड़ला टाल खड़ी है ॥ २ ॥
बाजे बाजे बाल सुबाल झोलां, बाजे एक घड़ी है ।
सूत्यो काई तूं पांव पसार, सिर जमकी फौज खड़ी है ॥ ३ ॥
भैरूं भारी महलांरी अरदास आज्यो म्हारे भीड़ पड़ी है ।
इसड़ो कांई तूं गरब्यो रे, जि, तारे काया वाड़ी देख हरी है ॥ ४ ॥

४९७—भजन

मन पंछीड़ारे कांई सूत्यो सुख भर नींद ॥ टेक ॥
सूत्या सूत्या क्या करो जो, सूत्यां आवे नींद ।
जम सिराणे यों खड़्योजी, जाने तोरण आयो बींद ॥ १ ॥
नौबत हरिके नामकी रे, दिन दस लेवो बजाय ।
इन गलियांके चोवटे, फेरूं मिलांगा नाँय ॥ २ ॥
स्वांस स्वांसमें सुमरियेजी, वृथा स्वांस नहिं जाय ।
कांई भरोसो स्वांसको, वन्दा फेरूं आवे कि नांय ॥ ३ ॥

रघुवर दास चरणको चेरो, विनवे वारम्वार ।
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण तान्या, तैसे मुझको तार ॥ ४ ॥

४९८—भजन

थारो पग फांसीके मांई रे, नर तूं क्यूं चेते नांई ॥ टेक ॥
आड़ा अड़वा भरम करमका, भिड़कर पूठा भाजै ।
सरोतान वगतान दोनूं मरता लोगां लाजै ॥ १ ॥
विषै वेल और विखै वावड़िया पोथी पुस्तक फन्दा ।
भवजल भरो तूं ही उलझानो उलट न देखे अन्धा ॥ २ ॥
देखा देखी सब तज भाई, भजले एक प्रतिपाला ।
जन हरिराम पड़े नहिं फांसी, जुगमें आल जञ्जाला ॥ ३ ॥

४९९—भजन

मनुवा क्यूं पिसतावे रे ।
सिर पर श्रीगोपाल वेड़ा पार लंघावे रे ॥ टेक ॥
निज करनीकूं याद करूं तो जीव घवरावेरे ।
प्रभुकी महिमा सुण सुण मनमें धीरज आवेरे ॥ १ ॥
जो मेरा अपराध गिनूं तो अन्त न आवेरे ।
ऐसो दीनदयाल चित्तमें एक न लावे रे ॥ २ ॥
जै कोई अनन्य मनसूं, हरिको ध्यान लगावे रे ।
वांके वरको योग क्षेम, हरि आप निभावे रे ॥ ३ ॥
शरणागतकी लाज तो सवही ने आवे रे ।
तीन लोकको नाथ लाज हरि नांय गमावे रे ॥ ४ ॥

पतित उधारण विड़द वांको वेद बतावेरे।
मोय गरीबके काज विड़द वो नांय लजावे रे ॥ ५ ॥
महिमा अपरम्पार सुरनर मुनी गावे रे।
ऐसो नन्दकिशोर, भगतकी त्रास मिटावे रे ॥ ६ ॥
वो है रमा निवास भगतकी ओड़ निभावे रे।
तूं मति होय उदास कृष्णको दास कहावे रे ॥ ७ ॥

५००—भजन

नेकी करो वदी मत झालो, धणी अनीती नहिं आछी ॥ टेक ॥
बागां जावती मालण बोली यो तो बाग मेरो थिर रहसी।
हरिया हरिया चुनदे मालण, फेर चुनणने कुण आसी ॥ १ ॥
राज करंतो राजा बोल्यो, मेरो राज तो थिर रहसी।
सांचो साँचो न्याव करो मेरे दाता, फेर करणने कुण आसी ॥२॥
हाट्याँ बैठ्यो बनियो बोल्यो, मेरो हाट तो थिर रहसी।
पूरा पूरो तोलो मेरे प्यारे फेर तोलणने कुण आसी ॥ ३ ॥
बेद पढ़ंतो पंडित बोल्यो, यो तो वेद मेरो थिर रहसी।
न्याव नीत बाँचीजे पण्डित फेर बाँचण ने कुण आसी ॥ ४ ॥
क्या ले आयो क्या ले जासी, नेकी वदी रह ज्यासी।
रामानन्दजीरा भणे कबीरा खाली हाथां उठ ज्यासी ॥ ५ ॥

५०१—भजन

राम नाम राम नाम रटो पियारे, हरिके भजनसे तिर ज्यासी।
गरब भयो कांई बोल रे मुसाफिर, एक दिन टांडो लद ज्यासी ॥टेक॥

बनकी बकरी यूं उठ बोली, आयो कसाई मने ले ज्यासी ।
म्हें जंगलका पशू जिनावर, झाड़ बांठ कहो कुण खासी ॥ १ ॥
नहीं है थारी भैण भाणजी, नहीं हैं थारी मा मासी ।
अन्त समै तूं चला अकेला, नहिं जावे कोई संग साथी ॥ २ ॥
ना कोई आयो ना कोई जायगो, रस्तेमें खरची क्या खासी ।
रामानन्दजीरा भणे कबीरा, माटीमें माटी मिल ज्यासी ॥ ३ ॥

५०२—भजन

समझ मन रामजी क्यों नहिं गावे थारी उमर रेल ज्यूं जावे ॥टेक ॥
सड़क दोय दुःख सुखकी भारी जिनकूं जाने सृष्टी सारी ।
फिरे है कर्मनकी मारी, टले नहीं कीरणांसु टाली ॥
बरस बरसका ठेशन बनाया, मास मास का म्हेल ।
बादे ऊपर गाड़ी छूटी, देख लेवो चौफेर ॥
अरे नर पीछे पछतावे ॥ १ ॥
रेल मन फेरे त्यूं फिर जाय, पटली पर मुलकाँमें जाय ।
खरची बांधी हो तो खाय, लागे नहीं आगे और उपाय ॥
रात दिवस दोय अंजन बनाया, बिन घोड़ां बिन बैल ।
परम जोत है लालटेनकी, बिन बाती बिन तेल ॥
अगिन जठरांसे उठ जावे ॥ २ ॥
चौरासी लाख कोस लेजाय, लावेली पाछी फेर फिराय ।
प्राणी भोत भोत दुख पावे, कुण करे हरि बिन सहाय ॥
तार नार है खबर देन कूं, दसूं दिशा रह्यो फैल ।

तत्वसूं तत्व मिलाय रह्यो कर अमरांपुर सहल ॥
दियां विन आगे कांई पावे ॥ ३ ॥

ऐसी तो फेर रेल नहीं पावे, वैठण कूं देवता ललचावे ।
भूल कर गोता क्यूं खावे, दाव फेर ऐसो नहिं पावे ॥
मिनख सरूपी उत्तम गाड़ी, चढ़ो छवीले छैल ।
रेल वणी है सुन्दर काया, दस दरवाजोंका म्हेल ॥
पुण्य विन हरि गत नहीं पावे ॥ ४ ॥

टिकट तो सुरपुर की लावे कई नर यमपुर कूं जावे ।
भूल कर गोता क्यूं खावे समझ मन सतगुरु समझावे ॥
सील कहे अपने साहव कूं, भजन दाम लेवो झेल ।
मेरे कूं और कछू नहीं चाये, मुक्ति धाममें मेल ॥
फेर तन सराय नहिं आवे ॥ ५ ॥

अज्ञात

५०३—भजन

दम दम में कम हो जायसी, इस दमका नहीं ठिकाना ॥टेक॥

निकल जायगा दम कम होकर पिलंग छोड़ पाटा पर सोकर ।
धन परिवार सर्वत्र खोकर, चलणेकी ठहरायसी—
वस वाकी रहे उठाना ॥१॥

भाई वन्धू पुत्र सनेही, यमका दूत वनेगा येही ।
हाथों हाथ उठा तोहिं लेहीं, घड़ी नहीं गम खायसी—
जल्दी ले जाय मुसाना ॥२॥

जिसको तूं कह मेरा मेरा, खड़ा होय तन फूंके तेरा।
लेकर वांस फिरे चौफेरा, मारूं मार मचायसी—
बोल तेरा है कि विराना ॥३॥
भजन वन्दगी करले बंदा, मत होवे मायामें अन्धा।
है यह कुटुम जगतका फन्दा, कोई नहीं आडो आयसी—
झूठा है नेह लगाना ॥४॥
पूंजी करले राम नामकी, कोड़ी लगे ना तेरे गांठकी।
कह मन्नू यह तेरे कामकी, भवसागर तिरजायसी—
फेर होय नहीं यहां आना ॥५॥

५०४—भजन पारवा

यह तन पानोकी पैदास, फिर पानीमें रम जाना ॥टेक॥
सावण विना कदे नहीं न्हावे, आडा टेढ़ा पटिया व्हावे।
क्या इतना सिणगार दिखावे, इस जंगलकी घासका—
झूठा है तेल लगाना ॥१॥
गर्भवासमें कौल किया है, भजन करूंगा बोल दिया है।
यहां आकर नहिं नाम लिया है, एक दिन आवे नाशका—
जाना है उसी ठिकाना ॥२॥
तत्व चीज निकल जावेगी, काया पर जरदी छावेगी।
मूंई माटी कुम्हलावेगी, पता न पावे सांसका—
बस बाकी रहा जलाना ॥३॥
राम नाम की फेर सुमरणी, आड़ है तेरी वैतरणी।

कह मन्नू कर चोखी करणी, माल मिले प्रकाशका—
फिर होय नहीं यहां आना ॥४॥

५०५—भजन

कुश्ती कर इस अहंकारसे, देय पटक जित जावेगा ॥टेक॥
जित लोभ और मद मायासे, काम क्रोध पांचू मायांसे।
मुक्ति नहीं मुगदर ठायांसे, बोझा मरसी मारसी—
कहीं हाथ टूट जावेगा ॥१॥
मुगदर छाड़ कर फेर सुमरणी, दोनों जुगमें आनंद करणी।
विपत शोक बाधाकी हरणी, पार करे संसारसे—
सागरका थाह पावेगा ॥२॥
क्या होगा कसरत डंडनसे, नेह करो दशरथ नंदनसे—
इस खोटे व्यवहारसे, आखिरमें क्या खावेगा ॥३॥
जमका दूत घणा है इनका, हाथमें मुगदर है सो मनका।
उपाय कर उनके जीतणका, बच जावेगा मारसे—
कहे मन्नू सुख पावेगा ॥४॥

५०६—भजन

संसारमें कांई कियो रे, राम नाम नहीं लियो रे ॥टेक॥
तीर्थ व्रत कबहुं नहिं कीयो, नहिं गंगाजल पीयो रे ॥१॥
कपड़ो लतो कबहुं न पहर्यो, नहिं दुर्वल कूं दीयो रे ॥२॥
कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी, देख देख कर जीयो रे ॥३॥
घरवाली को नौकर बण कर, रोट्यां साटै रियो रे ॥४॥
मन्नू कहे भजन विन फीको, सूनो लागे थारो हीयो रे ॥५॥

५०७—भजन

सूत्यो सुमरो रे राम, आसी अन्त मांही काम ।
काया गारकी तमाम; भायो कोनी अपनी ।।टेक।।
प्यारा पुत्र नाती वीर, सगला फूंकसी शरीर ।
लेज्या गंगाजी के तीर, दे दे धोली कफनी ।।१।।
आकर दूत लेसी घेर, कांई जोर करसी फेर ।
माला हाथ मांही लेर, रात् रात जपनी ।।२।।
मूरख मानवी कर चेत, चिड़िया भेले देखी खेत ।
ज्यादा राख मतना हेत, नारी काली सपनी ।।३।।
मन्नू ध्यान धर कर देख, यो है सासतरमें लेख ।
विधना मार दीनी रेख, काया काल झपनी ।।४।।

५०८—भजन पारवा

चेत सुरज्ञानी पूंच्यो कालकी मुहानी ।।टेक।।
वालापणमें खेल्यो खायो, भोगी भरी जवानी ।
वीसी च्यार वीत गई अवतो निकलेगा प्राण, काया होयगी पुरानी ।।
गयो जमारो वीत हरिको मुखसे नाम लियो नी ।
काम पड़ेगो यमदूतनसे, वड़ी तकलीफ, प्यारा पड़ेगी उठानी ।।२।।
वीच खेत भवानी गाज रही, पण करसे धर्म कियो नी ।
साध संतना विपर जिमाया, संग ना चलेगी माया, होयगी विरानी ।।
हाथ माँय सुमरणी लेकर सुमिरो राम रस खानी ।
भवसागरसे पार होवेगा मन्नू कह तज दे झठ तोफानी ।।४।।

५०९—भजन पारवा

नेह क्यूं लगायो ऐसो आन दुनियासे ॥टेक॥
मनुष्य जन्म लेणकी खातर, कोल कियो ब्रह्मासे।
भजन करूंगा श्री भगवत को, करी थी कबूल, जब चल्या था वहांसे॥
बिलकुल भूल गयो यहां आकर, नाम न लियो जबांसे।
अलबत जाणा होगा फिरती बैर क्यूं करे है, बड़ यम दूतडांसे ॥२॥
बांध मुश्क ऊँधो लटकादे, छूटे न चिरलायांसे।
मार कोरड़ा खाल उड़ादे, करेगा फजीती कुछ मुण्ड मुसलांसे ॥३॥
कह मन्नू कुछ डरो कहो, श्रीराम नाम मुखड़ासे।
भवसागर बैतरणी तिरणो, पार उतरोगा, प्रभुको नाम लियांसे ॥४॥

मन्नालाल शर्म्मा

५१०—लावणी

जल भीतर कर कर राड़, आज गज हार्‌यो।
तुम लक्ष्मीपति महाराज, कष्ट हरो म्हारो ॥टेक॥
भयो आधी रैनके समय कुंजर तिसायो।
ले हथियनको संग सरवर पर आयो॥
हथनी सरवर पर खड़ी, बीच गज ध्यायो।
जब ग्रहा बलीने अपणो तन्तु फैलायो॥
जाँके बलसे रुक गयो सांस, चले नहिं सारो॥ जल०॥ १ ॥
हथनी सरवर पर ऊभी भोत पुकारी।
जल भीतर कुंजर कियो, जुद्ध अति भारी॥

जाके लिखी कर्ममें विपता टरे नहीं टारी।
दुःख संकटमें त्रिया पतीसे न्यारी॥
सब हथनी मिलकर कहे कंथ हुसियारो॥ जल०॥ २॥
जाकी जौ भर रह गई सूण्ड जलके बारने।
तब मुखसे लग गयो राम ही राम पुकारने॥
तुम दीनबन्धु भगवान गिरिवरके धारने।
तुम धरोजी बेग औतार, भक्तहित कारने॥
तुम दीनानाथ दयाल विड़द है थारो॥ जल०॥ ३॥
हरि हरिकी वाणी सुणी उठे घबराकर।
मैं करूं भक्तकी सहाय तुरत अब जाकर॥
लक्ष्मीजी पकड़्या चरण शीश नवाकर।
प्रभु सिर पर आधी रैन, जावोजी सुस्ताकर॥
घड़ी दोय करो आराम पीछे पग धारो॥ जल०॥ ४॥
तब लक्ष्मीपति लक्ष्मीने यूं समझावे।
मैं कैसे करूं आराम भक्त दुख पावे॥
मेरो करुणासिंधु नाम वेदमें गावे।
उस नामके ऊपर आज वटो लग जावे॥
मेरो भक्त लगे मोय प्राणां सेती प्यारो॥ जल०॥ ५॥
निज अरधंग्या तजी गवन प्रभु कीन्या।
तब सजे गरुड़ असवार गरुड़ तज दीन्या॥
भक्तके कारण पाँव प्यादे कीन्या।
जाय फेंक सुदरशन चक्र मगरको छीना॥

जद हस्ती रावके शीश हस्त प्रभु धारो ।। जल०।। ६ ।।
जो कोई लक्ष्मीपतिको निश्चै ध्यान लगावे ।
ताका दुःख संकट मिट जाय परम पद पावे ।।
जो नर नारी गजकी लीला गावे ।
जाको प्रभुमें होजा प्रेम, जन्म नहिं पावे ।।
कथ गाई रामरिख विप्र चूरूवारो ।। जल०।। ७ ।।

पं० रामरिख शर्मा

५११—भजन

कुण जाणे पराये मनकी ।
मनकी तनकी लगनकी हो, कुण जाने पराये मनकी ।। टेक ।।
हीरेकी गत जौहरी जाने, रामजी चोट सहे सिर घनकी ।। १ ।।
चानणी सी रैन सन्त कूं चहिये, सुरत लगी रे भजनकी ।। २ ।।
अन्धेरीसी रैन चोर कूं चहिये, सुरत लगी पर धनकी ।। ३ ।।
घाटमदास जातको मीणो, पत राखे अपने जनकी ।। ४ ।।

घाटमदास मीना

५१२—भजन पारवा

गोरा वदन निहारके, राधेजी करत गुमान ।
ललिता जोड़ी ना वनी, काला है घनश्याम ।।
उस कालेसे हंस वोलके, कवी काली ना वण ज्याऊं ।।टेक ।।
काला कृष्णजी काली कमलिया, काली नन्द वावाकी धेनु ।
काली ग्वालिनसे करली प्रीती, कालस लगा लिया नेण ।।
कभी खे लूंना खिलाऊं ।। १ ।।

वंशीका गुण नन्द छैलमें, जैंसे डोलूं गैल गैलमें।
मन चाये तो रहूं म्हेलमें, चाये डोलती फिरूं स्हेलमें॥
तने सावणसे नुहाऊं॥ २॥

कालीसी लिंवाड़में, एक जैंमे गोरी गाय।
व्यावे नाहीं दूदो देवे, ऐसे रहे समझाय॥
देख तने समझाऊं॥ ३॥

काला काला केश तेरा, चोटला कटावणा।
काला काला सुरमा तेरे, नैनों में नहिं सारणा॥ ४॥
काला काला तवा जैंकी रोटी नहिं खावणा।
काली काली रैन जैंमें, निद्रा नहिं ल्यावणा॥ ५॥
काला काला वादल जैंसे मेह नहीं वरसावणा।
काला काला है भगवान, सृष्टिका उपावणा॥ ६॥
इतनी तो सुणकर राधे, हो गई मात जी।
सूत्या घनश्याम फेर, करी नाहीं वातजी॥
युगल जोड़ी यश गाऊं॥ ७॥

५१२—भजन

समझरे, मन मतना भूल्याँके सागे होय।
भूल्यांने भू दूर है रे, जन्म गयो छै खोय॥ टेक॥
मोह माया जालमें, उलझ रह्या सव कोय।
गुरु वचनांमें चालणारे, उदय अस्त ले जोय॥ १॥
मात पिता सुत भाइयाजी, अपणा होय नहीं कोय।
यो हटवाड़ो बाजारको, शोभा है दिन दोय॥ २॥

बटफाडू है बाटमें, साँसो दुरमत होय।
शब्द बोलां उन संग लेवो, थारो साँसो दुरमत धोय ॥३॥
बुजलाड़ा पंथ दूर हैजी, चालतड़ां सुख होय।
गुरु गमसे रस्ते मिलरे, हाल पड़ो मत सोय ॥ ४ ॥
हरि रस्ते हरिजन गयाजी, सन्त मरजीवा होय।
तीनूं चौकी उलांघकेरे, चौथीमें निर्भय होय ॥ ५ ॥
लिखमा विषमी मौम हैरे, गाँव गया गम होय।
बैतरणीका लोग डारे, रैन वसैरा होय ॥ ६ ॥

५१४—भजन

सुकृत करले राम सुमर ले कुण जाणे कलकी,
खबर नहीं है जगमें पलकी ॥ टेक ॥
तारामंडल रवी चन्द्रमा, ज्योत झलामलकी।
दिनाँ चारका चमत्कार है, बीजलियाँ झलकी ॥ १ ॥
मन महावत तन चंचल हस्ती, तस्ती दे धमकी।
स्वाँस स्वाँस सुमर साहेब कूं, आव घटे तनकी ॥ २ ॥
जब लग हँसा है देहीमें, खुशियाँ मंगलकी।
हँसा देही छाड़ चले जद मटियाँ जंगल की ॥ ३ ॥
कोड़ी कोड़ी कर माया जोड़ी, कर वातां छलकी।
पापकी पोट धरी शिर ऊपर कैसे हो हलकी ॥ ४ ॥
यह संसार स्वप्नकी माया, ओस बूंद जलकी।
बिनश जावे बार ना लागे, दुनियाँ जाय थलकी ॥ ५ ॥

भाई बन्धु और कुटम कबीलो, दुनिया मतलबकी।
नारी प्यारी देह संगाती, यह नेरे कबकी ॥ ६ ॥
दया दान शीलको मारग, यह बातां सतकी।
काम क्रोधने मार हटावो, विनती अखैमलकी ॥ ७ ॥

५१५—भजन

अगलोड़ी मंजल मोत है झीणी कद पूगोला निर्वाण,
गाँठ विना कांई खासो ॥ टेक ॥
वरण बादली उलटी उमगी वरस रही दिन रात,
खलक सारो वह जासी ॥ १ ॥
इन्द्र राजा बैठ्या इन्द्रासन, देखत भूलीका,
ख्याल पलकमें खिड जासी ॥ २ ॥
रैन समय सुमार्यो नहिं प्रभुको, होजासी परभात,
चोर हो कहाँ जासी ॥ ३ ॥
सूत्या सन्त जाग्रतमें व्यापे बाँध भजनकी पाल,
फक्कर होय रम जासी ॥ ४ ॥
गुरुका वचन सत्य कर मानो, यही कर सोच विचार,
लखो कोइ अविनाशी ॥ ५ ॥
चेतनदास हरिका गुण गावो, अन्दर ध्यान लगाय,
परम पद मिल जासी ॥ ६ ॥

५१६—राग सोरठ

वटाऊ बाट घणी दिन थोड़ो ॥ टेक ॥
घर रह्यो दूर सूर्य घर हाल्यो, दौड़ सके तो दौड़ो ॥ १ ॥

हो हुसियार हिम्मत मत हारो, हांक घणेरो घोड़ो ॥ २ ॥
निर्भय होसी नगर जा पूग्याँ, विन पूग्यां होय फोड़ो ॥ ३ ॥
औघड़ कहे गुरांके शरणे मारग लखियो मोड़ो ॥ ४ ॥

५१७—भजन

राम छिन छिन करतां पल पल वीते, पलसे घड़ी होय जावे ।
घड़ी घड़ी करतां पहरज बीते, अष्ट पहर घुल जावे ॥ १ ॥
सुखमें सोवना नरम विछोवना, ओढ़ण मलमल खासा ।
एक दिन ऐसा आवेला प्राणी, जंगल होयगा वासा ॥ २ ॥
तेल फुलेलका मरदन करता, ताते जलसूं न्हावे ।
दैवकी कुदरत दौड़ी आवे, काल झपट ले जावे ॥ ३ ॥
या देही थारी रतन पदारथ, बार बार नहीं पावे ।
बालकदास कहे वैरागी भूल्यो मन समुझावे ॥ ४ ॥

५१८—भजन

राम भजन तूं करलेरे प्राणी, जगमें जीवना थोड़ा रे ॥ टेक ॥
लट पट पाग केसरियो जामो, चढ़णने तुरंगी घोड़ा रे ।
साँवरी सूरत पर दूब उगली, चर चर जायगा ढोरा रे ॥ १ ॥
जबलग तेल दिये बिच बतियाँ, झिलमिल होय रह्या रे ।
मिट गयो तेल, निवड़ गई बतियाँ, हलचल होय रह्या रे ॥ २ ॥
थलियां लग थारी तिरिया झूरे, फलसे लग थारी माता रे ।
वनखंड लोग पाँवको झूरे, जीव अकेला जाता रे ॥ ३ ॥
गैली तिरियां यूं उठ बोली, बिखर गया मेरा जोड़ा रे ।
बालकदास कहे वैरागी, जिन जोड़ा तिन तोड़ा रे ॥ ४ ॥

५१९--भजन

साधू आया पावणा, म्हारी टूटगी जमडाण री ।
आज म्हारो भाग जाग्यो, भलो उग्यो भानु री ।। टेक ।।
सन्त आया आनन्द छाया, आँगण घमसाण री ।
ज्ञान गोला छूटण लाग्या, टूटगी कुल काण री ।। १ ।।
ऊँची मंडी उलट पड़ी, जारी पड़ी पिछाण री ।
झिलमिल दीदार वांको क्या करूं वखाण री ।। २ ।।
शब्द सुण्या भला भण्या, आगयो आपाण री ।
कर्म भर्म वेकार भाग्या, तीर मारयो ताण री ।। ३ ।।
कहीं न आना कहीं न जाना, उग्यो दिल विच भानु री ।
गुरु शरण समरथ वोल्या, वैठ्यो मौज माण री ।। ४ ।।

५२०—भजन

सुमरण सेल लागो सट, साधो लट, मर गई पट रे ।। टेक ।।
चोपड़ मांड चोवेटे आवो, खेलो सट रे ।
पासा डालो प्रेमका, त्रिवेणी रे तट रे ।। १ ।।
ज्ञान घोड़े जीन मांडी, आवो, चढ़ो झट रे ।
घोड़ा ऐसे फेरण लाग्या, वाँस फेरे नट रे ।। २ ।।
देहीमें दातार दरस्या, खोज्या, अपना घट रे ।
शीशमें जगदीश दरस्या, असर मारवा सट रे ।।३।।
आठ नौ पैड़ी चढ़ज्या, च्यार चढ़ ज्या खट रे ।
जमां के सिर जूत मारो, खोस नाखो जठ रे ।। ४ ।।

५२१—भजन

(ज्ञानकी मंगलकी ढाल पर)

म्हारी सुरत सुहागण ये इता दिन कुंवारी क्यूं रही।
म्हाने सतगुरु भेट्या नांय, इता दिन यूं रही ॥ टेक ॥
चढ़िये सतगुरुकी दूकान, ज्ञान बुद्धी ल्याइये।
लोभ मोहको जाल, हरिगुण गाइये ॥ १ ॥
पूरण मासीकी रैन गई सतसंगमें।
सतगुरु पकड़ी बांह भिजो दी रंगमें ॥
बावल विप्र बुलाय लगन लिखवइये।
वेगो करदे ब्याह देर मत लइये ॥ २ ॥
ममतारा मूंग दलाय, हल्दी हर नांवकी।
तत्वांरो तेल कढ़ाय, पीठी मलो प्रेमकी ॥
ॐ सोऽहंके बीच चेतन चवरी।
रूपी हर हथलेवो जोड़ सूरत फेरा फिरी ॥ ३ ॥
घणां दिनको चाव नवो नहेलड़ो।
नवल बणिक सिर छत्र विराजे सेहरो ॥
बाबल दियो दायजो पदारथ च्यारको।
गैणो ज्ञान वैराग्य, विचार, हीरो हरि नाँवको ॥ ४ ॥
घणां दिन रही लोय लुभाय वोला दिन वां पर।
कर सतगुरांजीरो सतसंग चली घर आपर ॥
मामा छोड़ा ममसाल भुवा दस भनड़ी हेली।
छाड़यो पीवरियारी देस पियाके सम्मुख खड़ी ॥ ५ ॥

५२२—भजन

ओजूं नहीं मिलणी होय पीवरी यार लोगसे।
हेली चली है दीवान देख पुरवले संजोगसे ॥१॥
चढ़ी है शिखर पर जाय अगम घर ताकिया।
दसों दरवाजा भेद गमन आगे किया ॥२॥
लग गई औघट घाट कँवल कण्ठ छेदिया।
भँवर गुफाके बीच निरंजन भेंटिया ॥३॥
लंघ गई औघट घाट मिली जा पीवसे।
ब्रह्म करयो भरतार विसर गई जीवसे ॥४॥
सतगुरु कह समझाय पुरुष इक सार है।
मंगल कथ गया राम सोही करतार है ॥५॥

५२३—भजन

थारी मैं मिल जायगी रेतमें, क्यूं मैं के बोझ मरे है ॥टेक॥
म्हारी म्हारी बकतो डोले, अंधो भयो आँख नहीं खोले।
कानां से तूं हो रह्यो बहरो, रहना बहुत सचेतसे—
शिर ऊपर काल फिरे है ॥१॥
जब लग तेरी मैं नहीं मिटे, तब लग गैल करे न छूटे।
वहाँ जम तेरो शिर पीटे, खड़ा रहे जग माँयने—
करणीका दण्ड भरे है ॥२॥
मैं की पाट धरी शिर ऊपर, जैसे गुण लदी खच्चर पर।
जुवाब तो पूछेला घर पर, रहा कुटुंबके हेतमें—
वहाँ खंभा लाल करे है ॥३॥

मेरी मेरी कितना कर गया, जोड़ जोड़ माया ने धर गया।
काल बली तो उँने भी तोल गया, चिड़िया चुगगी खेत--
उमरने काल चरे हैं ॥४॥
चित्रगुप्त की कलम वहत है, उँमें कोर कसर ना रहत है।
ब्रह्मचारी जी तो हेला देत है, हरिसे ध्यान लगाय ले—
संगतसे न्याव तिरे है ॥५॥

५२४—भजन

तुम कहो सजन किस कामकी, सुमरण बिन सुन्दर काया ॥टेक॥
रूप घणा हरि में नहीं सुरती, जैसे बनी पत्थरकी मूरती।
बिन भोजन भूखेकी बिरती, भूंसती कुतिया गाँवकी—
भुंस भुंसके नगर जगाया ॥१॥
धर्म बिना शोभा नहिं धनकी, बिन दीपक शोभा न भवनकी।
भजन बिना ममता नहिं मिटती, तसकर चोरे हरामकी—
मन बस रहा माल पराया ॥२॥
ज्ञान सुने बिन श्रवण कैसा, भूमिके बिच पड़ा बिल जैसा।
बिन तीरथ है पाँव जड़ जैसा, डगर न पाई धामकी---
नर अवस्था जनम गुमाया ॥३॥
भजले राम भज्यो जाय तब लग, जिणा होगा सांसके हद लग।
कहे ब्रह्मचारी पार जाय कब लग, काया पुतली चामकी---
क्या अमर पटा लिखवाया ॥४॥

५२५—भजन

भजन करले सुरज्ञानी रे जतन करले अभिमानी रे ॥टेक॥
गर्भवासमें सैनक देखी, नरक निसानी रे।
पाछे वारे आकर हो गयो, निमकहरामी रे ॥१॥
वालपणो हंस खेल गँवायो, आई जवानी रे।
मात पितासे टेढ़ो बोले, तिरिया कानी रे ॥२॥
माया छोड़ जमींमें मेली, अपनी जानी रे।
छूट जायसी प्राण, माया होय विरानी रे ॥३॥
पांच पचास नवे वर्ष जीले, साके तांई रे।
आखर खायगो काल, वचे न मौत निमाणी रे ॥४॥

अज्ञात

५२६—भजन

ध्यान नित च्यार भुजा धरना, मौर उठ दरशण भी करना ॥टेक॥
शीश पर मोर मुकुट मोती, पहरे पीताम्बर धोती।
झिलामिल कुंडलकी ज्योती, हाथमें वंशी भी सोहती ॥
वंशी सोहे हाथमें, संकट करना दूर।
नेहचे से नेड़ा घणां कोई हाजर खड़ा हजूर ॥
शंका मनमें नहिं करणा ॥१॥
राम होय रावणकूं मारे, खंभमें सिंह रूप धारे।
भक्त प्रह्लाद कूं तारे, दुष्ट हिरणाकुश कूं मारे ॥
दुष्ट विदारण कारणे, हरि लीन्यो अवतार।
दुष्ट फिरे इस जमीं ऊपर, चढ़े भूमि ने मार ॥

आ गया दुष्टांका मरणा ॥२॥

कृष्ण होय कंसकूं मारे, सहाय कर भक्तांकूं तारै ।
गिरिवरको नख ऊपर धारे, गर्वपण इन्द्रका गालै ॥
अवध ज्ञान ईन्द्र करे, जब जाण्यो जगदीश ।
थरहर लाग्यो धूजवा, कोई आय नवायो शीश ॥
दौड़ कर इन्द्र लिया शरणा ॥३॥

ज्यान ले शिशुपालो आयो, साथमें जरासन्ध लायो ।
डेरो कुनणापुर छायो, देख मन रुकमो हरखायो ॥
रुकमण पाती प्रेमकी, मेली जोशी हाथ ।
बांचत ही संशय भया, हो लिया कृष्णजी साथ ॥
संकट रुकमणका हरणा ॥४॥

कृष्णजी कुनणापुर आये, खबरपन रुकमणकी पाये ।
हरख मन बहुतेरा लाये, देख मन रुकमा घबराये ॥
रुकमण पूजै अम्बिका, ले सखियनको साथ ।
पाछा फिरतां कृष्णजी, कोई हित कर पकड़्यो हाथ ॥
चावे छी मैं आपको शरणा ॥५॥

माहेरे नरसीके आया, राधा रुकमण सागे लाया ।
भगवत भगतां मन भाया, बेष धन मेह ज्यूं बरसाया ॥
मन सूं कह दया भरां माहिरो हर बतलावां बात ।
इधर को धन आकाश पै उतरे, बांटे नरसी हात ॥
काम सिद्ध भक्तांका करणा ॥६॥

साँवरा शरणागत तेरी, अब थे सहाय करो मेरी ।

विनवां मोर मुकुट धारी, अरज थे सुणज्यो गिरधारी ॥
श्रावग कुल दीप सदा, वसे लाडनू वास।
कर जोड़यां लिछमण खड़यो, मेरी सुणो अरदास ॥
मिटावो जन्म और मरणा ॥७॥
लक्ष्मीनारायण सरावगी

६२७—महावीरजीकी लावणी

(रंगत भैरवी)

महावीर रणधीर पवनसुत, विनती सुणियो वारंवार।
असुर संघारण भक्त उवारण, विद्या वलका थे दातार ॥टेक॥
जन्मत ही थे सुरज निगल गया, खेल कियो यो वलदाई।
अंधकार फैल्यो चौतरफा, हाहाकार मच्यो आई ॥
देवन स्तुति तवही कीनी, काढ़ दिया मुखसे वांई।
हुयो उजालो ताहि समय सुर, जय जयकार रहे गाई ॥
करो उजालो इव घट अन्दर, मैं जाऊं थारी वलिहार ॥१॥
श्रीराम सुग्रीव मिलाये, मैत्री दीनी खूब कराय।
कहे सुग्रीव सुनो रघुराई, मेरी तो थे करो सहाय ॥
वड़ो भ्रात वाली मोय मारै, उसने देवो मार हटाय।
तव रघुवर वालीने मारयो, तारा रुदन करो है आय ॥
सुग्रीव कूं तव राज दिलाकर, कर दीन्यो वहां मंगलचार ॥२॥
श्रीरामके काज संवारे, लंका लांघ गये उस पार।
रस्तेमें सुरसा जद निगल्यो, पैठ वदन निकस्यो है वार ॥

जाय मुद्रिका दी सीता को, रह्यो न हरसको पारावार ।
लेकर अज्ञा श्रीसीता की, राक्षस दीन्या वली पछार ॥
तेल रूईसे जला पूंछको, दीनी है लंका सब जार ॥३॥
शक्ति लगी लिछमणके जा दिन, सोच करैं श्रीराम सुजान ।
कुण ल्यावे सरजीवण बूंटी, यो कारज है कठिन महान ॥
ल्याया जद थे द्रोणागिरिने लछमणके वचवाये प्रान ।
रामचन्द्रजी श्रीमुख सेती, तुम्हें बताये बुद्धीमान ॥
जय जयकार करैं सब कोई, रणमें हो गयो हर्ष अपार ॥४॥
अहिरावण जब उठा ले गयो, राम लिछमण दोउ माई ।
देख अचंभो करणे लाग्या, घणी उदासी जद छाई ॥
दारूका भगवती कहै तब, थे पताल पैठ्या जाई ।
चंडीको अवतार धार कर, करामात तब दिखलाई ॥
मार राक्षस चढ़ा कंध पर, दोनांने थे लिया निकार ॥५॥
लंका जीत राम घर आये, तब वे ल्याये थाने साथ ।
पुरी अयोध्या बीच आयके, थारे सिर पर मेल्यो हाथ ॥
लवकुश से लड़ हो गया मुरछित, तुम्हें जिवाये श्रीरघुनाथ ।
राम दूतकी पदवी मिल गई, नर नारी सब नावें माथ ॥
जसरापुर में मेलो होवे, पौप पूर्णिमा होय वहार ॥६॥

५२८—भजन

सुमरां बजरंगने, महावीर बड़े बलवान ॥टेक॥

मिले रामसे थे बलदाई, सुग्रीवने हिम्मत बंधवाई,
वालीने मरवाय दियो है, जबरजंग हनुमान ॥१॥

सेतु लांघ लंकामें आये, सीताजीके सोच मिटाये,

कूद कूद कर जला लंक को, मेट दिये हैं नाम निशान ॥२॥

सक्ती तो लिछमण के लागी, वणी उदासी रणमें छागी,

परवत सहित संजीवन लाये, लछमनके बचवाये प्रान ॥३॥

अहिरावण लेगो दोउ भाई, दलमें तो दिलगीरी छाई,

पैठ पाताल दोनांने ल्याया भगवती कहे धर ध्यान ॥४॥

भगवती प्रसाद दारूका

५२९—गोपियांको वारामासियो

गोपियन की सुध लई नांई नांई जी,

छायो श्याम द्वारका मांईजी ॥टेक॥

सखि चैत चतुरभुज धारी, वणराय फूल रही सारी ।

गण गोर पूजैं वृजनारी ॥

सखियां पूजै गोर, वै तो उठ संवारी भोर ।

कूबरी वस कियो चित्त चोर, श्याम भरमायोजी ॥१॥

वैशाखां रुत गरमीकी, किनसैं विथा कहूं मेरे जीकी ।

मोहन विना राधा फीकी ॥

फीकी विन वनवारी, हरिने दासी करली प्यारी ।

थे तो जशोदाको दूध लजायो जी ॥२॥

सखि आयो जेठ महीनो, रवि तेज धूप कर दीनो ।

मेरे टपके वदन पसीनो ॥

गरमीसे अंग पसीजै, मेरी अंगियाको रंग छीजै ।

लू लागै तन सीजै, जिवड़ो अति घवरायो जी ॥३॥

साढ़ मास वस कियो कूबरी, प्रभुके दिलमें वस रही खूबरी ।
मैं तो या दुख होरही दूबरी ॥
दूबरी दुबरावै, मेरे इसी ध्यानमें आवै ।
तोय नारदजी वहकायो जी ॥ ४ ॥
सावण बरसाका जोरा, ये नदियां लेत हिलोरा ।
बागां बीच घल्या हिंडोरा ॥
सखियां वैठी झूलै, ये तो नागणकी ज्यूं टूलै ।
मनमें फूलै, आज म्हारे तीज तिंव्हार मनायो जी ॥ ५ ॥
भादू इन्द्र झड़ी लगाई, उन भर दिया ताल तलाई ।
चहुं दिशि बिजली चमकाई ॥
बिजली चिमकण लागी, विरहण जागी, काहू विध त्यागी ।
मने यांको भेद नहिं पायो जी ॥ ६ ॥
आस्योजामें दशरावो, प्रभुजी इव तो दर्श दिखावो ।
गोपियन को मत तरसावो ॥
तरसे राधा प्यारी, थारी साँवरा बनवारी ।
थे तो दासी को मान वढ़ायो जी ॥ ७ ॥
कातिक उठ भोर सवेरी, मन्दर तुलसांकी फेरी ।
माई मनस्या पूरो मेरी ॥
मनस्या पूरो म्हारी, माई कूबरी हत्यारी, है छिनगारी ।
म्हारे मोहन ने बिलमायो जी ॥ ८ ॥
मंगसिर सुपनामें सैंयो, देख्यो नन्दजीको कुंवर कन्हैयो ।
बलदाऊ जी को भैयो ॥

दाऊ जी को भाई, बतलाई सुखपाई।
मोंही सुपनेमें दरशायो जी ॥ ६ ॥
सखि पो जाड़ा से धूजूं, मैं तो जोशी पण्डित बूझूं।
जोशीजी का पतड़ाने पूजूं ॥
जोशी पतड़ो देख, बोल्यो कर्क मीन और मेख।
फागण में मिलण बतायो जी ॥१०॥
सखि माघ मास आई पतियां, बाँचकर शीतल भइ छतियां।
राधा हंस हंस कर रही बतियाँ ॥
हंस कर बोली राधा, मेरी मिटी जीवकी बाधा।
मैं तो पहिरूं तील नवादा, अरु गेणो मनको चायो जी ॥११॥
फागण वृषभान दुलारी, मथुरामें आये बनवारी।
सज लीनी महल अटारी ॥
आ गये घनश्याम, मेरे सरे मनोरथ काम।
तुलाराम बारामासियो वणायो जी ॥१२॥
तुलाराम शर्म्मा

८२०—लावणी

विपत पड़ी हिरणीके बीचमें, जब उन हरिसे टेर दई।
आकर वनमें पारधी, उस हरिणीने घेर लई ॥ टेक ॥
बैठी हिरणी देख पारधी, चौतरफा घेरा ल्याया।
एक तरफको खैंचकर, डोर जालका बिछवाया ॥
दूजी तरफको अगन जला दी, बड़ा तेज उसका छाया।
तीजी तरफको खड़ा कर दिया, आन स्वान वो लहलाया ॥

देख चारों तरफ हिरणी, करणे लगी दिल सोचमें।
घबराय कर गिर गई हिरणी, होय कर वेहोशमें॥
श्वान देखे स्यामने, भर कर नजर कर रोसमें।
कौन मालिक हो मेरा, किससे कहूं मैं जोसमें॥
चौथी तरफको खड़ा पारधी, उठा सेर वन्दूक लई॥ १॥
कीन्यो सोच हिये मृगपत्नी, उठी विपत तनमें भारी।
तुम बिन मुझको कौन बचावे, ऐसे कहे मृगकी नारी॥
आन फंसी फन्देके वीचमें, इव सुध लीज्यो गिरधारी।
कौन तरफसे निकलूं स्वामी, रहा नहीं रस्ता जारी॥
सहाय मेरी कीजिये, ज्यूं गज बचाया ग्राह से।
फन्द दुरयोधन रचा, सब कौरवोंकी चाहसे॥
पांडु बचाये अगनसे, निकाले सुरंगकी राहसे।
काल कन्धे पर खड़ा, वह कह रही भर आहसे॥
तुम हो नाथ अनाथके, बेली कहाँ लगाय देर दई॥ २॥
सुन हिरणीकी टेर प्रभूने ऐसा मेह बरसाया है।
बुझी अग्नि तुरत, वह गया स्वान पता नहीं पाया है॥
हवा वेगसे उड़ा जाल, वो नाग पारधी खाया है।
उस हिरणीका दुःख, राम पलमें ही दूर कराया है॥
देखती पल वीच हिरणी, वधिक न दीखे जाल है।
स्वान अगनी कुछ नहीं, जलसे भरे सब ताल हैं॥
मंगल भये खुश होय हिरणी, कूदती वर छाल है।
मुझको बचाई आनकर, ऐसा वो दीनदयाल है॥

विपतकाल दिया टाल, आनके तत्काल मेरी खबर लई ॥ ३ ॥
जो कोई भक्ति करे प्रेमसे, उसके घटकी हरि जाने।
जैसे जोहरी देख देख हीरेकी कीमत पहिचाने ॥
मूरखसे नहीं काम धाम बेशरम लगे दंगल गाने।
बेताले बेसुरे लगे हैं, चंग भंडापी खुड़काने ॥
दिल बिच होवे साँच तो, घरमें मिले हरि आयके।
अन्दर कपट ऊपरसे भक्ती, होय क्या दरशायके ॥
झूठेकी मुक्ती है नहीं, भुगतै चौरासी जायके।
खुवार होकर जगतसे, भग जाय धक्के खायके ॥
गंगाराम कहे ज्ञान तान, दुश्मनके मार समसेर दई ॥ ४ ॥

गंगाराम शर्म्मा

५३१—भजन

कर उस दिनका फिकर कि जिस दिन चल चल चल होगी ॥ टेक ॥
यमका दूत जिस दम आवेंगे, बांह पकड़ कर ले जावेंगे।
पल भर छोड़े नहीं, कठिन एक पल पल पल होगी ॥ १ ॥
धन सब माल पड़ा रह ज्यावे, लोग कुटुम्ब कोई काम न आवे।
जब करेगा बेकल काल दूर सब कल कल कल होगी ॥ २ ॥
जिस तनके ऊपर तनता है सिंहजी और बांका बनता है।
यह कञ्चन काया तेरी खाक सब जल जल जल होगी ॥ ३ ॥
कह टीकम कर सफल कमाई और संग नहीं चलगी पाई।
चढ़ण कुंदो बांस ढकण कूं मल मल मल होगी ॥ ४ ॥

५३२—भजन

साँवल साह गिरिधारी, प्रभु बिन कूण खबर ले म्हारी ॥ टेक ॥
अटपट पाग केशरियो बागो, हिवड़ै हार हजारी ॥ १ ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंडलकी छिब न्यारी ॥ २ ॥
वृन्दाबनमें गऊ ये चरावे, बंशी बजावे गिरधारी ॥ ३ ॥
गोपियनके संग रास रच्योहै, राधेश्याम बलिहारी ॥ ४ ॥

५३३—भजन

साँवल साह सुनो बिनती मोरी, यो बरदान दया कर पाऊं ॥ टेक ॥
आप बिराजो रतन सिंहासन, झालर शंख मृदंग बजाऊं ॥
धूप दीप तुलसीकी माला, बरण बरणका पुष्प चढ़ाऊं ॥ १ ॥
जो कुछ अहार मिलै प्रभु मोकूं, भोग लगा कर भोजन पाऊं ।
छप्पन भोग छत्तीसूं मेवा, प्रेम सहित मैं तुम्हें जिमाऊं ॥ २ ॥
एक बूंद चरणामृत लेकर, कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊं ।
जो कुछ पाप किया कायासे, दे परिकरमा शीश नवाऊं ॥ ३ ॥
डर लागत मोय भवसागरको, जमके द्वारे मैं नहिं जाऊं ।
रामप्रताप कहे कर जोड़यां, जलम जलमको दास कहाऊं ॥ ४ ॥

५३४—भजन

पियाजी थारो भायलो गोपाल, हरिजीने जाचन जावोजी ॥ टेक ॥
बालपनेका मित्र तुम्हारा, पढ़्या एक चट साल ।
जाय कहियो श्यामने थारा सारा मनका हाल ॥ १ ॥
सब सोने की बनी द्वारिका छत्री खम्भ अधार ।
छप्पन कोटि जादूपति राजा देसी द्रव्य अपार ॥ २ ॥

मैं तो जानूं नहिं तोहि बीर, तूं तो है कोई छलगीर।
मुझको किस विध आवै धीर, तैं तो करी राक्षसी माया—
छल कर लायो मूंदड़ी ॥६॥

मैं हूं रामन्चद्रको पायक, मेरे राम सदा है सहायक।
उनको नाम अति सुखदायक, मत कर सोच फिकर तूं माता—
या नहीं छलकी मूंदड़ी ॥७॥

बनचर देख सिया मुसकानी, मुखसे बोले ऐसे वानी।
तेरी छोटीसी जिन्दगानी, किस विध कूद गयो तूं सागर—
यहाँ पर लायो मूँदड़ी ॥८॥

मैया छोटो सो मत जान, मैं हूं वहुत अति वलवान।
वल मोहि दियो श्रीभगवान, रघुवर किरपा मोपै कीनी—
तव मैं लायो मूंदड़ी ॥९॥

सीता सुनके ऐसी वात, अपने मनमें धीरज लात।
इसको भेजा श्री रघुनाथ, मनमें वहुत खुशी होय सीता—
पल पल निरखै मूंदड़ी ॥१०॥

मैं हूं भूखो भोजन पाऊं, देवो हुकम तोड़ फल खाऊं।
दरखत तोड़ तोड़ छिटकाऊं, इन मैं अपनो वल दिखलाऊं॥
इस विध ल्यायो मूंदड़ी ॥११॥

सीता वोली सुन हनुमान, यहां है निश्चर अति वलवान।
तोकूं मार गिरावे आन, फिर मैं झुरके मर जाऊं—
यहीं रह जावे मूंदड़ी ॥१२॥

कहै हनुमान सुनो मेरी माता, मैं तो घर घर आग लगाता।

जो मैं हुक्म रामका पाता, तुमको रामसे जाय मिलाता ॥
संगमें रहती मूंदड़ी ॥१३॥

कहती सीता वीर सिधावो, जाके बाग मांहि फल खावो ।
हिरदै ध्यान रामको लावो, सारे निश्चर मार भगावो ॥
रक्षक होगी मूंदड़ी ॥१४॥

आज्ञा सीताकी जब पाई, हनुमत नवल बागमें जाई ।
दरखत तोड़ तोड़ छिटकाई, माली जाय कहे रावणसे—
कपि एक लायो मूंदड़ी ॥१५॥

बनचर एक बागमें आया, सब वृक्षनको तोड़ गिराया ।
तुमरी शङ्का वो नहिं लाया, ऐसा बनचर है बलवान—
कि एक वो लाया मूंदड़ी ॥१६॥

सुनके योधा सब ही धाये, शस्तर लेके बागमें आये ।
सन्मुख आकर युद्ध मचाये, वहां तो हुआ घोर संग्राम—
कि हनुमत जीती मूंदड़ी ॥१७॥

इनमें मेघनाद बलकारो हनुमत जीत्यो झगड़ो भारी ।
उसने ब्रह्मफांस गल डारी, लायो बांध पास रावणके—
झट दिखलाई मूंदड़ी ॥१८॥

तब तो मारण उसको लागे, बस नहीं चलता हनुमत आगे ।
निश्चर देख देख कर भागे, यह तो हरजिग नहीं मरनेका—
पास संजीवन मूंदड़ी ॥१९॥

मैं तो मौत बताऊँ मेरी, लावो तेल रूई तुम गहरी ।
अब मत रावण कर देरती, पूंछको बांधके आग लगावो—

बचावै जल्दी मूंदड़ी ॥२०॥
सब लङ्काकी रूई मंगाई, उससे पूंछ बांध लपटाई।
ऊपरसे फिर तेल गिराई, तब तो तुरतहि आग लगाई।
याद कर लीनी मूंदड़ी ॥२१॥
पहले रावण सन्मुख जाय, बांकी दाढ़ी मूंछ जलाय।
सब लङ्कामें पूंछ फिराय, लंक जला दई हनुमान—
हृदयमें राखी मूंदड़ी ॥२२॥
लंका फिर फिरके जलाई, घर एक विभीषणका नाहीं।
बाकी सब घर आग लगाई, अब तो कारज कियो हनुमान—
पूंछ बुझावै मूंदड़ी ॥२३॥
हनुमत सुध लेकर आया, आवत सभी कपि बतलाया।
उनको सारा हाल सुनाया, सीता बैठी बागके मॉँय—
उसे दे आया मूंदड़ी ॥२४॥
जब तो गये रघुबरके पास, उनको खबर दई है खास।
मेटी सीताकी सब त्रास, तो सम नहीं कोई बलवान—
सराये रघुबर मूंदड़ी ॥२५॥
जो कोई ध्यान रामको लावे, मन चीता फल वो पावे।
उसको जन्म मरण छुट जावे, रघुबर पाप देवे सब खोय—
जो कोई नर गावे मूंदड़ी ॥२६॥

५३६—भजन

बंगला भला बना महाराज, यामें नारायण बोले ॥ टेक ॥
पाँच तत्वकी ईंट बनाई, तीन गुणोंका गारा।

छत्तीसांकी छात वना कर, चिन गया चिनने हारा ॥१ ॥
इस वंगलेके दश दरवाजे, वीच पवनका खम्मा ।
आवत जावत कोई न जाने, देखा वड़ा अचम्मा ॥२ ॥
इस वंगलेमें चौपड़ मांडी, खेलें पांच पचीस ।
कोई तो वाजी हार चला है, कोई चला जुग जीत ॥३ ॥
इस वंगलेमें पातर नाचे, मनुवा तान लगावे ।
सुरत निरतके पहर घुंघरू राग छत्तीसों गावे ॥४ ॥
कहै मछन्दर सुन वाले गोरख जिन यह वंगला गाया ।
इस वंगलेका गाने वाला वहुर जन्म नहिं आया ॥ ५ ॥

५३७—राग पनिहारी

कृष्ण मुरारी शरण तुम्हारी, पार करो तुम नैया म्हारी ।
जन्म अनेक भये जग मांही, कवहुं न भगति करी थारी ॥ टेक ॥
लख चौरासी भरमत भरमत हार गई हिम्मत सारी ।
अव उद्धार करो भव भंजन, दीननके तुम हितकारी ॥ १ ॥
मैं मतिमंद कछू नहिं जानत, पाप अनंत किये भारी ।
जो मेरा अपराध गिनो तो नाँय मिले पारावारी ॥ २ ॥
तारे भगत अनेक आपने, शेष शारदा कथ हारी ।
विना भक्ति तारो तो तारो अवकी वेर आई म्हारी ॥ ३ ॥
खान पान विषयादिक भोजन लपट रही दुनिया सारी ।
'नारायण' गोविन्द भजन विन, मुफत जाय उमरा सारी ॥ ४ ॥

५३८—भजन

छोड़ मन तूं मेरा मेरा, अन्त में कोई नहीं तेरा ।। टेक ।।

धन कारण भटक्यो फिरे रचे नित्य नया ढंग ।
ढूंढ ढूंढ कर पाप कमाया, चली न कौड़ी संग ।।
होय गया मालिक वहुतेरा ।। १ ।।

टेढ़ी बांधी पागड़ी बण्यो छबीलो छैल ।
धरती पर गिण कर पग मेल्या मौत निमाणी गैल ।।
बिखेर्या हाड़ हाड़ तेरा ।। २ ।।

नित साबुनसे न्हाइयो अतर फुलेल लगाय ।
सजी सजाई पूतली तेरी पड़ी मुसाणां जाय ।।
जला कर करी भस्म ढेरा ।। ३ ।।

मदमातो करड़ो रह्योनै, राख्या राता न ।
आयाने आदर नहिं दीन्यो, मुख नहिं मीठा वैन ।।
अंत जमदूत आय घेरा ।। ४ ।।

पर धन पर नारी तकी, पर चर्चा सूं हेत,
पाप मोट माथे पर मेली मूरख रह्यो अचेत ।
हुआ फिर नरकांमें डेरा ।। ५ ।।

राम नाम लीन्यो नहीं, सत्संगस्यूं नहिं नेह ।
जहर पियो छोड़यो इमरतने, अन्त पड़ी मुख खेह ।।
सांस सब व्यर्थ गया तेरा ।। ६ ।।

दुर्लभ देही खो दई, काम करया बदकार ।
हूं हूं करतो ही मरयो, तूं गयो जमारो हार ।।

पड़्यो फिर जन्म मरण फेरा ॥ ७ ॥

काम क्रोध मद लोभ तज, कर अन्तरमें चेत ।
'मैं' 'मेरे' ने छोड़ हृदयसे कर श्रीहरिसूं हेत ॥
जन्म यूं सफल होय तेरा ॥ ८ ॥

५३९—भजन

तैं चोरी करी गुरुदेव की नर तीन जन्म दुख पावेगा ॥ टेक ॥
पहले जन्ममें वणेगा कुत्ता, भूखा मरता गलियन सुत्या ।
तने कुण टुकड़ो घालसी, नर डांग पड़े घुररावेगा ॥ १ ॥
दूजे जन्ममें वणेगा ढांढा, सींग पूंछ विन फिरेगा वांडा ।
तेलीके घर घाणी गासी, आँख्यां पट्टी बंधावेगा ॥ २ ॥
तीजे जन्म नर वणेगा गधा, माटीका बोरा तेरे पर लदा ।
घर बाड़ कर नीरे न घास, गलियन चारणे गेरेगा ॥ ३ ॥
चौथे जन्ममें वणेगा ऊंट, लो लक्कड़ ऊपर लदेगा ।
ठूंठड़ा सत्तूराम कहे, भार लाद्यां कोसां फिरेगा ॥ ४ ॥

५४०—भजन

एजी म्हारो सांवरियो विहारी ठाढ़्यो जमुनाके तीर ॥ टेक ॥
तूं जमना रे सुहावनी, तेरो निर्मल नीर ।
नीर भरेगी राणी राधिका, ओढ़ कसूमल चीर ॥
ये जी म्हाने घड़ला उठावता जावोजी ॥ ठाढ़्यो० ॥ १ ॥
तूं जमना दूरी वणी, मोय पै तो चाल्यो ही न जाय ।
कहज्यो म्हारे सांवरेने, म्हाने गोदी कर ले जाय ॥
ए जी मैं तो पालीके विध चालूं जी ॥ ठाढ़्यो० ॥ २ ॥

अंगिया तो खासा बणीजी, चोली बूंटीदार।
सवा करोड़को टेवटोजी, नथली झलका खाय ॥
ए जी चूड़ले पर टीप लगाऊंजी ॥ ठाढ़्यो० ॥ ३ ॥
तने चावल मने लापसीजी, ऊपर से घी डार।
थाली परोसी राणी राधिका, कोई जीमो कृष्ण मुरार ॥
ए जी मनुहारां कर कर हारी जी ॥ ठाढ़्यो० ॥ ४ ॥
मैं बेटी वृषभान की, राधा मेरो नाम।
पकड़ मंगाऊं साँवरोजी, कोई छोटोसो नन्दलाल ॥
ए जी म्हाने घड़ी ये घड़ी मत छेड़ोजी ॥ठाढ़्यो०॥ ५ ॥
छोटो छोटो मत करे, राधा, मत कर मोटी वात।
छोटो दूजको चन्द्रमा, कोई दुनियां जोड़े हाथ ॥
ए जी दुनियांमें दो दिन जीणोजी ॥ ठाढ़्यो० ॥ ६ ॥
वृन्दावन की कुंज गलीमें गोपियन मांड्यो रास।
सुर नर मुनि जन ध्यान धरत हैं गावे माधोदास ॥
ए जी थारी वंशी वजाय नैन मोह्योरे ॥ ठाढ़्यो० ॥ ७ ॥

५४१—भजन

हेलो म्हारो सुणज्यो जी, महाराज गरुड़पत, गोकुलवालाजी ॥टेक॥
अंका तारे वंका तारे, तारे सजन कसाई जी।
सुवा पढ़ावत गणिका तारी, तारी मीरां बाईजी ॥ १ ॥
खम्भ फाड़ नरसिंह होय प्रगटे, हिरणाकुशने मारे जी।
प्रह्लाद भगतकी रक्षा कीनी, हरि ध्रुवजीने तारे जी ॥ २ ॥
सेन भगतका सांसा मेट्या आप वण्या हरि नाईजी।

नरसी भगतके भात भरणको कृष्ण रुकमणी आईजी ॥ ३ ॥
भारतमें भँवरीका अण्डा, घण्टा डार बचायाजी ।
रतन कहे महाराज नाथ थारे शरणां आया जी ॥ ४ ॥

५४२—भजन

भूल्यां कांई फिरोछो जी थारा हर भजवाका ढाणा ॥ टेक ॥
एकलाई आणा एकलाई जाणा, यहाँ नहीं कोई तेरा थाणा ।
पलक बारमें विछड़ जायगो, कायाका कमठाणा ॥ १ ॥
तात मात सुत भाई रे बन्धु ना कोई हितू तेरा ।
पलक बारमें विछड़ जायगा, तीरथका सा मेला ॥ २ ॥
चुण चुण कंकरी महल चिणाया, मूरख कहे घर मेरा ।
ना घर तेरा ना घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा ॥ ३ ॥
मटिया ओढ़े मटिया बिछावे, मटियाका सिराणा ।
सोच सको तो सोच लो मित्रो, माटीमें मिल जाणा ॥ ४ ॥

५४३—भैरवी

थारो दरस मोहिं भावै श्री गंगा मैया ॥ टेक ॥
हरिके चरणसे प्रगटी भगवती, शंकर शीश चढ़ावे ॥ १ ॥
सुर नर मुनि तेरी करत वीनती , वेद विमल जस गावै ॥ २ ॥
जो कोई गंगा मैया तेरो जल पीवै, भवसागर तिर ज्यावे ॥ ३॥
जो गंगा स्नान करै नित, फेर जनम नहिं पावै ॥ ४ ॥
दास नरायण शरण मात तेरी, जनम-जनम जस गावै ॥ ५ ॥

५४४—काफी

विघन निवारण तुम हो गणेशा ॥ टेक ॥
पारवतीके पुत्र कुहावो, शिवके पुरीके तुम हो नरेशा ॥१॥
एक दन्त दूजी सूंड विराजे, मूसेसे वाहन गल विच शेषा ॥२॥
ध्यानाके प्रभु दास दमोदर जैशिव-जैशिव उज्ज्वल भेषा ॥३॥

५४५—भगवान कृष्णकी झांकी

आवागमन निवारो साधो, झांकी तो करस्यां कृष्ण मुरारकी ॥टेक॥
सुन्दरश्याम सलूनी जोरी, नंदकूंवर वृषभान किसोरी ।
वृन्दावनमें लागै सोरी, अलख झलक वृषभानकी ॥
सुन्दर बरण कृष्णको साजे, राधेजी परकोप विराजे ।
दरशणसे दुख दालिद भाजे, संपत तो भारी श्रीपति रामकी ॥१॥
कमल नयन नारायण साजे, पाप दोष दर्शणसे भाजे ।
काम क्रोध उनके नहिं लागै, झांकी बड़ी गोपालकी ॥
सुन्दर रूप सभी मन मोहे, मोर मुकुट पीतांवर सोहे ।
जगमग ज्योति बिराजत हीरा, शोभा तो भारी मोतियन मालकी ॥२॥
भेजी कंस पूतना आई, ले अञ्चल वैकुण्ठ पठाई ।
देखत है सब लोग लुगाई, आज टली कुल कालकी ॥
कंचन दान दिया भोतेरा, चाउ अमोलक मोती हीरा ।
हाथां द्रव्य लुटावै नंदजी, भर भर थैली मुक्तामालकी ॥३॥
भोत वृजमें डाकण स्यारी नजर लगी लालेके भारी ।
मात जसोदा भई दुखारी, नाड़ी दिखावो मेरे लालकी ॥

पलने झूले कृष्ण मुरारी, चमकत है वाला संसारी।
अरी सखी कोई वेद बुलावो, करुणा तो लेवो मेरे लालकी ॥४॥
संत रूप धर शिवजी आये, मात जसोदा लाल दिखाये।
शिवजी ले गोदी वैठाये, झांकी वड़ी मुरारकी ॥
भगत जान मोहन मुसकाये, एजी नाथ मेरो लाल जीवाये।
मात जसोदा भई सुखारी, भिक्षा घलवाद्यूं हीरालालकी ॥५॥
ठाय गींड भांडके दीनी, मात जसोदा रोस कर लीनी।
चिटियो लेकर लैन्यां भागी, सुरत भई संसारकी ॥
आगे कान्हा पीछे माता, दुखसे हाथ दियो अति साथा।
जाय ऊखलके बांध दियो है, गत तो कर दीनी दोनूं गाछकी ॥६॥
ब्रह्मा कहे मोय ईचरज आवे, यह औतार मेरे दाय न आवे।
गली गलीमें धूम मचावे, जूठ खावे वो गुवालकी ॥
गऊ बाछा ब्रह्मा हर लीना, उतना मोहन फिर रच दीना।
जद ब्रह्माजी पड़े पाँवनमें, फांसी तो लग गई माया जालकी ॥७॥
मैं नारी नहीं कृष्णके तांई, चोरयो चीर चोरकी नांई।
जाय वैठ्यो कदम्बकी छाई, झांपा पकड़ी डालकी ॥
नंद रूप निरखै नन्दलालो, पीछा दुख सुणे गुपालो।
ऐसे जाय पुकारूं नाहीं, करुणा तो आवे तेरे लालकी ॥८॥
गऊ चरावण चले मुरारी, दूध दही खानेकी विचारी।
गोरस लियां मिली बृज नारी, बृपभानके लालकी ॥
माखन खाय मरोड़ी वैंया, तिस पर पर पड़े मुकुटकी छैंया।
लूट खोस दधि खायो सारो, खाता दुहाई राजा कंसकी ॥९॥

न्याकुल भई विरजकी नारी, दूध दईसे भर दई सारी।
जसोदा आगै जाय पुकारी, सुणियो करणी लालकी ॥
जै सुण पावे मथुराको राजा, भोत करे थारेमें काजा।
मार कूट गोकुलसे काढ़ै, मसक बंधावे तेरे लालकी ॥१०॥
अरी गुवालन क्या बतलावे, मेरे लालने बोल न आवे।
गोरस दियो हमारो खावे, तूं जोबन मतवालकी ॥
करड़ा बचन कह्यां तूं रोसी, रोज कृष्णकी मटको खोसी।
पैली कृष्णने थेई बिगाड़यो, आदत तो गेरी थे बुलाणकी ॥११॥
खारो जल जमुनाके मांही, नाथ्यो नाग गलेके तांई।
मीठो जल जमुनाको कीन्यो, अंगुली लगी गोपालकी ॥
एक घूंट दाऊको दीनी, बृजवास्यांकी मति हरलीनी।
आकर कृष्ण मिटावो छिनमें, आँख्याँ भर आई गोपियन ग्वालकी ॥१२॥
इन्द्र राजाको यज्ञ लुटायो, पूजत गोपीराम पठायो।
गोबर्धनको रूप बणायो, छाका जीमें मालकी ॥
इन्दरको अभिमान घटायो, बाँवे नख पर गिरिवर ठायो।
डूबत ही बृज आज बचायो, रक्षा कर लीनी सब वृजवालकी ॥१३॥
चटक चांदनी बैन बजावे, काम काज तज गोपी आवे।
बृन्दाबनमें रास रचावे, तूं जोबन मतवालकी ॥
गरबे गोप कृष्ण छिटकाये, उड़ गये कीर नैन घबराये।
आकर दरशण द्यो मनमोहन, मनस्या तो पूरो सकल वृजनारकी ॥१४॥
गोकुलसे हर मथुरा आये, हाथी मार मल्ल गिराये।
तब कंसा मनमें घबराये, झलक दिखाई लगी कालकी ॥

मतो उपायो खड्ग सँवारी, कूद कृष्ण मंच पर मारी ।
केश पकड़ कंस पछाड़े, वर्षा तो वरसे पुष्पन मालकी ॥१५॥
पटने चली कंसकी नारी, जरासिंध पा जाय पुकारी ।
घेर लई राजन की प्यारी, सब सैन्या गोपालकी ॥
रथ पर बैठ कृष्णजी आये, सत्रह बार पीठ दिखाये ।
ठारवीं बार चल्यो रण तजके, लीला तो देखो कृष्ण मुरारकी ॥१६॥
द्वारकापुरीकी रक्षा कीनी, गुरु द्वारे विद्या पढ़ लीनी ।
विद्या पढ़ कर दक्षिणा दीनी, जिंदगी लादेरी मेरे लालकी ॥
रथ पर बैठ कृष्णजी आये, गुरु अपनेका पुतर लाये ।
ल्याकर धोक दई पाँवनमें, सुरत संभालो अपने लालकी ॥१७॥
भौमासुर एक दानो भारी, घेर लई राजनकी प्यारी ।
सोला सहस एक सौ रानी, विनती करे गोपालकी ॥
गरुड़ पर चढ़ कृष्णजी आये, भौमासुरका शीश उड़ाये ।
द्वारकापुरी पहुंचाद्यो सबको, गाड़ी भर लावें पन्नालालकी ॥१८॥
भृगू मन जाँचनकूं आये, ब्रह्मा देख रोस मन लाये ।
शंकरसाने शीश नवाये, बालकृष्ण के चालकी ॥
गुडम लात कृष्णके दीनी, तुरत कृष्ण हाथमें लीनी ।
उठ कर चरण चांपवा लाग्यो, धीरज तो देखो कृष्ण मुरारकी ॥१९॥
ऊधवने बृज मांही पठायो, आदर दे ऊधो बैठायो ।
मात यशोदा कण्ठ लगायो, वातां पूछे लालकी ॥
इतनी सुण गोपी चल आई, कहो ऊधोजी क्या फरमाई ।
ऊं कपटीने यूंजा कहियो, गाड़ी भर ल्यावे मृगाछालकी ॥२०॥

कुनणपुर शिशपालो आयो, चिट्ठी वांच भोत सुख पायो।
समै विचार कर ब्राह्मण भेज्यो, ल्या सैन्या गोपालकी ॥
रुकमण अम्बा पूजण आई, बांह पकड़ रथमें बैठाई।
रुकमइयेने वांध्या लैरने, सैन्या तो काटी है शिशुपालकी ॥२१॥
हथनापुर प्रभु आप पधारे, पांडवांके कारज सारे।
जै जै सबही देव पुकारे, वंदना करी है गोपालकी ॥
इतनी सुण शिशुपाल हुंकारी, चक्कर देकर शीश उतारी।
ज्योतमें ज्योत मिलाई साँवरे, गत तो कर दीनी शिशुपालकी। २२॥
नारद कह मोय अचरज आवे, द्वारकापुरी देखणकूं जावे।
महल महल में रूप दिखावे, नर लीला गोपालकी ॥
कहीं पूरी जीमते खासा, कहीं खेलें चौपड़ पासा।
तरह तरहका करैं तमासा, नारद नहीं जाणे गत गोपालकी ॥२३॥
कमल नयन केशरकी क्यारी, नित्य गोपालकूं लागे प्यारी।
दरशण कूं आवे नित नारी, झांकी बांकी बालकी ॥
नित्य सुदामा नेह लगावे, विपत हटी सुख संपत पावे।
कंचन महल झुका दिया छिनमें, कृपा तो हो गई कृष्णमुरारकी ॥२४॥
जो कोई इनका गुण गावे, मरण जन्ममें फिर नहीं आवे।
ध्रुवकी ज्यूं अटल होय जावे, जुरत चले नहिं कालकी ॥
हर गंगा आनन्द वलिहारी, चरण कमल मैं जाऊं वारी।
जै कोई गावे मनसे झांकी, फांसी कट जावे माया जालकी ॥२५॥

५४६—रामके विवाहको बारामासियो

रघुनाथ पधारे, मिथिलापुर, व्यावण जनक नरेशके ॥ टेक ॥

चैत चाप ढिग जुड़े भूप सब, आपसमें बतलाये ।
कर कर क्रोध मोद मन अपने, अपने जोर दिखाये ॥
तिनके समान यो धनुष के दीन्यो, देख देख मुसकाये ।
बिन रघुनाथ चाप शिवजीको, दूजो कूण चढ़ावे जी ॥ १ ॥

लगत मास वैशाख सभामें, बोलत जनक नरेश ।
क्षत्री अंश रह्यो नहिं जगमें, क्या कहूं कथा विशेष ॥
जै मैं यो यज्ञ नहीं रचतो, मेरो मिटतो नहीं अंदेस ।
मेरी प्रतिज्ञा पूरी करसी, गिरिजापती महेश जी ॥ २ ॥

जेठ मास सुण वचन भूपका, लक्ष्मण धरे न धीर ।
बार बार कर जोड़ कहूं, मने अज्ञा द्यो रघुवीर ॥
भवे कलेजे वचन भूपका, वचन सरूपी तीर ।
तोड़ूं धनुष आप या मेरी, मत मानो तकसीर जी ॥ ३ ॥

असाढ़ श्रीरघुवीर कहे, टुक लक्ष्मण धीरज धार ।
विश्वामित्र कहे कर जोड़यां, इन्न मत लावो वार ॥
सखियां सहित जानकी ऊभी, वरमाला लियां त्यार ।
तीन टूक किया धनुषका, दशरथ राजकुंवार जी ॥ ४ ॥

सावण मन उछाव जानकी, वरमाला गल डारी ।
राजा जनक भूप दशरथने, पत्र लिख्यो शुभकारी ॥
श्रीरघुनाथ मिथिलापुर परणे, करो ज्यानकी त्यारी ।
हाथी घोड़ा खूब सजावो, ल्यावो बड़ी असवारी जी ॥ ५ ॥

भादू मास पास दशरथके, पहुंची पाती जाय।
पाती बाँच उमंग रह्यो हिवड़ो, आनन्द उर न समाय॥
गुरु वशिष्ट सुमंत मंत्रीने लीन्हे निकट बुलाय।
श्री रघुनाथ जनकपुर परणे, चलोनी जान बणाय जी॥ ६॥
लगत मास कुंवार वहारकी, सुन्दर ज्यान बणाई।
नाना विधिका बाजा बाजै, सुरां सेंत शहनाई॥
बिड़दू बिगुल बांकिया मोचन पड़ी नौबतां घाई।
नाचत परी झड़ी रंगलागी, ज्यान जनक पुर आई जी॥ ७॥
कातिक मास खातरी राजा करे जनक भोतेरी।
डेरा दिये दिवाय ज्यानको, तम्बू तण्या सुनेरी॥
राजा जनक भूप दशरथसे, बहुविध आन मिलेरी।
बार बार कर जोड़ कहूं थे, लाज राखियो मेरी जी॥ ८॥
मंगसिरमें मण्डप तण्यो जी, राजा जनकके द्वार।
च्यारूं भाई जोड़ दल, चढ़िया ज्यान सिणगार॥
तोरण मार विराजे चूंरी, सियाराम औतार॥
पुर आनन्द सबके मन उमग्यो, बरसें पुष्प अपार जी॥ ६॥
पौष मास जनकपुर परण्या साथई च्यारूं भाई।
राजा जनकजी दियो दायजो, शोभा कहियन जाई॥
दासी दाय अश्व गज गौणा, दई सजावट याई।
अपने अपने मुरतब सेती सबकूं भेंट दिलाईजी॥ १०॥
माघ मासमें मगन होय कर जनकपुरीसे ध्याया।
कर कर क्रोध हाथमें परसो, परशरामजी आया॥

हाथ जोड़ रघुनाथ कहे, गुरु क्या औगुण वन आया।
अंग मेल भंग दूर करो जद आशोर्वाद सुणाया जी ॥ ११ ॥
फागणमें अयोध्या आये, घर घर उत्सव अपार।
आनन्द उमंग रह्यो हिवड़ेमें, छायो वणिक वजार ॥
राजा दशरथ बाँटे वधाई खोल्या द्रव्य भंडार।
मात कौशल्या करे आरतो, गावे मंगलाचार जो ॥ १२ ॥

५४७—हनुमानजीकी लावणी

(भैरवी)

सियाजीकी सुध मैं कैसे ल्याऊं, सोच घणो मेरे छायोजी।
हाथ जोड़ अंजनी मातासे, अपणो हाल सुणायोजी ॥ टेक ॥
तैं मेरो दूध लजायो पवनसुत, इतनो क्यूं घवरायोजी।
मैं ऐसो दूध चूंघायो हनुमंता, परवत फोड़ गिरायोजी ॥
अब तेरो तेज कहाँ गयो वाला, मुखमें सुरज छिपायोजी।
इतना वचन सुण्या माताका, नैन रोस भर आयोजी ॥ १ ॥
पूरवकी पच्छिम कर डारूं, मैं माता तेरो जायोजी।
मूंदड़ी लेकर रामचन्द्रकी, गढ़ लंकामें आयोजी ॥
चित्त उदास देख माताको, मूंदड़ो तुरत गिरायोजी।
देख मूंदड़ो सिया घवराई, यो मूंदड़ो कुण ल्यायोजी ॥ २ ॥
के कोई आयो उड़न पखेरू, जुलम जाल फैलायो जी।
इतनी सुणकर वोल्यो हनुमत, मात मूंदड़ो मैं लायो जी ॥
ना कोई आयो उड़न पखेरू, ना कोई जाल फैलायोजी।
थारी सुध लेणेके खातिर, रघुवर मोय पठायोजी ॥ ३ ॥

नीचै उतर दई परिकरमा, अपनो शीश निवायोजी ।
अंजनीको पूत दूत रघुबरको, हनुमत मूंदड़ो ल्यायोजी ॥
देई असीस सीता माता, आनन्द घणेरो छायोजी ।
भूख लगी मेरो जी घबरावे, अन्न पाणी नहीं खायोजी ॥ ४ ॥
हुकम करो तोड़ फळ खाऊँ, मेरो मन चलि आयोजी ।
अज्ञा दई सीता माता तब, बाग उखाड़ बगायोजी ॥
राक्षस जा रावणने कह दी, बन्दर बली एक आयोजी ।
तोड़ ताड़ कर बाग बिगाड़्यो, महावली वल धायोजी ॥ ५ ॥
रावण हुक्म दियो है जबही, पकड़ कैद कर ल्यावोजी ।
उसी समय मेघनाद दौड़्यो, मसक बांध ले आयोजी ॥
कह हनुमान सुनो दशकन्धर, मैं अंजनीको जायोजी ।
रामचन्द्रजी मन्ने भेज्यो, सिया देखणने आयोजी ॥ ६ ॥
वदी करै बन्दर यो भारी रावण हुकम सुणायोजी ।
पूंछ काटकर गेरो ऐंकी, भेद लेण यो आयोजी ॥
तेल रूई सब मंगा लंकको, दियासली दिखायोजी ।
कूद कूद लंका सब जारी, हाहाकार मचायोजी ॥ ७ ॥
लंक विध्वंश कर पूंछ आपकी; समुद्रमें बुझवायोजी ।
बिदा मांग सीता मातासे तुरत सितावी ध्यायोजी ॥
रामचन्द्रको दे चूड़ामणि, सीता खबर सुणायो जी ।
जय जयकार भई है दलमें, हनुमत जस यो गायोजी ॥ ८ ॥

७४८—गजल

(शिवजीके विवाहकी)

सोच करे हेमाचल राजा, सुणियो अरज थे सब म्हारी ।
मेरे घर कन्या जन्मी है, व्याह की वेग करो त्यारी ॥
कन्याको वर ठीक ढूंढ कर, ऐंने जलदी परणावो ।
लेकर टीको वेगा जोशी, देश देशान्तर थे जावो ॥
पड़देमें पारवती बोली, जोशीजी सुणियो म्हारी ।
यो टीको शंकरने दीज्यो, वांसे शोभा है भारी ॥
पाछो जुवाव दियो है बामण, सुणियो पारवती बाई ।
गाँव देशको पतो बतावो, तुरत सगाई हो जाई ॥
कैलासको है ऊँचो परवत, जहां पर तपसी ताप करे है ।
माथे बांके चन्द्र विराजै, वहां ही शिवजी ध्यान धरे है ॥
गाँव देश सब फिर फिर देख्या, कित्तै नहीं शंकर पाया ।
गायांका गुवालांसे पूछी, वै शंकरने बतलाया ॥
यो नारेल तिलक ल्यो शंकर, हिमाचलको आयो है ।
उणके घर है कन्या कँवारी, थारे पास पठायो है ॥
ले नारेल भंडारे धर दियो, पांच पदारथ मंगवाया ।
जोशीजीने मिठड़ा भोजन, दिछना खूब ही दिलवाया ॥
हाथ तिरसूल विभूति रमाये, नन्दीकी असवारी है ।
आज म्हारो व्याव मंड्यो है, चलणे की तय्यारी है ॥
हिमाचलका बड़ा कंवर, सब घुड़ला पर डोलें भाग्या ।
रस्तेमें जोगेश्वर मिलगो, वातां सब करणै लाग्या ॥

कोठे उतरया ज्यांन वराती, कोठे व्यावणने आया।
खाजा फीणी खीर जलेबी, उण खातर तो म्हे लाया॥
म्हे ही ज्यान वराती आया, म्हे ई व्यावणने आया।
हाथ जोड़ कर कंवर साथ ले, शंकर का डेरा द्याया॥
शंकरजी बागाँमें उतरया, गैरी धूणी घलवाई।
कालो नाग गुदी पर नाचै, दुनियाने तो डरपाई॥
मालण आई फूलड़ा ल्याई, वा बी वरने विसरायो।
धन धन ये पारवती बाई, यो जोगी वर के पायो॥
उसी समय हेमाचल बोल्यो, सुणिये पारवती बाई।
भाग्य लिख्यो बर मिल्यो है तने, कर्म लेख मिटता नांई॥
शङ्कर चढ़ गये नांदिये, हेमाचल की पोर जी।
कानांमें मुद्रा कांचकी, गले नागकी डोर जी॥
करण आई आरतो वा, हेमाचलकी धोर जी।
छुट्यो हाथसे थाल वांके, देखे खड़ी कर गौर जी॥
सात सहेल्यां बीच पारवती, गई है शंकरके पास।
यो रूप तो छोड़ सरूप धारो, हो रह्या है सभी उदास॥
माई बाप तेरा भया दिवाना, वांने कूण चितारै जी।
छठी रातका लेख लिख्या, टरै न किसके टारै जी॥
फेर असवारी सजा शिवजी, गये हिमाचल द्वार जी।
गलेमें जनेऊ पाटकी, कानोंमें मोती लटकार जी॥
ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादिक, कुबेर मिल गये आन जी।
नाचत भैरव तान दे, गन्धर्व करते गान जी॥

आरतो तो करण आई, हिमाचलकी नार जी ।
बुलावो नाई वामण, वाने, गाँव यूं दो चार जी ॥
जद शंकरजी तोरण आया, तोरण दीन्यो तूलो ।
शंकर परण्या ढुलो जव, देख हेमाचल फूलो ॥
जद शंकरजी पाटे आया, जोशी फेरा खाया ।
जद शंकरजी थापै आया, सात सखी वतलाया ॥
जद शंकरजी जुवे आया, साली सरहज वतलाया ।
जद शंकरजी महलां आया, पारवतीजी वतलाया ॥
शंकर पारवती व्याव हो गयो, गावें वधावा नारजी ।
वांच, सुणे जो प्रेम से, वांके होय मंगलाचारजी ॥

५४९—वारामासियो

(गोपीचन्द और राणीकी वातचीत)

गोपीचंद राजा, लिखिया विधाता अक्षर ना टलै ।
पाटमदे राणी, लिखिया विधाता अक्षर ना टलै ॥टेक॥
फागण महीनो लग्यो राजवी, महलां किसो तंदूर ।
इस होल्यां के ख्यालमें, थारे, मुख पर वरसे नूर ॥
उमर पचीसी भई राजवी, जोवनमें भरपूर जी ॥१॥
चैत महीनो लग्यो राणीजी, सुणियो हमारी वात ।
थे रल मिल गणगौर पूजियो, ले दास्यां ने साथ ॥
मैणावतको हुकम मानज्यो, मत करियो अपघात जी ॥२॥
वैशाख महीनो लग्यो राजवी, सुणो हमारी त्रास ।
दादुर मोर पपीहा वोले, जल विन मर गया प्यास ॥

कुंजा ज्यूं कुरलाइयो थारो सगलो ई रणवास जी ॥३॥
जेठ महीनो लग्यो राणीजी, इब मत देर लगावो ।
खसरी पंखी लेल्यो हाथमें, हवा महलमें जावो ॥
नौकर चाकर रखो मोकला, बैठी हुकुम चलावो जी ॥४॥
साढ़ मासमें सुणो राजवी, बरसे नीर अपार ।
थां बिन सूनी महल अटारी, सूनो सब सिणगार ॥
रोय रोय कर नैण गमावे, थारो सो परिवार जी ॥५॥
सावण सोच करो मत राण्यो, मनमें राखो धीर ।
झुर झुर पींजर हो गई, थारो, सूख्यो जाय शरीर ॥
बदन गुलाबी फीको पड़ गयो, नैणा बरसे नीर जी ॥६॥
भरै भादवे पाणी बरसै, जोगी हो गया पीव ।
ऊँचा चिणाया महल म्हालिया, नीची दिवाई नींव ॥
भगवां बसतर ले लिया थे, दुख पावे म्हारो जीव जी ॥७॥
आस्योजां नग निपजै ज्याने, जाणै सारी जहान ।
म्हे तो नाथ कुहावां राणी, मुद्रा पैरी कान ॥
म्हे तो म्हारो हुकुम राखस्यां, सब राखे म्हारो मान जी ॥८॥
कातिक महीनो लग्यो राजवी, चरणां देवां माथ ।
चांद सुरज दोय साख भरैगा, क्यूं पकड़्यो थो हाथ ॥
आप पधारो हवा महलमें, चलो हमारे साथ जी ॥९॥
मंगसिर महीने महलां मांई, बैठी माला फेरो ।
राम नामकी सेवा साधो, मनमें राखो हेरो ॥
सूख करेलो हो गई सारी, लगै बिरंगो चेरो जी ॥१०॥

पौष पिलंगको पोढ़णो म्हाने खारो लागै नाज ।
जोगी हो गया वालमा थे, कुलकी खो दई लाज ॥
सूनो पड़्यो तख्त यो थां विन, कूण करै इव राज जी ॥११॥
माघ महीने जोगी ऊब्या, ड्योढ़्यां आगे आय ।
थे महलां से भिक्षा घालो, मतना देर लगाय ॥
राजपणे की राणी हो थे, जोगपणे की माय जी ॥१२॥

८५०—लावणी

(नरसीजी की हुण्डी)

जूनागढ़में नरसी महतो, भगत हुयो एक भारी है ।
लिखी जो हुंडी आप जिनकी, साँवल सेठ सिकारी है ॥टेक॥
चार संत मिल मतो उपायो, न्हाण चले वे च्यारूं धाम ।
जूनागढ़में जब वे पहुंचे, जाय लियो है वे विश्राम ॥
चोरांको डर सुण्यो राहमें पह्ले न रखो खरची दाम ।
लेल्यो हुंडी खरची विन, दूर देशमें चले न काम ॥
खरची विना परदेशमें चाले नहीं है कामजी ।
लिखा हुंडी ल्यो वांध पह्ले, दिलमें रहे आरामजी ॥
संतजन फिरते पूछते, सेठ को सरनामजी ।
मसखरा यूं कही, जावो नरसी के थे धामजी ॥
सन्त चले सीधे जो वजारां । कोई वतावो नरसीको द्वारां ।
तुम्बा और तुलसीका वृन्दा । वहाँ ही नरसी करत अनन्दा ॥
तुम्बा देख सन्त मन सोची, यो के दौलत धारी है ॥१॥

गये सन्त यूं कहने लागे मेहताजी सुण म्हारी वात ।
म्हारे पल्ले खरच रोकड़ी रोक रुपिया है सौ सात ॥
द्वारापुर पर हुंडी लिखद्यो, रुपिया ल्यो तुम अपने हात ।
ईब देर न लावो द्वारका, जाणो है उगतां परभात ॥
नरसीजी कही तब सन्तां से, ताकीद मत ना कीजिये ।
ठाकुरजी के भोगको परसाद अब यहाँ लीजिये ॥
करके कृपा मेरे पर थे रात्रीको जागरण कीजिये ।
दिन ऊगे हुण्डी लिखूं मैं साँवलने जाकर दीजिये ॥
सिद्ध श्री द्वारापुर ग्रामा । सरब ओपमा साँवल नामा ।
सात सौ सन्ता ने दीज्यो । साढ़े तीन सौ का दूणा लीज्यो ॥
लेकर हुन्डी सन्त प्रेमसे, मनमें धीरज धारी है ॥२॥
द्वारकामें गया सन्तजन हुन्डी काढ़ दिखाई है ।
लोग कहै या नगरमें कोई साँवल साह नहीं भाई है ॥
चले सन्त सब पूछण लागे, देख अकल चकराई है ।
फिरै पूछता साँवलसाने, खबर कहीं नहीं पाई है ॥
संत खोजत थक गये, पर हाल ना मालुम पड़ा ।
फिर हार खाके बैठगे, दिलमें फिकर आकर पड़ा ॥
लोग कहे सब नगरके, थे कूण ठगां पा जा पड़ा ।
खोटी तो हुन्डी लिख दई बेईमान नरसी मोतड़ा ॥
लोग कहे पाछा थे जावो । इज्जत उंकी खूब गमाओ ॥
थे तो किसी ठग पास ठगाये । खोटी हुन्डि लिखा कर लाये ॥
पाछा संत चल्या जूनागढ़, मनमें चिन्ता भारी है ॥३॥

पाछा संत चाल्या जूनागढ़, जल पीवणने ठहर गया ।
उसी समय साँवल गिरधारी, वहाँ ही आकर भेंट भया ॥
पूछे संत कूण सेठ है, यूं कह कर वे वतलाया ।
साँवल सेठ बड़ा नामी है, दुकानसे पाछा आया ॥
साँवलसाको नाम सुण कर, संत मन राजी हुया ।
आज जल्दी रथ थाम्यो, हुन्डी उणां कै कर दिया ॥
साँवल हुन्डी वाँचके रुपिया उणांने गिण दिया ।
कसूर मेरो माफ करियो, संत जन कीज्यो दया ॥
नरसीके गुरुदेव गुंसाई । मोहन पा हुंडी सिकराई ॥
नरसी भगतकी प्रीत निभाई । रसीद पत्र पाछी लिखवाई ॥
भक्त हितकारी श्याम विहारी, उन चरणां वलिहारी है ॥४॥

५५१—लावणी

(वैद लीला)

घर घर प्रभु देखत फिरैं सखिन की नारी ।
वणि आये गोपीनाथ वैद वनवारी ॥टेक॥
जंगलकी बूटी भरे फिरत झोलीमें ।
कुंजनमें करत पुकार मधुर बोलीमें ॥
कोई पड़ी होय बीमार सखी टोलीमें ।
हम हरें पीर गम्भीर एक गोली में ॥
सुन सुनके आई निकल विरजकी नारी ।
वणि आये गोपीनाथ वैद वनवारी ॥१॥

गोकुलमें नारी वैद वैद कर टेरी।
मैं पड़ी वहुत वीमार खवर लो मेरी ॥
मोरी सास ननद घर नहीं, दवा कर मेरी।
गये भीतर मदनगोपाल करी ना देरी ॥
झोली से गोली दई गई वीमारी।
वणि आये गोपीनाथ वैद वनवारी ॥२॥
बृन्दावनमें बृजनार विशाखा आई।
ललिताने निज कर खोल नव्ज दिखलाई ॥
है बदनमें भारी पीड़, कहे कन्हाई।
ज्वरने पकड़ा है जोर सुस्ती या छाई ॥
गई जल भरनेको नजर किसीने मारी।
वणि आये गोपीनाथ वैद वनवारी ॥३॥
इस कदर गये गोपाल गाँव बरसाने।
चन्द्रावल गूजरि लगी नव्ज दिखलाने ॥
है रोग दोष कुछ नहीं लगे समझाने।
सरदी गरमीसे लगा चित्त घबराने ॥
मोहिं बृजवाला गोपाल मोहनी डारी।
वणि आये गोपीनाथ वैद वनवारी ॥४॥

५५२—लावणी

(राजा भरथरीकी)

राणी पिंगला नार जिसने एक वार हंकार किया।
तिसके कारण राजा भरथरीने जा वैराग लिया ॥ टेक ॥

राजा थे भरथरी राज अधकारी, करम गती ना जानी।
सत पिंगलाका जाचणकी अपने चित्तमें ठानी ॥
एक से एक सुन्दर थी महलांमें, सौला सौ रानी।
मगर न थी वहां रणवासमें पिंगला सी नार सयानी ॥
राजा भरथरी एक दिन खेलण गये शिकार।
देख चरित्र राहमें, करने लगे विचार ॥
मर गया था एक चीड़ा रोती चिड़ी सिर धूनके।
राजा भरथरी रुक गये, उस पक्षीकी धुन सूनके ॥
लकड़ियां लाती थी वो जंगलसे चुन चूनके।
नोच नोचके पर जलादी, खाक भई जल भूनके ॥
जली चिड़ेके संग वो चिड़िया, उस पंछीका देख हिया ॥ १ ॥
ऐसी रचना देख भरथरी अपने मनमें विसमाया।
लौट वहांसे महल पिंगलाके यहां पाछा आया ॥
चिड़ा चिड़ीका हाल सभी पिंगला राणीने समझाया।
देखो प्यारी जीव छोटेने क्या सत दिखलाया ॥
कहै पिंगला सुणो राजा, वो वड़ी नादान थी।
दुख वो पतिको दिया और आप भी अनजान थी ॥
काम क्यों इतने किये, जो वो सत् के प्रमाण थी।
सुनते ही मरना पतीका न होनी घटमें जान थी ॥
सतका मारग वड़ा कठिन है, कहै पिंगला सुणो पिया ॥ २ ॥
सुण कर सारी वात भरथरी कहै सुणो पिंगला रानी।
दिखाओ जैसा कहा है मत करना आनाकानी ॥

कहै पिंगला सुणो पियाजी, तुमने क्या चित्तमें ठानी।
बहुत कही पर राजा बात नहीं मनमें मानी ॥
पुष्प एक गुलाबका लाकरके रानीको दिया।
सूखे बिना इस फूलके मरना ना है मेरा पिया ॥
पुष्प ले पिंगलाने, अपने निज खजाने रख दिया।
बात कर इतनी ही राजा फिर वहांसे चल दिया ॥
थोड़े दिनों के बाद भरथरी वनमें जाकर ढंग किया ॥ ३ ॥
कपड़ोंमें दे खून कहा पिंगलाके महलां जाओ।
शेर खा गया भरथरीको, यह उनको दरसावो ॥
चाकर हुक्म अदूली कर फिर करे चित्तमें पछतावो।
कहै पिंगला हाल सब तुम मेरे कूं समझावो ॥
सुनते ही महलन गई, जाकर संभाला फूलको।
डबडबाते उसको पाया सतमें लाई स्थूलको ॥
पति मेरा सत देखिये, पर माफ करना भूलको।
यह कहा और प्राण तज दिये, जा जलाइ धूलको ॥
हाहाकार भया नगरीमें पिंगलाको जा जला दिया ॥ ४ ॥
पाँच सात दिन बाद भरथरी पिंगलाके महलन आया।
सुणी कथा तब भया दिवाना, ना वो समझे समझाया ॥
जा पहुंचा शमशान ध्यान, उस पिंगलाका मनमें लाया।
आये गोरख वहां उन्होंने तुम्बा अपना गिरवाया ॥
फूट गया मिट्टीका तुम्बा गोरख उसको रो रहे।
उधर धुन पिंगलाकी थी, तब एक थे अब दो भये ॥

भरथरी कह सुन रे योगी, ढंग जमाता क्यों नये।
वहुत से तुम्बे मंगा यूं जो तूं निज मुखसे कहे॥
सुन कर गोरख कहे तेरी पिंगलाको मैं भी देऊँ जिया॥ ५॥
तरह तरहके तुम्बा वहां पर राजाने जब मंगवाया।
गोरखने जलकी चुल्लूसे वहुत पिंगला दरसाया॥
माया देख चरणमें गिर गया, मेरी ओर करो दाया।
कहे पिंगला भई मैं सती जो तुमसा पति पाया॥
चरण धर राजा यूं वोल्यो करो चेला आपका।
अमर हो जाऊं सदा और काम न हो संतापका॥
शीश धर दिया हाथ गोरख धुन लगाले जापका।
राम रंग अंगमें समाया, काम नहीं संतापका॥
पूरे गोरख गुरु मिले तो अमर जिनोंका नाम किया॥ ६॥

अज्ञात

८५३—आरती

मंगल आरति नन्दकुंवरकी, यशुमति सुत श्रीराधावरकी ॥टेक॥
मंगल जन्म कर्म कुल मंगल, मंगल यशुमति माखन चोरकी।
मंगल मोर मुकुट कुंडल छवि, मंगल मुरली वजै घनघोरकी ॥१॥
मंगल व्रजवासी सब मंगल, मंगल गान करैं चहुं ओरकी।
मंगल गोपी ग्वाल सव मंगल, मंगल राधा नन्दकिशोरकी ॥२॥
मंगल नन्द यशोदा मंगल, मंगल सुतहि खिलावै गोदकी।
मंगल गिरि गोवर्द्धन मंगल, मंगल वृन्दावन किशोरकी ॥३॥

मंगल कुंजवासी सब मंगल, मंगल शोभा है चहुं ओरकी ।
मंगल श्याम जमुन जल मंगल, मंगल धार वहै अघहरकी ॥४॥
मंगल श्रीहलधर सब मंगल, मंगल राधा जुगल किशोरकी ।
मंगल या . मूरति मन मोहै, चन्द्र सखी बलिजाऊं चरणकी ॥५॥

५८४—आरती

मंगल आरति कीजै भोर ॥टेक॥
मंगल मथुरा मंगल गोकुल मंगल राधा नन्द किशोर ।
मंगल लकुट मुकुट बनमाला, मंगल मुरली है घणघोर ॥१॥
मंगल नन्दग्राम वरसानो, मंगल गोवर्द्धन गिरि मोर ।
मंगल वंसीवट तट जमुना, मंगल लता झुकी चहुं ओर ॥२॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव मंगल ब्रजवासिनकी ओर ॥३॥

५८५—भजन

चलो सखी बृन्दावन चलिये मोहन वेनु बजायेरी ॥टेक॥
वेनु सुनत ब्रह्मादिक मोहे वेद पढ़ण नहिं पाये री ।
वेनु सुनत शिवशङ्कर मोहे ध्यान धरण नहिं पायेरी ॥ १ ॥
वेनु सुनत इन्द्रादिक मोहे राज करण नहिं पायेरी ।
वेनु सुनत सुर नर मुनि मोहे भजन करण नहिं पायेरी ॥२॥
वेनु सुनत गो वछरा मोहे दूध पियन नहिं पायेरी ।
वेनु सुनत सब गोपी मोहीं, झुण्ड झुण्ड उठि धायेरी ॥ ३ ॥
वेनु सुनत खग पंछी मोहे चुगा चुगण नहिं पायेरी ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव हरि चरणन चित लायेरी ॥४॥

५५६—भजन

मदन मोहनजीसे लगन लगी है, ये तन डारूँ मैं वारी ॥टेक॥
करुणासिन्धु है जगत वन्धु, सन्तनके हितकारी ॥ १ ॥
मोर मुकुट पीताम्वर सोहै कुंडलकी छवि न्यारी ।
गल सोहै वैजन्ती माला निरखत राधा प्यारी ॥ २ ॥
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै ओढ़े कामरी कारी ।
पैठि पताल काली नाग नाथ्यो फणपर नाचै गिरिधारी ॥३॥
इन्द्र कोपि चढ़े ब्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारी ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव चरण कमल वलिहारी ॥४॥

५५७—भजन

गागरिया जनि फोरो लालजी न तोहिं देऊँगी गारी ॥टेक॥
हम यमुना जल भरण जात रहीं, वीच मिले गिरधारी ।
गागरि फोरी मोरि वहिंया मरोरी, मुतियनकी लर तोरी ॥ १ ॥
तुम हो ढोटा नन्द रायके हम वृषभानु दुलारी ।
जाय पुकारौं कंसराय पै खड़े रहो गिरिधारी ॥ २ ॥
लेकर चीर कदम चढ़ि वैठे हम जल माँहि उघारी ।
चीर तुम्हारो तव हम देंगे जलसे हो जाव न्यारी ॥ ३ ॥
जलसे अलग होंय हम कैसे तुम हो पुरुष और हम नारी ।
पुरइनि पात पहिरि कै निकसीं कृष्ण हँसे दे तारी ॥ ४ ॥
मथुराके सव लोग हँसत हैं गोकुलकी सव नारी ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव तुम जीते हम हारी ॥ ५ ॥

५७८—भजन

परम धाम गोलोक छोड़िकै वृन्दावन हरि आयोरी ॥टेक॥
कृष्ण पुत्र वसुदेव देवकी नन्द भवन पहुंचायोरी ॥ १ ॥
धन्य भाग्य है नन्द यशोमती जिनहिं परम सुख पायोरी ।
फूले फिरत सकल ब्रजवासी आनँद उर न समायोरी ॥ २ ॥
खबर भई जब कंस रायको पूतना वेगि पठायोरी ।
मारण आई आप नशाई जननीकी गति पायोरी ॥ ३ ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक देवन दुन्दु बजायोरी ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव हरिके चरण चित लायोरी ॥४॥

५७९—भजन

आजु सखी नंदनन्दन प्रगटे गोकुल बजत बधाई री ॥टेक॥
रोहिणी नक्षत्र मास भादौंको योग लगन तिथि आई री ॥ १ ॥
गृह गृह से सब बनिता बनिके मंगल गावत आई री ।
जो जैसे तैसे उठि धाई आनंद उर न समाई री ॥ २ ॥
चोवा चन्दन और अरगजा दधिकी कीच मचाई री ।
यमला अर्जुन वृक्ष उपारे यशुमति सुत उर लाई री ॥ ३ ॥
वन्दीजन गन्धर्व गुण गावैं शोभा बरणि न जाई री ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव चरण कमल चित लाई री ॥४॥

५८०—भजन

आजु महा मंगल गोकुलमें कृष्णचन्द्र अवतार लिये ॥टेक॥
गृह गृहसे सब गोपी आई मधुर स्वरसे गान किये ।

मारण कारण चली पूतना दूध पियत हरि प्राण लिये ॥ १ ॥
अघासुर मारि बकासुर मारे दावानल को पान किये ।
यमला अर्जुन वृक्ष उखारे यादव कुलको तारि लिये ॥ २ ॥
पैठि पताल कालिनाग नाथ्यो फनपर नृत्य कराय लिये ।
सात दिवस गिरि नख पर धारे इन्दरको मद मारि लिये ॥३॥
केस पकरि हरि कंस पछारे उग्रसेनको राज दिये ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब चरण कमल चित लाय लिये ॥४॥

५६१—भजन

सुन्दर वदन कुंवरि काहूकी, नित दधि वेचन आवेरी ॥टेक॥
कबहुंक आवै दधी लुटावै, कबहुंक मुख लपटावैरी ॥ १ ॥
कबहुंक मुरली छीन लेति है, कबहुंक आप बजावैरी ॥२॥
कबहुंक पितांबर छीन लेति है, कबहुंक आप उढ़ावैरी ॥३॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, यह लीला मोहिं भावैरी ॥४॥

५६२—भजन

आजु मेरो कहां अटक्यो गिरिधारी ॥टेक॥
खोजत खोजत फिरति यशोदा घर घर करत पुकारी ।
कारण कवन लाल नहिं आयो कंस काल भय भारी ॥ १ ॥
यूथ यूथ सखियां चलि आईं देत यशोदे गारी ।
नंदनन्दनको जोर जुठौनो खैंचत अंचल सारी ॥ २ ॥
रुमक झुमुक मोहन चलि आये नयन नीर भरि वारी ।
मुरली मेरी छीन लई है इन सखियन मोहिं मारी ॥ ३ ॥

हंसि मुसुकाय कहत राधेजी दूषण नाहिं हमारी ।
श्याम सुन्दर मैं तुम्हरे दरशको, चन्द्र सखी वलिहारी ॥ ४ ॥

५६३—भजन

हरिजीसे कौन दुहावत गैया ॥टेक॥
कारे आप कामरी कारी आवत चोर कन्हैया ॥१॥
कनक दोहनी सोहै हाथमें दुहन वैठे अधपैया ।
खन दूहत खन धार चलावत चितवनिमें मुसकैया ॥ २ ॥
गोपन छोड़ि गहे मेरो अंचल यही सिखायो तेरी मैया ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव चरण कमल वलि जैया ॥३॥

५६४—भजन

खरिक बिच क्यों ठाढ़ी राधा प्यारी ॥टेक॥
माथे हाथ दिये मन सोचत कह लगि तेरे त्यारी ॥ १ ॥
देखेंगे सो कहा कहेंगे सुनि ऋतुराज कुमारी ।
अबहीं लाल गये गौअनमें अब आवन की त्यारी ॥ २ ॥
वंसी बाजि रही मोहनकी मोहि लई ब्रज नारी ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव तन मन धन वलिहारी ॥३॥

५६५—भजन

भजो वृन्दावन जय यमुना, जय वंशीवट जय फुलना ॥टेक॥
कृष्ण चरणको ध्यान धरत ही छूटि गई मनकी भ्रमना ।
मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुलमें झूले पलना ॥ १ ॥
इत मथुरा उत गोकुल नगरी वीचमें दान चुकावै ललना ।
यमुना किनारे धेनु चरावै मधुरी वेनु वजावै ललना ॥ २ ॥

पैठि पताल कालिया नाथे फणपर नृत्य किये ललना ।
वृन्दावनमें रास रच्यो है गोपी ग्वाल नचावै ललना ॥ ३ ॥
सेवरीके वेर सुदामाके तण्डुल रुचि रुचि भोग लगाये ललना ।
दुर्योधन घर मेवा त्यागे साग विदुर घर खाये ललना ॥ ४ ॥
जल डूवत गजराज ऊवारे चक्र सुदर्शन धारे ललना ।
केशी मारे कंस पछारे यमुना मारि वहाये ललना ॥ ५ ॥
उग्रसेनको राजतिलक दियो उनके वंश वढ़ाये ललना ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव हरिके चरण पर चित धरना ॥६॥

५६६—भजन

नाचै नन्दलाल नचावै मैया ॥ टेक ॥
मथुरामें हरि जन्म लियो है गोकुलमें पग धारो री कन्हैया ॥१॥
रुमक-झुमक पग नूपुर वाजै ठुमक-ठुमक पग धरो री कन्हैया ।
दूध न पीवै लला दहिया न खावे माखन को लाला वड़ो री खवैया ॥२
शाल दुशाला मनहूं न भावै कारी कामरी लाला वड़ोरी ओढ़ैया ।
मोर मुकुट पीताम्वर सोहै वंशीको लाला वड़ो री वजैया ॥३॥
वृन्दावनकी कुंज गलिनमें सहस गोपी इक भयो री कन्हैया ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव चरण कमलकी लेउँ वलैया ॥४॥

५६७—भजन

मथुरामें हो रहि सर्व मई ॥ टेक ॥
हम दधि वेंचन जात वृन्दावन मारगमें मेरी वांह गही ॥ १ ॥
मेरो री कन्हैयो पांच वरसको सो कैसे तेरी वांह गही ।
जिन गलियन मेरो फिरै री कन्हैयो उन गलियन राधे काहेको गई ॥२॥

यमुनाके तीर कदमकी छहियां मोहन मुरली वाजि रही।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव चरण कमल चित लाय रही ॥ ३ ॥

५६८—भजन

बाजैं बाजैं लाल तेरी पैंजनियां हो रुन झनियाँ ॥ टेक ॥
पैंजनिया जे अधिक सोहावैं मोहि लिये सुर नर मुनियाँ ॥ १ ॥
नील अंग पर पीत झँगुलिया रत्न जड़ावकी पैंजनियां।
चन्दन चर्चित अंग मनोहर शिर पर सोहत चौतनियां ॥ २ ॥
यशुमति सुतको चलन सिखावै अंगुली पकरि लिये दोउ जनियां।
छोटे छोटे चरण चतुर्भुज मूरति अलक झलक रही नागिनियां ॥३॥
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं ताहि नचावैं ग्वालिनियां ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव तीन लोकके तुम धनियां ॥ ४ ॥

५६९—भजन

तेरे बांके मुकुटकी छवि न्यारी, शोभा भारी ॥ टेक ॥
यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै कांधे कामरि है कारी ॥ १ ॥
बृन्दावनमें रास रच्यो है सहस गोपिका इक गिरिधारी।
पीताम्बरकी कछनी काछे मुरली वजावै वनवारी ॥ २ ॥
बृन्दावनकी कुंज गलिनमें विहरत है प्रीतम प्यारी।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव चरण कमलकी बलिहारी ॥३॥

५७०—भजन

गिरि न परै गोपाल गिरिवर ॥ टेक ॥
व्रजकी सखी सब पूजन निकसी भरि भरि मुतियन थार।
इन्द्रहु कोपि चढ़ेउ व्रज ऊपर वर्षत मूसलधार ॥ १ ॥

सात दिवस मेघवा झरि लाये व्रजमें परो न फुहार।
शंख चक्र गदा पद्म विराजै वांके नयन विशाल ॥ २ ॥
ग्वाल वाल सव गिरिवर नीचे मुरली वजावै नन्दको लाल।
पीताम्वरकी कछनी काछे नख पर गिरिवर धार ॥ ३ ॥
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल तिलक विराजै भाल।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव निरखत मुख नन्दलाल ॥ ४ ॥

५७१—भजन

अंखियामें लागि रहे गोपाल ॥ टेक ॥
मैं यमुना जल भरण जात रही, फैलायो जंजाल ॥ १ ॥
रुनक झनुक पग नूपुर वाजै चाल चलत गजराज।
यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै संग सखा व्रजराज ॥ २ ॥
विन देखे मोहिं कल न परत है निशिदिन रहत विहाल।
लोक लाज कुलकी मरयादा निपट सुभ्रमका जाल ॥ ३ ॥
वृन्दावनमें रास रच्यो है सहस गोपी इक लाल।
मोर मुकुट पीताम्वर सोहै गल वैजन्ती माल ॥ ४ ॥
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजै वांके नयन विशाल।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्णछिव चिरजीवहु नंदलाल ॥५॥

५७२—भजन

जय जय यशोदा नंदनकी जगवंदनकी ॥टेक॥
भाल विशाल माल मोतियनकी खौर विराजै चन्दनकी।
पैठि पाताल कालि नाग नाथ्यो फण पर निरत करावनकी ॥१॥

यमुना के तीरे तीरे धेनु चरावै हाथ लकुटिया चन्दनकी ।
इन्द्रने कोप कियो व्रज ऊपर नख पर गिरिवर धारणकी ॥२॥
केसी मारे कंस पछारे असुरनके दल भंजनकी ।
उग्रसेनको राज तिलक दियो रक्षा करि सब संतनकी ॥३॥
आपन जाय द्वारका छाये पल पल लहर तरंगनकी ।
शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजै भक्त वत्सल भव भंजनकी ॥४॥
घण्टा ताल पखावज वाजै गहरी धुनी सब संतनकी ।
आपन जाय द्वारका छाये पल पल लहर तरंगनकी ॥५॥
आस पास रत्नाकर सागर गोमति करत किलोलनकी ॥
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव चरण कमल रज वंदनकी ॥६॥

५७३—भजन

भजो सुन्दर श्याम मुकुट धारी ॥ टेक ॥
वदन कमल पर कुण्डल झलकें अलकें सोहै घूंघुरवारी ॥१॥
उर वैजंती माल विराजै वनमाला सोहै गुजनवारी ॥
केशर भाल तिलक शिर सोहै मुरली की छवि है न्यारी ॥२॥
पायनमें पैजनियां सोहै झूम-झूम आवत गिरधारी ॥
वंशीबट तट रास रच्यो है संग लिये राधा प्यारी ॥३॥
बृन्दावनमें खेलत डोलत विहार करत है वनवारी ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव चरण कमलकी वलिहारी ॥४॥

५७४—भजन

एरी मा वंशीवारो कान ॥
चन्द्र वदन मृगलोचन राधे, पायो श्याम सुजान ॥टेक॥

इतसे आई राधारानी, उतसे आयो कान।
अध बीच झगड़ो रोप दियो, मांगे दधिको दान ॥१॥
कबके दानी भये हो कान्हा, कब हम दीन्हो दान।
नंदमहर घर धेनु चरावे, सुण्यो अनोखो कान ॥२॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल झिलके कान।
मुख पर मुरली अधिक बिराजे, केसर तिलक लुभान ॥३॥
सुरनर मुनि जाको ध्यान धरत है, गावत वेद पुराण।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, दरशण दीज्यो आन ॥४॥

५७५—भजन

श्यामकी वंशी वन पाई ॥टेक॥
उठोरी मैया खोलो नी किंवाड़ी, मैं वंशी घर देनेकूं आई ॥१॥
बहुत दिनके उनींदे मोहन, सोने दे विरखभान दुलाई।
इतनी सुनके जागे हो मोहन, वंशीके संग मेरी पूंची चुराई ॥२॥
सुणी नैन नहीं देखी चलो तो, देऊँ ठोड़ बताई।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, दोनूं पढ़े एक ही चतुराई ॥३॥

५७६—भजन

तेरो मुख नीको है क मेरो राधा प्यारी ॥टेक॥
दर्पण हाथ लिये नन्द नन्दन, साँचि कहो वृषभानु दुलारी ॥१॥
हम क्या कहें तुम क्यों नहिं देखो, हम गोरी तुम श्याम बिहारी।
हमरो वदन जैसे चन्दा उजारी, तुमरो वदन रैण अंधियारी ॥२॥
तिहारे शीश पर मुकुट विराजे, हमरे शीश पर तुम गिरधारी।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, चरण कमल पर जाऊँ बलिहारी ॥३॥

५७७—भजन

बूझत श्याम कौन तूं गोरी ॥टेक॥

कहाँ रहत कांकी है बेटी, देखी नहीं कबहूं ब्रज खोरी ॥१॥

काहेको हम ब्रज तजि आवत, खेलत रहत आपनी पोरी।

जानत हूं तुम नन्दजीके ढोटा, करत रहत माखनकी चोरी ॥२॥

तिहारो कहा चोर हम लीन्हों, खेलन चलो संग मिल जोरी।

चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, चिरंजीव रहे राधाकृष्णकी जोरी ॥३॥

५७८—भजन

कुंजबन त्यागी जी माधो, माधोजी म्हारी कांई गुणात कसीर ॥टेक॥

जो मैं होती जलकी मछलियां, हरी करता असनान—

चरण विच रहती जी माधो ॥१॥

जो मैं होती बांसकी वंसुरिया, हरी लेता मने हाथ—

अधर मुख रहती जी माधो ॥२॥

जो मैं होती मोरकी पंखवा, हरीके शीश पर—

मुकुट, मुकुट पर रहती जी माधो ॥३॥

चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, हरीके चरण बिच—

ध्यान, कृष्ण संग रहती जी माधो ॥४॥

५७९—भजन

अरी मुरली मन हर लियो मोर ॥टेक॥

मुकुट मनोहर मधुर चन्द्रिका, नागर नंद किशोर ॥१॥

मधुर मधुर सुर वेणु बजावत, मोहन चित्तको चोर ॥२॥

सुनत टेर शिथिल भई काया, जिया ललचत ओही ओर ॥३॥
अद्भुत नाद करत वंशीमें, मोहन चन्द्र चकोर ॥४॥
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव, अरज करूं कर जोर ॥५॥

५८०—भजन

पाती सखी माधोजीकी आई ॥टेक॥
आप न आये श्याम मनोहर, ऊधव हाथ पठाई ॥१॥
विन दरशण व्याकुल भये जियरा, नैनन नीर वहाई ॥२॥
मन सकुचाय ओट घूंघटकी पतियां छतियां लगाई ॥३॥
कपटी प्रीति करी मनमोहन, मोरी सुध विसराई ॥४॥
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव दरशण विन अकुलाई ॥५॥

५८१—भजन

माई मोहे लागत वृन्दावन नीको ॥टेक॥
जमुना जल एक नीर वहत है, भोजन दूध दहीको ॥१॥
घर घर ठाकुर तुलसी पूजा, दरशण श्रीपतिजीको ॥२॥
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव, कृष्ण विना सव फीको ॥३॥

५८२—भजन

कहन लगे मोहन मैय्या मैय्या ॥टेक॥
मथुरा में होय वालक जन्मे, घर घर वजत वधैया ॥१॥
नंदमहरजी को वावाही वावा, अरु वलदाऊको भैया।
दूर खेलण मत जाओ मेरे ललना, मारेगी काऊकी गैया ॥२॥
सिंहपोल पर ठाढ़ी जसोदा, घर आवो दोनों भैया।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव, जसुमति लेत वलैया ॥३॥

५८३—भजन

वंशीवारा म्हारी गली आजा रे ॥टेक॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा, सुपणेमें दरस दिखाजा रे ।
तुमरी हवेली हमरो वारण्डो, नैनासे नैन मिला जा रे ॥१॥
मोर मुकुट कानन विच कुण्डल, अंगनामें वंशी बजाजा रे ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव, चरणांमें ध्यान लगाजा रे ॥२॥

५८४—भजन

मिलता जाज्योजी अभमानी, थारी सूरत देख लुभानी ॥टेक॥
म्हारो नाँव थे जाणोहीछो, म्हे छां राम दिवानी ।
आमी स्वामी पोल नन्दकी, चन्दन चौक निसानी ॥१॥
थे म्हारे आवो बंशिवारा, करस्यां भोत लड़ानी ।
करां रसोई साजके थारी भोत करां मिजमानी ॥२॥
थे आवो हरि धेनु चरावण म्हे जल जमुना पानी ।
थे नन्दजीका लाल कुहावो म्हे गोकुल मस्तानी ॥३॥
जमुनाजीके नीरां तीरां, थे रह्यो धेनु चराज्यो ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव नित वरसाणे आज्यो ॥४॥

५८५—भजन

रुत आई बोले मोरारे, मेरा श्याम विना जिव दोरा रे ॥ टेक ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल करत किलोला रे ॥ १ ॥
उतराखण्डसे आई बादलिया चिमकत है घनघोरा रे ॥ २ ॥
छिन छिन छिन छिन मेवा वरसे, आंगन मच रहा शोरा रे ॥३॥

राधाजी भीजे रंगमहलमें, स्यालू की कोर कीनोरा रे ॥ ४ ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, श्याम मिल्यां जिव सोरा रे ॥५॥

५८६—भजन

दोस नहीं कुबजा कूं, सखि, अपनो श्याम खोटो ॥ टेक ॥
नौलख धेनु नन्द घर दूजै, क्या माखनको टोटो ॥ १ ॥
कुब्जा दासी कंसरायकी, वो नन्दजीको ढोटो ॥ २ ॥
कड़वी वेलकी कड़वी तुमड़ियां, कांई छोटो कांई मोटो ॥ ३ ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, कुबजा बड़ी श्याम छोटो ॥४॥

५८७—राग कल्याण

मुकुट पर वारी जाऊं नागर नन्दा ॥ टेक ॥
डाल डालमें, पात पातमें, तुमरो ही नाम गोविन्दा ॥ १ ॥
सहस्र गोपियन बीच आप विराजो ज्यूं तारन बिच चन्दा ॥२॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै बिच केसरका बिन्दा ॥ ३ ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब, हरिके चरण चित लैन्दा ॥ ४ ॥

५८८—राग कल्याण

श्री राधेरानी दे डारो ना बाँसुरी मोरी ॥ टेक ॥
काहेसे गाऊं राधे काहेसे बजाऊं, काहेसे लाऊं गैया घेरी ।
मुखड़े से गावो कान्हा ताल बजाओ, चिटियासे लावो गैया घेरी ॥१॥
या वंशीमें मेरे प्राण बसत है सो वंशी गई चोरी ।
नहीं तो सोनेकी कान्हा नहीं तो रूपे की, हरे बांसकी पोरी ॥ २ ॥
कबको खड़योजी राधे अरज करत हूं, देखो गरीबी मोरी ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब चिरंजीव रहो यह जोरी ॥ ३ ॥

७८९—भजन

करणी करले हरिगुण गाले एक दिन धोखेमें लुट जाय ॥ टेक ॥
यो संसार रैनको सुपनो, यहां कोई नहीं अपणा ।
बंदा तेरी झूठी कलपना, अगनी माँय जल जाय ॥ १ ॥
मायामें लिपट्यो तूं बंदा, अब तो चेत आंखका अन्धा ।
आवेगा जमकारे तेरे मारेगा डण्डा, हड्डी पसली टूट जाय ॥२॥
उसी मालिकने पैदा किया, उसका नाम कबू नहिं लिया ।
भूखेने भोजन नहिं दिया, अन्त समय पिछताय ॥ ३ ॥
तूं जाणे ये घरका मेरा, सगला वैरी वण जा तेरा ।
लेकर बाँस फिरे चौफेरा, मंजल मंजल पूंचाय ॥ ४ ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव हरि चरणन चित लाय ॥ ५ ॥

७९०—घूमनी

दो नयनामें राधे बिलमाई रे साँवरा ॥ टेक ॥
बैठ कदम पर वंशी बजावै, सब सखियां मिल आई ॥ १ ॥
एक सखी उठ पायल पहरै, दूजी पहर न पाई ॥ २ ॥
एक सखी उठ अंजन सारे, दूजी सार न पाई ॥ ३ ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव हरि चरणन चित्त लाई ॥४॥

७९१—घूमनी

बता दे सखी साँवराको डेरो किती दूर ॥ टेक ॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना बहत भरपूर ॥ १ ॥
इस मथुराकी मस्तङ्ग्वालिन, मुख पर बरसत नूर ॥ २ ॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव, साँवरेसे मिलनो जरूर ॥३॥

५९२—ठुमरी

हमारी तेरी, नांय बने गिरिधारी ॥ टेक ॥
तुम नन्दजीके छैल छबीले, मैं वृषभानु दुलारी ।
मैं जल जमुना भरण जात ही, मगमें खड़े वनवारी ॥ १ ॥
चीर हमारो देवो रे मोहन, सास सुणे दे गारी ।
तुमरो चीर जभी हम देंगे, जलसे हो ज्यावो न्यारी ॥ २ ॥
जलसे न्यारी किस विध होवे, तुम पुरुष हम नारी ।
चन्द्रसखी भजु वालकृष्ण छिब, तुम जीते हम हारी ॥ ३ ॥

५९३—ठुमरी

मैं तो वंशीकी टेर सुनूंगी सुनूंगी ॥ टेक ॥
जो तुम मोहन एक कहोगे, एककी लाख कहूंगी ॥ १ ॥
जो तुम मोहन साँच कहोगे, राधा वनके रहूंगी ॥ २ ॥
चन्द्रसखी भजु वालकृष्ण छिब चरणांमें लिपट रहूंगी ॥ ३ ॥

५९४—काफी

कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ॥ टेक ॥
आसन मार गुफामें बैठ्यो, या ही भजनकी रीत ॥ १ ॥
असल चन्दनकी धूनी चलाद्यूं, रंग महलके बीच ।
पाट पटम्बरकी झोली सिमाद्यूं, रेशम तनियां बीच ॥ २ ॥
मैं तो जाणे थी जोगी संग चलेगो, छाड़ गयो अधबीच ।
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिब, जोगिया किसका मीत ॥३॥

५९५—मंगल

चार वरणमें सोई वड़ा जिन राम राम रटा रटा ॥ टेक ॥
ये दम हीरा लाल अमोलक दिन दिन घटा घटा।
कोल किया जब बाहर आया, अब क्यूं डोले हटा हटा ॥ १ ॥
काहेको जोड़े माल खजाना, काहे चिनावे ऊँची अटा।
जमके दूत जब लेन कूं आवे छोड़ चले सब राज पटा ॥ २ ॥
भाई बन्धु सब डरपन लागे देखत नैना फटा फटा।
जब यह हंसा करे पयाना सबकूं लागे खटा खटा ॥ ३ ॥
दुनिया मतलबकी गरजू, स्वारथ बोले मिठा मिठा।
चन्द्रसखीके लोभ भजनको, काना कुंडल सिर मोर लटा ॥ ४॥

५९६—भजन

बलिहारी लाल तेरे आवनकी मन भावनकी ॥टेक॥
इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीचमें रास रमावन की।
चुनि चुनि कलियाँ मैं हार बनाऊँ यदुवर उर पहिरावनकी ॥१॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै मधुर मधुर मुसकावन की।
यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै मधुरीसी वेणु बजावनकी ॥२॥
पैठि पताल कालिया नाथे फणपर निरत करावन की।
इन्द्र कोप चढ़े ब्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारनकी ॥३॥
केश पकरि हरि कंस पछारे यमुना मार बहावन की।
उग्रसेन को राजतिलक दियो उनहूं के वंश बढ़ावन की ॥४॥
वृन्दावनमें रास रच्यो है सहस गोपी इक कान्हा की।

जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन धारन की ॥५॥
दुर्योधन घर मेवा त्यागा साग विदुर घर पावन की।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव हरिके चरण चित लावनकी ॥६॥

५९७—भजन

रसिया बन्यो मदन मोहन प्यारे ॥टेक॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी युवती जन मोहन वा।
पीताम्बर की कछनी काछे क्रीट मुकुट कुंडल वारे ॥१॥
बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ वीना उपंग चङ्ग न्यारे।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव तन मन धन तोपै वारे ॥२॥

५९८—भजन

नेक ठाढ़े रहो रसिया रंग डारौं ॥टैक॥
अवीर गुलाल मलौं मुख तेरे गुलचा गालन मारौं ॥१॥
चोवा चन्दन और अरगजा घिसि घिसि तोपैं डारौं।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव तन मन धन तोपै वारौं ॥२॥

५९९—भजन

कान्हा धरे रे मुकुट खेलै होरी ॥टेक॥
कितसे आये कुंवर कन्हैया कितसे राधे गोरी ॥१॥
कितने वरसके कुंवर कन्हैया कितने राधे गोरी।
वारै वरस के कुंवर कन्हैया सात वरस की गोरी ॥२॥
हिलमिल फाग परसपर खेलत अविर गुलाल भरे झोरी।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव युगल चरणपर चित मोरी ॥३॥

६०० — भजन

राधे फूलन मथुरा छाई ॥टेक॥
कितने फूल सरगसों उतरे कितने मालिनी लाई ॥१॥
नहिं तो फूल सरगसों उतरे नहिं तो मालिनि लाई।
उड़ि उड़ि फूल परे यमुनामें राधे बीनन आई ॥२॥
चुनि चुनि कलियाँ मैं हार बनाये श्यामके ऊपर पहिराई।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब हरिके चरण चितलाई ॥३॥

६०१ — भजन

बरसानेमें महल लाड़िलीके ॥टेक॥
ऐं बरसानेमें बाग बहुत हैं बिच बिच पेड़ मालतीके।
ऐं बरसानेमें महल बहुत हैं बिच बिच चौक चांदनीके ॥१॥
ऐं बरसानेमें नारि बहुत है बिच बिच झुण्ड ग्वालिनीके।
बसो रे आली ऐं बरसानेमें पीयर राधे ए गोरीके ॥२॥
श्याम कन्हैया निशिदिन बिहरैं जबसे दिन आये होरीके।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब चरण कमल चितचोरीके ॥३॥

६०२ — भजन

दधि पीले श्याम सलोना ॥टेक ॥
काहे की तेरी बनी है मथनियां कौन पत्रके दोना ॥१॥
आठ काठकी बनी मथनियां कदम पत्रके दोना।
कौन घाटपर ग्वाल जुरे हैं कौन घाट पर कान्हा ॥२॥
चीर घाट पर ग्वाल जुरे हैं कालिन्दी पर कान्हा।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिब हरिके चरण चित होना ॥३॥

६०३—राग छायानट

अंगुरी मेरी मरोर डारी, छीन दधि लीना सांवरो ॥टेक॥
हौं जो जात कुंजन दधि वेचन, वीच मिले गिरिधारी ॥१॥
अगर सुने मोरी वगर सुनेगी, सास सुने दे गारी ॥२॥
चन्द्रसखी भजु वालकृष्ण छिव, चरण कमल वलिहारी ॥३॥

६०४—राग केदारा

वन आये वनवारी ॥टेक॥
शिर धार चन्दन खोरि, मोतियनकी गल माला डारी ॥१॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डलकी छवि अति न्यारी ॥२॥
वृन्दावनकी कुञ्ज गलीमें चालत गति अति प्यारी ॥३॥
चन्द्रसखी भजु वालकृष्ण छिव, चरण कमल पर वलिहारी ॥४॥

६०५—राग झंझोटी

वंशी यमुना पै वाज रही रे लाल,
छवि निरखण कैसे जाऊं री आज ॥टेक॥
वंशीकी टेर सुणी मेरे श्रवणन, तन मन सुधि विसरी रे लाल ॥१॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, चन्दन खौर लगी रे लाल ॥२॥
चन्द्र सखी भजु वालकृष्ण छिव चरणन चेरी भई रे लाल ॥३॥

६०६—राग भोपाली जंगल

डगर मोरी छाड़ो श्याम, विंध जावोगे नयननमें ॥टेक॥
भूल जावोगे सव चतुराई, लाला मारूँगी सैननमें ॥१॥
जो तोरे मनमें होरी खेलनकी, तो ले चल कुंजनमें ॥२॥

चोवा चन्दन और अरगजा, छिड़कूंगी फागन में ॥३॥
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव, लागी है तन मन में ॥४॥

६०७—राग देश

मेरो मन लैगयो बड़ी बड़ी आँखनवारो कारो हंसके ॥टेक॥
भौंह कमान बान जाके लोचन, मेरे हियरे मारे कसके ।
रेजा रेजा भयो री कलेजो मेरो, भीतर देखो धसके ॥१॥
यत्न करो यंतर लिख ल्यावो, औषध ल्यावो घसके ।
रोम रोम विष छाय रह्यो है, कारे खाइयो डसके ॥२॥
जो कोई मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हंसके ।
चन्द्र सखी भजु बालकृष्ण छिव, क्यारी करूँ घर बसके ॥३॥

चन्द्र सखी

६०८—भजन

नाथ म्हारो कांई बिगड़े, जावेगी लाज तिहारी ॥टेक॥
औरां के पति एक है, मैं पांच पत्यां की नारी ।
ये पांचू तो त्याग मोये दीनी, थे मत त्यागो बनवारी ॥१॥
कौरव कपट रच्यो दुर्योधन, मनमें याई तो विचारी ।
जीत लिया पांचू पांडू ने छठी द्रौपदी नारी ॥२॥
केस पकड़के लायो सभामें, त्रास दिखाई भारी ।
दुष्ट दु:शासन चीर उतारे, आरत होय पुकारी ॥३॥
इब तक नाथ कछू नहीं बिगड़यो, कृष्ण ही कृष्ण पुकारी ।
दासी कहतां लाज मरोगा, देखोगा मोय उघारी ॥४॥

गज डूबत नहीं देर लगाई, कीनी तुरत सहाई।
थे तो सहाय करी भगतांकी, कहाँ गये वेर हमारी ॥५॥
सुनी वीनती प्रभु आय गये हैं, नख पर गिरिवर धारी।
चीर माँय परवेस भया जद खैंचत खैंचत हारी ॥६॥
महाभारतमें कथा लिखी छै, वेदव्यासजी उचारी।
कालूराम कहे सुण धन्ना, आ पहुंचे वनवारी ॥७॥

६०९—भजन

मैं तो थारे निज दासन को दास, नाथ म्हारी कद पूरोगे आस॥टेक॥
भीड़ पड़ी गजराज भगत पै, रुक गयो जलमें सांस।
एक वेर तेरो नाम उचारयो, कर कर दृढ़ विश्वास ॥१॥
ध्रुव तारयो प्रह्लाद उवारयो, सारयो नरसीको काज।
भरी सभामें राख लई थे, द्रौपद सुताकी लाज ॥२॥
यो संसार ठगां की नगरी, पायो वास कुवास।
कालूराम गुरांके शरणे, दीज्यो भगती निवास ॥३॥

६१०—भजन

सत्संग सापुरुषां की करणी, महिमा अगम निगममें वरणी ॥टेक॥
कामदेव छत्रीने डुवोयो, विप्र वेद ना वरणी।
लोभ लालचमें वनिया डूब्या, शूद्र भया परसरणी ॥१॥
पुरुष मनावे देई देवता, भूत पूजनी तरणी।
पतिकी पत पतनीने खोई, परणी नार निकम्मी ॥२॥
पर धन पर दारा आदि, वस्तु पारकी ना हरणी।
दूजा सुण्यां अति दुख रहसी, वाणी ना चरणी ॥३॥

कालूराम कहे सुण धन्ना, करोरे चांचली ।
होनहार होनीके तावे, टरे न टारी टरणी ॥४॥

६११—भजन

हरि जी म्हारो माणक मोल अमोलो, जगती में झूठ मत बोलो ॥टेक॥
तपे नहीं तपसे, फूटे नहीं घणसे, नहीं पथरी नहीं पोलो ।
जब गँवरी बिन वांकी जात न जोड़े, गायक बिना मत खोलो ॥१॥
सत की तखड़ी मनको तोलो, तीन गुणांको बोलो ।
संत जनाकी काण घाल कर, सत शब्दांसे तोलो ॥२॥
सींत मीतमें सब सुख चाहे कांई है मंडारी भोलो ।
सुरत निरत की कुंजी लगा कर अंतर पट सब खोलो ॥३॥
देवद्वारकी खिड़की दूर है, हरि मिलणे को मेलो ।
कालूराम कहे सुण धन्ना, दिन दिन छीजत चोलो ॥४॥

६१२—राग जीलो चलत

चेते क्यूं ना राज मनारे, भाई चेते क्यूं ना रे ॥टेक॥
बालपणो हंस खेल गंवायो, अब तो तिरणा रे ।
कैसे रह्यो भुलाय मूरख तने आखर मरणा रे ॥१॥
या उमर नादान ओसथा, मतलब करणा रे ।
गाफल मतना होय जरा कछु जमसे डरणा रे ॥२॥
काल तुम्हारी बात उडोके, कैसे तिरणा रे ।
यो मिनखां तन पाय जगतमें सुकरथ करणा रे ॥३॥
कालूराम मिल्या गुरु पूरा ले ले शरणा रे ॥४॥

६१३—कसूरी

अब तुम उठ सौदागर चेत करो कछु माल विसावैगा ॥टेक॥
पच्छिम सेती गोण भरी है, अगम लदावैगा।
यह विणजारा है व्योपारी, फिर नहीं आवैगा ॥१॥
हरि हीराको विणज करो, कछु नफा जो पावैगा।
खोटा विणज्यां ख्वार होयगा गोता खावैगा ॥२॥
चोरां मिल कर मतो कियो तेरे पाँचू आवैगा।
चौकस रहियो सोय मत जइयो फिर पछतावैगा ॥३॥
मार कूट, कर वस चोरां ने नाँय ठगावैगा।
जव राजा राजी हो तुम पर भला कुहावैगा ॥४॥
कालूराम मिल्या गुरु पूरा भरम मिटावैगा।
धन्नो सोनी दास हरीको हरि गुण गावैगा ॥५॥

६१४--राग माड़

अब तुम गोकुल केर विहारी ठाकुर सुणियो अरज हमारी ॥टेक॥
जुवे कपट कियो दुर्योधन, मनमें याही विचारी।
जीत लिया पांचू पांडवांने, छठी द्रौपदी नारी ॥१॥
भुजा पकड़ कर लाया सभा में, त्रास दिखावे भारी।
दुष्ट दुःशासन चीर उघाड़े, कर रह्यो आज उघारी ॥२॥
गद गद वैन नैन जल छाये, द्रौपदी वहुत पुकारी।
तुम तो सहाय करी भगतन की, कहाँ गये वेर हमारी ॥३॥
चीर मांय प्रवेश भये प्रभु खैंचत खैंचत हारी।
कालूराम कहे सुण धन्ना, आ पहुंचे वनवारी ॥४॥

६१५—राग माड़ देशी

अब थारे निज भगतां में भीड़ पड़ी,

थे सुणियो त्रिभुवन राई ॥टेक॥

कौरू कपट कियो दुर्योधन, लाख भवन रचाई।
आधो राज देहु पांडवां ने, ऐसी बात सुणाई ॥१॥
जहर घाल कर लाडू ल्याया, रुच रुच भोग लगाई।
जीमत भोजन भया बावला, संज्ञा रही न कांई ॥२॥
हरख्यो फिरे भूप दुर्योधन आछी अकल उपाई।
पांचू पाण्डव बाड़ भवनमें बाहर आग लगाई ॥३॥
कौरू देखत फिरत तमाशा, अब जल कर मर जाई।
ताव लग्यो जद करुणा कीन्ही, राख कृष्ण शरणाई ॥४॥
मोरी मांकर बिदुरसेनजी पांडु लिया बचाई।
जिनके सहायक श्रीकृष्ण जी, ताती पून न आई ॥५॥
महाभारत में कथा लिखी है, वेदव्यासजी गाई।
कालूराम कहै सुण धन्ना, भगतनके सुखदाई ॥६॥

६१६—राग माड़ देशी

अब म्हारो जलमें रुक गयो सांस, नाथ म्हे किस विध गावांजी ॥टेक॥
खैंच लियो बलवंते दाने, इब बोलण नहीं पावां।
लियो कमलको फूल सूंड़में यो थारी भेंट चढ़ावां ॥१॥
मैं कहां दीन हीन दुर्बल थारो दास कुहावां।
थां से सामरथ कूण है स्वामी, जिनकूं अरज सुणावां ॥२॥

सात दिवस युद्ध कियो वणेरो, भूख लगी के खावां ।
कुटुम्ब कवीलो सभी छोड़ गयो, विन भोजन मर जावां ॥३॥
अव मैं हत्यो गयो सव पोरस, जीतण किस विध पावां ।
कालूराम कहै सुण धन्ना हरसे ध्यान लगावां ॥४॥

धन्ना सोनी

६१७—बारामासियो

नाम एक नारायण सच्चा ।
हर हर कहना सवकी सहना, तनक जीव कच्चा ॥टेक॥
साढ़ आसा मुसकल से तुम जगत मांय आये ।
लख चौरासी भरम भरमते, मिनखां देह पाये ॥
अव है तेरी सुमरण की वेला ।
ओसर वीत्यो जाय वन्दा, तूं कह्या मान मेरा ॥१॥
सावण जीवण थोड़ा दिनांका, कछू गरव नहीं करणा ।
क्या वूढ़ा क्या जवान एक दिन, सवही को मरणा ॥
जीवण तेरी धोखेकी टाटी ।
पून में पून मिले तेरी माटी में माटी ॥२॥
भादू रैन जगत पिछाणी, हंसा रैन सुपना ।
भाई वन्धू कुटम कवीला, कोई नहीं अपना ॥
सोच इव कूण काम आवे ।
दुनिया दौलत माल खजाना, धरया रह जावे ॥३॥
क्वांर करार कौल करतासे, तुम कछु कर आये ।
दान पुण्य और सुमरण खातर, तुमको भिजवाये ॥

कदे तो उनको याद करणा ।
ये तो है मायाका फंदा, इसमें नहिं पड़णा ॥४॥
कातिक काया सदा अमर, तेरी रहणे की नांही ।
एक दिन ऐसा आवे वन्दा तूं पड़ै अगन मांही ॥
जलै ज्यूं सूकीसी लकड़ी ।
हंसा छोड़ चलै कायाने, सुरग राह पकड़ी ॥ ५ ॥
अगहन आसा जीवणकी, कोई मत राखो मनमें ।
इस जिन्दगीका नहीं भरोसा, निकल जाय छिनमें ॥
भरोसा एक मालिकका राखो ।
होणी होयसो होय, बन्दा, कोई झूठ मनां भाखो ॥ ६ ॥
पोह जीव जगतमें आया, सोई चल्या जाता ।
कोई आज चलै कोई काल चलै, कोई रहणे नहिं पाता ॥
जगत विच यही कार लाग्या ।
वड़ा बड़ा वीर फकीर हो लिया, सभी प्राण त्याग्या ॥ ७॥
माह मास बदी छोड़ कर, नेकी कर लीज्यो ।
तज दे गरव गुमान हरीने हिरदै धर लीज्यो ॥
वन्दा तने मालिकके जाणा ।
जलम मरण छुट जाय शेषमें अमरलोक पाणा ॥ ८ ॥
फागण फीका तुम मत वोलो, मीठा मीठा वचन कहो ।
वुरी भली सव धारण करके, गमकी खाय रहो ॥
इसीसे तेरा सतगुरु है राजी ।
चलणा चाल गरीवी सेती छोड़ अकड़ वाजी ॥ ९ ॥

चैत चेत कर चलणा रे मूरख, गाफिल नहीं रहणा ।
क्या जाणूं क्या करणी करके कूण जूण पड़णा ॥
जिन्दगी थोड़ा दिन तेरी ।
आज भजो करतार फेर आवणकी नहीं वेरी ॥१०॥
वैशाखामें फिरो घूमता उनके ही प्यारे ।
उनके ही तुम हो पियारे, उनसे ही न्यारे ॥
उन्हींका गुणावाद गावो ।
तेरो जन्म मरण छुट जाय जगतमें अमरलोक पावो ॥११॥
जेठ मास एक सुरतां सेती नाम याद आयो ।
कहता कालूराम भजेसे परमानन्द पायो ॥
चावसे बारामास गावे ।
गावे कहे सुणे सुणावे से नर अमरपद पावे ॥१२॥
पं० कालूरामजी आचार्य

६१८—भजन

मनुवा तूं दुख पासी रे ॥
क्यूं विसरयो हरिनाम, सागे के ले जासी रे ॥ टेक ॥
कुटुम्ब कबीला सुख संपत धन, यहां रह जासी रे ।
निसर जायगो हंस, काया काम न आसी रे ॥ १ ॥
जो कुछ कर लेसी सो तने वहां मिल जासी रे ।
कौल वचन कीना था सो थारे आड़ा आसी रे ॥ २ ॥
दान पुण्य करलेसी, जग तने भलो बतासी रे ।
विना भज्यां भगवान भजन बिनु मुक्ति न पासी रे ॥ ३ ॥

आगे पूछे धर्मराय तूं के बतलासी रे।
पड़सी मुग्दर मार, थाने कुण छुटासी रे ॥ ४ ॥
पाप पुण्य कीन्यो सो, थाने, सब भुगतासी रे।
चौरासी नहीं छूटे फिर फिर गोता खासी रे ॥ ५ ॥
सतगुरु कालूराम दयाकर, ज्ञान बतासी रे।
हीण जात धन्ना साहब, पार लंघासी रे ॥ ६ ॥

६१९—राग जीलो चलत

अब तूं सोच समझ और देख निगे कर कोई न तेरा रे ॥ टेक ॥
दारा सुत और तात मात कह, मेरा मेरा रे।
आप स्वारथी कुटुम्ब कबीलो, मित्र घणेरा रे ॥ १ ॥
बीती क्वांर तरुण सब पूग्यो, हुवा बड़ेरा रे।
आन ज्वरां तन घेर लिया, चल गया फरेरा रे ॥ २ ॥
सतसंगत गुरु भेद चावणा, जगत अन्धेरा रे।
अब तो चेत करो मन मूरख, गला हेरया रे ॥ ३ ॥
पांच चोर तेरे घरमें बैठ्या, पड्या न बेरा रे।
भोर भई जब चेत करयो सब, लुट गया डेरा रे ॥ ४ ॥
आया बटाहू नगरीमें, लिया रैण बसेरा रे।
फजर भई जद लाद चल्या, उठ गया सवेरा रे ॥ ५ ॥
कालूरामजी सत दरसाते, गुरु है मेरा रे।
धानो सोनी दास हरीको, भज राम सवेरा रे ॥ ६ ॥

६२०—चलत रामानन्दी

मनुवा नांय विचारी रे, मेरो मेरी करतां तेरी वीती सारी रे ॥ टेक ॥

गर्भवासमें रक्षाकीनी, सदा विहारी रे।
वाहर काढ़ो नाथ, भक्ति करस्यूं थारी रे ॥ मनुवा० ॥ १ ॥

वालापनमें लाड़ लड़ायो, माता थारी रे।
भरी जवानीमें लागे, तिरिया प्यारी रे ॥ मनुवा० ॥ २ ॥

पाछे तूं मायासे लिपट्यो, जोड़े यारी रे।
कौड़ी कौड़ी खातर लेवे, राड़ उधारी रे ॥ मनुवा० ॥ ३ ॥

सतगुरु वात ज्ञानकी कीनी, लागी खारी रे।
जखन कयो भजन करो, जद दीनी गारी रे ॥ मनुवा० ॥ ४ ॥

वृद्ध भयो तव कहन लगी, तेरे घरकी नारी रे।
कद्सी मरसी डैंड, छोड़े गैल हमारी रे ॥ मनुवा० ॥ ५ ॥

पाछे तो मन सोच कर्यो, कछु बनी न म्हारी रे।
अव चौरासी भोगो, देखो करणी थारी रे ॥मनुवा०॥६॥

रुक गया कण्ठ दसूं दरवाजा, मंडगी ब्यारी रे।
पूंजी छी सो हुई विराणी, भयो भिखारी रे ॥मनुवा०॥७॥

कालूरामजी सीख दई सो मानी सारी रे।
पार लंघावो नाथ, थानो शरण तुम्हारी रे ॥मनुवा०॥८॥

६२१—राग माड़ देशी

थारो सखा भयो नंदलाल, स्याम थे क्यूं दुख पावो जी ॥टेक॥

विप्र सुदामासे कहै तिरिया, पुरी द्वारका जावो।
वालपणको मित्र तुम्हारो, उनसे कथा सुनावो जी ॥१॥

तीन लोकके करता हरता उनसे क्यूं शरमावो।
थोड़ा सा तन्दुल ले जाकर प्रभुकी भेंट दिखावो जी ॥२॥
बांध गाँठड़ी चले सुदामा, मनमें करे पछतावो।
तिरिया लार पड़ गई जद मैं मिंतर जाचण आयो जी ॥३॥
खबर पड़ी श्रीकृष्णचन्दने मनमें भयो उमावो।
निद्रा बस सो रहे सुदामा छिनमें निकट बुलायो जी ॥४॥

६२२—भजन

कर मत पाप तजो सब पाखंड, देख समागम गुरु गमकारे ॥टेक॥
मत ल्यो चीज बिना देई किसकी, पर तिरिया दायक दुखकारे।
मत कर हिंसा झूठ न बोलो, चुगल पड़े जूता यमकारे ॥१॥
भेद विना कोई बात न बोलो, उत पूत दोष लगे उनकारे।
कड़वा बचन कहो मत किसकूं, मारग देख वेद पंथकारे ॥२॥
बिना न्याय एक धनकी इच्छा, खोटा चितवन ना किसकारे।
मिथ्या निश्चय नरक निसानी, मुगदर त्रास देत यमकारे ॥३॥
ये दश लक्षण पाप कही जे, कायक वाचक और मनकारे।
दशूं दोष तज भजन करोगा, सहस्त्रगुणा फल होय उनकारे ॥४॥
परम्पराका धर्म धार ले, तज खटका पाखण्ड मतकारे।
कालूराम कहे सुण धन्नाखराजी धरम आश्रम वरणकारे ॥५॥

६२३—राग जैजैवन्ती

ये मौसर सुखरथ करणका, कटेरे पाप तेरा सब तनका ॥टेक॥
पहली गुरुजीको शीश निवावो, बेरा पटे तने पाप पुण्यका।
धीरज क्षमा दम और अचारी, रहोजी पवित्र नीत्र गोडका ॥१॥

बुद्धिकी वृद्धि गुरुसे विद्या, सत्य भाषण और क्रोध तजनका ।
ईश्वर कृत यूं वेद कहत है, ये दश लक्षण मुख्य धरमका ॥२॥
नरक निवारण त्रास मिटावण, सदा सहायक है यह जीवका ।
तीनों कालमें संग रहत है, जोर न चाले अघ दुश्मनका ॥३॥
जो कोई तिन्यो चावे सोइ धारो, धर्म सनातन है यह सबका ।
कालूराम कहे सुण धन्ना, अन्य धरम मारग डूबणका ॥४॥

६२४—राग कालंगड़ा

ना कीन्यो चलणेको समान, रे मन मूरख भयो अज्ञान ॥टेक॥
पानी पवन जमी आसमान, ब्रह्म तत्व और अगनी जान ।
आन उदर कीन्यो स्थान, काल पाय कर बाहर आयो—
ताते पुत्र भयो अभिमान ॥१॥
बालपणमें सूझी माय, तरुण भयो तब कीन्यो विवाह ।
पीछे रह्यो वाम लिपटाय, काम क्रोध मद लोभ ठग्यो है—
चेत चेत क्यों भयो अज्ञान ॥२॥
पाकर जन्म भज्यो नहीं राम, जन्म अवरथा है निसकाम ।
क्या तेरा लागे था दाम, करणी आप आपकी जागा—
आखिर नेकी रहेगी निधान ॥३॥
होत बुदबुदा जैसे नीर, तैसे क्षणभंग समझ शरीर ।
ना संगी सुत माता बीर, कालूराम कहे गुरु गुणकी—
बिना सत्गुरु कछु पायो न ज्ञान ॥४॥

६२५—राग कालंगड़ा

चिड़िया चुग गई सुनु खेत, प्यारे मन मूरख अब तो चेत ॥टेक॥
इस नगरीके लाग्या चोर, लूंटण लाग्या चहुं दिश और।
अब तेरा क्या चाले जोर, यमरायसे करो नमेड़ा—
सेना आवे हेला देत ॥१॥
टटा तागा गल गया बाण, बिना सत्गुरु कछु पड़े न पिछाण।
ये बागके लाग्या ताण, पड़्यां जमीं पर आखिर—
हो गई सबकी रेत ॥२॥
पाँच जणाँ मिल खोली हाट, नो दश बहतर घाल्या बाट।
इनमें घाट कोई ना बाद, धणी आपकी हाट संभाले—
जोर कन्यां रहने नहीं देत ॥३॥
धणी खेतने दीन्यो बाय, जो वावे सोई फल खाय।
खाली खेत कबू नहिं जाय, कालूराम कहे गुरु गुणकी—
कर धन्ना मालिकसे हेत ॥४॥

६२६—भजन

क्या बिश्वास श्वांस का कहिये, आना होय नहिं आवे ॥टेक॥
सुकरथ ही सुकरथ तूं कर ले, मूरख बिलम्ब मती लावे।
छाड़ कुबुध तूं सुबुध पकड़ ले, यो मोसर बीत्यो जावे ॥१॥
अन्य देवको पूजत डोले, पारब्रह्मको नहीं ध्यावे।
जिनका कार्य कबुयन सरसी, भटक भटक नर मर ज्यावे ॥२॥
वोही बड़ा जगमें बड़भागी, ओंकारसे चित लावे।
ईक येक दुष्ट महामति होना, जाने राम नाम नहिं भावे ॥३॥

कालूराम मिल्या गुरु पूरा, यूं धन्नाकूं समझावे।
पारब्रह्मको शरणो ले ले, कोट विघ्न थारा टल जावे ॥४॥

६२७—भजन

कैसा तैंने विणज किया व्योपारी ॥ टेक ॥
भेज्या था तने विणज करणने, कर कर कोल करारी।
गाफिल भयो चेत नहीं कीन्यो, गई भूलमें सारी ॥ १ ॥
क्या तैं लीन्या क्या तैं दीन्या, पूछेगा भण्डारी।
जब मुशकिल बण जायगी तोकूं, पूंजी भोत विगाड़ी ॥ २ ॥
खाता पोता करो बराबर, मींड़ो रकम तुम्हारी।
पास होय तो घाल पजोवो, मिलसी नांय उधारी ॥ ३ ॥
साहेब सच्चा लेखा मांगे, राजा क्या भिखारी।
जो करसी सोही भुगतासी, क्या पुरुष क्या नारी ॥ ४ ॥
स्याही गई सफेदी आई, कर चलने की तैयारी।
गैलने खर्ची नहीं लीनी, अगली मंजल करारी ॥ ५ ॥
भर बालद क्यों होयो नचीतो, कीनी नांय रखवारी।
चोरां मिल कर लूंट लई है, भरी खेप गई मारी ॥ ६ ॥
कालूराम मिल्या गुरु पूरा, कहता वेद विचारी।
दीन जान मेरा गुना बकसियो, धानो, शरण तुम्हारी ॥ ७ ॥

६२८—भजन

सुमरण कर गोविन्दका रे।
रामचन्द्र और बालमुकुन्दके श्रीनन्दजीके नन्दका रे ॥ टेक ॥
सदा नहीं स्थिर किसीकी काया, झूठी संपति झूठी माया।

तूं तो गुण गोबिन्दका कबुयन गाया, दुःख सुख भोग कर्मकारे ॥१॥
विना भजन मुक्ती नहीं पासी, सब तीरथ फिर आवो काशी।
तेरे गर्भवासकी मिटै न फांसी, गुनहगार है यमकारे ॥ २ ॥
कूड़ कपट छल रच्या घणेरा, वहां तो संगी कोई न तेरा।
गया स्वांस जंगल होय डेरा, मारा मरे भरमका रे ॥ ३ ॥
जो जन्मत सो निश्चय मरना, कर सतसंगत पार उतरना।
धानू दास हरीके शरणा, मारग यही धरमका रे ॥ ४ ॥

६२९—भजन

विषय वासना छाड़ जगतकी, राम नाम लेलीना--
जिसने जन्म सफल कर लीना ॥ टेक ॥
तीरथ बर्त किया उपासा, दान पुण्य कर दीन्या।
सार असार समझ कर देख्या, सोही संत परवीना ॥ १ ॥
छाक्या रहे दिन रैन प्रेममें और काम तज दीना।
उसको क्या मुक्तीका सांसा, जिन राम नाम ले लीना ॥२ ॥
सत्संगत भक्तोंका मारग, बड़ा कठिन है झीना।
पारब्रह्मको सोही पहुंचा, ब्रह्म आपनो चीना ॥ ३ ॥
बेद पुराण नाम यूं गावे, निश्चय निर्णय कीना।
कालूराम कहे सुण धन्ना, सदा प्रेम रस भीना ॥ ४ ॥

६३०—भजन

मनुवा चेत तो सही।
दान पुण्य ना सुमिरण कीन्यो, याके भूल भई ॥ टेक ॥
गर्भवासमें करुणा कीनी, बाहर काढ़ दई।

कौल वचन कीन्याछा सोतो याद ना रही ॥ १ ॥
कचुयन मुखसे नाम लीन्यो या के भूल भई ।
घरको धन्धो करतां करतां सारी बीत गई ॥ २ ॥
ना कोई ज्ञान ध्यान सत्संगत ममता लिपत रई ।
सुखमें नो साहब नहीं सुमर्यो, दुःखमें हाय दई ॥ ३ ॥
तूं कहता सब मेरी मेरी अब तेरी कहाँ गई ।
जो दीन्यो सो संग ले चाल्यो बाकी यहाँ रई ॥ ४ ॥
काया माया ढलती छाया, थिर तो नांय रई ।
मोह माया आशा तृष्णामें, जगती जाय रई ॥ ५ ॥
सतगुरु कालूराम सभीने ऐसी सीख दई ।
धाना हरको सुमिरण करले होसी साँच सई ॥ ६ ॥

६३१—भजन

मनुवा कांई कुमायो रे ।
लियो न हरिको नाम अबरथा जन्म गमायो रे ॥ टेक ॥
गर्भवासमें कष्ट भयो मालिकने ध्यायो रे ।
बाहर काढ़ो नाथ मैं तो अति दुःख पायो रे ॥ १ ॥
कई जन्मको पाप पुण्य तने वो दर्शायो रे ।
अब भूलूंगो नांय ऐसो वचन सुणायो रे ॥ २ ॥
सब संकट तेरा मेट मालिक बाहर ल्यायो रे ।
काम सर्यो दुःख बीसर्यो, फेरुं याद न आयो रे ॥ ३ ॥
पाछे तूं रोवाने लाग्यो, जग कह जायो रे ।
साँच कहूं संसारमें कोई रहण न पायो रे ॥ ४ ॥

बालपणेमें बालो भोलो सारा खिलायो रे।
तरुण तिरिया ब्याई थाने काम सतायो रे ॥ ५ ॥
कुटम कवीलो धन देख्यां तूं अति हरखायो रे।
मरणो समझ्यो नांय, तृष्णा लोभ बधायो रे ॥ ६ ॥
बृद्ध भयो तेरा हाण थक्या सारा छिटकायो रे।
अकल विना का डैण सारो मान घटायो रे ॥ ७ ॥
सब स्वांसा तेरी बीत गई आड़ो कोइयन आयो रे।
हुकम दियो यमराय थाने पकड़ मंगायो रे ॥ ८ ॥
पाप पुण्यको तिरणो सारो बाँचि सुणायो रे।
पड़्यो नरकमें भोग कियो अपणों पायो रे ॥ ९ ॥
सत्गुरु कालूराम दया कर ज्ञान बतायो रे।
पार लगावो नाथ धानू शरणे आयो रे ॥१०॥

६३२—भजन

इब म्हे वीखो भुलावां स्याम नाथ म्हारी दानो लाज गुमावे ॥टेक॥
नगर बिराट् बसे जहां कीचक पांडू बीखो भुलावे।
जाय रावले भीतर दानो द्रौपदसे बतलावे ॥१॥
जल्दी सेज हमारी आवो इब क्यूं ढील लगावे।
पटराणी कर राखूं तोकूं दासी मना कुहावे ॥२॥
मैं छूं दासी थे छो राजा, म्हांसू मत बतलावे।
लोग सुणे सब, लाज घटेगी तुमको बुरा बतावे ॥३॥
भीमसेन पा गई द्रौपद मेरी लाज गुमावे।
डूब धरम जाय, क्षत्रियन कुलके काठ लगावे ॥४॥

भीमसेन तव तिरिया वण कर घर दानेके आवे।
महलां मांय और कीचक ने बांध पोट ले जावे ॥५॥
खम्भे नीचे दे कीचकने पाछो घरमें आवे।
संकट मांय सहाय करे पण हरि भक्तांने तावे ॥६॥
महाभारतमें कथा सुणी श्री वेदव्यासजी गावे।
कालूराम कहे सुण धन्ना, हरि गत लखी न जावे ॥७॥

६३३—भजन

थारो सखा भयो नंदलाल श्याम थे क्यूं दुख पावोजो ॥टेक॥
विप्र सुदामासे कह तिरिया, मनमें ज्ञान उपावोजी।
बालपणको मित्र कृष्ण, थे जल्दी उण पा जावोजी ॥१॥
आपां बामण लाज काहेकी, थे कुणसे शरमावोजी।
घरमें बैठ्या ज्ञान गिण्या थे, इब क्यूं ढील लगावोजी ॥२॥
मुठी दोय चावलकी ल्याऊं, गांठ बांध ले जावोजी।
वे सब पूरण काम करेंगे चरणां शीश निवावोजी ॥३॥
जाकर मिलो श्रीकिशनसे, दालद दूर गमावोजी।
पूरण ब्रह्म जगतने पूरे थे द्रव्य घणेरो ल्यावोजी ॥४॥
म्हारी सीख मानल्यो वालम, जो घरमें सुख चावोजी।
अकल विना थे कष्ट भुगतो मित्रसे मिल आवोजी ॥५॥
दशम स्कंध भागवत गावे, पुरी द्वारिका जावोजी।
कालूराम कहे सुण धन्ना, हरि चरणां चित लावोजी ॥६॥

६३४---भजन

तिरिया भई हीन मति थारी ये कर्मनकी गति है न्यारी ॥टेक॥
श्रीकृष्ण हम एक गुरुके पढ़िया था अति भारी ।
वालपणकी कथा कहूं तुम श्रवण करे यूं सारी ॥१॥
गुरु पत्नी मोय चणा दिया था, कर कर अति हितकारी ।
पांती एक कृष्ण की लीनी दूजी लीनी हमारी ॥२॥
हम तो गया खेलणे वनमें भूख लगी अति भारी ।
लाय सुदामा चणा हमारा बोल्या कृष्ण मुरारी ॥३॥
मैं तो चणा फांक लिया सारा, पैली नांय विचारी ।
जा दलिद्री शाप दीन्यो तब मैं भयो भिखारी ॥४॥
मेरा किया आप मैं भोगूं, सुणरी घर की नारी ।
कहा दोष इब श्रीकृष्ण को, वे पूरण अवतारी ॥५॥
अब मैं उण पा जाऊं किस विध लाज मरूं अति भारी ।
दुर्बल देखकर करे मसखरी हंस हंस देगो गारी ॥६॥
बिछड़्यां तो दिन हुआ घणेरा, फेर न मिल्या मुरारी ।
वे तो तिरलोकीके राजा, मैं जग मांय भिखारी ॥७॥
विना लिख्यो धन कहांसे ल्याऊं, गैल पड़ी क्यूं म्हारी ।
दुःख सुख संपत हाण लाभ जग किया भोगती सारी ॥८॥
दशम स्कंध भागवत गावे, हरिकी लीला भारी ।
कालूराम कहे सुण धन्ना, संतनके हितकारी ॥९॥

———

६३५—भजन

जिनके है हिरद में साँच, नाथ वे भीड़ पड़े में आवे ॥टेक॥
सांडामरक प्रह्लाद भक्तने, विद्या भोत पढ़ावे।
ये झूठा जंजाल गुरूजी राम नाम मन भावे ॥१॥
हिरणाकुश सुत पास बुलावे ले गोदी बैठावे।
क्या क्या विद्या पुत्र तूं सीख्यो, मोकूं क्यूंनी बतावे ॥२॥
रैन दिन गुण गोविन्दका गाऊं और न कछू सुहावे।
पकड़ हाथ तब दूर वगायो, मुंडो मती दिखावे ॥३॥
कोप गयो बलवंतो दानो सांडामरक बुलावे।
मारूं दुष्ट तोय ना छोडूं सूल्यां क्यूंनी पढ़ावे ॥४॥
नाम लेत मेरे वैरीको, मुझको नांय सुहावे।
पूत कपूत दुष्ट कुण जनम्यो, कुलके दाग लगावे ॥५॥
राजा दोष मोय मत दीज्यो, बालक योही सिखावे।
राजनीति कुल धरम छोड़ कर गुण गोविन्द का गावे ॥६॥
हुक्म दियो बलवंते दाने सुतको तुरन्त मरवावे।
अस्त्र शस्त्र भोत छोड़िया, सब भुंडा होय जावे ॥७॥
जलमें गेरयो तो ना डूब्यो कुंजरसे चिरवावे।
अनेक उपाय रच्या मारण का, सब ही निष्फल जावे ॥८॥
बांध मसक पर्वत के ऊपर नीचेने गुड़ावे।
जिनके सहायक सामर्थ स्वामी ताती पून न आवे ॥९॥
लेकर जुरा गोदमें बैठी अग्नि माँय जरावे।
जल बल होय जुरा की ढ़ेरी भक्त खेलतो पावे ॥१०॥

ले शमशेर उठ्यो हिरणाकुश सुत मारण ने आवे ।
तेरो शीश मैं काटूंगो, इब कहां तेरो गोविन्द पावे ॥११॥
मोमें तोमें खड्ग खंभमें, सबमें वो दरशावे ।
थारो मार्यो कदे न मरस्यूं, मुझको क्या डरावे ॥१२॥
लेकर खड्ग खम्भको ताड़्यो, पत्थर में अरड़ावे ।
हो नरसिंह चीर हिरणाकुश, भक्त प्रह्लाद बचावे ॥१३॥
श्री भागवत स्कंध सातवें ऐसी कथा सुणावे ।
काळूराम कहे सुण धन्ना हरिजन हरि गुण गावे ॥१४॥

धन्ना सोनी

६३६—भजन

बेगा मोरे आवणा श्री गणराज ॥टेक॥
रणत भँवरसे आवो बिनायक रिद्ध सिद्ध लैरां ल्यावणा ॥१॥
न्हाय धोय सिंहासन बैठ्या केसर तिलक लगावणा ॥२॥
धूप दीप नैवेद्य आरती मोदक भोग लगावणा ॥३॥
तानसेन गणपतने ध्यावे, मन वांछित फल पावणा ॥४॥

६३७—भजन

गजानन्द रिद्धदाता मेरा बेड़ा लगा जा पार ॥टेक॥
दुंद दुंदालो सुंड सुंडालो, मस्तक मोटा कान ।
पीली पीली पाग केसरिया तुरें तार हजार ॥१॥
रिद्ध सिद्ध थारे हाजर खड़ी देवा गुणांका भंडार ।
चार वेदां थारो गुण गावे, सुर नर पाई पार ॥२॥
तानसेन थारो गुण गावे, आदि देव अवतार ॥३॥

६३८—भजन

रमक झमक पग नेवर वाजे, गजानन्द नाचे ।।टेक।।

ठुमक ठुमक ठुम ठणा ठण ठण ठण ठण घुंघरिया वाजे ।
सिर सोनेको छत्र विराजे, शोभा अति गाजे ।।१।।
गल मोतियनकी माल विराजे, मोदकको खाजे ।
तानसेन गणपतिने ध्यावे, दुख दारिद्र भाजे ।।२।।

तानसेन

६३९—भजन

आज हरि आये विदुर घर पावणा ।।टेक।।

विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देखे शारंगपाणी ।
फूली अंग न मावे चिन्ता, भोजन कहा जिमावणा ।।१।।
केला भोल प्रेमसे लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख मांही, लागे परम सुहावणा ।।२।।
इतने मांहि विदुरजी आये, खारे खोटे वचन सुणाये ।
छिलका देत श्याम मुख मांही, कहां गंवाई भावना ।।३।।
केला विदुर लिये कर मांही, गिरी देत गिरिधर मुख मांही ।
कहै कृष्णजी सुनो विदुरजी, सो स्वाद नहीं आवणा ।।४।।
वासी कूसी रूखे सूखे, हम तो विदुरजी प्रेमके भूखे ।
"शम्भु" सखी धनि धनि विदुराणी हरिजन मान बधावणा ।।५।।

६४०—राग काफी

ये चला जाय जुग सारा, एक दिन हमें भी जाना है ।।टेक।।

सात द्वीप नवखण्ड वीचमें काल दिवाना है ।

इस पापी जीवको छिपनेका कहीं नहीं ठिकाना है ।।१।।
माता पिता मित्र सुत नारी मतलबका जमाना है ।
कर तन मनसे हरि भजन तुझे जो मुक्ति पाना है ।।२।।
चार जनों के बीच बैठकर दिल बहलाना है ।
आखिरको होना जुदा यार मिट्टी मिल जाना है ।।३।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी भरा खजाना है ।
शंभू सखीकी यही बीनती भरम गमाना है ।।४।।

शंभूदास शर्मा

६४१—राग सोरठ

ग्वालिया, तूं कांई जाने पीड़ पराई ।।टेक।।
बैठ कदम पर बंशी बजाई, सब गउवन घिर आई ।।१।।
हाथ लकुटिया कांधे कमलिया, बन बन धेनु चराई ।।२।।
छीन छीन दधि खायो सबको, बृजकी नार चुराई ।।३।।
सवाई माधोसिंहजीरा प्रतापसिंह, जिन या सोरठ गाई ।।४।।

६४२—भजन

माधो म्हाने किया क्यूंनी बृजका मोर ।।टेक।।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बिच बिच करत किलोल ।।१।।
मात जसोदा चून चुगाती, भर भर कनक कटोर ।।२।।
माधोसिंहका सुत प्रतापसिंह, अर्ज करे कर जोड़ ।।३।।

महाराजा प्रतापसिंह

६४३—भजन

वासुदेवके ईशपनेमें तनिक न मन सन्देह रह्यो ।।टेक।।
धन्य धन्य अर्जुन बड़भागी जाने नैनन दरस लह्यो ।
जापे करुणा करि करुणानिधि, गीताको उपदेश कह्यो ।।१।।
मोह समंदमें डूबत लखिकै अरजुनको कर मांहि गह्यो ।
'अजित' ताहि उपदेश सुनत ही, भेद भरमको शिखर ढह्यो ।।२।।

महाराजा अजीतसिंह

६४४—लावणी द्रौपदीकी

(रंगत ज्यानकी)

शैर—हे मुरारी दुष्ट ख्यारी हूं दुखी करतार मैं ।
पातमें तुही फुलमें तुही पेड़में तुहि डार मैं ।।
दाव वैरीका पड़ा या नाव है मँझधार में ।
त्यार खेवा होयके नहिं सार है अब वार में ।।
टेक—सत्युगमें हिरणाकस राक्षस गरवाया ।
प्रह्लाद भक्तके काज सिंह बण ध्याया ।।
महाराज दया वैसे हि धारो जी ।
हे गिरिधर सिरताज आज मेरि लाज उबारोजी ।।
सत्युगमें तारा नारी तुमको ध्याया ।
रविदास भंवरको तुमही फेर जिवाया ।।
महाराज भूप हरिचन्दका सतके काज ।
खम्भ मांय सैं प्रगट राख लइ तारादेकी लाज ।।
त्रेतामें तिरिया हेतु लंक थे हि जारी ।

जनक सुताकी जाकर विघ्न निवारी ॥
महाराज बाँधकर सागर ऊपर पाज ।
भिन्न भिन्न कर जोर कहूं प्रभु वो दिन म्हामें आज ॥
शैर—जान वाली वनचरांकी पलक भरमें मार दी ।
सुग्रीवकी रक्षा करी और सर्व विघ्न विडार दी ॥
गौतम ऋषि निज प्राण प्यारी शाप दे दुदकार दी ।
शरण लीन्याँ चरण रख कर ताहि को तुम त्यार दी ॥
गौतम ऋषिकी तिरिया त्यारी । लंक विभीषणको दे डारी ॥
कबलग बरणूं कीरति थारी । वैसे हि जानो पीर हमारी ॥
पीर हमारी गिरिधर वैसे हि जानो ।
मेरी एक बेरकी कही लाख वर मानो ॥
महाराज लियो मैं शरणो थारोजी ॥ हे गिरि० ॥१॥
चौपाई—गजसे भिड़ गयो ग्राह जभी गज हारयो ।
अर्ध शब्द रारा कर रंक पुकारयो ॥
महाराज गरुड़ तज पैदल धायाजी ।
कर दीन्या आनन्द फन्दकूं काट वगायाजी ॥
मघवा कीन्यो कोप ब्रज पै भारी ।
आ बरस्यो मूसलधार घटा सजकारी ॥
महाराज पहाड़ थे नख पर ठायाजी ।
ब्रजको नाथ उवार आप ब्रजराज कहायाजी ॥
शैर—बाल लीला बीचमें थे हि पूतना संहार दी ।
प्रेम कर चन्दन चढ़ाया, कूबरीकूं त्यार दी ॥

कंस और चाणूरकी तुम जान पलमें मारदी ।
वैसे हि आवो वेग आवो मने ख्यारे यो पारदी ॥
वेगा आकर कारज सारो । वृथा विलम्ब काहेको धारो ॥
मैं अब लीनो शरणो थारो । नातर लजसी विड़द तिहारो ॥
नहिं आवो तो विड़द श्याम लाजैगो । मेरे ऊपर असुर कोप गाजैगो ॥
महाराज आप विन और न सहारोजी ॥ हे गिरि० ॥२॥
चौपाई—भीषम कर्ण द्रोण हुये मतिहारी ।
चित्र लिखे से भये अकल गई मारी ॥
महाराज असुरको कोइयन वरजै आय ।
रुखी दृष्टि पड़ी मैं देखौं दुख कहुं किणने जाय॥
विदुर भक्त अश्वत्थामा कछू न बोलै ।
आँ लई समाधि लाय पलक नहिं खोलै ॥
महाराज सकलको लिया तूणी दवाय ।
पाँचो पती हमारे वैठे नीचा शीश झुकाय ॥
शैर—सकल जन मौनी भये क्यों या अन्देशा आवता ।
चित्राम केसे लिखे वैठे नां कोई वतियावता ॥
क्या भई लीला हरीकी पार परत न पावता ।
या सभाके बीचमें सहायक नहीं दरशावता ॥
सहाय करन कोई नांय हमारा । नाथ पुकारूं मैं वारंवारा ॥
वचन बोल रह्यो पापी खारा । मोय भरोसा गिरिधर थारा ॥
हे गिरिधर हे माधव कुंज विहारी । हे दामोदर देव कृष्ण वनवारी ॥
महाराज सितावी विघ्न निवारोजी ॥ हे गिरि० ॥३॥

चौपाई—असुर कोप कर चीर उतारण आयो।
गिरिधर कर दियो अनन्त पार नहिं पायो ॥
महाराज दुशासन खींच खींच गयो हार।
भयो पहाड़ सम ढेर चीर वढ़ धन हो कृष्णमुरार ॥
चण्डाल चौकड़ी इकदम सैं थरराई।
कर देवैगी भसम द्रुपदकी जाई ॥
महाराज भूप धृतराष्ट्र होय लाचार।
मनै कही तकसीर माफ कर तूं पतिवरता नार ॥
शैर—गुरु हरिदत्तरायजी मोय ज्ञान दे किरपा करी।
घनश्यामजूकी म्हेर सेती कामना मनकी सरी ॥
श्योबक्स जी सिखलाय एलम तिमिरता पलमें हरी।
उसताद गोबिंदरामसे या रीति छंदनकी धरी ॥
गुरू सेवकर एलम ल्यावै। कविता सुन कोई नांय सिहावै ॥
गुरु विना ज्ञान नहिं पूरण किसको आता।
कवि नानूलाल सची सची कथ गाता ॥
महाराज गुरु होय त्यारण वारोजी ॥ हे गिरि० ॥४॥

६४८—मरवणकी लावणी

(रंगत लंगड़ी)

शैर—ब्रह्मकी पृथ्वी रच्योड़ी, दैत्य ले गयो चोरकै।
असुर मारयो, धरा ल्याया, वरा वण खग ठौरकै ॥
गरुड़ तज कर नाथ तुम गज कूं उबारयो दौरकै ॥
वैसे हि जानो पीर मेरी मैं कहूं कर जोर कैं ॥

टेक—ज्यूं गिरिराज ध्यार लियो नख पर ज्यूं हिरदेमें धारोजी ॥
हे गिरधारी आज मेरी नाव डूबती त्यारोजी ॥
जलती अगनी देख अवा विच मंझारी सुत घबराया ।
तेरी रजासे पक्या बरतन, विच वें जीवत पाया ॥
प्रहलाद भगतके काज सिंह बण एक पलकमें तुम आया ।
असुर मार कर संतने राज तिलक थे बैठाया ॥
शैर—आपही होके प्रबल देव थे ग्यान माता कूं दिया ।
आपही बन पृथू नृपकूं नरकसे न्यारा किया ॥
ब्रह्माजी तणां वेद दैत्य च्यारूं चुरा लिया ।
आप हो हयग्रीव पहुंच्या प्राण पाजीका पिया ।
वेद ल्याय ब्रह्माने दीन्या, जिनसे ज्ञान उजारोजी ॥१॥
हरि बल वावन परशराम बण जग मांई जस थे लीनो ।
कछ मछ होय काम कीन्या सो प्रभु मैं सब चीनो ॥
हो रघुवीर मार लियो रावण राज विभीषणकूं दीनो ।
कृष्ण रूप धर कंस निरवंश कियो त्रिखवल भीनो ॥
शैर—क्या करूं तारीफ तुम तो बिड़द जीत्या है कई ।
वहोतसा थे मार राक्षस वड़ाई जगमें लई ॥
असुरनी विष लगा कुचकै कोप कै तुम पै गई ।
खैंच आँचल थे सिंघारर मुकत पदवी छा दई ॥
मैं बी ओट आपकी लीनी जीतो विड़द मत हारोजी ॥ २ ॥
गहरा जलमें कूद निरंजन नाग नाथ लीन्यो काली ।
नाग फनाली फनाली निरत कियो थे वनमाली ॥

भारतमें भरतूल करणै गजघंटा तोड़ र डाली ।
मेरा जिवकी सहाय कर वैसे ही बण कर वाली ।।
शैर— जलमें दिखा कर रूप तुमही अक्रूर को चिंता हरी ।
अवतार लख कर तात भ्रात हिय बिच धीरज धरी ।।
चन्दन लगायो कूबरी, जब नाथ तुम मनस्या भरी ।
दुदा सरीसी देहकूं कर नेह तुम सीधी करी ।।
वैसी ही पीर जान कर पिरभू मेरो जीव उबारोजी ।।३।।
मेरे गुरु बिवेकी पंडित हरिदत्तजी आनन्द कारी ।
गुण बतला कर खरी कहूं भरी गुरु मनसा म्हारी ।।
स्योबक्सराम मुरसद गुणसागर जाणत जिनकूं संसारी ।
गोबिन्दराम गुरु ज्ञान दिया भानु उगाया बनवारी ।।
शैर— गुरुकी सेवा करै सूं नांव चेला पावता ।
हुकम माफिक चलै तो गुण भी उसीकूं आवता ।।
सीख सुगरा अजब एलम सभामें अजमावता ।
लोग दीस्यावास सुण नुगरा निरलज्ज चक्रावता ।।
नानूलाल कहै ऐसे मारू विपता नाथ बिडारोजी ।।४।।

नानूलाल राणा

६४६—राग कालिंगड़ा

काया नगर गढ़ भारी ।
पांच तीनका कोट बना है पच्चीसों रखवारी ।।टेक।।
गगन भूमि बिच झण्डा रुपिया, डोर लगी इक सारी ।
अटपट रंग जानै कोई बिरला, सुरति शिखरमें धारी ।।१।।

मुक्ति द्वार पर मन है सिपाही, ले पाँचों हथियारी।
रैन दिवस अति चंचल गतिसे, समर करे अति भारी ॥२॥
शूरवीर आगे पग धरता, कायर परत पिछारी।
चतुर होय सो जीतै रणमें, हारे मूढ़ अनारी ॥३॥
बंक नाल पथ लोहा बजता, अष्ट पहर इक सारी।
गोला लागत, कोट भरमका, ढहत न लागे वारी ॥४॥
तन की चिन्ता तनिक न राखे, जीत चले रण भारी।
'अमृतनाथ' अमर गढ़ पावे, तुरिया सेज सँवारी ॥५॥

६४७—राग कालिंगड़ा

समता हृदयमें धरना।
रैन दिवस रम नाभि शिखर बीच, गुरुके वचनमें चलना ॥टेक॥
भूमि गगन विच थम्म रोप कर, अजपा जाप सुमरना।
चन्द्र सूर्यकी गम जहाँ नाहीं, सूरति शिखर में धरना ॥१॥
अल्पाहार विचार ब्रह्मका, मन चञ्चल वश करना।
मान, बड़ाई, लोभ, ईर्षा, काम, क्रोधसे टरना ॥२॥
एक आश विश्वास गुरुका जो चाहो भव तरना।
आप जगत में जगत आप में, लख द्विविधा को हरना ॥३॥
उरमनि ध्वनिमें रहना निशिदिन, ले सतगुरुका शरना।
'अमृत' सहज समाधी लागे, फिर नहीं होय उतरना ॥४॥

६४८—राग कालिंगड़ा

अलख लखै सोई शूरा।
जाग्रत, स्वप्न, सुषोपति तज कर, हो तुरिया में पूरा ॥टेक॥

षट् कमलको छेद युक्ति से, सुनता अनहद तूरा।
हो लवलीन अमी रस पीवै, कर द्विविधा को दूरा ॥१॥
निर्मल करणी, भव दुःख हरणी, समदर्शी सोई पूरा।
आवागमन मिटावे अपना, होय प्रेम चक्र पूरा ॥२॥
इड़ा पिंगला सम कर राखै, हो सुषमनके धूरा।
घाट त्रिवेणी वाट ब्रह्म की, लाभ करे पद रूरा ॥३॥
त्यागे भेद खेदको टालै, दूर करे मति कूरा।
जीवन मुक्ति लहै सोई अमृत पावत है निज नूरा ॥४॥

६४९—राग कालिंगड़ा

घटमें गंगा न्हाओ।
यामें नहाये पाप दूर हो, जनम मरण विनशाओ ॥टेक॥
दया तीर सन्तोष नीर है, तामें गोता लाओ।
काम, क्रोध मद मोह मैल को, धोकर दूर हटाओ ॥१॥
शिखर लोकसे अमृत टपके, गुरु सेवा ते पाओ।
रैन दिवस अविराम वेगसे, पीवत नाहिं थकाओ ॥२॥
अड़सठ तीरथ पार धाम सब, घट गंगा में पाओ।
हो तन्मय चढ़ नाव भक्ति की, अमर लोकको धाओ ॥३॥
नाभि शिखर बिच लहर उठत है तामें मनको लाओ।
'अमृत' गंग अथाह नीर है, घाट त्रिवेणी पाओ ॥४॥

६५०—भजन

सन्तो ऐसा लक्षण होय भक्तांका, सुनले ध्यान लगाई ॥टेक॥
नहीं कोई मित्र न शत्रु जगत में, ऊँच नीच कछु नाहीं ॥१॥

श्रवण पीवका दर्शन पिवका, पिवका कीर्त्तन गाई ।
स्मरण, ध्यान, वन्दन हो पिवकी, सेवा पिवकी पाई ॥२॥
पिवसे प्रेम सुरति हो पिवकी, दास भाव मन लाई ।
सत संगति साधुनकी सेवा, समता सत्य सुहाई ॥३॥
सुधि नहीं तनकी मन है विह्वल, नयन नासिका लाई ।
दृढ़ आशा विश्वास ईशका, विषयनमें चित नाहीं ॥४॥
गुरु के वचन पर हो श्रद्धा, मन चंचल घर आई ।
'अमृतनाथ' अटल ध्वनि लागे, आवागमन नशाई ॥५॥

६५१—राग प्रभाती

जिन खोजा तिन पाया है ॥टेक॥
कथनी कथ कथ लाखों मरिया, भेद न अपना पाया है ।
त्याग विषय सुख करणी करता, वह गुरुके मन भाया है ॥१॥
नाभि कमलसे चेतन होकर, मेरु दण्ड पथ धाया है ।
शून्य शिखरमें जाय वसा है, गुणातीत घर पाया है ॥२॥
प्राण वायुको खींच गगनमें, ध्यान उनमनी लाया है ।
दश प्रकारका नाद वजत है, होती निर्मल काया है ॥३॥
एक होय पिन्डा ब्रह्माण्डा, त्रिकुटी साज सजाया है ।
कोटि भानु सम भया उजाला, सूरज चन्द्र लजाया है ॥४॥
अटल समाधी लगी शिखरमें, भ्रमका भार हटाया है ।
तीन छोड़ चौथा पद पाया, आवागमन मिटाया है ॥५॥
'अमृतनाथ' अखण्ड रूपमें, जाय मिला सुख पाया है ।
वार न पार हद नहीं वे इव, पद निर्वाण सुनाया है ॥६॥

६५२—राग प्रभाती

गुरुकी प्रभुता भारी ।।टेक।।
महा स्वतन्त्र परम उपकारी, तम अज्ञान विडारी।
भव भय नाशक सत्य प्रकाशक, काम क्रोध भय टारी ।। १ ।।
मुनि मन रंजन खल दल गंजन, भक्तनके हितकारी।
मोह हरण प्रणतारत भंजन, सत् स्वरूप सुखकारी ।। २ ।।
तीन कालकी गतिको जानत, नाशत अघ अतिभारी।
अन्तरयामी पूर्ण अकामी, शरणागत दुःखहारी ।। ३ ।।
सत् चित् आनन्द रूप गुरुका, गुणातीत गुणधारी।
'अमृतनाथ' अमर पद पावें, धावें ब्रह्म अटारी ।। ४ ।।

६५३—राग प्रभाती

पिवसे डोर लगाओ ।।टेक।।
जन्म मरण दुःख मेटन चाहो, तो समता चित लाओ।
काम क्रोध मद मोह हटाकर, सत् सन्तोष जगाओ ।। १ ।।
प्रेम मांहि तन्मय हो ऐसे, तनकी सुरति भुलाओ।
गद् गद् रहो मौन व्रत धारो, दृढ़ कर आसन लाओ ।। २ ।।
अजपा जाप जपत रहो निशदिन, सुखमन तकिया पाओ।
आवन जाय वने नहीं विगड़े, भ्रमका भार हटाओ ।। ३ ।।
घाट त्रिवेणी पीव मिलेंगे, रूपमें रूप समाओ।
'अमृत' निर्भय शून्य शिखरमें परम हंस पद पाओ ।। ४ ।।

६५४—राग प्रभाती

सत संगति बल भारी ॥टेक॥

लख पावै निज रूप तुरत ही, त्रैगुण फांस निवारी ।
कीट बनै संगतिसे भंवरा, अपना रूप विसारी ॥ १ ॥
चन्दन संग होय नीम सुगन्धित, अपनी गन्ध निवारी ।
सज्जन साथ नीच हो सज्जन, निज दुर्गतिको टारी ॥ २ ॥
पारस संग स्वर्ण होय लोहा, मिलै प्रतिष्ठा भारी ।
तिलको साथ मिलै गन्धीका, लहै सुगन्ध सुप्यारी ॥ ३ ॥
एक और सुख स्वर्ग मोक्षका, सत् संगति एक पारी ।
धर तोलो नहीं होय बराबर, 'अमृत' सत्य विचारी ॥ ४ ॥

६५५—राग प्रभाती

सन्तो ऐसा भेद बताया ।
कृपा भई जब गुरु अपनेकी, भ्रमका भार हटाया ॥टेक॥
सैन करी सतगुरु निर्वाणी, सतकी नाव चढ़ाया ।
जन्म जन्मका कर्म काट दिया, निर्मल कर दी काया ॥ १ ॥
ज्ञान ध्वजा घट भीतर रुप गई, घाट त्रिवेणी न्हाया ।
अगम देश बेगम नगरीमें, अलख पुरुष दर्साया ॥ २ ॥
ऐसा घर सतगुरु दिखलाया, जो विरले लख पाया ।
ज्ञानी ध्यानी थक कर बैठे, खोजी खोज लगाया ॥ ३ ॥
पांचों चोर बसै घट भीतर, हाथ पांव नही काया ।
गुरुवर ने पहिचान बताई, उनको मार भगाया ॥ ४ ॥

जन्म मरणकी त्रास न व्यापै, मन चंचल घर आया।
'अमृतनाथ' अगम गम पाई, वज्र कपाट हटाया॥ ५॥

६५६—राग प्रभाती

सन्तो ऐसा योग बताया।
भ्रमका भेद हटाय हृदयसे, निर्मल ज्ञान सिखाया॥टेक॥
त्रिगुण रहित निर्वाणी पदका, निश्चल ध्यान बताया।
पाँच पचीसों मार हटावो, आवागमन नशाया॥ १॥
ज्ञान ध्यानकी गम जहाँ नाहीं, ना तीरथ मग धाया।
जप तप, योग, भोग कछु नाहीं, ऐसा नगर दिखाया॥ २॥
सोऽहं शब्द जगा घट भीतर, नाभि कमल सरसाया।
बंक नालकी राह पकड़ कर, अमर नगरको धाया॥ ३॥
'अमृत' अपना रूप जानिया, भ्रमका भार हटाया।
सिंह गरजना होत शिखरमें, गुञ्जत सारी काया॥ ४॥

६५७—राग प्रभाती

सन्तो रे शूरवीरता धारो।
जब तक प्राण रहै कायामें, कायरता न विचारो॥टेक॥
सत्‌का सांग उठाय हाथमें, तप तलवार सम्हारो।
शील क्षमाकी ढाल लेयकर, रण थलमें हूंकारो॥ १॥
काम क्रोधसे प्रबल रिपुनको, हो सम्मुख ललकारो।
रैन दिवस जब लोहा बाजै, काँपे मन मतवारो॥ २॥
पीछे पैर धरो नहीं कबहूं, आगेकी चित धारो।
शीश दिये सौदा बन जावे, गुरु चरणन पर वारो॥ ३॥

ध्वजा लगाओ अमर दुर्ग पर, होवे सफल जमारो ।
'अमृतनाथ' अमरपद वासी, आवागमन निवारो ॥ ४ ॥

६५८—राग आसावरी

हरिको जिन खोजा तिन पाया ।
जो प्रमाद वश रमा विषयमें, उसने गोता खाया ॥टेक॥
क्या हो सागर तट जा बैठे, जब गोता नहिं लाया ।
समय गया मोती नहीं पाया, हाथ मले पछताया ॥ १ ॥
पढ़-पढ़ विद्या पण्डित हो गये, अरु उपदेश सुनाया ।
नित भ्रम नहिं मिटाया जिसने, तो क्या लाभ उठाया ॥२ ॥
बैठ कंदूरा धूणी लगाई, कष्ट दिया तन ताया ।
फिर यदि मनका वेग न रोका, कैसे सन्त कहाया ॥ ३ ॥
समता बिन ममता नहीं हटती, निर्मल हो नहीं काया ।
'अमृत' सहज समाधी लागी, शून्य शिखरको धाया ॥ ४ ॥

६५९—राग आसावरी सोरठा

सन्तो भक्ति अमोलक पाओ ।
भक्त बनो भाई जन्म सुधारो, भवकी तप्त बुझाओ ॥ टेक ॥
भक्त बने भव भय टल जावे, निर्मल गतिको पाओ ।
भ्रमका भार हटे सुख होवे, अनघड़ रूप बनाओ ॥ १ ॥
चारों ओर पिया जब दरशे, ब्रह्म अनल चेताओ ।
हो चैतन्य प्रेम रस चाखो, स्वाद सुधाका पाओ ॥ २ ॥
वाद विवाद मिटे सब मनसे, मैं तूं, दूर हटाओ ।
रैन दिवस पिव चरणन लिपटो, दुविधा दूर भगाओ ॥ ३ ॥

तन मन कर्म निछावर करदो, अपना पीव रिझाओ।
हट जाय भाव द्वैतका मनसे, ब्रह्म सकलमें पाओ ॥ ४ ॥
नख-शिख सुन्दर रूप बना कर, पिवके दर्शन पाओ।
'अमृत' पीव रिझेगा तब ही, दुर्मति दूर हटाओ ॥ ५ ॥

६६०—राग आसावरी

मन तूं त्याग जगतका लटका ॥
गुरुके बचनको मान मेरा भँवरा, हट जाय यमका खटका ॥ टेक ॥
ममता त्याग धार दृढ़ समता, परदा हटादे घटका।
विरही बेष बनाय तुरत ही, रूप त्याग दे नटका ॥ १ ॥
तज अभिमान भजन कर हरिका, मिट जाय भवका भटका।
मनको मार सुधार बचनको, इन्द्रिनका तज चटका ॥ २ ॥
जब तक श्वास रहे कायामें, पिव प्रेमीका लटका।
मान, बड़ाई, त्याग, करो नित, बास त्रिवेणी तटका ॥ ३ ॥
निश्चय होय बासना छूटै, भेद मिटै घट-पटका।
'अमृत' अपना रूप लखे तब, अमृत जैसा गटका ॥ ४ ॥

६६१—राग आसावरी

भजन बिन जाती आयु तिहारी।
स्वास अमूल्य पदार्थ व्यर्थ ही, खोता मूढ़ अनारी ॥ टेक ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, प्रबल अति राग द्वेष उर गारी।
इर्षा, कपट, दम्भ, लौलुपता, इनको छोड़ गँवारी ॥ १ ॥
मात, पिता, भ्राता, सुत, वनिता, आदि कुटुम्ब परिवारी।
स्वारथ हेतु करे हित तुझसे, भागें देख दुखारी ॥ २ ॥

तातें चेत हेत कर हरिसे, कहता तोहि चितारी ।
आवागमन छूट जाय तेरा, होकर रहे सुखारी ॥ ३ ॥
'अमृतनाथ' अविद्या नाशे, भवसे पार उतारी ।
हो चैतन्य भजन कर अपना, से निज रूप निहारी ॥ ४ ॥

६६२—राग आसावरी

अवधू तनका गर्व हटाना ।
विनशत जाके वार न लागे, इसका मोह मिटाना ॥ टेक ॥
मुखमें मैल नयनमें मल है, कर्ण भरा मल जाना ।
भरा नासिका भीतर मल है, फिर भी है अभिमाना ॥ १ ॥
उदर भरा मल, नस नस मल है, तनिया मलका ताना ।
निकसत मल हो जाय शिथिल तन, क्या बनता मस्ताना ॥२॥
रचना मलसे चलता मलसे, याको कहा गुमाना ।
अस्थि चर्म, मेदा अरु लोहू नख शिख भरा खजाना ॥ ३ ॥
मलका कोट बना चहुं दिशि है, तामें राजत प्राना ।
"अमृत" अचरज कारीगर का, तामें उपजत ज्ञाना ॥ ४ ॥

६६३—भजन

सजनी घटमें खोज लगाय, तबहि पिव प्यारा पावे ॥ टेक ॥
मूल कमल चेताय, उलट घर नाभी आवे ।
पश्चिम दिशिको धाय, बंकके अंक समावे ॥ १ ॥
शून्य महलके मांहि, अनोखी ज्योति लखावे ।
बारह मास बसंत, सदा अमृत झर लावे ॥ २ ॥

जगमग जगमग होत, लखै सो कहन न पावे ।
है अमृतका ताल, हँस सतगुरु गुण गावे ॥ ३ ॥
सुखमन सेज बिछाय, अगम धुनि मांहि समावे ।
तुरिया साक्षी रूप, द्वैतका भेद भुलावे ॥ ४ ॥
जग स्वपना हो जाय, आपमें आप मिलावे ।
'अमृत' का रूप अखण्ड, संत कोइ विरला पावे ॥ ५ ॥

६६४—भजन

साधो भाई सन्त वही है पूरा ॥ टेक ॥
हिंसा करे न परधन छीने, पुण्य करे भरपूरा ।
पर निंदामें मन नहिं देवे, रहे प्रेम चकचूरा ॥ १ ॥
नारी नेह तनिक नहिं राखे, ब्रह्मचर्य राखे पूरा ।
धनकी तृष्णा मन नहिं व्यापै, सो है साधू शूरा ॥ २ ॥
राग द्वेषका भाव न राखे, समतासे भरपूरा ।
गुरुका भक्त, जगत शुभचिंतक, सत् शिक्षाके धूरा ॥ ३ ॥
सत्भाषण अरु दृढ़ कर आसन, विश्वासी हो पूरा ।
"अमृतनाथ" साथ सोऽहंका, सो पावे निज नूरा ॥ ४ ॥

६६५—राग सोरठ विहाग

तोहि सत्गुरु समझावे रे, अवधू समझ देख मनमांही ॥ टेक ॥
तृष्णा सम व्याधी नहिं कोई, धर्म दया सम नाहीं ।
नारी समान न बँधन जगमें, तीन लोकके मांहीं ॥ १ ॥
क्षमा समान न और तपस्या, सत् सा साथी नाहीं ।
प्रेम महाभय जान जगतमें, तोहिं कहूं समझाहीं ॥ २ ॥

वाजीगर सम जान द्रव्यको, वन्दर सम नचवाहीं ।
क्रोध भयानक शत्रु करत है, नाश समयको पाहीं ॥ ३ ॥
सतगुरु से दाता नहीं कोई, संगति लाभ सुझाहीं ।
चेतन हो 'अमृत' को पाओ, इसमें संशय नाहीं ॥ ४ ॥

६६६—भजन

प्राणी क्या सुख निद्रा आवे ॥ टेक ॥
घटते श्वास क्षीण हो काया, डंका काल वजावे ।
झपटे वाज काल एक पलमें, फिर तोहि कूण वचावे ॥ १ ॥
वालापण खेलनमें खोया, युवा विषयको चावे ।
वृद्ध भये शिथिलाई आई, तव माया मुरझावे ॥ २ ॥
पैना वाण कालका लागे, दशों द्वार रुकजावे ।
हो अधीर तव रोवे वहुविधि, सिसक सिसक दुख पावे ॥ ३ ॥
वीते रात प्रभात होत है 'अमृत' वेला जावे ।
हो चैतन्य भजन कर अपना, समय चूक पछतावे ॥ ४ ॥

६६७—वारामासियो

(उपदेशको)

अवधू काल ज्वालकी त्रास, गुरु विन कौन मिटावे रे ॥ टेक ॥
चैत्र चतुर चैतन्य हो, चलो गुरुके पास ।
तन मन धन अर्पण करो, होय चरणका दास ॥
मान मनका मिट जावे रे ॥ १ ॥
लगत मास वैशाखके, निर्मल होय विवेक ।
गुरु शिक्षाको हृदय धर, पकड़ सत्यकी टेक ॥

भक्तिका रङ्ग जमावे रे ॥ २ ॥

जेठ जगतके विषयसे, पावे चित्त उपराम ।
जा बैठे एकान्तमें रे, तज धन, दारा, धाम ॥
नहीं मनको कुछ भावे रे ॥ ३ ॥

आशा लगे आषाढ़में, आवे चित्त सन्तोष ।
लहर उठे जब प्रेमकी, हटे हृदयका दोष ॥
बुद्धि मनसे मिल जावेरे ॥ ४ ॥

श्रावण मन आवन लगे, करूं योगिया वेष ।
भस्म रमाऊँ अंगमें, शीश बढ़ाऊँ केश ॥
चैन दिन रैन न आवे रे ॥ ५ ॥

प्रेम घटा भादों चढ़ी, गरजत है घनघोर ।
पिहू पिहू प्रिय शब्दको, चहुं दिशि बोलत मोर ॥
हृदयमें हूक न मावे रे ॥ ६ ॥

पका भक्तिका खेत है, आया आश्विन मास ।
सन्देशा ऐसा मिल्या, धारले दृढ़ विश्वास ॥
चित्तमें मत घबरावे रे ॥ ७ ॥

कातिकमें गुरुदेवकी, कृपा हुई भरपूर ।
पश्चिम पथ समझा दिया, सुनिया अनहद तूर ॥
शिखरकी ओर सिधावेरे ॥ ८ ॥

अगहन थम्भ रुपाइया, भूमि गगनके बीच ।
तापर चढ़ हँसने लगे अब नहीं व्यापै मीच ॥
रैन दिन मोय मनावेरे ॥ ९ ॥

पौष, कोप विज्ञानका, खुला शिखरके मांहि।
परम पिता गुरुदेवके, चरणनमें वलि जाहिं॥
शिखर गढ़ आसन पावे रे॥ १०॥
ऋतु वसन्त है मावमें, हिल मिल खेल वसन्त।
पांच पचीसों मिल गई, रूप वनाया संत॥
नहीं इत उत भरमावे रे॥ ११॥
फागुन सुषमन सेजमें, भ्रमर गुफाके मांहि।
तुरिया रूप अनूप है, मन वाणी थक जाहिं॥
दृश्य द्रष्टा नश जावे रे॥ १२॥
मैं ही मेरे रूपको, देखत हूं चहुं ओर।
"अमृत" पद निर्द्वन्द है, नहीं ओर नहिं छोर॥
भेद विरला लख पावे रे॥ १३॥

६६८—राग सोरठ मल्हार

अवधू नश्वर है यह काया॥टेक॥
हाड़ मांसका वणा पींजरा, तापे रंग चढ़ाया।
विनशत वार नेक नहीं लागे, तू जिस पर गरवाया॥१॥
इस पिंजरेके दश दरवाजे, सुंदर सुवड़ बनाया।
भीतर मल भंडार भरा है, देखत मन मिचलाया॥२॥
लगा उबटना मल मल न्हाया, सुन्दर वस्त्र सजाया।
दर्पण देख मोदमें भरिया, वहुत घणा इतराया॥३॥
क्षण में रूप बिगड़ जाय सारा, वृथा फिरे भरमाया।
'अमृत' रूप लखे विन, भोले, शांति कबहु नहिं पाया॥४॥

६६९—राग सोरठ मल्हार

क्या सुख सोता है रे प्राणी ॥टेक॥
सोवत सोवन समय खो दिया, नेक न चिंता आनी।
बीते श्वास काल जब आवे, तब न चले मनमानी ॥१॥
अपने शुद्ध रूपको भूला, होय रहा अज्ञानी।
हो प्रमाद वश रमे विषयमें, हृदय अविद्या आनी ॥२॥
समझत है मैं बड़ा होत हूं, घटत आयु दिन जानी।
बीते रैन बिहान होत है, चिड़ियां खेत चुगानी ॥३॥
ताते चेत हेत कर शीघ्रहि, गुरु चरण लपटानी।
निर्भय हो 'अमृत' जब पावे, ध्यान गगन में लानी ॥४॥

६७०—होली राग काफी

सत्गुरु होरी खिलाई, पीर भवसिंधु मिटाई ॥टेक॥
ज्ञान गुलाल की भर कर झोली, मम मुख पर लपटाई।
दूर भया माया तम सारा, अवगुण धोय बगाई ॥
ज्ञानका भानु उगाई ॥१॥
अचल ध्यान की घोल कुमकुमा, शील संतोष मिलाई।
सम, दम, नियम, अचार युक्ति सब, दया धर्म मन भाई ॥
कुटिलता दूर भगाई ॥२॥
योग, दान, तप, यज्ञ आदिका, लीना सार कढ़ाई।
वैरागादि भये सब दृढ़ अति, पद निर्वाण सुहाई ॥
जाप अजपा अपनाई ॥३॥
नवधा भक्ति चढ़ाय यन्त्र पर, ज्ञानकी अग्नि जलाई।

तामें सार प्रेम को पाया, कहते हरिजन गाई ॥
वात साधुनको भाई ॥४॥
अचल अनूठे मिले खिलैया, चम्पानाथ गुंसाई ।
'अमृत' कलेश हरे सव भवके, फाग जीत घर आई ॥
सुनो साधो मन भाई ॥५॥

६७१—होली राग काफी

अवधू ऐसा फाग रचाया, अनूठा रंग दिखाया ॥टेक॥
इतसे दश इन्द्रिय वलकारी, अपना झुण्ड वनाया ।
काम, क्रोध की कुमकुम घोरी, तृष्णा नीर भराया ॥
तान अज्ञान चलाया ॥१॥
उतसे सम, दम, नियम, अचारा, ज्ञानका रंग घुलाया ।
दृढ़ आसन कर लई पिचकारी, तानके मार भगाया ॥
शील सन्तोष जगाया ॥२॥
दंभ मोहने निश्चय कर तव, व्यसन अवीर घुलाया ।
तामस आदि लई पिचकारी, आशा हाथ चलाया ॥
भोग का ताल भराया ॥३॥
शब्द को नीर भराय सत्यने, सत्संगति रंग पाया ।
ज्ञान ध्यान की भर पिचकारी, सवको मार भगाया ॥
अटल होकर सुख पाया ॥४॥
सत्गुरु 'चम्पानाथ' मिले तव, प्रेम रंग वर पाया ।
'अमृत' घरमें फाग खेल कर, अभय होय सुख पाया ॥
दुःखको दूर भगाया ॥५॥

६७२—राग मंगल

क्रोध पापका मूल, कबहुं नहिं कीजिये।
शांति हृदयमें धार, सुधा रस पीजिये ॥१॥
मोह शत्रु को मार, सदा निर्मोह हो।
कर संतन का संग, राम की खोज हो ॥२॥
दम्भ भावका त्याग शान्ति का मूल है।
दूर करो अभिमान, मिटै यमशूल है ॥३॥
लोभ वृत्ति दुःख रूप, सदा निर्लोभ हो।
रहै सदा एकान्त, कबहुं नहिं क्षोभ हो ॥४॥
काम कला का भाव कभी नहिं धारिये।
वनिता चित्त न लाय, कामको मारिये ॥५॥
अहं भाव चित्त माहिं, कभी नहिं धारणा।
अहंकार को योग, युक्तिसे मारणा ॥६॥
धारो सत् सन्तोष, नम्र होय चालणा।
सत्गुरु आज्ञा सत्य, हृदयसे पालणा ॥७॥
कर आलसको दूर, काम निज कीजिये।
सदा होय लवलीन, आत्म रस पीजिये ॥८॥
सत्गुरु "चम्पानाथ" दिया मोहि ज्ञान है।
"अमृतनाथ" विचार, श्वासका ध्यान है ॥९॥

६७३—राग पार

क्यों भटका फिरै अनारी, क्या संग चलेगा तेरे ॥टेक॥
तूं धनके लालचमें फिरता, पाप कर्म करता नहीं डरता।

कभी ध्यान प्रभु का नहिं धरता, मोह जालके घेरे ॥१॥
विद्या बलका है अभिमाना, अहंकार का ताना ताना।
तिय तृष्णाके मोह फंसाना, फिरता दोरे दोरे ॥२॥
ऊँचे भवन बना गरवाया, तामें बैठ बहुत हरखाया।
सत्पुरुषों का संग न भाया, तो हि अज्ञान अंधेरे ॥३॥
दया दीन पर करता नाहीं, दंभ भरा है चित्तके मांही।
"अमृत" रह चैतन्य सदा ही, क्या दूरे क्या नेरे ॥४॥

६७४—राग पार

घट मांही बोलै राम है, क्या बाहर भटका डोलै ॥टेक॥
जा चाहे मक्का और काशी, खाक रमा चाहे होय उदासी।
ऐसे नहीं मिटै यम फांसी, यदि घर नाहिं टटोलै ॥१॥
यज्ञ करो चाहे व्रत पालो, लाख बार गंगा में न्हालो।
औंधे शिर हो झूला डालो, रसमें मिट्टी घोलै ॥२॥
ज्ञान सुणो चाहे ध्यान लगाओ, देवी पूजो देव मनावो।
अंतर दृष्टि का नहिं लाओ, पिव क्या परदा खोलै ॥३॥
नम्र होय कर शब्द विचारो सोऽहं सोऽहं ओर निहारो।
"अमृत" कथन नासिका धारो, भेद अगम का खोलै ॥४॥

६७५—राग पार

विश्वास नहीं एक श्वासका, क्या मेरा और तुम्हारा ॥टेक॥
यह किया अब उसे करूंगा, इधरसे लाया उधर धरूंगा।
इससे लूंगा उसको दूंगा, क्षण भंगुर है सारा ॥१॥

अहंकार वश भ्रमके मांही, करता मेरा मेरा सदाही।
काल संग जैसे परछाहीं, लाखों शूर पछारा ॥ २ ॥
तूने समझा मैं करता हूं, मैं देता और मैं धरता हूं।
मैं दीनोंका दुःख हरता हूं, पशु मति ली मति मारा ॥ ३ ॥
सांझ सबेरे यों भरमाया, रैन मांहि घर पर फिर आया।
नारी कुटुम्ब संग मन भाया, झूठा सकल पसारा ॥ ४ ॥
जन्म मरणका संशय भारी, व्यर्थ आयु खोई है सारी।
'अमृतनाथ' सर्व हितकारी, चरणनका आधारा ॥ ५ ॥

६७६—राग सोरठ विहाग

तृष्णा डाकिनी रे अवधू खाया सब संसार।
बचते बिरले सन्त हैं रे, गुरु शिक्षा शिर धार ॥ १ ॥
दिन दिन बढ़ती जात है रे, जैसे पृथ्वी ऊपर भार।
एक होय तो सौ चहे रे, सौ पर चाहे हजार ॥ २ ॥
ऐसा पेट अथाह है रे, सन्तो जिसका वार न पार।
देखनमें कुछ है नहीं रे, पैदा होती हृदय मंझार ॥ ३ ॥
बना शस्त्र सन्तोषका रे, अवधू इसको लेना मार।
तबही 'अमृत' पायगा रे, मानव जीवनका सतसार ॥ ४ ॥

६७७—राग सोरठ मल्हार

ऐसा हो सो सद् गति पावे ॥ टेक ॥
सत् भाषण अरु दृढ़ कर आसन, तृष्णा दूर हटावे।
गुरु की भक्ति, चलन युक्तीका, प्रेमपन्थको धावे ॥ १ ॥

मान, वड़ाई, निन्दा त्यागे, राग द्वेष विसरावे ।
काम, क्रोध, मद प्रबल भूत है, इनकी चोट न खावे ॥२॥
ब्रह्मचर्य व्रत निशि दिन पाले, नारी नेह न लावे ।
हो निर्मोह रमे निर्जन में, स्वाद कबहुं नहिं चावे ॥३॥
नाभि शिखर बीच डाल हिंडोला, निर्भय झोटा खावे ।
अमर होय 'अमृत' पद पावे, सुरति ठिकाने आवे ॥४॥

महात्मा अमृतनाथ

६७८—भजन

भजले मन राम नाम, जनम क्यों गमावे ॥टेक॥
विषयममें रहा झूल, चेतनको गया भूल ।
मनमें तूं रहा फूल, मृत्यु निकट आवे ॥१॥
जग प्रपंच झूठ जान, करले आतम निदान ।
नश्वर शरीर मान, हो हो मिट जावे ॥२॥
सजले यम नियम साज, जाकर सज्जन समाज ।
विषयनसे हो अकाज, सत गति तब पावे ॥३॥
'अमृत' जब मिले तोय, अक्षय अरु अभय होय ।
'शंकर' आनन्द सोय, हरिके गुण गावे ॥४॥

६७९—राग कालिंगड़ा

मन तूं राम नाम नहिं लीना ।
मानव.तन झूठे कारण में, मूरख व्यर्थ खो दीना ॥टेक॥
काम क्रोध मद सुखमय समझे, हरिसे नेह न कीना ।

मात पिताके मोहमें रम कर, सुखमें रह्यो प्रवीना ॥१॥
धन संचयको मुख्य मान कर, बहु अनर्थ किये हीना ।
बीते स्वास मृत्यु जब आई, सब विधि भयो अधीना ॥२॥
अजहुं चेत समझ नर भोंदू, जा गुरु शरण हो दीना ।
'अमृत' दया करें जब मिलि हैं, 'शंकर चरण प्रवीणा ॥३॥

६८०—गजल

घटा शिर कालकी गाजे, तुझे क्या नींद आती है ।
विषयके स्वादमें यों ही, तेरी सब आयु जाती है ॥१॥
कनक अरु कामिनी मिल कर, प्रबल सेना सजाई है ।
उठाले शस्त्र शम दमका, विजय जो तुझको भाती है ॥२॥
हृदय में दीनता धरके, अहंवृत्ती को वश करके ।
हटादे द्वेष मनसे, जो तुझे शिक्षा सुहाती है ॥३॥
परम पावन चरण गुरुके, शरण जा नम्र हो करके ।
सदा जप जाप अजपाको, यही ध्वनि रंग राती है ॥४॥
अभय पद पायगा तब ही, समाधी सहज जब लागे ।
भृकुटि में प्राप्त कर अमृत, जो "शंकर" शांति भाती है ॥५॥

६८१—कव्वाली

मैं हूं अनाथ, स्वामी, बिगड़ी दशा सुधारो ।
विषयोंने आन घेरा, भगवन् मुझे निकारो ॥१॥
गणिका ओ गृद्ध तारे, प्रह्लादको उबारे ।
गजके लिये पधारे, मुझको भी पार तारो ॥२॥
द्रुपदी का चीर बाढ़ा, यमुनासे काली काढ़ा ।

मैं दीन, द्वार ठाढ़ा, बिनतीको श्रवण धारो ॥३॥
क्या सुख की नींद आई, या सुधि मेरी भुलाई ।
अब तक दया न आई, 'शंकर' मुझे उबारो ॥४॥

६८२—लावणी रंगत बड़ी

एक अलख सबमें व्यापक है, उसका ही सकल पसारा है ।
है गुप्त कहीं अरु प्रकट कहीं, है सबमें, सबसे न्यारा है ॥टेक॥
कहीं त्रिगुण उपासी बनता है, कहीं सदा उदासी रहता है ।
कहीं बनमें जाकर बसता है, कहीं ध्यान शिखरमें धरता है ॥
कहीं शीश मुण्डा, कहीं जटा बधा, कहीं अंग विभूति रमाता है ।
कहीं भिक्षा करके खाता है, कहीं अपने हाथ कमाता है ॥
है खट्टा मीठा कहीं, कहीं है तेज और कहीं खारा है ॥१॥
है बालक वृद्ध कहीं है युवा, कहीं नारि, पुरुष दरशाता है ।
है रंक कहीं धनवान, कहीं दाता है, कहीं पछताता है ॥
कहीं जल विन खेत जराता है, कहीं सुधा विंदु बरसाता है ।
कहीं दुखिया दुखको पाता है, कहीं मनमें अति हरखाता है ॥
है मध्यमें डुबकी खाता कहीं, है वार और कहीं पारा है ॥२॥
है मूर्ख कहीं विद्वान कहीं, अरु कहीं योग यज्ञ करता है ।
जप, तप, व्रत, तीरथ, दान मानसे पूर्व पापको हरता है ॥
कहीं वेद पढ़े कैलाश चढ़े, कहीं स्थिल है कहीं विचरता है ।
कहीं उच्चासन पर बैठ, व्यास शास्त्रोंके वचन उचरता है ॥
कहीं ध्यान धारणा में रत है, अरु कहीं ज्ञानकी धारा है ॥३॥
कहीं मात पिता कहीं भ्रात सखा, कही दारा सुतका रूप धरा ।

कहीं गुरु और है शिष्य कहीं, निज रूप कहीं अनुरूप भरा ॥
कहीं प्रेम और कहीं प्रेमी है, कहीं खोटा है अरु कहीं खरा ।
कहीं गगन, वायु बहती, जल है, अरु कहीं बनाया रूप धरा ॥
कहीं योग और कहीं योगी है, कहीं पंचतत्व से न्यारा है ॥४॥
कहीं नाभि कमलसे चेतन हो, जा शून्य शिखरमें वास किया ।
कहीं छहों कमल छेदन करके, अरु भ्रमर गुफाको पास किया ॥
कहीं दृढ़से कर हठयोग सिद्ध बन, अष्टसिद्धि विश्वास किया ।
कहीं उदासीनता धार लई, माया प्रपंचका नाश किया ॥
सत्गुरु अमृतनाथ कहीं बन, शंकर काज सुधारा है ॥५॥

६८३—राग सोरठ

मन तूं क्यों इतरावे रे ।
भजले हरिका नाम वृथा क्यों देर लगावे रे ॥टेक॥
गर्भवासमें बचन दिया सो, मत विसरावे रे ।
भजले दीन दयाल वृत्तिको काहे डुलावे रे ॥१॥
मात, पिता, सुत, भ्राता, नारी कुटुंब बनावे रे ।
निकट न आवे कोय, आन जब काल दबावे रे ॥२॥
जन्म मरण दुःख जठर अग्निका, ना छुट पावे रे ।
जब तक प्रभुके नामसे, निश्चय नहीं आवे रे ॥३॥
गुरु चरणन में ध्यान कोई, कर प्रेम लगावे रे ।
उसकी नौका गुरु आप ही पार लगावे रे ॥४॥
सत् संगति निज साधन, 'अमृतनाथ' बतावे रे ।
'शङ्कर' घटकी ओट में, निर्भय पद पावे रे ॥५॥

६८४—राग काफी फाग

सतगुरु पार उतारो, मेरे पापन को जारो ॥टेक॥

यद्यपि कृतघ्न नाथ मैं सब विधि तद्यपि दास तुम्हारो ।
अवगुण तनिक गिनों ना स्वामी, गुण की ओर निहारो ॥
दास पर दया विचारो ॥१॥

त्रिविधि कर्म वन रोग लगे संग, इनते मोहिं उबारो ।
निराधार कोई सहायक नहीं, केवल तव आधारो ॥
दया कर कष्ट निवारो ॥२॥

तव आश्रय पुनि दुःखी देख मोंहि लोग हँसे दे तारो ।
यह उपहास असह्य गुंसाई, इसको शीघ्र निवारो ॥
विनय कर कर मैं हारो ॥३॥

इन्द्रियगण दौड़त विषयन को, ले संग मन मतवारो ।
भांति भांति के भोगत भोगा, टारत नहीं प्रभु टारो ॥
को मन मतो विचारो ॥४॥

अति आरत वहु दीन होय कर, शरण लई प्रभु तारो ।
'शङ्कर' सेवक जान दयानिधि, 'अमृत' विन्दू डारो ॥
नाथ मैं बालक थारो ॥५॥

६८५—प्रार्थना

परिग्रह करो मेरी विनती को स्वामी ।
चरण को तुम्हारे नमामि नमामी ॥
किया रूप नरसिंह का भक्त कारण ।
उबारी 'अहिल्या' हे भवसिंधु तारण ॥

सगुण और निरगुण, तुम्हीं हो अनामी।
चरण के तुम्हारे नमामी नमामी ॥१॥
तुम्हीं वनके रक्षक, आये गजके हेतू।
तुम्हारे ही वलसे, बँधा नाथ सेतू ॥
"अजामेल" तारा था पापिनमें नामी।
चरण को तुम्हारे नमामी नमामी ॥२॥
तुम्हीं "द्रौपदी" के वसनको बढ़ाया।
तुम्हीं हेतु—'व्रज के' था गिरवर उठाया ॥
बने सारथी, "श्वेत बाहन" के स्वामी।
चरण को तुम्हारे नमामी नमामी ॥३॥
थी 'गणिका' महा पापिनी, जिसको तारी।
'सुदामा' की तुमने, दशाको सुधारी ॥
तुम्हीं सर्व परण, तुमहि हो अकामी।
चरण को तुम्हारे, नमामी नमामी ॥४॥
बधिक थे 'सजन,' उनको तारा तुम्हीं ने।
था 'मीरां' को विषसे उवारा तुम्हीं ने ॥
तुम्हीं हेतु 'नरसी' दिया द्रव्य स्वामी।
चरण को तुम्हारे नमामी नमामी ॥५॥
तुम्हीं बेर 'भिलनी' के, खाये गुसाँई।
तुम्हीं 'सैन' कारण, वने नाथ नाई ॥
तुम्हीं 'पूतना' को उवारी थी स्वामी।
चरण को तुम्हारे, नमामी नमामी ॥६॥

तुम्हीं 'कंस' के, दण्डदाता बने थे।
छप्पर तुम्हीं 'नामदे' के छने थे॥
तुम्हीं खेत धन्ना के, उपजाये स्वामी।
चरण को तुम्हारे, नमामी नमामी॥७॥
तुम्हीं वत्स "मत्सादिको" को पछारा
तुम्हीं दुष्ट 'रावण' के कुल को संहारा॥
तुम्हीं दीन जन के हो आधार स्वामी।
चरण को तुम्हारे नमामी नमामी॥ ८॥
कहाँ तक सुनाऊँ, अकथ है कहानी।
थके शेष शारद, अरु नारद से ज्ञानी॥
'शंकर' उबारो 'सुधानाथ' स्वामी।
चरण को तुम्हारे नमामी नमामी॥ ९॥

दुर्गाप्रसाद शर्मा "शंकर"

६८६—भजन

मूरख मन वृक्षनको मत लेरे, तने नहीं रे किसीको भय रे॥टेक॥
काम क्रोध अरु दृढ़ कर राखो, साँचाई सुमिरण ये रे।
जै तने चाये मुकत आपकी तो घर वैठ्याई लावो ले रे॥ १॥
काटण वालेसे वैर नहीं है, सींचण वालेसे नेह रे।
जै वैंके मारे कंकर पत्थर, आपलड़ोई फल दे रे॥ २॥
इन्द्र भिजोवे पून झिकोले, सारो दुखड़ो सहे रे।
शील सन्तोष धरया धरणी पर, पंछियनको सुख दे रे॥ ३॥

६८७—भजन

भायलो नन्दलालजी सुदामा, दुख दालिद सब दूर करेगो ।।टेक।।
कहत बिरामणी सुणो बिरामण, द्वारकामें इब गयां ही सरेगो ।
कृष्ण साँवरो, मित्र तुम्हारो, धनकी दुविधा आप हरैगो ।। १ ।।
हाथ लकड़िया कांधे गठड़िया, फाटीसी लीरी लटकाय लई है ।
मनमें बिरामण सोच करे है, या तिरिया मेरी गैल हुई है ।। २ ।।
मंजलेरी मंजले चल वो बिरामण, द्वारका पुरीमें आय गयो जी ।
जद रे बिरामण पोल पधार्‌यो, ड्योड़ीवान वांई अटक दियोजी ।। ३ ।।
रतन सिंहासन बैठे यदुनन्दन, नैणांसे नैण मिलाय लियोजी ।
जद प्रभु उठकर दोय पग लीना, मिलिया कंठ लगाय लियोजी ।।४ ।।
बालकपणेकी प्रीत सुदामा, काहेको दूर बसे हैं बसे जी ।
तुम भये सबलज हम भये दुरबल, वाही से दूर वसे हैं वसे जी ।।५।।
राजसिंहासन बैठे लिछमीपती, अरधंग्याने पास लिये जी ।
दूध कटोरो भर ल्याई लिछमी, दूधांसे चरण पखाल दिये जी ।। ६ ।।
तब यदुनन्दन यूं उठ बोले, ऐसे क्यूं सकुचाय रहे जी ।
भाभीकी भेंट तुम ल्यायेजी सुदामा, हमसे क्यूं तूं छिपाय रहेजी ।।७।।
एक मूठी फांकी दोय मूठी फांकी, तीजीमें अवला पकड़ लियेजी ।
तीन लोकका थे हो स्वामी, बिना विचारे देय दिये जी ।। ८ ।।
मजल्यां मजल्यां चाल्यो बिरामण, अपणे नगरमें आय गयोजी ।
कहाँ रे गई मेरी टूटी रे टपरिया, नारिको सोच अति छाय गयोजी ।।
किसका महल झुक्या है झुक्या यह, आपसमें तो अड़े हैं अड़ेजी ।
मन्दर देख डरे हैं सुदामा, सब ही रतन जड़े हैं जड़ेजी ।।१०।।

अजब झिरोखे बैठी है विरामणी, थे क्यूं सोच भरे हैं भरेजी।
जै थे गया था द्वारका पुरीमें, दालिद दूर करे हैं करेजी॥११॥
उनकी कृपासे महल हुआ है, हर्ष घणो अति छाय गयोजी।
श्रीदामाकी लीला गाकर, उरमें आनन्द आय गयो जी॥१२॥

६८८—भजन

(जकड़ीकी रंगत)

मनुवा राम सुमर ले रे।
आसी तेरे काम नामकी वालद भर ले रे॥टेक॥
सत्गुरु बात धरमकी कही या हिरदे धर ले रे।
मनुष्य देही सुफल करै तो ईव रे कर ले रे॥ १ ॥
भवसागरकी लहर कठिन है, कुछ तो भर ले रे।
राम नामकी नाव पकड़ कर, पार उतर ले रे॥ २ ॥
जमका दूत पकड़ ले जायगा, निश्चय कर ले रे।
रती रती का हिसाव लेगा, पूंजी कर ले रे॥ ३ ॥
लख चौरासी जीवा जूणमें फिर फिर मर ले रे।
कहे पुजारी रामरतन गिण गिण धर ले रे॥ ४ ॥

अज्ञात

६८९—भजन

राजा लगोजो धरमका जेठ, भुजा तो मेरी मत पकड़ो॥टेक॥
भरी सभामें बात विचारो, मतना करसे चीर उतारो।
सहाय सहाय मैं खड़ी पुकारूं, असुर न माने मेरी एक॥ १ ॥

भुजा पकड़ ले जायगा हमको, ना कोई भला कहेगा तुमको ।
मेरी काया नगन देखकर, के भर ज्यागो तेरो पेट ॥ २ ॥
आव हमारी मोतीकीसी, उतरयां फेर चढ़े नहिं वैसी ।
मैं राजी मेरो शीश उतारो, कर द्यो कालकी भेंट ॥ ३ ॥
द्रुपद सुता जब टेर सुनाई, सुनियो जदुराई ।
रुकमणके संग चौपड़ खेले, टेर गई है ठेटं ठेट ॥ ४ ॥
वा तो थी पतिभरता नारी, वांकी लाज रखी गिरधारी ।
सुखीराम नर ऐसे गावे, रघुवर राखी वांकी टेक ॥ ५ ॥

६९०—भजन पारवा

रुकमण कै तील हजारकी, अंगिया बिन फिरै जिठाणी ॥टेक॥
मेरी नारके फाट्यो दावण, ऊपर नेफो नीचे लावण ।
आपके मनमें रही शरमावण, भूली सैल बजारकी—
ल्यावे ल्यावे अंधेरे पाणी ॥ १ ॥
मेरी नारके फाटी आँगी, दोय कांचली दीज्यो माँगी ।
दीखतकी वा पूरी साँगी, सोभा कहूं घर नारकी—
वा तो खावे भुगड़ा धाणी ॥ २ ॥
तेरे तो सुवरणका घर है, भागवानमें नहीं कसर है ।
लक्ष्मीपति तो तेरा बर है, हाथी घोड़ा और लस्कर है—
तूं तो वण वैठी सेठाणी ॥ ३ ॥
चार टकेका तंडुल लाया, वै वी तेरे पति नहिं खाया ।
उसका एक धेला नहीं पाया, बेईमानी कृष्ण मुरारकी—
सुखीराम सुमर निरवाणी ॥ ४ ॥

६९१—भजन

गाऊं रामकी माला कोई है सुनणिया ॥टेक॥
ना मैं माला हाथसे पोई, आपही हिरदे हर हर होई ।
इस माला का अठ सौ मणिया, कोई है फेरणिया ॥ १ ॥
ना मैं लियो रामको खेड़ो, भजन विना डूवणको वेड़ो ।
गिगना चढ़ आयो पाणी, कोइ है तिरणिया ॥ २ ॥
पेट भर खायो नींद भर सोयो, मिनख जमारो ऐलो खोयो ।
जाग जाग नर सोया, कोइ है जागणिया ॥ ३ ॥
एक दिन हंस अकेला जासी, वठे नहीं है सुमरणकी वरियां ।
अगम लोकको है रे जाणा, कोई है चालणिया ॥ ४ ॥
सुखीराम एक भजन वणायो, नारायणसे ध्यान लगायो ।
वै नर तो तिर जासी, कोइ है तिरणिया ॥ ५ ॥

सुखीराम शर्मा

६९२—भजन

आवो मेरे कण्ठ विराजो शारद माई,
हंस वाहनो रहो दाहनी सदा करो सहाई ॥टेक॥
मैं मतिमंद कछू नहिं जानत तेरी जोति मैय्या हृदय समाई ॥१॥
आदि अन्त अवतार भवानी सव ही तुझको मनाई ।
शिव सनकादि गंधरव ध्यावे, तीन लोकमें तेरी वड़ाई ॥२॥
मोदक पान श्रीफल देवा भेंट चढ़ाऊँ लाई ।
कंचन थाल कपूर आरती चोमुख दिवले जोत सवाई ॥३॥

हाथ जोड़ तेरो सेवक ठाढ़ो, करिये वेग सुनाई।
टोरू पर महर करो माई शरण आयो तेरे चरणाँ चितलाई ॥४॥

६९३—रागनी सोहनी भैरवी

अब लेना खबरिया दयालु हमारी ॥ टेक ॥
भक्त अनेक उबारे आपने, वेद वखाने प्रभु लीला तुम्हारी।
देव उधारण दुष्ट संघारण, आप दयानिधि कृष्ण मुरारी ॥ १ ॥
जात पांतका भेद न तेरे, भीलनी कसाई फिर गणिका तारी।
टोरू विप्र प्रभु दास तिहारो, चरण कमल पै जाऊँ वलिहारी ॥२॥

६९४—राग विहाग

काशिप सुत करिये वेड़ा पार ॥ टेक ॥
उदयाचलमें उदय होत हो सोलह कला सँवार।
सहस्र किरणकी जोत जगमगे दर्श करे नर नार ॥१॥
दर्श देव हो आप जगत में निरधारां आधार।
तीनूं कालमें तीन रूप होय करते पर उपकार ॥२॥
सूर्य देव करिये कृपा मेरी ओर निहार।
महर होय तेरे जन पर झटपट हो उद्धार ॥३॥
आन पड़ी मंझधार प्रभुजी, आप करोगे पार।
टोरु विप्र दास चरणनको, दर्शनकी वलिहार ॥४॥

६९५—भजन

(तर्ज-पञ्च वीरांकी)

इस जग मांही आकर भूल्यो,
फिर मोसर नहीं पावो, वन्दा ईश्वरका गुण गावो ॥टेक॥

मानुष देह मिली दुनियांमें मतना पाप कमावो ।
सत्य धर्मसे करो कमाई गृहस्थाश्रमको निभावो ॥ १ ॥
गृहस्थाश्रमको धर्म पालन कर दोनूं वात वनाओ ।
कर अतिथि सत्कार जगत्में आगे परंपद पावो ॥ २ ॥
काम क्रोध, मद, लोभ मोहके वशमें मतना आवो ।
वेटा पोता मतलवका गरजी सव दे ज्यावे कावो ॥ ३ ॥
अंत समय प्रभु जन्म सुधारे हरि से हेत लगावो ।
टोरू विप्र कहे हित चित्तसे माया जाल हटावो ॥ ४ ॥

६९६---भजन

(तर्ज-सीठनेकी)

सुन मनज्ञानी श्रीराम जपना, नर तन पाकर योंही खोई मतना ।
वालपनेमें माता राख्यो यत्ना, खेल्यो खायो ग्यान विना ॥ १ ॥
तरुण भयो जव लागी तृष्णा, तिरियाकी देखे रचना ।
मात-पिताको देवे गाल, तिरियाके चाले वचना ॥ २ ॥
मोह मायाका चढ़ गया रंग, कभी न वोले तूं सचना ।
वृद्ध भयो कफ वायुको जोर, चलग हिलगकी हिमतना ॥ ३ ॥
थोड़ी जिन्दगानीमें छोड़ो सत्यना, सत छोड़यां तेरी रहे पतना ।
यह संसार रातका सुपना, टोरू विप्र राधेश्याम रटना ॥ ४ ॥

६९७—भजन

(तर्ज-भभूते सिद्धकी)

भयो अवतार साँवरियो जगमांहि परमारथके काज, ओ,
साँवरिया सेठ सारी सृष्टिमें तेरी जोत, सत्पुरुषांने दर्शन होत ॥ १ ॥

प्रात होत ही सबको पूरे कर्मनके अनुसार,
ओ साँवरिया सेठ निरधाराँ आधार ॥ २ ॥
कण किड़ीने मण हाथीने पुरत है तमाम,
ओ साँवरिया सेठ सारी जगतका पालनहार ॥ ३ ॥
इस दुनियांमें दोय चीज है नेकी बदी व्यवहार,
ओ साँवरिया सेठ न्याव करे करतार ॥ ४ ॥
बदीके बदले लेय बुराई नेकोका सत्कार,
ओ साँवरिया सेठ भजन करे सो उतरे पार ॥ ५ ॥
पापीके मुख छार परत है, सत्पुरुषांने स्वर्ग द्वार,
ओ साँवरिया सेठ भगत पियारा सरजनहार ॥ ६ ॥
टोरू बिप्र प्रभु दास तिहारो सुमरे सांझ सँवार,
ओ साँवरिया सेठ आप करो उद्धार ॥ ७ ॥

६९८—भजन

(तर्ज-विनाणीड़े की)

थे सूत्या छो तो जागो म्हारा नन्दलाल कँवर,
वसुदेवजीरा भगत करे छे थारी वीनती ॥ १ ॥
प्रभु म्हारी सुन लीज्यो दर्शन दीज्यो,
शरण आये की लज्जा राखियो ॥ २ ॥
इस जगमें आया वहु पाप कमाया,
गाया नहीं गुण श्रीभगवानका ॥ ३ ॥
माफ हमारा कसूर प्रभु करिये, विपत म्हारी हरिये,
भक्ति दान मोहि दीजिये ॥ ४ ॥

भक्ति तिहारी दीजे वनवारी, थे लीज्यो खबर हमारी,
म्हारे हृदय में आय हरि थे वसो ॥ ५ ॥
आगे प्रभु कितना भक्त उधारा दुष्ट संहारा,
पर उपकारी प्रभु आप हो ॥ ६ ॥
सनकादिक ध्यावे ब्रह्मादि मनावे,
सारी सृष्टी गावे जस आपका ॥ ७ ॥
तेरी जग माया कोई पार न पाया,
सारी तो जगतका पालन थे करो ॥ ८ ॥
दीनके दयाल प्रभु मेटो दुख तत्काल,
टोरू विप्र कहै सब पाप हरो ॥ ९ ॥

६९९—भजन

(तर्ज-भभूते सिद्धकी)

ग्वाल वाल संग रास रचावे, वंशरी वजावे—
आछी धुनमें, साँवरियो छायो मथुरामें ॥ टेक ॥
आप तो जाय द्वारिका छाये, सारी गोपियांने छोड़ी माधोवनमें ।
कुवजा दासी कंस राजाकी, थाने प्यारी लग रही मनमें ॥ १ ॥
गोपियन कूं प्रभु तरसत छोड़ी, राधे झूरे वरसानेमें ।
काली कपटी वोले कूड़ो, ओजूंना वुलावां सखियनमें ॥ २ ॥
गोपियनमें कानो ऐसो सोहे, ज्यों चन्दा तारनमें ।
रोम रोममें रम रह्यो साँवरो, वस रयो सवके नैननमें ॥ ३ ॥
लीला धारी आप साँवरियो, माया रची है दुनियां में ।
टोरू विप्र कहै भजलो मुरारि, पार उतारे एक छिनमें ॥ ४ ॥

७००—भजन

(तर्ज-कूंजाकी)

रुकमण बैठी महलमें जी देखत नजर पसार,
जोसी म्हारे बाबाजी रो आयोजी ॥ १ ॥
तूं छै दासी म्हारे बापकी ये जोसीने ल्यावो बुलाय,
कागद हरिने बेग पठावांजी ॥ २ ॥
गई दासी वा गई जी जोसीने बोली जाय,
जोसीजी म्हारा बाइजी बुलावे जी ॥ ३ ॥
आयो जोसी महलमें जी कहो म्हारी राजकुमार,
म्हाने ये बाई क्यूं थे बुलायाजी ॥ ४ ॥
थे छो जोसी म्हारे बापकाजी म्हे थारा जजमान,
जोसी जी म्हाने कृष्ण मिलावोजी ॥ ५ ॥
सुण बाई तने बात कहूं जी मैं वृद्ध ब्राह्मण दीन,
मारग म्हांसे चल्यो ये न जावेजी ॥ ६ ॥
जोशी या शंका छोड़द्योजी, वे समरथ करतार,
बिगड़ी प्रभु पलमें सुधारेजी ॥ ७ ॥
इतनी सुन जोशी मगन भयोजी, हरख्यो मनके माँय,
बाई ये थाने कृष्ण मिलावांजी ॥ ८ ॥
पतियां लिखत छतियां फटे जी, कलम न हाथ ठहरात,
प्रभु मेरे मनकी थे जानो जी ॥ ९ ॥
पत्री लिख द्विजको दई जी, चरण निवावे शीश,
जोशीजी सीधा द्वारिका ने जाज्योजी ॥ १० ॥

चाल्यो जोशी द्वारिकाजी, सिद्ध गणेश मनाय,
मारग द्वारावतीको लीनोजी ॥ ११ ॥
गयो जोशी वो गयो जी, चाल्यो कोश दो कोश,
मारग मांही चल्योयन जावेजी ॥ १२ ॥
थाक्यो ब्राह्मण सोय रयोजी सूत्यो खूंटी ताण,
कृष्ण शिव दोनूं बतलायाजी ॥ १३ ॥
पारखदाने हुकुम दियो ल्यावो विप्र विमान बैठाय,
सुत्यो जोशी मतना जगाज्योजी ॥ १४ ॥
हुकम हुयो दरबारको जी विप्र विमान बैठाय,
द्वारावतीमें ल्याय उतारयोजी ॥ १५ ॥
उठ्यो ब्राह्मण चेत कियोजी देख्या और सैनाण,
गिरधारी थारी लीला न्यारी जी ॥ १६ ॥
गयो ब्राह्मण वो गयोजी, गयो कृष्णजीरी पोल,
ठाकुर चन्दन चौकी विराज्याजी ॥ १७ ॥
जोसीने देख्यो आवतां जी कृष्ण करी प्रणाम,
जोसीजी आशिर्वाद सुनायो जी ॥ १८ ॥
जोशी पत्री खोलके जी दीनो कृष्णजीरे हाथ,
पत्री प्रभु कंठ लगाई जी ॥ १९ ॥
वाँच कृष्णजी पत्रिका मग्न भया मन माँय,
बलभद्र भाई जान सिंगारोजी ॥ २० ॥
हुकम हुआ दरबारकाजी जान भेली होय,
आय कृष्ण बन्नो घोड़ी चढ़ायोजी ॥ २१ ॥

चढ़िया कृष्ण बरात ले सिद्ध गणेश मनाय,

डेरा कुनणापुरमें डाल्याजी ॥ २२ ॥

गयो जोशी वो गयो जी गयो महलके मांय,

बाई ये रुकमण कृष्ण पधारयाजी ॥ २३ ॥

भलां जोशीजी भली करीजी ल्याया कृष्ण चढ़ाय,

जोशीजी थारो गुण नहीं भूलांजी ॥ २४ ॥

चाली बाई अम्बा पूजबा, भर मोतियनको थाल,

भवानी म्हाने कृष्ण मिलावोजी ॥ २५ ॥

अम्बा पूज बाई बाहर आई जी देखत नजर पसार,

सन्मुख कृष्ण निहारयाजी ॥ २६ ॥

रुकमणकी करुणा सुनी जी बैठ्या कृष्ण रथ माँय,

पोल अम्बिकाकी आयाजी ॥ २७ ॥

मोर मुकुट सिर सोहनाजी कुंडल झिलकत कान,

सुरत साँवरी प्यारी लागेजी ॥ २८ ॥

भुजा पकड़ी रुकमणकीजी लीनी छै रथ बैठाय,

भक्तांका प्रभु मान बढ़ायाजी ॥ २९ ॥

शिशुपालेकी सैन्या चढ़ीजी,दीनी प्रभु सारी खपाय,

झगड़ो जीत्या त्रिभुवन राईजी ॥ ३० ॥

राजा भींवकी बीनतीजी सुनियो यादवराय,

बाईने भलीभाँति परणावांजी ॥ ३१ ॥

आला गीला बाँस कटाइया, तोरण थाम घड़ाय,

रुकमणने भलीभांति परणाईजी ॥ ३२ ॥

रुकमणी परण पधारियाजी द्वारावती घनश्याम,

देवकीजी आकर लाड़ लड़ायाजी ॥३३॥

द्वारावती आनन्द भयोजी परण पधारे यदुराय,

आनन्द मंगल वँटत वधाई जी ॥३४॥

या लीला भगवानकी जी सीखो सुणो चितलाय,

हृदयमें प्रभुको ध्यान लगावोजी ॥३५॥

टोरू विप्रकी विनतीजी सुनियो कृष्ण मुरार,

प्रभु म्हाने दर्श दिखावोजी ॥३६॥

७०१—भजन

(तर्ज—चनणाकी)

गिरधर वृजधरजी प्रभुजी मैं रटूंजी ॥टेक॥

कोई भजता सुवे और श्याम दर्श दिखाओजी,

साँवरिया प्यारा आपका जी ॥ १ ॥

पतित उद्धारण जी प्रभु आप हो, म्हारी खबर लेई क्यूं नांय,

ये भक्त करेछैजी प्रभुजी थारी वीनतीजी ॥ २ ॥

इस दुनियांमेंजी प्रभुजी मायाजाल है जी, कोई चिड़िया रही है फंसाय,

आप दयालुजी निकालो आयके जी ॥ ३ ॥

सकल जगतमेंजी साँवरिया तेरो चांदनोजी कोई आप बिना अंधियार,

सारी सृष्टिमें जो तिहारी ज्योति है जी ॥ ४ ॥

जीवत सुख दुखजी तिहारे हाथ है जी कोई अंत मुक्ति तेरे हाथ,

उद्धार करोगाजी क पापी जीवका जी ॥ ५ ॥

आगे कितनाजी क पतित उद्धारियाजी कोई इब क्यूं भया हो कठोर,
दीनदयालुजी साँवरिया आप हो जी ॥ ६ ॥
टोरू विप्र पै जी प्रभुजी कृपा करोजी कोई समरथ करतार,
पार उतारो जी चाकर जानके जी ॥ ७ ॥

७०२—भजन

(तर्ज—जकड़ी)

मथुरा मांही जनमिया वो बसुदेव घर काना गढ़ गोकुलमें काना,
वो बँटी वधाई ॥ १ ॥
बालपनेमें तारी पूतना वो कँवर कृष्ण कन्हाई,
कंस पछाड़्या काना वो देर ना लाई ॥ २ ॥
कुब्जा दासी कंसकी वो भई रूप दिवानी,
कोई प्यारी लागी काना ओ करी पटरानी ॥३॥
बंशी बजाई मोहिगो पिया वो नन्दजीका लाला,
रास रचायो सांवरा वृन्दावन मांही ॥ ४ ॥
लीला रची संसारमें जी नटवर नागरिया भक्त उद्धारण,
दाना मारण काना ओ भयो अवतारी ॥ ५ ॥
खेलत गेंद जमुनामें परियो, कूदे कृष्ण कन्हाई,
काली नाथ्यो फणपर नृत्य दिखायो ॥ ६ ॥
टोरू विप्रकी बीनती वो सुनियो चित्त लाई,
जन्म सुधारण प्रभुजी कथे जग मांही ॥ ७ ॥

७०३—भजन

(तर्ज—भांगड़ली की)

मथुरामें जनम्या प्रभु गोकुलमें आयाजी,
  बावा नन्दजीका कुंवर कुहाया, म्हारा श्याम विहारी जी ॥१॥
यमुना किनारे साँवरो गैया चरावे जी,
  मुखसे मुरलीकी टेर उचारे, म्हारा श्याम विहारी जी ॥ २ ॥
टेर उच्चारे कानो मोहनी सी डारे जी,
  सारी गोपियाँ भई तो दिवानी, म्हारा श्याम विहारी जी ॥ ३ ॥
वृन्दावनमें साँवरे रास रचायो जी,
  सारी सखियाँ रे मनभायो, म्हारा श्याम विहारी जी ॥ ४ ॥
रास देख हिवड़ो हरखायो जी,
  म्हारे हृदय बीच समायो, म्हारा श्याम विहारी जी ॥ ५ ॥
भक्त उद्धारण प्रभु भयों अवतारी जी,
  साँवर लीला है अजब तिहारी, म्हारा श्याम विहारीजी ॥ ६ ॥
हरि रस प्याला अमृत भरिया जी,
  नर बिना भाग नहीं पावे, म्हारा श्याम विहारी जी ॥ ७ ॥
जो कोई पीवे हरि रसका प्याला जी,
  उनका कोटि विघन टर जावे म्हारा श्याम विहारी जी ॥ ८ ॥
टोरू विप्र कथ लीला गावे जी,
  बनवारीने भोत लड़ावे, म्हारा श्याम विहारी जी ॥ ६ ॥

७०४—भजन

(तर्ज—अनार कलियां)

बंशीवारा साँवरिया म्हाने दरश दिखावो इस दुनियांमें आयकेजी ॥
जी लियो कामको लावो ।
रामनामकी सार न जाणी, दियो भजनसे कावो ॥ १ ॥
रात दिन कुमारग चाल्यो, मार्ग चल्यो न दावो ।
जो मेरा अपराध गिणोतो, उसका अंत न पावो ॥ २ ॥
गरीब जान प्रभु मुझको तारो, थारो बिड़द बधावो ।
इब तो महर करो साँवरिया, क्यूं म्हाने तरसावो ॥ ३ ॥
पतित उद्धारण आप जगतमें दीनानाथ कुहावो ।
टोरू बिप्र कहे कर जोरे दास जानकर आवो ॥ ४ ॥

७०५—भजन

(तर्ज—आज म्हारो गीगलो)

ओजी गिरधारी थारी सूरत लागे प्यारी जी ॥टेक॥
वृन्दाबनमें रास रचायो, ग्वाल बाल संग बनवारी ।
राधे देखन आई संगमें, लीनी सखियाँ सारीजी ॥ १ ॥
लीला देख मगन भई मनमें, मुलके राधा प्यारी जी ।
मूरति मोहनी हिरदय बस गई, लागी प्रेम कटारीजी ॥ २ ॥
सखियाँ लेय साथमें चाली, घर वृषभानु दुलारीजी ।
खटक कलेजे लगी श्यामकी, बिसर गई सुध सारीजी ॥ ३ ॥
सुरत सोहनी प्यारी लागे, अदा श्यामकी न्यारी जी ।
टोरू विप्र चरणको चेरो, दर्शनकी वलिहारी जी ॥ ४ ॥

७०६—भजन

(तर्ज—पीपलीकी)

परण पधार्‍या प्रभु रुकमणी जी, ओजी प्रभु पूंचे द्वारिका धाम,
कुनणपुर वासी प्रभुजी झूर रह्याजी ॥ १ ॥
ओजी वाई रुकमणिका भरतार भगतांरी सुनियो प्रभु वीनतीजी,
फेर्‍यूं ये तो आज्यो साँवरिया म्हारे देशमें जी ॥ २ ॥
ओजी प्रभु लीज्यो सार सम्हार,
दरशण की अभिलाषा लग रही जी ॥ ३ ॥
मोर मुकुट सिर सोहे सोहनाजी ओजी प्रभु कुण्डल झिलकत कान,
साँवरी सूरत म्हारे दिलमें वस रही जी ॥ ४ ॥
कोई उपमा करूं थारे रूपकीजी ओजी प्रभु म्हांसे कहीए न जाय,
प्रेम तिहारो मनमें वस रह्योजी ॥ ५ ॥
हरदम हिरदय म्हारे वस रहोजी, ओजी प्रभु राखां थाने हिवड़ेरो हार,
कबुयन साँवरा थाने विसराँजी ॥ ६ ॥
धन गोकुल धन द्वारिका जी, ओजी प्रभु धन मथुराका लोग,
दर्शण नित होय कृष्ण मुरारका जी ॥ ७ ॥
धन धन छै जी वाई रुकमणीजी, ओजी प्रभु कृष्ण कुंवर वर नार,
कोटि जन्म पुण्य वाई तैं कियाजी ॥ ८ ॥
भक्तां कारण प्रभुजी प्रगटियाजी ओजी प्रभु लियो मनुज अवतार,
भक्त उद्धारया राक्षस मारियाजी ॥ ९ ॥
अर्ज सुणो हरि टोरू विप्रकी, ओजी प्रभु दास जाण—
कीजे भक्ति दान, प्रभु म्हाने दीजिये जी ॥ १० ॥

७०७—भजन

(तर्ज-लहरिये की)

इस दुनियाके बीचमें जी कोई आई राम भजन की वहार,
राम मोहन भजल्यो जी ॥१॥

पापी परे कर नीसरेजी, कोई संत जन ध्यान लगावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥२॥

पापी जावे नरक द्वारमें जी, सत्पुरुष परम पद पावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥३॥

राम भजनका गायक जी, कांईं हरिसे हेत लगावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥४॥

पापी कमावे पापने जी, कोई रात दिवस भटकावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥५॥

जाके हिरदे हरि बसे जी, सोई जन यमपुर नहिं जावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥६॥

भजन बराबर कुछ नहीं जी, कोई साधु जन हरि गुण गावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥७॥

लोभी प्यारा दाम है जी, कोई भक्त पियारा वनवारी,
राम मोहन भजल्यो जी ॥८॥

भक्तां वश भगवान है जी, कोई वेचे तो विक जावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥९॥

दाना मारया देव उवारिया जी, पर उपकारी श्याम कहावे,
राम मोहन भजल्यो जी ॥१०॥

दीन दयालु आप हो जी, प्रभु टोरू विप्र यश गावे,

राम मोहन भजल्यो जी ॥११॥

७०८—भजन

(तर्ज–जकड़ी)

आसन बैठ भजन करता ।

मेरी सुनिये वो श्याम ध्यान धरता,

प्रभु आप विना कुण दुःख हरता ॥१॥

इस जगमें आय पाप किया ।

कभी राम नाम मैं नहीं लिया, मुझे माफ देवो तुम सांवरिया ॥२॥

आप दयालु महर करो ।

प्रभु दास जान कर विपति हरो, मुझको है भरोसो तेरो खरो ॥३॥

कुटुम्ब कबीला मतलबका गरजी ।

प्रभु आप सुनो मेरी अरजी, नहीं सुनो तो श्याम थारी मरजी ॥४॥

टोरू विप्र तेरा यश गावे ।

कोई नर तेरा पार नहीं पावे, प्रभु भक्तां कारण झट आवे ॥५॥

७०९—भजन

(तर्ज–छोटे वालम की)

तूं तज दे खोटा काम, वन्दा हरि भजले ॥टेक॥

वड़े भागसे मानुष देह मिली, सुकृत कियां मिलसी श्याम ॥१॥

झूठ कपट ने रे वन्दा, छोड़ दे तूं रटले सीताराम ॥२॥

तेरी मेरी रे वन्दा ना करो, मत रखो पापका काम ॥३॥

घरको धंधो रे करके भजो थे, घड़ी होय सुवे और शाम ॥४॥

कुटुम कबीला रे कोइयन हेत करे, जीते जी रहे गुलाम ॥५॥
धन धाम काम नहीं आयसी, जब यमसे होय सलाम ॥६॥
टोरू विप्र कहै भज बनवारी, तोय मिले परम पद धाम ॥७॥

७१०—लावणी

(रागिनी भैरवी)

शैर—भक्ति करे सो ऊबरे इस जगतमें नर नार है।
मायामें फंसके नर अधर्मी जाय यमके द्वार है ॥
सतपुरुष जो होय जगमें सतसे उतरे पार है।
धार दिलमें रट हरी को, भजन ही में सार है ॥
टेक—इस दुनिया में भजन सार है, भजन करे सो उतरे पार।
बिना भजन नर पशु सदृश है, भजन कियां होता उद्धार ॥
एक विप्र सुदामा था अति दुरबल, प्रेम प्रभुका रहता था।
करे गुजरान गरीबीमें वो नहीं किसीको कहता था ॥
जो जो बचन नारी कहती थी, वो सबही को सहता था।
बचन मान नारी का एक दिन गये जहाँ हरि रहता था ॥
शैर—प्रभु दोय मुट्ठी लेय तंदुल, मित्रको सुख संपत दिया।
फिर एक पलमें रची माया, किया तृप्त उसका हिया ॥
विप्र सुदामा चले पीछा, रस्ता निज घरका लिया।
नारि कही यौं आय पतिको कृष्ण सब आनन्द किया ॥
विप्र सुदामा की हरी दरिद्रता अन धनसे भर दिया भंडार ॥१॥
द्वापर युगमें भई रुकमणी, भीष्म गृह अवतारी जी ॥
जान लेय आयो शिशुपालो. देखत दुनियां सारी जी ॥

भाई रुकमैये कपट कमाया और मिली महतारी जी ।
भीम कहै वाई रुकमण को वरसी कृष्ण मुरारी जी ॥
शैर—दे पत्रिका द्वारावती रुकमण विप्र एक पठाइया ।
वह वाँच पत्र कृष्णजी चढ़ कुनणापुर में आइया ॥
शिशुपालकी सैन्या संहारी, रुकमणी कृष्ण विवाहिया ।
जन्म सुफल हुआ रुकमणीका कृष्ण सा वर पाइया ॥
भक्त का मान वधाय, द्वारिका पहुंचे रुकमणके भरतार ॥२॥
वृज नारीका प्रेम देखके मक्खन चुराके खाया है ।
सवको संगमें खेल खेल सखियनको वहुत रिझाया है ॥
कालीदह में नाग नाथ लियो फण पर नृत्य दिखाया है ।
नख पर गिरिवर धार इन्द्रका सव अरमान मिटाया है ॥
शैर—सारी सभा के वीच में द्रौपदीका चीर वढ़ाइया ।
मंझधारमें गज टेर सुण प्रभु पांव पैदल आइया ॥
नरसिंह धर अवतार प्रभु प्रह्लादको वचवाइया ।
कंस वध उग्रसेन नाना को गद्दी पर वैठाइया ॥
दाना मारण देव उधारण, लियो जन्म प्रभु वारम्वार ॥३॥
धर धरके अवतार भार पृथ्वीका आप हटाया है ।
पतित उधारण आप जगत में भक्तोंका मान वढ़ाया है ॥
भक्त अनेक उवारे कितने अधम परम पद पाया है ।
लीलाधारी आप दयानिधि अजव तिहारी माया है ॥
शैर—गुरु गोविंद दोनूं खड़े किसके लागूं पांयजी ।
वलिहारी है गुरुदेवकी, मारग दिया वतलायजी ॥

मम गुरु द्विज भगवानदास ने, दीन्या ज्ञान सुनायजी ।
उनकी कृपासे विप्र टोरू कहै सभामें गायजी ॥
कर प्रणाम कहूं गुणी जनोंको भूल चूक सब लेवो सुधार ॥४॥

७११—राग चलत दादरा

मोहे लग रही आश तिहारी प्रभो ।
लीजे बेग खबरिया हमारी प्रभो ॥टेक॥
दुनियां में आय लिया नहीं नाम श्री भगवानका ।
विषयोंमें भरमत फिरे है, भरा हुआ अभिमानका ॥
अब तो हरियेगा विपति हमारी प्रभो ॥१॥
काम क्रोध मद मोह लोभ का जाल है संसारमें ।
इस जाल में सब फंस रहे हैं, विरला बचा नर नारमें ॥
साँवरा, माया है अजब तिहारी प्रभो ॥२॥
नर अधरमी किया अधरम, डूब रहे मंझधार में ।
सत्पुरुष कर सत का कर्म, वो मिल गये करतार में ॥
मैं तो दर्शणकी बलिहारी प्रभो ॥३॥
प्रभु तेरा नाम जप कितने अधर्मी तिर गये ।
भाव भक्तीसे तिरे वो नाम जगमें कर गये ॥
हर दम भज कर माला तिहारी प्रभो ॥४॥
मोह माया में फंस गया जब किया कर्म सब पापका ।
क्षमा कर अपराध प्रभु जी मैं दास हूं मैं आपका ॥
टोरू विप्र है शरण तिहारी प्रभो ॥५॥

७१२—भजन

थे लीज्यो खबर हमारी जी ॥ टेक ॥
आय जगतमें कछु नहिं कीन्यो, पाप किया अति भारी जी ॥ १ ॥
राम नामकी सार न जानी, मुफत उमर गई सारी जी ॥ २ ॥
मोह मायामें भूल गया प्रभु भक्ति करी नहिं थारी जी ॥ ३ ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, मतलबकी संसारी जी ॥ ४ ॥
अब तो दास जाण कर मुझको, करिये कृपा बनवारी जी ॥ ५ ॥
शरण आयेकी लज्जा राखो थे समरथ अवतारी जी ॥ ६ ॥
टोरू विप्र चरणको चेरो, सुनिये कृष्ण मुरारी जी ॥ ७ ॥

७१३—भजन पारवा

कलयुगके माया जालमें, फंस रहा सभी नर नारी ॥ टेक ॥
झूठी माया झूठी काया, सभी झूठका ख्याल रचाया ।
झूठेको सचा दरशाया, सब आ गये झूठी तालमें—
झूठी है सब संसारी ॥ १ ॥
मोह मायाकी लीला भारी, लिपट रही है दुनिया सारी ।
मतलब हित सब करते यारी, सब फँस रहे सुन्दर खालमें—
जीतेजी लगे पियारी ॥ २ ॥
जीतेजी सब नेह लगावे, मगन होय हँस हँस बतलावे ।
अन्त समय कोई काम न आवे, प्रेम रखो नन्दलालमें—
वो समरथ है गिरधारी ॥ ३ ॥
चार कूंटमें कलियुग छाया, बन्दा फिरता सब भरमाया ।

टोरू बिप्रने कथ कर गाया, कलयुगका यह हालमें—
श्रीकृष्ण पार तूं तारी ॥ ४ ॥

७१४—प्रभाती

प्रभु लीजे खबर व्रजराज, आज मेरी तुम राखोगे लाज ॥ टेक ॥
सात द्वीप नव खण्ड बीचमें, सब देवन सिरताज।
तुमरी सेवा ध्यान धरेसे बिघ्न जात सब भाज ॥ १ ॥
कुनणापुर शिशुपाल जरासिन्ध, आये सेन्या साज।
सैन्या हत भूमि भार हन्यो, रुकमणका सारया काज ॥ २ ॥
भरी सभाके बीच तूंही, द्रौपदीकी राखी लाज।
खैंचत चीर हारयो दुःशासन, महर करी व्रजराज ॥ ३ ॥
अर्धनाम सुन आप पधारे, राख लियो गजराज।
टोरू बिप्र पै महर करो श्रीकृष्णचन्द्र महाराज ॥ ४ ॥

७१५—राग मालकोष

भजन बिन वृथा ही जन्म गयो ॥ टेक ॥
वालपणे हँस खेल गुमायो, तरुण त्रियावश भयो ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोहमें, हरदम लिपट रह्यो।
मोह मायामें भूल गयो नर, कबहूं न कृष्ण कह्यो ॥ २ ॥
वृद्ध भयो कफ वायुने घेर्‌यो, दुःख नहीं जात सह्यो।
टोरू बिप्र हरिका गुण गावे, प्रभुके चरण चित्त दयो ॥३॥

——

७१६—भजन

(तर्ज-ओल्यूंड़ी)

ओ जी गिरिधर साँवरिया ।
रुकमण परण द्वारिका चाल्याजी साँवरा ।। १ ।।
ओ जी कुंवर नंदका ।
रुकमण बाई री ओल्यूं म्हाने आवेजी साँवरा ।। २ ।।
धन धन राजा भीसमजी ।
धन धन कुनणापुरका लोग जी साँवरा ।। ३ ।।
भलाई पधार्‌या कुनणापुर गाँवमें ।
सारी तो बसतीका जन्म सुधार्‌या जी साँवरा ।। ४ ।।
ओ ज्यूं ये तो आज्यो म्हारे देशमें ।
भगतांने दर्शण देता जाज्यो जी साँवरा ।। ५ ।।
दरशण पाकर प्रभु आपका ।
जन्म मरण छुट जावे जी साँवरा ।। ६ ।।
ओ जी वनवारी ।
बाई रुकमणका भरतार, टोरू विप्र यश गावेजी साँवरा ।।७।

७१७—भजन

(तर्ज-हिन्डोलेकी)

एजी म्हारा प्रभुजी मथुरामें जनम्या जादूराय,
गोकुलमें झूल्या पालणे जी ।। १ ।।
एजी म्हारा प्रभुजी आगयो सावण मास,
सब सखियां झूले बागमें जी ।। २ ।।

एजी म्हारा प्रभुजी, हँस बोली राधा रुकमण नार,
हिण्डोलो प्रभु घाल द्यो जी ॥ ३ ॥
एजी म्हारा प्रभु जी रेशम डोर बँटाय,
हिण्डोलो प्रभु घालियो जी ॥ ४ ॥
एजी म्हारा प्रभुजी, हिंडेगी राधा रुकमण नार,
झोटा दे कुंवर नन्दको जी ॥ ५ ॥
एजी म्हारा प्रभुजी औरांने दोय र चार,
राधा रुकमणने ड्यौढ़ सो जी ॥ ६ ॥
एजी म्हारा प्रभुजी सखियां दी नजर लगाय,
तिंवालो खायर गिर पड़ी जी ॥ ७ ॥
एजी म्हारा प्रभुजी, देखी छै पलो उघाड़,
उदासी मुख पर छा रही जी ॥ ८ ॥
एजी म्हारा प्रभुजी, लीनी छै अधर उठाय,
दुपटेसे आँसू पूंछिया जी ॥ ९ ॥
एजी हांजी रुकमण एक बर मुखसे बोल,
डाहलका चित्या हो गया जी ॥ १० ॥
एजी म्हारा प्रभुजी टोरू विप्र यश गाय,
रिझावे नन्द किशोरने जी ॥ ११ ॥

७१८—बारामासियो

(तर्ज-पनिहारीकी)

ब्रज बनिता बिलखी फिरे, उधोजीने जोय।
हरिने मिलावो महाराज नहीं तो योगन होय ॥ टेक ॥

चैतमें चतुर सुजान सखि घर घर लिये जोय।
कृष्ण गये बनवास, उधो कह गये मोय॥ १॥
वैशाख वासी द्वारिका जी, कूबरीके रहे सोय।
खोई प्रभु कुलकी लाज दीनी हुरमत खोय॥ २॥
जेठ महीने कूबरी जी हृदयमें लेई पोय।
तोड़यो सखि नौसर हार, दीन्यो कजलो धोय॥ ३॥
आषाढ़ महीनो लागियो, सुपनेमें रही सोय।
खुले नैन पाये नहीं श्याम, सखि दुःख दूनो होय॥४॥
श्रावण महीनो लागियो, धरती पै रही सोय।
डागलिये चढ़ जोऊँ बाट प्रभु आवत होय॥ ५॥
भादव महीनो लागियो, बोले दादुर मोर।
हियो हिलोरा लेत प्रभु, जल्दी आवत होय॥ ६॥
आसिन महीनो लागियो, उधो कह गया मोय।
कल घर आसी घनश्याम, दुःख काहे को होय॥ ७॥
कातिक महीनो लागियो, सखी रल मिलके जोय।
आज घर आये घनश्याम, म्हारे आनन्द होय॥ ८॥
मंगसिर महीनो लागियो, चाले ठण्ढी सी लोय।
लीनी प्रभु हिवड़े लगाय, अंखिया लीनी धोय॥ ९॥
पौष महीने कांई रोशनी, सेजांमें रही सोय।
सूती राधे सुख भर नींद, म्हारे आनन्द होय॥ १०॥
माघ मास वसंत पंचमी, रंग केशर घोल।
उड़े सखी अबिर गुलाल, आंगण कीचड़ होय॥ ११॥

फागण महीनो लागियो, गणपतिने मनाय।
विष्णु गणेश मनायां, जी म्हारे आनन्द होय ॥ १२ ॥
गावे बारामासियो, ज्याने वैकुण्ठारो वास।
सुण जिनकी आशा, मनस्या पूरे लक्ष्मीनाथ ॥ १३ ॥
टोरू विप्रको बीनती, सुनो प्रभु चित लाय।
लीला थारी गावांजी रखियो शिर पर हाथ ॥ १४ ॥

७१९--रागिनी सोहनी भैरवी

रखूं आस हरदम तिहारी मुरारी ॥टेक॥
तेरे समान देव नहीं दूजा, लोनी मैं शरण तिहारी मुरारी ॥१॥
मैं मतिमन्द कुछ नहीं जानत, तुम समरथ करतार मुरारी ॥२॥
तूं ही करता जगका परिपालन, तुझको है शर्म हमारि मुरारी ॥३॥
वेद तुम्हारी महिमा गावे, तुम हो बड़े उपकारि मुरारी ॥४॥
अजामिल गज गणिका तारी, मेरी खबर क्यूं न लेवो मुरारी ॥५॥
तुम ही पार करोगे बेड़ा, लेना खबरिया कृष्ण मुरारी ॥६॥
टोरू विप्र दास चरणनका, चाह दर्शणकी लगी है मुरारी ॥७॥

७२०—दादरा

मैं दास तिहारो महावीर बलकारी, इष्टदेव मैं शरण तिहारी।
ले अवतार उदयाचल पहुंचे, मुखमें लियो सूर्य बलकारी ॥
सुग्रीव रामकी करवाय मित्रता, मरवा दिया वाली बलकारी।
सीता की सुधि ले लंक पधारे, लांघ गये सागर भारी ॥
लेय मुद्रिका पहुंचे बागमें, जहां बैठी थी जनक दुलारी।
बाग विध्वंश किये लंक जलाई, सिया सुधि लाये बलकारी ॥

राम लखण संग फौज चढ़ाये, रावण की सब सैन्य संहारी ।
शक्ति बाण लग्या लिछमणके लाय संजीवन जिवाये बलकारी ॥
जाय पताल अहिरावण मारा देवीकी काया बने बलकारी ।
अंजनि सुत पायक रघुवरके, बजरंग आप भक्त हितकारी ॥
शालासरमें आप विराजै, दर्शण करे सबही संसारी ।
दर्शण किये महा सुख उपजै, सेवकों की रक्षा करे भारी ॥
जो हित चितसे ध्यान लगावे, मन इच्छा फल पावे नरनारी ।
ध्वजा नारियल भोग चढ़ावे, सुख संपत देता बलकारी ॥
इष्टदेव हम तुमको मनावें क्षमा करो तकसीर हमारी ।
टोरू विप्र शरण तेरी आयो, रखिये लाज बजरंग बलकारी ॥

७२१—रागनी भैरवी भीम पलासी

भक्तनके हित अवतार लिये, पृथ्वी पर कृष्ण दयालूने ॥टेक॥
जब भक्तन में भीड़ पड़े प्रभु, जहाँ देखो मौजूद खड़े ।
कितने भक्तनके काज अड़े, झट करी सुनाई दयालू ने ॥१॥
बालक ध्रुव बनको सिधाये थे, नारद मुनि ज्ञान सुनाये थे ।
प्रभु आप प्रकट हो आये थे, छातीसे लगाया दयालू ने ॥२॥
रुकमणिने पत्री पठाई थी, प्रभु झटपट करी सुनाई थी ।
अम्बिका पूजण आई थी, हरी विपति कृष्ण दयालू ने ॥३॥
नरसी कारण सेठ बने, दियो माहिरो नानी बाई ने ।
टोरू विप्रकी अर्जी क्यों न सुने, कर जोर कहूं कृष्ण दयालू ने ॥४॥

——

७२२—रागिनी भैरवी भीम पलासी

कर ईश्वरको याद तेरी सब तरह से मनस्या वोही भरे ॥टेक॥
सब जगमें उसकी माया है, उस ही ने ख्याल रचाया है।
झूठी को सत्य दर्शाया है, बन्दा क्यों पच पच झूठ मरे ॥१॥
और सबके नाती है, दुःख में कोई न संग साथी है।
नौबत दम पर जब आती है, सब खड़े देखते रहें परे ॥२॥
नैया कृष्ण ही पार लंघावे, और कोई न आड़ो आवे।
नर क्यूं तूं उसे भुलावे, तूं क्यूं न उसीका ध्यान धरे ॥३॥
श्री कृष्ण कहो जिससे काज सरे, रघुनाथ विना दुख कौन हरे।
वर्षा बिन सागर कौन भरे, टोरू विप्र कहे रट राम हरे ॥४॥

टोरमल शर्मा

७२३—भजन

(तर्ज-पनिहारी की)

बन्दा गंदा मत होय अन्धा, भजन कियेसे सुख पासी।
ऐसा भजन करो मेरे प्यारे, कटज्या तेरी लख चौरासी ॥टेक॥
लख चौरासी भटकत भटकत, मिनखां देह दुरलभ पाई।
अब तो चेत सुघड़ नर बंदा, क्यों खोदे हाथां खाई॥
गरभ वासमें कौल किया था, भजन करूंगा तेरा रघुराई।
बाहर आन पड्यो धरणी पर रुदन करण को ठहराई॥
बालापण हंस खेल गुमायो, लाड़ लड़ायो तेरी माई।
बालापण गयो बीत मुसाफिर, अब तेरी ज्वानी आई॥

धूमधामसे व्याह रचाया, दुलहिन लायो नखराली ॥१॥
भरी जवानी तिरिया मोह्या, बोल बोल मीठा वाणी।
मात पितासे राड़ मचावे, जाय बोले तिरिया कानी ॥
गई जवानी आयो बुढ़ापो, खाट पड़्यो मांगे पाणी।
घर की तिरिया यूं उठ बोली, कूच करो थे दिल ज्यानी ॥
कालबली का लगे तमंचा, निकल जाय तेरी सहलानी।
दिया लिया तेरे संग चलेगा, पीछे नहीं आनी जानी ॥
कुटुम्ब कबीला देखत रहज्या तूं होसी मरघट वासी ॥२॥
कौन किसीका कुटुम्ब कबीला, कौन किसीका भाई जी।
चढ़नेको दोय बांस, ढकण को मल मल लेव मंगाई जी ॥
पांच सात मिल भेला होकर, अरथी लेय बणाई जी।
च्यार जणाके कांधे चढ़ोगे, मरघट दे पहुंचाई जी ॥
जल बल हो जा खाक सुरत वो फेर नजर नहीं आई जी।
भजन किया सोई पार उतर गया, यूं वेदां मुख गाई जी ॥
चुन्नीलाल कहे भजन किये से, अन्न धन मुकती सब पासी ॥३॥

७२४—भजन

(तर्ज-जकड़ीकी)

जगतमें हरि भजन है सार।
हाथ पसारे आया मुसाफिर, जासी हाथ पसार ॥१॥
तेरी मेरी करतो फिरे है, दिन भर चुगली चाल।
माल खजाना धरा रहेगा, झपट लेयगा काल ॥२॥

बड़े बड़े महाराजा खप गये, जिनकी के गत भई ।
कौरव पांडव लड़ कर मर गये, बसुधा संग ना गई ॥३॥
करता हो सो करो मुसाफिर, पल पल बीती जाय !
प्राण पखेरू उड़ चले तब पड़े धरण मुंह वाय ॥४॥
झूठा है तेरा महल म्हालिया, झूठा तेरा ठाट ।
तीन हाथ कफफन मिलेसे जी सागे मण भर काठ ॥५॥
राम भजन और अतीथि सेवा, करना पर उपकार ।
चुन्नीलाल कहे भज भगवतको, होज्या बेड़ापार ॥६॥

७२५—भजन

(तर्ज–हां रे वाला इन सरवरियांरी पाल)

हाँरे मूरख बैठ्या भजो श्रीराम,
मुक्ति होय ज्यायसी जी मेरा राम ।
हाँरे लोगो काल बड़ो बलवान,
एक दिन पापी खायसी जी मेरा राम ॥१॥
हाँरे मूरख सुन्दर तेरी या देह,
मिट्टीमें मिल ज्यायसी जी मेरा राम ।
हाँरे मूरख प्राण पखेरू उड़ जाय,
पड़्यो मुख बायसी जी मेरा राम ॥२॥
हाँरे मूरख यो तेरो परिवार,
नेड़ो नहिं आयसी जी मेरा राम ।
हाँरे मूरख बास गली का लोग,
मरघट ले जायसी जी मेरा राम ॥३॥

हाँरे मूरख बने सो कर उपकार,
करघोड़ा आड़ा आयसी जी मेरा राम ।
हाँरे मूरख अवही तूं भज भगवान,
वड़ो तूं कुहायसी जी मेरा राम ॥४॥
हाँरे लोगो कहता चुन्नीलाल भजेसे,
सुख पायसी जी मेरा राम ॥५॥

७२६—भजन

(तर्ज-खटमलकी)

हाँरे मुसाफिर क्या सोता, चेतो कर मूरख क्यूं सोता ॥टेक॥
तेरे पाँवमें बेड़ी पड़ी है, आगे मंजल भोत कड़ी है ॥ मुसा० ॥१॥
गफलत की निद्रा त्यागो, अब भाग्या जाय तो भागो ।
या दुनिया है दो रंगी, यहाँ कोइयन तेरा संगी ॥ मुसा० ॥२॥
जरा सोच समझ कर देखो, यहाँ हारणको के लेखो ॥ मुसा० ॥३॥
यह यौवन और नादानी, फिर जायगा एक दिन पानी । मुसा० ॥४॥
दुनियाको देखो प्यारा, यह चला जात संसारा ॥ मुसा० ॥५॥
उठत वैठत जपना, यहाँ कोई नहीं है अपना । मुसा० ॥६॥
चुन्नीलाल यों कहता, वो शहर रतनगढ़ रहता ॥ मुसा० ॥७॥

७२७—भजन

(तर्ज-ऊँचे धारे तीतर बोल्यो)

यो संसार रैनको सुपनो, राम नाम मुख बोल,
मूरख लगै न तेरो मोल ॥टेक॥

काया माया सकल पदारथ यो झूठो रमझोल ।
ओले छाने पाप कमावे, आगे निकले पोल ॥ मूरख० ॥१॥
क्या ले आया, ले जायगा, दिलकी घूंडी खोल ।
आया था कह भजन करूंगा, ये कीन्या था कौल ॥ मूरख०॥२॥
भजन करणसे पार उतरसी, काया है अनमोल ।
कहता चुन्नीलाल भजन कर समझो फूट्या ढोल ॥ मूरख० ॥३॥

७२८—भजन

दीन दयाल दरस द्यो मुझको, कबको खड़्यो मैं अर्ज लगाऊं ।
याद करूं मेरी करणीको डर लागे मनमें घबराऊं ॥१॥
मैं हूं नाथ अधर्मी पापी, कब लग मेरा दोष गिणाऊं ।
अब तो नाथ शरण लई तेरी, तुझको छोड़ किस पा जाऊं ॥२॥
कितना पापी तारया नाथ जी, किन किन को मैं नाम गिनाऊं ।
दीन दयाल तेरो नाम कहीजे, यही कारण मैं माफ कराऊं ॥३॥
ऐसी कृपा करो मुझ पै, भवसागर से मैं तिर जाऊं ।
चुन्नीलाल कर जोर कहत है, यो बरदान दया कर पाऊं ॥४॥

चुन्नीलाल शर्मा

७२९—भजन

(रंगत-चौबोला)

नमो नमो जगदीश, तूं है सृष्टी रचने हार ।
मम विनती सुनलो प्रभू, दीन बन्धु करतार ॥
चौबोला—दीन बन्धु करतार सर्व आधार न पाता ।
मेटो अज्ञान द्यो भक्त ज्ञान विद्याको दान मैं चाता ॥

तुम हो रक्षक मैं हूं भिक्षुक देवो सुशिक्षा दाता ।
को तुम समान विज्ञानवान तोय दयावान वतलाता ॥

झड़———दयाकर तिमिर मिटावो । ज्ञानको भानु उगावो ॥
अरज मेरी सुण लीजै । वुद्धि की वृद्धि कीजै ॥
प्रभु सबके हितकारी ।
दया दृष्टि कर आप मेट देवो तीनूं ताप हमारी ॥१॥

दोहा——हे ईश्वर परमात्मा सच्चिदानन्द निर्दोष ।
कुवुध निवारण, दुख हरण, सुख दायक सुखकोष ॥

चौवोला—सुखदायक सुख कोष परम पितु अर्ज मेरी सुण लीज्यो ।
शरणागत प्रतिपालक रक्षक, निर्मल वुद्धि कीज्यो ॥
तिमिर मेट द्यो कर प्रकाश मोय दान ज्ञानको दीज्यो ।
सर्वानन्द प्रद हे परमेश्वर, प्रसन्न मेरे पर रीज्यो ॥

झड़———सर्व सुखदायक देवा । करूं मैं तेरी सेवा ।
आप विन कौन हमारा । तुम्हारा लिया सहारा ॥
कृपा मेरे पर कीज्यो ।
काम क्रोध भय लोभ मोहकी वचा मार से लीज्यो ॥२॥

दोहा——हे इन्द्र हे परमात्मा, हे नाथनके नाथ ।
शरणागतकी लाज रख, मैं हूं दीन अनाथ ॥

चौवोला—मैं हूं दीन अनाथ नाथ तोय माथ नाय गुण गाऊँ ।
सत्य व्रत नियम निभाय-प्रेम-भक्ति करूं यो वर चाऊँ ॥
धर्माचरण पूरण मन निर्मल धर ध्यान चित लाऊँ ।
शरण आपकी हरण क्लेश दुख, मिटै सर्व सुख पाऊं ॥

झड़——आप जग रचने हारा। नहीं कोई तुमसे न्यारा॥
सर्वके हो आधारा। अनन्त प्रकाश तुम्हारा॥
प्रभु परिपूरण स्वामी।
बाहर भीतर एक रस व्यापक सबके अन्तर्यामी॥३॥
दोहा——हे विष्णु हे विश्वपते विश्वभर भगवान।
रक्षित शिक्षित कीजिये, मम सेवक निज जान॥
चौबोला——मम सेवक निज जान प्राणपति, दयावान दुख हरणा।
तज अभिमान गुमान ध्यान धरूं लिया आपका शरणा॥
हे स्वामी प्रभु अन्तर्यामी सुनो हमारी करुणा।
भक्तन हितकारी दुष्ट प्रहारी, पलक न हमें विसरणा॥
झड़——सर्व सुख सम्पत्ति दाता। अचल अज नाथ विधाता॥
भक्त तेरा गुणगाता। परम पदवीको पाता॥
जगतके सिरजन हारा।
तुम स्वामी सेवक मैं तेरा, कर मेरा निस्तारा॥४॥
दोहा——हे जगदीश्वर जगत पति, हे जगजीवन प्राण।
विश्व विनोदक ज्ञानप्रद, तेजोमय भगवान॥
चौबोला——तेजोमय भगवान महा गुणवान सृष्टिके स्वामी।
पुरुषोत्तम उत्तम सबसे तम नाशक अन्तर्यामी॥
स्वयं प्रकाशी अविनाशी अघनाशी तुम्हें नमामी।
भक्तन प्रतिपालक दुर्जन सालक अनन्त लोक रचे स्वामी॥
झड़——मेरे तुम जीवन प्राना। देवो बुद्धि वरदाना॥
नहीं कोई आप समाना। जगत सब सुपना जाना॥

हृदय मम ज्ञान प्रकाशो।
कृपा दृष्टि कर नाथ मेटज्यो जन्म मरणको सांसो ॥५॥

७३०—राग जैजैवन्ती

नमो नमो जय जय निर्धारा, सब जगके आधारा जी ॥ टेक ॥
नमो नमो जय अज अविनाशी, नमो नमो भक्त सिताराजी।
नमो नमो हरि अथाह अतुला नमो अपरंपाराजी ॥ १ ॥
नमो नमो हे दीनदयालू नमो हे सिरजनहाराजी।
नमो नमो निर्गुण गुणवंता, प्राणों से भी प्याराजी ॥ २ ॥
नमो नमो हे परम दयालू, नमो हे जग विस्ताराजी।
नमो नमो प्रभु परम पितामह नमो हे अधमोद्धाराजी ॥ ३ ॥
नमो नमो शिव हे भूतेश्वर भव भंजन दुख टारा जी।
विष्णु शरणो लियो आपको, तुम विन कोन सहाराजी ॥ ४ ॥

७३१—भजन

नमो नमो हे चेतन स्वामी निरंजन देवाजी ॥ टेक ॥
विश्व विनोदक ज्ञान स्वरूपं, करूं तुम्हारी सेवाजी।
शरणागत प्रतिपालक रक्षक अत्यानन्द त्रिदेवाजी ॥ १ ॥
सुख स्वरूप हे अन्तर आत्मा प्राज्ञानी सुख देवाजी।
जीवन प्राण म्हामें आपका कोई न पावे भेवाजी ॥ २ ॥
मद मर्दन भव भंजन रंजन दुष्टोंका प्राण हरेवाजी।
भक्तनके प्रति रक्षक स्वामी, मंगल मोदक रेवाजी ॥ ३ ॥
श्री गुरु कालूराम पूर्ण मिले ज्ञानसे कान भरेवाजी।
विष्णु ईश अचल अविनाशी सब ही काम सरेवाजी ॥ ४ ॥

७३२—भजन

करुणा सुणो हमारी जगतपति भवभंजन न्याय प्रचारी ॥टेक॥
करुणा भै पितु सकल जगतके, जगत चराचर धारी।
जड़ चेतन स्थावर जंगम यह बहु भाँति बिस्तारी ॥ १ ॥
सभी आसरे नाथ आपके सर्वोपरि सुखकारी।
स्व भक्तोंको आनन्द दाता, तमनाशक अघ हारी ॥ २ ॥
दयानिधे नाम आपको हे प्रभो अधमोद्धारी।
करके दया शरण देवो अपनी मैं हूं अधम अपारी ॥ ३ ॥
श्री गुरु कालूराम पूर्ण मिले हियो उपदेश बिचारी।
विष्णु ध्यान धरो ईश्वरका तव होवे बेड़ा पारी ॥ ४ ॥

७३३—भजन

सुख संपत्तिके दाता दयामय निगुण नाथ विधाता ॥ टेक ॥
समझ समझ मन अधम अनाड़ी, हरिगुण क्यों नहिं गाता।
मोसर गया हाथ नहीं आवे, बहुभाँति समझाता ॥ १ ॥
दयानिधे प्रभु कृपाके सागर वांको ध्यान न लाता।
अमृत फल क्यों छोड़ हाथसे विषफल रुच रुच खाता ॥ २ ॥
पाप पुण्यका फल जो सुख दुख से सबको भुगताता।
अन्तर्यामी घटकी जाणे, वांसे कहा छिपाता ॥ ३ ॥
अधरमसे मन दूर हटाके, धरमके बीच लगाता।
भक्ती कर हरिगुण गायेसे, आनन्द पद पाता ॥ ४ ॥
दुष्टनको भय कारी प्रभूजी, हरिजनको सुखदाता।
विष्णु करो भजन ईश्वरका क्यों मनको भटकाता ॥ ५ ॥

७३४—राग कल्याण

व्यापक है घट घट के मांई, देखत सबका काम है ।।टेक।।
वो प्रभु सबके मनकी जाणे नहिं बात उनसे कोई छाने ।
रेणु से आकाश पर्यन्ता, उसने रचा तमाम है ।। १ ।।
सूर्य चंद्रमा पृथ्वी तारा, ग्रह उपग्रह नक्षत्र सारा ।
लोक लोकांतर अनंत बनाकर, रखा सता में थाम है ।। २ ।।
है व्यापक वो अन्तर्यामी, दीनबंधु प्रभु सबके स्वामी ।
सच्चिदानन्द अनादि अनूपम, सबमें रम रहा राम है ।। ३ ।।
मन बच कर्मसे पाप न करणा, शरण होय ईश्वरकी तरणा ।
विष्णु जाप जपो नित प्रभु का, ओंकार निज नाम है ।। ४ ।।

७३५—भजन

भज ओंकार नर भव सिंधु तर जावे ।।टेक।।
आलस्य शत्रू मार हटावो, गुरुजन ज्ञान सुनावे ।
चेत करो और सावधान हो, सारा भेद जणावे ।। १ ।।
काम क्रोध मद लोभ के बश हो, मत ना पाप कुमावे ।
चौरासीके चक्कर पर चढ़, फिर फिर गोता खावे ।। २ ।।
राग द्वेष और विषय वासना, क्यों नहीं दूर हटावे ।
क्षण भंगुर समझ इस तनको, समय हाथसे जावे ।। ३ ।।
दुराचारको दूर हटाके, सदाचार मन लावे ।
अधर्मसे मन रोक धर्म में, स्थिर कर धर्म बंधाये ।। ४ ।।
साथी संगी कोई न किसको, कोई सङ्ग ना जावे ।
धर्म सहायक सङ्ग रहत है, जो कोई धर्म कमावे ।। ५ ।।

मन इच्छासे पाप कर्म तज, जो ईश्वर गुण गावे।
कष्ट क्लेश मिटे सब उसका, मुक्ति पदारथ पावे ॥ ६ ॥
कृपा करो गुरुदेव दयालू भूल्यां राह बयावे।
चेते है तो चेत मूरख नहिं मोसर बीत्यो जावे ॥ ७ ॥

७३६—भजन

शान्ति देवो मेरे हृदयको, दयामय सामरथ श्रीभगवान ॥टेक॥
स्तुति करूं सायं और प्रातः, परम पितामह जान।
मेटो ताप पाप सब मेरा, नहिं कोई आप समान ॥ १ ॥
चञ्चल मन गति रति बीच, दौर हो रही महा बलवान।
तृष्णा आश त्रास अति दे रही कर रही व्याकुल प्राण ॥ २ ॥
कभी काम अति जोर चढ़ जावे, कभी क्रोध वेइमान।
कभी लोभ अरु मोह सतावे, भय करता हैरान ॥ ३ ॥
श्रीगुरु कालूराम जी, मने दियो कृपा करि ज्ञान।
विष्णु तव शान्ति हो प्राप्त, धरो प्रभूका ध्यान ॥ ४ ॥

७३७—भजन

समझ समझ मन समझ अनारी, मोसर बीत्यो जाय रे ॥टेक॥
समय अमूल्य हाथसे जावे, कछू मनमें क्यो पाय रे।
पछतासी दुख पासी तब तो, फेर न पार बसाय रे ॥ १ ॥
ये धन धरणी दारा सुत तेरे, चलै न संग लिवाय रे।
लागे आय कालको घेरो, एकलड़ो उठ जाय रे ॥ २ ॥
अति अभिमान ठान दिल अपने, विषयमें रह्यो लुभाय रे।
उस दिनका तोय सोच नहीं है, क्षणमें जाय विलाय रे ॥ ३ ॥

कृपा करी गुरुदेव दयालू, दीनी राह वताय रे।
विष्णु समझ सोच कर मनमें, ईश्वरका गुण गाय रे ॥ ४॥

७३८—राग झंझोटी

प्रभु मैं शरण आयो तेरी, करो रक्षा मेरी ॥टेक॥
अधमोद्धारक अघनाशक प्रभु स्वयं प्रकाश करी।
अचल अखण्ड एक रस व्यापक अव मत करज्यो देरी ॥ १ ॥
अविनाशी है नांव आप को, ईश शरणमें होरी।
विष्णु व्यापक हो घट घट में जी कृपा जो दृष्टि करोरी ॥ २ ॥
दयासिंधु करो दया दीनों पर दुष्टोंको भय घोरी।
जो कोई शरण आपकी आयोजी भवसिंधुसे तरोरी ॥ ३ ॥
मैं अति दीन, विषय शत्रुकी सैन्य चौतरफी घेरी।
तुम विन प्रभु नहिं कोई सहायकजी, काटो यमकी वेरी ॥ ४ ॥
श्रीगुरु कालूराम सभीको सत्य उपदेश करयोरी।
कह भैरू विष्णु सहारो ले जी, भजन वणाय कहोरी ॥ ५ ॥

७३९—राग सोरठ विहाग

मना तने समझायो वहु वार ॥टेक॥
अपणा घरमें स्थिर होय वैठो, कहता हो लाचार।
भटके सेती भलायन वाजो, निन्देगी संसार ॥ १ ॥
गुरु वचनाकी रहस्य पिछाणो, करके खूव विचार।
सत्यासत्यको निर्णय कर लेवो, परम धरमको धार ॥ २ ॥
स्वामीकी सेवामें तत्पर, होकर उतरो पार।
परमानन्दका भागी होकर, सत्संग पर उपकार ॥ ३ ॥

श्रीगुरु कालूराम कहे जपो बीज मंत्र ओंकार।
विष्णु बेड़ा पार करेगो, सामर्थ सरजनहार ॥ ४ ॥

७४०—भजन

मना रे क्यों समय अमूल्य गुमावे ॥टेक॥
नाच गाय कर चोंचला हंस हंस जगत रिझावे।
प्रभु नहीं भजे करे ना सुकरत पल पल बीती जावे ॥ १ ॥
जिस कारण जगत् में आयो वो नहीं काम वणावे।
विषय वासना मांय लपट रह्यो प्रभुमें न सुरत लगावे ॥ २ ॥
भाई बन्धु कुटुम कबीलो कोई संग ना जावे।
अन्त समयका बजे नगारा एकलड़ो उठ धावे ॥ ३ ॥
भजन करो भवसागर उतरो यूं गुरु ज्ञान सुणावे।
बिष्णु ईश अचल अविनाशी बेड़ा पार लंघावे ॥ ४ ॥

७४१—भजन

मना रे तूं या विधि नेम निभाय ॥टेक॥
शील सन्तोष दया दिल धारो ईश्वरके गुण गाय।
समदम धीरज शान्त करो मन सकल कष्ट टल जाय ॥ १ ॥
राग द्वेष अभिमान त्याग कर सबको सुख पहुंचाय।
शत्रु मित्र कोई नहीं तेरा समदृष्टी होय जाय ॥ २ ॥
मिट्टी सम परधनको समझो पर तिरियाको माय।
आतमवत सब प्राणी समझो परम पदवीको पाय ॥ ३ ॥
श्रीगुरु कालूराम पूर्ण मिले, दी शिक्षा समझाय।
विष्णु ईश अचल अविनाशी वामें चित्त लगाय ॥ ४ ॥

७४२—भजन

मना रे यह तन स्थिर नांय रहाय ॥टेक॥
सुकृत करो डरो दुष्कृतसे, समझ सोच पग ठाय ।
तज अभिमान ज्ञान कर देखो, पल पल बीती जाय ॥ १ ॥
काल चक्र दिन रैन चलत है, थमत पलक भर नांय ।
सावत रह्यो न रहसी कोई, आकर ईश कमाय ॥ २ ॥
रहना नहीं चलना है बिलकुल, जो आवे सो जाय ।
यामें ना सन्देह समझ मन, फूलनसे कुमलाय ॥ ३ ॥
श्रीगुरु सत्योपदेश देय कर दीनी राह बताय ।
विष्णु ईश अचल अविनाशी भजे से मुक्ती पाय ॥ ४ ॥

७४३—भजन

त्यारो अधम जान भगवान शरण मैं तो आपकी गही ॥ टेक ॥
रैन दिवस रहो मगन विषै मैं कछू न पड़ी हमें जान ।
ईश इस जगतीमें कोई न संगी आप ही मेरे प्राण ॥ १ ॥
दारा सुत सम्बन्धी सारा है मतलब की जहान ।
साचे मित्र आप हो प्रभु करूं आपका ध्यान ॥ २ ॥
हो तुम हमारे अन्तर्यामी आप समान न आन ।
केवल एक भरोसो थारो तुम ही करोगे कल्याण ॥ ३ ॥
हे विष्णु व्यापक जगजीवन देवो बुद्धि वरदान ।
कह भैरू मम ये प्रार्थना देवो भगती अरु ज्ञान ॥ ४ ॥

७४४—राग परज

करुणा सुणो हमारी प्रभु जी मैं शरणागत थारी ॥ टेक ॥
कुटिल हृदय लंपट खल कामी, मैं हूं अधम अपारी।
अधम उधारण नाथ उधारो, अपणी कृपा पसारी ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह की, मंड रही निसदिन ब्यारी।
मन स्थिर रहण देत नहिं पलहुं, संकल्प विकल्प भारी ॥ २ ॥
जर जर नाव सिन्धु जल गहिरा, फैल रही अंधियारी।
तरंग रही झखझोर जोर से, वेग उतारो पारी ॥ ३ ॥
दीन दयालु कृपालु कृपानिधि, भवभंजन दुख हारी।
विष्णु ईश अचल अविनाशी, भगतनके हितकारी ॥ ४ ॥

७४५—लावणी

(रंगत लंगड़ी)

समय हाथसे जाय, फेर पछिताय, अरे मन समझाले।
चेत अज्ञानी छाड़ नादानी जरा हरि गुण गाले ॥ टेक ॥
भरम्यो फिरे वृथा जग मांई ध्यान हरीका नांय धरे।
करे न सुकृत कुकर्मी पाप कर्मके मांय परे ॥
हिंसक निन्दक कामी क्रोधी लोभ मोहसे नहीं टरे।
महा अभागा आलसी आलसमें सब कुछ विसरे ॥
काम के वस होय तब एक कामनी का ध्यान है।
क्रोधके वश होयके कछु धर्मका नहीं ज्ञान है ॥
लोभके वश होय तब निशि दिन नहीं ओसान है।
मोहके वश होय मायाजाल में गलतान है ॥

भय से हो भयभीत प्रीत ईश्वरसे तू कछु नहीं पाले ॥१॥
ये तन जान ओस का मोती धूप लगेसे कुम्हलावे ।
फिर काम न आवे अनाड़ी क्यांपर इतणो इतरावे ॥
आयु क्षणभंगुर तरंग ज्यूं जाती वार नहीं लावे ।
चमके बीजरियां बीजरियां चमक ज्यूं घनमें छिप जावे ॥
दिन चारके साथी तेरे प्यारी कुटम परिवार है ।
संग ना जावे करता तूं जिन्होंसे प्यार है ॥
भर्ममें भटक्यो फिरे दिल में न सोच विचार है ।
ज्ञान ना तुझको इता ये सार है कि असार है ॥
मदकी निद्रा त्याग जाग ज्यूं सत मारग अन्दर चाले ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ त्याग कर सत्य धर्ममें चित्त धरो ।
मोह ममतासे रहित हो तन मन से पर हित करो ॥
सम दम धीरज दान दया ये नेम पालना मत विसरो ।
सायं प्रातः करो निज प्रभु की भक्ति से मती टरो ॥
नाम है निज ॐ प्रभुका रैन दिन गुण गाइये ।
तिमिर नाशक दुःख विनाशक सुखप्रकाशक ध्याइये ॥
जग पसारी मायाधारी न्यायकारी रिझाइये ।
दीनबन्धु दयासिन्धु शरण हो सुख पाइये ॥
जग है जाल देख मत भूले या से निकल वो घर पाले ॥३॥
वोई मात जगतकी जननी वोई पिता वोई देवा ।
वोई है बन्धु विधाता नाथ करो उनकी सेवा ॥
वोही मित्र वोही धन सम्पत्ति है विद्या बुद्धिका वोही देवा ।

वोही है सबका परम गुरु पावे नहिं उनका भेवा ॥
ईश अविनाशी अगोचर अचल सुखका धाम है।
अनन्त महिमा वेद गावे कोटि मम प्रणाम है ॥
आचार्य कालूराम जी दी न्याय भेद तमाम है।
विष्णु कह सतगुरु चरण प्रणाम आठूं याम है ॥
गावे भैरूंराम सभा में सुनते श्रेष्ठ सभा वाले ॥४॥

७४६—लावणी

(रंगत छोटी)

मैं विनय करूं कर जोर अरज सुन लीजे।
मोय अभय दान भगवान् कृपा कर दीजे ॥टेक॥
तुम दयासिंधु जगदीश सर्व हितकारी।
अरु अभय अनादि अनन्त अज त्रिपुरारी ॥
अन्तरयामी परमेश्वर पर उपकारी।
निरविघ्न निरंजन शरण लई मैं थारी ॥
निरमल बुद्धि कर ज्ञान यथार्थ दीजे ॥१॥
निर्भय होकर के रैन दिवस गुण गाऊं।
बिन अपराध जीव मात्रको नहीं सताऊं ॥
मैं सबसे प्रतिपूर्वक नियम निभाऊं।
ना दुःख द्यूं किसी को सबको सुख पहुंचाऊं ॥
हे प्राणप्रिय मेरी ऐसी बुद्धी कीजे ॥२॥
प्रभु सूर्य्य चन्द्रमा पृथ्वी और सब तारे।
अग्नि जल वायु सहायक होय हमारे ॥

औषधी वनस्पती वृक्ष इत्यादि सारे।
दिगकाल रहे सुखदाई और दुःख टारे॥
प्रभु तीनों ताप निवार पाप सब छीजै॥३॥
मोय ये वर द्यौ भगवान ज्ञान निज चेरो।
सब दुरमत दूर हटाय ज्ञान उर प्रेरो॥
मैं दीन तेरे आधीन भक्त हूं तेरो।
नहीं तुम विन दूजो और हे स्वामी मेरो॥
हे सब जगके प्रतिपालक पालना कीजे॥४॥
विष्णु अविनाशी व्यापक सरजनहारा।
जड़ चेतन स्थावर जंगम रचा संसारा॥
प्रभु अनन्त शक्तिसे सकल जगत को धारा।
विष्णु कर उसका ध्यान हो वेड़ा पारा॥
गुरु कालूरामजी दियो ज्ञान सु अमृत पीजे॥५॥

७४७—लावणी

(गुरु महिमा)

हुवा सुख पूर्वक आनन्द लिया गुरु चरणा।
दिया सत्यधर्म वतलाय पड़े जा चरणा॥
म्हाराज गुरु है जगमें त्यारण हार।
ध्रुव प्रह्लाद इत्यादि तिर गये गुरुजनके आधार॥टेक॥
विन मिले न सतगुरु ज्ञान प्राप्त होवे।
कई जनम जनमका पाप गुरुजन धोवे॥
म्हाराज गुरुजन गुरू है देवनका देव।

भक्ति मुक्ति अरु ज्ञान प्राप्ति हो किये गुरुकी सेव ॥
कई योगी यती संन्यासी भये तपधारी ।
अरु ऋषि मुनि कई हुवे बाल ब्रह्मचारी ॥
म्हाराज ज्ञान सबने गुरुसे पायाजी ।
हुई गुरुजनकी म्हर सत्य मारग दरसायाजी ॥
जिन जिन शरणा लिया जाय गुरुजनका ।
तब निर्मल बुद्धि हुई भर्म गया मनका ॥
म्हाराज गुरु बिन ना कोई उतरयो पार ॥१॥
हुए वालमीकिसे जन्म भील घर लीने ।
ले धनुष हाथ ऋषि मुनियोंको दुख दीने ॥
म्हाराज एक दिन आये सनतकुमार ।
उनको मारण चले भील वो धनुष बाण कर धार ॥
तब उन ऋषियोंने उनके मनकी जानी ।
यह मूरख अज्ञान महा अभिमानी ॥
म्हाराज उसे कही कछुक धीरज धार ।
तूं पाप काम करता है सो भोगेगा कौन, विचार ॥
सुन इती भील कही थमो आप मैं जाऊं ।
आप चल्या न जायो घर जाकर पूछ आऊं ॥
म्हराज भील तब गयो आपके द्वार ॥२॥
जा माता पिता सुत दारासे बतलाया ।
मैं करके हिंसा सुनो बहुत द्रव्य लाया ॥
म्हाराज खुश होकर सबने मिलके खाया ।

इसका फल कुण भोगेगा मोय शंका आया ॥
यूं मात पिता सुत दारा वचन उचारा ।
जो करता सो भोगता पाप पुण्य प्यारा ॥
म्हाराज इती सुनके वहां आया जी ।
जहां बैठे थे ब्रह्मर्षि कमल पदमें सिर नायाजी ॥
मैं शरण लई गह चरण हरण दुख कीजे ।
मोय भवसागर की धार पार कर दीजे ॥
म्हाराज ऋषि उपदेश दिया निज सार ॥३॥
कीन्या जप लीन्या नाम युक्ति सब साधी ।
भई निर्मल बुद्धि मिट गई सर्व उपाधी ॥
म्हाराज झलाझल घटमें झलक्यो ज्ञान ।
करी सेव गुरु देवनकी तब पायो पद निरवाण ॥
जिन पाया गुरु से ज्ञान वो जन्म सुधारा ।
जो गुरुसे वेमुख रहता सो नर हारा ॥
म्हाराज गुरुद्रोही डूबे मंझधार ॥४॥
श्री कालूरामजी परम पूज्य गुरु हमारे ।
करते अभिवादन वार वार हम सारे ॥
म्हाराज गुरांका तेज सवायाजी ।
प्रेम भक्ती अरु सत्य ज्ञान वैराग्य द्रढ़ाया जी ॥
दिया तन मनसे गुरुदेव ज्ञानका चिलका ।
कर दिया तिमिर सब दूर म्हर कर दिलका ॥
म्हाराज दिखाई मनुष्य जनमकी भार ॥ ५ ॥

७४८—रेखता

मैं दीन हूं तुम्हारा, तोय बिन को हमारा ॥ टेक ॥
हे दीनबन्धु ईश्वर, दीनोंके पालनहारा ।
आधीन हूं तुम्हारा, करदे मेरा निस्तारा ॥ १ ॥
बिन आपके इस जगमें, दीखे न कोई सहारा ।
किसकी सरणमें जाऊं, हे प्राणके अधारा ॥ २ ॥
मैं हूं अधम महा कामी, सिर पाप पुंज भारा ।
जिसको हटावो हमसे, हे पापमोचनहारा ॥ ३ ॥
मैं मोह मदिरा पीके. स्वामी तुझे बिसारा ।
भवसिन्धु मांय डूब्यो, अबतो करो निस्तारा ॥ ४ ॥
खोटा हूं या खरा हूं, जो हूं सोहूं तिहारा ।
और किस पास जाऊं, विष्णु हे प्राणप्यारा ॥ ५ ॥

७४९—भजन

मन चेतरे अनारी, क्यों भरम मांय आया ॥ टेक ॥
जग देखके क्या भूला मदमें फिरे है फूला ।
तूं सोचता है नांई, अभिमान मांय छाया ॥ १ ॥
केते भये अभिमानी, जिनकी न है निशानी ।
तूं कौन गिनती मांई, कोई रहण नांय पाया ॥ २ ॥
माता पिता सुत नाती, कोई अन्तके न साथी ।
वोही करे सहाई जिसने तुझे उपाया ॥ ३ ॥

——

७५०—भजन

मन चेतरे दिवाना, मुशकिल है पार जाना ॥ टेक ॥
आशा नदी है भारी, जल है मनोर्थ जारी ।
तृष्णा तरङ्ग उठके, करती है क्लेश नाना ॥ १ ॥
अरु राग ग्राह वामें, वितर्क पक्षि तामें ।
धीरज को वृक्ष डाहै, सुजान रे सुजाना ॥ २ ॥
अरु भँवर जाल मोह है, करड़े से करड़ा सो है ।
बचते रहो टुक या से, करता है यह हैराना ॥ ३ ॥
चिन्ता जो तट है या के, हो पार वोही वांके ।
जो शुद्ध है मन कीना, योगीश ज्ञान ध्याना ॥ ४ ॥
विष्णु अचल अविनाशी, काटे वोही चौरासी ।
रटना रटो नित वांकी, प्रभु है कृपानिधाना ॥ ५ ॥

७५१—राग सोरठ

मनुवा मोसर आयो रे ।
चूके मत ना चाल, काल सिर ऊपर छायो रे ॥ टेक ॥
कृपा हुई करता की जब तैने नर तन पायो रे ।
लावो ले सुकृतको, करले चितको चायो रे ॥ १ ॥
विषवत त्याग विषयको मनसे, क्यों सकुचायो रे ।
विषयमें रत रह्यो सो अपणो जनम गमायो रे ॥ २ ॥
इन्द्रियांको रस भोगतो सभी जूणि में पायो रे ।
मनुष्य जनम मुक्तीको साधन वेद बतायो रे ॥ ३ ॥

भर्म त्याग अब जाग नींदसे गुरां जगायो रे।
ले करवट मत सो पाछे अब दिन उग्यायो रे ॥ ४ ॥
कृपा करी गुरुदेव ज्ञान दे तिमिर नसायो रे।
विष्णु ईश अचल अविनाशी घट घट छायो रे ॥ ५ ॥

७५२—भजन

हेली म्हारी समझ समझ पग ठाय।
बिकट बाट बंटक है भारी, कंटक ना लग जाय ॥ टेक ॥
मोह निशा अंधियारी कारी चोतरफी रही छाय।
माया झाड़ फाड़ रही तन को चलियो ईंसे बचाय ॥ १ ॥
कुकर्म कांटा सूल जबर है भिड़तांई गड़ ज्याय।
होवे दुःख अपार समझ फिर मारग चल्यो न जाय ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ ठग मिल जो कछु हो लेज्याय।
आशा तृष्णा राग द्वेष भै सिंह घर ले आय ॥ ३ ॥
कालूरामजी मिल्या गुरु पूरा दीनी राह बताय।
विष्णु ईश अचल अविनाशी सबकी करे सहाय ॥ ४ ॥

७५३—भजन

(रंगत-भँवर सुपने बतलावे)

समझ समझ मन मूरखो भाई,
चालो समझकर चाल, काल सिर पर गरणावे जी ॥ टेक ॥
आयु क्षण क्षण जाय है भाई, जात न लावे वार।
गई पल हाथ न आवे जी ॥ १ ॥

सुकृत करणा सो करो भाई, धरो प्रभूका ध्यान।
ज्ञान गुरुदेव जणावे जी ॥ २ ॥
ऐसा तनको जाणिये, जैसा नदी किनारे रूख।
लाग्यां झटको डिगावेजी ॥ ३ ॥
और बालूकी भीत सम है या जगको व्यौहार।
पून लगतांई उजड़ जावेजी ॥ ४ ॥
जल तरंग विजली चमक है, जोवन दिन च्यार।
वृथा क्यों अभिमान बढ़ावेजी ॥ ५ ॥
दिलका पड़दा दूर कर, तेरी है आत्मा शुद्ध।
कपट छल छिद्र विहावेजी ॥ ६ ॥
गृह नार नाग सम, मन लगन भाई लगा प्रभूके मांय।
समझ मन देर न लावे जी ॥ ७ ॥
तेरे भीतर है तेरा प्रभु स्वामी सुखका धाम।
खोज करणसे पावेजी ॥ ८ ॥
कर्म वचन मन एक कर भाई, दिव्य दृष्टि जब होय।
प्रभु दृष्टिगत आवेजी ॥ ९ ॥
श्री गुरुदेव दयानिधे, आचार्य कालूराम।
वाक्य उनका मन भावेजी ॥ १० ॥
भ्रम विहंग सुनके उड़्यो श्री गुरु वचन प्रताप।
विष्णु अविनाशी ध्यावेजी ॥ ११ ॥

———

७५४—कव्वाली

भजो नित नाम ओंकारा, रचा जिन जगत संसारा ॥टेक॥

अनारी मान मन मेरा, वहां नहीं है कोई तेरा।
जगत दिन दोय का डेरा, ज्यूं चिड़िया रैन बसेरा॥
यह सब चालण वारा ॥ १ ॥

असुर रावनसे बलधारी, चले गये श्रीराम अवतारी।
कहां लक्ष्मणसे असुरारी, कहां हनुमान विजयकारी॥
भरत कहां भ्रात प्रिय प्यारा ॥ २ ॥

कहां कौशल्या महतारी, मात सीता पतिव्रतधारी।
विश्वामित्र तपधारी, गये सब कालकी वारी॥
लेवो जगदीशका सहारा ॥ ३ ॥

नहीं धन संग जावेगा, यहां का यहां रह जावेगा।
जिस दिन काल आवेगा, नहीं कछु करण पावेगा॥
बांध ले धर्म का भारा ॥ ४ ॥

भरोसा है नहीं पलका, मनसूबा क्या करे कलका।
करणा छोड़ दे छलका, तेरा ज्यूं पाप होय हलका॥
करो दिल से परोपकारा ॥ ५ ॥

जरा दिलमें दया धारो, काम अरु क्रोध ने मारो।
लोभ अरु मोह ने टारो, होय ज्यूं ज्ञान उजियारो॥
विष्णु ईश आधारा ॥ ६ ॥

—

७५५—कव्वाली

खोज घट मांय ईश्वर को, वृथा मन क्यों भ्रमाता है।
ज्ञानकी दृष्टि से देखो, ध्यान करणेसे पाता है ॥टेक॥
जैसे है तेल तिल मांही, प्रगट ना दीखता किसको।
दुग्धके बीच माखन है, मथन करनेसे आता है ॥ १ ॥
अग्नि है काठमें जैसे, रहितकी रियां प्रगट हो।
परस्परके रगड़नेसे अग्नि तत्काल पाता है ॥ २ ॥
ब्रह्म व्यापक है सब जगमें, अणुमात्र नहीं खाली।
योग अष्टांग विधी साध्यां, प्रभु दृष्टिमें आता है ॥ ३ ॥
अनन्त है न्यायकारी है, दयालु दीनबन्धु है।
विष्णु ईश अविनाशी, वाही सुख शान्ति दाता है ॥ ४ ॥

७५६—रागिनी माड़ परज

उठो जी मुसाफिर कसे सूत्ये खूंटी तान ॥टेक॥
सोवत सारी निस गई, करवट बदली नांय।
अरुणोदय होने लग्यो तुम गफलतके मांय ॥
तारागण छिपे आसमान ॥ १ ॥
तुमरे साथी अब तलक उठ उठ गये अनेक।
आलस्य मांई आयके सोय रहे तुम एक ॥
उठो मुख धोवो करो ध्यान ॥ २ ॥
पंथ कठिन चलना अधिक अल्प समय रह्यो आय।
देर न लाओ एक पल फिर ठेठ न पहुंच्यो जाय ॥
फेरुँ थाने होवे है मध्यान ॥ ३ ॥

लख चौरासी लांघके आये इस स्थान।
भगती सड़क पर चलो नहीं होवे दुःख महान ॥
चालो चालो समझ सुजान ॥ ४ ॥
श्री गुरुदेव दयानिधि दया दीन पर कीन।
विष्णु ईश अचल अविनाशी करले मन लवलीन ॥
सतगुरु दीन्यो ध्यान ज्ञान ॥ ५ ॥

७८७—राग मांड

इस ठग नगरीमें आय, मुसाफिर रहणा हुसियार ॥टेक॥
है अति चतुर ठगनमें यह ठग, ठगतां लगे न वार।
निस वासर इनको यही पेशो और नहीं रुजगार ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ठग बैठे वीच वजार।
माया नाम प्रकृति यामें है सबकी सरदार ॥ २ ॥
बड़े वड़े इस नग्रमें आये साहूकार।
संग ल्याये सो दे चले केते कोट हजार ॥ ३ ॥
धर्म कर्म संगो करो सतसंग पहरेदार।
तम नासन हित सतको चासो दीपक द्वार ॥ ४ ॥
श्री गुरु कालूरामजी आचार्य परम उदार।
विष्णु विश्वेश्वर प्रभु वेड़ा करसी पार ॥ ५ ॥

७५८—ठमरी

सहारो हमें एक जगदीश तुम्हारो, हम प्रेम भक्ति दृढ़ धारो ॥टेक॥
आप दयामय पिता वड़े हो, हमें दुर्व्यसनोंसे टारो ॥ १ ॥
हम अति दीन महा खल कामी, तुम विन कौन करे वेड़ो पारो ॥२॥

छल फरेब चतुराई सीखी, अब लागे तेरो नांव पियारो ॥ ३ ॥
हे प्रभु विनय करी अब जानूं, बिन सतसंगति त्यारो ॥ ४ ॥
सत्य वचन गुरु कालूरामको, काम क्रोधको जारो ॥ ५ ॥

७५९—भजन

रे मन हरि भक्तिमें लागो, जलदी दुष्कर्मको त्यागो ॥टेक॥
त्यागो झूठ सत्यमें लागो, कर भजन यो मोसर आगो ।
रख श्रेष्ठ जनांको सागो, सागो है सतसंगको नांव ॥
खोटे मगमें मत दे पांव, सोवत घोर नींदसे जागो ॥ १ ॥
रे मन काम क्रोधने टालो, राग और द्वेष भाव तज चालो ।
फेर जम सेती पड़ै न पालो, चालो सोच सोच पग ठाय ॥
फेर न जगमें गोता खाय, लोभ मद छोड़ सरण प्रभु लागो ॥ २ ॥
अब भजन वीरता धारो, और आलस शत्रूको मारो ।
टुक अपना धर्म निहारो, प्यारो कैसो है उपदेश ॥
है ना पक्षपातको लेस, धार सत्य धर्म सनातन पागो ॥ ३ ॥
करो सब देवकी सेवा, अरु ब्रह्म सच्चिदानन्द है देवा ।
लगा मन उसीका ध्यान करेवा, वांकी अद्भुत माया जोय ॥
प्यारा गाफल मत ना होय, लागो ज्यूं मणियामें तागो ॥ ४ ॥
वेद गुरु वचनमें श्रद्धा करणी, सेवा मात पिताकी वरणी ।
धारणा सत्संगतमें धरणी, श्रीगुरु मिलिया कालूराम ॥
पूर्ण हुआ मनोरथ काम, दुष्कर्म हटा सरण हरि आगो ॥ ५ ॥

———

७६०—भजन

(रंगत आरसीकी)

मन चेत अग्यानी, मत कर नादानी, मदको त्यागरे ॥टेक॥
मनारे परमात्म भगती चित लावो, अधर्मसे मन दूर हटावो ।
स्वधर्म धार आप्त कहलावो, ब्रह्म विचारं मुक्त हो जावो ॥
जीवड़ा सहलानी अब तो जागरे ॥१॥
मनारे शील सन्तोष दया दिल धारो, वस कर इन्द्री मनको मारो ।
पर निन्दादि दोष निवारो, ऋषि मुनियनके वचन सम्हारो ॥
कह गये विज्ञानी ज्यामें लागरे ॥२॥
मनारे मनुष्य जन्म मुसकिलसे पाया, यही समझ स्थिर रहे न काया ।
जावेगा से जो कोई आया, फूलेसे देखे कुमलाया ॥
वेद वखानी दुष्कृत त्यागरे ॥३॥
मनारे कर सतसंग सुधारो, चले नहीं संग धन अरु माया ।
सत्गुरु कालूरामजी पाया, भक्तीका मारग वतलाया ॥
साँची सुन वानी होय वैराग रे ॥४॥

७६१—राग सोरठा

मन रे नाम जपो ॐकार ॥ टेक ॥
विकट भवसागर समझ पैनी है इनकी धार ।
काम क्रोधादि मछली निगल्यां जाय सब संसार ॥ १ ॥
कपट रूपी नाव इसमें डूबती मंझधार ।
खेवटिया सचा विन मिले सकता न कोई तार ॥ २ ॥

सत्य रूपी नाव पर चढ़ मनमें सोच विचार ।
धर्म खेवटिया बना के उतरै परली पार ॥ ३ ॥
मन इन्द्रियोंको जीतके हो नांवके आधार ।
तूं न किसीका है न तेरा कोई मतलबी परवार ॥ ४ ॥
श्री गुरु कालूरामजी दिखलाई अजब बहार ।
विष्णु कहे सतगुरु शरण करो पर उपकार ॥ ५ ॥

७६२—भजन पारवा

जग झंझटसे हट करके, मन मग्न करो ब्रह्म ध्यान में ॥ टेक ॥
एक अखंडित अलख निरंजन, निराकार निरगुण दुःख भंजन ।
तेज प्रकाशक रहित प्रपंचन, है तीनूं काल समानमें ॥
पावो उनको रट करके ॥१॥
निर्गुण निर्मल ज्ञान स्वरूपम्, निर्भय नित्य अनन्त अनूपम् ।
अनहद अतुल्य अलेख अरूपम्, व्यापक है सब जहानमें ॥
लख मन बसमें चट करके ॥ २ ॥
जड़ चेतन जग रची पसारा, अगम अगोचर वेद उचारा ।
कोई न पाया पार अपारा, ऋषि मुनि इनसानमें ॥
क्यों भूल्यो मन हट करके ॥ ३ ॥
विष्णु ईस अचल अविनाशी, पार ब्रह्म घट घटके वासी ।
सुमिर सदा संतन सुखरासी, मन मस्त करो ब्रह्म ज्ञानमें ॥
सत संगतमें उठ करके ॥ ४ ॥

———

७६३—भजन

नर क्या तूं धन को जोड़े, एक दिन सब छोड़ चलेगो ॥ टेक ॥
रे मूरख नर चेत अज्ञानी, बीती जाय तेरी जिन्दगानी।
नेड़ी आवे मोत निसानी, ना परमारथमें दोड़—
फिर रो रो हाथ मलेगो ॥ १ ॥
धन धरणी तिरिया सुत नाती ये नर तेरा कोई न साथी।
इनसे ना तेरी पार बसाती, ओलै सुण मावैं चोड़—
बिन धर्म पाप मग लेगो ॥ २ ॥
धर्माधर्मको सोच न मनमें, दया शील ना तेरे मनमें।
कछु न देवे दान स्वपनमें, तूं चढ़्यो पापके घोड़े—
अदविच मांय डलेगो ॥ ३ ॥
उत्तम धन सत विद्या जोड़ो, अविद्यासे तुम नाता तोड़ो।
अधर्म से तुम मुखड़ा मोड़ो, गुरु घट ब्रह्म ज्ञान निचोड़—
एक धर्म ई साथ चलेगो ॥ ४ ॥

७६४—भजन

अब मन प्रभुजी पै निश्चय लावो ॥टेक॥
पल पल बीती जाय अवस्था, अब मनको समझावो।
ऐसा मौका फेर न पावै, क्यों तुम नाहक जन्म गमावो ॥१॥
यह है तेरी यह है मेरी इसमें, कुछ नहीं पावो।
करे विना सुचि कृतको बन्दा, हाथ पसारयां रीता जावो ॥२॥
नीती छोड़ अनीतीसे, सबके हित द्रव्य कुमावो।
खाण पीणके सब हैं संगी, यमके द्वार अकेला जावो ॥३॥

कालूराम गुरु ज्ञान दियो है, तुम हरिसे ध्यान लगावो ।
विष्णु ईश अचल अविनाशी, सुमर सदा आनन्द पद पावो ॥४॥
विष्णुदत्त शर्म्मा

७६५—भजन

मन रे तूं मेट विषमता जीव की थाने सौ सौ वार कहत हूं ॥ टेक ॥
जा वूझे सोइ तो कहणा वृथा जो कहणा क्यूं जी ।
निन्दा करना नरका में जाना मतना करिये तो जी ॥ १ ॥
आपो नीच जगत है अच्छा अब तौ मानो यूं जी ।
जैसी प्रकृति तैसो शोभा तेरे विषमता क्यूं जी ॥ २ ॥
प्रशंसा तो सबकी करिये खोटी कहिये क्यूं जी ।
जैसी करसी तैसी पासी संत पुकारै यूं जी ॥ ३ ॥
ऊंच नीच तो कर्मां सारु मूर्ख पण्डित यूं जी ।
जैसा वोसी तैसा उगसी ईश्वर इच्छा यूं जी ॥ ४ ॥
चोरी हिंसा किसकी न करिये वैरी करिये क्यूं जी ।
चुगली अन्तर वांट लगाना व्याधी बधसी यूं जी ॥५॥
वुरा कर्म तो सवही छोड़ो निर्भय होवो यूं जी ।
कालूराम कह तुम ॐ जापो ब्रह्मता दरसे यूं जी ॥ ६ ॥

७६६—भजन

एक रस खेल देख मन मेरा भरम भूल सब जानाजी ॥टेक॥
एक रस रहणी एक रस कहणी एक रस नियम निभाना जी ।
एक रस देवा जिनकी सेवा सांची प्रीति लगाना जी ॥१॥

एक रस बोलो एक रस चालो वर्गा वर्ग मिलाना जी।
होय विहँणा दुर्मति तज दे गोविन्द पीव पिछाना जी ॥२॥
होय दिवाना पूर्ण ब्रह्म पर अहिरट खूब घुमाना जी।
ईश्वर सबके हैं एक सारी गाफिल गोता खाना जी ॥३॥
एक रस सौदा सो ही खटणा सो पद है निर्वाणा जी।
कालूराम कहे यह कठिन दुहेला एक रस नियम निभाना जी ॥४॥

७६७—राग प्रभाती

विषय वासना लाई मनवां यह क्या कुबद कमाई रे ॥टेक॥
छाड़ विषय मत होय भृंगी इनका अन्त जो नाहीं।
इन्द्रियोंसे शूर अलग होयगा साल रहे तन मांही ॥१॥
तीन कोटि वलि राजा भोगा उनको शान्ति न आई।
तेरी तृप्ति कैसे होगी कला ना मेली सांई ॥२॥
यहां अपयश वहां यश नहीं मिलता आनन्द लहे ना काई।
तेज गमावो आनन्द खोवो नीचपना थां माहीं ॥३॥
सांची तो तने झूंठी दरसे मस्त भयो इन माहीं।
सत्यासत्य की खबर ना पाई जावो लाखां भाई ॥४॥
इनको छोड़ा सोही सुलझा वेद कहत हैं गाई।
कालूरामजी के विहारी अन्तर्यामी ऐसी कठिन न काई ॥५॥

७६८—भजन

राम नाम नहिं चीना मनवां, सुमिरण कैसा कीना ॥टेक॥
ऊपर भजे से कामी होगा, हृदय होय मलीना।
वक्ता होकर जगत् रिझावो अन्दर मर्म न लीना ॥१॥

हिये अन्धेरा ज्ञान जनावे भरम दूर नहीं कीना ।
मैं वडदारी किया जजोरा धोधुखा हाथ जो लीना ॥२॥
तेरा वन्ध छुटा नहीं तोसों कहे ब्रह्म मैं चीना ।
कुकर्म करतां हिया जो हुलसे छोड़त मन मलीना ॥३॥
वन्दा देवण कोई नहिं आयो अव क्या हो गया दूजा ।
इस भेदकी खवर ना पाई कौन समय यम झूझा ॥४॥
अपणे घटमें सवही वड़े तूं है वड़ा मलीना ।
लघु दीर्घका भेद वता दे अधिक कहांसे कीना ॥५॥
जाणे जिसको ज्ञान जणावो यह सतगुरां जिन कीना ।
कालूरामजीके विहारी अन्तर्यामी साँवल के आधीना ॥६॥

७६९—भजन

सिर पर है चौरासी मनवां, गाफिल सो पछतासी ।
दिन भर भर मोसर वीते कमज्या कद कुमासी ।
कहण सुणन में कछु ना पावो आखिर होय उदासी ॥१॥
वायक की रहस्य पिछाणो मनको करो जिज्ञासी ।
सौ चौकस की यही चौकस जन्म फांस कट जासी ॥२॥
जो उपजै सो यामें उपजै आव ना जाव कहांसी ।
अपने घटका करो जापता सांसो किस विध आसी ॥३॥
परमानन्द तो मनका कहिये वो तीनों का साखी ।
पारब्रह्म से अन्तर मेटया यूं भागे चौरासी ॥४॥
विचार वरावर कछु ना कहिये द्विविधा उससे नासी ।
कालराम के विहारी अन्तर्यामी निर्भय हो सो पासी ॥५॥

७७०—भजन

दूर करो हंकारी रे मनवां, प्रबन्ध सिर पर भारो जी ॥टेक॥
अन्दर शुद्ध ना ऊपर फूल्यो बन बैठ्यो दुतारो ।
अन्तर्यामी सब कुछ जाणे भीतर कपट वजारो ॥ १ ॥
मनोरथ करता कोई न फलता ऐसी समझ विचारो ।
मनकी दुरमति मनमें समझे संशय भागे थारो ॥ २ ॥
बिन सत्संगति सब ही डूबा इसमें अचरज क्यांरो ।
सत्संग पाई तो भी ना सीजा भो घट पाप पहारो ॥ ३ ॥
नित्यानन्द तो जब ही पावो हो तृष्णासे न्यारो ।
काण कसर तो सबही भागे पक्को ज्ञान तुम्हारो ॥ ४ ॥
एक रंग राचो दो ना जांचो, प्यारो वचन हमारो ।
कालूराम के विहारी अन्तर्यामी पक्को प्रण व्रत पालो ॥५॥

७७१—भजन

जाने कैद किया घट सारा रे मनवां, बड़पन कहाँ से आई ॥टेक॥
घर को आनन्द भूल्यां बैठ्यो जाकी खबर ना पाई ।
घट घट में यो सारे व्यापक खूब करी तकड़ाइ ॥१॥
अवगुण आप में देखे पर में ऐसी रचना लाई ।
आप अधर्मी तो भी धर्मी औरां पाप लगाई ॥२॥
रज गुण से पैदा होई वायक सुग भई सयाणी ।
तनधारी ने वसमें कीना,कलंक लिया अगवांणी ॥३॥
बड़पन में चौफेरे फूली भेद किया घट माहीं ।
नित्यानन्द से विमुख चाले कुरीति मन लाई ॥४॥

अज्ञानी से बहुत ही राज़ी अन्तर राखा न काई ।
कालूराम के विहारी अन्तर्यामी घट की घट में समाई ॥५॥

७७२—भजन

भज यही नाम भज यही नाम नित पूर्णब्रह्म विहारी ॥टेक॥
नाम लियां सब द्विविधा भागी निर्मल वुद्धि हमारी ।
समझ भई जब आपा खोजा निकसा भरम अपारी ॥१॥
लगी लगन थे मगन रहो ईश्वर राज़ी भारी ।
ज्ञान विचार तो जब ही दरसा भागी दुर्मति दारी ॥२॥
निर्भय आनन्द जब हो पावो समझ विचारो भारी ।
यमत्रास को मार हटावो ज्ञान खड्ग की मारी ॥३॥
सत् पुरुषों की महर हुई जब खुल गई कपट किंवारी ।
कर जोड़्यां कालूराम कहत है सांची बात विचारी ॥४॥

७७३—राग आसावरी

हमारी भई रे दिवानी सुरती, जापे होगई महर कुदरती ॥ टेक ॥
वाहर भटकताँ गुरु जो दीनी हृदय माहीं खटकती ।
उमर सुधे को साल भयो है रोम रोम में जचती ॥ १ ॥
दोनों लोक समझ कर देख्या नाहीं किसी में सक्ती ।
अपण पिया से वहु विध भेंटी खूब भई है तृप्ती ॥ २ ॥
सच्चा आशक़ सब ही रंगिया और रङ्ग सब खपती ।
प्यारी तो आतम से विलमी जगत कूड़ा में पचती ॥ ३ ॥
तुच्छ भूल तोमें के होई हुई है सबन के जचती ।
आशक़ सो तो काट वगाई मारी ज्ञान की गुप्ती ॥ ४ ॥

बालरूप तो गुरुजी बोल्या बोल हमारे जचती ।
कालूराम के विहारी अन्तर्यामी उन से राखी लगती ॥२॥

७७४—भजन

मन रे आप आपना होई यामें के दुश्मन के सोई ॥टेक॥
जसकी तो कुण निन्दा करदे, निन्दा कुण दे खोई ।
जैसी होवे तैसी भाखे, इसमें अपना न कोई ॥१॥
मित्र दुश्मन आपहि कीना बाहर भासे सोही ।
जै होवे तो सुषुप्ति भ्यासे वहां नहीं रहता कोई ॥२॥
जो दरसे सो तुझ कलिपत प्रतीति माथे सोई ।
भरम करो तो अन्त नहीं है शिव ब्रह्मा क्यों ना होई ॥३॥
जैसा करतब तैसी शोभा भरम न भूलो कोई ।
चाकर ठाकर रहो जगत् का दूजा कहे न कोई ॥४॥
अपना अवगुण आप ही ढकता और न ढकता कोई ।
कालूराम के विहारी अन्तर्यामी और न ऐसा होई ॥५॥

७७५—भजन

मन रे पुरुषोत्तम सो तन में जाकी खबर लगी है शून्य में ॥टेक॥
ऊंचे नीचे फिरना छोड़ा दिन भर बैठा घरमें ॥
उस आशकसे लगी आशकी, हर्ष भयो है मनमें ॥ १ ॥
असकहनी में छोटो आवे व्याप रहा सब घटमें ।
उसके वेगका अन्त नहीं है ब्रह्माण्ड रचा है पलमें ॥ २ ॥
जाग्रत् स्वपने बाजी खेळो सुषुप्ति और शून्य में ।
वहांसे आगे ब्रह्म हमारा दुःख सुख नहीं उनमें ॥ ३ ॥

अजर, अमर, अचल, अविनाशी प्रकटा है वेद जगत् में ।
कालूरामजी सतगुरांके शरणे वड़ा ॐ जापन में ॥ ४ ॥

७७६--रागिनी कहरवा

अब मन मान कहा रे मेरा, चैतन होय हुश्यार ॥ टेक ॥
ॐ ॐ जाप जपो थे दिल विच निश्चय जान ।
खिलै कमल जव उमंग उपजै होय दुखां की हान ॥ १ ॥
आछी मंदी जोरु जगतकी लूटे भरे वाजार ।
चोरी जारी सर किया यह लूटां साहूकार ॥ २ ॥
आशा तृष्णा लहे जगतमें घट घट व्यापी आय ।
जो कोई जाणे गन्डा मन्त्र जहर कभी नहीं खाय ॥ ३ ॥
आत्मामें गुण अनन्ता जाको अन्त नांय ।
कोटि ब्रह्माकी आरवल तोभी थागा नाय ॥ ४ ॥
यो तो शुद्ध लह रहा विद्या जासे मुरछो खाय ।
कालूरामजीके यो ही चेतन शून्य न कचू जनाय ॥ ५ ॥

७७७—भजन

वर माला ले हाथ प्रभु तेरे पास रहा म्हारी हेलो ॥ टेक ॥
अगुण सभा भरम की वैठी पच्छम देश रहा ।
दक्खिन देशसे संदेशो लागो उत्तर नूर कहा ॥ १ ॥
तीन पांचको थाई वैठी मकदम मन भया ।
इनके आगे दूलो थारो शुद्ध पिछाण कहा ॥ २ ॥
पांच पचासों चेरी कहिये नित सिंगार नया ।
ज्ञाता जाणे सुहेली थारी निश्चय मिलन भया ॥ ३ ॥

रोम चालो पड़दा खोलो प्रण व्रत हाथ लिया ।
रूप करूपकी वहां नहीं परवा सांची टेक गह्या ॥ ४ ॥
हाव भावकी माला घाली सत् से वस भया ।
कालूराम कह हेली अजव छको है नित्यानन्द लहा ॥५॥

७७८—भजन

पिया तेरा प्रश्न भया ह्यारी हेली, अव तूं समझी वात ॥ टेक ॥
नेह न हेली तुम ही राचो अपणा सत्त लिया ।
उठी है विरह जब लग्न लगी है तनका ताप गया ॥ १ ॥
निश्चय रूप समझकी लज्जा आनन्द उमंग लहा ।
सत्य श्रृङ्गार अनूप सजो है ऐसे मिलन भया ॥ २ ॥
तेरा पीव जगत्का कहिये दूजा और न कहा ।
पारब्रह्म से सब जग राचा कायर भरम रहा ॥ ३ ॥
तूं न्यारी होई ना होवे पिया तेरे संग रहा ।
तेरी भूल तैं नहीं जानी न्यारा किसने कहा ॥ ४ ॥
अलख पुरुष ने तैं ही पायो अमर सुहाग भया ।
कालूराम कह हेली अजव छकी है भरम भाग रहा ॥ ५ ॥

७७९—राग सारंग

दिल अपणेकी बात प्यारी समझ समझ दरसाय ॥ टेक ॥
हिम्मत हार कर वचन न कहिये जासे आव जो जाय ।
गई आव तो भोर ना आवे गलही वाले जाय ॥ १ ॥
दिलका भेद कदू नहिं कहिये भगती सांग समाय ।
अवक पर रामत थारी वाजा खूब वजाय ॥ २ ॥

जो त्यागे सो जग में शोभा श्रेष्ठ कही जताय।
ताकी साख अठे भर लेवे सो तो पूंच्या नांय ॥ ३ ॥
यह समय तो फिर नहिं आवे युग युग जन्मा जाय।
पाप पुण्य तो दोनों रहसी जगती कहसी गाय ॥ ४ ॥
भोगीका जहां भोग नहीं है मूरख धोखा खाय।
भोगा सो तो जन्म गमाया बिन भोगा से नांय ॥ ५ ॥
यह रहस्य तो विरला पाई शुद्ध ब्रह्मके मांय।
लेणा देणा भ्रम दोनों हैं योग जो धरिये पांव ॥ ६ ॥
महर करी सतगुरां मेरे दाता दई बाज दर्शाय।
कालूरामका दाता पर वेड़ा द्वितीय मासैं नांय ॥ ७ ॥

७८०—भजन

मारग विषय की बाट प्यारी है सत्य मत वेग समाय ॥ टेक ॥
कड़ा सेती कड़ा कहिये कोटा थाका जाय।
समझा जानै सुगम ऐसा औरको दूजा नांय ॥ १ ॥
कोटा थाकिया विरला पहुंचा विष गल यांके मांय।
मूढ़ जिन्होंकी कछुयन कहिये समझा थाक्या जाय ॥२॥
अगम दुस्तर आदू मारग सावत पहुंचा जाय।
कायर सेती कल कल गाया आत्म देह वताय ॥ ३ ॥
तन मन सेतो तग वजावे सो तो पूर्ण साध।
जिनगा खेल सावत घर आवा लख शावासी ताय ॥४॥
कहना सोतो करना चाहिये, जद पावो शावास।
मित्र दुश्मन सव ही सरावें छूटे यमकी त्रास ॥ ५ ॥

घणा गाजे सो वरसे नाहीं ऐसी करिये नांय।
गाजन वर्षण दोनों बरते लख शाबासी ताय ॥ ६ ॥
महर करी मेरे सतगुरु दाता जब आई सब ख्याता।
काळूराम को दाता पर बेड़ा ॐ जाप्या दिन रात ॥ ७ ॥

७८१—रागिनी जिला

प्रभुजीने सुमर मना मेरा भाई ॥ टेक ॥
जो प्रभुजीने निश्चय जाणे झूठ न बोले काई।
जन्म जन्मका सांसा मेटै आप मिल हरि रूप दिखाई ॥ १ ॥
अच्छी मंदी किस की न कहिये यह दोनों दुःख दाई।
हरिजन हो सो हरिको जांचे मूढ़ पड़े अभिमान गल जाई ॥२॥
अपणा मित्र कोई नहीं है कोटि करो चतुराई।
भीड़ पड़ेमें काम न आवे स्वार्थ प्रीति करै अधिकाई ॥ ३ ॥
भूणचड़ीका सब कोई सीरी कछु हमको ओढाई।
जद वा ओढ़े नीची आवे मुख दिखावे न कबु आई ॥ ४ ॥
सुख दुःख दोनों भुगतावै वोही करै सहाई।
जन्म जन्म का पातक काटे पद निर्वाण दरसाई ॥ ५ ॥
महर करी मेरे सतगुरु दाता निर्गुण ब्रह्म दरसाई।
कालूराम कहे मोय केवल भक्ति दुष्ट काम प्रभु सब ही मिटाई ॥६॥

७८२—भजन

प्रभु जी को नाम सबन सुखदाई ॥ टेक ॥
जो प्रभु जी की सेवा ठाने भाव भक्ति कर भाई।
कलंक जो काटण नाम जिन्होंका तीनों लोक जस हो अधिकाई ॥१॥

विघ्न निवारण मंगल कारण विड़द वधावण भाई।
संत जनोंकी सहाय करत हैं दुष्टदलन हरि रूप सदाई ॥ २ ॥
नाम लिया भव फांसी भाजे पाप न रहता राई।
दशों दिशामें भय नहीं व्यापत तीनों ताप व्यापे ना काई ॥ ३ ॥
नाम न पावे न गङ्गा गोमती ऐसा और न काई।
जो कोई ले सुख मन धोरं चार पदार्थ करतल मांही ॥ ४ ॥
सतगुरु वाज भजनकी दीनी सो मेरे मन भाई।
कर जोड़्यां कालूराम कहे पर भक्तन को हरि रूप दिखाई ॥ ५ ॥

७८३—भजन

प्रभु जी को ध्यान धरो सुभागी ॥ टेक ॥
ध्यान धरे से दिलकी शुद्धी मनकी भ्रमना भागी।
प्रभुजी वराबर देव न दूजो ध्याय ध्याय मन एक लंग लागी ॥ १ ॥
कुसंगका उपदेशी कहिये सो तो दुश्मन सागी।
सो तो भगवत् नांय मिलावे भक्त मिलायो प्रभु हरिजन सागी ॥२॥
क्षीण पदार्थ जगका कहिये जासे ममता त्यागी।
सत् चित् आनन्द व्यापक कहिये सुमर सुमर मन इच्छा लागी ॥३॥
कहणी सुनणी कथा जो उनकी पावो पद वो सागी।
कलंक दोष व्यापे नहीं, सहाय करे प्रभु ईश्वर सागी ॥ ४ ॥
केवल ध्यान प्रभु को धरिये, सो ही बात है साँची।
कालूरामके विहारी अंतर्यामी, खेल करे वे प्रकट साँचो ॥ ५ ॥

——

७८४—भजन

प्रभुजीने समझ मनारे वड़ भागी ॥ टेक ॥
जाके विरह मिलनकी उपजी, सोतो कहिये त्यागी ।
चोरी गारी सब ही विहाई, सैन सरूपी ईश्वर सागी ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ ममता इनको त्यागा त्यागी ।
गीता मारग यही बतावे, फरक न राखा जामे रतीन लागी ॥ २ ॥
जो दरशै सो तुझ में कलिपत सो प्रभु तुझ में सागी ।
करण कारण सबके कर्त्ता मन वाणी वहां किसकी न लागी ॥३॥
योगी ताको रहस्य पिछाणे जाकी प्रभुता सागी ।
महा बायक तो सब ही चितारे ब्रह्म अखण्ड ध्यान धुन लागी ॥४॥
महर करी मेरे सतगुरु दाता पाया ज्ञान सागी ।
कालूराम के विहारी अन्तर्यामी भक्त हेत वो निशदिन जागी ॥५॥

७८५—भजन

फिरथां बाहर निन्दा होगी प्यारी, होगी जासे
स्वामिन आगे जो थारो ॥टेक॥
कुमती को दूर बगावो कहा मान लो म्हारो ।
या बाजी तो चोकस खेलो जाण विपको खारो ॥१॥
जैसे सुखिया तैसे दुःखिया लाग्यो नेह हमारो ।
आदि शक्ति होय चेत प्यारी तुच्छ पणे ने मारो ॥२॥
कुसंग सेती तीनों लाजे पीहर सासर वाड़ी ।
तीजा तेरा सतगुरु लाजे जग मैं होय मुंह काली ॥३॥

खाया सो तो कोई न धाप्या वट्टा लगायो न्यारो ।
कालूरामजी की यही विनती इन बातांने टारो ॥ ४ ॥

७८६—भजन

प्रभु जी निरञ्जन हो जी निराकार थे ही म्हारा प्राणां का आधार ॥टेक
शेष महेश गणेश रटत हैं गावे वेद अपार ।
अविगत अखिल अजर अविनाशी कोई न पायो पार ॥ १ ॥
तुम उपजावो तुम ही खपावो तुम ही पालन हार ।
जो कोई निश्चय धरे आपका सो ही उतरै पार ॥ २ ॥
निज धर्मकी निन्दा करता अन्य धर्मसे प्यार ।
भूमि भार बधा अति भारी कब होवै अवतार ॥ ३ ॥
कलि केवल नाम उचारूं और न कछु है काम ।
कालूराम गुरुके शरणे कहता बारम्बार ॥ ४ ॥

कालूराम शर्मा ।

७८७—लावणी

(राजा मोरध्वज की)

मोरध्वजसे राजा जगतमें, कहो मजलिस स्याना ।
धरा संतका रूप छलणको, आये श्री भगवाना ॥टेक॥
अर्जुन वचन कहत ठाकुर सूं, सुन मेरे मनकी ।
बतावो अपना भक्त चटक मोहिं लग रही दरशण की ॥
कृष्ण वचन अर्जुनसे बोले, जो तेरे मनमें धोका ।
चलो भूप देखनको मोरध्वज, राजा नगरीका ॥

अर्जुन भक्ति कठिन है मेरी। मेरी भक्ति में विपत घनेरी ॥
जलबल होय भसम की ढेरी। फिर धन दौलत मिले बहुतेरी ॥
जद मेरे मनमानी।
मिले जोतिमें जोति करूं मैं आपहि समानी ॥
अर्जुन संग लिये ठाकुर ने सन्त रूप कीना।
गया जो बनके मांहि वनका सिंह पकड़ लीना ॥१॥
सिंह पकड़के चाले वै तो, मता किया भारी।
चलो भूप देखन को मोरध्वज कैसा अवतारी ॥
सिंहके कारण मांगो कुवँर, जो देवेगा तुमको।
युग युग होगा नाम भगत पाछे सिंहासनको ॥
जै तुमको नट जाय रे अर्जुन, हम कहते तुमको।
दे शराप उठि चलो फेर तो, ठौर नहीं उनको ॥
कोमल तनमें खाक रमाई। लंबी लम्बी जटा बधाई ॥
ले तूंबी लंगोट लगाई। छलन चले आपी रघुराई ॥
अपने भक्तको कष्ट देत है, करता हैराना।
मोरध्वज नगरीको राजा बड़ो भगत बांना ॥ २ ॥
मोरध्वजसे भक्त पियारे। जिसको छलण चले करतारे ॥
कहो सबके हैं सिरजन हारे। नाम जपे से पापी पार उतारे ॥
आये उस नगरी दरम्यान।
एक अर्जुन भगवान तीसरो सिंह पहलवान ॥
पूछ राजाको नाम, नग्रमें आन दिया डेरा।
आज रसोई करां भक्त म्हे नाम सुण्या तेरा ॥

ड्यौढ़ीवान जाके कह्यो, तुम सुणियो महाराजा।
दोय साधु अब आये, जिन्होंने घेरा दरवाजा॥
सुनके राजा बाहर आया। हाथ जोड़के शीश नवाया।
धन्य भाग मेरे साधू आया। आधीन होके वचन सुनाया॥
हर्ष मनमें न समाना।
धन्य गुरुजी भाग्य आज घर मेरे मिजमाना॥ ३॥
तीन दिनोंका लंघन साधू, पड़े द्वारे आया।
सब नगरीमें भागवत हमें तुमको बतलाया॥
नर नारी सब कहैं नग्रके, बड़ो भगत राजा।
पूछत पूछत नाम राव तेरा लिया दरवाजा।
क्षुधा लगी जब तन घबराया। बनको छाड़ नग्र धाया॥
घर घरमें सबके फिर आया। सबने तेरा नाम बताया॥
जावो उस मकाना।
मोरध्वज नगरीको राजा बड़ो भगत बाना॥ ४॥
हाथ जोड़ कर खड़ा हूं, अरजी करता संतनको।
इच्छा होय सो करूं रसोई, फरमाद्यो मुझको॥
हुकम होय चौका लगवाऊं हाथां कर लीजै।
हुकम होय तैयार मंगाऊं, सो भोजन कीजै॥
संत कहै सुन भूप भूख लग रही है केहरि कूं।
पहिले खायगा सिंह भोग तब लगेगा ठाकुर कूं॥
हाथ जोड़ कर खड़ा, सिंह, तेरा क्या भोजन करता।
हुकम होय सोई मंगवाऊं, ढील नहीं धरता॥

हुकम होय बकरा मंगवाऊं, नहिं मंगवाऊं भैंसा।
हुकम होय वैसा मंगवाउं, फरमावो जैसा॥
सिंह तुम्हारा खूब धपाऊं। जो आज्ञा संतनकी पाऊं॥
बोलो मुख बानी।
आज रसोई करो गुरुजी, राखो मिजमानी॥
संत कहै सुण भक्त चेत कर सुण ले समाचारे।
इतनी तुमने कही हमारे एक नहीं आरे॥
अपने पुत्रको हाथां मारो राजा औ राणी।
कुंवर सिंह ने चीर नीर द्यो जद पीवां पाणी॥
अपणे पुत्रकूं हाथा मारो। आंसू एक नयन मति ढारो॥
एक फाड़ केहरिको डारो, दूजी मकानां।
इतनी बात आसंगो रसोई करां महल म्यानां॥५॥
एक पूत दीना जो तुमको, मन चाता नाहीं।
मेरे तो आशा न भरोसा रानीका नाहीं॥
हाथ जोड़ कर खड़ा अरज करता हूं सन्तन कूं।
हुकम होय तो जाऊं महलमें, पूछूं राणी कूं॥
इतनी सुण कर चले राई। तन मन दशा सकल कुम्हलाई॥
मति काऊ रानी नटि जाई। मेरी भगती वटे जग मांई॥
राजा गये महल म्याना।
रानी पूछत बात पिया तुम किस विध कुम्हलाना॥६॥
राजा कहै तूं राणी चेत कर सुणले समाचारे।
दोय साधु एक सिंह पड़े हैं अपने ही द्वारे॥

सिंहके कारण मांगे पुत्रकूं, अपने हाथ मारा ।
के जावो सत हार कुंवर जो है तुमको प्यारा ॥
राणी कहती सुण हो राजा । तन मन धन अपने नहिं काजा ॥
एक पुत्र दीन्यो रघुनाथा । जो ले चलो आपने हाथा ॥
मत चूको ज्याने ।
धरो कुंवर के शीश करोती, रची जो करताने ॥
राजा रानी कुंवर ले आये, खड़ा हाथ जोड़ै ।
हुकम होय तो ये तीनूं शिर हाथांई तोड़ै ॥
संत कहै सुण भक्त तीनों शिर ना चाहिये हमकूं ।
अपने पुत्रको चीर नीर द्यो आधा केहरि कूं ॥
पाँच वर्षका कुंवर, सिंह तेरा धापेगा नाहीं ।
हम तीनूंको चीर नीर द्यो, केहरि के तांई ॥
राणी अरजी करती न्यारी । पहली फाड़ जो करो हमारी ॥
सत चढ़ आयो दोन्यां ने ।
उठ राणीने करौत लेके करी शीश स्याने ॥
हाथ जोड़ कर अरज सुणावे राणी राजाने ।
हम औरतकी जात पियाजी तुमरे रंग रांची ।
तुम तो कहिये मरद मनमें मत ल्यावो काची ॥
राणी वचन पुत्र कूं कहती सुन बेटा बात ।
मत कायर हो जाय शीश पर खड़े हैं रघुनाथ ॥
पुत्र वचन राणी से बोलता मत मन कुम्हलावे ।
धन धन मेरा भाग अंग ये हरिके काम आवे ॥

राणी हाथ करौती लेती। सब दुनियां नगरी की रोती ॥
राणी जरा चित में नहिं लाती। आप खड़ी सबको समझाती ॥
धरी करौती हंसी खुशीसे। चीरो मेरा तन तेजीसे ॥
अरी मोय दीखत भगवाना।
घरी घरीकी ढील होय, मेरो जावेगो विमाना ॥७॥
खैंचण लागे राजा राणी। शीश चीर हृदय पर आणी ॥
कोमल तनु ने मथे भवानी। रंगत रवे भूमि तपाणी ॥
कुंवर की सुरत है हलवानी।
परी धरणि दोय फाड़ कुंवरकी निकल गई ज्यानी ॥
संत कहै सुण भगत एक द्यौ केहरि कूं खाने।
एक तुमारी तुम ले जावो रखो महल स्याने ॥
उठा दाहिनो अंग राजाने, केहरिको नीरयो।
बांयो अंग कपड़ासूं दाब कर, अलगो धर दीन्यो ॥
सन्त कहै आटा मंगवावो। रसोईकी मत ढील लगावो ॥
राजा तुम तो जल भर ल्यावो। राणी पैं चौंका लगवावो ॥
रसोई करां महल स्याना।
लगे ठाकुरके भोग जल्द तेरा होगा कल्याना ॥८॥
उठ राजा सामान मंगाया। कोरा कलशा जल भर ल्याया ॥
राणी पै चौका लगवाया। सन्तन कूं तो लाय बैठाया ॥
थाल कटोरा सब भरके, धर दीना है आगे।
न्हाय धोय कर लीनो तबै सन्त रसोईको लागे ॥
अर्जुन रसोई करता, केहरिकी राणी चौकस करती।

याद आगई अपने पुत्रकी, हियेमें तामस भरती ॥
छाती दाटत एक नैनसे निकस पड़्यो पानी ।
कहनो तो कुछ बण्यो नहीं, शंका सी आनी ॥
राणी रोती देख महलमें, विष्णु रोष भरता ।
तूं राजा वेइमान रसोई, हरगिज नहिं करता ॥
हियो फाड़ कर बोलै राजा तैं, विपत कांई दीनी ।
रतनकुंवरसे पुत्र मार कर, हाथां भगती छीनी ।
बिलखत देखे राजा रानी । अर्जुन भये नैन जल पानी ।
हरिसे बोले आप जुवानी । किस पर कोपे अन्तरध्यानी ॥
सुण इसका स्याना ।
किस बिध राणी रोई आप सुण लीजै यह स्याना ॥
लिख्यो दाहनो अंग सिंहके चाढ़्यो भगवाना ।
कौन पाप कियो बांयो तन पड़्यो महल स्याना ॥६॥
इस विधि राणी रोई आपकी मरजी सो कीजै ।
ये दुख देता फिरो तो रस्ता वनखंडका लीजै ॥
सुणके वचन हँसे रघुराई । अर्जुन पातल परसो भाई ॥
हरिने पातल च्यार धराई । एक भगत भगताणी भाई ॥
या दोन्यांने वैठाय कर कहते भगवाना ।
एक पनवाड़ा जुदा परोसो, वालक उनमाना ॥
पनवाड़ा तैयार जुदा जद कहते राजा कूं ।
बुलावो अपना पुत्र देर होतो अब जीमण कूं ॥
हाथ जोड़ कर खड़ा गुरुजी कुंवर नींद सोता ।

ना जानूं कित गया कुंवर मेरि निघा नहिं होता ॥
रतनकुंवर आनेका नाहीं । तुम जीमो गुरुदेव गुंसाई ॥
सन्त कहै हम जीमां नांई । जलद बुलावो कुंवरके तांई ॥
कहते भगवाना ।
कहा हमारा मान मोरध्वज, हेला दिलवाना ॥१०॥
कहा सन्तका मान राजाने, हेला दिया उनकूं ।
रतनकुंवर कहाँ होय, आन कर मनां तू सन्तन कूं ॥
हेला सुण कर आया कुंवर शिर पँचरंगी चीरा ।
गल वैजन्ती माल, मुखमें राचि रह्या वीरा ॥
कुंवर रावकी निघामें आया । राजा मनमें चेतक लाया ॥
मेरा कुंवर कहाँसूं आया । मति कोउ मोहीं छलवा आया ॥
राजा गया महल म्याने ।
ढूंढ़त फिरै तो लोथ महलमें, मिली न अस्थाने ॥
रतनकुंवर जब आया महलसूं लिया पनवाड़ा ॥
जद अर्जुनने मोरध्वज सों हेला जो पाड़ा ॥
हेला सुणके आई रावके मनमें हुसियारी ।
राणी करती पौन जीमता अर्जुन गिरधारी ॥
राजा कहै सुणो तुम राणी । कहूं तोय चातुरसी वाणी ।
आप धनी जीमें गिरिधारी, तेरे हो गये मिजमाना ।
अर्जुन श्री भगवान जीमते, रंगमहल म्याना ॥ ११ ॥
जीम जूठके उठे जिन्होंने रूप धरया आला ।
शंख चक्र कर गदा पद्म गल वैजन्ती माला ॥

अपनो रूप धर्‍यो धैर्य दियो अपने भगतांने ।
इच्छा होय मांग मोरध्वज, वर देस्याँ तुमने ।।
तूं कहे तो औलाद वधाऊं । रथ घोड़ा सामान वधाऊं ।
बेटा पोता नग्र बसाऊं । सब नगरी वैकुण्ठ पठाऊं ।।
तेरी भगत अमर कर जाऊं, भक्त मोहिं दूरा मत जाने ।
धरो ध्यान हिरदाके बीच अरु घट घटके स्याने ।।
कलियुग मांही म्हारा भक्त कोइ विरला ही हैगा ।
ऐसा कष्ट मत दीजे तेरा कोइ नाम नहीं लेगा ।।
धन धन राजा बुद्धि तुमारी वर मांग्यो है तैंने भारी ।
भक्ति मुक्ति तोहिं दीन्हीं सारी सुन तूं अभिमानी ।।
सदाशिव कहे इनोंका अमर नाम जगत मांही ।
मोरध्वज सा फेर नहीं जनमेगा जग मांही ।। १२ ।।

सदाशिव करण दरक माहेश्वरी

७८८—द्रौपदीको बारामासियो

परतंग्या राखो जादूपति, गरुड़ासन चढ़ ध्याइयो ।।टेक।।
शारद मात चैत चित ध्याऊं, पूरण ब्रह्म मुरारी ।
अजामेल गृद्ध गणिका तारी, गौतम ऋषिकी नारी ।।
हाथ जोड़ विनती करूं, थे लज्जा राखो म्हारी ।।
दोउ कर जोड़यां वीनऊं, जादुकुल बीच दिनेश ।
सनकादिक नारद भजे तो थाने रटे रात दिन शेष ।।
भीलनी अधम उधारी ।।गरुड़ा०।।१।।

लग्यो मास वैशाख वेद कहे तुम हो पतित उधारण ।
जल डूबत गजराज उबारयो, विड़द आपके कारण ।।
इबके द्रौपदसुता की वरियाँ, आवो गिरिवर धारण ।।
कौरवसुत कीनी सभा, कुमाति हृदय धरलीन ।
घूत करम कर हरयो राज, मेरा पाँच पतो बस कोन ।।
पूंचियो भगतां कारण ।।गरुड़ा०।।२।।
जेठ मास कर जोड़ कहूं मैं, महामुनियन की दासी ।
भीसम पिता महा ब्रह्मज्ञानी, दुष्ट सभा मति नासी ।।
लोचन हीन सुणै चुप मारयां ज्यूं बक नदी निवासी ।।
द्रोणाचारज की मति घटी, विदुर सुणै धर ध्यान ।
कृपाचारज कुल गुरु तो, जांकी खड़ग होय गई म्यान ।।
अरज सुणियो अविनाशी ।। गरुड़ा० ।।३।।
साढ़ घटा दुष्टन की आई, नाँव कहूं सबही का ।
चंडाल चौकड़ी दुर्योधन की, मंत्री करण सरीखा ।।
खोटा काम रच्या इन शकुनी कर दिया पांडव फीका ।
हे करुणानिधि बीनती, सुणियो चित्त लगाय ।।
दुष्ट दुःशासन चीर उतारे, करियो वेग सहाय ।।
रूप धर आवो हरिका ।। गरुड़ा० ।।४।।
श्रावण नाथ हाथ कर टेरूं, सुणियो जादू कुल नायक ।
घन ज्यूं गरजत दुष्ट दुशासन, लगत वचन जनु सायक ।।
राखो लाज आज अबलाकी, तुम सामरथ सब लायक ।।
श्रवण पुर पुरता सुता, तासु पति जगदीश ।

वेग पधारो साँवरा तो म्हाने निश्चै विश्वा बीस ॥
आप भगतां वरदायक ॥ गरुड़ा०॥५॥

भादो नदी उमंगे हीवड़ो घन नैना नीर झरलाई।
हे गोविंद शरण मैं तेरी, मने निराधार छिटकाई ॥
सकल सभा मुख नीचो कर लियो, भूमी सुरत लगाई।
सकल सभा चित्रामकी, ज्यूं लिखदो तसवीर ॥
कूण सुणे किणसूं कहूं, तो यो दुष्ट उतारत चीर।
श्याम तोये निद्रा आई ॥ गरुड़ा० ॥

कुंवार कठिन दिल कियो साँवरे, किस विध संकट जासी।
विड़द विचार अरज सुणियो मैं जादूपति की दासी ॥
कुब्ज्या कुटिल कंसकी चेरी कीनी भगत जरासी ॥
सीधी कर दई कूबरी, नेक लगायो हाथ।
तनक प्रीत के कारणे बांके घरां पधारया नाथ ॥
जलदी आवो अविनाशी ॥ गरूड़ा०॥७॥

कातिक कृपा करो गिरिधारी, मेरा कारज सारो।
कपट सभा बिच कोई न बोले, मनके मांय विचारो ॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण तार्‌या, इब जीत्यो जस मत हारो ॥
दोउ अक्षर चढ़ तीन पै, तीन सुणै जद च्यार।
दोउ चढ़ बैठे च्यार पै, तो इब तीन पाँच पै त्यार ॥
अरज इतनी उर धारो ॥ गरुड़ा० ॥ ८ ॥

अगहन आस लगी दिल भीतर अब तो गिरिधर आवो।
आशामुखी आस कर ध्यावे, मतना जी ललचावो ॥

विड़द बिचार भगत पत राखो, नाहक लोग हँसावो ॥
कर्दम सुत नाती वधू, त्यारी चरण छुवाय।
आवो द्रोपद सुता हित कारण, कहाँ छिप बैठे जाय ॥
कृष्ण मोय सुरत दिखावो ॥ गरुड़ ॥ ९ ॥

पोष रोस दिल मांय बिसारूं, पूरब पाप कुमाया।
चवदा भवन एक पति सबका, वेद पुराणां गाया ॥
पंचानन्द अवतार पाँच पति मोय सुगुणीने पाया ॥
नारी धरमके कारणे एक वसन महाराज।
राखो लाज आज वनवारी, आप सकल सिरताज ॥
अहो गज काज सिधाया ॥ गरुड़ा० ॥ १० ॥

माघ मगन मन गद गद बानी, सुगन होत मोय नीका।
माया जाल फंस्यो जग सारो, कोई नांय किसी का ॥
यो संसार ओस को मोती एक सच्चा नांव हरीका ॥
दुनिया मतलब स्वार्थी, प्रीत न जाणै कोय।
साँचे दिल सायब भजै, तो वांने दुख काहे को होय ॥
मिटावो संकट जीका ॥गरुड़ा०॥११॥

फागण मास आस गिरिधरकी, आँख फरुके बाई।
टेर गई अब द्रुपद सुताकी, ठेठ द्वारिका तांई ॥
रुक्मणके संग चौपड़ खेलैं कृष्ण महल के मांही ॥
करस्यूं पासा डालता, मुखसे कह्यो अनन्त।
भीमसुता अरज करे तो म्हाने भेद बतावो कंथ ॥
अनन्त पास में नांई ॥गरुड़ा०॥१२॥

७८९—भजन

चेत चतुर नर कहै तने सत्गुरु, किस विधि तूं ललचाना है।
तन धन यौवन सर्व कुटुम्बी, एक दिवस तज जाना है॥ १॥
मोह मायाको वड़ो जाल है, जिसमें तूं लुभाना है।
काल अहेरी चोट आ करी, ताक रह्यो निशाना है॥ २॥
काल अनादिरो तूंही रे भटक्यो, तो पण अन्त न आना है।
चार दिनांकी देख चांदनी, जिसमें तूं लुभाना है॥ ३॥
पूर्व भवँरा पुण्य योग था, नरकी देहो पाना है।
मास सवा नौ रहा गर्भमें, ऊंधे मुख झूलाना है॥ ४॥
मल मूत्रकी अशुचि कोथली, मांहें सॉंकड़ दीना है।
रुधिर शुक्र नो आहार अपवित्र, प्रथम पणे तैं लीना है॥ ५॥
ऊंठे क्रोड़ सुई सारको, ताती कर चुभाना है।
तिणसूं अष्ट गुणी वेदना गर्भमें, देख्या दुःख असमाना है॥ ६॥
वालपणो थे खेल गँवायो, यौवनमें गर्वाना है।
अष्ट प्रहरकी कीन्ही मदमस्ती, खोटी लाग लगाना है॥ ७॥
रंगी चंगी राखत देही, टेढ़ी चाल चलाना है।
आठ पहर कीन्यो घर धन्धो, लग रहा आर्त्त ध्याना है॥ ८॥
मात पिता सुत वहिन भाणजी, तिरिया सूं दिल लाना है।
वे नहीं तेरे तू नहीं उनका, स्वार्थ लगी संगीना है॥ ९॥
अर्थ अनर्थ करी धन मेल्यो, घणांसूं वैर वंधाना है।
लिछमी तेरे लारे न चलसी, यहांकी यहां रह जाना है॥१०॥

ऊँचा ऊँचा महल चिणाया, करै घणां कारखाना है।
घड़ी एक राखत नहिं घरमें, जालत जाय मुशाना है ॥११॥
धर्म सेती द्वेष न धरना, परभव सेती डरना है।
चित्त आपनो देख मुसाफिर, करनी सेती तरना है ॥१२॥
छिन छिनमें तेरी आयु घटत है, अंजली जैसे झरना है।
क्रोड़ों यत्न करे बहुतेरा, तो पण एक दिन मरना है ॥१३॥
साधु सन्तकी सुनी न वाणी, दान सुपात्र न दीना है।
तप जप क्रिया कछू न कीनी, नर भव लाभ न लीना है ॥१४॥
चक्री केशव राजा राणा, इन्द्र सुरोंका इन्दा है।
सेठ सेनापति सब ही मानव, पड़्या कालके फन्दा है ॥१५॥
यौवन गँवाय बूढ़ा होय बैठा, तो पिण समय न आना है।
धर्म रत्न तुझ हाथ न आयो, परभवमें पछताना है ॥१६॥

७९०—भजन

(चाल-हीर रांझेकी)

मेरी अदालत प्रभुजी कीजिये।
जिन शासन नायक, मुक्ति जाणेकी डिग्री दीजिये ॥ टेक ॥
खुद चेतन मुदई बना है, आठों कर्म मुदाइला।
दावा रास्ता मुक्ति मार्गका, धोखा दे जाय टाला जी ॥ १ ॥
तप कागद स्टाम्प लिखाया, तलवाना क्षमा विचारी।
सजाय ध्यान मजमून बना कर, अर्जी आन गुजारी जी ॥ २ ॥
मैं जाता था मुक्ति मार्गमें, कर्मोंने आय घेरा।
धोखा देकर राह भुलाया, लूट लिया सब डेरा जी ॥ ३ ॥

वहुत खराब किया कर्मोंने, चौरासीके मांही।
दुःख अनन्ता पाया मैंने, अन्त पार कछु नाहीं जी ॥ ४ ॥
सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रत धारी।
सूत्र देख मसौदा कीन्हा, तव मैं अरजी डारी जी ॥ ५ ॥
पांच सुमति तीन गुप्ति ये, आठों गवाह बुलाओ।
शील असल है वड़ा चौधरी, उसको पूछ मंगाओ जी ॥ ६ ॥
अर्जी गुजरी चेतन तेरी, हुआ सफीना जारी।
हाजिर आओ जवाव लिखाओ, लावो सवूती सारी जी ॥७॥
आठों मुदाइलह हाजिर आये, मोट मुखतार वुलाये।
चार कषाय अरु आठ मदोंको साथ गवाहीमें लाये जी ॥८॥
हमने नहीं वहकाया इसको, यह मेरे घर आया।
कर्जा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेव मचाया जी ॥ ९॥
विषय भोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा नहीं जाना।
कर्जदार जव लारै लाग्या, तव लाग्या पछताना जी ॥१०॥
हाजिर खड़े गवाह हमारे, पूछिये हाल जु सारा।
विना लियां कर्जा चेतनसे, कैसे करे किनारा जी ॥११॥
चेतन कहे सितावी मोही, सुन सासन सरदार।
ईमानदार हैं गवाह हमारे, जाणै सव संसार जी ॥१२॥
मैं चेतन अनाथ प्रभुजी, कर्म फरेवी भारी।
जीव अनंते राह चलतको, लूट चौरासी में डारी जी ॥१३॥
वड़े वड़े पंडित इन लूटे, ऐसा दम वतलाया।
धर्म कहा अरु पाप कराया, ऐसा कर्ज चढ़ाया जी ॥१४॥

हिंसा मांही धर्म बताया, तपस्या सेती डिगाया।
इन्द्रिय सुखमें मग्न करीने, झूठा जाल फैलायाजी ॥१५॥
ऐसा करो इन्साफ प्रभुजी, अपील होने न पावे।
हक्करसी चेतन की होवे, जन्म मरण मिट जावेजी ॥१६॥
ज्ञान दर्शण करी मुंसफी, दोनोंको समझाया।
चेतनकी डिग्री कर दीनी, कर्मों का मर्म बताया जी ॥१७॥
असल कर्ज जो था कर्मों का, चेतनसे हा दिलाया।
शुद्ध संयम जद करी जमानत, आगेका सूद मिटायाजी ॥१८॥
आश्रव छोड़ संवरको धारो, तपस्यासे चित लावो।
जल्दी कर्ज अदा कर चेतन, सीधा मुक्तिको जाओजी ॥१९॥
शुद्ध संयम जद करी जमानत, चेतन डिग्री पाई।
फाल्गुन सुदि दशमी दिन मंगल संवत उणीसे अठाई जो ॥२०॥

७९१—भजन

इतरो काईं गर्व्यो रे गँवार, कायारी वाड़ी देख हरी।
बाजे बाजे वायु सुवाय, झोलेरी बाजे एक घड़ी ॥टेक॥
पनघटिये तूं धोवतोरे पायके, शिर ऊपर टेढ़ी पाग धरी।
चालंतो तूं निरखे चालके, मनमें मरोड़ करी ॥१॥
काया थारी कारमी सुजान, अशुचि मल मूत्र भरी।
क्षण क्षण मांही घटती रे जाय, ज्यूं वालूनी भींत धरी ॥२॥
तन धन यौवन अस्थिर पिछाणके, वादलकेरी छाँय करी।
ज्यूं पीपलरा पाकारे पान, पड़तां न लागे एक घड़ी ॥३॥

रुलताँ रुलताँ काल अनादिके, पायो नर भव देह खरी।
करले सुकृत छाड़दे प्रमाद कूं, एक दिवस तूं जासी मरी ॥४॥
मात पिता सुत-बन्धव नारके, स्वार्थ लग सब जी जी करी।
विन स्वारथ सब पलट्यारे जायके, मूर्ख चित जोय तो खरी ॥५॥
सत् संयम को टोरड़ो बनायके, ऊपर खासा जीन धरी।
तन मन मेरो चाबुक बनायके, मांहलेने खैंच तो सरी ॥६॥
कलियुग आयो कांटांवाली वाड़के, तिणसू घुड़ली दूर खड़ी।
जागरे भवानी बाबा नाथके, लागी थारे ज्ञान री छड़ी ॥७॥

अज्ञात

७९२—भजन

सुज्ञानी जीवड़ा करणी भल कीजे रे ॥टेक॥
काज सरे करणी कियां रे, माप गया भगवन्त।
अल्प दुखांने आदर्यां रे, आगे सुख अनन्त ॥१॥
सत्गुरु सीख माने नहीं रे, राखे खोटी रूढ़।
पुण्यहीना ते बापड़ा रे, महा मिथ्यात्वी मूढ़ ॥२॥
पाप करीने प्राणियारे, नरकां करे निवास।
भूंडा फल तहां भोगवेरे, नाखे हिये निःश्वास ॥३॥
पाप चितारे पाछलारे, अधर्मी सुर आय।
जिमि कीधा कर्म जीवड़ेरे, तिमि भुगतावे ताय ॥४॥
रोवे झूरे रांक ज्यूं रे, अधिका दुःख अनन्त।
यम गाढ़ा वैरी जिसारे, पीड़ा वहुत करन्त ॥ ५ ॥

वर्ष दश हजारनोरे, जघन्य आयुषो जान।
उत्कृष्टो सागर तेतीसनोरे, भाष्य गया जग भान ॥६॥
नीठ नरकाँसू नीसरया रे तिर्यञ्च माँही वास।
भांति भाँति दुःख भोगवे रे, सूत्र मांही समास ॥ ७ ॥
हलका कर्म पड्या हुवे रे, पुण्य तणे प्रभाव।
माणस हुवे मोटकोरे, सरवरो सरल स्वभाव ॥ ८ ॥
जाड़ा नहीं कर्म जेहण रे आय मिले अरगार।
पांच महाव्रत पालता रे धीरा महा गुणधार ॥ ६ ॥
दयावन्त ऋषि देखने रे, लुल लुल लागे पाय।
प्रदक्षिणा देई प्रेमसूं रे नीचो शीश नमाव ॥ १० ॥
साधुजी सूत्र स्वारथी रे, दे रुड़ो उपदेश।
काया माया कारमी रे, राखो धर्म री रेश ॥११॥
साधु वचन सुनि हुलसे रे, घट में आवे ज्ञान।
सुख सगला संसार ना रे, जाण्या जहर समान ॥१२॥
वैराग्ये मन वालने रे, साधापणो ले सार।
उत्तम केई आदरे रे, विधि सेती व्रत वार ॥१३॥
करणी कर कर्म काटने रे, पूरा संच्या पुण्य थाट।
दया पाली हुवे देवता रे, गहग सुख गहगाट ॥१४॥
देवांगना घणी दीपती रे, जपे जय जय कार।
पल सागर लगि प्रेमसूं रे, सुख विलसे सँसार ॥१५॥
पुण्यवन्त पामे वली रे, उत्तम कुल अवतार।
घर सम्पत्ति हुवे घणी रे, वहुत वजावे वहार ॥१६॥

चरित्र लेइ चूंपसूंरे, आठ कर्म करि अन्त।
पाये परम गति पाँचवी रे, अविचल सुख अनन्त ॥१७॥
वेश्या संगति वेसताँ रे, व्रत रो होय विनाश।
शुद्ध समकित विनशे सही रे, पाखंडियाँ रे पास ॥१८॥
एक घड़ी आधी घड़ी रे, साधुनी संगति थाय।
चेला यती नामे चोर ज्यों रे, जीव भलो गति जाय ॥१९॥
सम्वत् अठारहसे साठ में रे, वदी आश्विन सोमवार।
बारस तिथि बिदासरे रे, आखी ढाल उदार ॥२०॥
उपदेश बीसी ओपती रे, जोड़ी जुगते आण।
ऋषिचन्द्रभान रूड़े भनेरे, चेतो चतुर सुजाण ॥२१॥

ऋषिवर चन्द्रभान

७९३—भजन

करत कलेउ आय प्रातहिं, मिलि चारों भाई हां हां हां ॥टेक॥
कंचन थार संवारिके मैया ले आई हां।
व्यंजन बने बहु भांतिके, दधि दूध मिठाई हां ॥ १ ॥
खेलत खात दुरायके, झगरे चारों भाई हां॥
राजा दशरथजी के पौरिमें कुम कुमा उड़ाई हां ॥ २ ॥
रुमक झुमक पग पयंजनी, कछनी छवि छाई हां।
उर मणिहार विराज हीं मोतियन छवि छाई हां ॥३ ॥
अवधपुरीके कुंज न विहरै, चारों भाई हां।
सुन्दर मधुरे बोलही , मोहिं लागत सोहाई हाँ ॥४ ॥

राम लखन लीला रचें, भक्तन सुखदाई हाँ।
अग्रदास श्रीरामको मानो लेत बुलाई हाँ ॥५॥

७९४—भजन

वाल भोग कीजै रामजी लला ॥टेक॥
तुम मेरे प्राण जीवन धनवारे, नेक न न्यारे होउ लला।
बहु मेवा पकवान मिठाई, खाजा खुरमा और फला ॥१॥
बहत सुगन्ध मिलायके मिसरी, औरहु सरजू गंग जला।
ल्योने लक्ष्मण कुंवर लाड़िले, भरत शत्रुहन चपल कला ॥२॥
जन अनूप सन्तन हितकारी लीला नटवर अनन्तकला।
मात कौशल्या करत आरती अग्रदास बलि जात लला ॥३॥

७९५—भजन

सीताराम अवधपुर वासी नित उठि दरशन पैहों जी ॥टेक॥
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन शोभा वरणि न जावै जी ॥१॥
संग सखा सरजू तट विहरै राम लखन दोउ भाई जी।
सुंदर वदन कमल दल लोचन उर वनमाल सुहावै जी ॥ २ ॥
अवधपुरी नर नारि निहारै, निरखि परम सुख पावै जी।
मातु कौशल्या करत आरती अग्रदास वलि जावै जी ॥ ३ ॥

७९६—भजन

दशरथ सुत अरु जनक नंदिनी चितवन में चित चोरै री ॥टेक॥
नन्हि नन्हि बूंद पवन पुरवैया वरपत थोरे थोरे री।
हरि हरि भूमि घटा झुकि आई सरजू लेत हिलोरे री ॥१॥

उपवन बाग विहंगम बोले दादुर मोर चकोरे री।
हयदल पयदल गजदल रथदल कोटि बनै चहुं ओरे री ॥२॥
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ शंखन की घनघोरे री।
नागरि नाम लियावै पिया को सिया हंसै मुख मोरे री ॥३॥
अग्रदास हरि रूप निहारे चरण कमल बलि हारे री ॥४॥

७९७—भजन

ए नृप दशरथ के पुत्र भयो, सखि सुरपुर बजत बधाई री ॥टेक॥
घर घर मंगलचार अवधपुर वंदनवार वंधाई री।
चतुर सखिन मिलि साथ आदि ले विधिसों कवन बनाई री ॥१॥
चंदन चौक रच्यो आंगन में रतनन भूमि जड़ाई री।
करत कुतूहल कोशल वासी याचक भूषण पाई री ॥२॥
कई लक्ष धेनू संकल्पी हस्ति समूह लुटाई री।
अग्रदास रघुपति के आगम सब संतन सुख पाई री ॥३॥

७९८—भजन

देखो माई रामजी लला कैसे आवैं ॥टेक॥
रघुवंशी बालक संग लीने, गज रथ तुरँग नचावैं।
हर्षं देव सुमन बहु वर्षं वंदी सुयश सुनावैं॥
क्रीट मुकुट मकराकृत राजै, कर गहि कमल फिरावैं।
बहु विधि साज बनै राजन के कोउ लिये बाज उड़ावै॥
कोउ लिये हरी छरी फूलन की, कोऊ गले हार पहिरावैं।
कोउ कोउ ललित लवंग लता तरु, हर्षि निरखि गुण गावैं॥

अवधपुरी कुलवधू निहारै निरखि परम सुख पावैं।
जानकीवल्लभ आये अवध में अग्रदास बलि जावैं ॥

७९९—भजन

बन से आवत चारों भैया ॥टेक॥
दोउ श्यामल दोउ गौर मनोहर नृप दशरथ के छैया।
बनते आवत तुरंग नचावत, कर गहिं कमल फिरैया ॥
अवधपुरी नर नारि निहारै, द्वौ कर लेत वलैया।
विविध भांति आभूषण पहिरे मंद मंद मुसुकैया ॥
राम लला को रुप विलोके कोटि काम छवि छैया ॥
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन शोभा वरणि न जैया।
अग्रदास प्रभु की छवि निरखै करत आरती मैया ॥

८००—भजन

बोलनकी बलि जैहों लाल इन बोलन की ॥टेक॥
छोटे छोटे चरण अधर तल सुन्दर ठुमकि ठुमकि चलि जैहौं।
कटि किंकिण पग नूपुर बाजै मधुरे शब्द सुनैहौं ॥
सब बालक रघुवर छवि निरखत प्रेम प्रीति लपटैहौं।
घूंघुरवारे अलक वदन पर मन्द हसन सुख दैहौं ॥
जाको ध्यान धरत ब्रह्मादिक शारद गान करैहौं।
गोद राखि पय पान करावत दशरथ लेत वलैया हौं ॥
यह छवि देखि मगन भये सुरमुनि रवि शशि कोटि लजैहौं।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निगम नेति यश गैहौं।
अग्रदास भजु दशरथनन्दन दिन प्रति दिन अधिकै हौं ॥

८०१—भजन

मिलि खेलत आवत रामलला, भरत शत्रुहन लखन लला ॥टेक॥
वृन्द वृन्द रघुवंशिन के सुत खेलत आवत करत हला ।
लाडू लिये सकल निज करमें चुगत काग जो परत थला ॥
धावत फिरत उठि चलत अजिरमें करत केलि वहु विध पला ।
काक भुशुण्ड गहन कर वाढ़े सप्त वरणमें भ्रमत फिरा ॥
नयन मूंदि गये राम उदरमें देखे वहु ब्रह्मांड कला ।
खोजत फिरत कल्प शत नाते वाहर उभय धरी वितला ॥
अग्रदास धनि धनि कौशल्या भाग्य उदय भये आजु लला ॥

८०२—भजन

हम चाकर रघुनाथ कुंवरके ॥टेक॥
माथे तिलक मनोहर वाना द्वादश तिलक देखि यम डरपे ॥
द्वारी वन्द सदा प्रभु तेरे भये गुलाम रावरे घरके ।
गुरुके वचन सत्य करि राखों सुमिरन करत सिया रघुवरके ॥
तुमहिं याचि यांचो नहिं औरहि नहिं भरोस कोउ नारी नरके ।
अग्रदास यह पटो लिखायो दसखत दशरथ सुत निज करके ॥

८०३—भजन

धाय गोविन्द गजेन्द्र उवारो महाग्राहको मारो ॥टेक॥
खैंचत ग्राह गजहि नेकौ वल न भयो तव हरि नाम उचारो ।
फहर फहर फहरात पिताम्वर चरण गमन कियो गरुड़ विसारो ॥
जौ भरि सूंड रही जल ऊपर कमल पुष्प लै श्यामको चढ़ायो ।
काटे फन्द चक्र धारा सों अघमोचन हरि नाम तुम्हारो ॥

देवन हर्षि दुन्दुभी वजाई पुष्प वर्षि जय जयति उचारो।
अग्रदास सब पतितन को प्रभु इन्द्र दमन वैकुण्ठ सिधारो ॥

८०४—भजन

आज राम जानकी, कृपालु सुन्दर सोहैं।
निरखत सुरनर मुनि, शिव विरंचि मोहैं ॥टेक॥
रामजीके शीश क्रीट रत्नजटित धारी।
सियाजी के शीश फूल, कोटि चन्द्रवारी ॥१॥
रामजी के पीतांबर धनुष वाण राजै।
सियाजी के कर कमल मुद्रिका विराजै ॥२॥
रामजी के कुंडलकी कोटि कोटि शोभा।
सियाजीके करणफूल, रामजीके लोभा ॥३॥
रामजीके उर सोहै मोतियां की माला।
चारु हार रुचिर पहिरे, जनक कुंवरि वाला ४॥
रामजीके कटि किंकिणि, रुनुक झुनुक वाजै।
सियाजी के क्षुद्र घटिका मदन मंत्र लाजै ॥५॥
रामजीके घनश्याम वर्ण छवि अभिरामा।
सियाजी है कनक वर्ण लाजत रति वामा ॥६॥
सियाजीकी नख शिख छवि कहत नहिं आवै।
कोटि शेप शारदा, श्रुति पारहु न पावै ॥७॥
एहि ध्यान हियते, टरत नहिं टारयो।
दास अग्र युगल चरण पर वारि फेरी डारयो ॥८॥

८०५---भजन

बालभोग कीजै सिय रघुवीर ॥टेक॥
अवधपुरीमें रतन सिंहासन, बहत सुहावन सरजू नीर ॥१॥
दाख बादाम खोपरा केला, दूध दही मेवा अरु खीर।
बैठी राम बाम दिशि सीता, दहिने विराजै लक्ष्मण वीर ॥२॥
चारों भैया मिलि जीमन बैठे, गले विराजै मुक्ता हीर।
रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन, दो साँवर दो गौर शरीर ॥३॥
सारंग धनुष बाण कर राजै, पीतांबर पहिरे पट चीर।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, गले विराजै मुक्ता हीर ॥४॥
कौशल्या बलि जात रामके, पावत ओट करै पट चीर।
सन्मुख पवन पुत्र कर जोरे, अग्रदास झारी भरि नीर ॥५॥

८०६---भजन

आये हैं दोउ राज कुंवर वर सुन्दर श्यामल गोरे ॥टेक॥
आगे विश्वामित्र महामुनि, संग मरालन जोरे।
कहा कहूं कुण रूप आगरे, लगत दिनन में थोरे ॥१॥
बड़े बड़े लोचन अघमोचन, शोभा सिंधु हिलोरे।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, धनुषबाण कर जोरे ॥२॥
आय जनकपुर मोहनि डारी, नर नारी सब मोहे।
विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो, कठिन धनुष को तोरे ॥३॥
जय जयकार भयो त्रिभुवनमें, भूपनके मुख मोरे।
उड़त गुलाल लाल भयो बादल, राम जनककी पोरे ॥४॥
अग्र अली प्रभुकी छवि निरखैं चितवनिमें चित चोरे ॥५॥

८०७—भजन

मिलि जेंवत जानकी रामजी सखी, हरखें निरखें मिथिलापुरकी ॥टेक॥
पंच शब्द वैजन्त वजावै, गावत गारी पंचम सुरकी ।
जनक भवनमें डारि गलीचा, ओट करी पीतांवरकी ॥१॥
कुंवरी कुंवर गारि देत परस्पर, हंसत नारि नृपके कुलकी ।
श्रीलालजी मन्द मन्द मुसुकाने, सिया लाड़ली घूंघटमें मुसकी ॥२॥
दे उरझे सुरझे न परे अलि, मोहनि दृष्टि परी उनकी ।
हास विनोद सुधा रस सींचत, आनन्द वेलि वढ़ी उनकी ॥३॥
चारों भैया जेंवन बैठे, राव जनक जोरो निरखी ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, श्याम घटा बिजली चमकी ॥४॥
रतन सिंहासन रघुवर बैठे, मुतियनकी कलंगी झलकी ।
गरुड़ बिमान चढ़े रघुनन्दन, पुष्पन की बरखा बरखी ॥५॥
अग्रदास बलि जात सुनयना, वार वार सीता वरकी ॥६॥

८०८—भजन

रघुबर लागत है मोहिं प्यारो ॥टेक॥
अवधपुरी सरयू तट विहरैं, दशरथ प्राण पियारो ॥१॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, पींतावर पटवारो ।
नयन विशाल माल मोतियन की, सखि तुम नेक निहारो ॥२॥
रूप स्वरूप अनूप वनो है, चितसे टरत न टारो ।
माधुरि मूरति निरखो सजनी, कोटि भानु उजियारो ॥३॥
जानकि नायक सब सुखदायक, गुणगण रूप अपारो ।
अग्र अली प्रभुकी छवि निरखे, जीवन प्राण हमारो ॥४॥

८०९—भजन

देखो माई रघुनन्दन प्रभु आवैं ॥टेक॥
उपवन बाग सिकार खेलिकै, चपल तुरङ्ग नचावैं ॥१॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, उर वनमाल सुहावैं ।
कटि पर लट पट पीत लपेटे, कर गहि वाज उड़ावैं ॥२॥
चतुरंगिणी सैन्य संग सोहै, पंचरंग ध्वजा उड़ावैं ।
घुरत निसान भेरि सहनाई, गरद गगन उड़ि जावैं ॥३॥
वंदीजन गन्धर्व गुण गावैं, गाय गाय प्रभुहिं रिझावैं ।
जय जयकार करत ब्रह्मादिक, इन्द्र पुष्प झरि लावैं ॥४॥
अवधपुरी कुल वधू निहारैं, निरखि परम सुख पावैं ।
मातु कौशल्या करत आरती, अग्रदास वलि जावैं ॥५॥

८१०—भजन

जब कर राघव बाण धरैंगे ॥टेक॥
संग रघुनाथ भीर बनचरकी, कपि दल कोपि चढ़ैंगे ।
श्याम घटा घन झुकी अंधेरी, सूर्य्यहु गगन छिपैंगे ॥१॥
पंचरंग बाण राम लछमणके, सागर तीर रुपैंगे ।
जो सागरको गर्व करत है, तापर सेतु बंधैंगे ॥२॥
लंका सो कोट समुद्रसी खाई, थरहर भूमि परैंगे ।
जामवन्त हनुमान नील नल, महा शोर धुनि गर्ज करैंगे ॥३॥
राति भयानक सपना देखो, लंका कोट लुटैंगे ।
नाम विभीषण बन्धु तुम्हारे, रघुपति जाय मिलैंगे ॥४॥

मेघनादसे पुत्र तुम्हारे, वो नहिं धीर धरैंगे।
कुम्भकर्ण बल बन्धु तुम्हारे, रणमें जूझि मरैंगे ॥५॥
अहिरावण से योधा मरिहैं, लंकमें शोक परैंगे।
चौंसठि योगिनि मंगल गावैं, खप्पर वीर भरैंगे ॥६॥
दश सिर छेदि वीस भुज तोरे, एकहि बाण हरैंगे।
जो दारद मुनि मुखसे भाखी, भारत राम करैंगे ॥७॥
श्री रघुनाथ अनाथके बन्धू, शरणै जाय परैंगे।
अग्रके स्वामी लै मिलो जानकी, कछु दिन राज करैंगे ॥८॥

८११—भजन

अब देखो राम ध्वजा फहरानी ॥टेक॥
झलकत ढाल फरूकत नेजा, गरद उड़ी असमानी।
लक्ष्मण वीर वालि सुत अंगद, हनूमान अगवानी ॥१॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिय रावण, त्रिभुवन पतिसे ठानी।
जो सागरको गर्व करत है, तापर शिला उतरानी ॥२॥
तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी, रिपुकी करत वड़ाई।
भुवमण्डलसे पकरि मंगावौं, वे तपसी दोउ भाई ॥३॥
हनुमानसे पायक उनके, लक्ष्मणसे वल भाई।
जरत अगिनिमें कूदि परत है, कोट गनै नहिं खाई ॥ ४ ॥
मेघनादसे पुत्र हमारे, कुम्भकर्ण वल भाई।
एक बार सन्मुख होइ लड़िहौं, युग युग होत वड़ाई ॥ ५ ॥
कहत मन्दोदरि सुनु पिया रावण, तैं मेरि एक न मानो।
रैनको सपनो ऐसो भयो है, सोनेकी लंक लुटानी ॥ ६ ॥

वन्दर एक लङ्क विच आयो, घर घर धूम मचाई।
बाग उखारि समुद्र बिच डारे, लंकमें आगि लगाई ॥ ७ ॥
गर्वी रावण गर्व न कीजै, गर्वहि लंक लुटाई।
जाय मिलो रघुनाथ कुंवरसे, लंक अचल होइ जाई ॥ ८ ॥
इक लख पुत्र सवा लख नाती, मौत आपनी ठानी।
अग्रके स्वामी गढ़ लङ्का घेरे अजहुं चेत अभिमानी ॥ ९ ॥

८१२—भजन

राघवजीकी आजु सजी असवारी ॥ टेक ॥
दशरथ राजकुमार लाड़िले, शोभा न्यारी न्यारी ॥ १ ॥
सजे तुरंग रंग राजनके, भीर गजेन्द्रन भारी।
जगमग झूल जरीकी सोहै, रत्न जड़ाव अम्बारी ॥ २ ॥
घूम गरजसे भरतजी आये, श्रीरघुनाथ बिहारी।
होत कुलाहल लखन लालको, रिपु सूदन छवि न्यारी ॥३॥
हर्षे देव सुमन बहु वर्षे, जयजयकार उचारी।
ब्रह्मादिक दर्शणको आये, मोहत बदन निहारी ॥ ४ ॥
रवि शशि कोटि बदनकी शोभा, चन्द्रकला उजियारी।
अग्र अली प्रभु की छवि निरखे चरण कमल बलिहारी ॥५॥

८१३—भजन

वसन्त बधावा चलो अवध जहाँ सुभग सिंहासन बैठें राम ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि जन सकल देवता, विश्वामित्र विराजैं।
बाजे विविध भाँति बहु बाजें, घन दामिनि ज्यों गाजैं ॥ १ ॥

हाथ लिये पिचकारी प्यारी, सोंधे सो भरि लाई।
पञ्च सखी मिलि कलश बनायो, भली भाँति बनि आई ॥ २ ॥
मधुर मधुर सुर गान करत हैं, देत होरिन की गारी।
सब सखि मिलि गुलाल उड़ावत भरि भरि कंचन थारी ॥ ३ ॥
चोवा चन्दन और अरगजा कीच मची अति भारी।
उड़त गुलाल अरुण भए अम्बर सोंधे भीनी सारी ॥ ४ ॥
प्रथम पञ्चमी बैठि सिंहासन, कौतूहल सब कीजै।
अग्रदासकी यही बीनती, भक्ति दान मोहिं दीजै ॥ ५ ॥

अग्रदास

८१४—प्रभाती

प्रात समय उठि जनक नन्दिनी, त्रिभुवननाथ जगावैं ॥ टेक ॥
उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावैं ॥ १ ॥
हस्त कमल सों चरण पलोटैं ले ले दृगन लगावैं।
जो पद परसि नारी गोतमकी अभय परम पद पावैं ॥ २ ॥
उरझी माल गले मोतियनकी कर अँगुरी सुरझावैं।
घूँघरवारी अलक वदन पर पागकी पेंच बनावैं ॥ ३ ॥
कनक कलश सरयू जल झारी दाँतुन दान करावैं।
कमल नयन मुख निरखि रामको आनन्द उर न समावैं ॥४॥
संत जननकी ये ही विनती, आरत वचन सुनावैं।
कान्हरदास सिया रघुवर को, हरपि निरखि गुण गावैं ॥५॥

——

८१५—घूमनी

प्यारो लगे रघुवीर मोरो सजनी ॥ टेक ॥
छोटे छोटे धनस और छोटे छोटे तरकस कोमल गात शरीर ॥ १ ॥
सरयू के तीर अयोध्या नगरी, चौकी हनुमत वीर ॥ २ ॥
सीता राम लिछमण भरत शत्रुघन खेलत सरयूके तीर ॥ ३ ॥
रामजीके सोहै केसरियो बागो, सियाजीके दखनीरो चीर ॥ ४ ॥
कान्हरदास कहत या जुगमें भई सन्तनकी भीर ॥ ५ ॥

८१६—प्रभाती

भोर भयो सब हिलिमिलि नागरी कौशल्या पै आई ॥ टेक ॥
हमरो प्रीतम तुमरो ढोटा वेगि जगावो माई ॥ १ ॥
चकई मिलन चहै चकवासों हमहुं चहत रघुराई ।
भानु उदय बिन कमल न फूलै भँवर रहैं मुरझाई ॥ २ ॥
कनक भवनमें रतन सिहांसन जहां सोवत चारों भाई ।
रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन शोभा वरणि न जाई ॥ ३ ॥
इतनो वचन सुन्यो नागरिको हरषि उठे रघुराई ।
उठि पीताम्बर टान्यो मुखसों मधुर मधुर मुसकाई ॥ ४ ॥
ब्रह्मादिक जाको पार न पावैं निगम 'नेति-यश गाई ।
कान्हर लाहु कहां लगि वरणौं शेष .सहस मुख गाई ॥ ५ ॥

८१७—प्रभाती

भोर भयो भूपतिके द्वारे नौबत बाजन लागी ॥ टेक ॥
भयो कुलाहल कनक भवनमें, जनक नन्दिनी जागी ॥ १ ॥

द्रुमन द्रुमन पक्षी बन बोलैं, तिमिर निशाचर भागी।
अरुण भयो रवि किरण प्रकाशित, कोक शोक भय त्यागी ॥२॥
अरुण शिखा धुनि करत परस्पर, प्रेम प्रीति रस पागी।
सरयू तीर चले मज्जनको, गुरु भूसुर वैरागी ॥ ३ ॥
दासी दास चले दर्शणको, चरण कमल अनुरागी।
प्रथमहि जाय कमल मुख निरखें सोइ कान्हर वड़ भागी ॥४॥

८१८—भजन

जय जय जय नृप जनक किशोरी ॥ टेक ॥
तेरो इ ध्यान धरत निशिवासर, नारद शारद शंकर गौरी ॥ १ ॥
लियो उठाय धनुष तिनका ज्यों, वाल केलि लीला वपुधारी।
कौतुक देखि भूप प्रण कीन्हों, धनुष तोरि याको वर सौरी ॥ २ ॥
तेरे यज्ञ भागके कारण, सकल भये सुर नर इक ठौरी।
याहि धनुष दशशीश भूप भट, पचि पचि हारि चले मुख मोरी ॥३॥
सिंधुर चाल चलै मृगनयनी, रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरी।
लाहा रामदास कान्हर भजु युग युग राम सियाकी जोरी ॥ ४ ॥

कान्हरदास

८१९—सगुण निर्गुण बाराखड़ी

कक्का केवल नामको, मनमें करो विचार।
रज तम सत वासूं हुवा तासूं सब संसार ॥ १॥
खखा खेती नामकी, वावो दिन अरु रात।
जीव बटाऊ पावणो, उठ चालै परभात ॥२॥

गगा गुरु पूरा मिल्या, मिट्या काल का जाल।
पत्थर से पारस करया, ऐसा दीन दयाल॥ ३॥
घघा घटमें मंदिर देहरो, घरमें पूजन हार।
अनहद वाजा वज रह्या, क्या देखे संसार॥ ४॥
नना नर नारायणी, येही जुगमें सार।
मूरख नर आंधो भयो, मिलै न वारंवार॥ ५॥
चचा चतुराई करी, वाज्यो स्याणो पूत।
परनारी ने निरखतां, जम मारैगा जूत॥ ६॥
छछा छोटी वहन है, मोटी मात समान।
ऐसी चित धारण करै, निश्चय होय कल्याण॥ ७॥
जजा जुलमी जीवने, निश्चय वश कर राख।
इहलोक परलोकमें, दोनूं निपजै साख॥ ८॥
झझा झांटो जीवको, खोल देख मन मांय।
ज्ञान रुप भगवान हैं, बाहर है कछु नांय॥ ९॥
ञञां यूं ही खो दियो, मिनखा देह शरीर।
एक हरीका नाम विन, मिटी न मन की पीर॥ १०॥
टटा टाली ज्ञानकी, ध्यानको दीपक जोय।
घरमें मन्दिर देख ले, मनका मैला धोय॥ ११॥
ठठा ठाकुर हद वण्यो, सुख दुःख व्यापै नांय।
चोथो पद सरवण पड़ै, काल कदे नहिं खाय॥ १२॥
डडा ड़ाँवो पग नीचो करै, दहणो ऊपर होय।
दोनूं रग सांची दवै, जोगी आसन होय॥ १३॥

ढढा ढोल नगारा घुर रह्या, आज हमारो व्याव।
देखो गाय बजाय कर, दियो काठमें पांव ॥ १४ ॥
णणा होणी ना होत है, होनी मिटै न कोय।
राम युधिष्ठिर नल सही, मेट न सक्या कोय ॥ १५ ॥
तता तूं के कर सकै, करण हार करतार।
या निश्चै नर जाण ले, सोई हरि भज उतरै पार ॥१६॥
थथा थंब अकाशके, लागत है कछु नांय।
ग्यानी दाता सूरमो, जती खंब है ताय ॥ १७ ॥
ददा दहणी सुर चलै, जद भोजन करणो सार।
बांई सुर पाणी पिवै, कहे न होत विकार ॥ १८ ॥
धधा धन धीणो हवा, चोथो कुंवा नीर।
काढ़या दूणो संचरे वंद होय सब सीर ॥ १९ ॥
नना नारी नहीं या नाहरी नित उठ पिवने खाय।
नारायण सुमरै नहीं अन्त नरकां ले जाय ॥ २० ॥
पपा पढ़ पोथी पण्डित भयो, लोभ तज्यो कछु नांय।
ऐसे सूं तैसो भलो, कहण सुणन में नांय ॥ २१ ॥
फफा फल तो मोक्ष हैं, धन सुख छायां मान।
कर्म स्वरूपी गाछके, छाया स्वते होई जान ॥ २२ ॥
वबा वलि छलणे गये, वंध गये आप शरीर।
सतको वांध्यो यूं वँधै, ज्यूं सरवरमें नीर ॥ २३ ॥
भभा भली हुई गुरु मिल गये, खुल गये भरम किंवाड़।
जमकी फांसी यूं कटो, ज्यूं कटै धूलकी वाड़ ॥ २४ ॥

ममा मन मगनो हस्ति भयो, याके बलको अन्त न पार।
गुरु बचन आँकुश भया, छेद भेद गया पार ॥ २५ ॥
यया या संसारमें, धनकी बड़ी पिछाण।
अनृत से पैदा करै, पुण्य रती नहीं जाण ॥ २६ ॥
ररा राग द्वेषने त्याग दे, सोही गृहस्थी धन्य।
पाँच ग्रास नाके धरै, श्रद्धा सारू पुण्य ॥ २७ ॥
लल्ला छोड़ो लावदा, धरो शील सन्तोष।
नारायणसे वीनती, मेटे सगला दोष ॥ २८ ॥
ववा वा गुरु देवकी बावा वेद पुराण।
वावा जती मरदकूं, मनमथके मथराण ॥ २९ ॥
ससा सतगुरु कह गया, देव निरञ्जन ध्याय।
पल पलमें रक्षा करै, अजर अमर हो जाय ॥ ३० ॥
षषा खाली रह गयो सिन्दड़ा, सदा ही तेलके संग।
साधै सो साधू हुवा, जाके दुःख नहिं व्यापै अंग ॥ ३१ ॥
शशा सांइका घर दूर है, पूंचै विरला सूर।
सुंडामल गुरु नामसे, भई कथा भरपूर ॥ ३२ ॥
हहा हर्ष उछावसे, हम करयो हरिको ध्यान।
गुन्नीसे छियालिसमें, दियो गुरूजी ज्ञान ॥ ३३ ॥

सुन्डाराम खंडेलवाल

८२०—राग विलावल

मुकुट लटक अटकी मनमांही ॥ टेक ॥
नृत तन नटवर मदन मनोहर, कुंडल झलक पलक बिथुराई ॥ १ ॥

नाक बुलाक हलत मुक्ताहल, होठ मटक गति भौंह चलाई।
ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर, बांह उठाय करत चतुराई ॥ २ ॥
झुनक झुनक नूपुर झनकारत, तता थेई थेई रीझ रिझाई।
चरनदास सहजो हिये अन्तर, भवन करौ जित रहो सहाई ॥ ३ ॥

८२१—राग आसावरी

बाबा काया नगर बसावो ॥ टेक ॥
ज्ञान दृष्टि सूं घटमें लेखौ, सुरति निरति लौ लावौ ॥ १ ॥
पांच मारि मन बसि कर अपने, तीनों ताप नसावौ।
सत सन्तोष गहौ दृढ़ सेती, दुर्जन मारि भजावौ ॥ २ ॥
सील छिमा धीरजकूं धारौ, अनहद बंब बजावौ।
पाप बानिया रहण न दीजै, धरम बजार लगावौ ॥ ३ ॥
सुबस बास होवै जब नगरी, बैरी रहै न कोई।
चरनदास गुरु अमल बतायौ, सहजो संभलौ सोई ॥ ४ ॥

८२२—राग काफी

नैनों लख लैनी सांई तैंड़े हजूर।
आगे पीछे दहिने बायें, सकल रहा भरपूर ॥ १ ॥
जिनको ज्ञान गुरूको नाहीं, सो जानत हैं दूर।
जोग जज्ञ तीरथ व्रत साधैं, पावत नाहीं कूर ॥ २ ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जिमींमें, सोई हरिका नूर।
चरणदास गुरु मोहिं बतायौ सहजो सबका मूर ॥ ३ ॥

८२३—सोलह तिथि निर्णय

परणाम करूं शुकदेवजी, तुम पर वारूं प्रान ।
सोलह तिथि अव कहत हूं, इनका दीजै ज्ञान ॥
चरणदासके चरणकूं, निस दिन राखूं ध्यान ।
ज्ञान भक्ति और जोगकूं, तिथिमें करूं वखान ॥
(कुंडलिया)
माँवस—ममा ररा दो अंककूं राखौ हिरदे माहिं ।
धर्मराय जाँचै नहीं, लेखा मांगै नाहिं ॥
लेखा मांगै नाहिं जाय नहिं जमपुर वंधा ।
ऐसे निर्मल नामको विसरै सो अंधा ॥
टीका चारों वेदका, महिमा कही न जाय ।
औसर वीत्यो जात है सहजो सुमरि अवाय ॥
पड़िवा—पानीका सा वुलवुला, यह तन ऐसा होय ।
पीव मिलनकी ठानिये, रहिये ना पड़ि सोय ॥
रहिये ना पड़ि सोय, वहुत नहिं मिनखां देही ।
आपनहीकूं खोज मिलै जव राम सनेही ॥
हरिकूं भूले जो फिरै सहजो जीवन छार ।
सुखिया जव ही होयगो सुमिरैगो करतार ॥
दूज—दोयज धंधा जगतका लागि रहै दिन रैन ।
कुटुम्व महा दुख देत है कैसे पावे चैन ॥
कैसे पावे चैन विना साधूकी संगत ।
दुनिया रंग पतंग मजीठी गुरुकी रंगत ॥

जन्म मरण तासूं छुटै, सहजो दरसै राम।
चौरासीके दुख मिटैं पावै निज पुर धाम ॥
तीज-तीज तनिक सुख कारणे बहुत फंसायो जीव।
लालच लगि ऐसो गिरै जैसे मक्खी घीव ॥
जैसे मक्खी घीव डूब करि निकसै नाहीं।
ऐसे यह नर बूड़ि रहै कुनवेके माहीं ॥
मिनखां देही पायकै सहजो डारी खोय।
जमपुर बाँधे वे चले चौरासी दुख होय ॥
चौथ-चौथ चहूं दिस तिमिर है, महा घोर भयमान।
मूरख जन सोवत तहाँ, मिथ्या ते अज्ञान ॥
मिथ्या ते अज्ञान, सत्यकूं जानत नाहीं।
बन बन ढूंढ़त फिरत राम अपने ही माहीं ॥
ज्यों मिंहदीमें रंग है, लकड़ी मध्य हुतास।
सहजो काया खोजिले, काहे रहत उदास ॥
पाँचै-पाँचौ इन्द्री वस करौ मन जीतनकी ठान।
पवन रोक अनहद लगौ, पावो पद निर्वान ॥
पावो पद निर्वान, करौ तुम ऐसी करनी।
आसन संजम साध, बन्ध लागै जब धरनी ॥
चित मन बुधि हंकारकूं करौ इकट्ठे आन।
सहजो निज मन होय जब निश्चल लागै ध्यान ॥
छट्ठ—छहूं कँवलकूं देख करि सतवै में घर छाव।
रसना उलटि लगाय करि जब आगेकूं धाव ॥

जब आगेकूं धाव, देख कर जगमग जोती।
विन दामिनि चमकार सीप विन उपजै मोती॥
हन्स हन्स जहँ होत है ओं ओं जहँ होय।
चरनदास यों कहत हैं, सहजो सुरति समोय॥
सातैं—सत संगति ही कीजिये, सतही कथिये ज्ञान।
सत ही मुखसूं बोलिये, सतही कीजै ध्यान॥
सत ही कीजै ध्यान हद तजि वेहद लागौ।
तीन अवस्था छोड़ि जाय तुरिया सूं पागौ॥
निराकार निर्गुण तहाँ इक रस चेतन रूप।
रात दिना सहजो नहीं नहीं छाँह नहिं धूप॥
आठैं—आठनकूं जानै नहीं, दसकूं नाहीं भेद।
चौवीसों समझै नहीं, कैसे छूटै खेद॥
कैसे छूटै खेद पंचकूं जोतै नाहीं।
और पचीसौं संग रहैं, उनके ही माहीं॥
दोय सदा लागी रहै, चौरासीके फेर।
चरणदास यों कहत है सहजो आपा हेर॥
नौमी—निन्दा हिंसा त्याग करि तामसकूं दे पीठ।
चितकूं अस्थिर कीजिये, नासा आगे दीठ॥
नासा आगे दीठ जहाँ कछु देखौ भाई।
पाँच तत्व दरसायँ और अचरज दरशाई॥
तिरदेवा और आठ सिधि, देखो इन्दू भूप।
चरणदास कहैं सहजिया साधन अधिक अनूप॥

दशमी–दसों दिसा भरपूर है तामें ये सब पिंड।
ज्यों सरवरमें बुदबुदे ब्रह्म बीच ब्रह्माण्ड ॥
ब्रह्म बीच ब्रह्माण्ड तासुको वार न पारा।
ऐसो तत्त अगाध नेत कहि निगम पुकारा ॥
चरणदास कहैं सहजिया, गुरुसे लेवौ ज्ञान।
नैना होहिं अनन्त ही जब यह पावै जान ॥
ग्यारस–ग्यारस गति जो चाहत हौ तजो जगतकी आस।
कलह कलपना छाँड़िके आतममें करि वास ॥
आतममें करि बास खैंच इन्द्री दस लावौ।
मन इस्थिर जब होय सुरति और निरति मिलावौ ॥
ध्याता थाके ध्यानमें, ध्यान ध्येयके माहिं।
जनम मरण मिटि सहजिया उपजै विनसै नाहिं ॥
द्वादसी-द्वादस दावा दूर करि दावे ही में दुक्ख।
रार दोष और आपदा, अकस निवारैं सुक्ख ॥
अकस निवारै सुक्ख मोहिं चरणदास दुहाई।
तामस सबही त्याग तासुमें बहुत भलाई ॥
काम क्रोध मद लोभकूं, ज्ञान अगिनसूं जार।
जब निर्मल ह्वै सहजिया, आनन्द लहै अपार ॥
तेरस—तेरस तन अचरज महा छिनभंगी छल रूप।
देखत ही देखत गये, कहा रंक कहा भूप ॥
कहा रंक कहा भूप कोई रहने नहिं पावै।
इत सूं सबही जाहि बहुरि उतसूं नहिं आवै ॥

इतने ऊपर घर कहै महल दरब सन्तान।
हाँसी आवै सहजिया ये मूरख मस्तान॥
चौदस–चौरासी भुगती घनी वहुत सही जम मार।
भरम फिरे तिहुं लोकमें तहू न मानी हार॥
तहू न मानी हार मुक्ति की चाह न कीन्हीं।
हीरा देही पाय मोल माटीके दीन्हीं॥
मूरख नर समझे नहीं, समझाया वहु वार।
चरणदास कहैं सहजिया सुमिरै ना करतार॥
पूनो—पूनो पूरा गुरु मिलै, मेटै सब सन्देह।
सोवतसूं चेतन होय देखै जाग्रत गेह॥
देखै जाग्रत गेह, जहाँसूं सुपने आयो।
जगकूं जान्यौ साँच रूप अपनो विसरायो॥
चरणदास कहैं सहजिया, गुरु चरणन चित लाव।
तिमिर मिटै अज्ञानकूं ज्ञान चांदनो पाव॥
सोलह तिथि पूरन भई, सहजो करी वखान।
चरणदास की दयासूं मिटौ सकल अज्ञान॥
लिखै पढ़ै सुनै प्रीतसूं, ताको पाप नसाहि।
और ऐसी करनी करै, मुक्ति रूप ह्वै जाहि॥

८२४—सात वार निर्णय

नमो नमो सुकदेवजी, तुम्हरी शरण गही।
मेरे सिर पर हाथ धरि, चरनों लागि रही॥

सात वार बरणन करूं, कुंडली मांहि उचार।
याही मुखसूं कहत हूं, तुमकूं हिरदे धार॥

(कुंडलिया)

मंगल माली राम है, जाका यह जग बाग।
निस दिन ताहीमें रहें, वाही सेती लाग॥
वाही सेती लाग, करी जिन यह गुलजारी।
पात पातकी खबर, डाल सब लागै प्यारी॥
आपन ही कूं जानि लै, वाही ठौरका फूल।
चरणदास कहै सहजिया, ऐसे समझो भूल॥१॥
बुध वारी में फल घने, जो पै देवै वाड़।
रखवारीके बिन किये पाँचौ करै उजाड़॥
पाँचो करै उजाड़, पचीसौ चरि चरि जाई।
सावधान जो होय, सोई वाके फल खाई॥
चरणदास कहै सहजिया, ऐसे समुझ विचार।
तेरी कायामें खिले, भाँति भांति गुलजार॥२॥
बृहस्पतिवारी आइया, पाई मनुषा देह।
सो तन छिन छिन घटत है, भयो जात है खेह॥
भयो जात है खेह, बहुरि लाहा कब लैहौ।
वेगहिं समुझ संभार, नहीं बहुतै पछितैहौ॥
आगा पीछा क्या करै, सकल वासना त्याग।
चरणदास कहै सहजिया, हरि सुमिरनकूँ लाग॥३॥

सुक्कर सर उपदेशका, लगा कलेजे नाहिं ।
ते नर पशू समान हैं, या दुनिया के माहिं ॥
या दुनियां के माहिं, सदा चक्करमें डोलैं ।
आवागौन दुःख महा, तासुकी गाँठि न खोलैं ॥
ऐसे मूरख बावरे, भोंदू मुग्ध गँवार ।
चरणदास कहै सहजिया, भरमैं बारंबार ॥ ४ ॥
थावर थिर करतार है, और सकल मिटि जाय ।
जातें सूमति प्रीति करी, रहते चित्त लगाय ॥
रहते चित्त लगाय, तासुने जग उपजाया ।
वांकी सरनै आय, करै बहुविधिकी छाया ॥
ऐसा हरिका नाम है, जन्म मरण मिटि जाय ।
चरणदास कहै सहजिया, साचे सूं लौ लाय ॥ ५ ॥
एत तो आये जगतमें, हरि सुमिरणके काज ।
ह्यां कुछ कीया और ही, नेक न आई लाज ॥
नेक न आई लाज, साज सब खोटे कीन्हे ।
सदा रहे अज्ञान, राम घटमें नहिं चीन्हे ॥
जैहो जनम गँवायके, पछितावा रहि जाय ।
चरणदास कहे सहजिया, कहा कियौ तन पाय ॥ ६ ॥
सोम सिरीपति सेइये, गुरुकी आयस लेय ।
सत संगति अचरज कथा, ताहीमें मन देय ॥
ताहीमें मन देय, और ऊँचा नहि यातें ।
और सकल धर्म डरै, सभी थोथी है बातैं ॥

चरणदास कहै सहजिया, भक्ति सिरोमनि जान।
तन धन चित बुध प्राणकूं, तामें दीजै आन॥ ७॥
सात वार ये मैं कहे, जामें हरिका भेद।
जो कोइ समुझै प्रीतिसूं, छूटै सब ही खेद॥
सातो बारों बीचमें, जग उपजै मिटि जाय।
सहजो बाई हरि जपौ, आवागवन नशाय।

सहजो बाई

८२५—राग भैरों

आदि अनादी मेरा सांई।
दृष्ट न मुष्ट है, अगम, अगोचर, यह सब माया उन हीं माई॥ १॥
जो बनमाली सींचै मूल, सहजै पिवै डाल फल फूल॥ २॥
जो नरपतिको गिरह बुलावै, सेना सकल सहज ही आवै॥ ३॥
जो कोई कर भानु प्रकासै, तौ निसि तारा सहजहि नासै॥ ४॥
गरुड़-पंख जो घरमें लावै, सर्प जाति रहने नहिं पावै॥ ५॥
'दरिया' सुमिरै एक हि राम, एक राम सारै सब काम॥ ६॥

८२६—भजन

जाके उर उपजी नहिं भाई, सो क्या जानै पीर पराई॥ १॥
ब्यावर जानै पीरकी सार, वांझ नार क्या लखै विकार॥ २॥
पतिव्रता पतिको व्रत जानै, विभचारिन मिल कहा बखानै॥३॥
हीरा पारख जौहरी पावै, मूरख निरखके कहा बतावै॥ ४॥
लगा घाव कराहै सोई, कोगतहारके दर्द न होई॥ ५॥

राम नाम मेरा प्रान-अधार सोई राम रस पीवन हार ॥ ६ ॥
जन 'दरिया' जानैगा सोई, प्रेमकी भाल कलेजे पोई ॥ ७ ॥

८२७—भजन

जो धुनिया तौसी मैं राम तुम्हारा ।
अधम कमीन जात मति-हीना, तुम तो हो सिरताज हमारा ॥ १ ॥
कायाका जन्त्र शब्द मन मुठिया, सुखमन ताँत चढ़ाई ।
गगन-मंडलमें धुनुआँ बैठा, मेरे सत्गुरु कला सिखाई ॥ २ ॥
पाप पान हर कुबुध काँकड़ा, सहज सहज झड़ जाई ।
घुंडी गाँठ रहन नहिं पावै, इक रंगी होय आई ॥ ३ ॥
इकरङ्ग हुआ, मरा हरि चोला, हरि कहँ कहा दिलाऊं ।
मैं नाहीं मेहनतका लोभी, बकसो मौज भक्ति निज पाऊं ॥ ४ ॥
किरपा करि हरि बोले बानी, तुम तौ हौ मम दास ।
'दरिया' कहे, मेरे आतम भीतर, मेलौ राम भक्ति विश्वास ॥ ५ ॥

८२८—राग बिहंगड़ा

नाम बिन भाव करम नहिं छूटै ॥ टेक ॥
साध संग और राम भजन बिन, काल निरन्तर लूटै ॥ १ ॥
मल सेती जो मलको धोवै, सो मल कैसे छूटै ।
प्रेमका साबुन नामका पानी, दोय मिल ताँता टूटै ॥ २ ॥
भेद अभेद भरमका भाँडा, चौड़े पड़ पड़ फूटै ।
गुरमुख शब्द गहै उर अन्तर, सकल भरम से छूटै ॥ ३ ॥
रामका ध्यान तूं धर रे प्रानी, अमृतका मेंह बूटै ।
जन दरियाव अरप दे आपा, जरा मरण तब टूटै ॥ ४ ॥

८२९—भजन

सन्तो कहा गृहस्त कहा त्यागी ।
जेहि देखूं तेहि बाहर भीतर, घट घट माया लागी ॥ टेक ॥
माटीकी भींत पवनका थम्बा, गुन औगुनसे छाया ।
पाँच तत्त आकार मिलाकर, सहजाँ गिरह बनाया ॥ १ ॥
मन भयो पिता मनसा भइ माई, दुःख सुख दोनों भाई ।
आसा तृष्णा बहनें मिलकर गृहकी सौंज बनाई ॥ २ ॥
मोह भयो पुरुष कुबुध भइ घरनी, पाँचो लड़का जाया ।
प्रकृति अनन्त कुटुंवी मिलकर, कलहल वहुत उपाया ॥ ३ ॥
लड़कोंके संग लड़की जाई ताका नाम अधीरी ।
बनमें बैठी घर घर डोलै, स्वारथ संग खपीरी ॥ ४ ॥
पाप पुन्न दोउ पाड़ पड़ोसी, अनन्त बासना नाती ।
राग द्वेषका बंधन लागा, गिरह बना उतपाती ॥ ५ ॥
कोइ गृह माँड गिरहमें बैठ्या, बैरागी बनवासा ।
जन दरिया इक राम भजन बिन, घट घटमें घर बासा ॥ ६ ॥

८३०—भजन

साधो राम अनूपम बानी ।
पूरा मिला तो वह पद पाया, मिट गइ खैंचा तानी ॥ टेक ॥
मूल चांप दृढ़ आसन बैठा, ध्यान धनी से लाया ।
उलटा नाद कँवलके मारग, गगना माहिं समाया ॥ १ ॥
गुरुके शब्दकी कूंची सेती, अनन्त कोठरी खोली ।
भ्रूलोक पर कलस विराजै, ररङ्कार, धुन वोली ॥ २ ॥

जहँ वसत अगाध अगम सुखसागर देख सुरत वौराई ।
वस्तु घनी पर वरतन ओछा, उलट अपूठी आई ॥ ३ ॥
सुरत शब्द मिल परचा हुआ, मेरु मद्धका पाया ।
तामें पैस गगनमें आया, वहँ जाय अलख लखाया ॥ ४ ॥
जहँ पग विन पातर, कर विन वाजा, विन मुख गावैं नारी ।
विन वादल जहँ मेह वरसै है, ठुमक ठुमक सुख क्यारी ॥५॥
जन दरियाव प्रेम गुन गाया, वहँ मेरा अरट चलाया ।
मेरु डंड होय नाल चली है, गगन वाग जहँ पाया ॥ ६ ॥

८३१—भजन

जीव वटाऊरे वहता मारग माईं ।
आठ पहरका चालना, घड़ी इक ठहरै नाहीं ॥ १ ॥
गरभ जनम वालक भयो रे, तरुनाई गरवान ।
वृद्ध मृतक फिर गर्भ वसेरा, यह मारग परमान ॥ २ ॥
पाप पुण्य सुख दुःखको करनी, वेड़ी थारे लागी पांय ।
पञ्च ठगोंके वसमें पड़्यो रे, कव घर पहुंचे जाय ॥ ३ ॥
चौरासी वासो तूं वस्यो रे, अपना कर कर जान ।
निश्चय निश्चल होयगो रे, पद पहुंचै निर्वान ॥ ४ ॥
राम विना तोको ठौर नहीं रे, जहँ गावै तहं काल ।
जन दरिया मन उलट जगतसूं, अपना राम संभाल ॥ ५ ॥

८३२—भजन

दुनियाँ भरम भूल वौराई ।
आतम राम सकल घट भीतर, जाकी सुद्ध न पाई ॥ १ ॥

मथुरा कासी जाय द्वारिका, अड़सठ तीरथ न्हावै।
सत्गुरु बिन सोधा नाहिं कोई, फिर फिर गोता खावै ॥ २ ॥
चेतन मूरत जड़को सेवै, वड़ा थूल मत गैला।
देह अचार किया कहा होई, भीतर है मन मैला ॥ ३ ।
जप तप संजम काया कसनी, सांख जोग ब्रत दाना।
यातें नहीं ब्रह्मसे मेला, गुन हर करम वंधाना ॥ ४ ॥
वकता होय होय कथा सुनावै, स्रोता सुन घर आवै।
ज्ञान ध्यानकी समझ न कोई, कह सुन जन्म गंवावै ॥ ५ ॥
जन दरिया यह वड़ा अचम्भा, कहे न समझै कोई।
भेड़ पूंछ गहि सागर लांघै, निश्चय डूबै सोई ॥ ६ ॥

८३२—भजन

साधो मेरे सतगुरु भेद बताया, तासे राम निकट ही पाया ॥ टेक ॥
मथुरा कृष्ण औतार लिया, है घुरै निसाना धाई।
ब्रह्मादिक शिव और सकनादिक, सब मिल करत वधाई ॥ १ ॥
गगन मंडलमें रास रचा है, सहस गोपि इक कन्था।
शब्द अनाहद राग छत्तीसों वाजा वजै अनन्ता ॥ २ ॥
अकास दिसा इक हस्ती उलटा, राई मान दरवाजा।
तामें होय गगनमें आया, सुनै निरन्तर वाजा ॥ ३ ॥
सर्प एक बासक उनिहारे, विष तज अमृत पीवै।
कृष्ण चरणमें लोटै दीन होय अमर जुगन जुग जीवै ॥ ४ ॥
जहँ इड़ा पिंगला राग उचारैं चन्दन सूर थकाना।
वहती नदिया थिर होय पैठी, कलजुग किया पयाना ॥ ५ ॥

राधा हरि सतभामा सुन्दर, मिली कृष्ण गल लागी।
अरस परस होय खेलन लागी, जब जाय दुविधा भागी ॥ ६ ॥
आइ प्रतीत और भया भरोसा, भीतर आतम जागी।
दरिया इकरङ्ग राम नाम भज, सहज भया वैरागी ॥ ७ ॥

८३४—राग गौरी

साधो एक अचंभा दीठा।
कडुवा नीम कहै सब कोई, पीवै जाको मीठा ॥ टेक ॥
बूंद के माहीं समुंद समाना राईमें परवत डोलै।
चींटी के माहीं हस्ती बैठा, बरसें अघटा ओलै ॥ १ ॥
कूंडा माहीं सूर समाना चंद्र उलट गया राहू।
राहु उलट कर तार समाना, भोममें गगन समाहू ॥ २ ॥
त्रिनके भीतर अगिन समानी, राव रंक बस बोलै।
उलट कपाल तिल माहिं समाना, नाज तराजू तोलै ॥ ३ ॥
सतगुरु मिलैं तो अर्थ बतावैं, जीव ब्रह्मका मेला।
जन दरिया वा पदकूं परसै, सो है गुरु मैं चेला ॥ ४ ॥

दरिया साहब

८३५—राग रामकली

पतित उधारण विरद तुम्हारो।
जो यह बात सांच है हरि जू तौ तुम हमको पार उतारो ॥१॥
बालपने औ तरुन अवस्था, और बुढ़ापे माहीं।
हमसे भई सभी तुम जानो, तुमसे नेक छिपानी नाहीं ॥२॥

अनगिन पाप भये मनमाने, नख सिख औगुन धारी।
हिरि फिरि कै तुम सरनै आयौ, अब तुमको है लाज हमारी ॥३॥
शुभ करमनको मारग छूटो, आलस निद्रा घेरो।
एकहिं बात भली बनि जाई, जगमें कहायो तेरो चेरो ॥४॥
दीनदयाल कृपाल विसंभर, श्रीशुकदेव गोसाईं।
जैसे और पतित घन तारे, चरणदासकी गहियो वाहीं ॥५॥

८३६—राग रामकली

अर्ज सुनो जगदीस गोसाईं।
ग्रह नछत्र अरु देव बिसारयो, चरण कँवलकी आयो छांहीं ॥१॥
सत विस्वास यही हिये धारयो, तोहिं न भूलूं एक घरी।
इत उतसूं मन खैंच लियो है, काहू से कछु नाहिं सरी ॥२॥
अब चाहो सो करो प्रभु तुमहीं, द्वारे तुम्हरे सुरति अरी।
भावैं नर्क स्वर्ग पहुंचावो, भावै राखो निकट हरी ॥३॥
अपनी चाह रही नहिं कोई, जव सूं तुम्हरी आस धरी।
आनि भरोसो छांड़ दियो है, सकल विकल सव छार करी ॥४॥
यह आपा तुमही कूं दीन्हीं, मेरी मोमें कुछ न रही।
आदि पुरुष शुकदेव सुनोजी, चरनदास यों टेर कही ॥५॥

८३७—राग केदारा

अवकी तारि देव वलवीर।
चूक मोसूं परी भारी, कुबुधिके संग सीर ॥ १ ॥
भौ सागर की धार तीच्छन महा गंधीलो नीर।
काम क्रोध मद लोभ भँवरमें चित न धरत अव धीर ॥२॥

मच्छ जहँ बलवंत पांचौ थाह गहिर गंभीर।
मोह पवन झकोर दारुन, दूर पैलव तीर ॥३॥
नाव तौ मंझधार भरमी, हिये वाढ़ो पीर।
चरनदास कोई नहीं संगी, तुम विना हरि हीर ॥४॥

८३८—राग बिलावल

प्रभु जू शरण तिहारी आयो ॥ टेक ॥
जो कोइ सरन तिहारी नाहीं भरम भरम दुख पायो ॥ १ ॥
औरन के मन देवी देवा मेरे मन तू ही भायो।
जबसों सुरति सम्हारी जगमें और न सीस नवायो ॥ २ ॥
नरपति सुरपति आस तुम्हारी यह सुनिकै मैं धायो।
तीरथ बरत सकल फल त्याग्यो चरण कमल चित लायो ॥ ३ ॥
नारद मुनि अरु शिव ब्रह्मादिक, तेरो ध्यान लगायो।
आदि अनादि जुगादि तेरो जस वेद पुरानन गायो ॥ ४ ॥
अब क्यों न बांह गहो हरि मेरी तुम काहे बिसरायो।
चरनदास कहै करता तू ही, गुरु सुकदेव बतायो ॥ ५ ॥

८३९—राग सोरठ

अब जग फंद छुड़ावोजी हूं चरण कँवलको चेरो।
पड्यो रहूं दरबार तिहारे सन्तन माहिं बसेरो ॥१॥
विना कामना करूं चाकरी, आठों पहरे नेरो।
मनसब भक्ति कृपा करि दीजै यही मोहिं बहुतेरो ॥२॥
खानेजाद कदीमी कहियो, तुही आसरो मेरो।
झिड़क विडारो तहूं न छोड़ूं सेवा सुमिरन तेरो ॥ ३ ॥

काहू ओर आन देवनसूं रहो नहीं उरझेरो ।
जैसे राखो त्यों ही रह हूं करि लीजै सुरझेरो ॥४॥
तेरे घर बिन कहूं न, मेरो ठौर ठिकानो डेरो ।
मोसे पतित दीनकूं हरिजू तुमहीं करो निवेरो ॥५॥
गुरु सुकदेव दया करि मोकूं ओर तिहारी फेरो ।
चरनदासको सरनै राखौ यही इनाम घनेरो ॥६॥

८४०—राग सोरठ

मोकूं कछू न चहिये राम ।
तुम बिन सब हीं फीके लागैं, नाना सुख धन धाम ॥ १ ॥
आठ सिद्धि नौ निद्धि आपनी, और जननको दीजै ।
मैं तो चेरो जन्म जन्मको, निज करि अपनो कीजै ॥ २ ॥
स्वर्ग फलनकी मोहिं न आसा, ना वैकुंठ न मोच्छहि चाहूं ।
चरन कमलके राखौ पासा, यहि उर माहिं उमाहूं ॥ ३ ॥
भक्ति न छोड़ूं मुक्ति न मांगूं, सुन सुकदेव मुरारी ।
चरनदास की यही टेक है, तजूं न गैल तुम्हारी ॥ ४ ॥

८४१—राग विलास

घटमें तीरथ क्यों न नहावो ॥ टेक ॥
इत उत डोलो पथिक वने हीं, भरमि भरमि क्यों जनम गँवावो ॥१॥
गोमती कर्म सुकारथ कीजै, अधरम मैल छुटावो ।
सील सरोवर हितकरि न्हैये, काम अगिनकी तपन बुझावो ॥ २ ॥
रेवा सोई छिमाको जानो, तामें गोता लीजै ।
तनमें क्रोध रहन नहिं पावै ऐसी पूजा चित्त दे कीजै ॥ ३ ॥

सत जमुना सन्तोष सरस्वति, गंगा धीरज धारो।
झूंठ पटकि निर्लोभ होय करि, सबहीं बोझा सिरसूं डारो ॥ ४ ॥
दया तीर्थ कर्मनासा कहिये, परसै बदला जावै।
चरनदास शुकदेव कहत हैं, चौरासीमें फिर नहिं आवै ॥ ५ ॥

८४२—राग रामकली

सब जातिनमें हरिजन प्यारे ॥ टेक ॥
रहनी तिनकी कोइ न पावै, तनसूं जगमें मनसूं न्यारे ॥ १ ॥
साखि सुनो अम्बरीष भूपकी, दुरवासा जहँ आयो।
लगो श्राप देन राजाको, चक्र सुदर्शन जारन धायो ॥ २ ॥
प्रभुजी आये दुरजोधनके, वह मनमें गरवायो।
नाना विधिके व्यञ्जन त्यागे, साग विदुर घर रुचिसूं पायो ॥३॥
सतजुग त्रेता द्वापर कलिजुग, मान सन्तको राखो।
भक्तन बस भगवान सदाहीं, वेद पुराननमें जो भाखो ॥ ४ ॥
ब्राह्मन छत्री वैश्य शूद्र घर, कहीं होय क्यों न वासा।
धनि वह कुल शुकदेव बखानैं, यह तुम सुनो चरन हीं दासा ॥५॥

८४३—राग नट व बिलावल सारंग

हमारे राम भक्ति धन भारी।
राज न डांड़ै चोर न चोरै लूटि सकै नहिं धारी ॥ १ ॥
प्रभु पैसे अरु नाम रुपैये मुहर मोहब्बत हरिकी।
हीरा ज्ञान जुक्तिके मोती कहा कमी है जरकी ॥ २ ॥
सोना सील भंडार भरे हैं, रूपा रूप अपारा।
ऐसी दौलत सतगुरु दीन्ही, जाका सकल पसारा ॥ ३ ॥

बांटौं बहुत घटै नहिं कबहूं दिन दिन डेवढ़ी डेवढ़ी ।
चोखा माल द्रव्य अति नीका बट्टा लगै न कौड़ी ॥ ४ ॥
साह गुरु सुकदेव विराजैं, चरनदास बन जोटा ।
मिलि मिलि रंक भूप होइ बैठे, कबहुं न आवै टोटा ॥ ५॥

८४४—राग बरवा

तनका तनिक भरोसा नाहीं, काहे करत गुमाना रे ।
ठोकर लगे नेकहूं चलतै, करिहैं प्रान पयाना रे ॥ १ ॥
ऐंठ अकड़ सब छोड़ बावरे, तेज तमक इतराना रे ।
रञ्चक जीवन जगत अचंभो, छिन माहीं मरजाना रे ॥ २ ॥
मैं मैं मैं मैं क्यों करता है, माया माहिं लोभाना रे ।
बहु परिवार देखि कै फूलो, मूरख मूढ़ अयाना रे ॥ ३ ॥
टेढ़ो चलै मिरोरत मूछैं, विषय वास लिपटाना रे ।
आपन कूं ऊंचो करि जानै, मातो मद अभिमाना रे ॥ ४ ॥
पीर फकीर औलिया जोगी, रहैं न राजा राना रे ।
धरनि अकास सूर शशि नासैं, तेरो क्या उनमाना रे ॥ ५ ॥
ठाढ़ा घात करै सिर पै जम, ताने तीर कमाना रे ।
पलक पैंड़ में तकि तकि मारै, काल अचानक बाना रे ॥ ६ ॥
स्वांस निकसि चढ़ि आंखि जाहिं जब काया जरै निदाना रे ।
तोकूं बांधि नरक लै जैहैं, करिहैं अगिन तपाना रे ॥ ७ ॥
अजहूं चेत सीख ले गुरुकी, करिले ठौर ठिकाना रे ।
अमर नगर पहिचान सिदौसी, तब नहिं आवन जाना रे ॥ ८ ॥

हरिकी भक्ति साधुकी संगति, यह मति वेद पुराना रे।
चरनदास सुकदेव कहत हैं परम पुरातन ज्ञाना रे ॥ ६ ॥

८४५—राग सोरठ

दमका नहीं भरोसा रे, करिले चलनेका सामान।
तन पिंजरे सूं निकस जायगो, पलमें पंछी प्रान ॥ १ ॥
चलते फिरते सोवत जागत, करत खान अरु पान।
छिन छिन छिन छिन आयु घटत है, होत देहकी हान ॥२॥
माल मुलक ओ सुख संपतिमें, क्यों हुवा गलतान।
देखत देखत बिनसि जायगो, मत करु मात गुमान ॥ ३॥
कोई रहन न पावै जगमें, यह तू निसचै जान।
अजहूं समुझि छांडु कुटिलाई, मूरख नर अज्ञान ॥ ४ ॥
टेरि चितावैं ज्ञान बतावैं, गीता वेद पुरान।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, राम नाम उर मान ॥ ५ ॥

८४६—राग नट व बिलावल

जो नर हरि धनसूं चित लावै।
जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवाया पावै ॥ १ ॥
मन करि कोठी नांव खजानो, भक्ति दुकान लगावै।
पूरा सतगुरु साझी करिकै संगति वनिज चलावै ॥ २ ॥
हुंडी ध्यान सुरति ले पहुंचै, प्रेम नगरके माहीं।
सीधा साहूकार साँचा हेर फेर कछु नाहीं ॥ ३ ॥
जित सौदागर सबही सुखिया, गुरु सुकदेव बसाये।
चरनहिंदास बिलमि रहे वहाँ ही जूनी पन्थ न आये ॥४॥

८४७—राग बिलावल

अरे नर जन्म पदारथ खोया रे ॥ टेक ॥
बीती अवधि काल जब आया सीस पकरिकै रोया रे ॥ १ ॥
अब क्या होय कहा बनि आवै माहिं अविद्या सोया रे।
साधु संग गुरु सेव न चीन्हीं तत्त्व ज्ञान नहिं गोया रे ॥ २ ॥
आगे से हरि भक्ति न कीन्ही रसना राम न जोया रे।
चौरासी जम दण्ड न छूटै आवागमनका ढोया रे ॥ ३ ॥
जो कुछ किया सोई अब पावो वही लनौ जो बोया रे।
साहब साँचा न्याव चुकावै ज्यों का त्यों हो होया रे ॥ ४ ॥
कहूं पुकारे सब सुनि लीजो चेति जाव नर लोया रे।
कहै सुकदेव चरनहीं दासा यह मैदान यह गोया रे ॥ ५ ॥

८४८—राग सोठना

तेरी छिन छिन छीजत आयु, समझ अजहूं भाई ॥ १ ॥
दिन दो का जीवन जानि, छांड़ दै गुमराई।
सुन मूरख नर अज्ञान, चेत अरु कोउ न रही ॥ २ ॥
कह फूला फिरत गंवार, जगत झूंठे माहीं।
कियौ काम क्रोध सूं नेह, गही है अकड़ाई ॥ ३ ॥
मतवारा माया माहिं, करत है कुटिलाई।
तेरो संगी कोई नाहिं, गहै जब जम बाहीं ॥ ४ ॥
सुकदेव चितावैं तोहिं, त्याग रे मचलाई।
चरनदास कहै भजु राम, यही है सुखदाई ॥ ५ ॥

चरनदास

८४९—भजन

जिनि सत छाड़ै बावरे पूरिक है पूरा।
सिरजेकी सब चिंत है, देवेकौं सूरा ॥ टेक ॥
गर्भवास जिन राखिया, पावक थैं न्यारा।
जुगति जतन करि सींचिया दे प्राण अधारा ॥ १ ॥
कुंज कहाँ धरि संचरै, तहँ को रखवारा।
हेम हरत जिन राखिया, सो खसम हमारा ॥ २ ॥
जल थल जीव जिते रहैं, सो सब कौं पूरै।
सम्पट सिलामें देत है, काहे नर झूरै ॥ ३ ॥
जिन यहु भार उठाइया, निरवाहैं सोई।
दादू छिन न विसारिये, ता थैं जीवन होई ॥ ४ ॥

८५०—भजन

मनां भजि राम नाम लीजे।
साध सङ्गति सुमिरि सुमरि, रसना रस पीजे ॥ टेक ॥
साधू जन सुमिरण करि, केते जपि जागे।
अगम निगम अमर किये, काल कोइ न लागे ॥ १ ॥
नीच ऊँच चिन्तन करि, सरणागत लीये।
भगति मुकति अपणी गति, ऐसैं जन कीये ॥ २ ॥
केते तिरि तीर लागे, बंधन भव छूटे।
कलि मल विष जुग जुगके रामनाम खूटे ॥ ३ ॥
भरम करम सब निवारि, जीवन जपि सोई।
दादू दुख दूर करण दूजा नहिं कोई ॥ ४ ॥

८५१—भजन

मन रे राम बिना तन छीजै ।
जब यहु जाइ मिलै माटीमें, तब कहु कैसे कीजै ॥ टेक ॥
पारस परसि कंचन करि लीजै, सहजि सुरति सुखदाई ।
माया बेलि बिषै फल लागे, तापरि भूलि न भाई ॥१॥
जब लगि प्राण पिंड है नीका, तब लग ताहि जिनि भूलै ।
यहु संसार सेंबलकै सुख ज्यूं, तापर तूं जिनि फूलै ॥२॥
औसर येह जानि जगजीवन, समझि देखि सचु पावै ।
अङ्ग अनेक जान मति भूलै, दादू जिनि डहकावै ॥३॥

८५२—भजन

हमारे तुमहीं हौ रखपाल ।
तुम बिन और नहीं कोई मेरे, भौ दुख मेटण हार ॥टेक॥
वैरी पंच निमष नहिं न्यारे, रोकि रहे जमकाल ।
हा जगदीस दास दुख पावै, स्वामी करो संभाल ॥१॥
तुम बिन राम दहैं ये दुन्दर, दसौं दिसा सब साल ।
देखत दीन दुखी क्यों कीजे, तुम हौ दीनदयाल ॥२॥
निर्भय नाँव हेत हरि दीजे, दरसन परसन लाल ।
दादू दीन लीन करि लीजे, मेटहु सबै जंजाल ॥३॥

८५३—भजन

क्यों विसरै मेरा पीव पियारा, जीवकी जीवन प्राण हमारा ॥टेक॥
क्यों कर जीवे मीन जल बिछुरें, तुम बिन प्राण सनेही ।
च्यंतामणि जब कर थैं छूटै, तब दुख पावै देही ॥१॥

माता वालक दूध न देवै सो कैसैं करि पीवै।
निर्धनका धन अनत भुलाना, सो कैसे करि जीवै ॥२॥
वरखहु राम सदा सुख अमृत, नीझर निर्मल धारा।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा ॥३॥

८५४—भजन

तौ निवहै जन सेवग तेरा, ऐसैं दया करि साहिब मेरा ॥टेक॥
ज्यूं हम तोरैं त्यूं तूं जोरै, हम तोरैं पै तूं नहिं तोरै ॥१॥
हम विसरैं त्यूं तूं न विसारे, हम विगरैं पै तूं न विगारै ॥२॥
हम भूलैं तूं आनि मिलावै, हम विछुरैं तूं अंगि लगावै ॥३॥
तुम भावै सो हम पै नाहीं, दादू दरसन देहु गुसाईं ॥४॥

८५५—भजन

भाई रे घर ही में घर पाया।
सहजि समाइ रह्या ता माहीं, सतगुरु खोज वनाया ॥टेक॥
ता घर काज सवै फिरि आया, आपै आप लखाया।
खोलि कपाट महलके दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया ॥१॥
भय औ भेद भरम सव भागा, साँच सोई मन लाया।
प्यंड परे जहां जिव जावै, तामें सहज समाया ॥२॥
निहचल सदा चलै नहिं कवहूं, देख्या सव में सोई।
ताहीसूं मेरा मन लाग्या, और न दूजा कोई ॥३॥
आदि अन्त सोई घर पाया, इव मन अनत न जाई।
दादू एक रंगै रंग लागा, तामें रह्या समाई ॥४॥

८५६—भजन

तूं साहिब मैं सेवग तेरा, भावैं सिर दे सूली मेरा ॥ टेक ॥
भावैं करवत सिर पर सारि, भावैं लेकर गरदन मारि ॥१॥
भावैं चहुं दिसि अगिन लगाई, भावैं काल दसौं दिसि खाई ॥२॥
भावैं गिरिवर गगन गिराइ, भावैं दरिया माहिं वहाइ ॥३॥
भावैं कनक कसौटी देहु, दादू सेवग कसि कसि लेहु ॥४॥

८५७—भजन

डरिये रे डरिये, परमेसुर थैं डरियेरे ।
लेखा लेवै भरि भरि देवै, ता थैं बुरा न करिये रे ॥टेक॥
साचा लीजी साचा दीजी, साचा सौदा कीजी रे ।
साचा राखी झूठा नाखी, विष ना पीजी रे ॥१॥
निर्मल गहिये निर्मल रहिये, निर्मल कहिये रे ।
निर्मल लीजी निर्मल दीजी, अनत न बहिये रे ॥२॥
साह पठाया वनिज न आया, जिनि डहकावै रे ।
झूठ न भावै फेरि पठावै, कीया पावै रे ॥३॥
पंथ दुहेला जाइ अकेला, भार न लीजी रे ।
दादू मेला होइ सुहेला, सो कुछ कीजी रे ॥४॥

८५८—भजन

मन चंचल मेरो कह्यौ न मानै, दसौं दिसा दौरावै रे ।
आवत जात बार नहिं लागै, बहुत भांति बोरावै रे ॥टेक॥

वेर वेर वरजत या मनकौं, किंचित सीख न मानै रे।
ऐसैं निकसि जात या तनथैं, जैसे जीव न जानै रे ॥१॥
कोटिक जतन करत या मनकौं, निहचल निमिप न होई रे।
चंचल चपल चहुं दिसि भरमै, कहा करै जन कोई रे ॥२॥
सदा सोच रहत घट भीतरि, मन थिर कैसैं कीजे रे।
सहजैं सहज साधकी संगति, दादू हरि भजि लीजै रे ॥३॥

दादूदयाल

८५९—भजन

गनपत वर दियां काज सरैगो ॥टेक॥
एक दंत दुख दूरको करता, ऋध सिध तूं ही करैगो ॥१॥
स्नान कराऊं चौकी पै आजो, केसर खोल करूंगो ॥२॥
लाडू मेवा भरूं तासरी, आपके भोग धरूंगो ॥३॥
ऋध सिध संग ले आवो गनपत, तुमरो इ ध्यान धरूंगो ॥४॥
पदमदासकी याई विनती, गणपत चरण गहूंगो ॥५॥

८६०—राग मारू

ब्रह्मसुता देवी नऊं, वाहन हंसा रूढ़।
वाणी प्रकाशो वेगद्यो, मो माया मति मूढ़ ॥
वेग करोनी वाणी माता, मुख मुण्डन व्याकरणी।
एकाकरदरु वीणा सोहै, दूजै पुस्तक धरिणो ॥१॥
तीजे अमी कमण्डल सोहै, चौथे सोवन प्यालो।
आदि रूप है थारो माता, सेवकने प्रतिपालो ॥२॥

भिरत पिंगला भेद न जाणां, नहीं पढ़या व्याकरणी ।
केवल भक्ति करां केशव की, कलिमल चिंता हरणी ॥३॥
काश्मीर मुख मंडन देवी, दुःख हरणी सुख दाता ।
पदम भणै प्रणवौं पाय लागूं, हिरदे बसियो माता ॥४॥

८६१—राग मारू

पारवती पतिको नमूं, नंदीके असवार।
जटा जूट गंगा बहै, कंठ भुजंगा हार ॥
पारवतीके कंथ सदाशिव हरको नाम उचारे ।
जटा मुकुट शिर गंग वहत है, देवनके शिर डारे ॥१॥
माथे सेली गले रुण्डमाला, करमें डमरू राजे ।
भांग धतूरा विषके अहारी, कंथ गोरजा छाजे ॥२॥
बाल चन्द्र जाके शीश विराजे सुरति विचारन होई ।
पूरण ब्रह्म पदमके स्वामी, पारवती पति सोई ॥३॥

८६२—राग मारू

भगत जान प्रभु अवतरे, राजा दशरथ धाम ।
सब राजनके सामने, धनुष चढ़ायो राम ॥
धनुष चढ़ाय किये दोय टूका, राजा सनमुख जोहै ।
सुर नर मुनि जन रह्या अचम्भे, ब्रह्मादिक मन मोहै ॥१॥
रावणका मस्तक दश छेद्या, दियो विभीषण राजा ।
परसराम होय छत्री मारया, परशु शस्त्र ले साजा ॥२॥
वराह रूप बन धरणी लायो, जाणे सकल जिहाना ।

मच्छ रूप होय वेद निकारया, ब्रह्मा करे वखाना ॥३॥
वामन वन कर पृथ्वी मापी, वलि पाताल पठायो।
नरसिंह वन हिरनाकुश मारयो, जन प्रह्लाद वचायो ॥४॥
जहां जहां भीर पड़ी सन्तन पै, तहां आप चढ़ि आयो।
पद्म भणे भक्तन दुख हारी, वहुता रूप वनायो ॥५॥

८६३—राग कालिंगड़ा

मेरी सुध लीजियो जी, मेरी सुध लीजियो,
दीनवन्धु दीनानाथ ॥टेक॥
हीणी भई विसम्भरा, देखो वात विचार।
अवकी वेर न आवस्यो तो, क्यूं सरसी करतार ॥१॥
जो जाके शरणै रहै, वांकी वाने लाज।
उलटै जल मच्छी चढ़े, वह्या जात गजराज ॥२॥
खेत सुके विरखा भई, अमृत वर्षा नीर।
मीन मरयाँ सागर भरे तो, कौन काज वलवीर ॥३॥
विरह अगन हिरदा जले, जलै धरण आकाश।
शील समुद्र आणकै हरि, वेग वुलावो पास ॥४॥
त्रास आस भारी लगी, कद पुरवै करतार।
पलक वर्ष सम जात है, या तुम लेहु विचार ॥५॥
हिरदा फाटै कंप ज्यूं, छिन छिन लेत उसास।
पद्मैयो स्वामी भणैं, म्हारी आण मिटावो त्रास ॥६॥

———

८६४—लावणी

सुणो वृजराज मेरो अरज़ी।

विफल समे क्यों विद जग सरजी ॥ टेक ॥

सुरत मत विसरो वृजवासी। नाथ मैं चरननकी दासी ॥
फंसी गल प्रेमकी पासी। दोन द्दग दरसन की प्यासी ॥
दीन भई जल मीन ज्यूं, अति आधीन हत छीन ॥
सुनत कृष्ण करुणा वचन, रटना नित लवलीन ॥
मेरे पति मतलबके गरजी ॥ १ ॥

वृथा व्याकुल बिरह गलमें। अगन समें शील नभ मण्डलमें ॥
दोऊ पूजत है जल थलमें। पड़ी मैं भारतके दल में ॥
उड़त पतंग तुले तने, जलत न लागे वार।
उचरे जब घनश्याम घन, बरसे मूसलधार ॥
वेग प्रभु दर्शन देवो जी ॥ २ ॥

करम गति जानी नांय पड़े। सूरज शशि सबही विपत भरे ॥
याहि विधि जो हरिको सुमरे। भक्तकी कृष्ण ही सहाय करे ॥
बार बार पुकारती, त्राहि त्राहि पदनाथ।
नाव भँवर बीच पड़ी है, मेरी लाज तुम्हारे हाथ ॥
खबर लीज्यो मुरलीधर जी ॥ ३ ॥

इन्द्र जब कोप कियो भारी। हेत वृज धारो गिरधारी ॥
मान मद सुरपतिके मारी। सोही तो रुकमणीके प्यारी ॥
वेग मिलो मम नाथजी, नहीं तो तजूँ पिरान।

पद्मदास नित रटत आपको, दीनबन्धु भगवान ॥
सब सुख खान कपा कर जी ॥ ४ ॥

पद्मदास

८६५—राग मंगल

सतगुरु शरणै आय, राम गुण गाय रे ।
अवसर वीत्यो जाय, पीछै पिछताय रे ॥ १ ॥
झूल्यौ नरक दुवार, मास नव वीच रे ।
कीना कवल करार, विसर गयो नीच रे ॥ २ ॥
लागो लोभ अपार, माया माँय मद छक्यौ ।
वंध्यो वंधण अपार, नाम नहिं ले सक्यौ ॥ ३ ॥
माया वन अंधार, मृगजल धूप रे ।
भटकत फिरत गंवार, मायाके रूप रे ॥ ४ ॥
मोह मुक्के महल, श्वान ज्यूं भुंस मर्‌यौ ।
यूं सुद्ध स्वरूप विसारि, चौरासी लख फिर्‌यो ॥५॥
यो जग मूढ़ अजाण, सार सुध ना करै ।
वनानाथ विन नाम, कारज कैसे सरै ॥ ६ ॥

८६६—राग मंगल

भव सागरमें धरी, मानव देह आय रे ।
हर सुमिरण विन, जूण पशूकी पाय रे ॥ १ ॥
लख चौरासी जूण, जीव भटकत फिरै ।
करम कमाई संजोग, मानव देह अवतरै ॥ २ ॥

ओ जग झूठो जाण, सार सतसंग गिरो ।
तव पावो गुरु ज्ञान, तुरत भवसिंधु तिरो ॥ ३ ॥
छूटत सकल सन्ताप, ताप त्रैगुण मिटै ।
पावे मोक्ष मुकाम, रहो निरभय उठै ॥ ४ ॥
कोई वड़ भागी संत, सत्य मिथ्या लखैं ।
वनानाथ कर सार, सत्य वाणी भखैं ॥ ५ ॥

८६७—राग सोरठ

जागो जुगत विचारि, रहो कमलापति ।
औसर आयो हाथ, हमैं करलो गति ॥ टेक ॥
गरजत गगन मंझार, विजलियां चमकती ।
अमृत झरत अपार, पिये कोई नर जती ॥ १ ॥
षट चक्करकूं छेद, चेतन चाल्या संत सती ।
उलट पलट भर पीव, निकट गंगावती ॥ २ ॥
अखण्ड जोत दिन राति, लगत है विनवती ।
देख्या देहीमें दीदार, जदि हुवा तिरपती ॥ ३ ॥
रहूं चरण लिपटाय, उतारूँ गुरुरी आरती ।
वनानाथ कहे दास, सायव मो पर छत्रपती ॥ ४ ॥

८६८—राग ख्वास

तुझ विन घड़ियन आवड़े, सत गुरु साहव सैंण ।
सिमरथ साचा सतगुरु, अमृत आछा वैंण ॥ टेक ॥
ऊभी जोऊँ वाटड़ी, कर निगै झांकत नैन ।
मंदिर जावो मोहणां, दासी नूं दरसण दैन ॥ १ ॥

दरसण विना वहु दुखी दासी, तूं सुखी राखण सैंण ।
विरह करकर रही विरहणी दरदवन्ती कहे वैंण ॥ २ ॥
वन वन पुकारै विरहणी, कर लग नदिया रैंण ।
आयो नहीं गुरु आपणो, अवगुण पर गुण दहण ॥३॥
वेगरज सतगुरु रहैं, वेहद भावैं ऊगा भांण ।
वनानाथ मिल्यो मोहन, पतिवरता जांण ॥४॥

८६९—राग ब्रुवास

करण हुवे सो करलो साधो, मानुष जन्म दुहेलो ।
लख चौरासी भटकत भटकत, हमकै मिल्यो महेलो ॥टेक॥
जप तप नेम वरत अरु पूजा, ओ षट दरसणको गेलो ।
पारब्रह्म को जाणत नाहीं, जुग जुग वाट वहेलो ॥१॥
कोई कहै हर वसै वैकूंठां, कोई गउलोकमें कहेलो ।
कोई कहैं शिव नगरीमें सायब, भोला भरम करेलो ॥२॥
अण समझ्यां हरि दूर वतावैं, समझ्यां सांच कहेलो ।
सतगुरु सैन दिवी किरपा कर, हरदम हरको गेलो ॥३॥
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, अजपा जाप जपूंलो ।
कहैं वनानाथ सुणो भाई साधो, सतगुरुको हेलो ॥४॥

८७०—भजन

साधो भाई हर भज पार उतरणा, निरख निरख पग धरणा ॥टेक॥
डोगी अधर लगी आकासां, गम कर गिगन चढ़ाणा ।
नटवो निरत निगै कर निरखे, अगम देश इम लेणा ॥१॥

धीरज धाम धारणा गाठी, चहुंदिस चेतन रैणा।
सधर पुरुष जां संसै नाहीं, माया देख तज दैणा ॥२॥
सुन्न समान सरोवर सांई, ज्यां हूं तूं नहीं कैणा।
समदृष्टी होय जोवो सकलमें, ठोड़ थिरप नहीं थाणा ॥३॥
दृष्ट न पड़े मुष्टि न आवै, ऐसा अगम पियाणा।
कहैं वनानाथ सुणो भाई साधो, सो पद है निरवाणा ॥४॥

८७१—राग सोरठ

वंगला सोवन सिखरके बीच, जामें बाजा बाजैं छतीस ॥टेक॥
इस बंगलेकी सधर नींव है, धिन सतगुरु दीवी सीख।
जाग्रत सुपन सुखोपति समजों, पोलां तीन तैकीक ॥१॥
इस वंगलामें अखण्ड जोत है, नहीं उष्ण नहीं शीत।
क्रोड़ भानु रोमकी शोभा, वो तुरिये तत्व अजीत ॥२॥
इस बंगलामें आप विराज्या, अधर दलीचा वीच।
समरथ साम सबीका मालिक, महा भीचनका भीच ॥३॥
जियाराम मिल्या गुरु पूरा, जद भेंट्या जगदीस।
वनानाथ विगत कर राखी, लख्या संत सोई ईस ॥४॥

८७२—भजन

समज्या संत परम पद परस्या, जां लग पहुंचत सूरा।
आदि पुरुष ओ लख्या अन्दर, हरदम सदा हजूरा ॥टेक॥
परथम आदि पुरुष अविनासी, जां तिरगुण नहीं माया।
रचना विना ब्रह्म निज नामी, आपोई आपो रवाया ॥१॥

सो निरभेद भेद नहीं तामें, नहीं कोई वाद विवादि ।
उण समरथका ज्ञान अपारा, पुरुष पुरातन आदि ॥२॥
आदि पुरुष इच्छा शक्ती सूं, रचिया जगत पसारा ।
समज्या सो सत शब्दां लागा, भरम वंध्या जग सारा ॥३॥
आरंभ आद अमावस रचिया, सुरत शब्द घर लाया ।
अपणा नूर निरन्तर निरखो, निरमल निरगुण गाया ॥४॥
पड़वा पवन पिछाण्या पागी, अरध उरध लिव लागी ।
उलटी कला अखण्ड उजवाला, जोत दसूं दिस जागी ॥५॥
बीजो बीज ऊगिया चंदा, निवण करै नवखंडा ।
दिन दिन कला सवाई दरसैं, आप वहै ब्रह्मण्डा ॥६॥
तीजनमें तार लगी त्रीवेणी, शब्द चढ़यां टंकसाला ।
हीरा चोट सहे सिर घणकी, यूं दृढ़ मत गुरुका वाला ॥७॥
चौथमें चहुं दिस भँवर गुंजाया, गिगन मंडल गरणाया ।
चारोई मेघ मलार उलट कर, विरह वादल वरसाया ॥८॥
पाँचम पुरुष पींजरै पूरा, सुन्न घर पूगा सूरा ।
सैस कली पर करत किलोला, वाजत अनहद तूरा ॥९॥
छठम अटल विरछ की छाया, गरज्यो गिगन सवाया ।
मोरया आंव मुकत फल लागा, सुघड़ सुवै चढ़ खाया ॥१०॥
सातम छोड़ खलक की आसा, आसा भई निरासा ।
अदर दलीचै आप विराजै, जां नहीं काल तिरासा ॥११॥
आठम अचल ब्रह्म अविनाशी, वार पार नहिं कोई ।
नित निरलेप लेप नहिं लागै, ज्ञानीकी स्थित सोई ॥१२॥

नवमो नाथ निरंजन राया, अंजण दरसै माया।
आप सदा माया बिन थाया लखैं सन्त निरदाया ॥१३॥
दशम दशूं दिशा पर देवा, सुर नर वाकी सेवा।
सकल निरंतर व्यापक सांई, ऐसा अलख अभेवा ॥१४॥
एक इग्यारस एकुंकारा, जीव ब्रह्म एक सारा।
दुई बिना दूजा नहीं दरसै, सब घट सिरजणहारा ॥१५॥
बारस बावन अक्षर बाहिर, पारब्रह्म थिर थाया।
सो ब्रह्म लख्या वक्या निज अनुभौ, परगट भाष सुणाया ॥१६॥
तेरस तोल मोल नहीं आवै, कैणी लगै न काई।
जाणी जाण रहा एक सारा, शुद्ध स्वरूप सुखदाई ॥१७॥
चवदस चार वेद खट सासतर, गीतामें यूं गावैं।
एको ब्रह्म नासती दुतिये, साख सुण्यां पत आवैं ॥१८॥
पूरन पारब्रह्म पद पूरा, सतगुरु सही लखाया।
सौलैं कला समझ कर भाषी, सन्त सुघर नर गाया ॥१९॥
चार सांगमें चेतन सामल, गिरे आश्रम त्यागी।
परमहंस लग ब्रह्म एक सारा, लखै सो है बड़ भागी ॥२०॥
सोलै कला कही निरणै कर, सो गुरुमुख जिन जाणी।
हठ जोग सांख्य वेदांत समझ कर, कही निरवाणी वाणी ॥२१॥
जीयाराम मिल्या गुरु पूरा, पारब्रह्म परसाया।
वनानाथ जुगती कर जाण्या, अवर धरूं नहीं काया ॥२२॥

८७३—भजन

सुरत सुण बावरी तेरो, वीत्यो जाय वेवार ॥टेक॥
ओ संसार ओसको पाणी, यांकी तजो सब आस।
घाम पड़ै जब सूके सबेरे, ओ जग निमक निवास ॥१॥
केई बार जीवा जूण भोगी, अव नर तन पायो गिंवार।
होय सनमुख लाय वसूं अभागी, तने सतगुरु कहत पुकार ॥२॥
गुरु संतनको संग सत जाणो, तजो जग असत असार।
सिंध देवैं सांची सतगुरुजी, पलमें करैं भव पार ॥३॥
सांस उसांस समर शार्ङगधर, ये दै गुरु निज सार।
वास बसै ब्रह्मण्डमें तेरा, ज्या भय नहीं लिगार ॥४॥
सतगुरु मिल्या टल्या भवसिंधु सूं, गाया गुण गोपाल।
प्रेरक सब पृथवीको पालक, वनानाथ रैया न्याल ॥५॥

वनानाथ

८७४—भजन

फकीरी या करे कोई सेर,
मनकर मेर श्वास कर मणियाँ, सुरत समझ कर फेर ॥टेक॥
इड़ा पिंगला समकर दोनूं, ज्ञान ध्यान धर हेर।
श्वासा सुखमण कुंभक संगति, कर सुन्न शिखरकी सेर ॥१॥
मन मिल पवन शबद मिल सुरति, उलटत मूल सुमेर।
सुखमण मारग मीन पपील गत, खगज्यूं सुरतो पेर ॥२॥
सुरति न नूरति रूप न मूरति, लीन भये सुन्नकी ढेर।
सुन्न केई पारा वो आतम न्यारा, अलख अजूणी अजेर ॥३॥

वनानाथ गुरु किरपा करदी, ध्यान कला समसेर।
नवलनाथ परम पद परस्या, काट बंधन मनकेर ॥४॥

८७५—भजन

बंगला द्वादसां पर देख, जामैं निरगुण आप अलेख ॥टेक॥
शम दम साध सरोदे लावो, करलो परम विवेक।
सुन्न घर सुरति सहज मिलावो, तो परसो पूरण एक ॥१॥
उदे अस्त विच प्राणकी सन्धि, छिन भर सुखमण देख।
आवागिवण करै न आतम, अविचल जोति सेष ॥२॥
पवन पार दीदार वो बंगला, अधर अजुणी सुवेक।
सुरति निरत मिलै सम पहुंचै, बंगला निरगुण नेक ॥३॥
वनानाथ सतगुरु की किरपा, बंगलो पायो अजन्न अलेख।
नवलनाथ ता बीच समाणा, आदि पुरुष अभेख ॥४॥

नवलनाथ

८७६—भजन

भव तिरणेको अवसर आयो ए।
बहुत जनमके पूरब पुण्य से, मानुप तन पायो ए ॥टेक॥
ईश्वर किरपा सन्त समागम, गुरु चरणोंमें आयो ए।
प्रेमके पुष्प ध्यानको धूप दे, चित चंदन चढ़ायो ए ॥१॥
शील सन्तोष अमान अहिंसा, दम दया उर लायो ए।
काम क्रोध मद लोभ मोहको, खण खोज वहायो ए ॥२॥
त्याग वैराग श्रद्धाको धारके, वक्र भाव हटायो ए।
अनेक युगोंके मैल त्याग, ज्ञान गंगामें न्हायो ए ॥३॥

गुरुदेव पायो नहीं जवलौं, वाहर धायो ए।
सतगुरु शब्द सुनायके, ज्ञेय ज्ञाता वतायो ए ॥४॥
नवलनाथ गुरु किरपा करके, भ्रम मूल मिटायो ए।
उत्तमनाथ स्वरूप समझके, निज निश्चल थायो ए ॥५॥

८७७—भजन

अव मन गोविन्द गुण गावो ए।
ऐसी रमज समज सेही, जोवो परम पद पावो ए ॥ टेक ॥
लघु मृदु रिजु ही होयके, सत्संगमें ही नहावो ए।
मान गुमान मद मत्सर सव दूर वहाओ ए ॥ १ ॥
सुर दुरलभ ये नर तन पायके, विरथा न गमावो ए।
स्वांसो स्वांस शिव सिमरके, जगजीत ही जावो ए ॥ २ ॥
थल जल अनल अनिल नभमें कर ब्रह्म ही भावो ए।
द्वैत भ्रम काम करम सव अविद्या कूं ढावो ए ॥ ३ ॥
नवलनाथ गुरु शब्द सुणायो, जामें लिव लायो ए।
उत्तमनाथ सोइ समझके भव भाव मिटायो ए ॥ ४ ॥

८७८—राग हेली

मन रे गोविन्द गुण क्यों नहीं गावै।
मानुप जन्म मिल्यो पुण्य पुंजसे, अवसर गयो फेर नहीं आवे ॥टेक॥
विपय लंपट दीन आतुर है जाको जाय क्यूं दाँत दिखावै।
जो प्रभु सकल जगतकूं पालै, ताकूं क्यूं विसरावै ॥ १ ॥
कुटिल अधम पापी ही कहिये, जिनकू हरि चर्चा नहिं भावैं।
जिनके पुण्य पुरव ले प्रकटे, निरन्तर नाम नीरमें ही नहावैं ॥ २ ॥

नाम जहाजमें बैठके समझसे नाम अरथमें ही जाय समावै ।
आवागमन होवे नहीं तुम्हारी, पुरुषारथ सब विध ही पावै ॥ ३ ॥
ओ संसार भ्रमजल है भारी, जाय तूं फिर फिर गोता खावै ।
जे गुरु खेवट शरणमें जावै, कह उत्तम तुमको पार पहुंचावै ॥४॥

८७९—भजन

समझ रे मन मैलापन धोय ।
धोयां विना भय ना मिटै, थारो भव तिरणो नहीं होय ॥ टेक ॥
या जग आडम्बर ख्यालमें रे, भूल रहो मत कोय ।
आयो अवसर जावसी पीछे नैण गमावोला रोय ॥ १ ॥
काम क्रोध दम्भ लोभ मोहमें रे, फंस रहे सब कोय ।
विषयानन्द कूं ही मानके वे फिर फिर बोझो ढोय ॥ २ ॥
कग बक स्वभाव ही त्यागिये रे, हंस गत हालो जोय ।
हंस होय हीरा चूण लो थे, गुरु गम गाढ़ी गोय ॥ ३ ॥
नर तन पदारथ पायके रे, वृथा ऊब मत खोय ।
सुरतो कहे थे पुकारके, अब चेत चेत मत सोय ॥ ४ ॥
नवलनाथ गुरु यूं कह्यो रे, जगदीश सबमें जोय ।
उत्तमनाथ सो समजके, अब समदृष्टी शीतल होय ॥ ५ ॥

उत्तमनाथ

८८०—भजन

देखहु दुरमति या संसारकी ॥ टेक ॥
हरिसों हीरा छाड़ि हाथतें, बांधत मोट विकारकी ॥ १ ॥
नाना विधिके करम कमावत, खबरि नहीं सिर भारकी ।

झूठे सुखमें भूलि रहे हैं, फूटी आँख गँवारकी ॥ २ ॥
कोइ खेती कोइ वनजी लागै, कोई आस हथ्यारकी ।
अंध धुंधमें चहुं दिसि ध्याये, सुधि विसरी करतारकी ॥ ३ ॥
नरक जानि कै मारग चालै, सुनि सुनि बात लबारकी ।
अपने हाथ गलेमें वाही, पासी माया जारकी ॥ ४ ॥
वारंवार पुकार कहत हौं, सोहैं सिरजन हारकी ।
सुन्दरदास बिनस करि जैहैं, देह छिनकमें छारकी ॥ ५ ॥

सुन्दरदास

८८१—राग आसावरी

समज मन आयू बीत गई सारी, तें करी न भली तिहारी ॥ टेक ॥
बालपणो हंस खेल बितायो, गाफल चाल गिंवारी ।
तरुन भयो तरुनी संगत तू, अन्धाधुन्ध अपारी ॥ १ ॥
रात दिवस होवे मन राजी, निरख पराई नारी ।
पढ़न पढ़ावन मोसर पायो, चूक गयो विभचारी ॥ २ ॥
उद्यम छोड़ रह्यो अन उद्यम, आठूहीं पहर अनारी ।
रोटी रोटी करतो रोवे, मूढ़ महा झकमारी ॥ ३ ॥
चन्द वदन गुनखान चतुर चित, परहर अपनी प्यारी ।
वेश्या संग मोल विन बालम, विकगो बड़ो विकारी ॥ ४ ॥
सत्य पुरुषकी सीख श्रवण सुन, लपलप लपत लबारी ।
काम क्रोधके कन्द छेककर, धृती क्षमा नहीं धारी ॥ ५ ॥
औरकी ऐब उधारन आतुर अपती और अगारी ।
अपनी ऐब आपके अन्तत, निलज कबूना निहारी ॥ ६ ॥

सुन सुनके डारी सारी सुन, पागल लाख प्रकारी।
ऊमरदान विचार बिना अब, कछुह न लागे कारी ॥ ७ ॥

८८२—राग सोरठ पश्चिमी

जिवड़ा जुगत न जाणी रे।
मुक्त होवणरी मनमें, मूरख उगत न आणी रे ॥ टेक ॥
ॐ अथ अखिलेश्वर अविणासी अज अगवाणी रे।
विश्वम्भर घर घरमें व्यापक वेद वखाणी रे ॥ १ ॥
परमेश्वर री आज्ञा पूरण नहीं पिछांणी रे।
पागलपणसूं फिर फिर पूजे, पाहण पाणी रे ॥ २ ॥
भगल भागवत पेट भरणरी कुटिल कहाणी रे।
सत्यारथ सुणियां बिन सांप्रत होसी हाणी रे ॥ ३ ॥
परधन हरण परायण पामर वंचक वाणी रे।
ते झूठी बुगलांरी वातां नाहक ताणी रे ॥ ४ ॥
चार सम्प्रदा ठग चोरां री छार न छाणी रे।
ऊमरदान ज्ञान बिन ऊमर अन्त उड़ाणी रे ॥ ५ ॥

८८३—राग आसावरी

समज मन सदा धर्म एक संगी, तेरे कबहू न आवे तंगी ॥ टेक ॥
जन्में जीव अकेलो जगमें, नित है काया नंगी।
अन्त कालमें जीव अकेलो, जाय पयानें जंगी ॥ १ ॥
धर्म विना देखो धरनीमें, भये किते इक भंगी।
धर्म प्रताप धरापति धारत, रजधानी बहु रंगी ॥ २ ॥

पुण्य प्रताप होय अंग पूरन, पाप प्रताप अपंगी।
प्रथम विचार पापको पापी, कर मत मीत कुसंगी ॥ ३ ॥
धन नह चले चले नह धरनी, दुरग चले नह दंगी।
सुत नह चले जीवके साथे, चेत नहीं चतुरंगी ॥ ४ ॥
दरसण देख कर नित दांतण, रवे पतीव्रत रंगी।
पून्य खीन तें करत पयानो, धनी छोड़ अरधंगी ॥ ५ ॥
मन भावनी माधुरी मन मोहनी, चन्द वदन चित चंगी।
अन्त कालमें अर्थ न आवत, कामिनि नैन कुरंगी ॥ ६ ॥
धृती, क्षमा, दम, सत्य अक्रोधो, एरू धर्म गुन अंगी।
ऊमरदान निज अरथ उड़ावन, कर मत वात कुढंगी ॥७॥

८८४—राग आसावरी

* जुगत विन सतरंज जीत न जानी, आतम मूढ़ अज्ञानी ॥ टेक ॥
चौंसठ खण रो घर रचवायो, तामें सेन सजानी।

---

* उपरोक्त पदमें सतरंज मनुष्य शरीरको माना गया है। दोनों ओर की गोटियोंकी व्याख्या इस प्रकार है—

लाल सेना	पीली सेना
१ राजा = जीव खुद	१ राजा = काल
१ वजीर = वैराग्य	१ वजीर = मोह
२ ऊंट = ज्ञान, विचार	२ ऊंट = अज्ञान, अविचार
२ घोड़ा = उद्यम, पुरुषार्थ	२ घोड़ा = आलस्य, प्रमाद
२ हस्ती = शील, सन्तोष	२ हस्ती = काम, क्रोध
८ पैदल = शुभ कर्म	८ पैदल = अशुभ कर्म

पैदल, घोड़ा, ऊंट अनेकन, मंड्यो जुद्ध मैदानी ॥ १ ॥
उतते फौज अरीकी आई, इत तें अपनी आनी ॥
कोप्ये सूर दोऊ जय कारन, भिरे महा अभिमानी ॥ २ ॥
मन मुसकाय खेतके माहीं, बोल्यो मोटी वानी ।
चंगी चाल चाह कर चूक्यो, गढ़ नँहँ सज्यो गुमानी ॥ ३ ॥
लागी फेट किस्तकी लखिये, हुई इते वड़ हानी ।
तीखे पगको एक तोरड़ो, कियो प्रथम कुरवानी ॥ ४ ॥
निज दल छोड़ उजीर नीसरयो, कायर पर दल कानी ।
अरी भट हाथ अपार अचानक, वरकी फौज विरानी ॥ ५ ॥
लागो दाव दुकिस्त लगाई, हस्यो खाय हहरानी ।
घबरायो घोरनको घेरयो, पद न टिके मदपानी ॥ ६ ॥
करी अपनेंको अगर न कीनों, केद रह्यो एक कानी ।
मदत मिली नाहीं मनमानी, सारी सेन सिटानी ॥ ७ ॥
दूजो ऊंट मरयो बिन दारू, जुगल अस्व कट जानी ।
उड़ती किस्त लागी इक अबकी धूर करी रजधानी ॥ ८ ॥
उजीरको एरे कर आतर, कातर टाट कुटानी ।
बीती बात परयो अरी वसमें, पीछे लगे पछतानी ॥ ९ ॥
ऊमरदान विवेक विना वपु, पैदल खूब पिटानी ।
वुरद भई न भई चोमोरे, प्याद मात भई प्रानी ॥ १० ॥

ऊमरदान

———

८८५—भैरवी

वड़ो भरोसो थारो साँवरिया प्यारा ॥टेक॥
सतयुगमें पृथ्वी के कारण रूप वराहको धारयो ॥१॥
खंभ फाड़ नरसिंह होय प्रगटे भगत प्रहलाद उवारयो ॥२॥
इन्दर कोप कियो ब्रज ऊपर नखपर गिरिवर धारयो ॥३॥
द्रुपद सुता को चीर वढ़ायो दुष्ट दुशासन हारयो ॥४॥
भारत में भरुही के अण्डा घंटा तोड़ उवारयो ॥५॥
कह नरसीलो सुण साँवरिया हुण्डी वेग सिकारो ॥६॥

८८६—भैरवी

कठे लगाई इती देर, साँवरीया ॥टेक॥
के भगतन की करता चाकरी, के निद्रा लियो घेर ॥१॥
जोजो चीज लिखी कागद में सो सव आज्यो लेर ॥२॥
गोली मोली लूंग सुपारी और मेवाको ढेर ॥३॥
राधाने ल्याजो रुकमण ने ल्याजो और रिद्ध सिद्ध ने घेर ॥४॥
नारद शारद गणपति ल्याजो और भण्डारी कुवेर ॥५॥
कह नरसीलो सुणो साँवरिया मरो माहरो फेर ॥६॥

८८७—भजन

म्हाने तो म्हारो रामजी सुहावे, दूजो तो म्हारे दाय न आवे ॥ टेक ॥
देवल फेरो दूध पिलायो, मरती गऊ जिवाई।
स्वान रूप होय भोजन पायो, नामदेव की छान छवाई ॥ १ ॥

सेन भगत का साँसा मेटया, धनजी को खेत निपजाये।
दास रैदासकी दिखाइ जनेऊ, कबीर के बालद लाये ॥२॥
भीलनी के बेर सुदामाके तंदुल, रुच रुच भोग लगाये।
दुर्योधन का मेवा हो त्यागा, साग विदुर घर पाये ॥३॥
जहाँ जहाँ भीड़ पड़ी भगतनमें, तहाँ तहाँ उठ कर धाये।
जल डूबत गजराज उबारयो, जलमें ही चक्र चलाये ॥४॥
कहा कहूं करुणानिधि स्वामी, तेरो पार नहीं आये।
वारी रे नरसीला स्वामो, नित उठ दरशण पाये ॥५॥

८८८—भजन

काँई थारो भायलो गोपाल, हरिने जाचण जावो जी ॥टेक॥
औरां के पिया अन्न धन लिछमो, थे क्यूं भया जी कंगाल।
जादवपतिको जाय र जाचो, छिनमें करदे निहाल ॥१॥
विप्र सुदामाकी पटराणी, बोली बचन सँभाल।
वो है थारो परम सनेहो, पढिया एक पोसाल ॥२॥
चावल लेकर चले सुदामा, मनमें नहीं उसाल।
जादवपतकूं जाय र देस्यां, ऐसा कांई रसाल ॥३॥
पाँच पैंड हरि सामा आया, मिलिया भुजा पसार।
चरण धोय चरणामृत लीन्हा, राण्यां देखे ख्याल ॥४॥
चावल तो हरि मुखमें लीन्हां, ऊब्या दीन दयाल।
टूटी टमरी महल चिणाया, जड़ दिया हीरा लाल ॥५॥
छिनमें रंक राव कर डारे, ऐसा दीन दयाल।
नरसीको स्वामी साँवरियो, भगतन को प्रतिपाल ॥६॥

८८९—भजन

कांकरडी ना डालो म्हारी, फूटे गागड़ली ॥ टेक ॥
तूं तो थारे घरमें ठाकर, मैं भी ठाकड़लो।
आकड़ आकड़ बोलो कान्हा, मैं भी आकड़ली ॥ १ ॥
मोडे थारे कारी कामल, हाथमें लाकड़ली।
नो लाख धेनु नंद घर दुहिया, एक न बाँखड़ली ॥ २ ॥
माखन माखन आप खा गयो, रह गई छाछड़ली।
जाय पुकारूँ कंसके आगे, मारे थापड़ली ॥ ३ ॥
वृन्दावनमें रास रच्यो है, मोरकी पाँखड़ली।
नरसीको स्वामी साँवरियो, दूधमें साकड़ली ॥ ४ ॥

८९०—भजन

तूं थारो बिड़द जोय रे, साँवरिया, कांई जोवे करणी म्हारी ॥टेक॥
अहिल्या इंद्र तणी रे उपासण, सोई सिला कर डारी।
रज लागी रघुनाथ चरणकी, नौ यौवन हुई नारी ॥ १ ॥
खम्भ फाड़ प्रह्लाद उबारयो, प्रगटै हैं आप मुरारी।
हिरणाकुश नख उदर बिडारयो, ऐसो है उपकारी ॥ २ ॥
अजामेल सुत नाम उचारयो, गज गणिका कूं त्यारी।
द्रोपद सुताको चीर बढ़ायो, पंच पंडवां घर नारी ॥ ३ ॥
आगे तो भक्त अनेक उबारया, अबके है बेर हमारी।
कह नरसीलो स्वामी निरंजन म्हारे है आस तुमारी ॥ ४ ॥

——

८९१—भजन

ओढ़ो ओढ़ो ये पतिभरता नार, धरमकी चूनड़ी ॥
थारे ठाकुरजी भेजी है सियावर सतकी चूनड़ी ॥ टेक ॥
रमल विद्याकी रंगवाई, बूंटी बुद्धिकी छपवाई,
गोटा गोखरू ज्ञान लगाना ।
यातो सत्संगतिमें सार इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ १ ॥
लहंगो ललताई को पहरो, चोली चित धर्म में हेरो ।
म्हारो मन मालामें लाग्यो, थे तो रल मिल करो वसेरो ॥
पतिकी सेवा करो हर वखत, इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ २ ॥
वाजूवंद दया का पहरो, हिरदय हार ज्ञानको पहरो ।
थारो मन मालामें हेरो प्यारी, झूठ कभी मत वोलो ॥
इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ ३ ॥
गंगा जमनाको नीर मंगावो, ताजा तुलसी दल तुड़वावो ।
सेवा सालगरामकी सुहावे, सब सन्तोंके मन भावे ॥
ये पद नरसीलो नित गावे, म्हाने भवसागर से तारो,
इस विध ओढ़ो चूनड़ी ॥ ४ ॥

नरसी मेहता

८९२—मन्दाक्रान्ता

सर्वव्यापी, सकल जग में जो भरा है न खाली,
कर्त्ता हर्त्ता अखिल जगका पूर्ण ऐश्वर्य-शाली ।
माया छाया प्रकृति जिसकी प्रेरक प्राण-सारा,
मन्दाक्रान्ता हृदयगत जो पंच भूत-प्रसारा ॥१॥

स्वामी ऐसा सकल जगका सूक्ष्म गंभीर भारी,
छोटा मोटा सरल तिरछा है न जो मूर्त्ति-धारी ।
स्वामी भाव प्रकट जिसका दास भावानुकारी,
होके लीन प्रणति उसको भक्ति से है हमारी ॥२॥
देवो देव प्रभु वह हमें मुक्ति शान्ति-प्रदात्री,
आना जाना इस जगत् का नष्ट हो काल रात्री ।
माया मोह प्रवल हटके, चित्त होके प्रशान्त,
आत्मागम-स्थिति बन सदा पूर्ण होवो भवान्त ॥३॥

८९३—ॐकार-पंचक

(वसन्त तिलका)

ॐ कार रूप परमेश्वर को प्रणाम—
सद्भक्ति युक्त करता परमुक्ति पाने ।
है अष्टधा प्रकृति-भूत जगत् समग्र,
भावानुरूप करता, सबको विचार ॥१॥
है चित्त एक रचनात्मक स्टष्टि-कारी,
संकल्प मात्र रचता यह दृश्य सारा ।
होता विचार जगमें सबका निदान,
है देह मुग्ध, कुछभी न विचार मात्र ॥२॥
ॐ काररूप घटना जग की बनी है,
है पूर्ण नाम उस ईश्वर का यथार्थ ।
है तीन अक्षर जहाँ—वह अर्ध मात्रा—
है चित्कला, वह विचार-निरोध गम्या ॥३॥

ॐकार रटन है करता सुगम्य,
सद्भाव-चित्कलनके उदयानुसार ।
संवित्ति-वेदन मनोरथ देखता है,
हो पूर्ण त्वन्मय वहां—सदसद्विचार ॥ ४ ॥
ॐ ॐ सदा परम ॐ प्रभु ॐ विशाल,
ॐ सामगान, शुभ ॐ श्रुति गीत ॐ है ।
ॐ है चराचर विचार अमोघ-शक्ति,
ॐकार मात्र सब है—प्रभु ॐ पवित्र ॥ ५ ॥
शिवचन्द्रजी भरतिया

८९४—मनिहारी लीला

(राग गौरी)

मिठ बोलनी नवल मनिहारी ।
भौहैं गोल गरूर हैं याके नयन चुटोले भारी ॥टेक॥
चूरी लख मुखते कहै, घूंघट में मुसकात ।
शशि मनु बदरी ओटते, दुर दर्शत यहि भांत ॥
चूरो बड़े जो मोल को, नगर न गाहक कोय ।
मो फेरी खाली परी आई घर घर सब जु टटोय ॥
चुरी नील मणि पहरवे नाहिन लायक और ।
भागवान कोई लै चलो मोहिं दीसत है इक ठौर ॥
जिहिं नगरी रिझवार नहिं सौदागर क्यों जाय ।
वस्तु घनेरी गांठ में, बिन गाहक सो पछिताय ॥

रंग साँवरी गुण भरी धन मुन्यार कुल ओप।
मुदित होत सब देखके री यह पुर गोपी गोप ॥
काहू पै न ठगाय है तेरी बुद्धि विशाल।
लाभ अधिक कर जायगी, वेच बड़े घर माल ॥
मेरे मालहिं लेहिं सो जो मुंह मांग्यो देय।
ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेय ॥
वेचन हारी काँचकी कहा अधिक इतराय।
पौर भूप वृषभानु की लाखन की वस्तु विकाय ॥
पुर वजार पेखे नहीं है गर्वीली नार।
व्यापारिन अवहीं वनी कुछ वात न कहत विचार ॥
तोहिं लै चलिहों नृप घरै क्यों जिय होत उदास।
लेहिं लाड़िली राधिका जो सौदा तेरे पास ॥
यह सुनके ठोढ़ी गही सुखित भई अंग अंग।
भलो जो तेरो मान हों लै चल अपने संग ॥
लै गई पौरी भानुकी वात कही समझाय।
गुणन प्रकट कर साँवरी तोहिं लैहैं वेग वुलाय ॥
हाँ जो मुन्यारी दूर की आई राज द्वार।
वेचों चूरी चूरला कोउ वोल लेहु रिझवार ॥
सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावरे मांझ।
प्रात चूरी पहराइये अव वस रह पर गई साँझ ॥
अलभ लाभसों पायके हिय जिय पायो चैन।
रूखे से मुख सों कहै गौं गर्जिन रच रच वैन ॥

पर घर वसत जु वलि गई खिझै सकल परिवार।
वड़े भोरही आय हों मैं यह मन कियो विचार ॥
एक वार भीतर जु चल प्यारी सों वतराय।
भली लगे सो कीजियो लग लाड़ली के पाय ॥
चली जो झूमत झकतसी वेनी रुरकत पीठ।
घूंट अमी कोसो भर्‌यो जव मिलि दीठसों दीठ ॥
वहुत हँसो नव नागरी, देखी परमअनूप।
कै वेंचत चूरी सखी तू कै वेचत है रूप ॥
मोहिं खिलौना जिन करो राज कुंवरि वलि जाउँ।
तन थाक्यो वासर गयो मोहिं फिरत फिरत सव गाउँ ॥
मुख दीखत तेरो डहडह्यो लगत चीकनो गाल।
थाकी कौन वतावही कछु ऊपर को सो वात ॥
हो तो सूधे जीयको घट वढ़ समझत नाहिं।
तुम्हैं कछू दरश्यो कहा प्यारी कपट मेरे हिय माहिं ॥
रंग पहराऊं चूरला चोखो वणिज कमाऊं।
चोखी प्रीति जु आदरों नहिं कपटी जन पतियाऊँ ॥
मेरे जिय यह टेक है कहे देत हौं साँच।
हों भूखी सन्मानकी नहीं सहौं झूंठकी आंच ॥
आउ आउ री निकट तू देखों वदन निहार।
एक वातहीमें चिरी तू गुस्सा हियते डार ॥
शीतल हो व्यापारिनी तेरो ऐसो काम।
तमक गई यह वैसकी तज तोहिं फिरनो सव धाम ॥

हौं आई तक राज घर करण प्रथम पहचान।
मणि लिये ही विन करी यह हाँसी होय हित की हान॥
कासों है तैं हित कियो अब लग परी न दृष्टि।
बात कहत उरझै सखी तू रची कौन विधि सृष्टि॥
अब अपनी कर हित कहो, भूषण युवति समाज।
सब विधि पूरण होय तो प्यारी मो मन वांछित काज॥
मणि चौकी बैठी कुंवरि, दीनी भुजा पसार।
काढ़ चुरी अति सोहनी, पहराई सुवर मुन्यार॥
भुजा कढ़त मुन्यारि दृग फूल्यो मनो वसंत।
मन छुट चल्यो जु हाथते, धीरज बांधत गुणवंत॥
जब ही करसों कर गह्यो शिव अरि कियो प्रताप।
तनु गति वेपथु जानके कछु मधुरे कियो अलाप॥
तुम लायक चूरी कुंवरि भूल जु आई गेह।
निरख निरख प्यारी कह्यो तेरी क्यों काँपति है देह॥
सरस्यो प्रेम हिये वली उत्तर देह जु कौन।
रूप अमल तापै चढ़यो लाल क्यों न गहै मुख मौन॥
ललता कह यह प्रेम है, कोऊ परस्यो रोग।
यत्न करो तनु पेखके, सखी कौन दई संयोग॥
परम गुणीलो नंद सुत, मैं देख्यो टकटोय।
अहो प्रिया प्रीतम बिना, बल ऐसो प्रेम न होय॥
सींचे नीर गुलाब दृग, प्रिया चिबुक कर लाय।
प्रेम गहर ते काढ़के सखी पुनि पुनि लेत बलाय॥

यश दियो सबही कुलन, वनिता रूप बनाय ।
कौन बड़ाई कीजिये, यशवर्द्धन गोकुल राय ॥
कौतुक रूपी खेलमें, रजनी वाढ़ी शोभ ।
रसिकन हिये बढ़ावनी, यह नवल प्रेमकी गोभ ॥
युगल प्रीति गाढ़ी निरख, भयो हिये अह्लाद ।
बरणी लीला मोहनी यह श्रीहरिवंश प्रसाद ॥
वल हित रूप चरित्र यह, जो विचार है नित्त ।
वृन्दावन हित भीजहै, दंपति रस ताको चित्त ॥

८९५—बिसातन लीला

(राग परज)

गली गलीमें कहत फिरत, कोई लालहिं लेहु मुल्याई ।
यों कहत विसातन आई ॥ टेक ॥
जबहिं गई वृषभानु पौंर तब ऊँची टेर सुनाई ।
श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई ॥
द्वारे उझक उझक फिर आके आगे जात सकाई ।
तनु ढाँपै पुनि घूंघट मारै लाज जु भीजत जाई ॥
भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई ।
कौन अपूरव वस्तु पास तोहिं कहु मोसों समुझाई ॥
कौन नगर तू बसत बिसातन अबहीं दई दिखाई ।
तोसी भटू बड़े घर चहिये धनि विधि जिन जु बनाई ॥
सब ही भाँति ऊजरी तनुकी, किहि मुख करों बड़ाई ।
तोहिं बसाऊं राजद्वार जो मनमें होय सचाई ॥

कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई।
है लघु वैस कौन पै सीखी पर्खनकी चतुराई ॥
काँख माहिं ते गाँठ काढ़ कर श्याम जू लरी गहाई।
वड़े मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई ॥
जो जो रुचै वस्तु सो राखो, वड़े गोपकी जाई।
औरौं बात कहत सकुचत हों प्रीति जु देख विकाई ॥
नाना विधिकी डिबिया छल्ला आरसी मणिन जड़ाई।
श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेंट चढ़ाई ॥
तुम नृप अति लडी हो जु बिसातन देखत कृपा अघाई।
हौं भूखी याहीकी चाहों द्रव्य न बहुत कमाई ॥
श्याम पोतको गुंजा सुन्दर मो घर धर्यो ढुराई।
मोसों प्रीति करै जो भामिनि, ताहि देहुं पहराई ॥
हौं हित करौं वचन मन क्रम कर रह मो पास सदाई।
प्राणन हूं ते प्यारी मोको भाग्य बड़े ते पाई ॥
बटुवा खोल दिखाई वेंदी नागरिके मन भाई।
सुघर बिसातन अपने करलों माथे कुंवरि लगाई ॥
पुनि झोरी ते दर्पण काढ़यो, मुख शोभा दरशाई।
उदित भालपर मनु सुहाग मणि लख श्यामा मुसकाई ॥
हर्ष अंक ताही वैठी मन खोल जबै बतराई।
परसत अंग दशा बदली तब प्यारी मनमें धरी बुराई ॥
बूझत अरी डरी कै तोकों छाया आय दबाई।
तब लग पर गई सांझ कहूं मोहि वासो देहु बताई ॥

विसर न सकत प्रीति अति बढ़ाई व्यारू संग कराई।
रजनी गुण उबरे जब शय्या, अपने ठिग पौढ़ाई॥
जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो, जान परी लंगराई।
बृन्दावन हित रूप छद्म तज सुखकी लब्धि मनाई॥

८९६—योगिन लीला

(राग देश)

देखियत गुणन जरूर तेरो अति चटकीलो रूप।
छकन और हीसी लगत काहू सुता बड़े की भूप॥ टेक॥
चलरी चल घर लै चलों तू कह दे मनकी लाग।
योग लियो किहि कारणे, दृग दरशत है अनुराग॥
श्रीराधा नृप लाडिली मन आवत भापत सोय।
अंत लेत तपसीनको नहिं योग खिलौना होय॥
तन साधैं मनवश करैं हम वनफल करैं आहार।
क्यों ग्रेहिनके घर वसैं, जिन तर्क तज्यो संसार॥
भोजन भूखी हौं नहीं कछु, मन न वासना और।
प्रीति सहित आदर जहाँ, हम विलमें ताहीं ठौर॥
आदर देहों अधिक तोहिं, गुणहिं करो परकास।
गिरि गहवर वन सेइये, वरसानो निकट निवास॥
गाम निकट ग्रेही वसैं योगी रमैं वनखण्ड।
जिनके जप तपसे थमैं सातद्वीप नौखण्ड॥
हम जो सुनी यह शेष शिर तू कहत अनेती बात।
सत्य बोल नहिं जान ही विधि रचे जो साँवल गात॥

प्रीति प्रतीति न वचनकी करो वैस सुता पुनि राज ।
दूर वैठो घर जायके, तुम्हें योगिनसे कह काज ॥
गोपनके गोधन परख तुम तिन गुण करो वखान ।
योगिनके घर दूर हैं अति दुर्लभ पद निर्वान ॥
राज सुता तुम करति हो योगिन संग विवाद ।
सेवा कीने फल मिलै, चर्चा उपजै विषाद ॥
हम सेवा वहु विधि करैं जो तुम मन थिरता होय ।
यह पुर वसै बड़ भागिनी व्रज सम लोक न कोय ॥
क्यों न वड़ाई कीजिये लायक कुल वृषभान ।
अव हौं निश्चय चाल हौं पायो मनवांछित सन्मान ॥
वांह पकरके ले चली वैठारी जाय निकेत ।
अव छिन पास न छाँड़ि हौं समझ्यो उर अंतरको भेद ॥
पलंग देहु मोहिं वैठनो मन मिलनी सजनी पास ।
यहि विधि मोहिं विलमाइये मैं कवहूं न होउं उदास ॥
भूमि शयन योगी करैं तूं कहत वचन विपरीत ।
भूलि न आदर पाइये, तप मारग की रीत ॥
तुम मन मृदु कीरति लली, यह सजनी को हियो कठोर ।
तपसिनको शिक्षा करै कछु आयो कलिको जोर ॥
भुज भर लीनी कुंवरिसे तूं जिय जिन पावै खेद ।
वृन्दावन हित रूप छझको समझ परयो है भेद ॥

——

८९७—वीणाधारीकी लीला

(राग गौरी)

छवि आगरी कोविद राग ।
वीणा अंक विराजही बैठी बाबाके बाग ॥ टेक ॥
ऊँचो जामें बंगला कमनी सरवर तीर ।
जाके अंग सुवास ते जहाँ है रही भँवरन भीर ॥
पक्षीहू कौतुक ठगे ऐसी शोभा अंग ।
आभा नीलमणि मनो अस तनुको दरशत रंग ॥
जे देखन तरुणी गई ते जो बिलोई प्रेम ।
विध गई रस नादमें सब भूली नित कृत नेम ॥
तुम चलि आवो नगरमें मिले अधिक सुख होय ।
भूखी वह जो सनेहको, मैं देखी टक टोय ॥
गुणी न ऐसी देश यह रीझोगी सुन गान ।
औरन को जो छकावही वह आप छकै लै तान ॥
कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति बिकाय ।
जो अब आदर देहुगी तो फिर आवैगी धाय ॥
सरिता जल थिर है रहै जाको सुनत अलाप ।
शिव समाधि टारे बली विधिको टारत है जाप ॥
ब्रजमंडल ऐसी नहीं, नहीं भरतके खंड ।
अति गुणवंती भामिनी यह आई परचण्ड ॥
यह सुन अति अकुलाय कै चली सखी लै संग ।
रूप सिंधु उमंग्यो मनो तामें नाना उठत तरंग ॥

उठ सन्मानत साँवरी फूली सरवस पाय।
द्रग सों द्रग मनसों जो लखि उरझे सहज सुभाय ॥
अहो कुशल मति नागरी, तुम गुण भये प्रशंस।
राग अलाप सुनाइये सखी वीणाधरके अंस ॥
चपल करज नख द्युति बड़ी गौरी गाई वाल।
रीझी अति लली भूपकी दई ताहि आप हिय माल ॥
मान वड़ी तानन वड़ी, वढ़ी रूप लहि लाह।
प्रगट करो सब चातुरी जाके मनमें विपुल उमाह ॥
विद्या निपुण उजागरी धन तुम शिखवन हार।
कोऊ दिन वरसाने वसो अब चलो हमारे लार ॥
सुनत कछु मोन्यो वदन चुप ह्वै रही सुजान।
वीणा धर दियो कंधते रूखी ह्वै गई निदान ॥
ललता वूझत समझके का कारण वलि जाउं।
तुम उदास अति ही भई सुन धाम हमारे नाउँ ॥
मेरे छक है गुणनकी सुनो खोलके कान।
पर घर गये जो कोस है सखी जो न होय अपमान ॥
तुम्हें प्राण सम राख हैं लाड़ नयो नित होय।
अहो गुणीली भामिनी यह संशय मनते खोय ॥
गुण गाहक विरचे नहीं दूर करो सन्देह।
जे गुणको समझैं नहीं परहरिये तिनके ग्रेह ॥
यह सुन भई जो उह उही सखी साँवरी गात।
चम्पक वरणी धन्य तूं कही निपट समझकी वात ॥

अब हां निश्चय चलौंगी जान तुम्हारो हेत।
तो मन थाह मिली भट्ट नृप सुता न उत्तर देत॥
कहा न्याव सो करत हो कहत अति लडी वैन।
सुख पावो तो बिरमियो नहीं कर जैयो गौन॥
मसक उठी कर वीण लै लगी कुंवरिके साथ।
निपट मन्द गमनी भई गह प्यारी जू को हाथ॥
गोपनके मन्दिर जिते, सबको बूझत नाम।
तनु श्रम अधिक जनावही कहै कितक दूर तुम धाम॥
हम जो चढ़ैं रथ पालकी अति ही आदर योग।
गुणी रीझ जानै कहाँ ये ब्रजके मोरे लोग॥
कहौ मंगाऊं अश्व रथ कहौ पालकी रंग।
आज्ञा पहले करी नहिं योंहिं उठ लागी संग॥
हम जान्यो नियरे भवन यह तो निकस्यो दूर।
याते खवर परी नहीं तुम नेह रह्यो उर पूर॥
और सुनो मों बीणको नीके धरियो साज।
मेरो जीवन प्राण है मेरो याहीं सों रंग समाज॥
तुम मानत हो खेल सो सुन मो मुख रसरीत।
नारद शारदके सदा अति या बाजे सों प्रीत॥
हौं सीखी उनकी कृपासों हियकी गाढ़ी लाग।
ता प्रताप ते करत हो सखी तुम मोसों अनुराग॥
लाई न्यारे भंवनमें बहुत करत सन्मान।
अब एकान्त सुनाइये सखी सुघर साँवरी तान॥

वीणाके सुर साधके अंक लाय मुसकाय।
गायो चित्तकी चोपसों जिन लीनो सवन रिझाय॥
जैसिहि रजनी ऊजरी तैसोई हिये हुलास।
चपल करज तैसे चलैं भयो तैसोई परकाश॥
अहो सहेली साँवरी कर इहि नगर निवास।
असन वसन कर हो सखी, चल रह नित मेरे पास॥
मोहिं अंशा यह नगर घर यामें शंक न कोय।
आवत जात रहौं सदा जो रावर हित होय॥
सखिन और वाजे लिये प्यारी लई कर वीन।
ग्रीव ढुराई साँवरी अरु गायो कुंवरि प्रवीन॥
जब उघरी संगीत गति प्यारी दे कर ताल।
छद्म विसर गई साँवरी लगी निरतन गति नन्दलाल॥
ह्वै त्रिभंग ठाढी भई कर मुरलीको भाव।
फूंक चलै अंगुरी चलै गई भूल कपटको दाव॥
राधा राधा रट लगी अधरन हीके माहिं।
समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं॥
भुजा अंश पर धरनको झुकी प्रियाकी ओर।
सावधान होय साँवरी कह कोतुक रचत जु जोर॥
राज भवनमें आयके भूल न आदर पाय।
स्यानी है के वावरी तू अपनो रूप वताय॥
यासों प्रीति न तारिये हौं लाई जु वुलाय।
भेद हियेको वूझके देहु सादर वेग पठाय॥

प्रीतमको देख्यो कहूं इन लीनी गति चोर।
परम चातुरी सींव यह गुण आछे लेत टटोर॥
कान लाग चित्रा कह्यो है यह नन्दकिशोर।
मैं लक्षण नीके लखे, दृग चालत ठगैहीं कोर॥
भटू बहुरि नीके परख वात न मांडो फोर।
लायकसों समझे बिना, अति गरुवो नेह न तोर॥
भरी कटोरी अतरकी लाई सखी सुजान।
सबकी चोली लगायके तिहिं चोली परसे पान॥
वह अधरन ही में हंसी यह जो हंसी मुख खोल।
है यह दूत शिरोमणि कह्यो सब सखियनसों बोल॥
मेरी ही भूलन सखी तब तुम लियो विलोक।
प्रेमसिंधु उमंगन जहां कह छद्म जो तिनको रोक॥
कबहुं दूर कबहूं प्रगट आवत भान निकेत।
मधुप अनत विरमैं नहीं दृढ़ कियो कमलसों हेत॥
बरण्यो कौतुक प्रेमको नेम नहीं मरयाद।
लखी जु रसिकनकी गली श्री हरिवंश प्रसाद॥
यह रस रसिक जो विलखहैं जामें अतिही चोज।
वृन्दावन हित बलि रुचै दम्पति केलि मनोज॥

८९८—राग झंझोटी

श्यामाजी झूलैं पीरी पोखर पार ॥टेक॥
गावत हैं ऊंचे स्वर कोकिल, रही मौन मुख धार॥ १॥
रमनकी दमकन नग भूषण शोभा, विपिन निहार।

चौकी चमकन पर डारूं, श्वेत दामिनी वार ॥ २ ॥
थरकत हैं अतरस अतरोटा, शिर पर सूही सार ।
खूबै बनी उर पीत कंचुकी, मुख पर श्रमकण वार ॥ ३ ॥
सजनी रीझके साँवरी आई, झूलनको रिझवार ।
ताके संग झलत है प्यारी, करत अधिक मनुहार ॥ ४ ॥
कौन गाम क्या नाम तिहारो, कहिये कृपा विचार ।
तरुणनमें अति सुन्दर प्यारी, चतुरनमें वर नार ॥ ५ ॥
ललिता कहे बोल री साँवर, नातर देहों उतार ।
राजसुता संग झूलन आई, दियो ढीठ डर डार ॥ ६ ॥
डोरी गहि लीनी ललिताने, दोऊ लिये उतार ।
चितवनि चपल बलैया लेवें, कोउ पीवत जलवार ॥ ७ ॥
सैननमें समझावत मुखसे वचन न सकै उचार ।
नन्द गामकी ओर बतावैं, ऊंचे हाथ पसार ॥ ८ ॥
अचराको सरकनमें, कौस्तुभ मणिकी परी चिन्हार ।
हर हर हंसत सकल ब्रज सुन्दरि, यह वोही खिलवार ॥९॥
नई पाहुनी आई झूलन, बैठी घूँघट मार ।
वृन्दावन हित रूप बलि गई, छद्म न सकत उघार ॥१०॥

८९९—राग देस

कौन बसत या वृन्दावनमें मो मुरलीको चोर ॥टेक॥
जानी नहीं लई काहू करमें, कटिमें उरसी जोर ।
चोरी नहिं बरजोरी एरी प्यारी, मो मुरलीको चोर ॥ १ ॥
राजा हीको दिये बनेगी, यही न्यावकी तोर ।

वृन्दावन हित रूप सुघर पिया वाट गंवाई—
ढूंढो काननके कुछ देहु अकोर ॥ २ ॥

९००—राग खेमटा

प्रीतम तुम मो दृगन वसत हो ॥टेक॥
कहा भोरेसे ह्वै पूछत हो कै चतुराई कर जो हंसत हो ॥१॥
लीजै परख स्वरूप आपनो, पुतरिनमें तुमहीं जो लसत हौ ॥२॥
वृन्दाबन हित रूप रसिक तुम कुंज लड़ावत हिय हुलसतहौ ॥३॥

९०१—राग खेमटा

देखी कहूं गलिनमें मो प्राण जीवनी ॥टेक॥
एहो सुजान प्यारी, मम चूक क्या विचारी,
क्यों दुर गई लतनमें, दे दर्श आनन्दनी ॥१॥
चलत चाल छविसों, तव हलत हार उरसों,
ठुम ठुम चरन धरन पै, तू गति गयंदनी ॥२॥
तेरी छटा चरणकी, निंदत रवि किरण की,
हा हा कुंवरि किशोरी तू है सुख समूहनी ॥३॥
यह सुनत वचन मेरो, पाषाण द्रवत हेरो,
हित रूप लाल चेरो, एहो दुःख निकंदनी ॥४॥

९०२—राग पीलू

ठाढ़ी रहरी लाड गहेलो मैं माला सुरझाऊं ॥१॥
नक बेसरकी ग्रन्थ जो ढीली, ताहू सुभग वनाऊं ॥२॥
एरी टेढ़ी चाल छाँड़, मैं सूधी चलन सिखाऊं ॥३॥
वृन्दावन हित रूप फूलकी माल रीझ जो पाऊं ॥४॥

|| श्रीः ||

मंगल द्वादशी

(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)

ॐ काररूपा चिति है सदा ॐ
न मू उसे है सबका निदा न
मो दाग्नि में प्राण अपान हो मो
भ क्ति प्रियाके प्रिय हो चिदा भ
ग ति-प्रभावा वह है चिरा ग
व शी बनो, शुद्ध करो स्वभा व
ते जो-मयीमें कुछ भी न हो ते
वा र्ता, भवार्त्ता, भय, वासना वा
सु धा चिति प्राणपरा चिरा सु
दे ती सभी वा कुछ भी नहीं दे
वा णी परा ॐ चिति भावना वा
य थेष्ठ देवो सबको सदा य

ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः
ॐ शान्तिः

शिवचन्द्र भरतिया

९०४—राग पीलू

प्रीतम रहे प्रिया मन लीये, प्रिया रहे मन पीको ॥१॥
सखी रहैं दोउयन मन लीये, रंग वढ़े नित ही को ॥२॥
कानन छबिते नये दिखावें, प्राण वढ़े नित ही को ॥३॥
बृन्दावन हित रूप विहारन, सकल त्रियन सिर टीको ॥४॥

९०५—राग सोरठ

धवल महल चढ़ रत्न बंगला, झूलो सुरंग हिंडोर ॥१॥
नवलकिशोर सुकुमार छबीली, नेह नवल भुज जोर ॥२॥
सुरंग कसूमी सारी प्यारी, हरत झगाली कोर ॥३॥
हित अली रूप लाल रूचि औरे, पिया छवि उठत हिलोर ॥४॥

९०६—राग मल्हार

हर्ष झुलाइये मन भावन ॥टेक॥
उधर परयो हिय हेत गह गह्यो, झूंटा दियो चित चावन ॥१॥
यह जो कलपतरु यह रविजा तट, वह वन घन झुक आवन ॥२॥
वृन्दावन हित रूप वलि गई, वह हरियाली सावन ॥३॥

९०७—राग देश

सुहावन सावन राधा सुख तिहारे वाट पर्‍यो ॥१॥
यह जो शत गुणो रूप अंग संग झूलनमें उघर्‍यो ॥२॥
यह जो चौगुनो चाव कौन विधि भागन ते जो वढ़यो ॥३॥
बृन्दावन हित रूप रसिक प्रीतमको, लहनो सुकृत कर्‍यो ॥४॥

—

९०८—राग सोरठ

गाय चरायके गिरि धार्‌यो, तुम्हें झूलन समझ कहा है ।।१।।
अति सुकुमार प्रिया गौरांगी, ता संग झूलो हि चाहै ।।२।।
हम जो सिखावें तैसे हि सीखो, कहा फिरत हो भरे उमाहै ।।३।।
वृन्दावन हित रूप बलि गई, ह्यां पायो के वां है ।।४।।

चाचा हित वृन्दावनदास

९०९—राग सोरठ

में लीनी कान्हा शरण एक तेरी ।।टेक।।
पराधीन कुछ बस नहीं मेरो माया मति घेरी ।
भवसागर के भँवर जालसे पार करो बेरी ।।१।।
सुकृत लेश कियो नहीं बपुसे निज करणी हेरी ।
विरद रावरो सुन सुन माधव धीरज बहुतेरी ।।२।।
शरणागतकी लज्जा राखो याही अरज मेरी ।
कृष्णदासको दरश दिखावो लावो मत देरी ।।३।।

९१०—राग काफी

जय जय जय प्रभु नटवर वेषा ।।टेक।।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, साँवरि सूरत कुंचित केशा ।
कर मुरली उर माल विराजै, चंचल दृग अरु कज्जल रेखा ।।१।।
कटि पट पीत मृदुल कर सुंदर, पद तल यव अंकुश ध्वज रेखा ।
कृष्णदास यह रूप अनूपम, जगमें और सुना नहिं देखा ।।२।।

९११—राग सोरठ

थे छो म्हारे प्राणांरा आधार, राधा नंद कुमार ॥टेक॥
मोर मुकुट शिर चन्द्रिकाजी गल मोतियनको हार ।
चंचल नयन सुहावन प्रेम पियूष अपार ॥१॥
श्यामल गोर स्वरूप है नील पीत पट धार ।
जनु रतिपति द्वय तन धन्या प्रकट दिखावत प्यार ॥२॥
वंशीबट तर यूं खड़या कर गल बाँही डार ।
जनु कैलाश पहाड़ पै गौरी अरु त्रिपुरार ॥३॥
यह संसार असार में कृष्ण नाम है सार ।
कृष्ण बिना भवसिंधुसे कोइ न उतरै पार ॥४॥
या छवि युगल स्वरूप मैं तन मन डारूं वार ।
कृष्णदासकी बीनती म्हारो आवागमन निवार ॥५॥

९१२—लावनी

कृष्ण जगपालक सुखदाता, भजो मन शरणागत त्राता ॥टेक॥
धर्म धरणीसे उठ जावै दुष्टसे सज्जन दुख पावै ।
धूम असुरनकी मच जावे भक्त जब नारायण ध्यावै ॥
सब जग व्याकुल देखके, धरैं कृष्ण अवतार ।
सन्तनको पालन करैं, दुष्टन को संहार ॥
सुयश यह नारदादि गाता ॥१॥
कृष्ण वसुदेव गेह जायो, श्याम तनु भुजा च्यार ल्यायो ।
देखके सङ्कट विसरायो, भरोसो दृढ़ मनमें आयो ॥

वालक को वसुदेवजी, शिर पर लियो उठाय।
यमुना मारग दे दियो, जब नन्द भवन पहुंचाय॥
लौटिके मथुराकूं आता ॥२॥

पूतना बन ठनके आई, तनांके विष लगाय ल्याई।
दियो शिशुके मुख माँ तांई, गई निज लोक पलक मांई॥
सकटासुरकूं मारिके, तृणावर्त दियो डार।
अघा वकासुर वध कियो, तव घर घर मंगलचार॥
चरित नित अद्‌भुत दिखलाता ॥३॥

पूजा सुरपति की टारी, इन्द्र जब कोप कियो भारी।
लग्यो वर्षण मूसलधारी, विकल सब हो गये नर नारी॥
कर पर गिरिवर धर लियो, ब्रजकी करी सहाय।
घर घर आनन्द हो गये, तहँ इन्द्र पर्‌यो तव पाय॥
वात यह त्रिभुवन विख्याता ॥४॥

कालिय रह जमुना जलमें, स्थान वह भर्‌यो हलाहलमें।
कदम चढ़ कूद्यो वा थलमें, नागकूं नाथ लियो पलमें॥
भेज्यो रमणक द्वीपमें, निर्मल कर दियो नीर।
दावालनकूं पी गयो, तो यह हलधर को वीर॥
फिरे सब घरकूं हरषाता ॥५॥

वांसुरी वृन्दावन वाजी, गोपिका घर तजके भाजी।
प्रेम वश नेक नहीं लाजी, रासमें कृष्ण संग साजी॥
जितनी थी सव गोपिका, उतना कृष्ण दिखाय।
देख देख विस्मित भये, महिमा वरणि न जाय॥

भक्तके सुन सुन मन राता ॥६॥

पुरीसे सुफलक सुत आया, कृष्ण बल मथुरा ले आया।
कंसका वंश नाश पाया, पिताके बंधन कटवाया ॥
सुर नर मुनि जय जय करैं, हरषैं बरपैं फूल।
जो वांके शरणे रहे, तो वां पर रहे अनुकूल ॥
दासके कृष्ण पिता माता ॥७॥

९१३—भजन

अब मोहिं दरश द्यो यदुराय ॥टेक॥
तरसतां बहु वरष बीते अब तो रूप दिखाय।
मोह वश रस भोग चाहूं तुम दिये बिसराय ॥१॥
संसारसे बहु जीव उधारे, रावरो यश गाय।
आपको यश विमल गातां सकल पाप नशाय ॥२॥
तिरन को हरि नाम साधन नहीं और उपाय।
दासके मन आस तुमरी कृष्ण पूरहु आय ॥३॥

९१४—राग सोरठ

ब्रजराज राज तुमकूं महाराज लाज मेरी ॥टेक॥
निज करणी लखि पछताऊं, मन वेर वेर समझाऊं।
शठ नेक कह्यो नहिं माने, यो अधिक अधिक मोहि ताने ॥
मैं दोउ शरण लेइ तेरी ॥१॥
जन देव कर्म गृह काला, नहिं सुख दुख देने वाला।
मन है सुख दु:खको दाता, ये सब ही नाच नचाता ॥
भव माहिं फिरावै फेरी ॥२॥

यह वंधन मोक्ष करावै, मन कारण वेद वतावै।
मन अति प्रचण्ड हिय मांहीं, तुम विन कोई जीतैं नाहीं।
मोहिं तुमरी आश घनेरी ॥३॥

अव यह उपाय प्रभु कीजै, मनकूं अपनो कर लीजै।
तन जहां तहां उठ धावै, मन धरण छोड़ नहिं जावै ॥
वर देहु करो मत देरी ॥४॥

मोहिं आसरो तिहारो, मम अवगुन नाहिं निहारो।
तुम अपनो विरद विचारो मोहि ज्यूं जानों ज्यूं त्यारो ॥
यह पार लगावो वेरी ॥५॥

तुम कितने पतित उधारे, हम गिनते गिनते हारे।
अव मेरी वेर तिहारी, या क्यूं विलंव भई भारी ॥
सुन कृष्णदास केरी ॥६॥

९१९—राग सोरठ

नन्दक कन्हैया मैं तो लीनो तेरो आसरो ॥ टेक ॥
तुहिं तो माता पिता तुहिं वन्धु अन्नदाता,
मेरे है भरोसो एक कमल निवास रो।
रैनमें ज्यों चन्दको है अलिको सुगन्धको है,
इन्द्रियनको मनको ज्यों तनको है सांस रो ॥ १ ॥
प्रजाको ज्यों भूपको है कबूतर को कूपको है,
वेश्या को ज्यों रूपको है पशूको ज्यों वासरो।
पत्नीको पतिको है, कविको ज्यों मतिको,
है ऐसो विश्वास तो पै कृष्ण तेरे दासरो ॥ २ ॥

९१६—राग कालिंगड़ा

कान्हा कह्यो हमारो मान रे ।। टेक ।।
वेर वेर तोकूं समझायो तूं है निपट नादान रे ।
दूध दही घरमें वहुतेरे तज चोरीकी वान रे ।। १ ।।
अघ बक बकी दुष्ट खल दलसे तोहि राख्यो भगवान रे ।
पर घर जात वात तूं नहिं अच्छी सुत कुलरो भान रे ।। २ ।।
जो चाहै सो लेहु कन्हैया दधि माखन पकवान रे ।
कृष्णदास तेरो जग यश गावै सकल गुणांकी खान रे ।। ३ ।।

९१७—भजन

साँवरिया सुरत विसारी हो ।। टेक ।।
मेरी अरज परी नहिं कानां कह कह रसना हारी हो ।
ऐसी नींद कहाँ ते आई अजुं नहिं पलक उघारी हो ।। १ ।।
द्रूपद सुता को चीर वधायो, पाँच पांडवनकी नारी हो ।
अजामील सुत नाम उधारयो, गज गनिका तुम तारी हो ।। २ ।।
आगे पतित अनेक उधारे, अवके वेर हमारी हो ।
कृष्णदास को भवसागरसे कर गहि पार उतारी हो ।। ३ ।।

९१८—राग मल्हार सोरठ

उड़जा रे कागा कारा जो आवै नन्द दुलारा ।। टेक ।।
मथुरा जाय कृष्णसे कहियो यह सन्देश हमारा ।
गोपी विकल मीन ज्यों जल विन चाहत दरश तुम्हारा ।। १ ।।
सावन हरि आवन की आशा घर घर मंगलचारा ।
आई तीज हिंडोरो घाल्यो झूलेगा श्याम पियारा ।। २ ।।

कारी घटा उमंग चढ़ आई, बरषत हैं जलधारा ।
दादुर मोर पपीहा बोलै कोयल करै पुकारा ॥ ३ ॥
आवन कह गये अजहु न आये मास वीत गये बारा ।
कृष्णदासको दरश दिखावो जीवन प्राण अधारा ॥ ४ ॥

९१९—प्रभाती

संकट काट बिहारी मेरो संकट काट बिहारी ॥ टेक ॥
वेर वेर मैं करूं वीनती कह कह रसना हारी ।
ऐसी नींद कहाँसे आई अजहुं न पलक उघारी ॥ १ ॥
जो कोइ तुमको याद करै हैं तिनकी विपति निवारी ।
मेरी वेर देर क्यों लाई यह अचरज मोहिं भारी ॥ २ ॥
करुणानिधि करुणा नहिं कीनी कारण कौन मुरारी ।
कोमलता को त्याग कन्हैया कहा कठिनता धारी ॥ ३ ॥
कमलाकांत कामना पूरन प्रणत पाल भय हारी ।
कृष्णदास की आशा पूरो जब जाने नर नारी ॥ ४ ॥

९२०—राग असावरी

म्हे तो भोत कहाँ कांई थाने, श्याम म्हाने शरणागत मत छाड़ो ॥टेक॥
जहाँ जहाँ भीर परी भक्तन पै तुम ही चलायो गाडो ।
मात पिता सुत भाई वन्धु कोई नहिं आयो आडो ॥ १ ॥
नीर अथाह भीर जलचरकी बिना तीरको खाडो ।
कृष्णदास को हाथ पकर कै भववारिधिसे काढ़ो ॥ २ ॥

———

९२१—राग कालिंगड़ा

मैं चाकर नागर नटको, शिर पर है गोपाल धणी ॥ टेक ॥

महाप्रसाद हरिको मैं लेऊं, चरणामृत को गटको ।

रोग अकाल मौत भय नाशैं, यम दूतनको खटको ॥ १ ॥

जाकूं हरि चरचा न सुहावै ताहि अनलमें पटको ।

कमलाकान्त कामना पूरै, अनत कहूं मत भटको ॥ २ ॥

मेरे मनके मांहिं बस्यो है, मोर मुकुटको लटको ।

कृपा करो मोहिं वेग दिखावो, चिमतकारको चटको ॥३॥

अब तो आय दरश प्रभु दीजै, मारगमें मन अटको ।

कृष्णदास को पालक वासी, कालिन्दीके तटको ॥ ४ ॥

९२२—राग विहाग

माधव कमल नयन कब आवै ॥ टेक ॥

तरसत तरसत बहु दिन वीते, क्यों कर दरश दिखावै ।

नारद शारद शिव सनकादिक, कोई पार नहिं पावै ॥ १ ॥

शेष गणेश दिनेश धनेश, निसदिन ध्यान लगावै ।

गजकी अर्ज सुणी उठ ध्याये, ग्राहसे फन्द छुटावै ॥ २ ॥

सुत को नाम लियो निज जाण्यो, यमदूतनसे बचावै ।

वांको गुण नाहिं कबहूं मैं विसरौं, जो मोहि कृष्ण मिलावै ॥३॥

कोमल कृपासिन्धु वह होके, फिर क्यों देर लगावै ।

कहत कहत मेरी जीभ सिरानी, तदपि दया नहिं आवै ॥ ४ ॥

कृष्णदासकी सुनहु वीनती, सुर नर मुनि यश गावै ॥ ५ ॥

रामदयाल नेवटिया

९२३—भरतजीको वारामासियो

करम रेख ना मिटै करो कोई लाखन चतुराई ॥ टेक ॥
चैत पीछले पाख राम नौमी कूं जनम लियो ।
अवधपुरी सुखधाम सखिन मिल मंगलचार कियो ॥
खवर जव दशरथने पाई ।
दिये दान गजराज गऊ दिन थोरे की व्याई ॥
सभा सव प्रफुल्लित है आई ॥ १ ॥
लागत ही वैशाख केकई वावरि करि डारी ।
भरत कहै धृक जीवन हमरे तुमसो महतारी ॥
दुख सव नगरीकूं दियो ।
तीन लोकके नाथ राम तैंने वनवासी कियो ॥
कुमति तोय कैसी वनि आई ॥ २ ॥
जेठ पंच मिल कहैं भरतको गद्दी वैठारो ।
भरत कहै कर जोर नाथ मोय गरदन मत मारो ॥
सरै नहीं इन वातन काजा ।
हमतो उनके दास राम वे अयोध्याके राजा ॥
वात यह सवके मन भाई ॥ ३ ॥
आषाढ़ आशा राम मिलणकी मनमें लाग रही ।
राम कूण वन गये वताओ भरत वात कही ॥
नगरके सव हो नर नारी ।
रथ डोली गज वाज भीर भई भरत संग भारी ॥
नदी जैसे सागरको धाई ॥ ४ ॥

सावण भरत भीलपुर पूंचे भीर हुई भारी।
भीलने कटक जोर दल कीनी लड़णेकी त्यारी ॥
भरतसे पूछके रार करो।
रामलखण सिय काज तीर गंगाके जूझ मरो ॥
खबर यह भरतने पाई ॥ ५ ॥

भादों भरत भीलसे भेंटे भक्त जाण मनमें।
कन्दमूल फल फूल भरतकी भेंट किये वनमें ॥
भील जव अगुआ कर लिये।
भरद्वाज मुनीके प्रयागमें दरशन जा किये ॥
प्रयागकी दुनिया उठ धाई ॥ ६ ॥

आस्योज करी महमानी मुनिने पूछी कुशलाता।
दोऊ कर जोड़ दई परिकम्मा कौशल्या माता ॥
हमारो जीवन सुफल भयो।
इतनी बात सुनी मुनिवरने आशिरवाद दियो ॥
भरत माता समझाई ॥ ७ ॥

कार्तिक कूंच प्रयागसे कियो चित्रकूट आये।
बल्कल चीर जटा सिर सोहै, रामलखण पाये ॥
भरत चरणनमें जाय परे।
भरत उठाय राम उर लाये नैनन नीर भरे ॥
भरत तुम भैया सुखदाई ॥ ८ ॥

मंगसिर बारंबार भरतको रघुवर समझामें।
भरत लौट घर जाउ राज तुम करो अयोध्यामें ॥

लोग सबही सुख पावेंगे।
चौदह बरस बीत गया फिर हम भी आवेंगे ॥
भरतको ऐसे समझाई ॥ ९ ॥
पोष मास सिय राम लखण संग जुर गई भीर घणी।
जनक वशिष्ट गुरू समझावैं, कहे अपणी अपणी ॥
वीनती भांत भाँत कीनी।
राम प्रसन्न जब भये खड़ाऊं भरतको दीनी ॥
उलट घर जावो भरत भाई ॥१०॥
माघ मनायो मान रामने सुख पायो मनमें।
जनक जनकपुर में पहुंचाये भरत अयोध्यामें ॥
खड़ाऊं गादी धर दीनी।
रामचन्द्रसे कठिन तपस्या भरतने कीनी ॥
बड़ाई याही में पाई ॥११॥
फागण मास हरी जब सीता रावण वश कियो।
रावण मार लंकपुर जारी राज विभीषण ने दियो ॥
जीतकर अवधपुरी आये।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक दर्शण कूं आये ॥
राम सियाकूं गादी बैठाई ॥१२॥

९२४—धमाल

लिछमणके बाण लग्यो शकती ॥टेक॥
के तो जिवावे सीता सतवंती के रे जिवावे हणुमान जती ॥१॥

काहेसूं जिवावे सीता सतवंती काहे सूं जिवावे हणुमान जती ॥२॥
सतसूं जिवावे सीता सतवंती जड़ी सूं जिवावे हणुमान जती ॥३॥

९२८—धमाल

सुमरण कर पैली गणपतको ॥टेक॥
एक दन्त और सुंड विराजे,
शीश मुकुट सोहे सुवरणको ॥ १ ॥
वाई रे भुजा रिध सिधको वासो,
हाथ सोहे लाडू मोदक को ॥ २ ॥

९२६—श्रीकृष्णको वारामासियो

श्री राधा गोपी त्याग करी घरवाली कुब्ज्या सी ॥टेक॥
प्रथम महीनो असाढ़ लाग्यो वरसा ऋतु आई।
प्रीतम मेरे श्याम सलोने पाती भिजवाई ॥
कहो वे कैसे नहिं आये।
ऐसे चतुर सुजान श्याम चेरीने विलमाये ॥
गेर गये जादूकी फांसी ॥ १ ॥
सावणमें मनभावन हम तो दामनसी लागी।
जब तो दिन दिन प्रीत वढ़ाई, इब काहे त्यागी ॥
सुणो तुम ऊधो तेरी सों।
लाज शरम कित गई प्रीत जब कीनी चेरी सों ॥
याई म्हाने आवे है हांसी ॥ २ ॥

भादों रैन अँधियारी बोली प्रीतमकी प्यारी।
अन्न न भावे नींद न आवे, शरद गरम न्यारी ॥
मिटावो संकटने ऊधो।
इसे कुटिल कुजात श्याम ने म्हे जाण्यो सूधो ॥
मार गयो बिरहकी गांसी ॥ ३ ॥
लागत क्वांर कनागत आये, सब कोई धरम करे।
म्हे तो धरम करांजी जब ही प्रीतम नजर परै ॥
मिलावो कोई नर ऐसा।
ले अक्रूर गयो मथुराको करियेजी कैसा ॥
म्हे तो बांकी चरणांकी दासी ॥४॥
कातिक कौतुक किये कृष्ण ने हम सब कोई जानी।
अखिर जात अहीर श्याम के कुब्ज्या मनमानी ॥
कंस की है आखर चेरी।
याही से दिन रन आँख या फरकत हैं मेरी ॥
लगी मेरे जीवको चौरासी ॥५॥
मंगसिरमें घर चमकण लाग्यो फरकत हैं छाती।
ऊधो हाथ संदेशो भेज्यो बाँचो जी पाती ॥
लिखो कुछ तुमभी बालमको।
जो न मिलोगे वेग जिवत नहिं पाओगे हमको ॥
हमारे जी के सुख राशी ॥६॥
पूस मासमें चले गये मेरे प्रीतम से प्यारी।
कोनन लागे सीत करी हम नयनन से न्यारी ॥

हमें यह प्रेम सतावत है ।
जीव जलावन काज संदेशो ऊधौ लावत है ॥
खबर तुम लीजो अविनाशी ॥७॥
माह नाहके डाह पिया थे छोड़ी हम जानी ।
रोवत उठत कराह बात सब ऊधो पहचानी ॥
ज्ञानकी बातें सिखलाई ।
कृष्ण देहु मिलाय लाय सब गोपी समझाई ॥
झूठ सबही के मन भ्यासी ॥८॥
फागण फीको लगै रैन दिन भींग रहीं विषमें ।
पांती बाँचत क्षेम सखी इक यों बोली रिसमें ॥
लगे अब शाह करण चोरी ।
म्हारे जीवतां खेलो कान्ह तुम बांदी संग होरी ॥
खबर मेरी लीजै कैलाशी ॥९॥
चैत चिंतामें जली जाँय अब पड़ती कुंआमें ।
कहियो कृष्ण गोपाल संग कुबज्याकूं ले आमें ॥
कछु इस बात को डर ना है ।
हम गोपी दरशण की प्यासी और नहीं चाहै ॥
खबर मेरी लीज्यो ब्रजवासी ॥१०॥
लागतही बैशाख शाख सब ही के घर आई ।
ऊधोजी ने जाय कृष्ण कूं ऐसी समझाई ॥
पैज तुम हक नाहक रोपी ।
हाड़ मांस गलगयो बावली सब होगी गोपी ॥

लेंयगी करवत काशी ॥११॥

जेठ मासमें मिले कृष्ण जब राधा गोपीसे।
व्रजवासी आनन्द भये तब छूटे बाधासे ॥
किसनकी यह बारामासी।
पढ़े सुणै वैकुण्ठ सिधारै, छूटै जम फांसी ॥
सांच यह मेरे मन भ्यांसी ॥१२॥

अज्ञात

९२७—राग होरी

सीतारामजी सूं खेलूँ मैं होरी, भरलूं गुलाल की झोरी ॥टेक॥
सज कर आई जनक किशोरी, चहूं बन्धुन की जोरी।
मीठे बोल सियाबर बोलत, सब सखियन की तोरी ॥
हँसे हरसूं कर जोरी ॥ १ ॥
उड़त गुलाल अबीर अली री, अम्बर अरुण भयोरी।
रंगकी भरी छुटें पिचकारी, केसर कीच मचोरी ॥
नैन भरि छब निरखोरी ॥ २ ॥
लोग नगरके सब ही आये, चहुंदिस भीर भरोरी।
तुलछराय प्रभु कह कर जोरें, तन मन धन अरपोरी ॥
जनम को लाभ लहोरी ॥ ३ ॥

९२८—राग जंगला

मेरी सुध लीजो जी रघुनाथ ॥टेक॥
लाग रही जिय केते दिन की, सुनो मेरे दिलकी बात ॥ १ ॥

मोको दासी जान सियावर, राखो चरणके साथ ॥ २ ॥
तुलछराय कर जोर कहे, मेरो निज कर पकड़ो हाथ ॥ ३ ॥

९२९—राग जंगला

सियावर श्याम लगे मोय प्यारो है ॥टेक॥
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल, भाल तिलक सुखकारो है।
मुख की शोभा कहा कहूं उनकी, कोटि चन्द उज्यारो है ॥ १ ॥
गल विच कण्ठी है रतनारी, बनमाला उर धारो है।
केसरियो जामो जरकसको, दुपटो लाल लप्पारो है ॥ २ ॥
पीताम्बर पट कट पर सोहे, पायन झझर न्यारो है।
तुलछराय कहे मो हिरदे बीच, आण वस्यो धनुधारो है ॥ ३ ॥

तुलछराय

९३०—राग बिलावल

वस रहि मेरे प्रान मुरलिया, बस रहि मेरे प्रान ॥टेक॥
या मुरलीमें कामण घोन्यो, उन ब्रजवासी कान ॥ १ ॥
मुखकी सीर लई सखियन मिल, अमृत पीयो जान।
वृन्दाबनमें रास रच्यो है, सखियां राख्यो मान ॥ २ ॥
धुनि सुनि कान भई मतवारी, अंतर लग गयो ध्यान।
बीरां कहे तुम वहुरि बनावो, नन्दके लाल सुजान ॥ ३ ॥

९३१—राग सोरठ

प्रीत लगाय जिन जाय रे सांवरिया बाला,
प्रीत लगाय जिन जाय रे ॥टेक॥
तुम्हरे तो संग सखि वहुतेरी, हम नहीं आई दाय रे ॥ १ ॥

प्रीतमको पतियां लिख पठऊं, रुचि रुचि लिखूँ वनाय रे ।
जाय वंचाओ नंद नन्दनसों, हिवड़ो अति अकुलाय रे ॥ २ ॥
प्रीतिकी रीति कठिन भई सजनी, करतव अंग वहाय रे ।
जव सुधि आवे श्यामसुन्दरकी, विन पावक जर जाय रे ॥ ३ ॥
मिलन मिलन तुम कह गये मोहन, अव क्यों वेर लगाय रे ।
मीरांको तुम दरसन दीजो, जव मोरे नैन सिराय रे ॥ ४ ॥

मीराँ

९३२—भजन

हमारे मुरलीवारौ श्याम ।
विन मुरली वनमाल चन्द्रिका, नहिं पहिचानत नाम ॥ १ ॥
गोप रूप वृन्दावन-चारी, व्रज जन पूरन काम ।
याहीसों हित चित्त वढ़ौ नित, दिन दिन पल छिन जाम ॥ २ ॥
नन्दीसुर गोवर्द्धन गोकुल, वरसानो विश्राम ।
नागरिदास द्वारिका मथुरा, इनसों कैसो काम ॥ ३ ॥

९३३—भजन

चरचा करी कैसे जाय ।
वात जानत कछुक हमसों, कहत जिय थहराय ॥ १ ॥
कथा अकथ सनेहकी, उर नाहिं आवत और ।
वेद समृति उपनिषदको, रहि नाहिं न ठौर ॥ २ ॥
मनहि में है कहनि ताकी, सुनत स्रोता नैन ।
सो अव नागर लोग वूझत, कहि न आवत वैन ॥ ३ ॥

९३४—भजन

जो मेरे तन होते दोय ।
मैं काहूतें कछु नहिं कहतो, मोतें कछु कहतो नहिं कोय ॥१॥
एक जु तन हरि-विमुखन के, संग रहतो देस विदेस ।
विविध भाँति के जग दुख-सुख जहँ नहीं भक्ति लवलेस ॥२॥
एक जु तन सतसंग रंग रंगि, रहतो अति सुख पूर ।
जन्म सफल कर लेतो ब्रज बसि, जहँ ब्रज जीवन मूर ॥३॥
द्वै तन बिन द्वै काजन ह्वै हैं, आयु सु छिन छिन छीजै ।
नागरिदास एक तनते अब, कहो कहा करि लीजै ॥४॥

९३५—भजन

दरपन देखत, देखत नाहीं ।
बालापन फिरि प्रगट स्याम कच, वहुरि स्वेत ह्वै जाहीं ॥ १ ॥
तीन रूप या मुखके पलटे, नहिं अपानता छूटी ।
नियरे आवत मृत्यु न सूझत, आँखें हियकी फूटी ॥ २ ॥
कृष्ण भक्ति सुख लेत न अजहूं, वृद्ध देह दुख रासी ।
नागरिया सोई नर निहचै, जीवन नरक निवासी ॥ ३ ॥

९३६—भजन

हरि जू अजुगत जुगत करेंगे ।
परबत ऊपर वहल काँचकी, नीके लै निकरेंगे ॥ १ ॥
गहिरे जल पाषान नाव विच, आछी भाँति तिरेंगे ।
मैन तुरंग चढ़े पावक विच, नाहीं पिघरि परेंगे ॥ २ ॥

याहू ते असमंजस हो किन, प्रभु दृढ़ कर पकरेंगे।
नागर सब आधीन कृपाके, हम इन डर न डरेंगे ॥ ३ ॥

९३७—भजन

दुहुं भाँतिनको मैं फल पायो ॥टेक॥
पाप किये ताते विमुखन संग देश देश भटकायो।
तुच्छ कामना हित कुसंग बसि, झूठे लोभ लुभायो ॥ १ ॥
कौन पुण्य अब बृन्दावन, बरसाने सुबस बसायो।
आनंदनिधि व्रज अनन्य मंडली, उर लगाय अपनायो ॥ २ ॥
सुनि वेदको दुर्लभ सो सब, रस-विलास दरसायो।
स्यामा स्याम दरस नागरको, कियो मनोरथ भायो ॥ ३ ॥

९३८—भजन

हमारी सब ही बात सुधारी।
कृपा करी श्रीकुञ्ज विहारिनि, अरु श्रीकुंज विहारी ॥ १ ॥
राख्यो अपने बृन्दावनमें जिहि ठां रूप उजारी।
नित्य केलि आनन्द अखण्डित रसिक संग सुखकारी ॥ २ ॥
कलह कलेस न व्यापै इहि ठाँ, ठौर विश्व तें न्यारी।
नागरिदासहिं जनम जितायो, वलिहारी वलिहारी ॥ ३ ॥

९३९—भजन

भक्ति विन हैं सब लोग निखट्ट ॥टेक॥
आपसमें लड़िवे भिड़िवे को, जैसे जंगी टट्टू ॥१॥
नित उनकी मति भ्रमत रहत है, जैसे लोलुप लट्टू ॥२॥
नागरिया जगमें वे उछरत, जिहि विधि नट के चट्टू ॥३॥

९४०—भजन

किते दिन बिन वृन्दावन खोये ॥टेक॥
यों ही वृथा गये ते अबलौं, राजस रंग समोये ॥१॥
छाँड़ि पुलिन फूलनिकी सय्या, सूल सरनि सिर सोये।
भीजे रसिक अनन्य न दरसे, विमुखनिके मुख जोये ॥२॥
हरि विहारकी ठौरि रहे नहिं, अति अभाग्य बल बोये।
कलह सराय बसाय भठ्यारी, माया राँड़ बिगोये ॥३॥
इक रस ह्यांके सुख तजिके ह्वां, कबौं हँसै कबौं रोये।
कियो न अपनो काज, पराये भार सीस पर ढोये ॥४॥
पायो नहिं आनन्द लेस, मैं सबै देस टकटोये।
नागरिदास बसे कुंजन में, जब सब विधि सुख भोये ॥५॥

९४१—भजन

ब्रजवासी तें हरिकी शोभा।
बैन अधर छवि भये त्रिभंगी, सोवा ब्रजकी गोभा ॥१॥
ब्रज बन धातु विचित्र मनोहर, गुंज पुंज अति सोहैं।
ब्रज मोरनिको पंख सीस पर, ब्रज जुवती मन मोहैं ॥२॥
ब्रज रज नीकी लगति अलक पै, ब्रज द्रुम फल अरु माल।
ब्रज गउवनके पाछे आछे, आवत मद गज चाल ॥३॥
बीच चाल ब्रजचन्द सुहाये, चहूं ओर ब्रजगोप।
नागरिया परमेसुरहू की, ब्रजतें बाढ़ी ओप ॥४॥

—

९४२—भजन

ब्रज सम ओर कोउ नहिं धाम ॥
या बृजमें परमेसुरहूके सुधरे सुन्दर नाम ॥१॥
कृष्ण नाँव यह सुन्यो गर्गतें कान्ह कान्ह कहि बोलें।
वाल केलि रस मगन भये सब, आनन्द सिंधु कलोले ॥२॥
जसुदानन्दन, दामोदर, नवनीत-प्रिय दधिचोर।
चोर चोर चितचोर, चिकनिया चातुर नवलकिशोर ॥३॥
राधा-चंद-चकोर, सांवरो, गोकुलचंद दधि दानी।
श्री वृन्दावनचंद चतुर चित, प्रेमरूप अभिमानी ॥४॥
राधारमन, सु राधावल्लभ, राधा कांत रसाल।
वल्लभ सुत, गोपी जन वल्लभ गिरिवर-धर छवि जाल ॥५॥
रास विहारी रसिक विहारी, कुञ्जविहारी श्याम।
विपिन विहारी बंक विहारी, अटल विहार अभिराम ॥६॥
छैल विहारी, लाल विहारी, वनवारी, रसकंद।
गोपीनाथ मदन मोहन, पुनि, वंशीधर गोविन्द ॥७॥
ब्रजलोचन ब्रजरमन, मनोहर ब्रजउत्सव ब्रजनाथ।
ब्रजजीवन, ब्रजवल्लभ सबके, ब्रजकिशोर शुभगाथ ॥८॥
ब्रजमोहन, ब्रजभूषन, सोहन ब्रज नायक, ब्रजचन्द।
ब्रज नागर, ब्रज छैल छवीले, ब्रजवर श्री नन्द नंद ॥९॥
ब्रज आनन्द, ब्रज दूल्लह नित ही, अति सुन्दर ब्रजलाल।
ब्रज गउवन के पाछे आछे, मोहन ब्रज गोपाल ॥१०॥
ब्रज संवंधी नाम लेत ये ब्रजकी लीला गावै।

नागरिदासहि मुरलीवारो, ब्रजको ठाकुर भावै ॥११॥

महाराजा सावंतसिंह उपनाम 'नागरीदास'

९४३—भजन

श्यामसुन्दर मदनमोहन मेरी सुध लेना ॥टेक॥

आयो प्रभु तुमारे द्वार, सुनके पतितजन उधार।

कलियुग के देख भाव, दुष्टजन की सेना ॥ १ ॥

करके प्रभु गर्भवास, जन्म शतकी घोर पाश।

घर घर अनन्त रूप, लुब्ध विषय में ना ॥ २ ॥

पाँच शत्रु अति ही घोर, ज्ञान इन्द्रिय नाम चोर।

लूट लेय दिनके वीच, नष्ट करत सेना ॥ ३ ॥

देव असुर यक्ष नाग, वीर धीर जात भाग।

इनसे ना रक्षा होत, विना तेरी सेना ॥ ४ ॥

'बालचन्द्र' प्राणनाथ, तुमीं सदा रहो साथ।

तुम विन ना चैन यहाँ, करो अभय देना ॥ ५ ॥

९४४—भजन

अब काहे तरसावो, माधव ॥टेक॥

कृपा वनाय मनुष तनु देकर, दुखमें सुख सरसावो।

तनमें पुलक नेत्र रह जल भरे, ध्यान माहिं दरशावो ॥ १ ॥

प्रेम भाव मन करो प्रकट हठ माया भाव हटावो।

सतसंगत नित रहै रसिकनसों, ब्रज वनवास वसाव्रो ॥ २ ॥

विमुख-संग मम कवू न हो प्रभु आशा यही पुराव्रो।

बालचन्द्र मन हरण लाडिले, हमसों परे न जाव्रो ॥ ३ ॥

९४५—भजन

प्रेम, विन व्रज वनितन को जानै ॥टेक॥
आठों पहर मीन जिमि व्याकुल, जल विन व्याकुल नैना ।
नन्दनन्दन विन कछु न सुहावत, विधि निषेध व्रत नेमा ॥ १ ॥
को प्रत्यक्ष वनात यमुनतट, वह अद्भुत छवि वांकी ।
जित चाहै तित मुरली मधुर कर, निरखत सुन्दर झांकी ॥ २ ॥
धन्य धन्य व्रजवनितागण जो भव विधि वांछित धूली ।
कृष्ण प्रेममय कथा समझ भये वालचन्द्र भव भूली ॥ ३ ॥

९४६—भजन

विनु तव कृपा कौन तरे माया ॥टेक॥
को ज्ञानी कर्मी तुम विन हरि क्या कछु वस्तुको पाया ।
अवचनीय मायाको कहके माया ही में फंसाया ॥ १ ॥
दैवी और गुणमयी माया जिसका यही प्रपञ्च वनाया ।
वांको तुच्छ अवच कहते जो वदतोघात सजाया ॥ २ ॥
सत्संकल्प आदिमें एको वहुस्यामिति श्रुति सुनाया ।
वालचन्द्र कहें उसकी रचना झूठी कहै सो झुठाया ॥ ३ ॥

९४७—भजन

विनती काहि सुनाऊं प्रियतम ॥टेक॥
को दुःख हरण शरण आये राखत, को है दुःख विदारण ।
को रस रास विहार करत है, को मानिनि मन वारण ॥ १ ॥
सत् चित् आनन्द कौन आन है, गीता शास्त्र सुनावन ।
को हठ भक्त मनावन पटु है, को गृह काज वनावन ॥ २ ॥

को गिरि कमल उठाय लेत कर, गोप गोपी जन कारण ।
को रथ हांकि अमर जन जीतन, रणरंग माहिं लुंठावन ॥ ३ ॥
कर बिश्वास अखण्ड राधापति, करुणानिधि सुनि आयो ।
बालचन्द्र अब देर करो मत अपनो करो मन मायो ॥ ४ ॥

९४८—भजन

प्रभु अब क्यों विलम्ब रहते हो ॥टेक॥
राधा वदन मलाल कृपामय मोते कहा चहते हो ॥ १ ॥
तव आलम्ब एक दृढ़ आशा, तापर निगाह बनावो ।
भव बन्धन माया सब तोड़ो, सरल सुभाव बनावो ॥ २ ॥
हे माधव करुणामय केशव, कंस काल विध्वंसी ।
गो गोपीजन कृपा बनाके, गिरिधारण हितवंशी ॥ ३ ॥
प्रेम प्रभाव प्रकट प्रभु जहँ तहँ, शाखहि शास्त्र बताते ।
बालचन्द्र मुखचन्द्र चारु छवि, दे दिखाय सरसाते ॥ ४ ॥

९४९—भजन

प्रेम को करत गोपिका जनसों ॥टेक॥
तन मन बुद्धि प्रेम रंग राता, छिन भर नांय परे जो ॥१॥
रैन दिवस एकहि रस मूरत, हृदय कमल बिलसे जो ॥२॥
गृह गुरुजन सब कार्य बनाती, हृदय समाया मोहन ॥३॥
बालचन्द्र यह प्रेम प्रकट कर कृष्ण दर्श कियो दोहन ॥४॥

९५०—भजन

मम सुध है कहां जग माहीं तूं देख शनै मन माहीं ॥टेक॥
सुर नर दैत्य दानव किन्नरगण, को है काल दवाई ।

हम हम कह सब फिरत जगतमें, ताप त्रय दुखिताही ॥ १ ॥
आलम्बन अति करत मूढ़मति यहाँ सुख मिले सहाई ।
झूठी मनोमय करत कलपना, आयु सब ही गमाई ॥ २ ॥
ना वृन्दावन सुख सेवन कियो, ना सत्संग बढ़ाई ।
अंतकाल नरकमें जइहैं, बाल कहे पद गाई ॥ ३ ॥

पं० बालचन्द्रजी शास्त्री

९८१—श्री हनुमच्चरण वन्दना

चरण वंदना चरणमें, श्रद्धा सुमन सुजान ।
हनूमान स्वीकृत करें, भेंट भक्तकी मान ॥
पढ़े सुने जो वंदना, लगा प्रेमसे ध्यान ।
विपुल संपदा विमल यश, पावै सुख सम्मान ॥

जयति जय महावीर बंका ॥टेक॥

पवनसुत बल विक्रम वीरा । दशानन-दर्प-दलन धीरा ॥
कपिध्वज पिंगनेत्र वाला । जयति जय बजरंगी वाला ॥
देव, अपराजित बलकारी । भक्त गण दुःख भञ्जनकारी ॥
प्लवंगपति दिव्य देह धारी । सदा शुभदायक हितकारी ॥

रामचन्द्र भगवानकी, आज्ञाको सिर नाय ।
मह सिंधुको लांघ कर, लंका पहुंचे जाय ॥

पछाड़ी सर्व प्रथम लंका ॥जयति०॥१॥

घुसे फिर लंकाके माहीं । पता कुछ सीताका नाहीं ॥
पुरी अति रम्य कान्ति वाली । छटा भी सुन्दरता शाली ॥

अटारी रत्न खचित सोहें। दृश्य दर्शकका मन मोहें ॥
सुसज्जित बाग जहाँ भारी। नयन-अभिराम-पुष्प-कारी ॥
लंकाधिपके महलमें, पहुंच गये कपिराज।
कूद कूद शोभा निरख, जनक सुताके काज ॥
जलाई छन भरमें लंका ॥जयति०॥२॥
मातका दर्शन जब पाया। वीर तब मनमें हरषाया ॥
दूतने परिचय दरशाया। हृदय तब गद्गद् हो आया ॥
दुःख कर्शित अति सुन्दर देही। राम-विरहाकुल वैदेही ॥
अंगूठी राघवकी दीन्हीं। जानकी हर्षित हो लीन्हीं ॥
सीताको दे मुद्रिका, ले पाछा सन्देश।
रावणके योद्धा हते, काँप उठा लंकेश ॥
देख बल मान गया शंका ॥जयति०॥३॥
संदेशा लेकर कपि आया। रामके मनमें अति भाया ॥
चढ़ाई लंका पर बोली। चली वानरगणकी टोली ॥
लखन रणमें मुरछा खाई। राम दलमें चिन्ता छाई ॥
संजीवन बूंटी तुम लाये। प्राण पुनि लक्ष्मणके आये ॥
रावण कुलका नाश कर, ले सीताको साथ।
राज विभीपणको दिया, आये श्रीरघुनाथ ॥
बजाया रघुवरका डङ्का ॥जयति०॥४॥
भरत को जाय खबर दीनी, बड़ाई रामचन्द्र कीनी ॥
निवेदन 'शर्मा' का दाता, तुम्हीं हो मात पिता भ्राता ॥
तुम्हीं हो इस भव के त्राता, शीश तव चरणों में नाता ॥

कृपा कर सालासर वाला। केशरी नन्दन श्री लाला ॥

राम इष्ट अशरण–शरण, तुम हो दीन दयालु।
प्रमुख सचिव सुग्रीव के, करुणासिंधु कृपालु ॥
पूजते राजा औ रङ्का ॥ जयति० ॥५॥

अगाड़ी ब्रह्मापद पावो। वत्स, भूतल पर रह जाओ ॥
रामसे जब यह वर पाया। वीरने झट मस्तक नाया ॥
आप हैं बाल ब्रह्मचारी। राम प्रिय तेज पुंज धारी ॥
आपकी शुभ जीवन गाथा। सकल दुख नाशक है नाथा ॥

आंजनेय है आपका, संकट मोचन नाम।
मम सङ्कट सत्वर हरो, सिद्ध करो सब काम ॥
ढुलें नित शुभ्र चँवर पंखा ॥ जयति० ॥६॥

पं० झावरमल शर्मा

९५२—भजन

(रंगत लावनी)

सत्यनारायण महाराज लाज रख मेरी।
मैं हूं चरणां को दास शरण आयो तेरी ॥टेक॥
थारो मंदिर बण्यो एक भोत सुन्दर अति भारी।
थारा दरशण करवा आवे, नर और नारी ॥१॥
थारे मोर मुकुट कानां बिच कुण्डल सोहै।
थारे मुख पर मुरली धरी, देख देख मन मोहै ॥२॥
थेई वृन्दावन में रास रच्यो अति भारी।
और चांद सुरज की महिमा अपरम्पारी ॥३॥

यश गावै नरसिंहदास बीकानेर वालो।
थारो युगल जोड़ी को दास है, दीनदयालो ॥४॥

नरसिंहदास

९८३—भजन

भक्ति के भूखे हैं नन्दलाल ॥टेक॥
अति ही मधुर सुदामा के तंडुल अरु केलेकी छाल।
रुचि रुचि शाक विदुर घर खावे, तजि दुर्योधन थाल ॥१॥
चेतन घन द्रुपदा के टेरत, (भये) चीर रूप तत्काल।
त्रिभुवनपति सारथि वन बैठे, हो अर्जुन की ढाल ॥२॥
जिनके चरण दरश हित तलफत, शिव ब्रह्मा सुरपाल।
उनको हंसि हंसि नाच नचावत, दे ताली बृजबाल ॥३॥
ज्ञान ध्यान जप योग न जानूं, मैं मंद बुद्धि मंद भाल।
दीनबन्धु हँसि हृदय लगालो, कोटि कर्म जंजाल ॥४॥

केसरीसिंह वारहठ

९८४—राग माड़

गयो माखन सारो बीत, कन्हैया, देर न कीजे रे ॥टेक॥
गायां कटे छै पाप वढ़े छे, दुख पावां छां भारी।
दूध दही सुपने नहिं देखां, वणां कैसे वलधारी ॥१॥
दूध दहीका मटका उखलता, घर घर मोहन प्यारे।
मांगी छाछ मिले है दोरी, भटकां द्वारे द्वारे ॥२॥

आहट रईको सुण कर, वेगी नींद उड़ेछी थारी ।
घोर नींदमें सो मनमोहन, क्यों थे सुधि बिसारी ॥३॥
भारतकी सारी गोप्यां भी, याद करेछे थाने ।
वंशीवट और यमुना तट पै, दर्शण दीज्यो वांने ॥४॥
जो रही वाट घणां दिनासूं, गऊ तुम्हारी वाला ।
वीर कहे रोती गायां ने, धीर वंधा गोपाला ॥५॥

९५५—भजन वीरदास

(बालचर गीत)

जागो जागोजी टाबरियां थे हो जगमें सांचा वीर ॥ टेक ॥
दिन उग्यो थे वेगा जागो, मात पिताके पांवां लागो ।
हिरदाने थे साफ राख, सद्‌गुणको पीज्यो नीर ॥ १ ॥
गुरु जनांको आदर करज्यो, विद्या पढ़वामें चित्त दीज्यो ।
देशभक्ति अरु नीति धर्म में, रीज्यो सदा गंभीर ॥ २ ॥
दुखी जणांने हृदय लगाजो, कभी न दुष्टां सूं भय खाज्यो ।
दुवलो मनने करके थे मत होज्यो दीन फकीर ॥ ३ ॥
ध्रुव प्रह्लाद वणो थे सारा, होसी थांसूं वारा न्यारा ।
थारे ऊपर आश करे छे आ धरणी धर धीर ॥ ४ ॥
पाछो पैर कदी न न्हांकज्यो, मन घोड़ाने रणमें हांकज्यो ।
ऐसो व्रत ले लेवो भाइयो 'हरि' ने राखो सीर ॥ ५ ॥

९५६—भजन

कन्हैया म्हाने होली खेलाओ, आकर पंथ बताओ ॥ टेक ॥
म्हेसव लोग अनाथ हुवा हां, पाछा सनाथ बनाओ ।

ज्ञानी, ध्यानी सांचा भक्त हां, ऐसी म्हाने जताओ ॥ १ ॥
विज्ञान, कला और न्याय शास्त्रको, पूरो ज्ञान कराओ ।
शूरवीर स्वतन्त्र बना कर, बन्दीको फन्द छुड़ाओ ॥ २ ॥
खरी कमाई व्यर्थ न खोवां, ऐसी राह दिखावो ।
ज्ञानवानको आदर करणो, यो भी म्हाने सिखावो ॥ ३ ॥
"हरि" शरणमें रहां सदा म्हे, यो गुण म्हामें लाओ ।
जो जो भूलां हुई है अब तक, वाने भी बिसराओ ॥ ४ ॥

हरिभाई किंकर

९५७—भजन

जगतमें राम नाम है सार ॥ टेक ॥
राम नाम की लगनसे होवे भोत उधार ॥ १ ॥
भक्तराजकी अर्ज सुनत ही, नरसिंह भये अवतार ।
शिव ब्रह्मादिक रटत हैं, निशदिन बारंबार ॥ २ ॥
कलि कल्मषका नाश करणको, जप देखो नर नार ।
यह संसार अपार है, समझो इसे असार ॥ ३ ॥
सार वस्तु तो राम भजन है, जोशी कहे विचार ॥ ४ ॥

सूरजमल जोशी

९५८—भजन

(तर्ज-कहो तो जीजाजी थारो कांगसियो वणज्याऊंजी)
साँवरिया विहारी थारी दासी वण ज्याऊं जी ।
दासी वण ज्याऊं थारे चरणांमें चित ल्याऊंजी ॥ टेक ॥

कहो तो सांवरिया थारा कुण्डल वण ज्याऊं जी।
कुण्डल वण ज्याऊं थारे कानांमें सज ज्याऊं जी ॥ १ ॥
कहो तो सांवरिया थारा कंगण वण ज्याऊं जी।
कंगण वण ज्याऊं थारे हाथांमें सज ज्याऊं जी ॥ २ ॥
आओ जी सांवरिया थारा, मोती वण ज्याऊं जी।
मोती वण ज्याऊं थारी कंठीमें लग ज्याऊं जी ॥ ३ ॥
कहो तो सांवरिया थारी वींटी वण ज्याऊं जी।
वींटी वण ज्याऊं जामें हीरा लाल जड़ाऊं जी ॥ ४ ॥
कहो तो सांवरिया थारी वंशी वण ज्याऊं जी।
वंशी वण ज्याऊं मैं तो राग छतीसूं गाऊं जी ॥ ५ ॥
कहो तो विहारी थारी मालिन वण ज्याऊं जी।
मालिन वण ज्याऊं थारा गजरा गूंथ र ल्याऊं जी ॥ ६ ॥
कहो तो सांवरिया कारी कामर वण ज्याऊं जी।
कामर वण ज्याऊं थारी गाय चरा कर ल्याऊं जी ॥ ७ ॥
कहो तो सांवरिया थारी राधा वण ज्याऊं जी।
राधा वण जाऊं मैं तो फेर जनम नहिं पाऊं जी ॥ ८ ॥

९५९—भजन

(तर्ज-जोजाकी)

मोहन म्हाने प्यारा लागो जी, एजी म्हाने प्यारा लागोजी,
म्हारी रुकमण वाईरा कंथ किसन, जुग वाला लागो जी।
एजी ए तो सहस्र गोप्यारां दीना नाथ,
वनवारी म्हाने ओल्यूं आवे ये ॥ टेक ॥

सांवरी सूरत वारी ये, सैंयो ये मोरी गल वैजंती माल,

मुरलिया वाजे प्यारी ये ॥ १ ॥

मथुरासे अक्रूर आयो ये, सखी री वावा नन्दजीरी पोल।

किसन हरने लेवन आयो ये ॥ २ ॥

सखि याने कंस खिनायो ये,

सखिरी मनमें दगो विचार, वीर दोऊ लेवण आयो ये ॥ ३ ॥

सखि आपां जाण न देवां ए, सैंयो ये मोरी करस्यां कोट उपाय,

प्रभुजी ने जाण न देवां ये ॥४॥

वीर दोऊ रल मिल आया ये, रथ मांही वैठ्या छै जाय,

नहीं मुखसे वतलाया ये ॥५॥

कौन अक्रूर बतावे ए, सखीरी सारां सेती क्रूर,

निर्मोहीड़े ने दया न आवे ये ॥६॥

कृष्ण बातां समझावे ये, सखी री भूमिको भार उतार,

आय थाने दरश दिखावां ये ॥७॥

केश पकड़ हरि कंस पछाड़्यो, सखीरी उग्रसेन दियो राज,

काज कुब्जा का सँवारया ये ॥८॥

सखि ललिता यश गावे ये, भवसागर सेती त्यार,

अंत निज धाम पठावे ये ॥९॥

९६०—भजन

(तर्ज—कसूमेकी)

गिरिधरकी वंशी प्यारी जी गिरिधर की ॥टेक॥

मोर मुकुट पीतांवर सोहै कुण्डलकी छवि न्यारी जी।

यमुना तट पर धेनु चरावे, ओढ़े कामर कारी जी ॥१॥
गले पुष्पनकी माल विराजे, हिवड़े हार हजारी जी ।
कुंज गलिनमें रास रच्यो है, गोपियन संग वनवारी जी ॥२॥
लूट लूट माखन दधि खावे, रोक लई व्रजनारी जी ।
हाथ लकुट कांधे कमरिया, साँवरि सूरत जादू डारी जी ॥३॥
प्रीति लगा कर मन हर लीन्यो, नटवर कुंज विहारी जी ।
ललिता दासी जनम जनमकी, चरण कमल वलिहारी जी ॥४॥

९६१—भजन

(तर्ज—ननदोई की)

आवो आवोजी मोहन गिरिवर धारी,
राधाजी से प्यारा लागे वनवारी ॥टेक॥
दान चुकावे म्हांसे नन्द लालो, दही वेचन आवे व्रज नारी ॥१॥
ज्ञान सिखावे म्हाने राधा प्यारी, फन्द छुटावे प्यारो वनवारी ॥२॥
रास रचावे नित राधा प्यारी, वंसरी वजावे प्यारो वनवारी ॥३॥
पनघट जावे सखियां सारी, गाय चरावे प्यारो वनवारी ॥४॥
ग्वाल वाल संग गिरिधारी, इत राधा संग ललिता प्यारी ॥५॥
ज्यांको ध्यान धरत त्रिपुरारी, मैं चरण कमल पर वलिहारी ॥६॥

९६२—राग आसावरी

राम मेरी अरजी मानो जी ।
शरण आये की लाज, राम मेरी अरजी मानो जी ॥टेक॥
सिद्ध श्री पहले लिख, सिद्ध होनेके काज ।

के तो सिद्ध हरि भजनमें जी, के तो संत समाज ॥१॥
सकल श्री सरवोपमा, लायक हो महाराज।
आज लिखूं हूं प्रेमसे, थाने मालम होसी आज ॥२॥
अधम उधारण रामजी, सर्व सुधारण काज।
औगुण मेरा कछु ना गिनो जोवो विड़द की लाज ॥३॥
मैं दुर्बल हूं जीव जगत में, तुम सर्वस हो राम।
यमका धक्का नांय लगे, प्रभु कीज्यो ऐसा काम ॥४॥
मैं गरीब अरजी दई, वड़ी गरज है मोय।
अरजी पर दसखत करो, जो कुछ मरजी होय ॥५॥
आरत होय अरजी करूं, दोनूं करको जोड़।
मोय अबला की नीती, आप निभावो दौड़ ॥६॥

९६३—लावणी

अरज सुन गंगा महाराणी, चेत करी भक्तनके कानी ॥टेक॥
सेवा कर भागीरथ ल्यायो, सुयश तेरो मृत्युलोक छायो।
महातम वेदनमें गायो, अन्त मन संतनके भायो ॥
स्वर्गलोक से ऊतरी, भक्ति सुधारन काज।
सुर नर मुनि तेरो ध्यान धरत है, रखो भक्तकी लाज ॥
सीस धर शिवशंकर मानी ॥१॥
धरमके हेत रूप धारा, पाप सब जगका धोय डारा।
काज हरि भक्तन के सारा, वंश भागीरथका त्यारा ॥
सुरनर मुनि जन वीनवे, करे तिहारो जाप।

जो गंगा स्नान करत है, कटे जन्मका पाप ॥
वेदमें भाषत है वानी ॥२॥

आचमन अंत समय पावे, दूत सब जमका हट जावे ।
पारसद ठाकुरका आवे, आय वैकुण्ठां ले जावे ॥
गंगा तुम्हारे भक्तकी, कोइयन पूछे वात ।
तारा मण्डल छेद कर, विष्णु लोक ले जात ॥
रही नहीं तीन लोक छानी ॥३॥

मात ! मैं आयो शरण थारी, लाज तुम रख लीज्यो म्हारी ।
भक्तकी काटो यम वेरी, रती मत कीज्योना देरी ॥
प्राण विप्र की वीनती, सुणियो चित्त लगाय ।
झूठी साख भरे गंगाकी, जासी यमके द्वार ॥
मार वह खायगा अभिमानी ॥४॥

९६४—लावणी

कथा सुण भागवत गीता, जन्म तेरा वातोंमें वीता ॥टेक॥
फजर उठ राम नाम जपना, अन्तमें कोई नहीं अपना ।
संग नहीं चलता रे खपना, जगत दो दिनका सपना ॥
चार दिनांकी चांदनी, मोत अन्धेरी रात ।
समझ वूझ अपणे दिल मांही, झूठ कपटकी वात ॥
हाय कर जावोगे रीता ॥१॥

एक दिन वादल चढ़ आवे, घड़ीमें सभी विखर जावे ।
वड़ी में गरड़ गरड़ गावे, उसीका मरम नहीं पावे ॥

कालचक्र माथे फिरे, खबर न जाने कोय।
जाग्या सो नर जागिया जी, सूत्या रह गया सोय ॥
पड़ा ज्यूं हिरणी पर चीता ॥२॥
एक दिन चोर कर ल्यावे, दरब ले क्या पदवी पावे।
मलीदा भेला सब खावे, करे दिल अपना मन चावे ॥
जम कूटेला मुगदरा, कोई न भरसी साख।
मीठा मन तूं करले प्राणी, आखिर होसी खाख ॥
कहो दिन काढ़ोगे कीता ॥३॥
दुख सुख दोनूं अलग राखो, बजर की छाती कर राखो।
ऐसी सुन धरम नीत धारो, किसीकी गरदन मत मारो ॥
सूर कहै तुम सुणो हरिजी, कठिन मिलणको आस।
मो पर म्हर करो महाराजा, डूबत राखो झ्याझ ॥
ज्यूं मुख राम नाम सीता ॥४॥

९६५—राग माड़

प्यारो म्हाने लागे थारो नटवर भेस ॥टेक॥
मोर मुकुट पीतांबर सोहे जी, मुरली अधर धरेस ॥१॥
पीतांबर की कछनी सोहे जी, घूंघरवाला थारा केस ॥२॥
कह हुकमेस सीसके स्वामी जी, गमन करो जी चहुं देस ॥३॥

९६६—राग माड़

कान्हा वंशीवारा मेरी गागर उतार ॥टेक॥
जमुना जल सजि गागर गोरी, समझ बूझ सखि मोय सिर धारी।
गमन भवन गति भूली हूं जी, मोय सिर भार ॥१॥

नवल नार नाजुक तन गोरा, कबु नहिं धोया कनक कटोरा ।
सदा रही बावल घर मांही, करसे कियोय न कार ॥२॥
कश्यप सुवन सुताकी तीरा, हत्यो जाय लंकेस्वर वीरा ।
छोड़ छबीला बाँह हमारी, सासू देगी गार ॥३॥
वेर वेर विनऊं वंशीधरजी, म्हारे घर आज्यो माखन दूंगी ।
औघड़ तो अति आतुर गावे, अपजस टार ॥४॥

९६७—राग सोरठ ठुमरी

ओल्यूं थारी आवे रे मिलवाकी साजनियां ॥टेक॥
विछर न दूँगी पांव पलकमें, राखूं हथमणियां ।
आप म्हाराज को विड़द लजेलो, सुण ये साजणियां ॥१॥
याद करूं जब वेग पधारो, राखूं पावनियां ।
किरपा करज्यो दरशण दीज्यो, शरणका जनियां ॥२॥
मरथा समुद्रमें वही जात हूं, कोई तो राखनियां ।
कह हुकमेस हेत कर लीज्यो, रघुवरसे धनियां ॥३॥

अज्ञात

९६८—राग माड़

वंशी बजावत गावत कान्हा, देखोरी आली ॥टेक॥
मोर मुकुट कटि काछनी, गल वैजन्ती माल ।
साँवरि सूरत माधुरी, मूरत, संग सखा लिये ग्वाल ॥१॥
यमुना किनारे धेनु चरावत, गावत मीठी तान ।
काननमें झङ्कार पड़ी जब, मोहे तन मन प्रान ॥२॥

तान सुनाय पशु पक्षी मोहे, मोही व्रज की नार।
ध्यान धरत शङ्करजी मोहे, ब्रह्मा वेद उचार ॥३॥
सुरनर मुनि जाको ध्यान धरत हैं, कोऊ न पावत पार।
रामसखी की वीनती, भवसागरसे त्यार ॥४॥

९६९—भजन

(तर्ज-मेंहदीकी)

प्रेम रस भगती त्यारणी।
थारा कियेसे पाप कट जाय, प्रेम रस भगती त्यारिणी ॥टेक॥
एजी थारो जान्म सुफल होय जाय, प्रेम रस भगती त्यारिणी ॥१॥
दीनी सतगुरु याही बताय, प्रेम रस भगती त्यारिणी ॥२॥
कीनी कितनाई संत सुजाण, प्रेमरस भगती त्यारिणी ॥३॥
भगती कीनी ध्रू प्रह्लाद, प्रेमरस भगती त्यारिणी ॥४॥
हांरे प्यारा तन मनसे ध्यान लगाय, प्रेमरस भगती त्यारिणी ॥५॥
जाको वेद रहे जस गाय, प्रेमरस भगती त्यारिणी ॥६॥
जासे आवागमन मिट जाय, प्रेमरस भगती त्यारिणी ॥७॥
हांजी प्रभु थारा रामसखी जस गाय, प्रेमरस भगती त्यारिणी ॥७॥

९७०—भजन

(तर्ज-पनिहारी की)

छैल छवीलो प्यारो नन्दजीरो लालोजी,
म्हारे मन वस गयो गिरधारी ॥टेक॥
मथुरा माहीं जनम लियो है, गोकुल वसिया गिरधारी।
नंदराय घर नौवत वाजे, होय रहे आनन्दकारी ॥ १ ॥

छलकर आई नार पूतना, सजकर सोला सिणगारी ।
अंचला पीय निज धाम पठाईजी ऐसे तुम उपकारी ॥ २ ॥
इन्दर कोप कियो व्रज ऊपर, वरसत मूसलधारी ।
वावें नखपर गिरिवर धार्‌यो, राख लई थे व्रज सारी ॥ ३ ॥
खेलत गेंद गिरी यमुनामें कूद गये तुम मंझधारी ।
पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो, फण फण निरतत वनवारी ॥ ४ ॥
सुर नर मुनि जाको ध्यान धरत है, शेष शारदा कथ हारी ।
रामसखी तुमरा जस गावे जी चरण कमल पर वलिहारी ॥ ५ ॥

९७१—राग माड़

(तर्ज—चतुर म्हाने जाड़ो लागे जी राज)

चतुर कान्हा वेगा आज्योजी राज,
एजी थारी रुकमण जोवे छे वाट,
किसन प्यारा वेगा आज्योजी ॥टेक॥
मोहनको पतिया लिखूंजी, कैसे लिखूं जी वनाय ।
पतिया छोटी नेह घणांजी, पतिया लिखोय न जाय ॥ १ ॥
काहे की पाती करूंजी, काहे की कलम दवात ।
कौण सखीको नाम लिखूँ जी, कौन द्वारकाने जाय ॥ २ ॥
चीर फाड़ पाती करूंजी, अंगुलीकी कलम वनाय ।
श्रीकृष्णका नाम लिखूं जी, ऊधो द्वारकाने जाय ॥ ३ ॥
सात समुद्र स्याही करूंजी, कलम करूं वनराय ।
सारी पृथ्वी कागज करूंजी, हरिगुण लिख्यो न जाय ॥ ४ ॥

सौ निहोरा सौ बीनतीजी, लाखूं करूं प्रणाम।
के तो आकर प्राण बचावो, नातर तजूं पिराण ॥ ५ ॥
बुगले घेरी माछली जी, सिंह ने घेरी गाय।
रुक्मिणीने तो असुरां घेरी, लीज्यो बेग छुड़ाय ॥ ६ ॥
रथ चढ़ आयो साँवरोजी, अंबिकाके पूंच्यो छै जाय।
बाँह पकड़ रुक्मिणीने ले गयो लीनी रथ बैठाय ॥ ७ ॥
असुरन दल संहारियाजी, भूमिको भार मिटाय।
रामसखी तुमरो यश गावे, आवागमन मिटाय ॥ ८ ॥

९७२—भजन

(तर्ज–बना जी म्हाने चौरासी को बाजो यूं सुनावे)

आज सखी बलदाऊजीरो बीरो, म्हाने बंशी बजाय रिझावे ॥टेक॥
साँवरी सूरत मनमोहनी मूरत, मनमोहन घणो ये सुहावे ॥ १ ॥
वृन्दाबनमें धेनु चरावत, मधुभरी बेन बजावे।
हम जल-यमुना भरन जात ही, म्हाने झाला देय बुलावे ॥ २ ॥
सहस्र बात करे मनमोहन, बैयां पकड़ समझावे।
मैं तो लाज भरी मोहनसे, वो जरा नहीं शरमावे ॥ ३ ॥
बरज रही बरज्यो नहिं माने, हंसकर कण्ठ लगावे।
संगकी सहेली छाड़ गई, मोय घर जाय बात बनावे ॥ ४ ॥
तन मन वश कर लियो मनमोहन, पलक नहीं बिसरावे।
रामसखी श्रीकृष्ण शरण लहि, आवागमन मिटावे ॥ ५ ॥

९७३—भजन

मन मतवारे की गैल, मत कोई जावो ए ॥टेक॥
मन मतवालो हो रह्यो ये घुल रह्या वांका नैन।
प्रेमकली तो झुक रही ये लगी पियाला देन ॥ १ ॥
यो मन लोभी लालची, ये समुंद्र कासा वेग।
वैठ जगतकी चूंतरी, ये मत धर उलटा डेग ॥ २ ॥
यो मन हस्ती वावलो ये वुद्धिकी करे सैल।
सतगुरु शरण लीजियो ये छुटे कालकी गैल ॥ ३ ॥
जो मनने वशमें कियो, वोही संत सुजान।
रामसखी की वीनती ये, धर हृदय हरि ध्यान ॥ ४ ॥

९७४—भजन

(तर्ज-हाय मोरे प्रीतम बसे तुम कौन नगरमें जाके)

हां मनमोहन हाँ मनमोहन, वसे तुम कौन दिशामें जाके ॥टेक॥
मोरे प्यारे जल्दी आवो, दासीको नाहक तरसावो,
छवि दिखला कर प्राण वचावो ॥ १ ॥
निशदिन तुमरा शकुन मनाऊं, एको पलक नहीं विसराऊं,
सब दिवस तुमरा यश गाऊं ॥ २ ॥
खान पान कछु नांय सुहावे, नैना नींद पलक न आवे,
तारा गिनत सभी निशि जावे ॥ ३ ॥
तुम दीनन प्रतिपाल कहावो, मेरे अवगुण चित्त ना लावो,
प्रीत लगाय मोये क्यूं छिटकावो ॥ ४ ॥

एक बार सूरत दिखा ब्रजवासी, रामसखी चरणांकी दासी,
आप विना मैं रहूं उदासी ॥ ५ ॥

९७५ राग सोरठ

स्याल् म्हारो भीजेछेजी, मत डारो रंग ॥टेक॥
मोहन हाथ लई पिचकारी, ग्वाल बाल जाके संग ॥ १ ॥
अबीर गुलाल भरी सब झोली, होय रहे रंग विरंग ॥ २ ॥
तक तक मारत श्याम कुमकुमा, सखा बजावत चंग ॥ ३ ॥
रामसखी चरणनकी चेरी, रहूं श्यामके संग ॥ ४ ॥

९७६—भजन

हेलो देतां लाज मरूं झालो दियो ये न जाय ॥टेक॥
बिछड़ गई मेरे संगकी सहेली, अब के करूं जी उपाय ।
हेलो द्यूं मेरी सास लड़त है, नणदल रई छै लखाय ॥ १ ॥
झालो द्यूं मेरी चुनड़ी उड़त है, घूंघट खुल खुल जाय ।
नंदजीरो लाल खड़्यो पनघट पर, देख रह्यो मुसकाय ॥ २ ॥
मैं बारी गागर सिर भारी, सिर कुण ठावेगी बलाय ।
रामसखी मोहनकी शरणां, आवागमन मिटाय ॥ ३ ॥

९७७—धमाल

किया आऊं रे साँवरिया तेरी हर नगरी ॥टेक॥
तेरी नगरीमें कीच बहुत है, पांव चलूं भीजूं सगरी ।
तेरी नगरीमें यमुना बहत है, पनिया भरन आई सगरी ॥ १ ॥

तेरी नगरीमें दान लगत है, श्याम करत झगरा झगरी।
तेरी नगरीमें फाग मची है, मोहन रोक लई डगरी ॥ २ ॥
लाल गुलालके बादर धाये, केसर रंग भरे गगरी।
पिचकारी भरि मारत मोहन चूनर भीज गई बघरी ॥ ३ ॥
मो पर तो रंग हँस हँस डारत, मोहन आय गयो भगरी।
रामसखी तुमरो यश गावे, हृदय धरूं तुमरी पगरी ॥ ४ ॥

९७८—धमाल

बरसाणे महल लाड़लीको ॥टेक॥
एक बरसाणे बाग लगायो रे, जमाई पेड़ आमलीको ॥ १ ॥
एक बरसाणे महल चिणायो रे, जमाई रंग बादलीको ॥ २ ॥
सब सखियां शृङ्गार बनायो रे, सोहे रंग कांचलीको ॥ ३ ॥
ग्वाल बाल संग मोहन आयो, वो सौखीन कामलीको ॥ ४ ॥
रामसखी दरसणकी प्यासी, सुन्दर श्याम लगे नीको ॥ ५ ॥

९७९—धमाल

देवी अम्बिकाने पूजण जाऊंगी ॥टेक॥
पान सुपारी धजा नारियल, देवीके भेंट चढ़ाऊंगी ॥ १ ॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, मोदक भोग लगाऊंगी ॥ २ ॥
ऊँचे परवतपर बण्यो सिवालो, प्रेम सहित जस गाऊँगी ॥ ३ ॥
रामसखी तुमरा जस गावे, चरण कमल चित लाऊँगी ॥ ४ ॥

९८०—भजन

भजल्यो रामने, ये थारे शिर पै गूंजे काल ॥टेक॥
तेलीका हो बैलिया ये, बिना हरीके नाम।

आँख्या ,पटी बंधायसी ये, फिरसी घाणी सुने अरु श्याम ॥ १ ॥
गैवारीका ऊँट हो ये बिना नाम करतार ।
होय निर्दई लादसी ये, पीठ अमीतो भार ॥ २ ॥
बाजीगरका बांदरा ये होवे, बिना नाम जगदीश ।
गलमें डोर बँधायसी ये लाठी खासी अपने शीश ॥ ३ ॥
सूकर होसी ग्रामका ये, बिना भजे जगन्नाथ ।
आस पास बाड़यु फिरै ये, खोज खोज मल खात ॥ ४ ॥
होसी कागा कूकरा ये, त्याग हरीको नाम ।
डोलैं घर घर बारणे ये, वे तो पिटता सुबे अरु शाम ॥ ५ ॥
ह्वै जंगलका सांपला ये, तजिके नाम गुपाल ।
पेट पलणियां डोलसी ये, होसी बुरा हवाल ॥ ६ ॥
गीदड़ल्लो बड़ होयसी ये, हरिका नाम विसार ।
रामलाल झख मारते ये, डोलैं चौरासी मंझधार ॥ ७ ॥

९८१—भजन

माता धन्य कौशलल्या थारी कूख, जन्मा है रामजी लला ॥ टेक ॥
जन्मा पूरण ब्रह्म रामवतार, सोला ये कला ।
ये रिसि जज्ञ सुधार, तार दिंगे नार अहल्या ॥ १ ॥
ये ही शिवरी गीध उधार, माता जस लेवेंगे भला ।
ये ही सुग्रीव विभीषण दें राज, तार दिंगे सिन्धु पै सिला ॥ २ ॥
जणतीना राम सरीखा ये पूत, माता तूंतो सूरमा भला ।
कूण तोड़त धनुष विशाल, काटे कूण रावण गला ॥ ३ ॥

कूण हरत भूमि को ये भार, जणती ना रामसा लला।
कूण हरत परशु अभिमान, जन्मत कूण ऐसी सवला ॥ ४ ॥
जो ये रामसखी जस गावें होंगे निवला सवला।
च्यार पदारथ पायें, कथी सुणी जीव सगला ॥ ५ ॥

९८२—राम नामको बारामासियो

भजो नर सीता रघुनन्दा।
थारो जनम मरण मिट जाय, कटै चोरासीका फन्दा ॥ टेक ॥
श्रावण अति मन भावन पीपो, जलमें कूद परे।
गलसे जाय मिलैं रघुनन्दन, तापर म्हेर करे ॥
छाप निज ताको दे डारी।
जहां जहां पीपो धरत पैर कर धरता वनवारी।
भूल गयो ताको मतिमन्दा ॥ १ ॥
भादू माव भीलनी कीनो, जूंठे फल खाये।
पैर उपाहनि ना शिर टोपी, हाथी बैठाये ॥
विप्र वो रंक बड़ा भारी।
ताको दोय लोकका राज, दीन्या गिरधारी ॥
भखे ये चावल सुखकन्दा ॥ २ ॥
क्वांर उदार रामसा दूजा, कहो कौन भाई।
टेर देत ही चीर वधायो, पार नांय पाई ॥
बचाये भारतमें अण्डा।
लाख भवन मां कष्ट सहन करि राख्या था पण्डा ॥
हरी सा को आनन्दकन्दा ॥३॥

कातिक कामी द्विज नारायण, पुत्र पुकार करी ।
देय विमान पारसद भेज्या, तारत ताय हरी ॥
तार दिया सदन कसाई जी ।
गीध व्याध गजराज बारमुखि यान चढ़ाई जी ॥
दयासिंधु वे गोविन्दा ॥४॥
मंगसिर महिमा राम नामकी, कहूं सुणो भाई ।
कोट गंग अस्नान दान फल, अर्ध नाम मांई ॥
राम कहो राम कहो भाई ।
कोटि बेद को सार नाम कहूं सौगन्द मैं खाई ॥
चेत, कर चेत मूढ़ वन्दा ॥५॥
पोष होस करि फेरि नामकी, महिमा सुन वन्दा ।
कोटों तार ब्रह्म गुण बेशी, भजि तजिके धन्धा ॥
नाम विना तिरया न तिरे कोई ।
नाम ही राम कृष्ण आदि कर्वनि दर्शण दे तांई ॥
ईश आदि उड़गण चन्दा ॥६॥
माघ आग लग ज्यावो, जो हरि नाम छुटावे रे ।
ओ तात मात परवार कुटुम धन सब जल जावे रे ॥
तजो तुम वो सबही प्राणी ।
चाये परम सनेही होय भजे ना जो सारंग पाणी ।
तजो वो सब नर वन्दा ॥७॥
फागण मांगण भीख होयके वामन हरि ध्यावे ।
छलणे गये नाम बलि जीता आप छली आये ॥

नाम वल शेष भूमि ठावे।
गरल पान शिव कियो कि कुंभज सोख सिंधु जावे॥
नाम सब सुख गुण बलकन्दा॥ ८॥
चैत्र चेत कर मूढ़ जीवना जगमें दो दिनका।
यवन हराम कहत गति पाई नाम भजो उनका॥
प्रेत तिरे पांच हजारा रे।
साध चिताकी धूम नाम सो क्यों न उचारारे॥
नाम सुन सूर तिरा गन्दा॥ ९॥
वैशाख साख भरैं वेद, शेष शिव वाणी इमि गावै।
राम भजन बिन हो न सुखी जिव सारा समझावे॥
भजो हरि स्वांस स्वांस मांई।
ना जाणे स्वांस वहुरि कवि आवै नहिं आई॥
भरोसा क्या इसका बन्दा॥ १०॥
ए जी जेठ ठेठकी वात कहूं, जो हरि श्रीमुख गाई।
उप पातक पातक मांही पातक, नामे रटे जांही॥
नाम ये एक विसारा रे।
कोटि विप्र गुरु घात पाप सिर लागत भारा रे॥
समझ ये नाम रटो चन्दा॥ ११॥
आषाढ़ आश पूरैंगे रघुवर, रघुवर गुण गावो।
यहां सुर दुर्लभ भोग भोग करि अन्त स्वर्ग जावो॥
राम कहो राम मिलैं आई।
रे ज्यूं चकमकमें आग, नाम में रहें राम राई॥
कहो ये मान चेत अन्धा॥ १२॥

जी मास पुरुपोत्तम पुरुषोत्तमको नमस्कार करियो।
दस सहस्र अश्वमेध यज्ञ फल वेशी उच्चरियो ॥
दस सहस्र अश्वमेध यज्ञ कर पुनि जग जनमावे।
नमो नारायण कहे शेष सो अमरापुर पावे ॥
रहे न डर जन्म मरण हन्दा ॥
रामलाल उपनाम "रामसखि"

९८३—भजन

हे गोबिन्द राख लाज, इब तो शरण तेरी ॥ टेक ॥
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर, जलकी कीनी ढेरी—
भक्त जान दयावान, गिरि नख पै धरयो री ॥ १ ॥
सुदामाको दियो दान, दुर्योधनको हन्यो मान—
द्रौपदीकी टेर सुण, पेट दुर्वासाको भरयो री ॥ २ ॥
वामनको रूपधार, राजा वलिके द्वार जाय—
देवताके काज राज, पताल को दियोरी ॥ ३ ॥
लक्ष्मण है चरणनको दास, लज्जा मेरी राखो नाथ—
मैं हूं अनाथ, नाथ, आप मेरा वनोरी ॥ ४ ॥

९८४—भजन

दीनबन्धु दीनानाथ, राखो लाज आयके ॥टेक॥
मैं हूं चरणको दास, आप हो दीननके नाथ।
भीड़ पड़्यां संकट मेटो, चरणांमें गिरायके ॥१॥
नरसिंह रूप धारयो, प्रह्लादको उबार्‍यो।
द्रौपदी की लाज राखी, चीरको वधायके ॥२॥

सुदामा ने दियो दान, रुकमैयो को हरयो मान ।
नरसीजी की लाज राखी, भातको भरायके ॥३॥
मेरे हो आप नाथ, और कोई न संग साथ ।
मेरी आप लाज राखो, दया हिय धारके ॥४॥

९८५—भजन

एजो थारी मूरत पर जाऊं वलिहारी,
साँवरिया, म्हाने सूरत लागे थारी प्यारी ॥टेक॥
मोर मुकुट थारे अधिक विराजे, कान्हा, वंसीकी छिव न्यारी ॥१॥
जमुनाके नीर तीर धेनु चरावे, कान्हा, ओढ़े कामल कारी ॥२॥
कानां में कुण्डल अधिक विराजे, थारे वागेकी छिव न्यारी ॥३॥
लक्ष्मणदास चरणको चाकर, विपति हरो प्रभु म्हारी ॥४॥

९८६—भजन

प्रभु तेरे नामको आधार, ए जी वेड़ा करद्योनी पार ॥टेक॥
तूं ही न्याव, खेवनियो तूंही, तूंही पार लंघावन हार ॥ १ ॥
गिरि गोवर्धन नख पर धारयो, व्रजकी करी सहाय ।
द्रुपद सुताकी टेर सुनी प्रभु चीरने दियो वधाय ॥ २ ॥
तूं ही अलख खलक को मालिक, तूंही करेगो निहाल ।
लक्ष्मण है प्रभु दास तिहारो, कर मालिक उपकार ॥ ३ ॥

९८७—भजन

पोढ़ो पोढ़ो जी श्याम रघुराई,
नाथ थारे नैनांमें निद्रा छाई ॥टेक॥
हाथ जोड़ जानकी ठाडी, चरण कमल लिपटाई ॥१॥

रावण मार विभीषण ताऱ्या, भक्तांकी करी थे सहाई ॥२॥
बाली ने मार किष्किन्धा लीनी, सुग्रीवने दी थे वड़ाई ॥३॥
लक्ष्मण है प्रभु दास तिहारो, महर करो थे सदांई ॥४॥

९८८—भजन

दईको दाता राम, तेरा सारे वो सब काम,
तूं समझ बूझकर चाल रे ॥टेक॥
ईश्वरने हृदयमें धार रे, तने प्रभू करेगो निहाल रे।
तूं पाप पह्ले मत बांध रे, तूं धर्म पूर्वक चाल रे ॥१॥
तेरा ईश्वर राखे मान, बेईमानां ने करे हैरान।
भक्त को सङ्कट मेट देवे, ईमानदारों को सारे काम रे ॥२॥
तेरो दास तेरो गुण गावे, हृदयमें लग गयो ध्यान रे ॥३॥

९८९—भजन

है क्रोध बड़ो चण्डाल, भुलादे सुध बुध तन मनकी ॥टेक॥
सुध बुध यो तनकी बिसरादे, झट सेती यो जहर पिलादे।
ज्यादा क्रोधके बस होनेसे, मनमें होज्या लड़नकी ॥१॥
ज्यादा क्रोधके बस हो जावे, गंगाजी में डूब्यो चावे।
दड़ा छंट हो भागे, लोग जद लावे, बांथमें घालके ॥२॥
जभी क्रोध उछाला मारे, ऊपर सेती पड़नो चावे।
हड्डियां का चूरण हो जावे, जब आवे घरका याद रे ॥३॥
जभी क्रोध हृदयमें आवे, कुंवेमें तब पड़नो चावे।
बुद्धि जभी सब मारी जावे, मरनेसे डरनेका नहिं काम रे ॥४॥

९९०—धमाल

तेरी साँची रे ऐन, मेरा प्रभु मालिक ।।टेक।।
सतियां का तूं सत आय राखे, कुपतियां की पत खोय देवे रे ।।१।।
निरलोभी की है ऊँची करनी, लोभीने जहान सेती खोय देवेरे ।
सांचे का तूं सोरी वन जावे, झूठेका मून्डा तूं तो तोड़ गेरे रे ।।२।।
विश्वासघात की है खोटी करनो, उने दंड ईश्वर जवरो देवे रे ।
जुवाचोरी तूं मत कर वंदा, यातो प्रभूके जचे कोनी रे ।।३।।
पुरुपके धरम एक मात पिताको, स्त्रीके धर्म एक पतिव्रतको रे ।
जती मरदका मान वधावे, विभिचारीको मान घट जावे रे ।।४।।
नमकहरामकी है खोटी करणी, प्रभु नमक हलालने भोत चावेरे ।
घूंस चीज तो खोटी रे कहिये, इजतके वट्टा लग जावे रे ।।५।।
चोरी अन्याई तूं मत कर वंदा, तेरो माजनो विगड़ जावे रे ।
तेरो दास तेरो गुण गावे, तेरी साँची ऐन मेरे मन भावे रे ।।६।।

९९१—भजन

लक्ष्मणकी प्रभु विपत हरोरी ।।टेक।।
प्रह्लाद भक्तमें भीड़ पड़ी प्रभु, नरसिंहरूप आय आप धर्योरी ।।१।।
देवतावाँका काज सुधारण, दशरथके आप जन्म लियोरी ।।२।।
पृथ्वी पर प्रभु पाप वध्यो फिर, रूप कृष्ण को आप धर्योरी ।।३।।
जब जब भीड़ पड़े भगतां में, आप आय सहाय करोरी ।।४।।
मैं हूं नाथ चरणको चाकर, मेरी वेर क्यूं देर करोरी ।।५।।
दीनबन्धु प्रभु आप कुहावो, दीनानाथ प्रभु आप बनोरी ।।६।।
सीताराम सुमर कर वन्दा, भवसागरको पार लंघोरी ।।७।।

९९२—भजन

साँवरियो प्यारो भावको भूखो, वो तो लूखो गिने न सूखो ॥टेक॥
नरसीजीके भर्यो माहरो, सगले सहरसे तीखो।
सैन भक्तका कारज सार्या, रूप धर्यो नाईको॥
नामदेवकी छान छवाई, ऊँचो गिन्यो न नीचो।
भक्तांके आय गाड़ी सँवारी, धर्यो रूप खातीको॥ १ ॥
जहर पियालो राणो भेज्यो, मीरां पियो ले नाव हरीको।
तुलसीदासके पहरो लगावे, साहस पड़े न चोरको॥
राजा बलिने जाय छल्यो है, उधार कर्यो पृथ्वीको।
द्रुपद सुताकी लज्जा राखी, चीर वधायो आय नीको॥ २ ॥
सत्पुरुषांकी सहाय करत है, दुष्टां को मुंडो नीचो।
नारदको तो गरव निवार्यो, धार रूप मोहनीको॥
पाँचों पांडव भक्त तुम्हारा, भारतमें सारथि अर्जुनको।
भक्तां को तेरो पार न पायो, है मात पिता सबहीको॥ ३ ॥
मोरध्वज को सतको दिखला कर, गर्व हर्यो अरजुनको।
हरिचन्दको सत देखण ने धर्यो रूप वरहाको॥
ध्रुवजी बनमें ध्यान लगायो, दरश दियो तूँ नीको।
अम्बरीष तो भक्त तिहारो, पहरो देवे डोडीको॥ ४ ॥
भक्तन में जब भीड़ पड़े हैं, टेर सुण आवे आधीको।
भींव राजा की प्रतिज्ञा राखी, आय कुनणापुर ढूक्यो॥
शिशुपाले ने मार हटायो, हाथ गह्यो रुकमणिको।
तेरो प्रण तूँ छोड़्यो पलकमें, प्रण राख्यो भीसमको॥ ५ ॥

अजामेलसे पापी तारे, उधार कन्यो गिद्ध ही को।
सुवा पढ़ावत गणिका तारी, लियो वा नाम हरीको ॥
विना वीज निपजायो खेत धन्नेको मान राख्यो तीखो।
भारतमें भँवरीका अण्डा, घन्टा तल आप ढक्यो ॥ ६ ॥
प्रभुजी तो सेजमें पौढ़त, ध्यान लगायो गजराज हरीको।
जात पाँत तेरे कुछ नाहीं, तूँ तो दास होवे भक्तीको ॥
सतियांका सत आय राखे, कुपतियांको मुंडो फीको।
तोड़यो धनुप आय पलक में, प्रभु कष्ट हन्यो सीताको ॥ ७ ॥
वामन रूप धर छल्यो वलीने कारज कियो देवनको।
दुष्टांको तूँ मान घटावे, मान वधावे सन्तनको ॥
भीलनीके वेर सुदामाके तंडुल, मुठी भर खायो जैंको।
प्रहलाद भक्तकी टेर जो सुण कर, रूप धन्यो नरसिंहको ॥८॥
सजन कसाई भक्त तिहारो, मान राख्यो तारग भीखे[१] को।
कर्मा वाईने तूँ करी ऊजली, खीचड़ खायो तूँ उंको ॥

---

(१) भीखजन एक महाब्राह्मणथे। ये फ़तहपुर, सीकर (राजपुताना) के रहने वाले थे। ये लक्ष्मीनाथजी के पूर्ण भक्त थे। महाब्राह्मण होनेके कारण पुजारियोंने इनको दर्शन नहीं करने दिया। इस पर वे वावन दिन तक वहीं विना अन्न जलके वैठे रहे। अन्तमें लक्ष्मीनाथजी की मूर्तिका मुंह फिर गया। वह मूर्ति अपने आप झरोखेसे वाहर दिखाई देने लगी। पुजारियोंको भी इस घटनासे आश्चर्य हुआ। फिर पुजारियोंने उनको दर्शन की आज्ञा दे दी। इनके वनाये हुए ५२ कवित्त जोकि उन्होंने वहीं ५२ दिनोंमें वनाये थे, हमारे पास हैं।

रावणने तूं मार्‌यो पलकमें, राज्य दिया विभीषणको ।
कंसेने तूं मार पलकमें, भार हर्‌यो पृथ्वीको ॥ ६ ॥
कूबरी की तूं कूब मेट दई, केसर चंदन लगाय तूं रीझो ।
सुग्रीव तेरो दास कहीजे, उँनें राज दियो किष्किन्धाको ॥
सूरदास तेरो भक्त कहावे, चन्द्रसखी ध्यान धरे नीको ।
मुनियाँके ध्यानमें न आवे, गोपियाँ को मखन खावे मटकीको ॥१०॥
वृन्दाबनमें दान चुकावे, तूं तो रस्तो रोके बृजनार्‌याँ को ।
देवता दानांमें राड़ मची है, मोहनी बन अमृत प्यायो ठीको ॥
कुंज गलिनमें रास रचावे, श्याम कहावे राधे जी को ।
विश्वामित्रके संग जायकर, उधार कर्‌यो अहिल्या को ॥११॥
राम नाम तूं भजले बंदा, तेरो फंद कटेगो जी को ।
ऊँच नीच ऊँके कछु नाहीं, वो है ऊँने सुमरे जैं को ॥
चोखी करणी कर तूं बंदा, तेरो जन्म जाय नित वीतो ।
साँची वात मालक ने भावे, झूठेके लगावे प्रभु जूतो ॥ १२ ॥
चोरी अन्याई तूं मत कर वन्दा, मनमें राख डर ईश्वरको ।
उँने भज्यां से पार उतरेगो, नहीं लागे कलंक को टीको ॥
दुर्योधनका मेवा त्यागया, प्रभु, साग खायो विदुरको ।
लछमणदास तेरो गुण गावे, संकट मेट मेरे जीको ॥ १३ ॥

९९३—भजन

श्रीरामचन्द्र महाराज, आपके चरण कमल पर बलिहारी ॥ टेक ॥
बाँवे अंग जानकी विराजे, दायें लिछमण धनुधारी ।
भरत शत्रुघन चँवर डुलावे, खड़्यो हनुमान आज्ञाकारी ॥ १ ॥

माय कौशल्या करत आरतो, छवि देखे सुर नर मुनि नारी ।
राज तिलक दियो आय वशिष्ठ मुनि, हर्ष करे नगरी सारी ॥२॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण तारया, गजकी टेर सुनी भारी ।
लिछमणकी इब सुणो नाथ जी, आप करो रखवारी ॥ ३ ॥

९९४—भजन

मैं तो जाऊँ रे साँवरिया तुम पर वारनारे ॥ टेक ॥
अजामेलसे पापी तारे, मीरांको संकट मिटावना रे ॥ १ ॥
सदन कसाईने तूं तारयो, वह्नाने दरश द्यावना रे ।
पाँचू पाण्डव भक्त तुम्हारा, द्रौपदिको चीर बधावना रे ॥ २ ॥
भाव भक्तिको भूखो साँवरियो कर्माको खीचड़ खावना रे ।
गजकी टेर सुण प्यादो हि धायो, अहिल्याकी कूण मिटावना रे ॥३॥
नरसी जी की हुंडि सिकारी, गणिकाने सुरग पहुंचावना रे ।
लिछमणदास तेरो गुण गावे, मेरी भी बिपत निवारना रे ॥ ४ ॥

९९५—भजन

मैं तेरो हूं दास कन्हाई ॥ टेक ॥
मेरे तो प्रभु तेरो आसरो, दूसरेने कुछ समझूं नाहीं ।
तूं ही मेरो सेठ सांवलिया, तूं ही मेरा बेड़ा पार लंघाइ ॥ १ ॥
तूं ही प्रभु सहाय करत है, मने हैं भरोसो तेरो सदांई ।
कुटुम्ब कबीला सुखका साथी, भीड़ पड़यां नेड़े नहिं जाई ॥ २॥
तूं ही मालिक सब जीवा जूणको, तेरी जोत सब मांही ।
लक्ष्मणदास पर दया धार कर, करो सदा प्रभु आय सहाई ॥३॥

९९६—भजन

दीनबंधु दीनानाथ आसरो तिहारो ॥ टेक ॥
मेरे तो प्रभु तेरो आसरो, तूं है भक्तांको रखवारो।
नामे भक्तकी छान छवाई, रूप धर्‍यो खटियारो ॥ १ ॥
नरसीजीके भर्‍यो माहेरो, गँठड़ी बाँध सिधारो।
मेरी तो सुण कर प्रभु विनती, दर्शण देवो थारो ॥ २ ॥
हरिचन्दको तूं सत देखणने, रूप वराह को धारो।
मोरध्वजको सत देखके, रूप चतुर्भुज प्रकट्यो न्यारो ॥ ३ ॥
मेरे तो प्रभु शरणो आपको, मारो चाहे तारो।
लक्ष्मणके प्रभु मालिक तूंही, दूजो नाहिं सहारो ॥ ४ ॥

९९७—भजन

दीनबन्धु दयासिंधु, मोये अब पार उतारो ॥ टेक ॥
मंझधारां बीच नाव पड़ी है, आय प्रभु देवो सहारो ॥
प्रह्लाद भक्त की टेरज सुणकर, नरसिंह रूप पधारो ॥ १ ॥
पांडवांको तूं दूतज बण कर, कौरव सभामें सिधारो।
सैन भगतका सांसा मेट्या, नाई बण कर कारज सारो ॥२॥
भारतमें तूं बण कर सारथी, अर्जुनने खूब उधारो।
तेरे घर प्रभु ऊँच नीच नहीं, जोई भजे उँने तारो ॥ ३ ॥
लक्ष्मणने थे दास जाण कर, दया हिरदयमें धारो।
मेरे तो प्रभु संगी नाहीं, शरणो लियो है थारो ॥ ४ ॥

९९८—भजन

मेरी आय लाज थे राखो, श्याम, मेरा तेरे पर डेरा ॥ टेक ॥
मेरे तो प्रभु तूं रखवारो, और सहारा नहिं मेरा ।
गरुड़ चढ़ भगवान पधारो, मेरे आवो जी नेरा ॥ १ ॥
दुनिया है मतलबकी साथी, काम सरयां नाके हो जाती ।
किसका करूं इतबार, आप बिना कोई नहीं मेरा ॥ २ ॥
नरसीजीके भात भराये, विश्वामित्रके संग सिधाये ।
इब महर करो महाराज, आय दरशण देना तेरा ॥ ३ ॥
लिछमणदास तेरो गुण गावे, तेरे चरणांमें चित्त लगावे ।
तने भजे सो पार जावे, सब मिट जावे, बखेड़ा ॥४ ॥

९९९—भजन

प्रभु जी, मेरी लज्जा थारे हाथ ॥ टेक ॥
मेरी लाज प्रभु थारे हाथ है, अमें झूठी न बात ॥ १ ॥
आगे लाज तूं भोत जो राखी, इब तूं क्यूं सकुचात ॥२॥
जब जब भीड़ पड़ी भगतांमें, खबर लेई उण स्यांत ॥ ३ ॥
लिछमणदास तेरो गुण गावे, इब मेरी लज्जा बचात ॥ ४ ॥

१०००—भजन

प्रभु मेरी जल्दी सुध लीज्यो ॥ टेक ॥
मैं चाकर हूं श्याम आपको, वेग दरश दीज्यो ॥ १ ॥
मेरे तो प्रभु शरणो आपको, दया हिये कीज्यो ।
मेरी करनी कानि न देख, आपको भक्त जान रीझो ॥२॥

पारस रूप हो आप प्रभूजी, लोहा सोना कीज्यो ।
भक्तिके आधीन सांवरा, जात पांत ना बूझो ॥ ३ ॥
मंझ समुद्रां नाव बहत है, सहारो आप दीज्यो ।
लिछमणदास तेरो गुण गावे यो पड़यो जस लीज्यो ॥ ४ ॥

१००१—भजन

तेरी ऐन है सांची, नाथ मेरे हिरदयमें राची ॥ टेक ॥
जब जब भीड़ पड़े भक्तनमें, तब तूं पूंचे एक पलकमें ।
दीनके वन्धु दीना नाथ, तेरी शरण आयो तूं राखी ॥ १ ॥
दुष्टांको तूं दण्ड दिवावे, संताकी तूं सहाय करावे ।
जैसी करणी करे नाथ तूं तैसी ही भुगतावे ॥ २ ॥
ईमानदारांका बेड़ा पार लगावे, दुष्टांका बेड़ा डुबावे ।
तेरी कथा बाँच नाथ, मेरे हिरदयमें जच जाती ॥ ३ ॥
लिछमणदास तेरो गुण गावे, तेरे चरणनमें चित्त लगावे ।
तेरा गुणावाद गानेसे, मनमें भक्ति उपजाती ॥ ४ ॥

१००२—भजन

प्रभु मेरी अर्जी सुण लीजो ॥ टेक ॥
बालकपनमें ध्रुवजी ध्यायो, रामको नाम सूझ्यो ।
अटल राज तो ध्रुवने दीन्यो, वैसी दया कीज्यो ॥ १ ॥
प्रह्लाद भक्तके कारण, रूप नरसिंह आय जूझ्यो ।
हिरणाकुशको मार प्रभु तूं वहां को वहां पूज्यो ॥ २ ॥
द्रुपद सुताकी लज्जा राखी, दुःशासन चोर खींच्यो ।
अनन्त चीर कर प्रभु तूं उसीके माँय जाय घुस्यो ॥ ३ ॥

लिछमणदास तेरो गुण गावे, मेरी लज्जा रख दीज्यो।
दीनबन्धु दयासिंधु, भक्ति दान मोय दीज्यो ॥ ४ ॥

१००३—भजन

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष प्रभु, पार तेरा नहिं पाया है।
जब जब भीड़ पड़ी भक्तांमें तब तब तूँ प्रभु आया है ॥ १ ॥
सत्युगमें नरसिंह रूप धर हिरणाकुशको मार दिया।
प्रह्लाद भक्तकी सुन कर विनती, उसने तो प्रभु तार दिया ॥ २ ॥
त्रेतायुगमें राम रूप धर, रावणका संहार किया।
विभीषण तो शरणागत आयो, लंका का तो राज दिया ॥ ३ ॥
द्वापर पर प्रभु कृष्ण रूप धर, गोकुलमें तूं जन्म लिया।
कंसका पकड़कर केस, अपने हाथसे ध्वंस किया ॥ ४ ॥
तेरे घर कुछ कमी नहीं है, तूं है तीन लोकको सेठ।
जो कोई तेरो ध्यान लगावे, तूँ प्रभु करले भेंट ॥ ५ ॥
लिछमणदास तो भक्त तिहारो, वार वार तेरो नाम उचारो।
हे प्रभु तनिक दया उर धारो, मेरे तो है और न सहारो ॥ ६ ॥

१००४—भजन

थे तो आवो भक्तांकी सुण टेर ॥ टेक ॥
जब जब भीड़ पड़े भक्तांमें पूंचो सांझ सवेर ॥ १ ॥
गजकी टेर सुण पूंच्या पलकमें, रतीये न लाई देर।
रैदास रैगरसे तारे, जात पांतको नहिं फेर ॥ २ ॥
कुन्दणपुर थे आया जी सांवरा तनिक न कीनी देर।
लिछमणदास तेरो गुण गावे, प्रभु मतना करो अवेर ॥ ३॥

१००५—भजन

अरे म्हारा मनुवां नाहिं विचारी रे ॥ टेक ॥
गर्भवासमें वास भया जद लागी ष्यारी रे।
बाहर काढ़ो नाथ, भगती करस्यूं थारी रे ॥१॥
चौरासी लाख जूनी, दुनिमें भुगती सारी रे।
कृपा भई ईश्वर की जूण मनुजकी धारी रे ॥२॥
धरमकी बुद्धि तूं दई, अधरम से टाली रे।
साँचेका तूँ साथी नाथ, झूठेका नाहीं रे ॥३॥
शीश दियो दण्डोत करणने, मुख दियो कीर्तन गाई रे।
कान दिया हरि कथा सुणनने, हृदयमें जचाई रे ॥४॥
हाथ दिया सेवा करण को, पांव दिया तीरथ जाई रे।
पाप तेरा सब धुपजा मनुवा, गंगा न्हाई रे ॥५॥
कबीला कुटुम्ब मतलबका गरजी, तेरा नाहीं रे।
लिछमणदास तेरो गुण गावे, दासकी करिये सुनाई रे ॥६॥

लक्ष्मीनारायणजी सिंहानिया

१००६—राग कनड़ी

हो कानाँ किन गूंथी जुलफां कारियां ॥टेक॥
सुघर कला प्रवीन हाथन सूं, जसुमति जू ने सँवारियाँ ॥ १ ॥
जो तुम आवो मेरी बाखरियाँ, जरि राखूं चन्दन किंवारियाँ ॥ २ ॥
मीराँके प्रभु गिरिधर नागर, इन जुलफन पर वारियाँ ॥ ३ ॥

१००७—राग परज

गोकुलके वासी भले ही आये, गोकुलके वासी ॥टेक॥
गोकुलकी नारि देखत, आनन्द सुखरासी।
एक गावत एक नाचत, एक करत हाँसी ॥ १ ॥
पीताम्बरके फेंटा बांधे, अरगजा सुवासी।
गिरिधरसे सु नवल ठाकुर, मीरां सी दासी ॥ २ ॥

१००८—राग परज

गोहनें गुपाल फिरूं, ऐसी आवत मनमें।
अवलोकत वारिज वदन, विवस भई तनमें ॥ १ ॥
मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत वसन धारूं।
आछी गोप भेष मुकट, गोधन संग चारूँ ॥ २ ॥
हम भई गुल काम लता, वृन्दावन रैनां।
पसु पंछी मरकट मुनी श्रवन सुनत वैनां ॥ ३ ॥
गुरुजन कठिन कानि, कासों री कहिये।
मीरां प्रभु गिरिधर मिलि ऐसें ही रहिये ॥ ४ ॥

१००९—राग मारू

कोई स्याम मनोहर ल्योरी, सिर धरै मटकिया डोले ॥टेक॥
दधिको नाँव विसर गई ग्वालन, हरि ल्यो हरि ल्यो बोले ॥ १ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, चेली भई विन मोले ॥ २ ॥
कृष्ण रूप छकी है ग्वालनि, औरहि औरे बोले॥ ३ ॥

—

१०१०—राग कनड़ी

बन्दे बन्दगी मत भूल ॥टेक॥
चार दिनां की कर ले खूबी, ज्यूं दाड़िमदा फूल ॥ १ ॥
आया था ए लोभके कारण, मूल गमाया भूल ॥ २ ॥
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर, रहना वे हजूर ॥ ३ ॥

१०११—राग सोरठ

थाने काईं काईं कह समझाऊँ, म्हारा वाल्हा गिरधारी ॥टेक॥
पूर्व जनमकी प्रीति हमारी, अब नहीं जात निवारी ॥ १ ॥
सुन्दर बदन जोवते सजनी, प्रीति भई छे भारी।
म्हारे घरे पधारो गिरिधर, मंगल गावै नारी ॥ २ ॥
मोती चौक पूराऊं वाल्हा, तन मन तोपर वारी।
म्हारो सगपण तोसूं साँवलिया, जग सु नहीं विचारी ॥ ३ ॥
मीरां कहे गोपिनको वाल्हो, हम सूं भयो ब्रह्मचारी।
चरण सरण है दासी तुम्हारी, पलक न कीजै न्यारी ॥ ४ ॥

१०१२—राग काफी

आज अनारी लेगयो सारी, बैठी कदम की डारी हे माय ॥
म्हारे गैल परयो गिरधारी, हे माय आज अनारी लेगयो सारी ॥टेक॥
मैं जल जमुना भरन गई थी, आगयो कृष्ण मुरारी हे माय ॥१॥
लेगयो सारी अनारी म्हारी, जलमें ऊबी उघारी हे माय ॥२॥
सखी साइनि मोरी हँसत है, हँसि हँसि दे मोहिं तारी हे माय ॥३॥
सास बुरी अरु नणद हठीली, लरि लरि दे मोहिं गारी हे माय ॥४॥

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमलकी वारी हे माय ॥५॥

मीरां बाई

१०१३—भजन

गोविन्द लाल तुम हमारे, मोहे दुःखसे उबारे ।
मैं शरण हूं तिहारे, तुम काल कष्ट टारे ॥ १ ॥
हो बाघेली के प्यारे, सिर क्रीट मुकुट वारे ।
छोनी छटाको पसारे, मोरी सुरत ना बिसारे ॥ २ ॥
कोटिन पतित उधारे, कृपा दृष्टिसे निहारे ।
हौं भरोसे हों तिहारे, मेरी बातको सुधारे ॥ ३ ॥

बाघेली श्री रणछोड़ कुंवरि

१०१४—भजन

मेरे मन बस गयो कृष्ण कन्हायो ॥ टेक ॥
मथुरा जन्म गोकुलमें आयो, नंद यशोदा ने चरित दिखायो ।
गोपी ग्वाल सबके मन भायो, माखन चोर चोरके खायो ॥
माखनचोर नाम कहायो ॥ १ ॥
रास करणकी मनमें धारी, बंशी मांही टेर उचारी ।
घर तज दौड़ी सब बृजनारी, नाचे गावे संग मुरारी ॥
बृन्दावनमें रास रचायो ॥ २ ॥
कंसको बिगाड्यो साज, उग्रसेनने दियो राज ।
मात पिताको काट्यो फन्द, नाश कियो सब कौरवचन्द ॥
पृथ्वीका भार घटायो ॥ ३ ॥

तुममें है प्रभु याही बान, भगत तारते अनाथ जान।
गजू दासने द्यो बरदान, कदे न छुटै थारो ध्यान॥
अधम उधारण श्रुति गायो॥ ४॥
गजानन्द जालान

१०१५—राग सोरठ

चलो तो बताऊं बिहारी जी, म्हारे महलों फूली छै केसर क्यारी॥
अति सुन्दर बहुत अमोलक, रंग-रंगीली छै बारी॥ १॥
यों मत जानो, झूठ कहत है, म्हाने सौंह तिहारी॥ २॥
ब्रजनिधि तुम सों लगन लगी है, प्रीति पुरातन यारी॥ ३॥

१०१६—प्रभाती

तो थां पै वारी वारी हो बिहारीजी,
मृदु मुसकान पर जावां बलिहारी जी॥टेक॥
लोक लाज तज थारे लैर लागी,
थे कांई उर धारी गिरिधारी जी॥१॥
और तरां जिन जानो हो बिहारी जी,
लाखां भांति करो म्हांसे प्यारी जी॥ २॥
ब्रजनिधि अरजी सुणोजी हमारी,
अनमोली अनतोली करो म्हांसे यारी जी॥३॥

१०१७—राग पीलू

आली री तूं क्यों रही मुरझाय॥ टेक॥
पनिघट गई यमुना जल भरणे, आई है रोग लगाय॥ १॥

केशो कारो चन्द्र उजारो, गयो है टोना डार ॥ २ ॥
करो उपाय सखि इव सेरो, ब्रजनिधि वैद मँगाय ॥ ३ ॥

१०१८—राग भैरवी

लाग गई तब लाज कहारी ॥टेक॥
जे दृग लागे नंदनन्दनसों, औरनसों फिर काज कहारी ॥१॥
भर भर पियें प्रेमरस प्याले, ओधे अमलको स्वाद कहारी ॥२॥
ब्रजनिधि ब्रजरस चाख्यो चाहै, या सुख आगे राज कहारी ॥३॥

महाराजा प्रतापसिंह (ब्रजनिधि)

१०१९—राग सोरठ

राज म्हारो मुजरो मानो म्हाराज ॥टेक॥
दश मस्तक रावणका छेद्या, सिया ये सती के काज ॥ १ ॥
मथुरा मांही कंस पछाड़्यो, उग्रसेन दियो राज ॥ २ ॥
जैपर थारो सुवस वसियो, ऊमागढ़को राज ॥ ३ ॥
भणत प्रताप सुणो वृजनन्दजी, कर पकड़्यांकी राखो लाज ॥४॥

महाराजा प्रतापसिंह

१०२०—भजन पारवा

आखिरमें है चारा कालका, कुण नातेदार तिहारा ॥टेक॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़े, धापै नहीं लाख किरोड़ें।
आपसमें पीछे सिर फोड़े, है सभी झमेला मालका—
क्यों भूला फिरे गँवारा ॥ १ ॥

तूं जाने मैं नहीं मरूंगा, धन यौवनका भोग करूंगा।
मन चाही नित रोज करूंगा, लगेगा डंडा कालका—
देखत है लोग हजारा ॥ २ ॥
आगे किया यहां पर पावे, फेर हरिका गुण क्यों ना गावे।
स्वांस अमोलक वृथा गमावे, लौटे न स्वांसा आनके—
कर भजन वन्दगी प्यारा ॥३॥
बहुत कमाई नर दौड़ दौड़के, लाखों रुपया लिया जोड़के।
मर जायगा सिर फोड़ फोड़के, दे धरनी माँहि दवाके—
फिर कछु नहीं चले सहारा ॥४॥
जिस मुख चाबे पान और बीड़ी, उस मुख निकले खड़खड़ कीड़ी।
घरकी तिरिया आवे न नीड़ी, बैठे घूंघट सारके—
पल भरमें कर दे न्यारा ॥ ५ ॥
तेल फुलेल रमावे अङ्गा, इक दिन जले काठके सङ्गा।
थोड़े से फूसमें गेर पतङ्गा, फूंक देय समसानमें—
चोकड़दा फिर जा सारा ॥६॥
सुखीराम हरिका गुण गावे, हरि चरणांमें ध्यान लगावे॥
ऐसा है कोई हरिगुण गावे, करे न भरोसा आनका—
भवसागर हो जा पारा ॥७॥

१०२१—भजन पारवा

सुमिरण कर गुरु गणेशका, रट विघन हरण सुखदाता ॥टेक॥
मंगल मूरति सदा सुखकारी, वाघम्बरकी है असवारी।

पहली पूजा करूं तिहारी, तुम हो मांडण देस का—

विनायक तुझे मनाता ॥१॥

एक दन्त दूजी सूंड विराजे, तेरे नामसे पातक भाजे।
मस्तक तिलक सिंदूर विराजे, गले जनेऊ शेष का—

कोइ पारवती थारी माता ॥२॥

गणपति तुम हो सुखके देवा, नित उठ करूं तुम्हारी सेवा।
पान सुपारी चढ़ते देवा, काम पड़े परदेस में—

मैं जहाँ सुमिरूं तहाँ पाता ॥३॥

राम नामकी रट ले माला, जमका दूत ले जायगा ठाला।
कह सुखीराम सियानेवाला, चाकर रोज हमेस का—

शिवलाल तेरा गुण गाता ॥४॥

१०२२—भजन पारवा

वन वनमें धेनु चराई, भया कदका न्याव करणिया ॥टेक॥

कदका न्याव करणिया काना, मोर मुकुट पीतांवर वाना।
वन वनमें तूं धेनु चराना, गूजरी वहुत सताइ—

सखियनमें सांग भरणिया ॥१॥

कदका न्याव करणिया सांगी, नाच्या पहर लूगड़ा आंगी।
घर घरकी तूं तुलसी मांगी, तेरी माता ने वीत उगाई—

लेपो सांगा मेतणिया ॥२॥

न्याव करणिया यूं क्यूं हांडे, जाय खेत रण खंब ज्यूं मांडे।
लेके तेग दुधारा खांडे, पड़े खेत रण खेत में—

कोइ लेगा भूमि मरणिया ॥३॥

पांडु सुतने कने बैठाले, अपनी भुजा का जोर जमा ले।
युद्ध करणका सामान मंगाले, मैं देखूंगा पाँचू भाई—
तेरा बड़ा बली अरजनिया ॥४॥
नहिं मिलती भूमी मांगेसे, कोइ लेल्यो बलके हांगेसे।
कह सुखीराम गग सांगेसे, तेरा नामई जादूराई—
तूं है पर दुख भंजणिया ॥५॥

१०२३—भजन पारवा

पड़ गया स्वाद दधि खानेका, ब्रजवासी कूण छुटावे ॥टेक॥
आधा दधि देणा कर आया, यहाँ आके सारा गटकाया।
पहले मुझसे बचन भराया, यही काम तेरा भूलका—
पर घर पर लूट मचावे ॥१॥
परे खड़्या ठोसा दिखलावे, मुख मोड़े और नाक चढ़ावे।
भाग जाय और हाथ न आवे, ये फल माल बिराने का—
तुझे शरम जरा नहिं आवे ॥२॥
ग्वालिनने लिया पकड़ कन्हैया, कहाँ तेरा बावल कहाँ तेरी मैया।
मुख चूमे और मारे धैया, मुख तोड़ गेरूं मरजाणे का—
सखि पकड़ कान धमकावे ॥३॥
पकड़ा कान कहे बस बस री, टूट जाय मेरी काची नस री।
हो गये श्याम पराये वश री, विप्र कहे निज स्याणे का—
सुखीराम ऋषि गुण गावे ॥४॥

———

१०२४—भजन पारवा

क्यां पर करे मरोड़रे, नर थोड़ी सी जिंदगानी ॥टेक॥
अब धन देखी तुम्हरी माया, सो नर डोले खाक रमाया।
मरती वक्त धेला नहिं पाया, तज दिया लाख करोड़ रे ॥नर० ॥१॥
क्या डोले नर चंगा चंगा, धरे चिता पर करके नंगा।
जरा फूसमें गेरे पतंगा, फिर जाय चारुं ओर रे ॥ नर० ॥२॥
भाई बंधु फिरे घात में, कोई न जावे तेरे साथ में।
सूखा लकड़ा लेवे हाथमें, सिर कूं डारे फोड़ रे ॥ नर० ॥३॥
ये रंग रूप सदा नर जानी, जैसे ढल जाय काँचका पानी।
जुगमें या थोड़ी जिंदगानी, जायगा नाता तोड़ रे ॥ नर० ॥४॥
राम नाम सियाराम मनाया, नारायणका ध्यान लगाया।
सुखीराम गुरु पूरा पाया, भजन वणाया जोड़ रे ॥ नर० ॥५॥

१०२५—भजन पारवा

इस माटीके अस्थूलका, भगवत विन कूण संघाती ॥टेक॥
एक दिन अमर लोकसे आया, ना कछु खरच खजाना ल्याया।
यहाँ आके किला कोट वनाया, देख तमाशा भूल का—
दो दिनका छैल वराती ॥१॥
पच पचके दिन रैन कमाया, पुण्य हेत धेला न लगाया।
फिर जमका परवाना आया, व्याज अरु लेखा मूल का—
भई फिरती ठोकर खाती ॥२॥
मात पिता मंत्री सुत नारी, कुल मतलबकी खातिरदारी।
एक दिन हो जाय कूच सवारी, करे बिछौना झूल का—

भाई सोच करै दोय राती ॥३॥
गुरु ब्रह्मचारी कहे कानमें, सुखीराम कहे मगन ध्यानमें।
एक दिन चलना गंगा घाटमें, आखिर भांडा धूल का—
उड़ खाक कहाँ तेरी जाती ॥४॥

१०२६—भजन पारवा

क्यूं डूब्यो फिरे अभिमानमें, रट राम नामकी माला ॥टेक॥
एक दिन तुझको जाना होगा, यह सब देश विराना होगा।
फिर नहीं तुझकूं आना होगा, मरदोंके चौगान में—
बन रहा मरदका साला ॥१॥
देखा देख जगतका नाता, सहज सहज दिन बीत्या जाता।
मन मूरख डोले गरबाता, सुरती न हरिके ध्यान में—
ठुक रहा बजरका ताला ॥२॥
छिन छिन बजते कूंच नगारा, पूछेगा कोई पूछनहारा।
मात पिता मन्त्री सुत दारा, कोई न आवे काम में—
कोई नहीं है रोकनवाला ॥३॥
ये रंग रूप समझ दो दिनका, मत ना राखे मनमें धोका।
कह सुखीराम देखकर मोका, बैठो हरिके ध्यानमें—
सुधि लेंगे दीन दयाला ॥४॥

१०२७—भजन पारवा

आखर है चारा कालका, कुण नातेदार तिहारा ॥टेक॥
खूब कमाया दौड़ दौड़के, लाख किया नर कोड़ कोड़के।

चला जाय सिर फोड़ फोड़के, नहिं चले जोर धन मालका—
बैठेंगे और रखवाला ॥ १ ॥

तेल फुलेल रमाते अंगा, एक दिन धरे चिता पर नंगा ।
जरा फूसमें गेर पतंगा, कर दे खाक जलायके—
कर देंगे सूण्डा कारा ॥ २ ॥

जा मुख चावे पानर वीड़ी, वा मुख निकसे वड़ वड़ कीड़ी ।
घरकी नार न आवे भीड़ी, बैठी सुरमो सारके—
पल भरमें कर दे न्यारा ॥ ३ ॥

यह संसार समझ दो दिनका, भजो हरि नाम पार होय नौका ।
कहे सुखीराम भजनकूं मौका, सुमरण कर करतारका—
नर नाम जपो एक सारा ॥ ४ ॥

सुखीराम शर्मा

१०२८—राग सोरठ

वणा दिन वीत्या वो विहारीजी राज, ओल्यूं थारी आवे ॥टेक॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा यो दिन किया मुकलावे ॥१॥
आड़ी ऊबी कछु ना सुहावे, नैना में नींद न आवे ॥२॥
चिमक चिमक मेरो जीव उठत है, छतियाँ भर भर आवे ॥३॥
कह बख्तावरि मीराँ वड़भागण, हरि चरणां चित्त लावे ॥४॥

१०२९—राग सोरठ

थोड़ी थोड़ी पावो जी विहारी जी राज, दूणी म्हाने आवे ॥टेक॥
कायेरा घोटा कायेरी कूंडी, कायेरा रगड़ा लगावे ॥१॥

तनका घोटा मनकी कूंडी, प्रेमका रगड़ा लगावे ॥२॥
घोट घाट कर लुगदी बनाई, राधेजी आन चलावे ॥३॥
घोटत घोटत चढ़ी है गुमानण, हिरदो अति सुख पावे ॥४॥
या बूंटी बख्तावर सोहे, रंगमें रंग लगावे ॥५॥

१०३०—राग सोरठ

जमुनाके तीर वो बिहारी जी राज, भोले चल आई ॥टेक॥
छींकत ही मैं घर से निकली, या काँई राड़ मचाई ॥१॥
इस मटकीमें मही लालजी, और कछु नाँय मिठाई ॥२॥
तड़के डाण महीको ल्यासूं आज बिसर मैं आई ॥३॥
कह बख्तावरि सुणो बृजनंदजी, प्रीत की रीड़ निभाई ॥४॥

१०३१—राग सोरठ

मनड़ांरी बातां वो बिहारी जी राज, म्हेतो किणने कहस्यां ॥टेक॥
इन मुखड़ा से अमृत पीयो, जहर किसविध पीस्यां ॥१॥
प्रीत के कारण कुल तज्यो हैं, उतर किस विध देस्यां ॥२॥
आपहिं जाय द्वारका छाये, म्हे गोकुल गढ़ रहस्यां ॥३॥
कह बख्तावरि सुणो बृजनंदजी, प्रीत की रीत निभास्यां ॥४॥

१०३२—राग सोरठ

रंग भीनी रैन वो बिहारी जी राज, छाय तो रही छै ॥टेक॥
रेसम बाण रंगील ढोलनी, लूंमा लाग रही छै ॥१॥
रंगमहल खसखस का पड़दा, लड़ियां लाग रही छै ॥२॥
सोलह सिणगार बतीसूं आभूषण, हरि रिपु छाय रह्यो छै ॥३॥
कह बख्तावरि सुणो बृजनंदजी, आही लटक रही छै ॥४॥

१०३३—राग सोरठ

ऐसी अंधियारी वो विहारी जी राज नींद नहीं आवे ॥टेक॥
झिरमिर झिरमिर मेहा वरसे, विजली चमक डरावे ॥१॥
दादुर मोर पपिया वोले, कोयल शब्द सुणावे ॥ २ ॥
रंग महलमें रहूं अकेली, तुम विन कूण बुलावे ॥३॥
कह वख्तावरि सुणो वृजनंदजी, घर वैठ्या गोविन्द आवे ॥४॥

१०३४—राग सोरठ

विहारी थारो नेहलड़ो सोई दीठो ॥टेक॥
हियारो हेत हाथमें ई दीसे मन क्यूं राजरो चीठो ॥ १ ॥
वृजवास्यांने जोग संदेसो, कांई सो लगायो छै अंगीठो ॥ २ ॥
वख्तावरि पिया खायाँई जाणज्यो गुड़ तो अंधेरामें ई मीठो ॥३॥

१०३५—राग सोरठ

विहारी थारी प्रीत रो अचम्मो, म्हाने आवे छै ॥टेक॥
पहिली प्रीति करी वारा जोरी, अव तो मन पछितावैछे ॥१॥
जाण्याजी जाण्याजी पिछाण्या थारा करतव, किन्हीं सोई सरावेछे ॥२॥
थारा नो म्हारा जस वख्तावर जगत पवाड़ा नित गावे छै ॥३॥

१०३६—राग विहाग

महोवत कारो कामरीवारे सें जोरी ॥टेक॥
लोग कहे कारी कामरीवारो, मेरे भावें लाख करोरी ॥१॥
नित उठ दरसण करत श्यामको नन्दरायजी की पोरी ॥२॥
वख्तावरि या छिव पर वारी, चिरंजीव रहो या जोरी ॥३॥

१०३७—राग खमावच

प्रीतम प्यारीजी ने चंद बतावै छै ॥टेक॥
नंद महरजीके अंगना में, ठाढ्यो सैनामें समझावे छै ॥१॥
करसे कर अंगुली ऊंची कर बदरा ओट लगावे छै ॥२॥
बख्तावर शशि दरसनके हित अधर रसामृत पावे छै ॥३॥

१०३८—राग सोरठ

देखोजी बिहारी जी म्हांसे राज, नेहड़लो निभायो ॥टेक॥
छिन छिन कर कर जोड़ी मोरी आली, तोड़त दरद न लायो ॥१॥
तन मन धन सब अर्पण कीन्यां और बहु भांति रिझायो ॥२॥
कह बख्तावर गोपी सर्वस दे चुकी कपटीने कपट जनायो ॥३॥

१०३९—राग सोरठ

आज तो मेड़तणी मीरांके राज महलां रंग छायो ॥टेक॥
सहस्र किरणसूं सूरज उगियो, मानो सखि गिरिधर आयो ॥१॥
सुर नर ज्यांका ध्यान धरत है, वेद पुराणां गायो ॥२॥
कह बख्तावर मीरां बड़ भागण घर बैठी श्याम मनायो ॥३॥

१०४०—राग सोरठ

थारोजी बृन्दावन राधे राज पुष्पन छायो ॥टेक॥
निर्मल नीर निकट बहै जमुना दिन दिन रंग सवायो ॥१॥
खुल रही लटा लिपट रही रजनी मुनि जन ध्यान लगायो ॥२॥
दोउ कर जोड़्यां कहे बख्तावर हरख निरख गुण गायो ॥३॥

—

१०४१—राग कल्याण

म्हांसूं मुख बोल्यां कांई मान घटेगो ॥टेक॥
लगी प्रीति टूटणकी नाईं, थे तोड़या थाने लोग हंसेगो ॥१॥
ऐसा रंग रसिया थारे मन बसिया, अब कांई थारे पास बसेगो ॥२॥
कह बख्तावर सुण ए राधा, घूंघटमें तेरे चन्दसो दिपेगो ॥३॥

१०४२—राग कल्याण

उड़जा पपैया म्हारो जीव दुख पावे ॥टेक॥
जिनका पिया परदेश बसत है वांको प्यारी कछुना सुहावे ॥१॥
दादुर मोर पपैया बोलै, कोयल वैरण शब्द सुणावे ॥२॥
पिऊ पिऊ वैरी करत पपैया, सूतो सेजांमें मोय आन जगावे ॥३॥
कह बख्तावर सुनो वृजनन्दजी, ऐसा हो कोई श्याम मिलावे ॥४॥

१०४३—राग सोरठ

म्हारे आँगणियामें ऊबाजी बिहारी म्हारा राज,
प्यारा म्हाने लागो चानणीमें ॥टेक॥
थे तो बिहारी म्हाने ऐसा प्यारा लागो, ज्यूँ सोने माँय सुहागो ॥१॥
थे तो बिहारी म्हाने ऐसा प्यारा लागो, ज्यूँ बामण गल तागो ॥२॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, और केसरिया बागो ॥३॥
पहली प्रीत करी मनमोहन, अब म्हाने मत त्यागो ॥४॥
कह बखतावरि मीरां बड़ भागण, भाग पूरबलो जाग्यो ॥५॥

१०४४—राग सोरठ

काल मत जैयो रसिया, होरी म्हारे आज ॥टेक॥
बरस दिनांको आनन्दको दिन, फगवा देवो महाराज ॥ १ ॥

सास नणदसे छिपके आई, होरी खेलनके काज ॥ २ ॥
बख्तावर म्हारी मनकी राखो, मोहन प्रभुकी लाज ॥ ३ ॥

१०४५—भजन

जावाद्यो बिहारीजीने ए राधा तूं ही मत बोल ॥टेक॥
तनको कालो मनको कपटी, मनकी गांठ न खोल ॥ १ ॥
वृन्दावनकी कुञ्ज गलिनमें, घर घर भटकत डोल ॥ २ ॥
हंस हंस बात करे औरनसे हमसे कबहूं न बोल ॥ ३ ॥
कह बख्तावर सुनो ब्रजनंदजी, छतियारा छोलन छोल ॥ ४ ॥

१०४६—राग सोरठ

महल पधारो जी रंग भरी रैन ॥टेक॥
रूड़ो शृङ्गार कियो रानि राधा, सुन्दर ता सुख दैन ॥ १ ॥
अलबेला अलबलिया साजन, अमलासूं क्या थारा सैन ॥२॥
बखतावरि या छिब परि वारी मीठा लागै थांका बैन ॥ ३ ॥

१०४७—राग सोरठ

अब देखो पिया मन गाढ़ो कियो ॥टेक॥
कौल किया अब आवेंगे, गिरिधर करसे वचन दियो ॥ १ ॥
रेसम डोर अरु हींगलु ढोलियो, कजरा रेख कियो ॥ २ ॥
बखतावर अब कह्यां ही जानीजे, सांची कहतां फाटे छै हियो ॥३॥

१०४८—राग सोरठ

गोविंद गाढ़ा छो जी दिलरा मीत ॥टेक॥
जमुना किनारे धेनु चरावै, वे दिन आवै म्हाने चीत ॥१॥

दिनमें चितारूं, सारी रजनी चितारूँ, राखूं हिवड़ारे बीच ॥२॥
वखतावर छिव बनी हरि नावनी अब कहा सोवो छो नचीत ॥३॥

१०४९—राग सोरठ

गजरो वेस वालो म्हाने लागेजी ॥टेक॥
वारूं कोटी मदन या छिव पर लज्जत कोटि दिनेश ॥ १ ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै घूंघर वारे केस ॥ २ ॥
वखतावर या छिव पर वारी, तन मन धन थारी पेस ॥ ३ ॥

१०५०—राग सोरठ

विहारी म्हाने अधर गयाजी छिटकाय ॥टेक॥
हम अलवेली सोइ तुम त्यागी, दासीके रहे छाय ॥१॥
अहोजी भाग वा पिया हित प्यारी वस कियो श्याम बुलाय ॥२॥
वखतावर सो तुमरे भावे, खल गुड़ एकै भाय ॥३॥

१०५१—राग सोरठ

रघुवर शरणागत प्रतिपाल ॥टेक॥
शरणो जाण सुग्रीवहि आयो, भेंट करी तत्काल ॥१॥
शरणो जाण विभीषण आयो, आवत ही कीन्यो निहाल ॥२॥
सोन जतीको यज्ञ सफल कियो, वख्तावर तत्काल ॥३॥

महाराजा वख्तावरसिंह

१०५२—लावणी (चौवीस अवतारांकी)

(रंगत भैरवी)

चौवोस देवकी कथा सुणो वे जो जो जगमें काम किया ।
राकस मार्‍या देव उबार्‍या, भक्तां ने वरदान दिया ॥टेक॥

बराह रूप धर पृथ्वी लाया, हिरण्यांक्षको मार दिया।
भूतलकी रचना फिर रच दी, धरणीका उद्धार किया ॥ १ ॥
यज्ञ रूपमें प्रगट होय हरि, देवांने सनमान दिया।
दानवकुलको मार हटाया, सबी उपद्रव शांत किया ॥ २ ॥
व्यास देवने नारद मुनिसे, सहमत हो यह काम किया।
भागवतादिक रचना करके, द्वार मुक्तिका खोल दिया ॥ ३ ॥
कपिलदेवने जन्म लेयकर, निज माताको ज्ञान दिया।
ब्रह्म ज्ञानकी महिमा ही ने, संसय सगला दूर किया ॥ ४ ॥
दत्तात्रेय अवतार धार, चौबीस गुरांसे मन्त्र लिया।
सब गुरुवांकी शिक्षा ही से, दुनियाको उपदेश दिया ॥ ५ ॥
सनक सनन्दन सनतकुमार, और सनातन रूप लिया।
प्रलय समयके नष्ट ज्ञानको, निज बलसे परचार किया ॥ ६ ॥
नर नारायण रूप भये दो, कामदेवको विजय किया।
चकित भई उरबसी आदि जब, अपना तप विस्तार किया ॥७॥
ध्रुव हुए उत्तानपातके, मौसीने अपमान किया।
बालक ही वनखंडमें जाके, तप बलसे सब जीत लिया ॥ ८ ॥
पृथु अवतार होयके स्वामी, पृथवी से रस खैंच लिया।
दुनियांमें सब रस फैला कर, सब रसका परचार किया ॥ ९ ॥
रिषभदेव परमहंस हुए थे, शांति स्थापन आप किया।
देखो सब समान सभीको, यह उनका उपदेश रिह्या ॥१०॥
हयग्रीव घोड़ाकी गरदन, वेद नाकसे प्रकट किया।
वेद रत्न दुनियाको देकर, वैदिक धर्म चलाय दिया ॥११॥

मच्छ रूप बन जलमें पैठे, संखासुर संहार दिया।
ल्याय वेद ब्रह्माने दीन्या, साखा सत्युग माँय किया ॥१२॥
कछपको कर रूप समुद्रमें, मधुकैटभको मार दिया।
अपनी पीठ पर परवत धर कर, सिंधुको मथवाय लिया ॥१३॥
नृसिंह रूप भयङ्कर होकर, खम्भ माँयसे प्रगट भया।
प्रह्लाद भक्तकी रक्षा कीनी, हिरणाकुशको मार दिया ॥१४॥
हरी रूप वे प्रगट होयके, गजको आप छुड़ाय लिया।
ग्राह मारकर फंद काट दियो, सूंड पकड़ झट वार किया ॥१५॥
वामन रूप धरि गये बलीके, विराट रूपसे हटा दिया।
राजा रानी हार मान ली, तब पातालका राज किया ॥१६॥
हंसा अवतार हंस रूपमें, ब्रह्माजीको ज्ञान दिया।
उनकी माया मोह हटाकर, ज्ञानी उनको बना लिया ॥१७॥
मनवन्तर अवतार भये जब, ब्रह्म लोकमें कीर्ति किया।
दुष्ट जनोंको दंड देय कर, सत्य शील फैलाय दिया ॥१८॥
धन्वन्तरि हो वैद्य बने थे, औषधका परचार किया।
वनस्पतियोंका गुण बतला कर, आयुरवेद चलाय दिया ॥१९॥
परशुराम रूप प्रभु धर कर, सहस्रार्जुन वध किया।
नीछतरी पृथ्वी सब कीनी, विपरांने तब राज दिया ॥२०॥
रामचन्द्र त्रेतामें होकर, राकस रावण मार दिया।
देवनकी रक्षा वे कीनी, मर्यादाको बांध लिया ॥२१॥
श्रीकृष्ण द्वापरमें होकर, वृजमें लीला मोत किया।
अर्जुनके भ्रम दूर किये सब, गीताका उपदेश दिया ॥२२॥

बौद्ध हुए थे अभी हालमें, दैत्यांने बहकाय लिया।
धर्म सनातन हटा हटा कर, अपना मत फैलाय दिया ॥२३॥
कल्की रूप होवे कलयुगमें, यूं सास्त्र सब गाय गया।
संभलमें कन्या कुंवारीके, जन्म लेंय फिर करैं दया ॥२४॥
वैश्य भगवती दारूको मैं, जसरापुरमें बना दिया।
चौबीसांकी लीला सगली, गायेसे हो सुखी जिया ॥२५॥

भगवतीप्रसाद दारूका

१०५३—श्रीगणेशजी की आरती

गणपतिकी सेवा मंगल मेवा, सेवासे सब विघ्न टरैं।
तीन लोक तैंतीस देवता, द्वार खड़े सब अर्ज करैं ॥टेक॥
ऋधि सिधि दक्षिण बाम बिराजै, अरु आनन्दसों चमर करैं।
धूप दीप औ लियाँ आरती, भक्त खड़या जय जयकार करैं ॥ १ ॥
गुड़के मोदक भोग लगत हैं, मूषक वाहन चढ़्या सरैं।
सौम्य रूप सेये गणपतिको, विघ्न भागज्या दूर परैं ॥ २ ॥
भादौ मास और शुक्ल चतुर्थी, दिन दोपाराँ पूर परैं।
लियो जन्म गणपति प्रभुजी सुनि दुर्गा मन आनन्द भरैं ॥ ३ ॥
अद्भुत बाजा वज्या इन्द्रका देव वधू जहं गान करैं।
श्रीशङ्करके आनन्द उपज्यो, नाम सुण्यां सब विघ्न टरैं ॥ ४ ॥
आनि विधाता बैठे आसन इन्द्र अप्सरा निरत करैं।
देख वेद ब्रह्माजी जाको, विघ्न विनाशक नाम धरैं ॥ ५ ॥
एक दन्त गज वदन विनायक, त्रिनयन रूप अनूप धरैं।
पग थम्भासा उदर पुष्ट है देख चन्द्रमा हास्य करैं ॥ ६ ॥

दे शराप श्रीचन्द्रदेवको, कला हीन तत्काल करै।
चौदा लोकमें फिरै गणपती, तीन भुवनमें राज्य करै ॥ ७ ॥
उठ प्रभात जब करे ध्यान कोइ, ताके कारज सर्व सरै।
पूजा काले गावे आरती ताके शिर यश छत्र फिरै ॥ ८ ॥
गणपतिकी पूजा पैलां करणी, काम सबी निर्विघ्न सरै।
श्रीपरताप गणपतीजी की हाथ जोड़ कर स्तुति करै ॥ ९ ॥

१०५४—श्रीलक्ष्मीजीकी आरती

जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता।
तुमकूं निशि दिन सेवत हर विष्णू धाता ॥टेक॥
ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तुहि है जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ १ ॥
दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पति दाता।
जो कोइ तुमकूं ध्यावत ऋधि सिधि धन पाता ॥ २ ॥
तूं ही है पाताल बसन्ती तूं ही है शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशक जग निधिसे त्राता ॥ ३ ॥
जिस घर थारो वासो जाहिमें गुण आता।
करण सकै सोइ कर ले मन नहिं धड़काता ॥ ४ ॥
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता।
खान पानको विभव तुमैं बिन कुण दाता ॥ ५ ॥
शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीर निधी जाता।
रत्न चतुर्दश तोकूं कोइ भी नहिं पाता ॥ ६ ॥

या आरती लक्ष्मीजी को जो कोई नर गाता ।
उर अनंद अति उपजे पाप उतर जाता ॥ ७ ॥
स्थिर चर जगत बचावै कर्म प्रेर ल्याता ।
रामप्रताप मैयाकी शुभ दृष्टी चाता ॥ ८ ॥

१०५५—श्री पार्वतीजीकी आरती

जय पार्वती माता जय पार्वती माता ।
ब्रह्म सनातन देवी शुभ फलकी दाता ॥टेक॥
अलि कुल पद्म निवासी निज सेवक त्राता ।
जग जीवन जगदम्बा हरिहर गुण गाता ॥ १ ॥
सिंहज बाहन साजै लुंकड़ रह साथा ।
देव बधू जहं गावत निरत करत ततथा ॥ २ ॥
सतयुग रूपशील अति सुन्दर नाम सती कहाता ।
हेमाचल घर जन्मी सखियन संग राता ॥ ३ ॥
शुंभ निशुंभ विडारे हेमाचल स्थाता ।
सहस्र भुजा तनु धरके चक्र लिया हाता ॥ ४ ॥
सृष्टि रूप तुहि जननी शिव संग रंग राता ।
नंदी भृङ्गी बीनवहिं परचा मदमाता ॥ ५ ॥
दे वर अरज करत हम मन चितकूं लाता ।
गावत दे दे ताली मनमें रंग छाता ॥ ६ ॥
श्रीप्रताप आरती मैयाकी जो कोइ नर गाता ।
स्वर्ग सुखी नित रहता सुख सम्पति पाता ॥ ७ ॥

रामप्रताप शर्म्मा

१०५६—श्री सत्यनारायणजीकी आरती

जय लक्ष्मी रमणा श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन पातक हरणा ॥टेक॥
रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन घण्टा ध्वनि बाजै ॥ १ ॥
प्रगट भये कलि कारण द्विजकूं दरश दिया।
बुड्ढो बामन बनके कञ्चन महल किया ॥ २ ॥
दुर्बल भील कठारो जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी ॥ ३ ॥
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फेर स्तुति कीनी ॥ ४ ॥
भाव भक्तिके कारण छिन छिन रूप धरया।
श्रद्धा धारण कीनी जिनका काज सरया ॥ ५ ॥
ग्वाल बाल संग राजा वनमें भक्ति करी।
मनवांछित फल दीनों दीनदयालु हरी ॥ ६ ॥
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसीसे राजी सतदेवा ॥ ७ ॥
श्री सत्यनारायणजीकी जो आरती गावै।
भणत मनसुख सम्पत्ति मनवांछित पावै ॥ ८ ॥

१०५७—श्री जानकीनाथजीकी आरती

जय जानकी नाथा जय श्री रघुनाथा।
दोउ कर जोड़ विनऊं प्रभु मेरी सुन वाता ॥टेक॥

तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता।
तुम हो सजन संगाती भक्ति मुक्ति दाता ॥ १ ॥
चौरासी प्रभु फंद छुटावो मेटो यम याता।
निशिदिन प्रभु मोय राखो अपने संग साथा ॥ २ ॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग चारों भैया।
जगमग ज्योति विराजत शोभा अति लहिया ॥ ३ ॥
हनुमत नाद बजावत नेवर टिमकाता।
सुवरण थाल आरती करत कौशल्या माता ॥ ४ ॥
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजत शोभा अति भारी।
मनीराम दर्शणकी आशा पल पल वलिहारी ॥ ५ ॥

१०५८—धमाल

जय बोलो साधो लक्ष्मण बालाकी।
बालाकी वो नन्द लालाकी ॥ टेक ॥
दक्षिण देश सवा लख पर्वत, जगमग ज्योत दिवालाकी।
त्रिपदीमें सीतारामजी विराजै, चौकी हनुमत बालाकी ॥ १ ॥
शेषाचल पर आप विराजो, चौकी हनुमत बालाकी।
इजय विजय दोउ पौरिया विराजैं गैरी धूंस नगारां की ॥ २ ॥
बालाजीके रथपर कनक सिंहासन, कलंगी बनी हीरा लालांकी।
बृहस्पतिवार जरीको जामो, ऊपर मौज दुशालांकी ॥ ३ ॥
शुक्रवार दूधको न्हावण मौज बनी मोहनमालाकी।
देशदेशके यात्री आवें, मार पड़े मृगछालाकी ॥ ४ ॥

आशानन्द गरीब तुम्हारो, पति राखो वो कण्ठी मालाकी ।
जय बोलो दशरथ सुत नन्दलालाकी, परदेशां रखवालांकी ॥ ५ ॥

१०५९—लावणी

शीश गंग अर्द्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी ।
नन्दी भृङ्गी नृत्य करत हैं गुण भक्तन शिवकी दासी ॥ १ ॥
शीतल मंद सुगन्ध पवन बहे बैठे हैं शिव अविनाशी ।
करत गान गन्धर्व सप्त सुर राग रागिनी अति रासी ॥ २ ॥
दक्ष रक्ष भैरव जहं डोलत, बोलत हैं वनके वासी ।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भँवर करत है गुंजासी ॥ ३ ॥
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी ।
कामधेनु कोटिक जहं डोलत करत फिरत हैं भिक्षासी ॥ ४ ॥
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकांत मौमी वासी ।
छहों ऋतू नित फलत रहत हैं पुष्प चढ़त हैं वर्षासी ॥ ५ ॥
देवमुनिजनकी भीड़ पड़त हैं निगम रहत जो नितरासी ।
ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान धरत हैं कुछ शिव हमको फरमासी ॥
ऋद्धि सिद्धिके दाता शङ्कर सदा अनन्दित सुखरासी ।
जिनको सुमिरन सेवा करतां टूट जाय जमकी फांसी ॥ ७ ॥
त्रिशूलधरजीको ध्यान निरन्तर, मन लगाय कर जो गासी ।
दूर करे विपता शिव तनुकी, जन्म जन्म शिव पद पासी ॥८॥
कैलाशी कासीके वासी, अविनाशी मेरी सुध लीज्यो ।
सेवक जान सदा चरणनको, अपनो जान दरश दीज्यो ॥९॥

तुम तो प्रभुजी सदा सयाने, अवगुण मेरे सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकरकी विनती सुणियो ॥१०॥

१०६०—लावणी

कैलासी काशीके बासी, अविनाशी मेरी सुध लीजे ।
सेवक शरण सदा चरणनको, अपनो जानि कृपा कीजे ॥
अभयदान दीजे प्रभु मोरे, सकल सृष्टिके हितकारी ।
भोलेनाथ तुम भक्त निरंजन भव भंजन भव शुभकारी ॥ टेक ॥
दीन दयालु कृपालु कामरिपु, अलख निरंजन शिव योगी ।
मंगल रूप अनूप छवीले, अखिल भुवनके तुम भोगी ॥
बांवो अंग सो रंग रस भीनो, उमा वदनकी छवि न्यारी ॥ १ ॥
असुर निकन्दन सब दुख भंजन, वेद वखाने जग जाने ।
रुण्डमाल गल ब्याल भाल शशि नीलकण्ठ लिया मनमाने ॥
गंगाधर त्रिशूलधर विषधर वाघम्बर धर गिरिधारी ॥ २ ॥
यो भवसागर अति अगाध है, पार उतर कैसे सूजै ।
यामें ग्राह मगर बहु कच्छप यो मारग कैसे सूजै ॥
नाम तुम्हारो नौका निर्मल तुम केवट शिव अधिकारी ॥ ३ ॥
मैं जानूं तुम निपट सयाने, अवगुण मेरे सब ढकियो ।
सब अपराध क्षमा कर शङ्कर किंकरकी विनती सुणियो ॥
तुम तो जगके कलपतरु हो मैं हूं प्राणी संसारी ॥ ४ ॥
काम क्रोध यो महा परवल इनसे मेरो वस नाहीं ।
लोभ मोह यो संग नहिं छोड़े आन देत नहिं तुम तांई ॥
क्षुधा तृषा नित लगी रहत है ता ऊपर तृष्णा भारी ॥ ५ ॥

तुम ही शिवजी कर्त्ता हर्त्ता तुम हीं युगके रखवारे।
तुमहीं गगन मगन पुनि पृथिवी पर्वत पुत्रीके प्यारे॥
तुमहीं पवन हुतासन शिवजी तुमहीं दिनकर शशिहारे॥ ६॥
पशुपति अजर अमर अमरेश्वर, योगेश्वर शिव गोस्वामी।
वृषमारूढ़ गूढ़ गुरु गिरिपति गिरिजा वल्लभ निष्कामी॥
शोभा सागर रूप उजागर गावत हैं सब नर नारी॥ ७॥
महादेव देवनके अधिपति फणिपति भूषण अति साजे।
दीप्त ललाट लाल दोउ लोचन जिनके डरता दुख भाजे॥
परम पुनीत पुनीत पुरातन महिमा त्रिभुवन विस्तारी॥ ८॥
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष मुनि नारद आदि करत सेवा।
जिनकी इच्छा पूरण कीन्ही नाथ सनातन हर देवा॥
भक्ति मुक्तिके दाता शङ्कर सदा निरन्तर सुखराशी॥ ९॥
महिमा इष्ट महेश्वरजीकी सीखे सुने जे नित गावैं।
अष्ट सिद्धि नौ निधि सुख सम्पति स्वामि भक्ति मुक्ती पावै॥
श्री अहिभूषण प्रसन्न होयकर कृपा करो शिव त्रिपुरारी॥१०॥

अज्ञात

१०६१—संकटमोचनकी आरती

ॐ हनुमत वीरा।
संकट मोचन स्वामी, तुम हो रणधीरा॥टेक॥
पवन-पुत्र अंजनि सुत महिमा अति भारी।
दुख दारिद्र मिटावो संकट सब हारी॥ १॥

बाल समयमें तुमने रविको भक्ष लियो ।
देवन स्तुति कीनी तब ही छाड़ दियो ॥ २ ॥
कपि सुग्रीव राम संग मैत्री करवाई ।
बाली मराय कपीशहिं गद्दी दिलवाई ॥ ३ ॥
जारि लंक ले सियसुध बानर हरखाये ।
कारज कठिन सँवारे, रघुबर मन भाये ॥ ४ ॥
शक्ति लगी लछमणको, भारी सोच भयो ।
लाय संजीवनी बूटी, दुख सब दूर कियो ॥ ५ ॥
ले पताल अहिरावण जब ही पैठ गयो ।
ताहि मार प्रभु लाये जै जै कार भयो ॥ ६ ॥
जसरापुरमें शोभित मूरति अति प्यारी ।
पौष पूर्णिमा शुभ दिन मेला है जारी ॥ ७ ॥
महावीर की आरति कोई नर गावें ।
दारूका कहै भगवती वांछित फल पावे ॥ ८ ॥

भगवतीप्रसाद दारूका

१०६२—बाराखड़ी (प्रह्लाद की)

श्री लक्ष्मीपति हरी, जिनमें लाग्यो ध्यान ।
तूं पंडित भूल्या फिरै, क्या समझाता ज्ञान ॥
सुन बारखड़ी की टेक समझले एक जगत का वोही है दाता ॥ टेक ॥
कका कुलमें जनम, हाथ ले कलम, चरित लिख हरके ।
वै बहुतेक साधु तिरे, भजन नित करके ॥

खखा खोजो ज्ञान सुमर, भगवान चरन चित धरके ।
इस भवसागर दरियाव पार हो तरके ।।
गगा गुण गोविन्दके भारी । मैं मनमें देख विचारी ।
जिन रची प्रथमी सारी । प्रभु भक्तोंके हितकारी ।।
घघा घट में है जगदीश, ब्रह्मा गण ईश नवावैं शीश ।
उनोंका पार नहीं पाता ।।१।।

ङड़ा राड़ ना ठान, सुमर भगवान, मुक्ति का दरजा ।
कछु कुछ सुमरण से महाराज, होय ना हरजा ।।
चचा चतुरभुज रूप बड़े हैं भूप, रची जिन परजा ।
जाकूं रटते शेष महेश, शक्ती सुर गिरजा ।।
छछा छिक अमरत पीजै । और त्याग विषकूं दीजै ।
क्यूं पाप बोझ सिर लीजै । यामें सकल बड़ाई छीजै ।।
जजा जादुपत घनश्याम, सुधारैं काम, मुक्तके धाम ।
नामसे संकट मिट जाता ।।२।।

झझा झूठा ठाट, राज अरु पाट, कुल मोह माया ।
साँच है हरिका नाम, मेरे मन भाया ।।
ञञा यूं रहे भूल, छोड़कर मूल डाल सिंचवाया ।
तैं प्रभुजी का गुण त्याग, असुर गुण गाया ।।
टटा टार क्रोध गुन गावो । जो मुक्ती के फल चावो ।
जो हरिसे वैर तुम लावो । क्यूं अमरित तज विष खावो ।।
ठठा ठाकुर आप हरै संताप, जपो तुम जाप ।
पाप से मत राखो नाता ।।३।।

डडा डरके चाल, निकट है काल, बात कहूं खासी।
जमनोदर लेगे रोक, डार दे फाँसी ॥
ढढा, ढाल हरि नाम, आवै तेरे काम लगै ना गासी।
तेरा पलमें संकट हरें आप, अविनासी ॥
णणा रणी भई नीकी। तुम कैसे बतावो फीकी ॥
सब व्याध कटे है जीकी। तुम करो बड़ाई हरि की ॥
तता तिर गये भज भगवत, गुरु स्योदत ज्ञान दिया सत।
कथन कर धोंकलराम गाता ॥४॥
थथा थोड़ा जीवना, बहुती जगमें भूल।
अमर कोई ना रह सकै, आखिर मिल ज्या धूल ॥
कछु नहीं बाद का काम, मुक्तका धाम,
सुनाऊँ टेक बारखड़ी सारी ॥ टेक ॥
ददा दुरलभ जिसकूं जान, सुनो दे कान ज्ञान नहीं पाता।
तूं सीधा रस्ता छोड़ कुपंथ चलाता ॥
धधा धोखा मिट जाय कृष्ण गुण गाय, बहुत समझाता।
तूं हरि गुण अमरत छोड़, जहर क्यूं खाता ॥
नना नारायण गुण गाना। और छोड़ो विषका खाना।
हरि चरण से चित लाना। हो सुमरण से कल्याना ॥
पपा पारब्रह्म भगवंत, कहै वेदन्त, आवे ना अंत।
संत मुनि रटते ब्रह्मचारी ॥५॥
फफा फलदायक लगी फूक, रहो ना चूक, रती भर झारे।
मैं साँचे कर हरि नाम हियेमें धारे ॥

बवा बोये आमके बाग, रहे फल लाग, मुक्तिके भारे ।
तुम बोवन लगे बबूल सूल लगै थारे ॥
ममा भला होय सुमिरन से । धर ध्यान हरि चरनन से ।
या कुमत त्याग दे मन से । सब व्याध कटै तेरे तन से ॥
ममा मौज भजनमें जान, लगा के ध्यान, भजो भगवान ।
भजन से होवे सुख भागी ॥ ६ ॥
ररा राम नाम है सार, उनोंका पार, कोई ना पावै ।
वै सब घट घट के बीच मोहिं दरसावै ॥
लला लख्या न जाय, वहि गुन गाय, ध्यान उर लावै ।
वै संकट मेटनहार वेद जस गावै ॥
ववा वे हैं जग के दाता । ताहि पार कोउ ना पाता ।
मेरे वे ही पिता वे माता । मैं नित उठ के गुण गाता ॥
ससा सारे काज, राख ले लाज, आप महाराज ।
वे ही भक्तों के हितकारी ॥ ७ ॥
षषा खुल गये भाग, भक्ति अनुराग हिये में धाये ।
शशा सत्य सुमरण किये बहुत सुख पाये ॥
हहा हम लीना जान, जबीसे ध्यान हियेमें लाये ।
अआ और का नाम नहीं मन भाये ॥
इ ईश्वर की रट माला । उ उघड़त घट का ताला ।
गुरु शिवदत्त जावे वाला । कहे पी अमृत का प्याला ॥
जन गावे धौंकल दास, बीरण है वास, दरसकी प्यास ॥
आस पूरैंगे गिरिधारी ॥ ८ ॥
—धौंकलराम खाती ।

१०६३—श्रीराम स्तोत्र।

अब आये तुम्हरी सरन, "हारे के हरि नाम"।
साख सुनी रघुवंशमनि, "निर्बल के बल राम"॥
जबलौं निज बल मद रह्यौ, सर्यो न गज को काम।
निर्बल ह्वै जब हरि भज्यो, धाये आधे नाम॥
छल-बल करत कपीसको, मिट्यो न नाथ कलेस।
निर्बल ह्वै जब पद गहे, भयो वालि को सेस॥
दीन सुदामा के किये, छन मँह कंचन धाम।
दसरथ गति भई गीध की, जपत नाथ को नाम॥
दीन होय आयो सरन, खाय भ्रात करि लात।
कियो लंकपति अंक भरि, रिपु दसमुख को भ्रात॥
प्रतिगन गुरुजन सब रहे, अरु भरपूर समाज।
नाथ न कोऊ रख सके, द्रुपद सुता करि लाज॥
आरत ह्वै जब तुम भजे, हे कृपालु रघुवीर।
दुःशासन निर्ब्बल कियो, ढाई गज कै चीर॥
जपबल तपबल बाहुबल, चौथो बल है दाम।
हमरे बल एकौ नहीं, पाहि पाहि श्रीराम॥
अपने बल हम हाथ की रोटी सकत न राख।
नाथ बहुरि कैसे भरैं, मिथ्या बल करि साख॥
सेल गई बरछी गई गये तीर तलवार।
घड़ी छड़ी चश्मा भये छत्रिन के हथियार॥
जो लिखते अरि हीय पै सदा सेल के अंक।

झपत नैन तिन सुतन के कटत कलम को डंक ॥
कहाँ गज कहँ पाट प्रभु कहाँ मान सम्मान ।
पेट हेत पायन परत हरि तुम्हरी सन्तान ॥
आज विजयदसमी भई तुम्हरी रघुकुल राय ।
सोचत सोचत निज दसा छाती फाटी जाय ॥
नहिं उमंग नहिं हर्ष कछु नहिं उछाह नहिं चाव ।
उदासीनता को छयो चारहुं ओर प्रभाव ॥
नाचत नाहिं तुरंग कहुं नहिं हाथिन पै झूल ।
चमकत नाहिं न खड्ग कहुं वरसत नाहिं न फूल ॥
जिनके छत्रन पर रही तरिवारिन की छांह ।
अभय सवन को करत ही जिनकी लम्बी बांह ।
सो विस्वम्भर नाथ के चरनन मँह सिर नाय ।
वटनी के दिन मार मन चुपके रहे विताय ॥
जिनके करसों मरन लौं छुटयो न कठिन कृपान ।
तिनके सुत प्रभु पेट हित भये दास दरवान ॥
जहां पेट को झींखिवो तहाँ कौन को चाव ।
नाथ पुकारे कहत हैं तुमसों कहाँ दुराव ॥
ऐसे ही तव वल गयो, भये हाय! श्रीहीन ।
निस दिन चित चिन्तित रहत मन मलीन तन छीन ॥
घर बैठे खोयो सवै कर्म्म धर्म्म सत नेम ।
कलि विषयन मँह वूड़ि कै भूले प्रभुपद प्रेम ॥
जाति दई सद्गुन दये खोये वरन विचार ।

भयो अधमहूंते अधम हमगे सब व्यवहार ॥
विश्वामित्र वसिष्ठ के वंसज हा ! श्रीराम ।
शव चीरत हैं पेट हित अरु बेचत हैं चाम ॥
झूठि मलेच्छन की हहा ! खाति सराहि सराहि ।
और कहा चाहो सुन्यो त्राहि त्राहि प्रभु त्राहि ॥
जिनको अस व्यवहार प्रभु जिनकी ऐसी चाल ।
तिनको तपबल आपु तुम बूझो दीनदयाल ॥
तहाँ टिकै क्यों बाहुबल जिन घर मेवा फूट ।
बल बपुरो कैसे रहे जाय बाहु जब टूट ॥
जहाँ लरैं सुत बाप संग और भ्रात सों भ्रात ।
तिनके मस्तक सों हटै कैसे परकी लात ॥
लरि लरि अपनो बाहुबल खोयो कृपानिधान ।
आप मिटे तौहू नहीं मिटी लरन की बान ॥
अरु जो पूछौ दाम बल पल्ले नाहिं छदाम ।
पै दामहु के फेर मँह भूलै तुम्हरो नाम ॥
निसदिन डोलत दाम लगि कूकूर काक समान ।
जन्म बितावत प्रेत जिमि कृपासिन्धु भगवान ॥
हमरे जीवन माँह प्रभु अब सुख को नहिं लेस ।
लेख भाल को बन रहे चिन्ता दुःख कलेस ॥
चितवत जागत स्वप्न मँह चिन्ता रहत अपार ।
कब लौं ऐसे बीतिहै नाथ दया आगार ॥
धर्म न अर्थ न काम के नाहिं राम सों प्यार ।

ऐसे जीवन पोच कहँ वार वार धिक्कार ॥
नाहिं न पार वसात कछु वुद्धि करत नहिं काम ।
सूझत नाहिं सुपंथ प्रभु दया करो श्रीराम ॥
को गहे राम ! आप विन परे गिरे को हाथ ?
नाथ अनाथनके सदा तुमही हो रघुनाथ ॥
वूड़त है भव सिन्धु मंह वेगि उवारो राम ।
नाथ आपसा दूसरो नाहिं हितू निसकाम ॥
हम कोऊ लायक नहीं सव लायक प्रभु आप ।
दीनहुतें अति दीन हैं वेगि मिटावहु ताप ॥
तुम विन प्रभु को दूसरो विगरी देहि वनाय ।
दया करो फेरो दसा होहु कृपालु सहाय ॥
राज-पाट धन वल गयो जावहु कृपा निधान ।
पै न जाय यह अरज है तुम्हरै पद को ध्यान ॥
हियसों नाथ न वीसरों, कवहुं रामको राज ।
हिन्दूपन पै दृढ़ रहे निस दिन हिन्दु समाज ॥
यद्यपि हमसो दूसरो नाथ नाहिं वेकाम ।
पै हियते मत वीसरो, "निर्व्वल के वल राम" ॥

१०६४—राम भरोसा ।

राम तुम्हारो नाम सुन्यो तुम देखे नाहीं ।
कैसे हो तुम यहै सोच हमरे मनमाहीं ॥
वेदन और पुरानन तव लीला वहु गाई ।
सुनी पढ़ी हमहूं कितनी प्रभुताई ॥

त्रेता युग मंह सुन्यो हम राज तुम्हारो ।
और सुन्यो यह जगत वण्यो तुमहीं ते सारो ॥
कृत त्रेता द्वापर कलि इन चारहु जुग माहीं ।
अचल राज महाराज तुम्हारो रहत सदाहीं ॥
रबि ससि ब्रह्मा इन्द्र अन्त सब ही को आवै ।
राम राज को पार कोऊ नहिं पावै ॥
कला नसै चांदनी छीन है ससि हो कारो ।
पै दूनो दूनो चमकै प्रभु राज तुम्हारो ॥
हाथ जोर एक बात आज पूछैं तुम पाहीं ।
अब हूं हे प्रभु ! राज तुम्हारो है वा नाहीं ॥
सुन्यो दिव्य तव राज, दिव्य लोचन कहँ पावैं ?
जासों वह सुख अनुभव करि आनंद मनावैं ॥
आप दया कर राज आपनो देहु दिखाई ।
हम तो आंधर भये हमें रघुनाथ दुहाई ॥
तुमहि करो प्रभु दया तुमहिं जासों हम जानहिं ।
गुण स्वरूप तुम्हरो अपने उर अंतर आनहिं ॥
सुन्यो तुम्हारो राज हतो दुख हीन सदाहीं ।
दीन दुखी वामें ढूढ़े हूं मिलते नाहीं ॥
अंग हीन तन छीन रोग सोकन के मारे ।
कबहुं न कोऊ सुने राम प्रभु राज तुम्हारे ॥
और सुनी हम राज तुम्हारे भयो न कोई ।
अन्न हीन जल हीन प्राण त्यागो जिन होई ॥

पूत पिता के आगे काहू को नहिं मरतो ।
राज तुम्हारे पुत्र सोक कोऊ नाहं करतो ॥
और सुनी हम चोर जार लंपट अन्याई ।
सके न कबहूं राम राज के निकटहुं जाई ॥
कबहुं न परयो अकाल मरी कबहूं नहिं आई ।
अन्न हीन तृण हीन भूमि नहिं दई दिखाई ॥
वायु बह्यो अनुकूल इन्द्र बहु जल बरसायो ।
सुखी रहे सब लोग रह्यो नित आनंद छायो ॥
धर्म्म कर्म्म अरु वेद गाय विप्रनको आदर ।
रह्यो तुम्हारे राज सदा प्रभु सब विधि सुन्दर ॥
पै हमरे नहिं धर्म्म कर्म्म कुल कानि बड़ाई ।
हम प्रभु लाज समाज आज सब धोय बहाई ॥
मेटे बेद पुरान न्याय निष्ठा सब खोई ।
हिन्दू-कुल–मरजाद आज हम सबहिं डबोई ॥
पेट भरन हित फिरें हाय कूकूर से दर दर ।
चाटहिं ताके पैर लपकि मारहिं जो ठोकर ॥
तुम्हीं बताओ राम तुम्हें हम कैसे जानैं ।
कैसे तुम्हरी महिमा कलुषित हिय मँह मानैं ॥
किन्तु सुने हम राम अहो तुम निरबल के बल ।
यही रही है हमारे हिय मँह आसा केवल ॥
गुह निषाद हम सुन्यो राम छाती तें लायो ।
माता सम भिल्लनी गीध जिमि पिता जरायो ॥

यह हिन्दू गन दीन छीन हैं सरन तुम्हारे।
मारो चाहे राखो तुम ही हो रखवारे ॥
दया करो कुछ ऐसी जो निज दसा सुधारैं।
तुम्हरो उत्सव एक बार पुनि उर मँह धारैं॥

बालमुकुन्द गुप्त

१०६५—भजन

(तर्ज—जकड़ी)

भजन बिन मुक्ति नहीं पसी।
तूं ले ले हरिको नाम, जन्म तेरो सुफल होय जासी ॥टेक॥
भाग से मिनखां देह पाई।
चेते है तो चेत फेर वा चौरासी आई ॥१॥
भजन को आय गयो मोको।
चेतो कर सुरग्यान, अन्त में रह जायगो धोको ॥ २ ॥
छोड़ दे झूठ कपट का फंदा।
काम क्रोध मद लोभ मोहमें, मत होवे अन्धा ॥३॥
समझले थोड़ी में सारी।
मतलब का संसार राम बिन कोई न हितकारी ॥४॥

१०६६—भजन

(तर्ज—चनणा)

मोहन मोहन निस दिन मैं रटूंजी, कोई मोहन जीवन प्राण।
दरस दीवानी जी कन्हाई आपकी जी ॥१॥

साँवरी सूरत पर वारी गोपियां जी कोई मोह लई ब्रजनार ।
सारी विसारी सुध बुध गात की जी ॥२॥

मुख पर मुरली बाजे मोहनी जी, कोई गल वैजंती माल ।
मुकुट पीताम्बर कटिमें काछनी जी ॥३॥

धेनु चरावत रे लाला नंद की, कोई मांगत दधि को दान ।
रीत चलावे रे कानां तूं नई जी ॥४॥

सिर धर मटकी जी घर से मैं चली, कोई आन मचाई राड़ ।
वारा जोरी करयां, गोरस ना मिले जी ॥५॥

वैन बजावो जी काना सोहनी, और दिखावो नाच ।
साँच सुनावां माखन जद मिले जी ॥६॥

१०६७—भजन

(राग—पीला)

मथुरामें जायो कान्हा, गोकुल में आये जी,
तो यशोदा जी हर्ष वढ़ाये मोहन प्यारा जी ॥टेक॥

भगतन रखवाराजी तो नंद जी के लाल दुलारा,
मोहन प्याराजी, भगतन रखवाराजी ॥१॥

कंसा सुन पाये मनमें भीत घबराये जी,
तो पूतनाके प्राण नशाये, गिरिधर प्यारा जी ॥२॥

इन्द्र गरवाये नखपर गिरिको उठाये जी,
तो गोपी और ग्वाल बचाये कृष्ण बिहारी जी ॥३॥

यमुना पर आये कान्हा ख्याल रचायो जी,
तो कालीको नाथ भगाये बंसीवारा जी ॥४॥

सखियन संग जाय कान्हा रास रचायो जी,

तो बंशी में गाय कर रिझावे मोहन प्यारा जी ॥५॥

द्रौपदी यश गायो जद थे चीर बढ़ायो जी,

तो असुरां को मान घटायो मोहन प्यारा जी ॥६॥

रुकमण ले आया कान्हा, थे भारत करवाया जी,

तो अर्जुन के रथने आप चलायो कृष्ण बिहारी जी ॥७॥

सुरनर सब ध्यावें कोई पार न पावे जी,

तो दास नारायण कथकर गावे मोहन प्यारा जी ॥८॥

१०६८—भजन

(तर्ज—सुवटा जंगलको वासी)

चाल नर सत्संगत कर ले

सर जावे सब काम राम ने हृदय में धरले ॥टेक॥

नामकी महिमा अति भारी।

तर गये पतित अनेक शारदा कथ कथ कर हारी ॥१॥

कुटिल कामाँ सेती टलरे।

भवसागर की विकट धारसे हरि भजकर तिर रे ॥२॥

अबी तोय फुरसत नहीं पावे रे।

यदि पकड़ लेय यम दूत ठाढ़ कोई काम नहीं आवे ॥३॥

रात दिन बातां में जावे रे।

ये स्वांस वड़ा अनमोल राज दे एक नहीं आवे ॥४॥

जन्म तैंने अनंत धारे।

मिनखां जन्म सुधार हरी ने भजले जी प्यारे ॥५॥

१०६९—भजन

(तर्ज—पनिहारी)

कृष्ण मुरारी शरण तुम्हारी, पार करो नैया म्हारी ।
जन्म अनेक भयो जुग मांही, कबहुं न भक्ति करी थारी ॥टेक॥
लख चौरासी भरमत, भरमत हार गई हिम्मत सारी ।
अब उद्धार करो भव भंजन दीनन के तुम हितकारी ॥१॥
मैं मतिमन्द कछू नहीं जानत, पाप अनंत किये भारी ।
जो मेरा अपराध गिनो तो, नांय मिले पारावारी ॥२॥
तारे भगत अनेक आपने, शेष शारदा कथ हारी ।
बिना भगति तारो तो तारो जी, अबकी बेर आई म्हारी ॥३॥
खान पान विषयादिक भोजन लपट रही दुनियां सारी ।
नारायण गोविन्द भजन बिन मुफत जाय उमर सारी ॥४॥

१०७०—भजन

(तर्ज—देवरकी)

चौरासीको चरखो चाले, फन्द छुटावे सांवरिया ॥टेक॥
जगके मांही नर तन पाई, मुफत गँवाई साँवरिया ।
कर ले भाई असल कमाई, हरगुण गाई साँवरिया ॥ १ ॥
गीता गाई कृष्ण बताई, करो भलाई साँवरिया ।
जो जन जाई हरि शरणाई, लेइ बचाई साँवरिया ॥ २ ॥
धनको पाई गरव न लाई, मन समझाई साँवरिया ।
सृष्टि रचाई कृष्ण कन्हाई, रहे समाई साँवरिया ॥ ३ ॥

बेदन मांही रहे दिखाई, संग अधिकाई साँवरिया।
रामरतनकी नाव लदाई, नारायण कर ऊपर नाई-
भव नहिं आवै साँवरिया ॥ ४ ॥

१०७१—भजन

(राग—जाड़ेकी)

मनुवा देही मुफत गँवाई, लग्यो मगजमें कीड़ो।
अपने घरमें जी देखो, तीन लोकको हीरो ॥टेक॥
पाँच तत्वकी देह बनाकर, तीन गुणांसे न्यारो।
राम नामकी साज सजाई, स्वांस चलायो धीरो ॥ १ ॥
गावे बजावे कार चलावे, अकलमन्द रणधीरो।
योगीराम भजन बिन देखो, भीतर बण्यो अधीरो ॥ २ ॥
सतगुरु मिले जद ज्ञान सिखावे, होय पुण्य कोई नीरो।
गीता ज्ञान ध्यान करे हरिका, चाव ब्रह्मको खीरो ॥ ३ ॥
नारायण कर गान कृष्णको लंघे पार तेरो बेड़ो।
राम भजन कर स्वांस स्वांसमें मत कर मेरो मेरो ॥ ४ ॥

१०७२—भजन

(राग—कुंजा)

सुरता ये म्हाने राम मिला दे ये ॥ टेक ॥
तूं सुरता बड़ भागिनी ये, कर रघुवरसे प्रीत।
सुरता ये म्हाने राम मिला दे ये ॥ १ ॥
गई गई सुरता वा गई जी, गई सियावरके देस।
भजनका शरणा लीन्या ये ॥ २ ॥

सुरत म्हारी सुरता लाड़ली ये, तजदे कपट विकार।
तूं सुरता जग मोहनी ये ॥ ३ ॥
तूं सुरता वासनी ये, सृष्टि रचावन हार।
काम कुटिल दे त्याग, सुण सुरता वावली ये ॥ ४ ॥
सुरता सतगुरु सुमरिये जी मारग देय वताय।
जय नारायण नांव सुरता सुमरी सुमरणिये ॥ ५ ॥

१०७३—कौशल्याको वारामासियो

पठये तैने नार वैरण वन वालक मेरे ॥
चैत अजोध्यामें जन्मे हैं राम, चन्दनसे लिपवाये हैं धाम।
गज मोतियनके चौक पुराये, सोनेके कलश दिये भरवाये ॥
धरे घट मन्दिर केरे ॥ १ ॥
वैशाख मास रितू ग्रीसम लाग, चलत पवन जाणे वरसे आग।
जैसे जल विन तड़फत मीन, सो गत मेरी कैकईने कीन ॥
दिये दुख दारुण हेरे ॥ २ ॥
जेठ मास लू लागत अंग, राम लखण और सीता संग।
रामचन्द्र पग कमल समान, तप रही सव धरती असमान ॥
चलें मग कैसे वे रे ॥ ३ ॥
असाढ़ मास घन गरजत घोर, रटत पपोहा कूकत मोर।
खड़ी कौशल्या अवधपुर धाम, भोजत सिया लक्ष्मण राम ॥
मेरे है पीड़ घनेरे ॥ ४ ॥
सावणमें घन गरजे री वीर, कैसे धरे कौशल्या धीर।

छोटी छोटी बूंदन बरसत नीर, दुखित होंगे सिया रघुबीर ॥
झमक झड़ लाग्यो है रे ॥ ५ ॥
भादोंमें बरसे नीर अपार, घर अपने सबही संसार ।
गुंजत कुंजत फिरत भुजङ्ग, राम लिछमण सीता संग ॥
रैन अंधियारी ए रे ॥ ६ ॥
लाग्योरी सखी मास कुंवार, धर्म करत सगलो संसार ।
जो घर होते सिया लिछमण राम, विप्र जिमाती देती मैं दान ॥
थाल भर मोती के रे ॥ ७ ॥
लग्योरी सखी कातिक मास, उठत कलेजेमें दुखकी फांस ।
घर घर दीपक जोवत नार, मेरी अयोध्यामें पड्यो, अंधार ॥
करी या कैकई ने रे ॥ ८ ॥
मंगसिर कुंवरका करती सिंगार, कपड़े सिमाती मैं सोनेका तार ।
पट पीताम्बर केसरिया बाग, सर पे चीरा जरदकी पाग ॥
गले बीच माला ले रे ॥ ६ ॥
पूस पड़ै शरदी अति भार, रैन भई जैसे खंडेकी धार ।
कुश आसन कैसे सोवेंगे राम, कैसे करें वनमें विसराम ॥
मेरा जिया यूं ही जरे है रे ॥१०॥
माघ मास रितू फूले बसन्त, कैसे जिऊं बिना भगवन्त ।
मेरी अजोध्याके सिरमौर, ठाड़े भरत जी करत निहोर ॥
बसन्त सब घर रहे हैं रे ॥११॥
फागन रंग रच्यो सब बंधू, चोवा चन्दन अतर सूगन्धू ।
ठाडै भरती घोलैं, अबीर, किसपर छिड़कैं बिना रघुबीर ॥

मेरी इब क्या गत है रे ॥१२॥
जो गावे यह बारामासा, सो पावे वैकुण्ठा वास।
कहे भवानी अवधपुर धाम, वनसे आये सिया लछमण राम ॥
मिले सब केकई से रे ॥१३॥

अज्ञात

१०७४—लावणी

सत्यनारायण अन्तर्यामी, तुम स्वामी भक्तन सिरताज ॥ टेक ॥
लियो नाम प्रह्लाद रामको, पिता कोप भये सुन वानी।
लेकर खड्ग उठे मारणको, उस बालकको अभिमानी ॥
वे कुमार बोले उचार, हरिनाम सार लेते ज्ञानी।
सुनकर वचन कोप भये राक्षस, कहां तेरा राम देख कानी ॥
प्रह्लाद हरीसे करुना टेर सुनाई।
रख लाज आज इन मारन तेग उठाई।
तुम मात तात निज सन्तनके सुखदाई।
मेरी सुध ले दीनानाथ प्रगट यहां आई।
भक्त उबारन दुष्ट संहारन रूप नर हरि प्रगटे आज ॥ १ ॥
रूप नरहरि धार, असुर कूं मार, काज पलमें सार्‌या।
पापी अजामील गणिका मणिका मलिन प्रभु तैं त्यारा ॥
साधु सन्तका सतसंग रखना, मीरां हठ ऐसा धार्‌या।
राने विषका प्याला भेज्या, सुधा जहरको कर डार्‌या ॥
गजराज काज प्रभु छोड़ गरुड़ असवारी।
पैदल चल किया उधार सबल बलधारी।

नरसीको हुंडी बनके सेठ स्वीकारी।

ल्याये कबीर घर बालद सहस्र हजारी।

सनकादिकांका गर्व निवारया जगत पिताकी राखी लाज।। २ ।।

त्रेतामें दशरथ घर प्रगटे, विश्वामित्रको यज्ञ सऱ्यो।

धनुष उठाय जनक भूप घर प्रगटे, परशुरामको तेज हऱ्यो।

गोतम नार त्यार दई अहिल्या, जल ऊपर पाषाण धऱ्यो।

बाली बध सुग्रीव सखा कर, लंकपुरी को गमन कऱ्यो।

तेरी लीला अपरम्पार भेद नहीं पाया।

देखो कुटम सहित रावण यम लोक पठाया।

तेरी नाथ दयासे राज विभीषण पाया।

ले जनकसुताको पुरी अयोध्या आया।

रघुकुल त्यार फेर यादवमें प्रगट भये भक्तनके काज ।। ३ ।।

इन्दर राजा कर कोप, मेघ मंडल ले बृज पर चढ़ आया।

घटा घोर चहुं ओर जोर, बिजरीका आभे में छाया ।।

हुआ शब्द कोलाहल, जल जिन महा प्रलय का बरसाया।

चाली हवा प्रचंड ठंडसे, गुवाल बाल सब घबराया ।।

उन बृजमंडल पैमाल करण विचारया।

तुम गिरि गोरधन उठा नख ऊपर धारया ।।

उन सात दिवस जल कोप कोप कर डारया।

ब्रज हुई नहीं पैमाल गरब कर हारया ।।

भक्तन हित प्रभु सोवत जागे नाथ विलम कहां लागे आज ।। ४ ।।

कलयुग सत्य सनातन स्वामी, सत्यनारायण कहलाया।

अट्ठासी हजार रिपियों को सूतने तेरा व्रत प्रभु बतलाया ॥
जो नर नार करें हित चित सें जा घर सुख संपत माया ।
दे वरदान तुरत हो राजी करै सदा मन का चाया ॥
यह नारद मुनिने वर भगवत से पाया ।
जप तप व्रत भगतां के हेत वणाया ॥
जहां नेम धरम वहां रिध सिध वास सवाया ।
सीतू पर किरपा करो हरो दुख दाया ॥
मैं आधीन चरणको चाकर करुना सुनिये गरीब निराज ॥ ५ ॥

सीताराम सहल

१०७८—"ईश्वर ही सच्चा बन्धु है"

(लावणी)

खिले हुए हैं कमल सरोवरमें देखो शोभा भारी ।
निर्मल जलमें दर्पणकी ज्यों छाया गिरती है सारी ॥
गुन, गुन, गुन, करते भौंरे सब गंध हेतु दौड़ आते ।
चारों ओर फूलोंके जुड़ कर गुण मीठे सुर से गाते ॥ १ ॥
पर जब होगी गन्ध न इनमें तब होगा नहिं यह झंकार ।
आवेंगे अलि नहीं वहां पर करै न कोई भी तब प्यार ॥
जिन वृक्षों पर सुन्दर फल हैं, वहीं सकल पक्षी बानी ।
मधुर मधुर बोलें तब तक, नहिं फल पुष्पोंकी हो हानी ॥२॥
स्वार्थ कामनाके कारण सब जीव जन्तु आते जाते ।
आशा से वंचित होने पर आनेमें भी सकुचाते ॥

सु समय के हैं बन्धु घनेरे कुसमय में कोई नहिं पास ।
आता है हा ! किसी बंधुके देख देख मन होय उदास ॥ ३ ॥
केवल ईश्वर अन्तरयामी सकल समयमें पास रहे ।
दीनबन्धु वह सबका प्यारा विपद कालमें बांह गहै ॥
जो तूं मनुज सुना चाहै है सबसे सही हमारा मत ।
स्वार्थ हीन प्रभु प्रेम करे हैं ऊसका छाड़ सहारा मत ॥ ४ ॥

एक सीकर निवासी ।

१०७६—भजन

प्रीत मोरी लागी रे, इण सांवरिये के संग ॥ टेक ॥
मथुरा में लियो जनम, गोकुल कद आसी रे ॥ १ ॥
कुबजा छियो छे विलमाय, गोपियाँने त्यागी रे ॥ २ ॥
बिन दरसण नहिं चैन, बिरह तन लागी रे ॥ ३ ॥
तज कर हार सिङ्गार, भई वैरागी रे ॥ ४ ॥
त्याग दई कुल काण, भई अनुरागी रे ॥ ५ ॥
ललता कह कर जोर, परम पद पागी रे ॥ ६ ॥

१०७७—भजन पारवा

क्यूं भूल्या नाम हरीका, तिरिया से नेह लगायके ॥टेक॥
तिरिया की पैदास तिहारी, तिरियाने की रचना सारी ।
नरने तो निपजावे नारी, तोकूं कहूं समझाय के—
मतना कर प्रेम परीका ॥१॥
तिरिया एक नाम है क्यादी, माता भैण भाभी और दादी ।

सुवा भतीजी नानी मामी, मोसी लरे बनाय के—
चाची ताई काकी का ॥२॥

शक्ति रूप जगत की नारी, मजा जाण मत कर तूं यारी।
विषकी भरी नागनी कारी, बचे नांय बिन सहाय के—
धोका दे आंख लड़ीका ॥ ३ ॥

जो तिरियासे विषय कमावे, वांके फेर गर्भमें जावे।
या में जो कोई फरक बतावे, देखो निगा लगायके —
धरतीमें बीज पड़ी का ॥ ४ ॥

समय पाय बीज उग आवे, मत नारी से पाप कमावे।
दास नारायण यह कथ गावे, हरजीसे नेह लगाय के—
जस ले नर देह धरी का ॥६॥

१०७८—लावणी—रंगत खड़ी

भोर उठि दरसन नित करणा, ध्यान नित चार भुजा धरणा ॥टेक॥
सीस सोहे पिचरंगी चीरा, रच्या मुख पाननका बीरा।
गलेमें मुक्तामाल हीरा, पहरे पीताम्बर पीरा॥
बंसी सोहे हाथमें, विपत विडारन हार।
निश्चय से नीड़े खड़्या, जरा न लगावे वार॥
मनमां शंका नहिं करणा ॥ १॥

राम होय रावण ने मारयो, गर्व राजा इन्द्र को टारयो।
स्तंभ में सिंह रूप धारयो, दुष्ट एक हिरणाकुश मारयो॥
भक्त बड़ाई कारणे, तुम जाने जगदीश।
जब जब भार भयो पृथ्वी पर, पहुंचे बिस्वाबीस॥

आया जी नित दुष्टों का मरणा ॥२॥
जान ले शिशुपालो आयौ, संगमें नरसिंघ ल्यायो ॥
खबर जद रुक्मण ने पाई, सोच भयो मनके मांई ॥
रुक्मण पाती प्रेम की, दीज्यो प्रभु के हाथ ।
डाहल सब व्याकुल भया तो स्याम पधारे साथ ॥
कष्ट सब रुक्मण का हरणा ॥३॥
जान ले श्रीकृष्ण आये, संगमें बलदाऊ ल्याये ।
खबर जद रुकमण ने पाई, हर्ष भयो मन मांही ॥
रुकमण पूजे अंबिका, सब सखियन के साथ ।
मंदिर में हरि मिल गया, झटके पकड्यो हाथ ॥
काज सब भगतन का सरणा ॥४॥

१०७९—भजन

मन सूवा रे लाल पींजरो पुराणो रे ॥टेक॥
हाँ रे तूं तो बोलेगो झणी झणी बोल रे ॥१॥
हाँ रे तने तकत बिलाई मौत चुगत कोई दाणो रे ॥२॥
हाँ रे तूं तो हरि भज जन्म सुधार, नहीं तो फिर आणो रे ॥३॥
हाँ थाने कहत नारायण दास रुप निज जाणो रे ॥४॥

१०८०—भजन

व्रजवासी कान्हा थारी तो वंशी सब जग मोहनी ॥ टेक ॥
जबसे भनक पड़ी कानन में झमक आन खड़ी आंगनमें ।
विरहा उपज रयो मेरे मनमें, तेरी तो वंशी सब दुःख खोवनी ॥१॥

घरको छाड़ चली ब्रजबाला, सुधि बुधि छाड़ बेहाला ।
अब तो दर्शण द्यो नंदलाला, नागन जूं डस गई बनकर मोहनी ॥२॥
ब्रह्मा वेद ध्यान शिव त्यागया, जीव जंतु पंछी सब जागया ।
रास रच्यो गोपियन के सागे, सूरत तो थारी बाला सोहनी ॥३॥
लोक लाज सब जगकी त्यागी, हमरी लगन श्याम से लागी ।
सासड़ ननदल देत ओलमा, गोडसे घूट गई दंदरी दोहनी ॥४॥
यमुना तीर स्थिर भयो सारो, चरती गाय छोड़ दियो चारो ।
पढ़कर मंत्र मोहनी मारयो, बनमें तो सारे कर दई जोहनो ॥५॥
शिव सनकादिक ध्यान लगावे, ब्रह्मा वेद बिमल यश गावे ।
दास नारायण कथकर गावे, फेर जन्म नहिं होवनी ॥६॥

१०८१—भजन पारवा

तूं ले ले नर इस चीजको, मरनेसे काम जो आवे ॥ टेक ॥
धन तो यहां रह जायगा सारा, कुटुंब कबीला कर दे न्यारा ।
ये तन तो जल जाय विचारा, ले समझ सोच इस बीजको-
यह जीव फक्त रह जावे ॥ १ ॥
राम भजन गठड़ी ले सागे, अबका किया मिलेगा आगे ।
सतसंगति में क्यूं नहिं त्यागे, भूल मत इस तदबीर को-
पूरा गुरु ज्ञान बतावे ॥ २ ॥
राम कृपा मानुष देई पाई, ज्याके करले सफल कमाई ।
संत शास्त्र सब रहे बताई, ले समझ तूं अपने बीजको-
नारायण कथ गावे ॥ ३ ॥

१०८२—भजन

वजाय गयो ये वो सुनाय गयो ये,
म्हारे आंगना में बंसरी वजाय गयो ये ॥ टेक ॥
बैन वजावे नाच दिखावे गावे, मीठी तान।
साँवरी सूरत मोरे मन भावे, मोहे तन मन प्रान ॥ १ ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल सोहे कान।
रुनुक झुनुक पग पायल बाजे, सुन्दर श्याम सुजान ॥२॥
ग्वाल बाल हैं संगमें वांके, नैन रहे मटकाय।
मैं सोई थी अपने भवन में लीन्हीं आन जगाय ॥३॥
मांगत दान आन घर माहीं, ये क्या सीखी वान।
माखन मिश्री हित से खावत, वन गयो आन अजान ॥४॥
सुर नर मुनि जाको ध्यान लगावे, वेद करे यश गान।
नारायण मैं दास आपको, द्यो भगती को दान ॥५॥

१०८३—राग आसावरी

राम मेरी अरजी मानोजी, शरण आये की लाज ॥टेक॥
सिद्ध श्री पहले लिखूं, सिद्ध होने के काज।
के तो सिद्ध हरि भजन में जी, के तो संत समाज ॥१॥
सकल श्री सर्वोपमा लायक हो महाराज।
अरज लिखूं हूं प्रेम से थाने मालम होसी आज ॥२॥
अधम उधारण रामजी, सर्व सुधारण काज।
औगुण मेरा कछु ना गिनो जोवो विड़द की लाज ॥३॥

मै दुर्बल हूं जीव जगत में तुम सर्वस हो राम ।
यमका धक्का नाँय लगे प्रभु, कीजो ऐसा काम ॥४॥
मैं गरीब अरजी दई, वड़ी गरज है मोय ।
अरजी पर दसखत करो, जो कुछ मरजी होय ॥५॥
आरत होय अरजी करूं, दोनों करको जोड़ ।
मोय अवलाकी नीती, आप निभावो दौड़ ॥६॥

१०८४—भजन

सुमर गोपाल गोपाल ॥टेक॥
गुरु समानो रामके हथकर चरण पखाल ।
मिनख जमारो पायके सुमर गोपाल गोपाल ॥१॥
हंसा मत बिसर हरि नाम को, आय गहेगो काल ।
सुत संपत संग ना जायगी, सुमर गोपाल गोपाल ॥२॥
माया मद्मातो फिर अंद संद असवार ।
भूल गयो उस भान ने सुमर गोपाल गोपाल ॥३॥
कौड़ी कौड़ी जोड़ के फूल्यो फिरे सुख्याल ।
गिण गिण कर तो धर गयो सुमर गोपाल गोपाल ॥४॥
सुपने में वेटो भयो, भर भर वाँटे थाल ।
यही सुख संसार का सुमर गोपाल गोपाल ॥५॥
पत्थर पहाड़ाँ निसरता, समदर लेता झाल ।
जिनकी ढेरी हो गई, सुमर गोपाल गोपाल ॥६॥
नंगे पावां जायसी, कौड़ी धज्ज कंगाल ।
सबका रस्ता एक है सुमर गोपाल गोपाल ॥७॥

नदी किनारे बैठके लीजे हाथ पखाल।
अगला गैला देखल्यो सुमर गोपाल गोपाल ॥८॥

१०८५—भजन

राम सुमर ले रे मन गैला, थाने सत्गुरु मारे हेला ॥टेक॥
एक डाल दोय पक्षी बैठ्या, एक गुरु एक चेला।
गुरुकी करणी गुरु जायगा, चेले की करणी चेला ॥१॥
एक डाल दोय पत्ता टूटा, लगा पवन का झोला।
ना जाणूं कित जाय पड़े फिर, मिलना वड़ा दुहेला ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ मोह ये जगमें बिकट झमेला।
राम भजन कर पार उतर ले जग दर्शन का मेला ॥३॥
और काम सब त्याग बावरा सत संगत कर पहला।
नारायण का भजन करे विन कदे न सुधरे गैला ॥४॥

१०८६—राग सोरठ

आछया दिन जाय छै देय दगो ॥टेक॥
स्याही गई सफेदी आई हो गयो स्वेत बगो।
मतलब को संसार सनेही, कोई नांय सगो ॥१॥
धन यौवन ये माया ठगनी आयु जात ठग्यो ॥२॥
मत सोवे सुख की निद्रा कह रहे संत जगो ॥३॥
नारायण तज काम क्रोध मदहरकी शरण लगो ॥४॥

१०८७—भजन पारवा

तूं समझ सोच इस बातको नर रोज रोज मरता है ॥टेक॥
नौ दस मास गरभ से आया, सभी कहे नर जाया जाया।

मात तात सबही हरखाया, काल जान दिन रात को-
　　　　आयुस रोज चरता है ॥१॥

तूं जाणे मैं होऊँ बड़ेरा, काल फिरे तेरे चौफेरा।
क्यों करता है मेरा मेरा, दे छोड़ बुरे संग साथको-
　　　　हरि भजन क्यों न करता है ॥२॥

जब तेरा कूच करेगा डेरा, नहीं पड़ेगा किसी को वेरा।
पाप पुण्य का होय नवेड़ा, जला देय इस गात को-
　　　　करणी अपनी भरता है ॥३॥

खोटी मत ना करे कमाई, अंत समै कोई नांय सहाई।
भजन भक्ति तेरे आडी आई, धरम चले संग साथ को-
　　　　चौरासी से टरता है ॥४॥

यह संसार भेद कोई नहिं पाया, आ आ कर जगमें भरमाया।
दास नारायण कथ कर गाया, भजले सरजनहार को-
　　　　वो न्याव पार करता है ॥५॥

१०८८—भजन

नर मत भूले हरिनाम गर्भमें करके कौल आया ॥ टेक ॥

जठराग्निकी दाह लगी, तब बहुत कष्ट पाया।
बाहिर काढ़ो नाथ भक्ति करूं ऐसें फरमाया ॥ १ ॥

लगी जगतकी पवन कौल तब सब ही छिटकाया।
नाना रूप जगत तब देखा, मनमें ललचाया ॥ २ ॥

तरुण भया तब हुआ दिवाना, मनमें गर्वाया।
कर्म धर्मको देय तिलांजलि जोड़न लागा माया ॥ ३ ॥

वृद्ध भया तब इन्द्रिय शिथिल भई सूक गई काया ।
फिर भी मूरख चेते नाहीं, धिक् तेरा जाया ॥ ४ ॥
जन्म अमोलक खोके चाल्या, यमने गिरदाया ।
रामलाल गुरु कह मूरख नर पीछे पछताया ॥ ५ ॥

१०८९—भजन

दिन दोका दर्शन मेला उड़ जायगा हंस अकेला ॥ टेक ॥
जैसे पत्ता छुटे डालसे, लगे ना फेर दुहेला ।
क्या जानें कहाँ जाय पड़ेगा, लगे पवनका ठेला ॥ १ ॥
तरफ तरफसे पक्षी आके, हुआ वृक्षमें भेला ।
होत भोर तब सबही बिछुड़त, ऐसा है जग खेला ॥ २ ॥
ऐसी कच्ची देही तेरी, जैसे माटी ढेला ।
काल वलीकी होगी वर्षा होज्या रेलमठेला ॥ ३ ॥
लाल दास हरिके गुण गावे देता सबको हेला ।
एक डाल दो पक्षी वैठा, कौन गुरु कौन चेला ॥ ४ ॥

१०९०—भजन

हरि गुण क्यूंना गावे रे ॥ टेक ॥
वो सामर्थ भगवान विपत्तिमें आडो आवे रे ॥ टेक ॥
गर्भवासमें सहाय करी उसे मति छिटकावे रे ।
तरुण भयो तिरिया रंग राच्यो मन नहिं भावे रे ॥ १ ॥
तेल फूलेल लगाके साबुन मल मल नहावे रे ।
आड़ा टेढ़ा पटिया वावे, अति गरवावे रे ॥ २ ॥

टेढ़ो चाले आडो बोले, कोई दाय न आवे रे।
बिना पुन्य नर मूढ़ गरीबको जीव सतावे रे ॥ ३ ॥
दो दिनकी जिन्दगानी खातर, पाप कमावे रे।
रामलाल गुरु कहे अन्त नरकोंमें जावे रे ॥ ४ ॥

१०९१—भजन

क्यों भटकत डोले घरमें मिलेगा अविनाशी ॥ टेक ॥
पाँचू मार पचीसों बस कर, सुरत निरत कर दासी।
काम क्रोध कूं खोद बगादे, तज मनकी बदमासी ॥ १ ॥
दस दरवाजा बन्द कर राखो, श्वांस नाल चढ़ जासी।
षट् चक्कर कूं चलो बद हो गगन मण्डलका निवासी ॥ २ ॥
अमृत पान करे वहाँ हंसा छः ऋतु बारह मासी।
अमरापुर जाय बसे वहाँ, कोटि कला प्रकासी ॥ ३ ॥
कोटि जन्म अघ नष्ट होत जहँ, लगे ना कालकी गांसी।
रामलाल गुरुकी शरणेसे कटि जा लख चौरासी ॥ ४ ॥

१०९२—भजन

जाग्रत बड़ा है झमाका सन्तो शब्द है आद सदाका ॥ टेक ॥
जन्मे मर चले पूर्वको, थाग न पाया त्रांका।
दुनिया बिचारी कौन चितारी काजी पण्डत थाका ॥ १ ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपति तुरिया, आर पार क्यों झाका।
आसपास दुर्बीन धरी हैं सीधा शब्द सड़ाका ॥ २ ॥
ज्ञान नदी दिल अन्दर बहतो नहाके देख मझाका।
इस पर भी कोई हरिजन नहावे लेले समझ डुबाका ॥ ३ ॥

सीखा ग्रन्थ अरथ नहिं जाना सब एलमका लाका ।
तीनों लोक भये जाग्रतमें कोई विरले पकड़ा नाका ॥ ४ ॥
रोग असाध्य लगा इस मनके अनन्त जन्मका साका ।
भैरूं कहे यो देश दिवाना, कोई पहुंचेगा शेर खुदाका ॥ ५ ॥

१०९३—भजन

हरि हरि भज जन्म सुधर जाय, कर्म कोटकी कटे फांसी ॥ टेक ॥
तीरथ व्रत धर्म सब मनके, क्या मथुरा भाई क्या काशी ।
भटकत फिरे खाली रह जागा, अन्त समय यमकी फांसी ॥१॥
गम दीपक और तेल गरीमी, सूरतिकी बाती खासी ।
प्रकाश हुआ मन्दिरमें दरशा पूर्ण ब्रह्म वो अविनाशी ॥ २ ॥
पूर्ण ब्रह्म सकल घट-घटमें, क्या जोगी क्या सन्यासी ।
ब्रह्म रूप जगत है सारी घरहीमें करो तल्लासी ॥ ३ ॥
सत्यका सौदा करले वंदे, भक्ति भावना है हांसी ।
घींसा सन्त शरण सतगुरुकी, अगम महलके हैं वासी ॥ ४ ॥

१०९४—भजन

क्या तन मांजतारे आखिर माटीमें मिल जाना ॥ टेक ॥
माटी ओढ़न माटी बिछावन, माटीका सिरहाना ।
माटीका कलबूत बनाया, ज्यामें भँवर निमाना ॥ १ ॥
मात पिताका कहना मानो, हरिसे ध्यान लगाना ।
सत्य बचन और कहो दीन हो सबको सुख पहुंचाना ॥ २ ॥
एक दिन दुलहा बने बराती, सिर पर ढुले है निशाना ।
एक दिन जाय जंगलमें सोवे कर सूधे पग ताना ॥ ३ ॥

हरिकी भक्ति कबहुं ना छोड़ो जो चाहो कल्याणा ।
सबके स्वामी पालन कर्त्ता उनका हुक्म बजाना ॥ ४ ॥

१०९५—भजन

वा घर जाइयो हे नींदड़ली, जा घर राम नाम नहिं भावे ॥ टेक ॥
बैठ सभामें मिथ्या बोले, निन्दा करे पराई ।
वह घर हमने तुझे बताया, जइयो बिना बुलाई ॥ १ ॥
के तूं जइयो राज द्वारे, के रसिया रस भोगी ।
हमरा पीछा छोड़ बावरी हम हैं रमते जोगी ॥ २ ॥
ऊंचे मन्दिर जइये देख जहाँ कामनि चँवर ढुलावे ।
हमरे संग क्या लेगी बावरी पत्थर पै दुख पावे ॥ ३ ॥
कहे भरथरी सुन नींदड़ली यहां नहिं तेरा बासा ।
हम तो रहते गुरु भरोसे राम मिलणकी आशा ॥ ४ ॥

१०९६—भजन

क्यो मूर्ख देख ललचाया, जुग स्वप्नेकी सी माया ॥ टेक ॥
ये जगत बगीचा भाई, नाना विधि करी सजाई ।
याका पार नहीं कोई पाया ॥ १ ॥
क्षण-क्षणमें उत्पति नाशा, बाजीगर रच्या तमाशा ।
याको देखके सभी भुलाया ॥२॥
टल ज्यागा चौरासी भरना ले उसी पुरुषका शरणा
जिसने यह जगत रचाया ॥ ३ ॥
गुरु रामलाल कह बानी है दो दिनकी जिन्दगानी ।
या अमर नहीं तेरी काया ॥ ४ ॥

१०९७—भजन

सबरीके हर्ष भयो घर आसी एक दिन राम ॥ टेक ॥
बोलत बचन मतंग ऋषि तें सुन सवरी दे कान ।
एक दिना तेरे घर प्यारी आसी श्रीभगवान ॥ १ ॥
सुनके बचन दृढ़ निश्चय कीना, बिसरी सवही काम ।
वार-वार उठ उठके देखे, कव आवे लक्ष्मण राम ॥ २ ॥
चाख चाख मीठे फल लावे, सबरी वनमें जाय ।
नितकी जोवे वाट प्रभुकी, कब दें दर्शन आय ॥ ३ ॥
गौर श्याम सुन्दर दो भाई, घर विच पहुंचे आय ।
प्रेम मगन मुख बचन न आवा गई चरणों लिपटाय ॥ ४ ॥
चरण धोय चरणामृत लीन्हा आसन दिया विछाय ।
कन्द मूल आगे धर दीने, रुच रुच भोग लगाय ॥ ५ ॥
सबरी जैसी अधम जातिको, दई सुरधाम पठाय ।
कह घनश्याम विश्वास किये से दे दर्शन घर आय ॥ ६ ॥

१०९८—कैकेईको वारामासियो

राम वन जावेजी, रघुवर वचन निभावेजी ॥टेक॥
चैत महीने वचन केकई, दशरथने फरमावेजी ।
रामचन्द्र वनवास, भरत गादी वैठावेजी ॥ १ ॥
वैसाखां में कहे नृपती, मुझको नांय सुहावेजी ।
रामचन्द्र विन प्राण मेरा रहने नहीं पावेजी ॥ २ ॥
जेठ केकई कहे मेरा वरदान मुझे अब चावेजी ।
रामचन्द्र वन जाय जभी, मोय धीरज आवेजी ॥३॥

साढ महीने चल्या रामजी, केकई मन हुलसावे जी ।
भगवाँ वसतर पैर मुनिका, भेस बनावेजी ॥ ४ ॥
श्रावण सृङ्गवेरपुर जाकर, मुनियनसे वतलावेजी ।
चित्रकूटमें जाय हरी, विश्राम लगावेजी ॥ ५ ॥
भादों नगरी पुरी अयोध्या, राम विना दुख पावेजी ।
राजा दशरथ प्राण तजे, केकई अब पछितावेजी ॥६॥
आस्योजांमें आये भरतजी, केकई मोद बढ़ावेजी ।
कहां लिछमन कहाँ राम मात मोय नजर न आवेजी ॥७॥
कातिक महिने मात केकई, सारा हाल सुणावेजी ।
कहे भरतजी धृक है माता, रघुवर मोय कहां पावेजी ॥८॥
मंगसर दल सजवाय भरतजी, राम मिलनेको जावेजी ।
चित्रकूट तक जाय भरतजी, पाछा फिर कर आवेजी ॥९॥
पोस महिने पञ्चवटीमें, परनकुटी वनवावेजी ।
सोहन मिरगी चर चर जावे राम घेरणको जावेजी ॥१०॥
माघ महीने रावण छल कर, सीता हर ले ज्यावेजी ।
वनके मांय जाय रामजी, कपि सेना सजवावेजी ॥११॥
फागण जुध रचाय लंकमें, राकस मार हटावेजी।
रावणने तब मार काट कर, राज विभीषण पावेजी ॥१२॥
मास तेरवें आये अयोध्या, राज तिलक करवावेजी ।
राम लखणको देख नगर सब, फूले अंग न मावेजी ॥१३॥

१०९९—भजन

अज्ञात

दिल अन्दर दीदारो लोभी हंसा रे काया रे नगर मंझारो जी ॥टेक॥

गहरी गहरी लगन हिये बिच लग रही कौन है मेटनवारो जी।
मस्तक ऊपर लिखी है फकीरी, कर्म लिखो कर्त्तारो जी ॥१॥
पाँचों चोर बसे घट भीतर, ठग खायो जुग सारो जी।
सतगुरु धनुष बाण लियाँ ठाढ़ो खैंच हिये बीच मार्यो जी ॥ २॥
गगन मण्डलमें भट्टी झुरवे, रस अमृतको झारो जी।
सुगरा सुगरा भर-भर पीवे, नुगरा घर अन्धियारो जी ॥३॥
सिंह और स्याल रहे एक वनमें, बिछड़त न्यारो न्यारो जी।
एक दिन मेल पड़ा मछलीसे सिंहसे स्याल सिधारो जी ॥४॥
धन्य सतगुरु मैंने पूरा मिलियो मिट गयो घोरम धारो जी।
मानीनाथ शरण सतगुरुकी अलख नाम निस्तारो जी ॥५॥

११००—भजन

चरखलो हरभज वांको हे सूरता कातो सूत हजारी ॥ टेक ॥
तीनों गुणांरी तान तणोटी आंक्स खूंटा च्यारी।
निज बीन माल नहीं चरखेमें सतगुरां दई थी उधारी ॥१॥
मन कर तकली तन कर पूनी, जतनि जोत सवाई।
पाँच पचीस बनी पाँखड़ियां, महत्त भूण आधारी ॥ २ ॥
अगम महलमें निगम अटारी, जाय चढी कतवारी।
निकस्यो तार पवनसे पतलो, धुवेंसे अन्धिकारी ॥ ३ ॥
अगम महलमें चलेरे चरखलो, देकर कूड़ बुहारी।
चाव चढयो चरखो गररायो, माच रही झंकारी ॥ ४ ॥
भालीनाथ मिला गुरु पूरा, पूर्ण ब्रह्म उपगारी।
जो चरखे की महिमा जाने वही लखे निरविकारी ॥ ५ ॥

११०१—भजन

उठ ब्रह्मन नैन उघाड़ लाड़ली जाय जमारो है ॥ टेक ॥
तूं तो निरख वदन, जोवनियो तेरो होयो मतवारो है ।
तूं तो सुमरण सेल सँवार निकसे कु वुधि कारो है ॥ १ ॥
तूं तो कर नटवरियारो भेष नार घर वाहर विसारो है ।
भूल गई हरि नाम काम तूं किसड़ो सँवारो है ॥ २ ॥
तेरा हँसा वटाऊ लोग, वसे एक रैन वसेरो है ।
वो तो भोर भये उठ जाय, कूच कर जाय सवेरो है ॥ ३ ॥
गुरु मिल गया नाथ गुलाव मन्दिरियांमें होय उजियारो है ।
गुन गावे भानीनाथ, कथे साधु मतवारो है ॥ ४ ॥

११०२—भजन

वो घर लख्या न जावे हो, कोई साध सैन मिल जावे जी ॥ टेक ॥
कौन तन्तमें ज्ञानी गावे, कांई कांई नाम सुनावे जी ।
कौन पुरुपके जावोगे आसरे, कौन थारा प्राण वचावे जी ॥१॥
ज्ञान रागमें ज्ञानी गावे, सन्त नाम समझावे जी ।
अलख पुरुष के जावोगे आसरे, सतगुरू प्राण वचावे जी ॥२॥
आशा करे निराशा डोले, आपां वहुत लजावे जी ।
अन्तर टाटी लगी भरमकी ज्याका थाग न पावे जी ॥३॥
दिल विच महल महल विच मालिक, अन्त कवहुं नहिं आवे जी ।
छठा तन्त वेदोंसे न्यारा से साधु गम लावे जी ॥ ४ ॥
जा घरसे मेरा जीवड़ा आया, फिर पाछा क्यों जावे जी ।
भानीनाथ शरण सत्गुरुकी, रजमें रज मिलावे जी ॥ ५ ॥

११०३—भजन

जाऊंगा हजारे देश फेर नहीं आऊंगा ॥ टेक ॥

गुणकी गठरी खोल दिखाऊं पाँच तीनकी रचना लाऊं।

लग रहा सीधा तार, गगन चढ़ जाऊंगा ॥ १ ॥

अपने गुण पाँचो दे दीने, अपने अपने सब ले लीने।

हो तुरिया असवार, परम सुख पाऊंगा ॥ २ ॥

उलटी पृथ्वी नीर मिलाऊं, ओला नीर तेजमें लाऊं।

सेज पवनसे मेल पवन मा लाऊंगा ॥ ३ ॥

अपना ना कोई कहा करना, अलख पुरुषका लीना शरना।

करूं आठ पहर संग्राम, ज्ञान खड्ग ठाऊंगा ॥ ४ ॥

छुट गया भोग स्वाद गया जीका, सब प्रपंच लगत हैं फीका।

देखत आवे छींक तुरन्त तज जाऊंगा ॥५ ॥

दीनी मौज अजब घर पाऊं सुख सागरमें डेरा लाऊं।

गुण गावे भानीनाथ, अमर घर छाऊंगा ॥ ६ ॥

११०४—भजन

रावलिया रम चल्या जी काया नगरमें रोल पड़ी ॥ टेक ॥

इस रावलका सकल पसारा, जल पर नीम धरी ॥ १ ॥

चेजारा धन्य किसबी, धन्य चिनने हारा।

दशवें द्वार गगनसे जी सुन प्यारे या अमी झड़ी ॥ २ ॥

पाँचू झुरवे संगकी दासी।

काया गढ़ छोड़ चल्या, अविनाशी घरमें पड़ी उदासी ॥

छोड़ चल्या नो महलाजी वांकी सुन्दर झुरवे महल खड़ी ॥ ३ ॥

तुम चाल्या साऊ कौन मेरा, घर अंगनामें पड़ा अन्धेरा।
अटकी मेरी नाव समुद्र वीच वेड़ा।
मेरा रंग विखर गया जी रम गया रावल खोड़ पड़ी ॥ ४ ॥
नाथ गुलाव मिला गुरु पूरा, विना ताल नहीं वजे तंबूरा।
समझेगा कोई साधू सूरा ॥
भानीनाथ जन तेरा जी, तुम हर भजो मेरी काया जिंदड़ी ॥ ५ ॥

११०५—भजन

सखि आयो है फागन मास, जीवेंगेसे नर खेलेंगे होरी।
होरी खेल गये प्रह्लाद मरणहु से नांय डरयोरी ॥ टेक ॥
नन्द ववाके द्वारे आज मंडी है होरी।
नौ मन उड़त गुलाल सवा मन केसर रंगोरी ॥ १ ॥
तुम जो सखी सुर ज्ञान नार म्हारे आंगन चलोरी।
राधामें गेरत श्याम श्याममें फेंकत राधे गोरी ॥ २ ॥
सखी मत कर गुमान पलकमें विछर जागी जोरी।
तेरा वोलतड़ा उड़ जाय, निकस जागा कौनसी मोरी ॥ ३ ॥
प्रेम मगन चित लाय, रटो क्यूंना नन्द किशोरी।
ज्ञान गावेहै भानीनाथ सत्संगतकी नाव तैरोरी ॥ ४ ॥

भानीनाथ

११०६—भजन

ईशकी महिमा अपरम्पार।
ब्राह्मण तो मुख सेती प्रगटया, पढ़ण पढ़ाणे कार ॥ १ ॥
क्षत्रिय भये भुजासे उत्पन्न, रक्षण करण संसार ॥ २ ॥

वैश्य उदरसे ही निकले हैं, हित गोरक्षा व्यापार ॥ ३ ॥
शूद्र चरणसे सेवा कारण, हनुमत कहे विचार ॥ ४ ॥

हनुमानदत्त जोसी

११०७—ईश्वर विनयको बारामासियो

राखो लाज हमारी, थारी सरणागत प्रभूजी मैं लई ॥टेक॥

चैत मासमें चितकर ध्यावाँ, पूर्ण ब्रह्म करतार।
महतत्व से माया प्रगटी, और मायासे हंकार।
हंकारसे रज तम सत किया, चौवीस तत्व हो पलार।
माया कोई ना लखे, कहिये अपरम्पार।
निर्गुणसे सरगुण तुम होके, रच दीना संसार ॥
भेद है वहुत ही भारी ॥ १ ॥

लगत मास वैसाख प्रभूजी, तुम अजर अमर अविनासी।
सभी रूप है विश्व तुम्हारा, तुम घट घट के वासी।
भेद तुम्हारा ना किन पाया, वहुत करी तह्लासी।
अपनी वक वक चल गये, सुर नर मुनि और संत।
तुमरी गतीको तुम ही जानो, कीने न पाया तंत ॥
लज्जित हो सब ही हारी ॥ २ ॥

जेठ मासमें कहे वेद तुम विन दूजा कोई नांई।
स्वयं प्रकाश तुम जगके द्रष्टा, व्यापक हो सब मांई।
शेष महेश विरञ्च विष्णुके, सबके सिरके सांई।
सूई सम खाली नहीं, तुम विन दूजा और।
जड़ चेतन के वीचमें व्याप रहे सब ठौर ॥

मिली और रहती न्यारी ॥ ३ ॥

लागत मास आसाढ़ माया, थारी लखनेमें नहीं आई ।
राईसे तुम परवत करद्यो, परवतसे करो राई ।
सबके भीतर आप प्रभु हो, घट घट ज्योत सवाई ।
रंक उपर छत्र फिराद्यो, करो पुरुपसे नार ।
रीता खजाना द्रव्यसे भर द्यो, करो कञ्चनसे छार ॥
रचो पलमें संसारी ॥ ४ ॥

श्रावण मांई नाम सुण्या हम, भक्तवछल प्रभू थारा ।
न्यायकारी और कहिये दयालू, निरधारां आधारा ।
भक्तोंके अघ सङ्कट मोचन, युगमें करो उद्धारा ।
जो तुमरो सरणा लेवे, कोटि विघ्न टल ज्याय ।
जगत कामना सारी भागै, जाता भरम नसाय ॥
फेर नहीं योनी पा री ॥ ५ ॥

भादूमें थाने सवल जानके, लीना था प्रभु शरणा ।
आरत होके अरज करूं मैं, सुनो हमारी करुणा ।
जगत विषयमें पड़ा तड़फता, लग रिह्या जामण मरणा ।
नित दुखी ऐसे रहूं जैसे जल विन मीन ।
निरवल जानके दया विचारो, अरज करूं हो दीन ॥
अरज सुणियो वनवारी ॥ ६ ॥

आश्विन मांई आशा तृष्णा, नितकी आन सतावे ।
काम क्रोध मद लोभ वली; इनसे नहीं पार जो वसावे ।
मान वड़ाई गर्व ईरसा, पल पल झटका ल्यावे ।

अविद्याके परिवारने, लीना है मुझको घेर।
मन नृपतिके रहूं राजमें, मुस्कल सांझ सवेर॥
प्रभुजी बेड़ा पार लंघारी॥ ७॥

कार्तिक कष्ट हुआ अति भारी, रखो हमारी लाज।
तुमसा सामर्थ ना कहीं पाया, जगत देख लिया आज।
कुटम्ब सनेहका बन्धन गेरा, अपने सुखके काज।
मतलब का संसार है, यही अनादी चाल।
मात तात भ्रात सुत नारी, गेरें मोहका जाल॥
करैं नितकी लाचारी॥ ८॥

अगहन मासमें जगत कामना, बहुत करे दिकदारी।
संकल्प विकल्प तरंग उठत हैं, काया सिन्धु मंझारी।
पांचो इन्द्री भटकैं विढ़ायको, नितकी करैं लाचारी।
एक घड़ी विश्राम ना, हुआ मैं बहुत हैरान।
जराक झोला फेरो म्हेरका कटै कोट दुख खान॥
अरज सुणियो गिरधारी॥ ९॥

पौष मासमें भरम नसाके, हृदय करो उजियारा।
सील सबर और दया धर्म द्यो, दया करो न्यायकारा।
धर्म अर्थ और काम मोक्षके, तुम ही हो दातारा।
अन्तः कर्ण शुद्ध बनायके, करो न ज्ञान प्रवेश।
प्रेमा भक्तिका पंथ बता द्यो, कटि ज्या विघ्न क्लेश॥
प्रेम अमीरस मोय प्यारी॥१०॥

माघ मास थारो बड़ो भरोसो, कद पूरो आसा मेरी।

पल पल मुझको वर्ष बरावर, मुस्कल सांझ सवेरी ।
जगत विषयमें पड़ा तड़फता, काटो पिताजी वेरी ।
छुट्टी देवो जगतसे, विश्व पिता म्हाराज ।
सूली सा संसार लगत मोहे, विषसा जगतका काज ॥
लगै नागिनसी नारी ॥११॥
फाल्गुन मांई भक्तोंकी तुम, पल पल विपता छीनी ।
मेरी वेर क्या निद्रा आई, किस विध कफगी कीनी ।
चाहे मारो चाहे त्यारो पिताजी, मैं ओट तुम्हारी लीनी ।
सव सामर्थ विन हीन हूं, रखूँ तुमरे नामका जोर ।
माता तात मित्र तुम्हीं भ्राता, नहीं ईष्ट कोई ओर ॥
त्याग थाने कहां जाऊंरी ॥१२॥
मास तेरहवां लगया लौंदका, वहुत ही भीड़ भई है ।
जुग सिन्धूमें नइया अटकी, आतुर होय टेर दई है ।
तुम विन ना कोई संगी हमारा, ऊपर नभ नीचै मही है ।
वैश्य वर्ण मैं अधम हूं, करुणा कही जो वनाय ।
महादेव है दास तिहारा, द्यो ना प्रण निभाय ॥
भक्तोंके तुम हितकारी ॥१३॥

महादेवलाल वैश्य

११०८—राग कान्हरा

कहाँ करतें मुंदरिया डारी ।
मैं वलि जाऊँ वताय किसोरी, तैं कवतें न निहारी ॥

आवत हैं भुज अंसन दीन्हें, एहो छैल बिहारी।
जो देखी तौ कहिये मोते, मुदित होत कह भारी॥
चोरी चपल लगावति मोकों न्याव करो तुम प्यारी।
बृन्दावन हित रूप दरस पड़ी, लाल फेंट जब डारी॥

११०९—भजन

यह छवि बाढ़ीरी सजनी, खेलत रास रसिक मनि माई।
कानन वर सौरभ को महकनि, तैसिय दरस जुन्हाई॥
पुलिन प्रकास मध्य मनि मंडल, तहं राजत हरि राधा।
प्रतिबिम्बित तन दुरनि मुरनि में, तब छबि बढ़त अगाधा॥
गौर श्याम छबि सदन बदन पर, फबि रहे स्रम कन ऐसे।
नील कनक अम्बुज अंतर धरे, ओपि जलज मनि जैसे॥
झलकत हार चलत कल कुंडल मुख मयंक ज्यौं सोहैं।
वारों सरद निसा ससि केतिक, मैन कटाच्छनि मोहैं॥
थेइ थेइ वचन बदति पिय प्यारी, प्रगटति नृत्य नई गति।
बृन्दावन हित तान गान रस, अलि हित रूप कुसल अति॥

१११०—भजन

हौं बलि जाउँ मुख सुख रास।
जहाँ त्रिभुवन रूप सोभा, रीझि कियो निवास॥
प्रतिबिम्ब तरल कपोल कमनो, जुग तरौना कान।
सुधा सागर मध्य बैठे, मनों रबि जुग न्हान॥
छबि भरे नव कंजदल से, नेह पूरित नैन।
पूतरी मधु मधुप छौना, बैठि भूले गैन॥

कुटिल भृकुटी अमित सोभा, कहा कहौं बिसेख।
मनहुं ससि पर स्याम बदरी, जुगल किंचित रेख ॥
लसंत भाल विसाल ऊपर, तिलक नगनि जराय।
मनहुं चढ़े विमान ग्रहगन, ससिहि भेंटत जाय ॥
मंद मुसुकनि दसन दमकनि यामिनी द्रुति हरी।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनि कौन विधि रचि करी॥

११११—भजन

सोभा केहि विधि वरनि सुनाऊं।
इक रसना सोउ लोचन हीनी, कहौ पार क्यों पाऊँ ॥
अंग अंग लावण्य माधुरी, वुधि वल किती वताऊं।
अतुलित सुनति कहि गए, क्यों दृग पल रजि धरि जु उचाऊं ॥
नव वैसंधि दुहुनि नित उलहत, जव देखो तव औरै।
यहि कौतुक मेरो सुनि सजनी, चित न रहत यक ठौरे ॥
लोक न सुनी दृगन नहिं देखी, ऐसी रूप निकाई।
मेरी तेरी कहा चली खग, मृग मति प्रेम निकाई ॥
कवहूं गौर स्याम तन कवहूं, लोचन प्यासे धावैं।
कहि घटि जात सिंधु को, पंछी जो चोंचन भरि लावैं ॥
सुन्दरता की हद मुरलीधर, वेहद छवि श्रीराधा।
गावै वपु अनन्त धरि सारद, तऊ न पूजै साधा ॥
याई काम करवट ह्वै निकसत, पिय अरु रूप गुमानी।
वृन्दावन हित रूप कियो वस, सो काननकी रानी ॥

११११२—भजन

भजन भावना हीय न परसी, प्रेम नहीं, उर कपटी ।
कुआँ परयो आकाश उड़त खग ताको करत जु झपटी ॥
रसिक कहावैं कोई जिनके जुगल मिलनकी चटपटी ।
वृन्दावन हित रूप कहां लगि बरनों सृष्टि अटपटी ॥

११११३—भजन

देखा देखी रसिक न ह्वै है, रस मारग है बंका ।
कहा सिंहकी सरवर करिहैं, गीदर फिरै जु रंका ॥
असहन निन्दा करत पराई, कबौं न मानी संका ।
वृन्दावन हित रूप रसिक जन, दिय अनन्द पथ डंका ॥

चाचा हित-वृन्दावन-दास ।

११११४—भजन

(कुण्डलिया)

मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ ।
जा तनकी झांई परें स्याम हरित द्रुति होइ ॥
स्याम हरित द्रुति होइ, परत तन पीरी झांई ।
राधा हू पुनि हरी होत लहि स्यामल छांई ॥
नयन हरे लखि होत रूप अरु रंग अगाधा ।
सुकवि जुगुल छबि धाम, हरहु मेरी भव बाधा ॥ १ ॥
मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ ।
जा तन की झांई परें स्याम हरित दुति होइ ॥

होइ हरित दुति सबै स्याम जो जो कछु जगमें।
भेद कछू नहिं रहत नील अरु पन्ना नगमें ॥
मेरो हिय अति स्याम हरो व्है है कब एरी।
निज झांईकी भीख सुकवि दीजै यह मेरी ॥ २ ॥
मेरी भव वाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झांई परें स्याम हरित दुति होइ ॥
होइ हरित दुति स्याम, परत तन पीरी झांई।
होत वैंगनी परें लाल चादर की छांई ॥
अति कारे लहि प्रभा सांवरी सारी केरी।
सुकवि सबै रंग भरी, हरहु भव वाधा मेरी ॥ ३ ॥
मेरी भव वाधा हरो राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झांई परें स्याम हरित दुति होइ ॥
होइ हरित राधिका स्याम, आवत समुहैं जब।
आये आये कहत चौंकि सी उठत सखी सब ॥
विनु देखेहुं जय कहत चौंर लै दौरत चेरी।
राधा हरि रंग रंगी, सुकवि अवलंबन मेरी ॥ ४ ॥
मेरी भव वाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झांई परें, स्याम हरित दुति होइ ॥
स्याम हरित दुति होइ पितम्बर गहरो पीरो।
अधर गुलाबी होय कनक सो कुण्डल हीरो ॥
मोती हारहु पद्म राग छवि धारत आधा।
सुकवि स्याम रंग रंगी हरहु मेरी भव वाधा ॥ ५ ॥

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झांई परे, स्याम हरित दुति होइ॥
होइ दिव्य दुति स्याम कलुष सब जात नसाइ।
हृदय ग्रन्थि खुलि जात सबै संसय उड़ि जाइ॥
परा भक्ति साकार सुकवि पूरति मन साधा।
सो राधा करि कृपा हरहु मेरी सब बाधा॥ ६॥
मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झांई परे, स्याम हरित दुति होइ॥
स्याम हरित दुति होइ सखिनको हिय हरसावत।
ताही सों जनु हरे कृष्ण कहि मुनिगन आवत॥
बहुरंगेको रंग बदलि दीनी दुति तेरी।
निज रंग रंगि लै मोहु सुकबि विनती सुनु मेरी॥७॥
मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ।
जा तनकी झांई परे, स्याम हरित दुति होइ॥
स्याम हरित दुति होइ जासु तन झांई पायें।
हरो रहत हूं मैं हुं जासु पद पंकज ध्यायें॥
रचना कछु मैं करत तिनहिं छवि निज हिय हेरी।
सुकबि स्याम राधिका कामना पुरवहु मेरी॥ ८॥

पं० अम्बिकादत्त व्यास

१११९—भजन

जय कमल-नयने! शौरि सुन्दरी! इन्दिरे! जलनिधि सुते।
बिधि-शेष-शिव-धनपति-पुरन्दर-देव-दानव-नर-नुते॥

मणि जटित सुन्दर रत्न सिंहासन छवी अति राज हीं ।
शतपत्र रक्त विशाल आसन बिरचि मात ! विराजहीं ॥१॥
मुकुट कुण्डल कण्ठभूषण कटक अंगद कंकणा ।
अंगुलीयक हार मुक्ता पाद नूपुर झनझना ॥
मृग नाभि मुद्रित पीन चूचुक भाल कुंकुम धारहीं ।
पृष्ठ पट्टदुपट्ट छवि लखि कोटि दिनपति वारहीं ॥ २ ॥
जलज अंकुश अभय वरयुत चार भुज तव सोहनी ।
सुरकोशपति सुरराज सेवहिं मात मुनि मन मोहिनी ॥
दोउ ओर वारण हेम घटकर लीन्ह स्नान करावते ।
सूत मागध स्तुति करहिं गंधर्व गुणगण गावते ॥ ३ ॥
धन हीन दीन मलीन भारत मात ! तो विन अति दुखी ।
कर जोर विनती करहिं टुक अब कृपाकर कीजहु सुखी ॥
विकराल प्लेग अकाल दारिद नित्य याहि सतावता ।
दया कर कमलानने ! यह पूत तव मन भावता ॥ ४ ॥
तव आगमन दिन लखि मुदित मन आपनु दुःख विसारिया ।
निज गेह भारि सँवारि घर घर करहिं मंगलचारिया ॥
कहुं झाड़ फानुस गैस विजली दीप पंक्ती लग रही ।
हाट वाट सजाय वहु विधि हर्ष पिरजा कर रही ॥ ५ ॥

गुरुदत्त शर्म्मा

११९६—प्रार्थना

(वसंत तिलका)

देवादि देव ! जगदीश ! दयालु ! दाता ।
कोई न दृष्टि तुझसा जग बीच आता ।
तेरी अपार महिमा नहीं जा बखानी ।
हारे अनन्त नर नाग सुरेश ज्ञानी ॥१॥
संसार रूप रचना रचके दिखाई ।
ऐसी अपूर्व सुखमा उपमा न पाई ।
सामर्थ्य कौन तुजसी नर मूढ़ राखै ?
कैसे कुलाल गरिमा घट मूक भाखै ? ॥२॥
कोई तुझे सगुण सुन्दर जानता है ।
कोई अनादि अज अव्यय मानता है ॥
निर्लेप रूप सबमें तब भासता है ।
सम्बन्ध व्योमवत् तूं निज राखता है ॥३॥
तूं ने कृपालु नर का तन जो दिया है ।
हे विश्वनाथ ! उपकार बड़ा किया है ॥
योनी असंख्य पर मानुष की बड़ाई ।
वेदादि शास्त्र सबने सब भाँति गाई ॥४॥
पाया मनुष्य तनु किन्तु तुझे न पाया ।
मेरी वृथा अब हुई यह दिव्य काया ॥
फूले फले, पर न जो फल को पकावे ।
तो वृक्ष निष्फल कभी मनको न भावे ॥५॥

वो गीध वानर भले जिनकी भलाई।
हे देव ! आदि कविने सबको सुनाई ॥
धिक्कार कल्पतरु को फल जो न देवे।
है धन्य आम्र, फल जो निज सीस लेवे ॥६॥
सर्वज्ञ ! देव ! घटकी सब जानता तूं।
बातें समस्त मन की पहचानता तूं ॥
क्या मैं कहूं फिर भला अब बात मेरी।
संकल्प पूर्ण तब होय लगै न देरी ॥७॥
हो धर्म्म राज्य सब ठौर न लोग कोई।
पापी रहें न जगमें, नहीं रोग कोई ॥
तेरा महत्त्व जगके बड़ जीव जानैं।
है, सार धर्म्म, यह बात समस्त मानैं ॥८॥

शिवचन्द्र भरतिया

१११७—राग सोरठ

झूलत यह अति अनूपम जोरी।
नन्द नन्दन व्रजराज लाल संग श्री वृषभानु किशोरी ॥ १ ॥
वृन्दा विपन कदम्ब डार पर सुभग रंगीली डोरी।
कैसो झूलो बन्यो मनोहर, शोभा रही न थोरी ॥ २ ॥
बरसत मेघ चमक रही चपला, डरत भानुजा भोरी।
चूनर भीजत श्याम न छाड़त, करत खूब झकझोरी ॥ ३ ॥
प्रकृति पुरुषकी लीला अद्भुत, समझ सकै नहिं बोरी।
राधा माधव चरण जुगलमें, कब लगिहै मति भोरी ॥ ४ ॥

११९८—राग जंगला

यह दोऊ लाल लाड़िली बनमें, झूलत दै गल बांह मुदित ह्वै।
मन्द मन्द मुसकात जात, सकुचावत कछु कछु मनमें ॥ १ ॥
खुले केस झोटनके कारन, मानो घटा पवन फटकारन।
चन्दमुखी लगि अंग श्यामके, शोभित जस दामिन घनमें ॥ २ ॥
परत फुवार पवन पुरवाई, द्रुम बेलिनकी छबि अति छाई।
बोलत मोर पपीहा कूकत, उमंग बढ़ावत तनमें ॥ ३ ॥
सघन कुंज यमुनाके तटकी, सुरंग चूनरी मोर मुकुटकी।
शोभा मिश्र देख रति मन्मथ, लज्जित निज यौवनमें ॥ ४ ॥

११९९—होरी–राग काफी

खेलैं राधा माधव होरी ॥टेक॥
ब्रज तरुनिनमें राज रही है यहँ अति सुन्दर जोरी।
तकि मारत पिचकारी मोहन लजत भानुजा भोरी ॥
हँसत लखि लखि सब गोरी ॥ १ ॥
कोऊ गावत कोऊ चंग वजावत कोऊ करत झकझोरी।
डारत कोऊ बिहँसि श्याम पै केसर भरी कमोरी ॥
मलत मुख पै कोऊ रोरी ॥ २ ॥
कोऊ गुलाल उड़ावत है वह सजनी भरि भरि झोरी।
कोऊ वढ़ावा देत प्रिया ही भामिनि भौंह मरोरी ॥
कहत यह ढीठ वड़ोरी ॥ ३ ॥
मानो विज्जुछटा जुत नीरद सन्ध्या किरनि रंग्योरी।

वरसत अंग मिश्र शोभा लखि, वढ़त हर्ष चहुं ओरी ॥
कहत सब हो हो होरी ॥ ४ ॥

११२०—लावणी

जगदम्ब ! शारदा माई ! तव हो पूजा सुखदाई ॥ टेक ॥
सब भाँति देवि ! सुखदायक ! हो तेरा ज्ञान सहायक ।
जितने जगमें नर नायक, होवें सब तेरे पायक ॥
महिमा नित वढ़ै सवाई ॥ १ ॥
हे पुस्तक धारिणि ! माता, तुझ विना न नर सुख पाता ।
तेरी समान मा ! दाता, कोई न दृष्टिमें आता ॥
तूं सच्ची करै भलाई ॥ २ ॥
जो नर तेरे गुण गावें, सब प्रकारसे सुख पावें ।
घर बैठे पैर पुजावें, नर निकट उन्हींके आवें ॥
करते सब लोग वड़ाई ॥ ३ ॥
दुर्भिक्ष आदिके मारे, जन भारतीय वेचारे ।
पूजोपहार विन सारे, करते पुकार तव द्वारे ॥
अब मिश्र कहें सब भाई ॥ ४ ॥

पं० माधवप्रसाद मिश्र

११२१—झपताल

ये अँखियाँ हौं हरिकों वैंची ।
परवस भई दई कह कीजे, परि गई वान कुपैंची ॥
प्रेम दामतें वाँधि लई हौं, आतुर मद नंदलाल ।
क्यों छूटौं ब्रज चारु चौहटे, छाप दई कर भाल ॥

नागरिदास जगत सुपियारो, मोहिं नाहिं छिन चैन।
जानै सोइ लगी है जाके, मुसकनि चितवनि सैन ॥

११२२—अड़िल्ल

संग फिरत है काल भ्रमत नित सीस पर।
यह तन अति छीन भंग धुंवे कोधौं लहर ॥
याते दुरलभ साँस न बृथा गमाइये।
ब्रज नागर नंदलाल सु निसिदिन गाइये ॥ १ ॥
चली जाति है आयु जगंत जंजालमें।
कहत टेरि कै घरी घरी घरियालमें ॥
समै चूकि कै काम न फिरि पछताइये।
ब्रज नागर नंदलाल सु निसिदिन गाइये ॥ २ ॥
सुत पितु पति तिय मोह महा दुखमूल है।
जग मृग तृस्ना देखि रह्यो क्यों भूल है ॥
स्वपन राज सुख पाय न मन ललचाइये।
ब्रज नागर नंदलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ३ ॥
कलह कलपना काम कलेश निवारनौ।
पर निन्दा परद्रोह न कबहुं विचारनौ ॥
जग प्रपञ्च चटसार न चित्त पढ़ाइये।
ब्रज नागर नंदलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ४ ॥
अन्तर कुटिल कठोर भरे अभिमान सों।
तिनके गृह नहिं रहैं सन्त सनमानसों ॥
उनकी सङ्गति भूलि न कबहूं जाइये।

ब्रज नागर नंदलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ५ ॥
कृष्ण भक्ति परिपूरन जिनके अंग हैं।
दृगनि परम अनुराग जगमगै रंग है ॥
उन सन्तनके सेवत दसधा पाइये।
ब्रज नागर नंदलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ६ ॥
ब्रज वृन्दावन स्याम पियारी भूमि हैं।
तहँ फल फूलनि भार रहे द्रुम झूमि हैं ॥
सुव दम्पति पद अंकनि लोट लुटाइये।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ७ ॥
नन्दीश्वर वरसानो गोकुल गाँवरो।
वंसीवट संकेत रमत तहँ साँवरो ॥
गोवर्धन राधाकुंड सु जमुना जाइये।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निसि दिन गाइये ॥ ८ ॥
नन्द जसोदा कीरति श्री वृषभान हैं।
इनतें वड़ो न कोऊ जगमें आन हैं ॥
गो गोपी गोपादिक पद रज ध्याइये।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ९ ॥
वंधे उलूखल लाल दमोदर हारिकै।
विश्व दिखायो वदन वृक्ष दिय तारिकै ॥
लीला ललित अनेक पार कित पाइये।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निशिदिन गाइये ॥१०॥
मेटि महोच्छव इन्द्र कुपित कीन्हों महा।

जल बरसायो प्रलय करन कहि दें कहा ॥
गिरिधरि करो सहाय सरन जिहि जाइये ।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निसिदिन गाइये ॥ ११ ॥
राधा हित ब्रज तजत नहीं पल साँवरो ।
नागर नित्य विहार करत मन भावरो ॥
राधा ब्रज मिश्रित जस रसनि रसाइये ।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निसिदिन गाइये ॥ १२ ॥
ब्रज रस लीला सुनत न कबहुं अघावनो ।
ब्रज भक्तन सह सङ्गति प्रान पगावनो ॥
नागरिया ब्रजवास कृपा फल पाइये ।
ब्रज नागर नन्दलाल सु निसिदिन गाइये ॥ १३ ॥

११२३—भजन

हमारी तुमसों हरि, सुधरेगी ।
बहुत जनम हम जनम बिगारयो, अबहू बिगरि परेगी ॥
प्रीति रीति पूरन नहिं, कैसे माया व्याधि टरेगी ।
नागरियाकी सुधरेगी जो, अँखिया इतहिं टरेंगी ॥

११२४—भजन

जो सुख लेत सदा ब्रजवासी ।
सो सुख सपनेहु नहिं पावत, जे जन हैं वैकुंठ निवासी ॥
ह्यां घर घर ह्वै रह्यौ खिलौना जक्त कहत जाको अविनासी ।
नागरीदास विस्व तें न्यारी, लगि गई हाथ लूट सुखरासी ॥

महाराजा सावन्तसिंह उपनाम नागरीदास

११२९—भजन

हरि जेम हलाड़ो[1] जिम हालीजै, काँय धणियाँ सूं जोर कृपाल।
मोली[2] दिवो दिवो छत्र माथै, देवो सो लेऊँ स दयाल॥
रीस करो भावै रलियावत[3], गज भावै खर चाढ़ गुलाम।
माहरै सदा ताहरी माहव, रजा सजा सिर ऊपर राम॥
मूझ उमेद वड़ी महमैंहण[4], सिंन्धुर पाषै केम सरै।
चीतारो[5] खर सीस चित्र दै, किसूं पूतलियाँ पाँण करै॥
तू स्वामी पृथुराज ताहरो, वलि वीजाँ को करै विलाग।
रूड़ो जिको प्रताप रावलो, भूंड़ो जिको हमीणो भाग॥

महाराज पृथ्वीराज

१—चलावो २—सूत्र वन्धन ३—लाड़ करो ४—महतोऽपि महन्तम ५—चित्रकार

संवत् गुन्नीस सो नव्वे, माघ पूर्णिमा आन।
भजनसागर पूरण कियो, भौमवार शुभ जान॥